# ऋषि दयानन्द सरस्वती हैं पत्र और विद्यापन

पंपायक सम्बद्ध की ए

CC-0 in Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

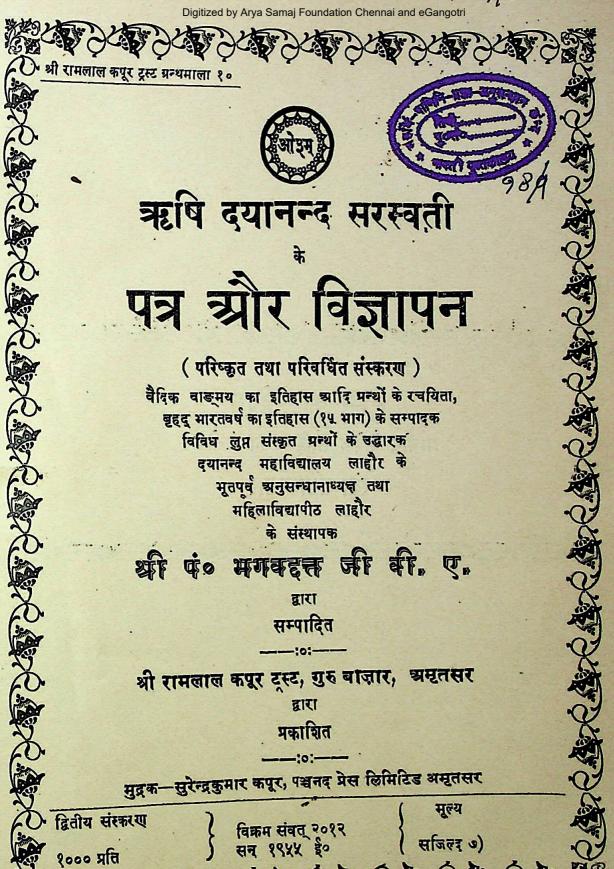


2V

09/3



7. 71. 838 8.6. 9% Digitized by Arya Şamajı Foundation Chennai and eGangotri



## प्रस्ट का उद्देश्य प्राचीन वैदिक साहित्य का अन्वेषण रक्षा तथा प्रचार

CC-0.In Public Domain, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Haveignaled and Alexander



## प्रकाशकीय वक्तव्य

महापुरुषों के रचित प्रन्थ जहां उनकी अपूर्व योग्यता, भावना और प्राणिमात्र के लिये हितचिन्ता के परिचायक होते हैं, वहां उनके जीवनवृत्त उनके महापुरुषत्व तक पहुँचने के सभी उपायों का प्रकाशन करते हैं। उनके सामान्य व्यवहार तथा वार्तालापादि, विशेषकर उनके पत्रव्यवहार हमें उनके व्यक्तिगत जीवन के प्रायः सभी श्रङ्कों के अत्यन्त समीप तक ले जाने में सहायक होते हैं और अपने उद्देश्य वा सिद्धान्तों को पूर्ति के लिये उनके द्वारा किये भगीर्थ प्रयत्नों को जानता के समज्ञ रख देते हैं। उनकी कृतियों को छोड़ कर शेष सब साधन उनके जीवन के पश्चात् ही जनता द्वारा संगृहीत हुन्ना करते हैं, यह एक प्रायिक नियम है। यह भी निर्विवाद है कि इन सब में महापुरुषों की कृतियां उनके सिद्धान्तों वा धारणाओं की मुख्य प्रकाशक होती हैं। शेष सब उनके जीवनकाल के पश्चात् संगृहीत होने तथा उन सारी परिस्थितियों के श्रोमल हो जाने से, जिन में कि उक्त प्रयत्न जीवनवृत्त वा पत्रव्यवहारादि किये जाते हैं, गौण्यत्या ही प्रकाशक मानने पड़ते हैं। पुनर्रा उनके भावों को समफने में थे अत्यन्त सहायक होते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती युगनिर्माता हुए, जहां उनकी कृतियां हमें प्राचीन विशुद्ध संस्कृति सभ्यता और साहित्य का वास्तविक दिग्दर्शन कराती हैं, वहां उनके पूना के व्याख्यान तथा पत्र-व्यवहारादि से हमें मानवसमाज के हित से प्रेरित होकर किये गये उनके भगीरथ प्रयत्नों को सममने में अत्यन्त सहायता मिलती है।

हमें उन सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये, जिन्होंने ऋषि दयानन्द के पत्रों को सुरिचित रखा। उन्हें संगृहीत करने में चोर प्रयत्न किये तथा प्रकाशन में लाये। ऐसे महानुभाव में धर्मवीर श्री० पं० लेखराम जी तथा महात्मा मुंशीराम जी (पश्चात् श्री० पू० स्वामी श्रद्धानन्द जी) सुख्य कहे जा सकते हैं, जिनके द्वारा इस कार्य का उपक्रम हुआ।

समज्ञ लानेवाले, सामान्यत्या पञ्जाव में, विशेषत्या आर्यसमाज में वैदिक आनुसन्धान के प्रवर्तक वा उन्नति पर पहुँचाने वाले, प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान श्री० पं० भगवहत्त जी ने निरन्तर आनेक वर्षों के घोर प्रयन्न से ऋषि के इन पत्रों का संग्रह किया, तथा कराया। उनके इस पवित्र कार्य के निये आर्यजनता इनकी सदा ऋणी रहेगी। इन्हों ने जहां अपना बहुत सा अमूल्य समय इस में लगाया, वहां पत्रों के संग्रह में निज का धन भी बहुत सा व्यय किया। अनेक स्थानों में स्वयं जा कर तथा पत्रव्यवहारादि द्वारा अनेक पत्र प्राप्त किये। श्री० पं० जी अध्यच्नता में खतौली जिजा मुजफ्फ नगर निवासी आर्यसमाज तथा ऋषि में परम निष्ठावान आर्यसज्जन म॰ मामराज जी ने वर्षों इन पत्रों के संग्रह करने में घोर कष्ट सहन किया। जिसके साची वे ही हो सकते हैं जिन्हों ने कि इन्हें प्रत्यचरूप में यह कार्य करते देखा है। ऋषि के पत्रव्यवहार वा ऋषि जीवन की सामग्री प्राप्त करने में इन के हृदय में एक प्रचएंड अग्रि सी ध्यकती रहती है। यदि वे अपना जीवन इसी पवित्र

कार्य में लगा सके तो बाबिजनता का महान् उपकार हो सकता है। श्री अपे के सहायक रूप में

इस क्रार्थ के चित्रे अत्यन्ते ही उपयोगी हैं।

श्रीत पंठ जो ने जिस योग्यता श्रीर परिश्रम से यह कार्य किया है तथा जिस गहराई से अपनी मूमिका में ऋषि दयानन्द के भावों को जनता के समज रखने का यल किया है (खेर है कि यह विचारघारा श्रधूरी रह गई) यह उन्हीं का काम था। चाहे प्रकाशक उनके किन्हीं सम्पादकीय विचारों के साथ सहमत न भी हों, क्योंकि प्रत्येक सम्पादक अपने विचार रखने में स्मृतन्त्र होता है, तथापि हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि पंठ जो के हृदय में प्राचीन भारतीय संस्कृति सभ्यता साहित्य तथा प्राचीन मर्यादाओं की रच्चा के प्रति एक श्रिप्त सी धधक रही है, जिस पर कि भारत का बहुत सा भविष्य निर्भर हैं।

सं० १६२६ तक ऋषि का सारा पत्रव्यवहार तथा सम्भाषण संस्कृत में ही था। बहुत सा पत्रव्यवहार वह दूसरों को बोल कर लिखवाते वा लिखने को कह दिया करते थे और हस्ताचर कर देते थे, ऐसी अवस्था में निस्संदेह इन पत्रों की प्रमाणिकता ऋषिकृत सत्यार्थप्रकाशादि के समान नहीं हो सकती, तथापि इन से अनेक परमावश्यक गम्भीर विषयों तथा सिद्धान्तों पर प्रकाश

श्रवश्य पड़ता है, जो श्रत्यन्त मूल्यदान् है।

यह भी विदित रहे कि श्री० पं० जी इस बहुमूल्य संग्रह को कर चुके थे श्रीर इसके प्रकाशन की चिन्ता में थे। युद्ध की परिस्थिति में कागजा मिलना भी कठिन हो रहा था। ऐसी अवस्था में श्री० पं० जी की इच्छा पर दूस्ट ने इस बहुमूल्य ग्रन्थ को अपनी श्रोर से प्रकाशित करने का निश्चय किया श्रीर श्री० पं० जी ने यह ग्रन्थ दूस्ट को दे देने की महती छुपा की श्रीर उन्होंने ऋषि के पत्रव्यवहार के संग्रह करने में हुए, केवल मार्गव्यय वा पत्रव्यवहार कि व्ययमात्र ही दूस्ट से लिया, उनकी इस सारी महती उदारता के लिये दूस्ट उनका अत्यन्त श्रमुगृहीत है।

श्री० पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने विषय-सूची तय्यार करके इस अन्थ की उपयोगिता

को और भी बढ़ा दिया है, जिसके लिये प्रकाशक उनके श्रनुगृहीत हैं।।

इन से अतिरिक्त इस पवित्र कार्य में सहयोग देने वाले सभी महानुभावों का धन्यवाद सम्पादक महोदय अपनी भूमिका में कर चुके हैं। ट्रस्ट की ओर से हम भी उन सब के ऋणी हैं।

इस प्रकार इस प्रनथ के प्रकाशित करने कराने में जो ट्रस्ट का लगभग ६०००) छ: सहस्र

रुपया व्यय हुआ है, इस में किसी भी अन्य व्यक्ति का कि ब्रिन्मात्र भी सम्बन्ध नहीं।।

अन्त में आर्थजनता से हम यही निवेदन करेंगे कि वह ऋषि द्यानन्द के भावों को गहराई से जानने के लिये इस अन्थ से महान लाभ उठा सकती है।।

इस प्रन्थ की इतनी मांग है कि सम्भव है हमें शीघ ही इसका दूसरा ही संस्करण छपाना पड़े।।

निवेदक-

ब्रह्मद्त्त जिज्ञासु प्रधान रामलाल कपूर ट्रस्ट गुरु बाजार, अमृतसर दितीय संस्करण की विशेषत

ऋषि दयानन्द सरस्वती के ५०० पत्र और विज्ञापनों का बृहत् संग्रह श्री रामलाल कपूर द्रस्ट (लाहौर) ने सन् १९४५ के अन्त में प्रकाशित किया था । उसकी लगभग २०० प्रतियां ही बाहर निकल सकीं (५० मेंट में दी गई; १५० बिकीं), कि शेष ८०० प्रतियां १३ अगस्त सन् १९४७ को (देशविभाजन काल में) लाहौर (पैसा अखबार) में द्रस्ट की पुस्तकों के समस्त संग्रह (स्टाक) के साथ अस्मसात् कर दी गईं।

इस अग्निकाण्ड से ट्रस्ट की लगभग १५००० पन्द्रह सहस्र रुपयों की हानि हुई। ऐसी अवस्था में इस प्रकार के बृहद् प्रन्थों का पुनः प्रकाशन करना प्रायः असम्भव सा ही था, परन्तु ट्रस्ट के अधि-कारियों के अदम्य उत्साह के कारण उसके प्रकाशनों को पुनः प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई। छोटी मोटी ८,१० पुस्तकों के प्रकाशन के अनन्तर इस महान् प्रन्थ के पुनः प्रकाशन का विचार किया गया।

इस बार दितीय संस्करण को प्रथम संस्करण की अपेचा सुन्दर और अष्ठ बनाने के लिये पर्याप्त अम किया गया, परन्तु मेरी लगभग डेढ़ वर्ष से सतत रहने वाली अस्वस्थता के कारण इसमें कुछ विन्न होना स्वाभविक था। इतना होने पर भी यह संस्करण पूर्वपेच्चया पर्याप्त सुन्दर और अष्ठ बना है। इस संस्करण में ३४४ पत्र, विज्ञापन, पत्रांश, पत्रसारांश, विज्ञापनांश तथा पत्र, विज्ञापन और पारसल आदि की सूचनाएँ नवीन संगृहीत की गईं। इस प्रकार इस संस्करण म पूर्व संस्करण की पूर्ण संख्या ५०० से बढ़कर ५४४ हो गई। इसी से इस संस्करण पर किये गये परिश्रम और इसकी उपयोगिता तथा अष्ठता का अनुमान सहज में लगाया जा सकता है।

#### अनुसन्धान की भारी आवश्यकता

इस पत्र और विज्ञापन संग्रह में दो स्थानों पर लेखक द्वारा दी गई क्रमिक पत्र संख्या का क्रम (सिलसिला) मिलता है'। उसके अनुसार प्रथम क्रम (सिलसिले) में इ मास और ९ दिन में ७६२ पत्र ऋषि ने लिखे थे। द्वितीय क्रम (सिलसिले) में ३ मास में २०६ पत्र ऋषि ने लिखे। इन ९ मास

१. प्रथम—पृष्ठ १५ में (पूर्ण सख्या ८५) ता० २५।७।१८७८ को जो पत्र ऋषि दयानन्द ने लिखा उस पर क्रमिक पत्र संख्या वाई छोर २१६ पड़ी है। यह क्रमिक संख्या २१६ से प्रारम्म होकर पृष्ठ १३० में (पूर्ण संख्या १४३) ता० २।२।१८७६ के पत्र पर पड़ी १००७ संख्या तक चलती है। इस प्रकार इन ६ मास छोर ६ दिन में ७६२ पत्र लिखे गये। उन में से केवल ५५ पत्र उपलब्ध हुए, जो छपे हैं, ७३७ पत्र उपलब्ध नहीं हुए। द्वितीय—पृष्ठ २६० में (पूर्ण संख्या ३०७) ता० ८।१२।१८८० के पत्र पर क्रमिक पत्र संख्या १० उपलब्ध होती है। पृष्ठ २६८ (पूर्ण संख्या ३२२) पर पुन: १० संख्या है, जो कि निश्चय ही १०० के स्थान में भूल से १० हो गई है (यही भूल छारो की क्रमिक संख्या में भी है) पृष्ठ २८१ में (पूर्ण संख्या ३४१) ता० ७।३।१८८० के पत्र पर क्रमिक संख्या ११५ पड़ी है, उसे २१५ समक्तना चाहिये। इस प्रकार ३ मास में २०६ पत्र लिखे गये, उनमें से केवल ३५ प्राप्त हुए हैं छोर १७१ प्राप्त नहीं हुए।

श्रीर ९ दिन में लिखे गये (७९२ + २०६ = ) ९९८ पत्रों में से इस पत्र व्यवहार में केवल (५५ + ३५ = ) ९० पत्र छपे हैं, श्रंथति ५९८ में से श्रभी तक केवल ९० पत्र मिले हैं, ९०८ उपलब्ध नहीं हुए।

म बस्ति भीत देखार

ऋषि द्यानन्द का नियम पूर्वक पत्रव्यवहार सं० १९३० के अन्त से प्रारम्भ होता है, और वह आर्वन बदी ३० सं० १९४० तक चलता रहा। जब ऋषि द्यानन्द ने केवल ९ मास में ९९८ पत्रनिश्चित रूप से लिखे, तब लगभग ९ वर्षों में ऋषि ने कितने सहस्र पत्र लिखे होंगे, इसका अनुमान सहज ही में लगाय जा सकता है। इसी प्रकार ऋषि द्यानन्द ने इस सुदीर्घ काल में सैकड़ों विज्ञापन प्रकाशित किये होंगे, परन्तु उन में से विज्ञापन अविष्यानन्द ने इस सुदीर्घ काल में सैकड़ों विज्ञापन प्रकाशित किये होंगे, परन्तु उन में से विज्ञापन अविष्यान तथा विज्ञापन सूचना आदि सब मिलाकर केवल ४६ की प्राप्त हुए। इन उपलब्ध पत्र और विज्ञापनों से ऋषि के उन अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों, उनके दिव्य चरित और व्यक्तित्व का बोध होता है, जिन पर अन्य किसी भी दिशा से कुछ भी प्रकाश नहीं पड़ता। यदि कहीं ऋषि के ये सम्पूर्ण पत्र और विज्ञापन उपलब्ध हो जाते, तो न जाने कितना दिव्य प्रकाश ऋषि के उदातकार्यों, तथा उनके चरित और व्यक्तित्व पर पड़ता। इसके लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं।

अभी भी समय है, यद ऋषि के इन पत्रों और विज्ञापनों के अनुसत्यान के लिये आर्थ-समाजें, प्रतिनिधि-सभाएँ, सार्वदेशिक-सभा तथा श्रीमती परोपक।रिणी सभा कुछ कार्थ करे तो पुराने आर्थों के घरों से अभी भी शतशः पत्र उपलब्ध हो सकते हैं।

इस संस्करण में मैंने बहुत सी नई टिप्पिश्यां जोड़ी हैं, उनके आगे भैंने अपने नाम का संकेत कर दिया है। तथा जहां पूर्विलिखित टिप्पिश्यों में कुछ अंश बढ़ाया है उसे [ कोछ के अन्दर रक्खा है।

आशा है, पाठकों को ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञावमों के संग्रह का यह न्तन पिखंहित. और अनेकविध नई टिप्पणियों से समलंकत संस्करण अधिक कचिकर तथा लामप्रद होगा। ऐसे विशालकाय प्रनथ का इतना परिबृहित संस्करण प्रकाशित करने और वह भी ऐसे अहार्घ (मंहगई के) काल में जब कि जनता की स्वाध्याय की कचि तथा क्रयशक्ति दिन प्रतिदिन चीण होती जा रही है, अत्यन्त सोहस का कार्य है। अतः इस साहसपूर्ण तथा महोपयोगी कार्य के लिये श्री राम-लाल कपूर दूस्ट के समस्त अधिकारी आर्थ जगत के धन्यवाद के पात्र हैं।

## एक १९ क्या ६ किसे किया विकास विकास के **कृतज्ञता-प्रक्रीशन** के लगा किया है कि किसी की

श्री महाशय मामराज जी समय समय पर श्रपते पत्रों द्वारा श्रनेक उपयोगी सुमाव देते रहे, श्रीर इस कार्य को यथासम्भव सर्वाङ्ग पूर्ण बनाने के लिये सर्वदा उत्साहित करते रहे। इतना ही नहीं, इस प्रन्थ के मुद्रण के प्रारम्भ तथा श्रन्त में दो बार रायपुर (मध्यप्रदेश) से श्रपने व्यय से काशी श्राकर अनेकविंध परामर्श दिये। यदि श्राप काः इतना सहयोग न होता तो मैं इस काल में सततकगण रहते हुए इतना कार्य कदापि नहीं कर सकता था। श्रतः मैं उनका श्रन्यन्त कतज्ञ हूं।

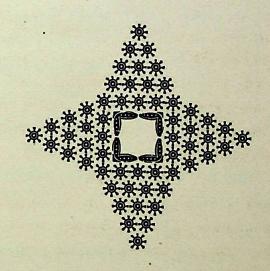
मेरे मित्र राजस्थानीय इतिहास के विशेषज्ञ श्री ठा० जगदीशसिंह जी गहलोत जोधपुर निवासी ने ऋषि के पत्रों में निर्दिष्ट राजस्थान के ऋतेक व्यक्तियों की संज्ञिप्त परिचय लिखकर भेजा था। उसे परिशिष्ट में लगाने का संकल्प था, परन्तु प्रन्थ के आकार के बहुत बढ़ जिने के कारण अनेक परिशिष्टों के साथ उसे भी इस संस्कृत्य में नहीं छाप सके, इसका हमें खेद है। कोटा (राजस्थान) निवासी श्री माननीय राजबहादुरसिंह जी भूतपूर्व शिक्षा इस्पेक्टर ने मेरी प्रार्थना पर श्री पं० चमूपित जी द्वारा प्रकाशित ऋषि के पत्रव्यवहार को 'श्री ठाकुर किशोरसिंह जी' पिटयालावालों के संप्रह से पुनः मिलाकर तथा शोधकर भेजा। उनके इस महान् परिश्रम के लिये मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

मोतीमील, काशी फा॰्ग्रु॰ ११ सं॰ २०११

.विदुषां वशंवदः— युधिष्ठिर मीमांसक

१. श्री ठा॰ किशोरसिंह जी के इस संग्रह के विषय में श्री माननीय राजवहादुरसिंह जी ने ता॰ ११-११-५४ के पत्र में इस प्रकार लिखा है—

"किशोरसिंह जी परियाला वालों की पुत्री ठिकाना कोठारी (कोटा-राज्य) के कविराज दुर्गादास जी के छोटे भाई को व्याही है। ठा० किशोरसिंह जी ने मरते समय बहुत सी पुस्तकें श्रीर यह पत्रव्यवहार जिसे उन्होंने तरतीत्र देकर रक्खा था, श्रपने दामाद को सुरिक्त रखने को दे दिया था। वह इस समय जागीर कोठारी जो कोटा शहर से लगी हुई है के पुस्तकालय में सुरिक्ति है।"



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नाम-सूची उन महानुभावों की जिन्हें पत्र लिखे गए

| 24 4413 4141 44 1414 44 |            |                           |                         |                          |
|-------------------------|------------|---------------------------|-------------------------|--------------------------|
| क्रम संख्या             | उपलब्धपत्र | नाम                       | पत्र पहुंच का<br>स्थान  | पूर्ण संख्या             |
| . 8                     | 8          | अङ्गद शास्त्री            | शाहजहांपुर,<br>अम्बागढ़ | १८४,१८६, ८००, ८०२        |
| . २                     | 80 .       | त्रज्ञात नाम              | विविध स्थानीं           | इ.,१६,१४७,१४८, ४१६, ४२४, |
|                         |            |                           | को                      | ४५०,६१४, ६१४, ६४४, ६४७,  |
|                         |            |                           |                         | ७२७,७⊏४,⊏१६,⊏२१,⊏२२,⊏३४  |
| ₹.                      | 8          | अन्तिम हस्ताच्चर          | जोधपुर                  | £0X,                     |
| 8                       | 8          | अवोधनिवारण की अशुद्धि     | काशी                    | २६६,                     |
| ×                       | 2          | श्रब्दुल्ला मौलवी         | मेरठ                    | १००,⊏२⊏                  |
| Ę                       | 8          | त्रशुद्धभाषा का नमूना     | काशी                    | <b>U</b> C0              |
| 9                       | 8          | 'त्राकृष्णेन रजसा' मन्त्र | वम्बई                   | €0€                      |
|                         |            | का अर्थ                   |                         |                          |
|                         | . 8        | श्राचेपखरडन-सूचना         | 33                      | <b>£</b> 00              |
| 3                       | 3          | श्रात्माराम जी जैन परिडत  | गुजरांवाला              | २६०,२२६२,३२३             |
| १०                      | 8          | <b>ञ्चानन्द्</b> विजय     | "                       | ३२३                      |
| ११                      | ٦.         | त्रानन्दीलाल जी मन्त्री   | मेरठ                    | ३६४,४७२,                 |
|                         |            | श्रार्थ-समाज              |                         |                          |
| १२                      | 8          | आयं समाज लाहौर के         | लाहौर                   | ४३,४६,४⊏१,४⊏३            |
|                         |            | अधिकारी                   |                         |                          |
| १३                      | १३         | श्रालकाट करनल साहब ✓      | अमेरिका चादि            | ७६,⊏६,१४०,१६४,१७⊏, २२⊏,  |
|                         |            |                           |                         | २४८,३४४,३६४, ६२४, ६३४,   |
|                         |            |                           |                         | □₹€,□₹७                  |
| . 88                    | Ę          | इन्द्रमणि जी मुनशी        | <b>मुरादाबाद</b>        | २११,२६७,२६८,३०१,३०२,३०६  |
| . 8X                    | २          | ईश्वरानन्द स्वामी         | प्रयाग                  | ५०२,७६७                  |
| . १६                    | 8          | श्रोषधि-पत्र              | जोधपुर                  | £00                      |
| १७                      | 8          | कन्हैयालाल जी चौबे        | जलालाबाद                | ३४०                      |
| १८                      | १२         | कमलनयनजी मन्त्री          | श्रजमेर                 | ४३६,४४६,४४४,४६२,४७४,४⊏१  |
|                         |            | श्रा० स०                  |                         | ४८२,४८७,४६८,६०४,७४४,७४४  |
| 2_2 -                   |            | # -=: =\$                 | 0-33                    | 0.7                      |

टिप्पणी-एक पत्र के प्रारम्म में जहां कई व्यक्तियों का नाम लिखा है, वे इस सूची में श्रलग २ लिखे गये हैं। यु.मी.

|             |              |  | r= r== =r        | पूर्ण संख्या                          |
|-------------|--------------|--|------------------|---------------------------------------|
| क्रम संख्या | डपत्तब्धपत्र | नाम  | पत्र पहुँच का    | पूर्ण संख्या                          |
| 90          | 38           | कालीचरण-रामचरण जी  | फर्रुखाबाद       | २६६,३०७, ३१७, ३३०, ३३४,               |
| १९          |              | मन्त्री द्या० स०   |                  | ३३४, ३३६, ३३८, ३४६, ३४४,              |
|             |              |  | . 1              | ३८४,३६२, ४०४, ४१३, ४१४,               |
|             |              |  |                  | ४१६, ४१८, ४२६, ४३२, ४३४,              |
|             |              |  |                  | ४३७, ४४४, ४६६, ४१३, ४३४,              |
|             |              |  | 450.00           | हृह् ३,६७८,७०८,७१६,७२८,७४६            |
| २०          | 3            | काल्रामजी शर्मा योगी   | रामगढ़ चूरू      | २७,६१,४⊏५                             |
|             |              |  | (राज्य जयपुर)    |                                       |
| <b>२</b> १  | 8            | किशनसहायजी   | मेरठ             | १०३,८२९,८३०(१,२)                      |
| २२          | 5            | किशन (कृष्ण) सिंहजी  | उद्यपुर .        | ४६३,४४६, ४४१, ४४७,                    |
|             |              | बारट मन्त्री महाराणा   |                  | ४६०,४८०४६६,७६४,                       |
|             |              | सन्जनसिंह, ज़द्यपुर।   | Charles more     |                                       |
| २३          | ₹.           | क्रपारामजी स्वामी, जंगल-   | देहरादून         | १४३,१६२,२७०,३०४,,३४८                  |
|             |              | विभाग  |                  | ३९१,४६०,६४४                           |
| २४          | 3            | कृष्णताल साह   | श्रल्मोड़ा       | 3⊏€                                   |
| २५          | ¥            | केशवलाल निभैयराम   | बम्बई            | २०,२३,२२६,६२६,८४४                     |
| २६          | 3            | खाडेराव पाग्डुरंग  | खरडुवा           | . ७११,७१२,७१३                         |
| २७          | २            | गङ्गाद्त्त जी चौवे परिडत   | मथुरा            | २,३,                                  |
|             |              | (सहपाठी श्री स्वामी ज़ी)   |                  |                                       |
| २८          | २            | गर्गशदास एएड कम्पनी  | काशी             | 380,080                               |
| 35          | २            | गर्णेशप्रसाद् पिंडत  | फर्रुखाबाद       | ३१०,३११                               |
| ३०          | 8            | गएडासिंह जी सरदार  | रोपड़            | १२८                                   |
| 38          | 8            | गदाधरंप्रसादसिंह   | विलासपुर         | ४२२                                   |
| ३२          | २०           | गोपालराव हरि देशमुख  | <b>अहमदा</b> बाद | .१३,१४,१४,१६,१७,१८,३६,४४              |
|             |              | रायबहादुंर जज  | पूना, बम्बई      | \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ |
|             |              | COMPANY TO THE RESERVE TO THE PARTY OF THE P |                  | हेर्भे,हेर्भे ३,हेर्भे,७हेभ,७हेट,७८२  |
| ३३          | £ .          | गोपालराव हरि परिटत   | फर्रुखाबाद       | २२७,२३६,३४१,४३८ ४०६,६८५               |
|             |              | इंस्पैक्टर आफ स्कूलज   |                  |                                       |
| 38          | 8            | गोपालनन्द स्वामी परमहंस  | जयपुर •          | 830                                   |

| 1.          |             |                                 |                        |   |
|-------------|-------------|---------------------------------|------------------------|---|
| क्रम संख्या | उपलब्धपत्र  | नाम                             | पत्र पहुँच का<br>स्थान | <u> </u>                                    |
| રૂપ્        | 8 (         | चिदानन्द साधु                   | सोरों                  | <b>⊏</b> 0१                                 |
| ं ३६        | 8 .         | चीफ कमिश्नर                     | बनारस (१)              | २१६   |
| ३७ -        | . · · · · · | चूरू के सेठोंके सरपंच           | चृरू (राज्य<br>जयपुर)  | ३४४   |
| ३⊏          | o ·         | छगनलाल द्विवेदी श्रीमाली        | मसुदा .                | . રેદ્દેપ્રેક્ષ્ટરું, ક્યું , પૂર્ય, પૂર્ક, |
|             |             |                                 |                        | ६०३, ७७०                                    |
|             |             |                                 |                        |   |
| 38          | 8.          | छेदीलाल जी रायवहादुर            | मेरठ                   | ३६०   |
|             |             | (कानपुर निवासी)                 |                        |   |
| 80          | 8           | ज्गन्नाथ बाबू                   | विलासपुर               | ४२२   |
| 88          | 8           | जगन्नाथ पण्डित बरेली वाले       | श्रम्बगढ्              | ⊏०३   |
| ४२          | 8           | जन्मचरित                        | वम्बई                  | £30   |
| 83          | 8           | जयपुर के परिडत                  | जयपुर                  | ७९५   |
| 88.         | . 8         | जवाहर                           | रावलिपखी               | <b>=</b> 80                                 |
| 84          | 43:         | जवाहरसिंह                       | लाहौर                  | ३४३,३६२,४७३,४७४,४७६,४८६                     |
|             |             | सरदार मन्त्री श्रार्थसमाज       | शहपुरा                 | ४६४,४०४,४२६,७३६,७ <u>४</u> ८, <i>७५६</i>    |
| ४६          | , (es)      | जालिमसिंह जी चौधरी<br>ठाढुर रईस | रूपधनी(एटा)            | ३४४,३४६,४८४,४६१,४७४, ४८४                    |
| . 80        | 9           | C 2                             | 2222                   | 3210  |
|             | ,           | जालमसिंह राणा कच्छ<br>दरवार     | कच्छभुज                | ३२७   |
| .8⊏         | ٧.          | जीवनगिरि स्वामी                 | हरिद्वार               | १५५   |
| ४९          | 8           | जीवनदास लाल                     | तहीर                   | हह,७०,७४,४ <b>०</b> ४                       |
| ų,o         | 9           | जी० वाईज एलवर्ट्स               | वैंडन (जर्मनी)         |   |
| : 48        | 9           | जीवाराम टीकाराम                 | काशी                   | २४१   |
| પ્રર        | 9           | जैसराम गोटीराम                  | कलकचा                  | २०८   |
| પૂર         | 8           | जोशीलाल जी कल्याण जी            | 161.11.01              | ৩३৩   |
| . 48        | 8           | जोसेफ कुक साहब                  | बम्बई                  | ३७६   |
| .તૈત        | 80          | व्वालाद्त्त परिङ्त लेखक         | काशी                   |   |
|             |             | तथा प्रुफ शोधक                  | 403.00                 | २३२,३१२,३१६,६३८,६७०                         |
| પૂર્        | m.          | टिप्पणी                         | 121.45 10.15           | €07,€08,€0 <u>4,€00</u>                     |
|             |             | 10:101                          |                        | १४७,३६९,४८६ (सूचना)                         |

| पण प्र ही.रे० प० राजा पाकसा तार हिर है.रे० प० राजा पाकसा तार है.रे०  | <b>=</b>       | <br>     | नाम                    | पत्र पहुँच का  | पूर्ण संख्या             |
|---|----------------|----------|------------------------|--|--------------------------|
| प्रत प्रकार पाकसा तार त्रिक्षा पाकसा तार त्रिक्ष सिंद्र प्रकार प्रकार त्रिक्ष सिंद्र प्रवादा प्रकार विभिन्न प्रकार विभिन्न प्रवादा के विभिन्न प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार सिंद्र प्रकार प्रकार सिंद्र प्रकार प्रकार सिंद्र | क्रम सख्या     | 57019474 |                        | ल्थान  | 24                       |
| वार  तेजसिंह रावराजा  तेजसिंह रावराजा  विविध्यानोंको  तेजसिंह रावराजा  विविध्यानोंको  तेजसिंह रावराजा  विविध्यानोंको  तेजसिंह रावराजा  विविध्यानोंको  लोधपुर व्याराम वर्मा मास्टर मन्त्री आ० स०  व्याराम पण्डित प्रवन्ध- कर्ता वैदिक यन्त्रालय  विन्चर्था के नियम महाराणा सज्जनसिंह ✓  वीनानाथ गांगोली बाबू दुर्गाचरण जी दुर्गाप्रसाद जी सेठ (राय बहादुर)  विद्याहितैषी अजमेर विद्याहितेषी अजमेर विद्याहित्  | yo             | 8        | ठाकरदास जी जैनी        | गुजरांवाला   | २४४,२७४,२६०,४१२          |
| है ते जिस्ह रावराजा है रे है वियोसोफिस्ट के सम्वादक कियाराम वर्मा मास्टर मन्त्री आठ सठ हे व्याराम वर्मा मास्टर मन्त्री आठ सठ हे व्याराम परिवत प्रवन्ध- कर्त्ता वैदिक यन्त्राजय हे हे है हि है हि है हि है हि है हि है है हि है  | पूद            | 8        | डी.रे॰ ए॰ राजा पाकसा   |  |                          |
| है है श वियोक्षोफिस्ट के सम्पादकर विवास का विवा | 3.8            | <b>C</b> | तार ,                  | विधिस्थानोंको  |                          |
| हर १ वियोग्नेफिस्ट के सम्पादक हैं सुलतान  हर १ ४ व्याराम वर्मी मास्टर मन्त्री आठ सठ व्याराम पिखत प्रवन्ध- कत्तो वैदिक यन्त्रालय हर १ दिनवर्श के नियम महाराणा सज्जनसिंह 🗸 दीनानाथ गांगोली बाबू दुर्गाचरण जी दुर्गाचरण जिल्लाचर विवाध जी दुर्गाचरण जिल्लाचर विवाध जी दुर्गाचरण जी दुर्गाचरण जी दुर्गाचरण जी दुर्गाचरण जी दुर्गाचरण जिल्लाचर विवाध जी दुर्गाचरण जिल्लाचर विव्य जी दुर्गाचरण जिल्लाचर विवाध जी दुर्गाचरण जिल्लाचर विवाध जी दुर्गाचरण जिल्लाचर विव्य जी दुर्गाचरण जिल्लाचय दुर्गाच्य जिल्लाचर दुर्गाचरण जिल्लाचर विव्य जी दुर  | £0             | £        | तेजसिंह रावराजा        |  | ४०७,४११,५१६,४९०,५६६,६०२  |
| हर प्रश्निक प्रप्निक प्रश्निक प्रभ प्रभिक प्रश्निक प्रभ प्रभ प्रभ प्रभ प्रभ प्रभ प्रभ प्रभ  |                |          | थियोसोफिस्ट के सम्पादक | बम्बई  | २१४                      |
| स्थ प्रश्निक यन्त्रालय प्रवास पण्डित प्रवन्ध- कर्ता वैदिक यन्त्रालय प्रवास पण्डित प्रवन्ध- कर्ता वैदिक यन्त्रालय प्रवास महाराणा स्वास गांगीली वाब्रु हुणीचरण जी हुणीचरण जा हुणाचरण जिल्ला जा हुणाचरण जा ह  |                |          | द्याराम वर्मा मास्टर   | मुलतान   | ८७,६४,३१४,३६८            |
| हश श्रि विवास प्रविद्धत प्रवन्ध- कर्ता वैदिक यन्त्रालय हिन चर्ग के नियम महाराणा सज्जनसिंह ✓ ह्या १ हिनानाथ गांगोली बाबू हुर्गांचरण जी हुर्गांवरण जी हुर्गांवरण जी बहादुर) हिन वर्ग प्रसाद जी सेठ (राय बहादुर) हिन हर्गांवरण जी हुर्गांवरण जिल्ला हुर्गांवरण जी हुर्गांवरण जा हुर्गांवरण   |                |          | मन्त्री आ० स०          |  |                          |
| कत्तां वैदिक यन्त्रालय  दिनचर्या के नियम महाराणा सज्जनसिंह \/ हैं दें तीनानाथ गांगोली बाबू हुर्गाचरण जी हुर्गाप्रसाद जी सेठ (राय बहादुर)  हैं दें हिंदि वी खजमेर हैं दें हिंदि वी खजमेर हैं   | 63             | 9 0      |                        | प्रयाग   | ३६८,४०६,६८८,६८८,६८०,६६१  |
| हिश है विनचर्श के नियम महाराणा सज्जनसिंह ✓ हीनानाथ गांगोली बाबू हुर्गाचरण जी हुर्गाक्षमाद जी सेठ (राय बहादुर)  है देशहितेषी अजमेर हारकाप्रसाद जी येजमेर हिर हारकाप्रसाद जी येजमेर (आगरा) बम्बई जिल्हा की ठाकुन समासद राज्यपरिषद नाधुराम नारायण किशन जी मुंशी नाहरसिंह जी महाराजाधिराज राज शाहपुराधीश सिंह जी महाराजाधिराज राज शाहपुराधीश सिंह जी महाराजाधिराज राज शाहपुराधीश सिंह जी सहाराजाधिराज है स्थान की सेठ मारवाड़ी बिसाज निवासी विवास सूचना पंठ स्वाठ है स्थान होनास  | 44             | 10       |                        | N ANT HE   | ६६२, ६६३, ६६४, ६६४, ६६६, |
| सज्जनसिंह ✓ दीनानाथ गांगोली बाबू दुर्गाचरण जी सहादुर)  हि देशहितैषी अजमेर देशहितैषी अजमेर हारकाप्रसाद जी धर्मशी भाई जन्दिकशोरसिंह जी ठाकुर्ग अस्मासद्देश प्रस्ति, प्रस्त  | 5.13           | 0        |                        | उदयपुर   |                          |
| ह्य १ होनानाथ गांगोलो बाबू हुर्गाचरण जो हुर्गाचरण जो हुर्गाचरण जो हुर्गावरण जे हुर | 68             |          |                        |  |                          |
| हुर्गाचरण जी  हुर्गावरण जा  ह |                |          |                        | दार्जी लिंग  | 38                       |
| हुर्गाप्रसाद जी सेठ (राय वहादुर)  हुर्गाप्रसाद जी सेर्गाप्रसाद जा सेर्गाप्रसाद सेर्गाप |                |          |                        |  |                          |
| बहादुर)  बहादुर)  बहादुर)  वहादुर)  वहादुर।  वहादुर)  वहादुर।  वहादुर)  वहादुर।  वह |                |          |                        |  |                          |
| हिंद विशिद्धतेषी ख्रजमेर हारकाप्रसाद जी प्रेतमाद्युर (देखो सुन्नताल नाम)  ७० १ धर्मशी माई चन्दिकशोरसिंह जी ठाकुर पर समासद राज्यपरिषद नाधुराम नारायण किशन जी मुंशी नाहरसिंह जी महाराजाधिराज शाहपुराधीश  ७६ १ नियोग का मसविदा निर्मयराम जो सेठ मारवाड़ी विसाख निवासी निवास सूचना पंठ स्वाठ पर स्वाठ पर स्वाठ पर स्वाठ पर स्वाठ पर स्वाठ स्वाठ पर स्वाठ  | ६७             | 85       |                        | विवासायु   |                          |
| हैंद है वेशहितेषी श्रजमेर हारकाप्रसाद जी पेतमादपुर (श्रागरा) वश्य पंतमादपुर प्तमादपुर प्तमादपुर |                |          | बहादुर)                |  | ४६१, ४६७,४७०, ४८७, ४८२,  |
| हारकाप्रसाद जी  प्रेस्त विस्ता हिए (आगरा)  प्रेस्त विस्ता माई  नन्दिकशोरसिंह जी ठाकुर  समासद राज्यपरिषद नाशुराम  प्रेस नारायण किशन जी मुंशी  नाहरसिंह जी महाराजाधि- राज शाहपुराधीश  प्रेस वियोग का मसविदा  नियोग का मसविदा  नियोग को सेठ मारवाड़ी  बिसाज निवासी  निवास सूचना पं० स्वा०  |                |          |                        |  |                          |
| हुर १ द्वारकाप्रसाद जी पेतमादपुर (आगरा)  पर प्रभिशी माई  नन्दिकशोरसिंह जी ठाकुर  पर प्रभासद राज्यपरिषद नाशुराम  नारायण किशन जी मुंशी  नाहरसिंह जी महाराजाधि- राज शाहपुराधीश  पर प्रभासद राज्यपरिषद नाशुरा नारायण किशन जी मुंशी  नाहरसिंह जी महाराजाधि- राज शाहपुराधीश  पर प्रभासवदा  नियोग का मसविदा  नियोग का मसविदा  विसाज निवासी विसाज निवासी  विसाज निवास मुचना पं० स्वा०  पेतमादपुर (आगरा)  वस्वई  प्र०७,४१०, ४०६, ४४४, ४६६,  ४६०, ४००, ४०६, ४४४, ४६६,  ४६०, ४६०, ४४०, ४४०, ४४०, ४४०, ४४०, ४४०,  | <b>&amp;</b> 5 |          | देशहितेषी अजमेर        |  | (देखी मुन्नलाल नाम)      |
| प्रश्नि स्वास्त क्ष्मित क्ष्म |                | 9        | द्वार्काप्रसाद् जी     |  | ३१५                      |
| ज्ञ द तन्दिकशोरसिंह जी ठाकुर जयपुर जयपुर प्रश्र १४४, १६६, १४४, १६६, १४४, १६६, १४४, १६६, १४४, १४६, १४४, १६६, १४४, १४४  |                |          |                        | ALCOHOL: NO CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE P |                          |
| ७२ १ ताथुराम वस्त्र राज्यपरिषद् नाथुराम वस्त्र राज्यपरिषद् नाथुराम वस्त्र राज्यपरिषद् नाथुराम वस्त्र राज्यपिक्ष क्ष्म जी मुंशी नाहरसिंह जी महाराजाधि-राज शाहपुरा धीश (मेवाङ) भरठ प्रच्या का मसविदा नियोग का मसविदा किसाउ निवासी विद्या विसाउ निवासी निवास सूचना पंठ स्वाठ रिवास का स्राह्म प्रचाठ स्वाठ रिवास का सुचना पंठ सुचना सुचना पंठ सुचना सुचना सुचना पंठ सुचना   | vo             | 8        |                        | वम्बई  |                          |
| ७३       १       नाशुराम       बम्बई       २२         ७४       १४       नाहरसिंह जी महाराजाधि- राज शाहपुराधीश       शाहपुरा (मेवाङ)       ३२२         ७६       १       नियोग का मसविदा नियोग का मसविदा निर्मयराम जो सेठ मारवाङ्गी बिसाउ निवासी कितास सूचना पं० स्वा०       मेरठ फर्छ्लाबाद       २४४,३३१,३३६,३४७,३४६,६६४         ३२२       ३२२,३५,३६,३४०,३४६,६६४       ३२२,३५,३६,४२२,४४,४०३,४२२,४४,४०३,४२२,४४३  | ७१             | C        | नन्दिकशोरसिंह जी ठाकुर | जयपुर  | ४०१.४१०, ४०६, ४४४, ४६६,  |
| ७४ १४ नारायण किशन जी मुंशी नाहरसिंह जी महाराजाधि- राज शाहपुराधीश  ७६ १ नियोग का मसविदा निर्भयराम जी सेठ मारवाङ्गी बिसांच निवासी निवास सूचना पं० स्वा०   | ७२             |          |                        |  |                          |
| ७५ १४ नाहरसिंह जी महाराजाधि-<br>राज शाहपुराधीश (मेवाड़) ३९४,४२१,४३६,४०३,४२२, ४१३<br>४२७,४३३, ४४४, ४४७, ५४७,<br>५७८,७१४,७३८<br>नियोग का मसविदा<br>निर्भयराम जी सेठ मारवाड़ी<br>बिसाड निवासी<br>७८ ६ निवास सूचना पंठ स्वाठ  | ७३             | 8        |                        |  |                          |
| राज शाहपुराधीश  १ नियोग का मसविदा  किसीयराम जी सेठ मारवाड़ी  बिसाउ निवासी  कितवास सूचना पंठ स्वाठ  (मेवाड़)  प्र२७,४३३, ४४४, ४४७, ५७७, ५७७, ५७०, ५००, ५००, ५००, ५००, ५०   | n8.            | 8        |                        |  |                          |
| ७६       १       नियोग का मसविदा       मेरठ       २६८         ७७       ६       निर्भयराम जो सेठ मारवाङी       फर्रुखाबाद       २४४,३३१,३३६,३४७,३४६,६६४         बसाउ निवासी       ३२,३५,३६,४२,४४,५०;४२   | νχ             | १४       | नाहरसिंह जी महाराजाधि- | The second secon |                          |
| ७६     १     नियोग का मसविदा     मेरठ     २६८       ७७     ६     निर्भयराम जी सेठ मारवाङी     फर्डखाबाद     २४४,३३१,३३६,३४७,३४६,६६४       ७८     ६     निवास सूचना पं० स्वा०     ३२,३५,३६,४२,४४,४४,५०;४२  |                |          | राज शाहपुराधीश         | (मेवाड़)   |                          |
| जिर्भयराम जी सेठ मारवाङी फर्छखाबाद २४४,३३१,३३६,३४७, ३४६,६६४ बिसाउ निवासी निवास सूचना पंठ स्वाठ ३२,३५,३६,४२,४४,४४,५०;४२  | wg             | 9        | नियोग का ससविदा        | मेरठ   |                          |
| बिसाउ निवासी <sup>°</sup> । ३२,३५,३६,४२,४४,५०,५२  |                |          |                        | 0  | 28x,338,338,380, 3x6,668 |
| ७८ ह निवास सूचना पं० स्वा० ३२,३५,३६,४२,४४,५०,५२   |                | 4        |                        |  |                          |
|   | <b>VE</b>      | 3        |                        |  | ३२,३५,३६,४२,४४,४५,५०;५२  |
| 3.1. 3.11/2/11  |                |          | द्यानन्द् सर्खती       |  | <b>6</b> 2               |

| क्रमसंख्या | <b>उपलब्धपत्र</b> | - नाम                        | पत्र पहुँच का<br>स्थान | नाम संख्या   |
|------------|-------------------|------------------------------|------------------------|--|
| ٥٩         | 8                 | नीलक्ष्यठ शास्त्री           | -                      | •  |
| Co         | ४७                | पारसल (पुस्तक आदि के)        | प्रयाग                 | Cox  |
|            |                   | सरसस्य (उत्तयक आहर क)        | विविध स्थानके          | €४४,६४६,६४८,६५७,६४६,६६०<br>६६१:६७३,६७४,६८०,६८८,६८३<br>६८६,६८७,६८८,६८८,७०२<br>७०३,७०६,७०७,७०८, ७१४,<br>७१६,७२०,७२१,७२२,७२३,७२६<br>७२६,७४१,७४८,७४०,७४१,७७२ |
| = ₹        | 8.                | पीटर डैविसन                  | स्काटलैएड              | ७७३,७७७,७७८,७८७,७८६,७६०<br>६२८   |
| ⊏२         | 8                 | पूर्णानन्द स्वामी            | वस्वई                  |  |
| 43         | २                 | पोहलोराम जी लाला             | गुजरांवाला             | २२   |
|            |                   | मन्त्री त्रा० स०             |                        | ७३,८०,२८८  |
| ⊏8         | 8                 | प्यारेनाल जी                 | लाहीर                  | १३७  |
| Σ¥         | २                 | प्यारेलाल जी मुंशी           | चांदापुर               | <b>⊏</b> १४,⊏१ <u>५</u>  |
| □€         | 2                 | प्रतापसिंह जी महाराजा मंत्री |                        | ¥₹⊏,¥⊏8  |
| C0         | 8                 | प्रभुदयाल जी खत्री           | रावलिपखी               | <b>⊏</b> १७  |
| CC         | २                 | प्राग्णजीवन लाल काह्नदास     | बम्बई                  | 8 <b>x</b> ₹,⊏8₹   |
| 3=         | X                 | प्रश्न-उत्तर् सम्बन्धी       | श्रनेकस्थानों पर       | <i>७६४,७६६,</i> ⊏१०,⊏३८,⊏३ <i>६</i>  |
| 6.0        | 8                 | फतेहसिंह जी राजराणा          | देलवाड़ा(मेवाड़)       | 988  |
| 88         | 8                 | फर्रुखाबाद के पौराणिक        | फर्रखावाद              | <b>□3</b> □  |
| ६२         | 9                 | परिडत 🖊<br>फेयर              | वम्बर्ड                | t2010  |
| 83         |                   | वरुतावरसिंह प्रवन्धकर्ता     | काशी                   | 880  |
|            |                   | वै० यं०, सम्पादक आर्थद्रपैगा | शाहजहांपुर             | १४०, २३३,२३४,२३४,२३६   |
|            |                   |                              |                        | ॱरेरं७,रे४०,रे४र,रे४३,२४७<br>२४⊏,२४१,२४२,२४३,२४७,२६०   |
|            |                   |                              |                        | १६१, १६४, १६६, २७१, २७४ २०७  |
|            |                   |                              |                        | २७८,२८६,२६७,३२१,३२४,३२६<br>३३२,३३७,६४०,६४१,६४२,६४४   |
|            |                   |                              |                        | विषयं, विष्ठ द्विष्ठ हिं प्रशृहिप्रशृहिप्र   |
| 83         | १ ब               | लदास <sup>9</sup> जी         | लाहौर                  | ξXC  |
| 84         |                   | लदेवसिंह शर्मा               | 2                      | ux   |
| 33         |                   | लदेवसिंह                     | देहरादन                | 88<br>EUE  |
| - C4       | ) [ ] [           | जनगण्                        | देहरादून               | exe ·  |

१. सम्भवतः यह नाम बल्लभदास हो। बल्लभदास के नाम पत्र पूर्ण सं० २०६ का भी है।

| <b>ऋ</b> मसंख्या | 8     | नाम                      | पत्र पहुंच का<br>अस्थान | नाम रंख्या                |
|------------------|-------|--------------------------|-------------------------|---------------------------|
| 9.2              | . 8 . | बल्लभदास देशी            | लाहौर                   | २०१                       |
| - <i>v3</i><br>  |       | बहादुरसिंह जी राव मसूदा  | सूदा                    | ४३६,५२४,५६३               |
|                  |       | नरेश                     | (श्रजमेर)               |                           |
| 33 .             | 8     | चालकराम वाजपेयी          | श्रजमेर .               | <b>४</b> ६६               |
| 800              | 34    | बिहारीलाल जी परिडत       | जयपुर                   | ४६०,४६६,५७२               |
| १०१              | . 9   | बिहारीलाल                | इन्दौर                  | <b>૭</b> ૭ૄ૾              |
| १०२              | 2.    | बैचरभाई                  | श्रहमदाब                | १६,१७                     |
| १०३              | 88    | ब्लेवट्स्की मैंडम 🗸      | त्र्रमेरिकादि           | ७६,१७६,२१४,२५८,२६६,३४४    |
|                  |       |                          |                         | ३६४,३६६,६३४,⊏३६,⊏३७       |
|                  | 27    |                          |                         |                           |
| ४०४              | २     | भगवती माई                | हरियाना (पं०)           |                           |
| १०४              | 8     | भागराम पिंडत             | <b>अ</b> जमेर           | שבצ                       |
| १०६              | 9.    | भागवत अशुद्धिपत्र        |                         | 985                       |
| १०७              |       | भारतमित्र सम्पादक        | कलकत्ताः                | (देखो मनोहरदास खत्री नाम) |
| १०८              | 8     | भारतसुद्शाप्रवतेक संपादक | फर्रखवाद                | ४४३                       |
| 308              | 88    | भीमसेन परिंडत लेखक       | काशी, प्रयाग            | २५४,२८२,२८४,२८५,२६१;२६३   |
|                  |       | तथा प्रूफ शोधक           |                         | ४४१,६६०,६६१,७०६,७८८       |
| ११०              | २     | भूपालसिंह ठाकुर (रिसाल-  | ऐख (श्रति-              | ⊏६,१२४                    |
|                  |       | दार) रईस                 | गढ़)                    |                           |
| १११              | २     | भोलानाथ जी               | श्रहमदाबाद              | १ <b>६,१७</b>             |
| ११२              | . 8 - | मजिरट्रेट काशी           | काशी:                   | २०७                       |
| ११३              | . 8   | मथुरादास जी              | मियांमीर                | ७१३७                      |
| 998              | 8     | मनसुखराम जी              | श्रमृतसर्               | 38                        |
| ११४              | . 8   | मनोहरलाल जी मुंशी        | पटना                    | २२१ .                     |
| ११६              | 2     | मनिश्रार्डर-सूचना        | वम्बई                   | ७३२,७४७                   |
| ११७              | ·×    | मनोहरदास खत्री सम्पा०    | कलकत्ता                 | ४५२,४५६,४६१,७०१,७६१       |
|                  |       | भारतिमत्र                |                         |                           |
| ११८              | 8     | मन्त्री-द्यार्थसमाज      | शाहजहांपुर              | १६९                       |
| 388              | 8     | 27 27 27                 | % मृतसर                 | १७०                       |
| १२०              | 8     | " " "                    | सर्वत्र                 | 1 808                     |

| क्रम संख्य | उपलब्ध पत्र | नाम                                     | पत्र पहुँच का<br>स्थान | पूर्ण संख्या  |
|------------|-------------|---|------------------------|---|
| १२१        | 3           | महादेव गांविन्द रानडे                   | पूना                   | ३२८,६४३,६४४   |
| १२२        | २           | महीपतिराम शर्मी                         | श्रहमदाबाद             | १६,१७   |
| १२३        | २४          | माघोलाल (प्रसाद) जी                     | दानापुर (पटना)         |   |
|            |             | मन्त्री आ० स०                           |                        | 1. २०६,११२,१२३,१४६,१६०,१६४                                    |
| 0011       |             |   |                        | १६८,१६३,१६४,१६६,२०४,२०४                                       |
| १२४<br>१२५ | 88          | मुख्तियारनामा                           | अलीगढ़ .               | रे⊏३,६११,६१२,६१६,६३१<br>१७३                                   |
|            |             | मुञ्जालाल परिडत सं० देश-<br>हितेषी      | श्रजमेर                | च,६६३६६,३७८,३६०,४३०,४३३                                       |
| १२६        | 9           | मुकुन्दसिंह ठाकुर                       |                        | .४६८,४२८,४३६,४४४,४७६  |
|            |             | युरुप्ताति ठाकुर                        | छलेसर                  | € १८  |
| १२७        | - X         | मुर्म्मद कासिम अली                      | (अलीगढ़)               |   |
|            |             | मौलमी, देवबन्दी                         | रुड़की                 | ६२,⊏२४,⊏२४,⊏२६,⊏२७  |
| १२८        | २४          | मूलराज जी एम. ए. राय-                   | गुजरात तथा             |   |
|            |             | बहादुर                                  | लाहौर                  | ७४,८८,६०,६४,६६,६७,६८,१०१<br>२२२,२४६,२६२,२८१,३०३,              |
|            |             |   | CIIQIC                 | ३०८,३१८,३४०,३४७,३७१,३७३                                       |
| १२६        | 8           | मोहनलाल जी प्रधान आ०स०                  | लाहौर                  | ४०३,६१६,६१७,६४२,६४८,७०२                                       |
| १३०        | २           | मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या               | <b>उद्यपुर</b>         | <b>□</b>  |
|            |             | मन्त्री परोपकारिग्री सभा                | 7.3                    | ४८८,७४२ - :   |
| १३१        | 8           | यजुर्वेदभाष्य समाप्ति सूचना             |                        | <b>8</b> ¥⊂   |
| १३२        | 8           | यशवन्तसिंह जी राठौर                     | जोधपुर                 |   |
|            |             | महाराजा जोधपुर नरेश                     |                        | <b>४४८,४६७,४७६,४८८</b>  |
| १३३        | 8           | रघुनाथसिंह ठाकुर                        | जयपुर                  | 887   |
| १३४        | 8           | रङ्गाचार्य                              | वृन्दावन               | x   |
| १३४        | २           | रणजीवसिंह ठाकुर जागीरदार                | अचरौल                  | ११५,७88   |
| १३६        | २           | रमाबाई परिडता                           | (जयपुर)                |   |
| १३७        | 8           | रमादत्त त्रिपाठी                        | कलकत्ता                | २३८,२४० ⋅   |
| १३८        | 8           | रसीद (वेदभाष्य के चन्दे की)             | नैनीताल                | 800   |
| १३६        |             |   | मथुरा                  | ३०५   |
|            |             | राजराणा जी मालावाड्<br>नरेश             | भालावाङ्               | <b>484</b>  |
| १४०        | १३          | रामशरणदास जी सेठ मन्त्री                | मेरठ                   |   |
| 1          |             | प्रथम परोपकारिग्री सभा                  |                        | १४१,२८७,३४२,३४१,३७४,  |
|            |             | 111 111 1111111111111111111111111111111 |                        | દૈદૈ <sup>ર</sup> ,દૈદૈપ,દૈદૈદૈ,દૈબદ,દૈ=૧,<br>દૈ⊏દૈ,બ૦૨,બરે૪, |

| क्रम संख्या | <b>उ</b> पलब्धपत्र | नाम   | पत्र पहुंच का<br>स्थान | पूर्णसंख्या  |
|-------------|--------------------|---|------------------------|--|
| 888.        | 8                  | रामसनेहियों के महन्त                        | शाहपुरा                | ७८७  |
| १४२         | २४                 | रामाधार वाजपेयी ट्रेजरी<br>क्रक             | तखनऊ ्                 | २४,२८,२६,३०,३१,३४,३८,४७<br>'४७,४८,६०.६३,६६,४०८,११३,<br>११६,१२०,१२४,१८४,(१),१८४   |
| १४३         | . 9                | रामानन्द ब्रह्मचारी (लेखक) स्वामी जी        | फर्रुखाबाद             | (२), २००,२⊏०,३⊏४,७०४<br>५२४  |
| 788         | 9                  | रिवाड़ी के परिडत                            | रिवाड़ी                | ⊏38  |
| १४४         | १२                 | रूपसिंह जी सदीर (ट्रेजरी                    | कोहाट(गुजरां-          | २४६,३७०,३७३,३७७,२८२,   |
| 104         |                    | क्लार्क)                                    | वाला)                  | ४०७.४२३.४३१,४४१,४४७,<br>४७४,५४०  |
| १४६         | 8                  | लक्ष्मण् शास्त्री                           | बम्बई                  | रूर्<br>रूर्   |
| 180         | . 8                | लक्ष्मणदास जी चौधरी                         | अमृतसर                 | <b>२१७</b>   |
| १४⊏         | ×                  | (म्वामी लक्ष्मणानन्द जी)<br>लालजी वैजनाथ    | वम्बई                  | <b>२२,५३४,७३१,७</b> ४७,७६३   |
| 188         | रे                 | लीलाधर हरिदास सेठं                          | वम्बई                  | १२२,४६२  |
| १४०         | ą                  | प्रधान श्रा० स०<br>लेफ्टिनेस्ट गवर्नर पंजाब | लाहीर                  | २१४,६०⊏,⊏१६  |
| १४१         | 8                  | वनमाली सिंह (लेखक<br>स्वामी जी)             | काशी                   | २६   |
| १५२         | Хo                 | विज्ञापन पत्र                               | .श्चनेकत्र             | 2,8.5,8,9,7,4,48,5,6,5,6         4,67,64,66,5,7,5,7,8         8,64,86,8         8,85,85,8         8,85,85,8         8,86,85,85         8,86,85         8,56,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8,76,85         8 |
| १४३         | 8 :                | विनयमाध्व                                   |                        | 85   |
| १५४         | 2                  | विपच्चीपत्र-श्रशुद्धि-संशोधन                |                        | X3   |
| १४४         | २                  | विरजानन्द जी स्वामी                         | मथुरा                  | ७६२,७६३  |
| १५६         | . 8                | (स्वामी जी के गुरु)<br>विशुद्धानन्द स्वामी  | हरिद्वार               | 878  |
| १५७         | . 8                | विश्वनाथ जी                                 | जयपुर                  | 350  |
| १४८         |                    | विश्वेश्वरसिंह बाबू                         | नैनीताल                | . २४६,४१४,५३२,५३७, ५४३,  |
|             |                    | (वैदिक यन्त्रालय)                           | प्रयाग                 | ५६५,५७३,५⊏३  |

| क्रम संख्या | उपलब्ध पत्र | ' नाम  | पत्र पहुँच का<br>स्थान  | पूर्ण संख्या   |
|-------------|-------------|--|-------------------------|--|
| १४९         | 8           | वृद्धिचन्द जी  | गसुदा(श्रजमेर)          | X88  |
| १६०         | 2           | वेदभाष्यसम्बन्धीपत्र                                   | लाहौर                   | 80,88  |
|             |             | रजिस्ट्रार पंजाव यूनिवर्सिटी                           |                         |  |
| १६१         | २           | व्यास जी जयकुष्ण वैद्य                                 | वम्बई                   | ⊂ಂ <b>€</b> ,⊂ಂಅ   |
| १६२         | १२          | शादीराम जीरईस मेरठवाले                                 | काशी                    | २६४,३०९,३१३,३२५,३३० ३३३  |
|             |             | प्रवन्धकर्ता वैदिक यन्त्र।लय                           |                         | ६७३,६७६,६८०,६८२,६८३,६८४  |
| १६३         | . 6         | शालियाम परिंडत मन्त्री                                 | विलासपुर                | ४२२  |
|             |             | त्रा० स०   | ्(सी.पी.)               |  |
| 888         | 2 2         | शिवनारायण् वाबू<br>शिवप्रसाद जी राजा                   | मेरठ<br>काशी            | ३ <b>८१</b><br>२३०,२३१   |
| १६५         | 9           | शिवसहाय जी गौड़ मन्त्री                                | कानपुर                  | 0  |
| १६६         | ,           | आ० स०  | 111.136                 |  |
| १६७         | 3           | शुकदेवप्रसाद जी  | नसीराबाद                | २१८,७७६,८३३  |
| १६८         | २           | शुद्धि त्रशुद्धि पत्र                                  | काशी                    | <b>€</b> 08,€⊏8  |
| १६६         | २           | शरसिंह जी ठाकुर  | करणवास                  | २६१,५१⊏  |
| १७०         | २१          | श्यामजी कृष्ण वर्मा परिडत∨                             | वम्बई लन्दन             |  |
|             |             | प्रवन्धकर्ता वेदभाष्य तथा                              |                         | १३०,१३३,१३४,१३४,१३८,१३६<br>१४४,१४४,१४६,१७७,२४४,२७६                   |
|             |             | प्रो० श्राक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी                         | Profit Vall             | ६१३,६२६,६२७  |
| १७१         | 88          | श्यामलदास जी कविराज                                    | <b>बद्यपुर</b>          | ३६७,४०८,४१६,४२०,४२१,४६७  |
|             |             | म्बर्गाच्याः च्या च्या व                               |                         | €€0,€€=,08₹,0€₹,0=₹  |
| १७२         | 8           | श्यामसुन्दरदास जी साहु                                 | मुरादावाद               | ३००,४६३,४६६,४१७,४३१,६६७  |
| १७३         | 8           | श्राद्ध पर लेख   | बम्बई                   | २२६  |
| १७४         | २           | श्रीप्रसाद जी बावू मोहतिम<br>बन्दोत्रस्त               | जयपुर                   | २१६,२२४  |
|             |             | सज्जनसिंह जी महाराणा                                   | ฉรากร                   | ३⊏३,४४६,४६३,७१७,७३४,७६०  |
| १७४         | •           | मेवाड़ाधीश   | <b>चद्यपुर</b>          | 44104614411-1-1-141-4  |
|             |             |  | อะมกร                   | <b>४</b> ४⊂  |
| १५६         | .8          | सवलसिंह ठाकुर  | जदयपुर<br>साम्बन्धिमानी | <b>⊏</b> १⊂  |
| १८७         | 8           | सम्बद्गिरि स्वामी                                      | रावलपिएडी               |  |
| १७८         | CO          | समर्थदान जी मुन्शी प्रबन्य-<br>कर्त्ती वैदिक यन्त्रालय | मुम्बई, नेठवा           | ११७.१२६,१४८,१४१,१४२१४३,<br>१४६,१६३,१६६,१६७,१७१,१७२                   |
|             |             | कत्ता वाद्क यन्त्रालय                                  |                         | १७४,१७६,१८०,१८१,१८२,१८३  |
|             |             |  | प्रयाग श्रजमेर          | 1-0(1), 1,1-0,10, 101  |
|             |             |  |                         | १६२,१६६,१६७,१६⊏,२० <b>६</b> ,२१२<br>२२४,३४२,४२०,४२५,४२ <b>६</b> ,४२७ |

| क्रम संख्या | उपलब्ध पः | नाम                            | पत्र पहुँच का<br>स्थान | पूर्ण संख्या  |
|-------------|-----------|--------------------------------|------------------------|---|
|             |           |                                |                        | 8₹=,88₹,88₹,888,88¥,886<br>8₹=,88₹,8₹8,8€,8€₹,86₹<br>8=0,8=€,8=6,8€=,800<br>\$08,880,88₹,880,48₹,8€8                      |
|             |           |                                |                        | ४६८,४७०,४७१,४८४,४८४,६०१<br>७१४,७२०,७२१,७२२,७२३,७२६<br>७२६,७३३,७४१,७४४,७४७,७५०<br>७४१,७७२,७७३,७७४,७७७,७८०<br>७८३, ७८०,८३१, |
| १७६         | २         | सहजानन्द् स्वामी               | ?                      | जह है, जज १   |
| १८०         | 9         | सही करने का पत्र गोरचार्थ      | सर्वत्र                | ३८७ ं भू  |
| १⊏१         | 3         | साईदास जी                      | लाहौर                  | ७४,=१,७=६   |
| १⊏२         | 2         | सिद्धकरण जैन साधु              | मसुद्।                 | <b>⊏</b> ₹8, <b>⊏</b> %0  |
| १⊏३         | 8         | सिनेट मिस्टर, संम्पा०          | प्रयाग                 | १२३   |
|             |           | . पयोनियर                      | 197 9/19               |   |
| १८४         | 2         | सुखदेवगिरि स्वामी              | हरिद्वार               | १५६   |
| १८५         | 80 .      | सुन्दरलाल पिंडत पोस्ट-         | प्रयाग                 | ३७६,३८६,३६७,४०८, ४१४,   |
|             |           | मास्टर जनरत, मुख्य             | Transfer to            | ४४६.५१२,६४३,७०४,७१०   |
|             |           | प्रबन्धकर्ता वैदिकयन्त्रालयं   |                        | 180   |
| १⊏६         | १६        | सेवकलाल कृष्णदास मन्त्री       | वस्बई                  | र⊏३,३२६,३४३,३७४,४४२,४६६   |
|             |           | त्रा० स०                       |                        | हेह्- हेह्हेह्रह्-७,७२४,७२४,  |
| 800         | 9         | सेवाराम मुन्शी नहर जिलेदार     | मेरठ                   | . ७३०;७३२,७ <u>४</u> ४;७६६; ८४१   |
| १८८         | 9         | रिमथ मिस्टर                    |                        | १०७   |
| १८६         | 2         | स्वीकारपत्र                    | बम्बई                  | 880   |
| 880         | 2.        | हरिवंशलाल मुन्शी स्टार प्रेस   | मेरठ, खद्यपुर          | २६४,४७⊏   |
| 188         | 8         | हरिश्चन्द्र चिन्तामणि प्रवन्ध- | काशी                   | १२ .  |
| 161         | 0         | कत्ती वेद्भाष्य                | बम्बई                  | २१,३२,६४,११८,१२४,६२०,   |
| १६२         | 8         | हिसाब के कागजात                | फ्रस्वावाद             | ६२१,६२२,६२३<br>३६१  |
|             |           | (बख्तावरसिंह के)               | 4.501.41.4             | 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1  |

## ऋषि दयानन्द के स्वरचित ग्रन्थों

के विषय में

## विवरण-संग्रह

[ युधिष्ठिर मीगांसक, मोतीझील, काशी ]

श्रमोच्छेदन तैयार हो गया है, ज्वालादत्त के नाम से छपेगा २४६ (भीमसेन के नाम से छपा) छप चुका है २८५॥

अष्टाध्यायीआध्य — बनाते और छ्याने का विज्ञापन प्र। १००० प्राहक होने पर छपेगा ९५। तैयार होने लगा है १०४। आरम्म हो गया है १०५। चार अध्याय अभी तैयार हुए हैं १४०, १४१। शीघ छपने वाला है १८०॥

आतमचरित—२१। देवनागरी और श्रंत्रेजी में करवा कर भेजेंगे १५९। थोड़ा सा लिखकर भेज ने हैं १५९। उनका समाचार (पत्रों) में छापने का समय श्रा गया है १५९। श्रसंभव वार्ते नहीं लिखीं १६५। यही एक काम होता तो लिखवाकर भिजवा देते १६९॥

श्रायभिविनय — बनने के तैयारी है २५ । २ अध्याय वन गये ४ आगे बनने हैं २८ ॥ आयोदिश्यरत्नमाला — आजकल में तैयार हो जाएगा ६४॥

कुरान हिन्दी — पूरा तैयार है, छा गा नहीं गया १४०, १४१। जितना शोधा जाये भेजदें १८१॥ गोकरुणानिधि — छप गई २८५। अंग्रेजी अनुवाद के विषय में — शोध भेजें २८०। विलम्ब क्यों हुआ २९१। समय निकालना चाहिये ३०४। वम्बई में और लोगों से [अंग्रेजी] बनवानी पढ़ी ३२६॥ गौतम अहल्या की कथा — ३५८। (संत्रेप में पू० ३७)॥

जालन्धर की बहस - ३३०॥

पञ्चमहायज्ञविधि (संध्यामाष्य ) प्रथम सं० — तैयार होने को चहै है २५ । छपवाया गया है २०॥

पञ्चमहायज्ञविधि द्वितीय संस्करण - यह संस्करण संशोधित और परिवर्धित है ७७। तैयार हो गई है ७८॥

पोपलीला = ३३०। एक पुस्तक भेजा है ३४०॥ प्रतिमा पूजन विचार--( विज्ञापन रूप में ) प्रा

१. यह संख्या पृष्टों की है।

प्रश्नोत्तर उदयपुर-मौलवी से, लिखे जाते हैं ३६२॥

प्रश्नोत्तरी (जगन्नाथ कृत) का उत्तर--भेज चुके ३३६ । विस्तार से लिख के भेजते हैं ३४४। (टिप्पणी देखो ३४४ टि०३)॥

भ्रमोच्छेदन जब तक प्रकाशित न हो किसी को न दिखाना १९२। शिवप्रसाद का खराडन तैयार कर लिया है १९०। २४ जून को भेजा था १९५। आठ दिन में छप सकता था १९५। कहां कहां भेजना १९२। जहां तहां पहुँचा वा नहीं १९४॥

मेला चांदपुर - उर्दू में ७ । १२, ४८८ से पूर्व छपा था ९० । उर्दू हिन्दी में अलग २ क्यों नहीं छापा ? २१४ । उर्दू हिन्दी में सिमिलित सितम्बर १८० में छपा था ॥

वेद-भाष्य के लिये शेयर वेचना २९। श्रारम्भ माद्र ग्रु० १ सं० १९३३ से हुआ ३३। श्रपू-र्वता का विज्ञापन ३३। माद्र ग्रु० सं० १९३३ से मार्ग० ग्रु० १५ (३॥ मास में ) दस हजार म्होक प्रमाण बना ३५। दो तीन घण्टे में २४ गायत्री या १२ त्रिष्टुप् या १० जगती छन्दवाले मन्त्रों का भाष्य बनता है ४००॥ मैक्समूनर श्रोर मोनियर विलियम के पास भेजा जाता था १५०॥

अंग्रेजी अनुवाद —१४४,१४७,१५८॥

अशुद्धि - छापना अशुद्ध न हो २२९। भाषा बहुत कांट छांट रक्खी है २६७। नमूने के तौर पर लिख-कर भेजते हैं २६३, २७६। पद छूटना भाषा बनाने और शुद्ध लिखने वाले की मूल है ३६०। पद की गणना रामानन्द और दूसरे पिखत से गिनाये थे,कोई पद रह गया होगा ३९४। (भीमसेनने) कई के अर्थ छोड़ दिये, कई पद अन्त्रय में छोड़ दिये, कई आगे पीछे कर दिये ३९६। ज्वालाद्त्त पोपलीला न घुसेड़ दे ४३२। ज्वालाद्त्त नई (संस्कृत से भिन्न) भाषा बनाता है, गोलमाल देवता शब्द रख दिया ४३४। पदार्थ कुछ और है और भाषा कुछ ही बनाई गई आदि ४५६।।

नमूने का अंक—शीघ्र निकलेगा ३२। पौष वदी ४ सं० १९३९ तक छप गया ४० ॥

ऋग्वेदादिमाण्यभूमिका —नवम्बर सन् १८७६ के मध्य तक बन गई थी (नोट) ३९।

संस्कृत और हिन्दी मिलाकर ८ हजार स्त्रोक प्रमाण है ३९। लगभग (छपना) समाप्ति
को आ रही है ६६॥

ऋग्वेदभाष्य—माघ वदी १३ गुरु १६३४ तक १० सूक्त तक बना ८५ । ८६ सूक्त ६ मन्त्र से आगे १११ [सूक्त] मन्त्र तक भेजते हैं २०४ । छठा मण्डल पूरा हो गया ४५६ । बाकी १ वर्ष में पूरा हो जायगा ४५६ ।।

यजुर्वेदमाष्य—माव वदी १३ गुरु १९३४ तक १ अध्याय बन गया ८४। सातवां अध्याय बनता है २२९। ७ वें अध्याय के २३ वें मन्त्र का भाष्य हो रहा है २३४। ८ वां अध्याय पूरा होने को आया २४६। अ० १३ मं० ४७-५२ जहां जहां मांस भन्नण् था ठीक कर दिया ३९६। कोई रह गया हो तो काट देना ३९६। मार्ग छ० १ सं० १९३९ को समाप्त हुआ ३६८॥

साम अथर्व वेदभाष्य—१, १ वर्ष लगेगा ४५७।। वेदविरुद्धमतखएडन - छप् गया २५। मया निर्मितः ९९॥

वेदान्तिध्वान्त-निवारण-मया निर्मितः ९९॥

व्यवहारभातु—भीमसेन से शुद्धाशुद्धपत्र लिखवाकर लगवा दो १९०। (सामान्य १८९,१९५)॥ शिचापत्रीध्वान्त-निवारण—शिचा की पुस्तक छपी की नहीं १ २४। गुजराती भाषा व्याख्या हो गई २८॥

संस्कारं विधि — प्रथम सं० — बनने की तैयारी हो रही है २५ । शीघ वनेगी २७,२८ । बनाने के लिये पिडत की खोज हो रही है ३० । मांसादि का वर्णन तत्तद्यन्थों का मत जताने के लिये है ९४ ।

संस्कारिविधि — द्वितीय सं० — बना सोधकर भेज देंगे ४३३ । अमावस्या (भाद्र १९४०) तक बन चुकेगी ४५७ । छपने के लिये १-४७ पृष्ठ भेजे हैं ४७१, ४८१ ॥

संस्कृतवाक्यप्रवोध — काशी के पिंडतों का आद्येप २२१। के एक ठिकाने आशुद्ध भी छपा है २२१। आशुद्ध छपने के कारण २२१। मिध्या आद्येपों का उत्तर २२२। छपने में एक अशुद्ध ३९९।।

सत्यार्थप्रकाश — प्रथम सं० — सितम्बर १८७४ तक लिखकर समाप्त हो गया था (देखो टिप्पणी) २२। १३वां समु० कुरान मत समीचा और १४ वां० समु० गौरण्ड मत समीचा था २२। हस्तलेख के १४ समु० के अन्त में लिखा विज्ञापन २०। कुरान के अध्याय (१३ समु०) का शोधन २४। बाइवल का अध्याय (१४ समु०) छापने के आज्ञा २४। (१३,१४ समु० समु० के शोधने में देरी होने से न छप सके)। १२० पृष्ठ तक छप गया २४,२८। अभी (१२० पृ०) एक एक रुपये में मिलता है २५। स० प्र० कितने अध्याय छपा २४। दूसरा भाग (समु० १३,१४०) नहीं छापा गया, विचार था ७९। मृत पितरों का श्राद्ध वा तर्पण लिखने का शोधने वालों की मूल से छप गया था ९४।।

सत्यार्थप्रकाश — द्वितीय सं० — छपने को भेजा — ५. पृ० भूमिका, १-३२ पृष्ठ प्रथम समु० ३५८। ३२-५० पृ० तक कल भेजेगें ३६५। पृष्ठ २४=— २०८ (१) तक ४५०। आर्यराज वंशावली ४५८। २०२ से ३१९ पृ० तक १२ समु ४६१। १३ वा समु० भेजेंगे ४०१। ३२० — ३४४ तक तौरेत और जबूर का विषय ४-१। (अल्लोपनिषद् समीन्ना ५५२) छापना आरम्म करो ३६१। (आश्वन छुटण पन्न संत्रत् १९३९ को छपना आरम्म हुआ, देखो स० प्र० द्वि० सं० में मुंशी समर्थदान का निवेदन)। ५ पृ० भूमिका और सत्यार्थ प्र० के छपे फारम पहुंच गये ३७८। स० प्र० द्वि० सं० सम्भवतः आधिन सु० ३ सं० १९३९ तक लिखा जा चुका था, इसमें प्रमाण-एक फारम में कितने पृष्ठ लगते हैं लिखो, तब अनुमान करके लिखेगें स० प्र० में इतने फारम होंगे ३६६॥

भाषा-संशोधन—तुम (समर्थदान) शोध निया करो ३६४। कोई अनुचित हो शब्द निकाल देना ४४४॥ टिप्पणी—तहां जहां उचित सममो नोट दे दो ३६०, ३६३। नोट पर किसी का नाम

मत दो ३६३॥

हाशोधन का नाम—टाइटल पेज पर तुम्हारा (समर्थदान का) नाम रहना चाहिए ३६३।। सत्यासत्य विवेक—(स्काट के साथ शास्त्रार्थ) जब छपेगा १६०। मूल्य ।) २६४ (प्रथम सं० उर्दू में छपा)॥

वेदाङ्ग-प्रकाश भीमसेन को बंहो व्याकरण की पुस्तक शीव लिखकर शुद्ध कर तैयार करें दे ३३०। अपना लिखवाया और तुझारा शोधा पुस्तक भी मंगा लिया करेंगे २६७। हमने भीम-सेन के शोधे पुस्तक देखें तो बहुत भूल निकलती है ३३४।।

पठन-पाठन—रामानन्द का पढ़ना ३०५ । पढ़वाना ३५६ । राजकीय पाठशाला में लगा दिये ३९०॥

वर्णोच्चारण-शिक्षा—पेश्तर शिक्षां की पुस्तक छपवाई जावे १७८॥ संधिविषय—शीघ शीघ छपना १८९ । छपना आरम्मे न हुआ होगा १९५ । संधिविषय के पत्रे भी शोधे जाते हैं १९६ ॥ संधिविषय की तरह अशुद्ध न होने पाये २६७। जो हमने शुद्ध कर तिया है भेज देंगे १९०। शुद्धाशुद्धि पत्र २६७। कामत ॥) रक्खो २६२॥

नामिक—संशोधन में श्रशुद्धियां २७४ । शुद्धि श्रशुद्धि पत्र २७६ । नवीन एचना की जरूरत नहीं । २६३ ॥

आख्यातिक— कितना छप गया ३१७। ज्वालादत्त ने बनाना आरम्भ किया ३६०,३६१। ज्वालादत्त से न बन सके तो यहां भेज दो, भीमसेन से बनवायेंगे ३६०,३६१॥

परिभाषिक— =, १० दिन में तैयार कराकर भेजेंगे ३६३। भूमिका सहित ४३ पृ० भेजे है ३६५॥ सौबर—हमने भेजा था, छापते होंगे ३६३॥

उणादि-कोष सुगम संस्कृत में वृत्ति बनाई, तैयार हो गया, सूचीपत्र बाकी हैं ३७७। उणादि पाणिनि सुनि रचित २०, २६॥

निघण्टु —सूचिपत्र सहित तुम्हारे पास भेज दिया ३७=।। अव्ययार्थ—छपे बहुत दिन हो गये ३४४ ॥

निरुक्त ब्राह्मण श्रादि के प्रसिद्ध शब्दों की सूची वनाकर भेजेंगे, निवरटु की सूची के श्रनत में छापना ३७८॥

पाणिनि के ग्रन्थ — अष्टाः यायी, घातुपाठ गण, चणादि गण, शिचा श्रीर प्रातिपादिकगण २०॥ श्रालङ्कारिक कथा — प्रजापित श्रीर उसकी दुहिता ३०। गौतम श्रीर श्रहल्या ३०। इन्द्र श्रीर वृत्रासुर ३८॥

## ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के लेखकों के विषय में उनकी सम्मति

भीमसेन — निष्कपट है २६५। व्याकरणादि शास्त्रों को पढ़ा है उतना ही पाण्डित्य है, अन्यत्र बालक है २००। भाषा बहुत ढोलीं बनाता है २१७। भीमसेन के शोधेमये पुस्तकों में भूल बहुत निकत्तती है २३४। भीमसेनको अत्यन्त अयोग्यता के कारण सब दिन के लिये निकाल दिया ३८४। भीमपेन वकवृत्ति है ३९६। भीमसेन काम के खयोग्य है ३९८। खार्यसमाज में रखने योग्य नहीं २९९। दूसरे पण्डित से न्याय दर्शन पूरा करले १९९॥

जवालाद्ता — शोधने में बहुत गत्तती रहती है २६३। ये दोनों भी (भीम० ज्वा०) एक से हैं कामचोर हैं ३५०। व्याकरण का अभ्यास कम है ३६०,३६१। वैसा ही जस (भीम०) से विलक्षण दम्भी कोधी हठी और स्वार्थसाधनतत्पर ज्वालाद्त्त भी है। मेरी समक्त में भीमसेन का छोटा भाई ज्वालाद्त्त है, ३९६। घर पे जाके दशगात्राद्दि मृतक कमें कर के मुर्दावधान खाया करेगा ४०७। पहिले जैसी भाषा नहीं बनाता ४५५। अब भाषा अच्छी नहीं बनाता, घास काटता है, पदार्थ कुळ और है, भाषा वनाई कुळ और ही ४५६॥

अन्य पिडत आदि का उल्लेख — दिनशराम १९ । स्वामी पूर्णानन्द ३१ । सहजानन्द ३९३ । लक्ष्मण शास्त्रो ३६। रामानन्द ४१४,४१६ । शिवदयालु ४४२ । रामनाथ २३०,२३३, ३६२ । आत्मानन्द ३०७ ॥

## कतिपय आवश्यक विषयों पर ऋषि दयानन्द का उल्लेख

थियोसिफिकल सोसायटी —के विषय में —९१,९२,९३,९४,१०२,१०४, १०४,१३१,१४२,१४३, १४४, १६६, १७४ १७४,२०६,२०८,२०९,२४४,२४९,२८२,२९८,३२६,३२८,४३९,४४०॥

संस्कृत पाठशाला—फर्बावाद ४। काशी १८,१९॥

राजकुमार पाठशाला—३१६, ४२८, ४५०॥

शिल्पशिद्या - के लिये जर्मनी से पत्र व्यवहार-२१४, २१६,२३१, २३७, २५९॥

गोरचा त्रान्दोलन त्रौर उस के लिए सही कराना —३११,३१२,३१३,३१४,३२४,३४४,३४४,३४४,३४४,३४४,३४४,३४४,३४४६॥

संस्कृत श्रीर श्रापं भाषा — संस्कृत से ही देश का कल्याण होगा २१। अलक ट श्रादि ने संस्कृत पड़ना श्रारम्भ किया कि नहीं १३४। सं० पाठ० खोलने की सुनकर प्रसन्नता हुई १४०, १४१। श्रामक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रखना चाहिए २८९। संस्कृत कम उद् फारसी, श्रामेजी श्रामक है २९०। संस्कृत की उन्नति होनी चाहिए २९१,२९२। संस्कृत मातृ माषा है २९८। श्रामेजी फारसी में घन व्यर्थ जाता है ३७६। संस्कृत विरुद्ध भाषाश्रों की उन्नति नहीं करनी चाहिए ३७१। तुझारी पाठशाला में श्रालक वे श्रीर कैट बैट की मर्मार है जा श्रायसमाज का कत्तंव्य नहीं ४०५। राजकुमारों को श्राष-प्रनथ श्रीर संस्कृत पढ़ानी चाहिए ४६४। वेदमाध्य के लिफाफे पर देव नागरी क्यों नहीं लिखी गई ११०। संस्कृत श्रीर मध्य देश की भाषा (हिन्द्री) के लिये सही करके भिजवाई जावें २१८,३५३।।

प्राचीन आर्ष ग्रन्थ छुपवाये जावें - ४५०। क्या सब आवश्यक ग्रन्थ तैयार हैं ?

त्रार्य राजा-( जो उस समय थे ) ४०॥

२४

आयं-समाज की स्थापना-- बन्बई में चैत्र सुदी ५ शनिवार साथं काल ५ बजे सं० १९३१ \* पृष्ठ २६।

जातपात - आजकल आर्थ शुद्ध हुआें के साथ व्यवाहार न करेंगे २८७॥

पत्रों में उद्धृत पुस्तकों - ऋग्वेद की दां जिल्ह मेंट की २३। कामसूत्र १११। काव्यप्रकाश, सर्वदर्शनसंप्रह, जैन बौद्ध मत के प्रन्थ २४२। चन्द्रालोक २४०। सवदशन २४०। जेनियों के प्रन्थों के विषय में २७३। पूना के व्याख्यान छपवाते हैं २,॥

प्रामाणिक ग्रन्थ की सूची-१॥

स्वामी जो के फोटो-मेरठ में उतारा १२६। रामानन्द को देना ४१५॥

मुक्ति—नित्य सुखरूप जो मोच ३६ (मार्ग शु० १५ सं० १९३३)। पुनरावृत्ति ३४७ (फर्रूखावाद के इतिहास के पृष्ठ १३४ के साथ तुलना करों)।।

विधवा—सम्पत्ति का अधिकार २१३। नियोग २१३। पुनविवाह २१८। नियोग क्ष्रु मस्विदा २१६। जो तैयार किया २२४॥

वैदिक-यन्त्रालय—आर्य प्रकाश नाम १८१। वै० यन्त्रा० नाम रक्खा १८३। वाहर का काम छापने के लिये नहीं है, सत्य प्रन्थों के प्रकाश के लिये बनाया है, बाहर के काम से हानि होती है। बाहर का काम बन्द कर दो, नहीं तो दण्ड देंगे इत्यादि ३६१,४१३,४१६,४२४॥

वसीयतनामा—२१७, ३८६ ॥

श्रौताग्निहोत्र श्रारम्भ करना—४११,४१२,४२५॥

राजाओं की नीति की आलोचना -- ३३२

समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड़ कर-वेद्भाष्य करना २००।

सब काम वेदभाष्यादि छोड़ देंगे -- २८०॥

अनद्यतन का लच्ण-४०॥

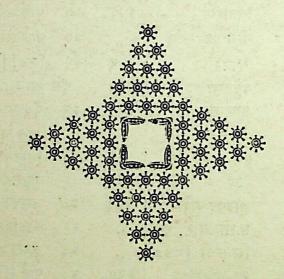
माता पिता की सेवा-दुराचारी होने पर भी अन्न वस्त्र से ३६०॥

क्ष यह गुजराती संवत् है। उत्तरभारतीय सं॰ १६३२।

| सश | धन | पत्रम् |
|----|----|--------|

|            |        |                 | रायापा            | ननप्       |        |                                      |
|------------|--------|-----------------|-------------------|------------|--------|--------------------------------------|
| वृष्ठ      | पंक्ति | 20 00           | शुद्ध             | <b>८</b> ५ | २५     | पृर्णसंख्या ६४ पूर्णसंख्या ६३        |
| 9          | 8Ã     |                 | ०स्थितिनिबन्धनी   | 50         | _      | में से एक में से कई एक               |
| . 11       | . २१   | कुत्र नहीं      | कुछ भी नहीं       | =9         | रंद    | पूर्ण संख्या ७६ पूर्ण संख्या ७५      |
| 85         | ३३ :   | व्यासजीका अन्य  | व्यासजी का वा     | ११०        | 29     | पूर्ण संख्या ११४ पूर्ण संख्या ११३    |
|            |        |                 | अन्य              | . 888      | 28     | देने का देने की                      |
| 80         | 83     | से जनाता है सं  |                   | ११२        | 29     | १-१०-७८ १५-१०-७८                     |
| 58         | १५     | शौचादि          | शौचादिक           | ११९        |        | नीचे २- श्रक्टूबर                    |
| "          | સ્યૂ   | श्रच्छे २       | और अच्छे २        |            | 0 1 11 | १८७६ दिल्ली                          |
| "          | २६     | कोई का नहीं     | कोई का[यी]नहीं    | १२७        | २८     | माग कृष्ण माघ कृष्ण                  |
| २२         | Y.     | परस्रीगमन       | परस्रीगमन         | १२९        | २      | कराने द्वारा कराने द्वारा            |
| 57         | 9      | जिस्से लोक      | जिस्से यह लोक     | १३२        | २६     | पूर्णे पत्र संख्या पूर्णे संख्या १४६ |
| २४         | ३      | शोधन            | शाधने             |            |        | १४० के के पत्र के                    |
| ",         | २५     | शिचापत्री       | शिचापत्रीष्वान्त- | १३९        | 38     | १५८ और १६२ १५९ और १६३                |
|            |        |                 | निवारग्           | १४५        | २५     | पूर्ण संख्या १७ पूर्ण संख्या १६८     |
| 38         | १९     | शीघ्र काम       | शीघ्र यह काम      | 99         | 79     | पूर्ण संख्या १५७ पूर्ण सं० १६८       |
|            | २३     | १७३३            | १९३३              | - १५९      | २२     | [२०] [१८४] [२०(१)][१८४(१)            |
| ३७         | 8      | तद्रेत्सः       | यद्रेतसः          | १६०        | ९से    | आगे [२०। ][१=४(२)                    |
| 45         | २८     | इतगमु           | इतरासु            | १७५        | २९     | पं० घासीराम पं० घासीराम              |
| ३९         | १६     | वृत्रपन         | वृत्रपना          |            |        | जीवन चरित सम्पा० जीवनचरित            |
| ¥5         | •      | हम इन्द्र       | हम केवल इन्द्र    | १७९        | ११     | मिस्टबाल मिस्टर बाल                  |
| ६३         | 88     | ३०              | ३२                | १८२        | ३२     | पूर्णसंख्या २४५ पूर्ण संख्या २४६     |
| ६४         | ų      | भाद्रसुदी       | भाद्रपद सुदी      | १९३        | २०     | उसकी इनकी                            |
| ६७         | ३४     | ४ सोमवार        | ४.सोमवार १५       | 77         | २१     | ला० हितमनीलाल पुरो० मुन्नीलाल        |
|            |        |                 | सितम्बर १८७७      | 17         | २६     | कृष्ण ८ कृष्ण ८ बुधवार               |
| ६⊏         | २०     | १६ अक्टूबर      | १५ अक्टूबर        | १९९        | ३०     | पूर्ण सं० २४५ पूर्ण सं० २४६          |
| . ,,       | २९     | पृर्ण संख्या ५१ | पूर्ण संख्या ५४   | २०२        | 38     | पूर्ण संख्या २५१ पूर्ण सं० २५२       |
| 90         | २३     | ने इसका         | ने इन सब का       | २०३        | २८     | पूर्ण सं० ,, ,, ,, ,,                |
| ७१         | ३३     | पृर्ण संख्या ४८ | पूर्ण संख्या ५१   | २०४        | 29     | पूर्वी संख्या २६३ पूर्वी संख्या २६४  |
| ७२         | १२     | श्चानन्द        | सानन्द            | २०५        | ३३     |                                      |
| ७२         | ३२     | पूर्ण संख्या ४⊏ | पूर्ण संख्या ५१   |            |        | १२ त्रठारह १८ त्रठारह                |
| હ્યુ       |        |                 | १३ दिसम्बर        | 280        | 80     | बाहर मुद्रा बारह मुद्रा              |
| <b>4</b> 3 | 88     | त्तग गये        |                   | २७३        | 3      | सूची [भेजी] सूची [भेजी]              |
| -3         | 11     |                 |                   |            |        |                                      |

| 22- |    | nm rizm 200        | गर्भ संस्था १६.० | । ४३१ | २१    | २४ जून        | २१ जून      |
|-----|----|--------------------|------------------|-------|-------|---------------|-------------|
| ३३० | ३२ | नुसा लक्या ५५५     | पूर्ण संख्या १६७ |       |       |               |             |
|     |    |                    | तथा २९९          | ) >>  | २९    | कुप्सा ४ रवि  |             |
| ३६२ | 99 | २२॥) २२॥           |                  |       |       |               | स्पतियार    |
| ३७१ | १६ | <b>ब्रायराजराज</b> | आर्थ राजपुरुषों  | ४३६   | १८    | ष्ठा० ब० १    | ञा० व० ११   |
|     |    | पुरुषों            |                  | ४३७   | Ę     | श्रमिहो व     | अग्निहं।त्र |
| ३७८ | 5  | ३६६                | ४६६              | ४६०   | 8     | विषय का       | इस विषय का  |
| ३८३ | 8  | वहनिश्चित वह       | विवार निश्चित    | ८८४   | રેપુ. | वदी ११        | वदी १२      |
| ४०२ | 8  | [गीता २।]          | [गीता २। ६४]     | 7)    | २४    | ६. ३० जुनाई   | ६. ३१ जुनाई |
| ४१२ | 8  | उस हो              | <b>उनको</b>      | ४६६   |       |               | संख्या ५.=१ |
| 818 | २५ | जोगपुर             | जोधपुर           | 800   | २६    | स्:ंख्या ५्⊂० | लिएन। ग्रन् |



#### अथ

## मुमिका

## पत्र-संग्रह का विचार

मेरा जन्म अमृतसर के एक आर्यसामाजिक कुल में हुआ। बाल्यकाल था, और स्कूल में पढ़ने के दिन थे। संवत् १९६४ में स्वर्गीय लाला लाजपतराय विरिचत—महिष स्वामी द्यानन्द सरस्वती और उनकी तालीम—नामक उर्दू प्रनथ पढ़ा। ऋषि सम्बन्धी कुछ बातें ज्ञात हुई। घर में भी बहुधा ऋषि सम्बन्धी बातें होती रहती थीं। संवत् १९६८ के अन्त में पण्डित लेखरामकृत ऋषि जीवन खरित पढ़ा। यह भी उर्दू भाषा में लिखा गयाथा। इस के पाठ से मगवान द्यानन्द सरस्वती की महत्ता मेरे हृदय पर विशेष अङ्कित हुई। संवत् १९६९ में मैंने ऋषि-शिष्य योगी लक्ष्मणानन्द स्वामी जी से योगमार्ग का उपदेश लिया। वे ऋषि दयानन्द सरस्वती जी की अनेक जीवन-घटनायें सुनाया करते थे। उन से मेरे मन में ऋषि की भक्ति बहुत बढ़ी। संवत् १९७० में महातमा सुनशीराम जी सम्पादित ऋषि का पत्रव्यवहार पढ़ा। इस में ऋषि के मेजे हुये पत्र अल्प संख्या में थे और ऋषि के नाम आए पत्र अत्यधिक। ये मेरे कालिज-अध्ययन के दिन थे। तब तक मेरे हृदय पर यह सत्य अङ्कित हो गया था कि गत कई शताब्दियों में इस मूतल पर ऋषि द्यानन्द सरस्वती एक अलौकिक पुरुष हुए हैं। उन के लिखे एक-एक शब्द का सुरचित करना आवश्यक है। मेरे मन में यह बात हढ़ हो गई कि ऋषि के पत्रों को एकत्र करना चाहिये। इन्हीं के पाठ से ऋषि-जीवन का वास्तविक स्वरूप स्मृत होगा।

## पत्र-संग्रह का आरम्भ हुआ

संवत् १९७२ के पूर्वभाग में मैंने बी०ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। तब मैं व्याख्यान देना आरम्भ कर जुका था। यत्र-तत्र ऋषि जीवन की घटनायें सुनाया करता था। उन्हीं दिनों लाहौर में सरदार रूपिंह जी ने मेरे कई व्याख्यान सुने। एक व्याख्यान के पश्चात् वे स्वयं मुक्त से मिले। उन्होंने यह हर्षप्रद समाचार दिया कि उन के पास ऋषि के कुछ पत्र हैं। मेरी प्रार्थना पर उन्होंने वे पत्र मुक्ते दे दिये।

दैवयोग की बात है। साप्ताहिक उर्दू पत्र प्रकाश के सम्पादक महाशय कृष्ण जी के पास भी कुछ ऋषि-पत्र मुद्रित होने को आये। आगरे के आर्य अनाथालय के प्रबन्धकर्ता ने वे पत्र भेजे थे। कोई अनाथ बालक अनाथालय में प्रविष्ट हुआ था। उर्स के पास एक बस्ते में ये पत्र थे। पत्र लिखे गये थे बाबू विश्वेश्वरसिंह के नाम। वे ऋषि के भक्त थे और कभी वैदिक यन्त्रालय प्रयाग की भी सेवा करते थे। भाग्यचक्र ने उन्हीं के पुत्र पौत्र या किसी सम्बन्धी बालक को उस अनाथालय में भेजा।

#### भूमिका

खस परिवार की इस आपत्ति में भी ऋषि के पत्र सुरिच्चत रहे और म० ऋष्ण जी द्वारा सुक्ते उन की प्रतिलिपियां मिलीं। मथुरा में ऋषिजन्म शताब्दी पर संवत् १९८१ में ये पत्र प्रदर्शित हुऐ थे। श्रव ये पत्र श्री नारायण स्वामी जी के संप्रह में सुरिच्चत हैं।

संभवतः संवत् १९७४ में मेरा परिचय प्रयाग के बाबू गजाधर प्रसाद जी से हुआ । बाबू जी के हृदय में आर्यसमाज के प्रति श्रद्धट श्रद्धा थी जो श्रव तक वैसी ही है। उन के निमन्त्र पर मैं राज्य बरेली पहुंचा। बरेली में वे मुमे श्री विष्णुलाल एम० ए० के पास ले गये। विष्णुलाल जी ने मुमे चौधरी जालिम सिंह के पत्रों की प्रतिलिपयां करा दीं।

उन दिनों मुरादाबाद आर्यसमाज के मंत्री बाबू शिवनारायण जी थे। उन्होंने साहू श्यामसुन्दर जी के नाम के पत्र भेजे। प्रतिलिपियां करके मूलपत्र मैंने लौटा दिये।

कालेज दल आर्थसमाज पद्धाब के नेता स्वर्गीय श्री लाला हंसराज जी भी पत्रों के काम में बड़ी हिंच रखते थे। उन्होंने रावराजा तेजसिंह जी को पत्र लिख कर जोधपुर के पत्र मंगवाये। प्रतिलिपि कर के वे पत्र भी लौटा दिये गये।

#### प्रथमभाग-प्रकाशन

चपरि म्रजित सामग्री से ऋषि के पत्र और विज्ञापन का प्रथम भाग कार्त्तिक संवत् १९७५ में मुद्रित किया गया। इस भाग में दर पत्र और विज्ञापन थे। परन्तु पत्र संख्या ६३ और ६४ दो पत्र नहीं थे। म्रज वे पूर्ण संख्या १९५ पर एक पत्र के रूप में छपे हैं। म्रतः इस भाग में द१ पत्र थे। उपर्युक्त प्रथम भाग पर निम्नलिखित वक्तव्य था—

कुछ पत्रों के सम्बन्ध में।

ये पत्र संख्या में बहुत अधिक हैं। अतः कई भागों में निकलेंगे। पुस्तक की भूमिका अन्त में ही लिखी जायगी। सम्प्रति आर्यजनता से यही निवेदन है कि वह मुझे नये पत्रों के संप्रह करने में सहायता दे। आर्य्समाज के कई महाज व्यक्ति और उत्साही महाशय मेरी बहुत सहायता कर रहे हैं। उन सब के पारिश्रम का फल है कि मैं इतने पत्र संप्रह कर चुका हूं। उन सब के शुभ नाम धन्यवाद-पूर्वक भूमिका के अन्त में आ ही जाएंगे। परन्तु में चाहता हूं कि ऐसे सज्जनों की संख्या अधिक हो। पत्रान्वेषणार्थ मेरे पत्रों का कई आर्थ्य पुरुषों ने तत्काल उत्तर दिया है परन्तु अनेक लोग चुप भी रहे हैं। वे समझते हैं कि काम कदाचित् मेरा अपना है। यह उन की भूल है। ऋषि के एक एक अक्षर का सुरक्षित करना सब आर्थ्यों का विशेष कर्तव्य है। यह ऋषि ऋण से उऋण होने का एक प्रकार है। मुझे पूरा पता है कि अनेक लोगों के घर में ऋषि के कई शिक्षाप्रद-पत्र विद्यमान् हैं। उनको निःसंकोच उन्हें प्रकाशित करवा देना चाहिये। आवश्यक पत्रों की प्रतिकृतियां भी में साथ दंगा। पाठक ऐसी ही एक प्रतिकृति इस भाग के आरम्भ में पाएंगे। यह पत्र ऋषि के अपने हाथ का लिखा हुआ है। इसके रखने से जहां अन्य बातों का प्रकाश होगा वहां ऋषि का हताक्षरयुक्त लेख प्रत्येक आर्थ्य घर में पहुंच जायगा। जितनी शीम्रता से इस माग का प्रचार होगा उत्तने अधिक उत्साह से आगामी काम चलेगा। इस माग में बहुत से पूर्व-प्रकाशित पत्र भी आ गये हैं, और संग्रह में यह आवश्यक ही

था, पर आगे नवीन पत्रों की संख्या अधिक होगी। कागज आदि के अत्यन्त महंगा होने पर मी पुत्तक का मूल्य यथासम्भव न्यून रखा गया है। परन्तु प्रतिकृति के तथ्यार कराने में व्यय अधिक आया था अतः इतना रखना पड़ा।

ऋषि के पत्रों के साथ २ में उनकी फोटो भी एकत्र कर रहा हूं। पांच छः सालों पर उन की फोटो छी गई थी उनमें से कई एक तो छप चुकी हैं। एक सर्वथा नया चित्र मुझे रायबहादुर संसारचन्द्रजी से मिला है। इस्य उसका अत्यन्त रोचक है। महाराज मूमि पर आसन छगाये विराजमान हैं। सामने पुस्तक पड़ा है। उस का पाठ हो रहा है, इत्यादि। ऐसे चित्रों का संम्रह करना में आवश्यक समझता हूं। अतएव यदि किसी सज्जन के पास ऋषि का यथार्थ फोटो हो तो वे मुझे सूचित करे। अमरीका वाला चित्र भी उन्हीं रंगों में छपवाया जायगा। अगले भाग के सम्बन्ध में यह कहना रोप है कि उसमें लखनऊ के पं० रामाधार वाजपेई, दानापुर के बाबू माधो लाल, सुप्रसिद्ध राय बहादुर श्री मूलराजजी एम० ए० इत्यादि के नाम लिखे गये अनेक पत्र होंगे। इत्योम।

स्थान लाहीर

कार्त्तिक व० ५ वीर इयानन्दाव्द ३५

भगवद्

## द्वितीयभाग-प्रकाशन

दूसरा भाग संवत् १९७६ में मुद्रित हुआ। उस में बाबू माधोलाल दानापुर; ला० मूलराज एम० ए० गुजरात तथा गुजरांवाला आदि; पं० रामाधार वाजपेई लखनऊ को लिखे गये पत्र तथा कुछ फुटकल पत्र और विज्ञापन आदि छापे गये। ये पत्र संवत् १९७५ और १९७६ में एकत्र किये गये थे। इस भाग में संख्या ५३ से १३ तक पत्र और विज्ञापन थे। नियोग का मसन्तिदा नामक लेख पर कोई संख्या नहीं दी गई थी। भाग प्रथम में महाराजा श्री प्रतापसिंह जी के नाम का संख्या ५५ का पत्र पं० लेखरामकृत जीवनचरित से लिया गया था। पं० लेखराम जी ने उस की तिथि आश्विन बदी ३ शनिवार सम्वत् १९४० (२२ सितम्बर सन् १८५३) दी थी। जीवनचरित में इस पत्र का थोड़ा सा भाग ही छपा था। फिर यह पूरा पत्र जोधपुर से श्री रावराजा तेजसिंह जी द्वारा प्राप्त हुआ। वह द्वितीय भाग में संख्या ८० पर छापा गया। मूल पत्र में विथि—आ० ब० ३ शनि सं० १९४०—थी। यहां अ० से आषाढ़ अभिप्रेत था। पं० लेखराम जी अथवा उनके सम्पादक ने आश्विन बनाने में मूल की।

इस प्रकार दूसरे भाग तक पत्र और विज्ञापनों की संख्या १३७ थी। इस भाग के साथ निम्न लिखित वक्तन्य छापा गय। था—

## कुछ पत्रों के सम्बन्ध में।

ऋषि द्यानन्द के पत्र और विज्ञापन प्रथम-भाग में की गई प्रतिज्ञानुसार यह दूसरा भाग अब जनता के सामने घरा जाता है। इस में भी कई अत्यन्तोपयोगी पत्र दिये गये हैं। कुछ पत्रों की अङ्गरेजी बड़ी अशुद्ध थी। वह मूलवत रहने दी गई है। प्रतीत होता है उन दिनों ऋषि के समीप कोई अतीव साधारण अङ्गरेजी पढ़ा लिखा लेखक था इन पत्रों का मैंने भाषानुवाद कर दिया है।

इस भाग में तीन छेख बड़े महत्त्व के हैं। एक वेदमाण्य का विश्वापन सं० १३७, दूसरा उचित वक्ता की समीक्षा सं० १३८ और तीसरा नियोग का मसिवदा सं० १३९। उचित वक्ता का छेख मैंने क्यों यहां छापा है ? इसका स्पष्ट उत्तर यहो है कि पत्र संख्या २७, भाग प्रथमानुसार श्री महाराज ने स्वयं छिखा है "और मैं भी उस प्रश्लोत्तरी के विरुद्ध विषय के उत्तर में सम्मत हूं" अर्थात् इस छेख से वे सहमत थे। मेरे विचारानुसार यह उत्तर उन्होंने स्वयं छिखाया था। इस बात को किसी अगछे भाग में जब कि समस्त पत्रों की एक विस्तृत भूमिका छिखी जायगी में प्रमाणित करूंगा। अब रहा नियोग का मसिवदा। पत्र १११ में श्री खामी जी श्री मूछराज जी एम० ए० को इसी के विषय में छिख रहे हैं। इस का सूछ श्री खामी श्रद्धानन्द जी को मेरठ से मिछा था। उन्हों ने इसे "प्रकाश" में छपवा दिया था। वहीं से मेंने छे छिया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मुझे कहा था कि इस के छपने में अशुद्धियां रह गई थीं, स्त्रो आशा है वह आगे कभी दूर हो जायंगी।

नवीन पत्रों के संप्रह करने का यह कर रहा हूं। पर्ध्यात संख्या में प्राप्त कर छेने पर उन्हें भी प्रकाशित कर दूंगा। आशा है परमात्मा की छपा से छोग ऋषि के शुद्ध हृदय का

द्शन इन पत्रों से भले प्रकार करेंगे।

शीव्रता के कारण छपने में कोई ५, ७ साधारण अशुद्धियां रह गई हैं, पाठक उन्हें स्वयं सुधार छ । हां पृ० २१ पर पांके ८ में "कलम" के स्थान में "फलम" पढ़ें।

स्थान छाहौर मार्गशीर्ष, शुक्का ६ शुक्र दयानन्दान्द, ३७

भगवदत्त

## तृतीयभाग-प्रकाशन

संवत् १९७६ से १९८३ तक पत्रों की उपलब्धि का काम श्रत्यन्त शिथिल रहा । इस काल में श्रीर इससे पूर्व भी हम ने श्रनेक व्यक्तियों श्रीर श्रार्थसमाजों को पत्र लिखे। परन्तु सफलना के दर्शन न हुये। लगभग सत्र स्थानों से यही उत्तर श्राता था कि पत्र नहीं हैं। इन उत्तरों के तीन उदाहरण नीचे उद्घृत किये जाते हैं।

१—पहला उदाहरण पं० प्रभुदयाल जी के उत्तर का है। ये महाशय संवत् १९३३ में लखनऊ में श्री स्वामीजी से मिले थे। तदनन्तर इन्होंने पांच दर्शनों पर भाषा-भाष्य रचे। मीमांसा-दर्शन विषयक एक पत्र इन्होंने श्री स्वामी जी को भेजा। वह म० मुन्शी राम सम्पादित पत्रव्यवहार प्र० ४०२ पर छपा है। ये तेरही ग्राम जिला बांदा में रहते थे। इन का उत्तर जो मुक्ते प्राप्त हुआ, निम्नलिखित है। सन् १९१७ में प्रभूतानन्द नाम धारण करके वे संन्यासी हो गये।

तेरही ता० २-१०-१७

श्रीमान महाशय नमस्ते ।

श्राप का पत्र ता० २—९—१७ का कल्ह यहां ता० १—१०—१७ को एक मास व्यतीत होने: पर प्राप्त हुआ है।

जो पत्र मि० चै० सु० १३ सं० १९४० में मैंने स्वामी द्यानन्द जी महाराज की सेवा में भेजा था उस में मैंने मीमांसा में बलिदान विषयक जो हिंसा परक लेख मिलता है उसके यथार्थ वा मिथ्या होने घौर मन्तव्य वा श्रमन्तव्य होने के विषय में प्रश्न किया था उसका उत्तर स्वामी जी ने भेजा था। जो पत्र श्राया था उसका पता नहीं लगता। पास नहीं है परन्तु पत्र के लेख का स्मर्ण है। उत्तर में श्री स्वामी [जी ने] श्राशीर्वाद के श्रनन्तर यह लिखा था कि—

भीमांसा के मूल शब्दों में हिंसाविधि का अर्थ नहीं है। यह भाष्यकार और वृत्तिकार की भूल है जो हिंसापरक अर्थ किया है। हम को वेदभाष्य करने आदि कार्यों से अवकाश नहीं मिलता। यही कारण है कि आप के पत्र का उत्तर इस समय दस बजे रात्रि को लिखता हूँ।

ऐसा उत्तर संज्ञेप लेख से दिया था। ......

#### श्रापका हितैषी

प्रभूतानन्द

२—थियोसाफिकल समाज की प्रधाना श्रीमती एनी बेसेएट ने गिन्नलिखित उत्तर दिया Bombay,

Dear Sir,

I have no correspondence between Swamiji and Col. Olcott and Mme Blavatsky. I am sorry to be unable to help you.

Sincerely,
ANNLE BESANT.

३—तीसरा उत्तर परलोकगत न्यायाध्यत श्री महादेव गोविन्द रानाडे जी की धर्मपत्नी की श्रोर से है—

591 Sadashiv Peth Poona city 13-11-18

Dear Sir,

I am desired by my sister Mrs. Ramabai Sahele Ranade to acknowledge receipt of your letter of the 4th Int. and to say that she regrets there are no records regarding the matter you refer to in fact there is no collection refering to that period.

Yours truly, K. M. Kelkar.

#### भूमिका

अनेक स्थानों से मेरे पोस्ट कार्ड और लिफाफे लौट आते थे। वे व्यक्ति तब इस लोक में नहीं थे—

कभी-कभी कहीं से पत्र आ जाता था कि पत्र मिल सकेंगे। इस का एक उदाहरण मेरठ से

श्राए हुए निम्नलिखित पत्र से मिलेगा।

श्रीमान-

.....स्वासी जी के पत्र मुखतिलफ बस्तों में रक्खे हैं। जब आप पहले आये थे तब मैं उन बस्तों को देख कर ही जुका था और करीब १ सहीने के लगा था। सो इस समय गर्मी अधिक है देखने का समय नहीं। एक दो खत तो एक दो बस्तों से निकाले हैं और फिर किसी वक्त जब मौका होगा निकाल रक्खूँगा।।

कई वर्ष अतिवाहित हो गये। मेरठ का यह अमृल्य संग्रह हस्तगत नहीं हो सका । श्री ला० धनपतिराय जी के पिता ला० रामशरण मेरठ के प्रसिद्ध रईस थे। वे परोपकारिणी सभा के प्रथम मन्त्री और ऋषि के अनन्य भक्त थे। मुं० बखतावर सिंह प्रवन्धकर्ता वैदिक यन्त्रालय काशी ने जब हिसाब की गड़बड़ की तो श्री स्वामी जी ने तत्सम्बन्धी सब पत्रादि उन्हें भेज दिये। ला० रामशरण

दासजी का श्री स्वामी जी के जीवन काल में ही अकरमात् निधन हो गया।

वे सब पत्रादि उन के घर पर रहे। उनकी सर्व सम्पत्ति कोर्ट आफ वार्ड्स में चली गई। सब पदार्थ बन्द पड़े रहे। यह सामग्री न तो पं० लेखराम जी को प्राप्त हुई और न श्री देवेन्द्र बाबू को।

संवत् १९८३ मास श्राषाढ़ में महाशय मामराज जी (जिला मुजफ्फर नगर श्रन्तर्गत कसबा खतीली निवासी) द्यानन्द कालेज लाहीर के पुस्तकालय में मुक्त से मिले। उनका मेरा परिचय संवत् १९०५ में श्रार्थसमाज मन्दिर मेरठ नगर में हुश्रा था। वहां मेरे साथ पण्डित रामगोपाल जी शास्त्री भी थे। म० मामराज जी की ऋषिमिक्त से मैं उनकी श्रोर श्राकिषति हो चुका था। उन्हें ही उपयुक्त व्यक्ति समक्त कर मैंने उनसे कहा कि वे मेरठ में ठहर कर ला० धनपतिराय जी से पत्र लेने का पूर्ण यह करें। श्राषाढ़ शुक्ता १० संवत् १९८३ के दिन मैंने उन्हें ला० धनपतिराय जी के नाम पत्र दिया।

म० मामराज जी श्रावण शुक्का ६ संवत् १९८३ को मेरठ पहुंचे। लगभग डेढ़ मास के अनथक परिश्रम के पश्चात् ला० धनपितराय जी ने खोजकर आश्विन कृष्णा द्वादशी को ऋषि के पत्नों का एक संग्रह उन्हें सौंपा। इस पुण्यदायक महत्कार्थ में मेरठ के महाशय राजाराम, ला० दीवानसिंह, बा० बद्रीप्रसाद, बा० रक्नलाल, बा० मोतीलाल, मास्टर विश्वम्भर द्याल, बा० मैरोद्याल, चौधरी जयदेव सिंह, डा० अयोध्या प्रसाद जी आदि सज्जनों ने समय समय पर बड़ी सहायता की।

इन्हीं दिनों म० मामराज ने मेरठ के मास्टर आनन्दी लाल आदि के और भी कई घर ढूंढे। परन्तु पत्र-सामग्री अन्य किसी घर से हस्तगत न हुई। मेरठ निवासी श्री पं० घासी राम जी एम०ए० के पास श्री देवेन्द्र बाबू का पर्योप्त संग्रह आ चुका था। उस में से उन्होंने महती कृपा करके दो मूलपत्र (पूर्ण संख्या २६ और ३९) तथा १६ नवीन पत्रों की प्रतिलिपियां जो उन के पास थीं, उदारता

१. देखो म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्रव्यवहार में श्री त्वामी जी के नाम भाई जवाहरसिंह लाहीर का ११ मई १८८३ का पत्र पृ॰, १३०—१३५ तक।

पूर्वक प्रदान की । यह सब सामग्री आधिन शुक्ता २ संवत् १९६३ शुक्रवार को म० मामराज जी मेरे पास ले आए। जयपुर के पत्रों की प्रतिलिपि भी खर्गीय महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त जी दाधिमथ की प्रेरणा से ठाकुर नन्दिकशोर सिंह जी ने मेरे पास भेज दी थी।

म० मामराज जी पुनः खोज पर निकले। कर्नल आलकाट और मैडम के नाम लिखे गये दो अत्यन्त आवश्यक पत्रों की प्रतिलिपियां उन्होंने मुरादाबाद के ठाकुर चेतनदेव से लीं। ये प्रतिलिपियां उनके पिता ठाकुर शङ्करसिंह उपनाम भूपजी मन्त्री अ० स० मुरादाबाद के काल से उन के घर में सुरिचित चली आ रही थीं। इस सब सामग्री से पत्रों का तृतीय भाग, ३-१-२० को प्रकाशित किया गया। उस की भूमिका निम्नलिखित थी—

पाठकों से निवेदन।

ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन का यह तीसरा भाग जनता के प्रति मेंट किया जाता है। इसमें जो पत्र छापे गये हैं, वे एक दो को छोड़ कर, पहली बार ही प्रकाशित किये जाते हैं। बहुत से पत्र श्री स्वामी जी के अनन्य भक्त सेठ रामशरणदास जी रईस मेरठ के सुपुत्र ला० धनपतिराय जी रईस मेरठ ने प्रदान किये हैं। कुछ पत्र पं० घासीराम जी एम० ए० ने दिये हैं। ये पत्र उन के पास बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के संग्रह में आये थे। मेरठ से ये सब पत्र महाशय मामराज जी बड़े पुरुवार्थ से मेरे पास लाये थे। इन सब महानुभावों का में हृदय से कृतज्ञ हूं। अभी और भी पत्र मिल रहे हैं। वे चतुर्थ भाग में छापे जायेंगे। पाठक उनकी प्रतीक्षा करें। विस्तृत भूमिका अन्त में ही लिखी जायगी।

लाहौर ३-१-२७

भगवद्त

तीसरे भाग में पत्रों की संख्या १४० से १८७ तक थी। अतः दो न्यून करके सारे १८५ पत्र तब तक छापे गये थे।

चतुर्थभाग-प्रकाशन

इस के पश्चात् मक्त ईश्वरदास जी एम० ए० लाहौर ने मुमे पूर्णसंख्या ५३ का एक पत्र दिया । अमृतसर में श्री कद्रदत्त जी ने पूर्णसंख्या ४९ का आधा फटा पत्र दिया । मार्गशीर्ष शुक्ता ३ ब्युधवार संवत् १९-३ को म० मामराज जी अनेक नगरों से होते हुये फरुखाबाद पहुंचे । फरुखाबाद वह स्थान है जिससे श्री स्वामी जी का विशेष सम्बन्ध रहा । ऋषि के काल के पं० गणेशप्रसाद जी तब जीवित थे । वे ही आरम्भ से आर्यसमाज के लेखक का सब काम करते थे । उन्होंने अपने पास की सारी सामग्री म० मामराज जी को दिखाई और उसकी प्रतिलिप करने की सुविधा दी । उनके पास ३८ पत्र थे । इन में से सात पत्रों की आंशिक प्रतिलिपियां हमें पं० घासीराम जी से मिल चुकी थीं । इसके पश्चात् श्री कालीचरण रामचरण जी के पुत्र बाबू शिवनारायण जी अग्रवाल प्रधान आर्यसमाज ने समाज की सब सामग्री देखने की उन्हें पूर्ण सुविधा दी । उसमें से ऋषि के पत्र, ऋषि जीवन सम्बन्धी उपयोगी सामग्री तथा पुराने रिजस्टरों में से पत्रों के आने जाने की तिथियां ली गई । आर्यसमाज के इतिहास के लिये भी बहुत सी आवश्यक सामग्री वहां से कई मास तक खोजने पर मिली।

फरखाबाद के राजा दुर्गाप्रसाद जी अप्रवात ऋषि के बड़े सक्त थे। उनके घर की खोज आवश्यक थी। स० मामराज जी ने उनके पुत्र श्री बाबू भारतेन्द्र जी से पत्रों की पुरानी रही देखने की आज्ञा ली। एक बृहत्कोष्ठागार पत्रासों वर्षों के लाखों पुराने पत्रों से भरा पड़ा था। उनमें से एक एक का देखना कोई साधारण काम न था। म० मामराज जी के कई मास के परिश्रम से उसमें से अनेक उपयोगी पत्र मिले। इनमें से सात ऋषि के भेजे हुये पत्र थे। यह एक आश्चर्यजनक अन्वेषण था। म० मामराज जी के अतिरिक्त दूसरा व्यक्ति नहीं था, जो इतने धेर्य से यह काम करता। ऋषि-जीवन की अनेक घटनायें इन्हीं पत्रों से मिली हैं। ईश्वर ने अपनी अपार दया से इस संग्रह की रज्ञा की और मामराज जी द्वारा वह अपूर्व-संग्रह संसार के सामने आया।

फरुखाबाद में ला० जगन्नाथ जी अप्रवाल तथा बाबू सूर्यप्रसाद और श्री नारायण दास जी मुख्तार के घर भी खोजे गये। परन्तु ऋषि के पत्र वहां से नहीं मिले । फरुखाबाद के ये सब पत्र

चतुर्थभाग में संख्या १८८ से २४६ तक छपे थे।

5

पूर्णसंख्या द का ऐखवासी ठाकुर भूपाल सिंह के नाम का पत्र म० मामराज जी ने प्रसिद्ध आर्थ-किव पं० नाथूराम जी शर्मा शक्कर से प्राप्त किया था। किव जी को यह पत्र किसी पंसारी की रही में से मिला था। पूर्ण संख्या २११ के पत्र की प्रतिलिपि मुरादाबाद से मुंशी इन्द्रमिण जी के पौत्र ला० भगवत सहाय जी से ली गई। पूर्ण संख्या ३१५ का पत्र ऐतमादपुर वासी ला० द्वारकाप्रसाद जी से म० मामराज जी ने प्राप्त किया। पूर्ण संख्या ३२२ तथा ला० मूलराज जी एम० ए० के नाम के पत्र उन्हीं के घर से हमें मिले। श्री लाला जी पुराने पत्रों के मुट्टे मेरे सामने घर देते थे, और मैं एक एक कार्ड और लिफाफा देखता था। बहुत दिन लगाकर मैंने वह सारा संग्रह देखा। उस में से पाँच पत्र प्राप्त हुए।

इस सब सामग्री से पत्रों का चतुर्थ भाग ६-७-२७ को प्रकाशित किया गया। उसकी सूमिका

निम्नलिखित थी—

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन का यह चतुर्थभाग जनता के प्रति मेंट किया जाता है। इसमें जो पत्र छापे गये हैं, वे एक दो को छोड़ कर, पहली बार ही प्रकाशित किये जाते हैं। इनमें से अधिकांश पत्र फरुखाबाद से प्राप्त किये गये हैं। इन के प्राप्त करने का श्रेय महाशय मामराज जी को है। उन्होंने निरन्तर कई मास फरुखाबाद में वास करके लाखों पुराने रही पत्रों में से ये। पत्र निकाले हैं। फरुखाबाद समाज के पुराने सभासद पं० गणेशप्रसाद जी ने भी इस कार्य में विशेष सहायता दी है। उनका में आभारी हूं। पत्रों की खोज के लिये १२०) रु० श्रीमान जस्टिस बखशी टेकचन्द जी ने दिये थे। उनका में बड़ा रुतज्ञ हूं। पर पत्रों की खोज पर १२०) रु० तो क्या ५००) रु० से भी अधिक व्यय अभी तक हो चुका है। आगे भो निरन्तर हो रहा है। मेरे लिये इतना व्यय करना बड़ा कठिन है। क्या कोई आर्थ सज्जन इस विषय में सहायता करेंगे। पांचवां भाग शीघ ही अजमेर से छपेगा। विस्तृत भूमिका अन्त में हो लिखी जायगी।

लाहीर ६-७-२७

भगवइत्त

# तदनन्तर पत्रसंग्रह की प्रगति

इस के पश्चात पत्रसंप्रह का काम मन्थरगति से होता रहा।

शाहपुरा राज मेवाड़ से श्री राजाधिराज श्रीनाहरसिंह जी की आज्ञा से पं० भगवान्स्वरूप जी ने भाद्रपद बदी ७ संवत् १९८५ के अपने पत्र के साथ श्री राजाधिराज के नाम लिखे गये ११ पत्रों की प्रतिलिपियां हमें भेजीं।

संवत् १९९० में म० मामराज जी ने गुरुकुल काङ्गड़ी से ठाकुर किशोरसिंह जी के संवह की खार देहरादून से स्वामी कृपाराम जी के कुछ पत्रों की प्रतिलिपियां की ।

अजमेर के प्रसिद्ध आर्यधर्मप्रचारक पं० रामसहाय जी ने ज्येष्ठ वदी १० संवत् १९९० (सन् १९-५-५-३३) को अपने पत्र के साथ ३ बहुमूल्य प्रत्र हमारे पास भेजे (पूर्ण संख्या २२, २७, ६१)।

बहुत दिन अतीत हुए जब अद्वितीय राजनीतिज्ञ तथा सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री भाईपरमानन्द जी, एम० ए० ने सुमसे कहा था कि पं० रयामजी कृष्णवर्मा के नाम लिखे गये श्री स्वामी जी के अनेक पत्र एक राना महाशय के पास फ्रांस में सुरिच्चत थे। मैंने उनकी प्राप्त का यन किया, पर असफल रहा। इतने में प्रयाग विश्वविद्यालय के अध्यापक श्री धीरेन्द्रवर्मा एम० ए० डी० लिट् ने जनवरी सन् १९३७ के साप्ताहिक आर्यमित्र में निम्नलिखित टिप्पण अपवाया—

# · स्वामी जी के कुछ नये पत्र

गत वर्ष मैं पढ़ाई के सिल्सिले में पेरिस में था। वहां मुझे मालूम हुआ कि एक प्रसिद्ध गुजराती व्यापारी राना महोदय के पास स्वर्गीय पं० इयामजी कृष्णवर्मा की निजी पुस्तकें आदि हैं और उनमें स्वामीजी के भी कुछ पत्र हैं। राना महोदय से मिलकर मैंने इन पत्रों को प्राप्त करने का यहा किया और इसमें मुझे सफलता हुई।

सब मिलाकर ये २६ पत्र हैं। ये सब १८७७-७९ ईसवी के लिखे हुए हैं। इनमें तीन पत्र तो आद्योपान्त स्वामी जी के हाथ के लिखे हैं और शेष दूसरों के हाथ से लिखवाए हुये हैं। किन्तु एक को छोड़ कर प्रत्येक में स्वामीजी के हस्ताक्षर हैं। कुछ पत्रों में स्वामीजी ने एक दो पंक्तियें अपने हाथ से भी बढ़ादी हैं। स्वामी जी के हाथ के लिखे पत्रों में दो हिन्दी में हैं और एक संस्कृत में। शेष पत्रों में १५ हिन्दी में, ६ अङ्गरेजी में तथा २ संस्कृत में हैं। इन पत्रों में १६ पत्र पं० श्यामजीकृष्ण वर्मा को लिखे गये हैं। १ मृलराज जो (लाहौर) को, १ वल्लभदास जी (लाहौर) को, ५ गोपालराव हरिदेशमुख जी को, २ हरिश्चन्द्र विन्तामणि जी (बम्बई) को और १ हेनरी आलकट तथा मैडम ब्लावाट्स्की को।

अधिकांश पत्र छोटे छोटे प्रबन्ध सम्बन्धी विषय वाले हैं, जिस में प्रायः वेद्माध्य की छपाई आदि के सम्बन्ध में चर्चा की गई है। किन्तु इन से भी खामीजी की इन तीन वर्षों की यात्रा क्रम का पता चलता है। दो तीन पत्रों में कुछ सिद्धान्तों का विवेचन मिलता है। उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने वाले अंश तो प्रायः प्रत्येक पत्र में मिल जाते हैं। फिर उनके हस्ताक्षर और हस्तलेख ऐतिहासिक महत्व रखते ही हैं।

मेरी इच्छा है कि यह अमृत्य सामग्री किसी ऐसी संख्या में रखदी जावे जहां यह सुरक्षित रह सके और साथ ही आर्य बन्धुओं तथा हिन्दी प्रेमियों की पहुंच के अन्दर भी रहे। में अत्यन्त बाधित होऊंगा यदि कोई सज्जन मुझे ऐसी संस्थाओं के पते मेज सकें जहां इन उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

> ८ बैंक रोड, इलाहाबाद।

धीरेन्द्र वर्मा एस० ए० डी० छिट्

(पेशिस)

संवत् १९९२ में स्वर्गीय पं० चमूपति जी एम० ए० ने ठाकुर किशोरसिंह जी के संग्रह को गुरू-कुल काझड़ी हरद्वार से प्रकाशित किया। यह संग्रह श्रत्यन्त श्रपूर्व है। हम लिख चुके हैं कि इससे पूर्व ही अर्थात् संवत् १९९० में म० मामराज जी श्री स्वामी जी के इन पत्रों की प्रतिलिपि कर लाए थे।

संवत् १९९६ में मैं प्रयाग गया। पं० वाचस्पति जी एम० ए० मेरे साथ थे। हम दोनों ने प्रो० धीरेन्द्रवर्मा जी के निवास पर जाकर उन के संप्रह के अधिकांश पत्रों की प्रतिलिपि की। संवत् २००० में श्री महेशप्रसाद जी साधु ने उस संग्रह के शेष पत्रों की प्रतिलिपियां हमारे पास भेजीं। अभी गत मास में ही पत्र पूर्ण संख्या ३७५ की एक और प्रतिलिपि अध्यापक धीरेन्द्रवर्मा जी ते हमारे पास भेजी।

परोपकारिणी सभा अजमेर का संग्रह

श्री स्वामी जी के देहरयाग पर परोपकारियी सभा ने निश्चय किया कि श्री स्वामी जी का प्रामा-णिक जीवनचरित सम्पादित तथा प्रकाशित कराया जाये । यह काम पं० मोहनलाल विष्णुलाल पण्डिया उपमंत्री सभा को सौंपा गया। उन्होंने तद्विषयक कुछ सामग्री उपलब्ध की। हमें खोज करने पर भी उस सामग्री का कुछ पता नहीं लगा।

परोपकारिणी सभा के मन्त्री, ऋषिभक्त, वयोवृद्ध दीवान बहादुर श्री हरविलास जी शारदा को मैंने अनेक वार लिखा कि वे उन समस्त पत्रों की प्रतिलिपियां भेजें, जो उन के पास हैं और अभी तक प्रकाशित नहीं हुए। तद्वुसार सन् १९४३ मास सितम्बर में उन्होंने ऐसे सब पत्रों की प्रतिलिपियां

मेरे पास भेजीं। वे सब पत्र इस संस्करण में यथास्थान छप गए हैं।

कुछ और नये पत्र

श्रमी मास श्राषाढ़ संवत् २००२ में इन पत्रों का मुद्रण समाप्त हो रहा था। म० मामराज जी गत छः मास से मेरे पास थे। मैंने उन से कई वार कहा कि मेरठ के ला० रामशरणदास जी के घर पर पड़े हुए सब बस्ते एक वार उन्हें स्वयं देख लेने चाहियें। संभव है कि ला० धनपतराय जी पूरे कप से उन्हें न देख सके हों। म० मामराज जी मेरठ पहुंचे। उन्होंने ३१—७—४५को मुक्ते पत्र तिखा कि उसी पुराने स्थान से उन्होंने १५ पत्र ऋौर खोज लिए हैं।

हमारे संप्रह में एक कागज पर उर्दू में कुछ लेख था। ध्यानपूर्वक पढ़ने पर पता लगा कि श्री स्वामी जी ने उस पर कुछ पत्र लिखवाए थे। वे ही पूर्व रूप में इद्दें में उस पत्र पर थे। इन सब पत्रों

को हम ने परिशिष्ट में छाप दिया है।

१-देखो :- म॰ मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार की भूमिका प्॰ ८ ग्रौर ६।

संपूर्ण उपलब्ध पत्रों के नवीन संस्करण का आयोजन

श्रारम्भ में जैसे जैसे पत्र प्राप्त होते जाते थे वैसे वैसे ही रच्चा के विचार से मुद्रित कर दिये जाते थे। श्रामा लोज चलती रहती थी। पर्याप्त सामग्री एकत्र हो जाने पर यह निश्चय किया गया कि ऋषि का प्रामाणिक जीवनचरित लिखने के लिये इन सब पत्रों और विज्ञापनादि का तिथि क्रमानुसार सम्पादन श्रत्यावश्यक है। तदनुसार मास श्रावण संवत् १९८४ से पत्रों के इस संस्करण का श्रायोजन श्रारम्भ कर दिया गया था। पुराने सब पत्र तिथि क्रम से जोड़े गए।

तिथिकमानुसार पत्रसम्पादन का प्रथम अपूर्वलाभ

चस समय प्रथम वार यह ज्ञात हुआ कि जीवन चिरतों में तिथियों की अनेक अशुद्धियां हो गई हैं। पत्रस्थ तिथि स्थानी ज॰ से जनवरी का अभिप्राय था। और कई लेखकों ने जून समका। इसी प्रकार आं० अर्थात् आषाढ़ को आधिन अथवा आधिन को आषाढ़ समका गया। मा० अर्थात् मार्गशीर्ष से माघ समका गया अथवा इस के विपरीत्। ऐसी अशुद्धियां इस संस्करण की टिप्पिएयों में प्रदर्शित की गई हैं।

### द्वितीय अपूर्व लाभ

दूसरा महान लाभ यह हुआ कि जीवनचरितों में दी गई श्री स्वामी जी के अनेक स्थानों पर पहुंचने और वहां से प्रस्थान की तिथियां अशुद्ध प्रमाणित हुई और यह विदित हुआ कि जीवनचरितों में कई स्थानों पर पहुंचने का उल्लेख भी नहीं है। यथा—

| * 10       | पत्र संख्या     | पत्र की तिथि                           | घटना  | भूल या श्रमाव  |
|------------|-----------------|--|---|--|
| 8          | <b>२</b><br>.२६ | = १ सि० १८७६<br>पौ. सु. २ सं. १९३३     |   | पं. लेखराम कृत जीवनचरित में<br>यह घटना नहीं है।<br>पं. लेख. जी. च. में दिसम्बर का                                    |
| <b>M</b> . | २४,२६           | = दि. १७-१⊏७६<br>सन् ६-२-७०<br>१३-२-७७ | सन १५-२-७७ को<br>मेरठ से चल कर                        | श्रन्त है, तिथि नहीं है। पं. घासी<br>जी. में तिथि नहीं।<br>पं. लेख. श्रीर घासी जी. च. में<br>४ फरवरी को मेरठ से चलकर |
| 8          | २७,२८           | ₹ <b>द-</b> ₹-७७<br>९-३-७७             | सहारनपुर पहुंचे।<br>११ मार्च को सहारन-<br>पुर से चले। | सहारनपुर गये ।<br>लेख. जी. च. में नहीं । घासी<br>जी. च. में है।  |

१- पत्र पूर्यासंख्या २३६ पर टिप्पण २ ।

२ पत्र पूर्णसंख्या ४१६ पर टिप्पण २।

३ पत्र पूर्यांसंख्या ३५६ पर टिप्पण १ ।

### भूमिका

|         | पत्र संख्या        | पत्र की तिथि  | घटना   | भूल या श्रमाव   |
|---------|--------------------|---------------|--|---|
| · · · · | 39                 | २१ जु. १८७७   | १२ जुलाई को लाहौर<br>से अमृतसर पहुंचे।               | लेख. जी. च. में ५ जुलाई को<br>पहुंचे। इसी प्रकार घासी. जी. च.                         |
| Ę       | ४० नोट नं.२        | <b></b>       | १४ मई १८७७ को<br>पञ्जाब गवर्नर से<br>लाहौर में मिले। | में भी श्रशुद्ध है।<br>लेख. जी. च. में नहीं। घासी. जी.<br>च. पृ. ४१४ पर श्रशुद्धि है। |
| 9       | . 88               | ११-१०-१८७७    | १५ अकतूबर १८७७                                       | लेख. जी. च. में नहीं है । घासी.   |
|         |                    |               | को जालन्धर से<br>श्रमृतसरपहुँचे।                     | जी. च. में नहीं है। दोनों में<br>१७ को जालन्धर से चलना<br>लिखा है।                    |
| 5       | પૂજ                | २७ दि. १८७७   | २७ दि. को जेहलम<br>पहुँचे।                           | लेख. तथा घासी. जी. च. दोनों<br>अशुद्ध। देखो टि. पृ. =६।                               |
| 9       | दर<br>ः            | १५ जु. १८७८   | १५ जुलाई को अमृत-<br>सर में थे।                      | लेख. जी. च. तथा घासी. जी. च.<br>दोनों में ११ जु. तक ही अमृतसर<br>में रहना लिखा है।    |
| १०      | . १०९              | ७ अक्टू. १८७८ | ३ अक्टू० को दिल्ली<br>पहुँचे।                        | लेंख. तथा घासी. के अनुसार ९<br>अकटूबर को दिल्ली पहुंचे।                               |
| ११      | १९५                |               | २० नवम्बर १८७९<br>को काशी में थे।                    | ने न  |
| १२      | <b>२९६</b><br>३००  |               | श्रतीगढ़ पहुँचने का<br>वृत्तान्त।                    | यह बृत्तान्त किसी जीवन चरित<br>में नहीं है।   |
|         | ₹₹8<br><b>₹</b> 8⊏ |               |  |   |
| . 83    | য়ৢৢৢয়            |               | १६ दिसम्बर को<br>इन्दौर पहुँचने की                   | लेखराम (पृ. ५५५) घासी. (पृ.<br>६५५)-दोनों में २१ दिसम्बर                              |
| 18      | યુર્ય              | •••           | सूचना।<br>३१ मई जोघपुर<br>पहुँचे।                    | १८८१ को इन्दौर पहुंचे।<br>लेखराम, २९ मई को जोधपुर पहुंचे                              |
| १्प     | તૈકત<br>તૈકત       |               | २६,जून १८८३ को<br>महाराज जोधपुर श्री                 | लेखराम तथा घासीराम १४ जून<br>को महाराजा उन से मिले।                                   |
| 1       |                    |               | स्वामी जी से मिले।                                   | 0 0 0 00  |

अशुद्धियों की यह संचिप्त सी सूची है। प्रामाणिक जीवन चरित में सब अशुद्धियां स्पष्ट की जायेंगी।

# तृतीय अपूर्व लाभ

अनेक पत्रों में न तिथि, न संवत् और न स्थान ही लिखा गया है। पत्रों को तिथिकमानुसार लगाने से ही ऐसे पत्र यथास्थान रखे जा सके हैं। प्रकरण ने भी इस विषय में पूर्ण सहायता दी है। इस से प्रामाणिक जीवनचरित लिखने में सुविधा होगी।

चतुर्थ लाभ

अनेक पत्रों के अन्त में लेखकों की भूल से वदी, सुदी, मास अथवा संवत् अशुद्ध लिखा गया है। ऐसी असावधानी अब भी अनेक लोगों से हो जाती है। तिथिक्रमानुसार पत्रों के छापने से ऐसी सब अशुद्धियां दूर हो गई हैं। उन के कितपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

|     | पत्र पूर्णं संख्या | पत्रस्थ श्रशुद्ध तिथि वा संवत् | यथार्थ तिथि वा संवत्  |
|-----|--------------------|--------------------------------|-----------------------|
| 8   | १६                 | चैत बदी ९                      | ज्येष्ठ वदी ९         |
| २   | ११२                | ३१ अकटूबर                      | १३ अकटूबर             |
| ३   | . ૧૫૭              | वैशाख सुदी २                   | वैशाख वदी २           |
| 8   | १६०                | १०-४-५⊏                        | १०-४-७९               |
| ્યૂ | २३८                | व्याषाद सुदी ६ संवत् १९३६      | आषाद वदी ६ संवत् १६३७ |
| ६   | **** * <b>387</b>  | एप्रिल                         | जुलाई                 |
| v   | ३३० "              | सन् १८८०                       | <b>8</b> □□ <b>6</b>  |
| _   | ३४८                | सन् १८८०                       | १८८१                  |
| 9   | ३४९                | ७ मार्च                        | ७ एप्रिल              |
| १०  | ३६५                | शु० ११                         | सुदी १०               |
| 88  | ३९९,४०७,४८५        | संवत् १९३८                     | संवत् १९३९            |
| १२  | ५०३,५०५,५०९        | संवत् १६३९                     | संवत् १९४०            |

### पंचम लाभ

श्री स्वामी जी कई ऐसे नगरों में गये जिनका जीवनचरितों में उल्लेख नहीं है। पत्रों के तिथि-क्रमानुसार लगने से ही जीवनचरितों की ऐसी त्रुटियां दूर हुई हैं। प्रामाणिक जीवन चरित में अब ऐसी भूलें नहीं रहेंगी।

पत्रों में अयोग्य लेखकों के कारण भाषा और लेख की अनेक अशुद्धियां पाठक देखेंगे कि महातमा मुंशीराम जी, पं॰ चमूपति जी और ख सम्पादित पहले भागों के सहश हम ने लेखकों द्वारा की गई सब अशुद्धियां इस बृहत् पत्र-संग्रह में भी मूलवत् ही रहने दी हैं। श्री स्वामी जी को पत्र लिखने अथवा लिखे गये पत्रों को पूरा शोधने का समय प्रायः नहीं मिलता था। धनाभाव के कारण उन को श्रेष्ठ लेखक नहीं मिल सके। इस के अतिरिक्त उस युग का मतवाद भी अच्छे लेखकों की प्राप्त के मार्ग में बाधक था। यही कारण है कि इन पत्रों में लेख की अनेक अशुद्धियां हैं। हम ने पत्रों को मुद्रित करते हुए यत्र-तत्र विरामादि तो दे दिए हैं; परन्तु लेख मूलवत् ही रहने दिया है। श्री स्वामी जी ऐसे प्रखर पण्डित को कैसी महती कठिनता में ऐसे अल्पवृद्धि लेखकों के साथ अपना महान कार्य करना पड़ा, यह इन अशुद्धियों से ही ज्ञात हो जायगा।

### कृत्रिम पत्र

जात-पात तोड़ने की आड़ में वेदमत के नाश करने वालों का एक दल लाहीर में है । उसके अमुख सदस्यों के नाम सुप्रसिद्ध हैं । उन्हों में से किसी वा किन्हों के परामर्श से हिन्दी-प्रताप कानपुर में ऋषि के नाम से दो पत्र छापे गये । दूसरा पत्र १९ दिसम्बर सन् १९२६ को छपवाया गया था । इन दोनों पत्रों की भाषा श्री स्वामी जी की भाषा से सर्वथा भिन्न और वर्तमान काल की है । पत्रों का विषय श्री स्वामी जी के सिद्धान्तों से सर्वथा विपरीत है। पत्रों में ऐतिहासिक सत्यता के विपरीत कल्पना है। यथा दूसरा पत्र १९४० विक्रमी कार्त्तिक विद् प्रथमा (=१७ अक्टूबर सन् १८-३, बुधवार) को अजमेर से लिखा हुआ छापा गया है। उस दिन श्री स्वामी जी महाराज अजमेर में नहीं थे। उन दिनों श्री स्वामी जी की अवस्था इतनी निर्वत्त थी कि वे बोलते भी नहीं थे। इस लिये जिस दल ने ये पत्र बनाये हैं, निश्चित होता है कि श्री स्वामी जी के इतिहास के विषय में उनका ज्ञान कुछ भी नहीं था। पूर्वप्रदर्शित अनेक असत्यों के कारण इस दल के लोगों की मनोवृत्ति स्वयं स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार के कृत्रिम पत्रों से आर्यसमाज के हितैषी महारायों को सदा सावधान रहना चाहिए। दुःख का विषय है कि सहस्रों आर्यसमाजी इस दल के सहायक हैं।

इन कृत्रिम पत्रों को प्रथम वार छपवाने वाला एक पंडित अर्जुनदेव (गढ़वाली) कहा जाता है। वह व्यक्ति पंडित विश्वबन्धु एम० ए० शास्त्री का कभी शिष्य रहा है। पंडित विश्वबन्धु वह ही व्यक्ति है, जिस ने वेद सम्बन्धी पाश्चात्य मत की दूषित और अनुत सरिए का अवलम्बन करके अनेक भोले भाले आर्थसमाजियों को आर्थसंस्कृति का विरोधी बनाया और जो द्यानन्द कालिज लाहौर में से ऋषि द्यानन्द सरस्वती की रही सही भावनाओं की मृत्यु का एक निमित्त बना। इन्हीं महाशय को संस्कृत का पिडित मान कर और इन के मिथ्याकथन पर विश्वास करके द्यानन्द कालेज की प्रवन्धकर्तृसभा के अधिकांश सदस्य आर्थविश्वासों से च्युत हुए।

संवत् १९९० की आजमेर निर्वाण-आर्धशताब्दी के समय पं विश्ववन्धु और लाला मृलराज ने एक दशप्रश्री पुस्तिका छपवाई थी। उस में भी श्री स्वामी जी के विरुद्ध कई बात लिखी गई थीं। पूछे जाने पर पं विश्ववन्धु जी ने लिखा कि उनका इस पुस्तिका से कोई सम्बन्ध नहीं है। ईश्वर सहायता से इमने इसी पुस्तिका के सम्बन्ध में रांच मूलराज जी आदि तथा पं विश्ववन्धु जी के

१. ७ मार्च १६२७ को इम और म॰ मामराज कानपुर में प्रताप-कार्यालक में गये। वहां परलोक-गत श्री गर्थेशशङ्कर विद्यार्थी से इन कूट अर्थात् जाली पत्रों के सम्बन्ध की सारी सामग्री ले आए थे।

हाथ का लिखा हुआ पत्र प्रकाशित कर दिया। तब जनता पर पं० विश्ववन्धु का घृणित असत्य प्रकट हुआ। उन्हीं पं० विश्ववन्धु के साथी लोग श्री स्वामी जी के नाम पर अपनी मिध्या रचनायें करें, इस में क्या आश्चर्य है।

### ऋषि द्यानन्द सरस्वती का सर्वप्रथम लेख

पं० लेखराम जी लिखते हैं-

"स्वामी जी सम्वत् १९२० वैशाख के अन्त में मथुरा में शिह्ना प्राप्ति के पश्चात् आगरा की श्रोर गए।"

"लगभग दो वर्ष तक आगरा में रहे। इस काल में समय २ पर पत्र द्वारा अथवा स्वयं मिल कर स्वामी विरजानन्द जी से अपने सन्देह निवृत्त कर लिया करते थे।"र

श्री खामी जी स्वयं सिखते हैं-

(M/ "फिर मथुरा से आगरा नगर में दो वर्ष तक स्थिति किई। ... ... जहां २ मुक्त को शंका रह जाती थी उन का खामी जी से उत्तर यथावत पाया।""

त्रार्षप्रन्थों के महत्त्व को स्थापित करने वाले प्रज्ञाचन्त्र विरजानन्द और स्वामी द्यानन्द सरस्वती का यह पत्रव्यवहार कितना अमूल्य होगा, इस का अनुमान विज्ञ पाठक स्वयं कर सकते हैं। पर दु:स है, वह पत्रव्यवहार किसी ने सुरिच्चत नहीं किया।

एस के कुछ पश्चात् श्री स्वामी जी ने भागवत खरडन आरम्भ किया। पं० लेखराम जी लिखते हैं—"उसी समय का लिखा हुआ एक भडवा भागवत का पुस्तक परिडत झगनलाल वृद्धिचन्द जी से मुमे मिला है। जिस के अन्त में संवत् १९२३ दूसरा ज्येष्ठ तिथि वदी ९ ( ७ जून १८६६ बृहस्पतिवार ) लिखा है।"

प्रतीत होता है, यही भागवत खरडन पुस्तक फिर छपवाया गया। पं० लेखराम जी के अनुसार 'हरिद्वार के क्रम्य मेला पर मध्य मार्च सन् १८६७ से सहस्रों की संख्या में विवरण भी किया।'<sup>4</sup> पं० लेखराम जी पुनः लिखते हैं-

''पाखण्ड खण्डन—यह पुस्तक ७ पृष्ठ संस्कृत भाषा में स्वामी जी ने .....रचा।..... अजमेर से लौट कर सम्वत् १९२३ के अन्त में स्थान आगरा ज्वाला प्रकाश प्रेस में पिखत ज्वालाप्रसाद भार्गव के प्रबन्ध से कई सहस्र प्रतियां छपवाई । श्रीर वैशाख सम्वत् १९२४ के कुम्भ पर निःशुल्क वाँटा गया।"5

यह पुस्तक उन का सर्वप्रथम उपलब्ध लेख है। इस का आरम्भ और अन्त नीचे मुद्रित किया जाता है -

- १. जीवन चरित, पु॰ २६।
- २. जीवनचरित, प० ३१ ।
- ३. इसी प्रन्थ का विज्ञापन, पूर्णसंख्या ७, प० २४।
- ४. जीवनचरित, पृ० ४५।
- प्र. जीवनचरित, पृ० ५१ ।

६. जीवनचरित, पु० ७६०।

### भागवत खण्डन

श्रीमद्रागवतं पुराणं किमस्ति । कुतः सन्देहः ॥ द्वे भागवते श्रूयेते । एकं देवीभागवतं द्वितीयं कृष्णभागवतञ्च । अतो जायते सन्देहोऽनयोः किमस्तिन्यासकृतमिति ॥ देवीभागवतं श्रीमद्रागवतमस्ति न्यासकृतञ्च नान्यत् ॥ कुत एतत् । शुद्धत्वाद्वेदादिभ्यः अविरुद्धत्वाच । अत एव देवीभागवतस्य श्रीमद्रागवतसञ्ज्ञा नान्यस्य च भागवतस्य । कुत एतद्शुद्धत्वात् प्रमत्तगीतत्वाच । किञ्च तत् ।

ये तु पाषण्डिमतविश्वासिनस्तेऽपि पाषण्डिनः।

पाषण्डिनो विकर्मस्थान वैडालत्रतिकान शठान् । हैतुकान् वकहत्तीश्च वाङ्मात्रेणापि नार्चयेदित्याह मनुः ॥ अत एव वाङ्मात्रेणापि पाषण्डिभिस्सह व्यवहारो न कर्त्तव्यः ॥ पाषाणादिमूर्त्तिपूजनं पाषण्डिभतमेव ॥ कुत एतन् ॥ वेदादिभ्यो विरोधान्, यद्वाचानभ्यदितं येन वागभ्युयते ॥ तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिद्मुपासते ॥ यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम् ॥ तदेव० ॥२॥ यत्प्राणेन न प्राणते येन प्राणः प्रणीयते ॥ तदेव ॥३॥

इसादि श्रुतिभ्यः ॥ अत एव पाषाणादिकित्रिम [क्रुत्रिम] मूर्त्तिपूजनं वृथैव ॥ अव्यक्तं व्यक्तमापनं मन्यन्ते मामबुद्धयः ॥ इति भगवद्गीतावचनात् ॥ किं बहुना छेखनेनैतावतैव सज्जनैर्वेदितव्यं विदित्वाचरणीयमेव ॥

दयानन्दसरस्वत्याख्येन स्वामिना निर्मितिमदं पत्रं वेदितव्यं विद्वद्विहिरिति शुभं भवतु वक्तृभ्यरश्रोतृभ्यरच । वेदोपवेदवेदांग-मनुस्मृति-महाभारत-हरिवंश-पुराणानां वाल्मीकिनिर्मितस्य रामायणस्य चाध्यापनमध्ययनं कर्त्तव्यं कार्यितव्यञ्च ॥ एतेषामेव श्रवणं कर्त्तव्यमिति ॥

इस लेख का कुछ पाठ हमने खूलाचरों में मुद्रित किया है। उस से ज्ञात होता है कि संवत १९२३ के आरम्भ से पहले ही श्री स्वामी जी मूर्तिपूजा का खरडन करने लग पड़े थे। इस विषय में उन्होंने श्री स्वामी विरजानन्द जी की सम्मित अवश्य ली होगी। वस्तुतः वे मथुरावास के दिनों में भी मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं रखते थे। इसका खुला खरडन उन्होंने आगरा-वास से आरम्भ किया।

१. कृष्णभागवत का खण्डन स्वामी विरजानन्द जी भी करते थे। पूना व्याख्यान में श्री स्वामी जी कहते हैं—"विरजानन्द स्वामी ""भागवत ब्रादि पुराणों का तो बहुत ही तिरस्कार करते थे।"

२. श्री स्वामी जी के सहाध्यायी पं॰ युगलिकशोर जी कहते हैं कि ''एक दिन विद्यार्थी अवस्था में ही हम से स्पष्ट कह दिया कि मूर्तिपूजा, कराठी, तिलक, छाप सब वर्जित हैं।'' जीवनचरित पु॰ २७॥

हां संवत् १९२३ के आरम्भ तक श्रीमद्भागवत के अतिरिक्त वे दूसरे पुराणों को परम्परागत विश्वास के कारण श्रवणमात्र से ही प्रामाणिक मानते थे। पूर्वपुद्रित लेख से यह स्पष्ट ही है।

# वर्तमान पुराणों का परित्याग क्यों किया गया

इस के कुछ दिन पश्चात् ही श्री स्वामी जी ने वर्तमान पुराणों का खरडन भी खारम्भ कर दिया। संवत् १९२६ में प्रामाणिक प्रन्थों का जो विज्ञापन (पूर्ण संख्या १) कानपुर में दिया गया, उस में पुराणों का नाम नहीं है। इस पवित्र भारतभूमि पर जो भी धर्माचार्य मूर्तिपूजा के खरडन में ख्रमसर होगा, उसे पुराणों का परित्याग करना ही पड़ेगा। पुराणों में 'धुणाज्ञरन्याय' से कई बातें सची मान कर भी ऋषि दयानन्द सरस्वती को इन का खरडन करना पड़ा। ' पुराण ही मूर्तिपूजा का मूल है। स्वामी जी की असाधारण दृष्टि और उनके सूच्म अध्ययन ने सहसा देख लिया कि मूर्तिपूजा और वेदविरुद्ध समस्त सम्प्रदायों का मूल, वर्तमान पुराण प्रन्थ-ही हैं। उस समय श्री स्वामी जी ऋषि पदवी की ओर जा रहे थे। उन्हें यह ज्ञान बहुत खारम्भ में हो गया। उन का सब से पहला उपलब्ध लेख इसी लिए महत्त्व का है कि इस से हमें विदित होता है कि ऋषि के जीवन में विचार-धारा का विकास कैसे हुआ।

जब श्री स्वामी जी मथुरा से पढ़ कर निकले तो वे कतिपय पुराणों को मानते थे। इन पुराणों का अध्ययन करने और उनका वेद से गम्भीर सन्तोलन करने पर उन्हें पता लगा कि वर्तमान पुराण श्रृष्टियों से प्रयुक्त किये गये पुराण शब्द के अन्तर्गत नहीं आ सकते। इन वर्तमान पुराणों का संकलन गत दो तीन सहस्र वर्ष में ही हुआ है। अतः इन में अधिकांश बात वेद विकद्ध दिखाई दीं। उस काल में पिएडत लोग इन वेद-विकद्ध वातों को पुराणों से ही सिद्ध करते थे। स्वामी द्यानन्द सरस्वती इस बात को नहीं सह सके। और उन्होंने इन पुराणों का सर्वथा परित्याग कर दिया। इस विषय में भी उनका श्री विरजानन्द जी से विचार विनिमय हुआ ही होगा, पर नहीं कह सकते किस रूप में।

### पत्र कितनी भाषाओं में लिखे गए

ऋषि दयानन्द सरस्वती संस्कृत और आर्यभाषा के ही पिएडत थे। गुजराती उन की मात्रभाषा थी। उद्बेशीर अंग्रेजी से वे सर्वथा अनिमज्ञ थे। पर मिलते हैं उन के पत्र इन पांच भाषाओं में ही। उन के संस्कृत पत्र और विज्ञापन प्रायः शुद्ध रूप में हैं। संवत् १९२९ तक तो उन सारा पत्रव्यवहार और सम्भाषण निश्चित ही संस्कृत में था। तक्षश्चात् संवत् १९३० में कलकत्ते से आकर उन्होंने आर्यभाषा में भी बोलना आरम्भ कर दिया। आर्यभाषा के पत्र उस समय से आरम्भ हो गये होंगे। जो लोग संस्कृत अथवा आर्यभाषा नहीं जानते थे, उनके पत्रों का उत्तर भी श्री स्वामी जी आर्यभाषा में ही बोलते अथवा लिखवाते थे। फिर वह उत्तर उद्धे अथवा अंग्रेजी में अनूदिदित हो कर भेजा जाता था। कर्नल आल्काट तथा मैंडेम ब्लेवेट्स्की के पत्र अंग्रेजी में अनुवाद करके भेजे जाते थे। गुजराती भाषा का एक ही पत्र इस संग्रह में पूर्णसंख्या ४१२ पर छप। है। वह पत्र श्री स्वामी जी की अनुमित से ही लिखा गया है। संभव है वह गुजराती भाषा भी श्री स्वामी जी की हो हो।

१. सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास-पुराण्खरडनप्रकरण।

# पत्र और विज्ञापनों में ऋषि के उज्ज्वल विचार

#### ५-भारत की भाषा संस्कृत

श्चनेक पत्रों तथा विज्ञापनों में यह विषय श्चत्यन्त स्पष्ट मिलता है। उन पत्रों का तथा उनके श्चन्तर्गत वचनों का क्रमशः प्रदर्शन नीचे किया जाता है—
पूर्णसंख्या [१] वेदों का पढ़ना द्वितीय सत्य है।

[१२] इस त्रार्य-विद्यालय से .... श्रार्यावर्त्त देश की उन्नति होगी।

[१३] (क) संस्कृत विद्या की ऋषि मुनियों की रीति से प्रवृत्ति करना।

(ख) सनांतन संस्कृत विद्या का उद्घार।

(ग) त्रायिक देश की स्वामाविक सनातन विद्या संस्कृत ही है। ..... उसी से इस देश का कल्याग्र होगा। त्रान्य भाषा से नहीं।

[३६] यदि वेद का ज्ञान सारे देश में फैला दिया जाय तो भारत में से श्रज्ञानान्धकार ... ...

[६४] वेदभाष्य का अनुवाद श्रंग्रेजी अथवा प्रान्तीय भाषा में नहीं होना चाहिए। ...... यदि श्रंग्रेजी अथवा उर्दू में वेदभाष्य का अनुवाद किया जायगा तो संस्कृत पढ़ने के प्रति जनता का उत्साह मन्द हो जायगा।

[७५] (क) संस्कृत विद्या की उन्नति करनी चाहिए।

(ख) प्राचीन आर्षप्रन्थों के ज्ञान के विना किसी को संस्कृत विद्या का यथार्थ फल नहीं हो सकता।

[१४२] जैसा " आर्यसमाजों के सभासद करते और कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या

के जानने वाले स्वदेशियों की बढ़ती के अभिलाषी ।।।

[१४९] मुमे यह सुन कर बहुत प्रसन्नता हुई है कि आप आर्थ्य-संस्कृतपाठशाला का यत्न कर रहे हैं। १६ मार्च १८७९।

[१५१] उन्होंने (ब्लेबेट्स्की खौर खल्काट ने ) संस्कृत पढ्ने का खारम्भ किया है वा नहीं।

[१६४] आप के संस्कृत पाठशाला खोलने का विचार सुन कर मुक्ते बहुत हर्ष है। २४ एप्रिल १८७९।

[१७९] कल्पना करो कि इन सब का सन्तोषजनक प्रबन्ध हो भी जाय; परन्तु इससे सब से बड़ी हानि यह होगी कि मेरे वेदभाष्य के द्रांमेजी द्यानुवाद के प्रकाशित होने पर भारतीय द्यार्थ संस्कृत द्यौर भाषा को पढ़ना छोड़ देंगे, जिसे कि वे द्यार्थ वेदभाष्य को समक्तने के लिए आजकल उत्साह के साथ पढ़ रहे हैं। श्रीर यही मेरा मुख्य उद्देश्य है।

[३५४] इस पाठशाला में अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रहना चाहिये। और इसमें केवल लड़के ही पढ़ते हैं अथवा हमारे रईस लोगों में से भी कोई पढ़ता है ?

- [३५६] आप लोगों की पाठशाला में आर्थभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अर्थात् अंग्रेजी व उर्दू फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह शाला खोली गई है, सिद्ध होता नहीं दीखता । वरन् आपका यह हजारह मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्थावर्त में संस्कृतिवद्या का अभाव हो रहा है, वरन् संस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। आप आप अपित प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है आ।
- [३५८] ..... संस्कृत की उन्नति होनी, सो इस पर अच्छे प्रकार ध्यान रहे।
- [३५९] इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है उसको ही वृद्धि देना चाहिए।
- [४९९] तुम्हारी पाठशाला में श्रालफ वे श्रीर कैट बैट का धर्मार है, जो कि श्रार्थसमाजों को विशेष कर्तव्य नहीं है।
- [४५९] ७-सदा सनातन वेद शास्त्र, आर्थराज, राजपुरुषों की नीति पर निश्चित रह कर उनकी उन्नति तन मन धन से सदा किया करें। इन से विरुद्ध भाषाओं की प्रवृत्ति वा उन्नति न करें वा करावें। किन्तु जितना दूसरे राज्य के सम्बन्ध में, यदि वे इस भाषा को न समम सकें, उतने ही के लिए उन उन भाषाओं का यत्न रखें, जो वह प्रवृत्त राज्य हो।

पूर्वोद्घृत वचनों में संस्कृत के प्रति ऋषि द्यानन्द सरस्वती के उद्गारों का स्पष्ट चित्र दृष्टिगोचर होता है। श्री खामी जी के अनुसार—

- (क) संस्कृत भारत की मातृभाषा है। अथवा आर्यावर्त की स्वामाविक सनातन विद्या संस्कृत ही है।
  - (ख) संस्कृत पढ़ कर सब आर्यावर्तीय लोगों को आर्षप्रन्थों का अभ्यास करना चाहिये।
- (ग) वर्तमान काल में संस्कृत के अतिरिक्त अप्रेजी आदि भाषाओं पर आर्थसमाज का धन व्यय नहीं होना चाहिए।
- (घ) आर्थ राजाओं को संस्कृत की ही उन्नति करनी चाहिए। उन्हें अपने राज्यों में संस्कृत से विभिन्न भाषाओं का आदर मान न करना चाहिए।
  - (ङ) संस्कृत से ही भारत श्रीर मनुष्य-मात्र का कल्याण होगा।
  - (च) अंग्रेजी लोगों की मात्रभाषा हो चली है। इस का प्रतिकार करना चाहिए।

ब्रार्यसंस्कृति के इस सर्वथा विद्वेषी भयानक काल में, आर्य-संस्कृति के ब्रनन्य भक्त ऋषि दयानन्द सरस्वती के संस्कृतभाषा सम्बन्धी ये उद्दाम विचार अत्यन्त स्पष्ट हैं। इन विचारों में एक अपरिमित शक्ति, एक प्रबल प्रवाह, और एक अनुपम रस है। इन्हीं गम्भीर और पूर्ण सत्य विचारों की छाया ऋषि दयानन्द सरस्वती रचित प्रन्थों में भी दृष्टिगत होती है। भारत और भारतीय संस्कृति के उद्धार के निमित्त ये सत्य विचार वर्तमान भारत के किसी भी सुधारक या नेता को नहीं सूमें।। इन विचारों को श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी और श्री जवाहरताल भी प्रकट नहीं कर सके। वे एसा कर भी कैसे। वे तो संस्कृतभाषा के वैभव से अनिभन्न हैं, और वेद-विद्या-विहीन हैं। वे भारतीय तत्त्व को नहीं समभते।

श्री गान्धी जी ने एक दो स्थानों पर लिखा है कि प्रत्येक हिन्दू को संस्कृत पढ़नी चाहिये। परन्तु यह उनका कथन मात्र ही रहा हैं। उनका स्वीकृत किया हुआ उत्तराधिकारी श्री जवाहरलाल संस्कृत-ज्ञान-शून्य है। उनके अधिकांश अन्य साथी भी संस्कृत से विमुख हैं। इस के साथ यह भी विचारणीय है कि जो भाषा व्यवहार में नहीं आती वह मृतप्राय हो, जाती है। इस लिए व्यवहार में "हिन्दुस्तानी भाषा" को प्रचरित करने वाले श्री गान्धी जी संस्कृत को मृतप्राय हो बनावेंगे। उनका कहना कथनमात्र रहेगा। यदि वे सत्य से थोड़ा सा भी प्रेम रखते हैं तो उन्हें निज हठ छोड़ कर यह मानना चाहिए कि भारतीयों के लिए संस्कृत पढ़ना ही आवश्यक नहीं, प्रत्युत संस्कृत को शिष्ट-व्यवहार की भाषा बनाना भी आवश्यक है। अतः श्री गान्धी जी को ऋषि द्यानन्द सरस्वती का अनुकरण करना चाहिए।

ऐसी अवस्था में अंग्रेजी शिक्षा प्रभावित पाश्चात्य विचार का उच्छिष्टोजी, भारतीय इतिहास और संस्कृति का अगुमात्र-ज्ञान न रखने वाला एक भोला भारतीय नव-युवक प्रश्न करता है—

(प्रश्न) क्या भारत की भाषा कभी संस्कृत भी रही है।

(उत्तर) सतयुग में भूनल के सब मनुष्यों की भाषा संस्कृत थी। वह संस्कारहीन नहीं शी। व्याकरण आगम के महान पिछत भर्नृहरि ने वाक्यपदीय के प्रथम काएड के अन्त में स्वीपज्ञ यृत्ति में लिखा है—श्रूयते पुराकल्पे स्वशरीर व्यतिषां मनुष्याणांय थैव-अनुतादि सिरसंकी णीं वागासी त्त्र सवैरपभ्रंशे:। गत जलसावन के पश्चात और इस सतयुग के आरम्भ में प्रथम उपदेशकर्ता तथा वक्ता श्री ब्रह्मा जी ने वेद और समस्त शास्त्रों का उपदेश कर दिया। शास्त्रों का उपदेश संस्कृत में था। वे शास्त्र जम्मूण उपयोगी ज्ञान का भएड र थे। उनकी शब्दराशि विपुल थी। संसार की समस्त भाषाएँ उसी विपुल शब्दराशियुक्त संस्कृत का प्राकृत अथवा अपभ्रंश रूपमात्र हैं। ब्रह्मा जी=आदम (आत्ममू) द्वारा उपदिष्ठ ज्ञान मनुष्य मात्र का एक मात्र आश्रय था। तब सारी सृष्टि ब्राह्मण्यू थी। प्राकृत और अपभ्रंश भाषाएँ सतयुग के पश्चात् त्रोता से बनने लगीं।

भाषा-परिवर्तन विषयक योहपीय मत कि बोलियों (dialects) से भाषा (Eanguage) बनती है सर्वत्र लागू नहीं होता। यह इतिहास विरुद्ध है। इसके विपरीत संकुचित हो हो कर भाषाओं से बोलियां बनीं, यह तथ्य भारतीय इतिहास से सिद्ध है। संस्कृत भाषा से ह्रास होते-होते है पंजाबी आदि बोलियां बनी यह निर्विवाद है।

द्वापरान्त अर्थात् भारत्युद्ध-काल में भारत्युद्ध में भाग लेने वाले राजगण भी जब वेद्विद्या-युक्त थे, तब संस्कृत की बात ही क्या । देखिए—

> सर्वे वेदविदः श्राः सर्वे सुचिरितव्रताः । विशोगपर्व १४६ । ६ ॥ वेदाध्ययनसंपन्नाः सर्वे युद्धाभिन्निन्दनः । भीष्मपर्व १ । ४ ॥ किलियुग के कई सौ वर्ष जाने पर भी भारत की भाषा संस्कृत ही थी । आचार्य यास्क,

१. इस विषय का सप्रमाण विस्तृत वर्णन हमारे रचे भारतवर्ष का बहद इतिहास भाग प्रथम में हैं।

जो भारत युद्ध के ३०-५० वर्ष पश्चात हुआ संस्कृत को ही भाषा अर्थात बोल चाल की भाषा लिखता है—

इवेति भाषायां च अन्वध्यायं च । निक्तत १ । ४॥

नूनमिति विचिकित्सार्थीयो भाषायाम् । उभयम् अन्वध्यायं विचिकित्सार्थीयश्च पदपूरणश्च । निष्कत १ । ५ ॥

ब्याचार्य पाणिनि भी जो भारतयुद्ध के २५० वर्ष पश्चात् हुआ, संस्कृत को ही भाषा लिखता है— भाषायां सदवसश्चवः । ३।२।१०८

सख्यशिश्वीति भाषायाम् । ४।१।६२॥

भारत-युद्ध के लगभग १३०० वर्ष पश्चात् भारत भूमि पर तथागत बुद्ध और जैन तीर्थं कर श्री महावीर स्वामी का प्रादुर्भाव हुआ। इन आचार्यों ने सर्वप्रथम प्राकृत का आश्रय विशेष लिया। यह बात सकारण थी। अधिकांश विद्वान् लोग इन की बात न सुनते थे। अतः इन आचार्यों ने निम्नश्रेणी के मूर्व लोगों को अपना सन्देश देना आरम्भ किया। वह सन्देश स्वभावतः प्राकृत में था। परन्तु इन आचार्यों के उत्तराधिकारी भी प्राकृत को सदा के लिए अपना नहीं सके। उन्हें भी कालान्तर में संस्कृत का ही आश्रय लेना पड़ा। संस्कृत के इस पुनरुद्धार का युग शुद्ध और गुप्त महरगजार्थों का युग था। इन में से श्री चन्द्रगुप्त-विक्रमादित्य साहसाङ्क ने तो भारत को पुनः संस्कृतभाषा-भाषी बना दिया। इसका साक्ष्य भोजराज के निम्नलिखित चचन में मिलता है—

काले श्रीसाहसाङ्कस्य के न संस्कृतवादिनः। सरस्वतीक्रयठाभरण त्रालंकार।

इन सम्राटों के शिलालेख भी काव्यमयी संस्कृत में हैं। इस से प्रमाणित होता है कि तब संस्कृत का प्रचार एक वार पुनः बहुत वृद्धि को प्राप्त हो गया था।

गुप्त सम्राटों के काल से लेकर दिल्लीपित महाराज पृथ्वीराज के काल तक के शतशः ताम्रपत्र उत्तर भारत में मिल चुके हैं। उन सब की भाषा संस्कृत ही है। गुप्तों से स्थायवीश्वरपित महाराज हर्षवर्धन तक संस्कृत भाषा का पूरा प्रावल्य था। प्राकृत श्रीर श्रपभ्रंश भाषाएं प्रचलित तो थीं, पर साम्राज्य संस्कृत का ही था। चीनी यात्री ह्यन्तसांग को, जो हर्षवर्धन के काल में भारत-भ्रमण कर रहा था, नालन्दा में रह कर संस्कृताध्ययन करना पड़ा। उसके कुछ काल पश्चात् चीनी यात्री इत्सिंग भारत में श्राया। उसने तत्कालीन संस्कृत श्रध्ययनाध्यापन-प्रणाली का एक स्पष्ट चित्र श्रपने प्रन्थ में खींचा है। उसके चिर-श्रनन्तर श्रर्थात् पृथ्वीराज के काल तक भी संस्कृत ही भारत की भाषा रही।

फिर भारत पर मुसलमानों का आक्रमण आरम्भ हुआ। ये लोग प्रायः विद्याद्वेषी रहे हैं। इन्हों ने ही सिकन्दरियां का योकप-विख्यात पुस्तकालय जलाया था। इन्हों ने उत्तर भारत के अनेक

१. छठी शताब्दी विक्रम के जैन श्राचार्य श्री इरिमद्र स्री ने एक पुराना पद्य दशवैकालिक टीका पृ० १०१ पर उद्धृत किया है—

बाल स्त्री-मूढ-मूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्चिणाम् । अनुप्रहार्थे तत्त्वशैः सिद्धान्तः प्राकृतः स्मृतः ॥ अर्थात् वाल, स्त्री और मूढ़ों के लिए जैन सिद्धान्त प्राकृत में दिया गया ।

पुस्तक-भएडर नष्ट किए। उस समय भारतीय जातीयता इग्णावस्था में थी। कोई योग्य चिकित्सक उस रोग का निदान और औषध करने वाला नहीं हुआ। अतः बहुत काल तक तो दिल्ली आदि का ही प्रदेश और फिर मुगलकाल से देश का अधिकांश भाग मुसलमानों के अधीन होगया, पर आयं-संस्कृति की थोड़ी सी रच्चा यहां के ब्राह्मण और चत्रिय आदि करते ही रहे। उस द्यनीय काल में फारसी का प्रचार बहुत बड़ा। उस दु:खद अवस्था को देख कर वीराप्रगएय श्री गुरुगोविन्द्सिह जी ने भी निम्नलिखित पद में निराशा ही प्रकट की—

### म्लेच्छ भाख जब सब पढ़ गए। सुमारग छोड़ कुमारग पए॥

गत दो सौ वर्ष से अंग्रेजी शासन भारत पर होने लगा । उसका प्रभाव दिन-दिन अधिक हुआ। मुसलमानी शासन ने तो राजनीतिक दासता ही दी थी, पर अंग्रेजी शासन ने मानसिक-दासता भी उत्पन्न की। आर्यजाित का रोग बढ़ता ही गया। ऐसी दीन-हीन दशा में अंग्रेजी-शासन-काल में संस्कृत भाषा पर सब से अधिक कुठाराघात हुआ। इसी महान विपत्ति-काल में जिस बात को राजा राममोहन राय, श्री केशवचन्द्र सेन, श्री गोपाल कृष्ण गोखले आदि भी न समभ पाए और जिसे श्री मोहनदास कर्मचन्द्र गान्धी और श्री जवाहरलाल अब भी अनुभव नहीं कर रहे, वही बात, हां भारतीय रोग की चिकित्सा का वही एक मूल-मन्त्र ईश्वर ने एक ऐसे व्यक्ति के लिए रख छोड़ा था, जिस पर अंग्रेजी भाषा का अगुमात्र प्रभाव नहीं पड़ा था। उसी महापुरुष और भारतीय सामाजिक, मानसिक और राजनीतिक दुःसाध्य रोग के सच्चे चिकित्सक दयानन्द सरस्वती ने पुनः यह बात जगाई, उसी बाल ब्रह्मचारी ने पुनः अपना सिंहनाद किया कि भारत की एकमात्र भाषा संस्कृत ही है।

(प्रश्न) यह सब सत्य है, पर इतनी समस्या अवश्य है कि संस्कृत नाटकों में देवियों के कथोपकथन प्राकृत में क्यों लिखे गए हैं। भारतयुद्ध-काल से बहुत पूर्व के भारत मुनि ने भी रूपक

के वर्णन में यही मत स्वीकार किया है।

(उत्तर) जिस प्रकार वर्तमान काल में इक्कलेग्ड देश की साहित्यिक भाषा एक विशेष प्रकार की अप्रेजी है, जिसे वहां का केवल शिष्ट-समाज ही बोलता है, और जन-साधारण की व्यवहार की माषा गोराशाही अप्रेजी कहाती है, ठीक उसी प्रकार त्रेता युग से भारत में संस्कृत माषा की दशा रही है। भारत की अधिक जनता शिष्ट थी, अतः यहां साहित्यिक संस्कृत का बहुत प्रचार था, परन्तु निम्न अणी के लोग और प्रायः देवियां उचकोटि की शिष्ट-माषा नहीं बोल सकती थीं। अधिकांश कन्याओं का विवाह लगभग पन्द्रह, सोलह वर्ष की अवस्था में हो जाता था। इस कारण उनका अध्ययन थोड़ा रहता था। रूपकों में भी अप्सराओं का भाषा संस्कृत ही रखी गई है सुलभा, मैत्रेथी और गार्गी आदि सहश अल्पसंख्यक देवियां साहित्यिक संकृत बोलती थीं। इसीलिए भारतीय नाटककारों ने उन के लिए भी संस्कृत माषाका स्थान रखा है। पदवाक्यप्रमाणक्र भवभूति-विरचित उत्तरामचित में आत्रेथी और वासन्ती तथा उन्हीं के मालतीमाधव में कामन्दकी आदि देवियां संस्कृत बोलती हैं। परन्तु अन्य देवियां साहित्यिक संस्कृत भाषण में इतनी कृतश्रमा न होती थीं। अल्प अध्ययन के कारण उनका संस्कृत शब्दों का उचारण दोषयुक्त हो जाता था। उनकी यही

अपरिमाजित और उचारण-दोषबहुता संस्कृतभाषा ही प्रकृतभाषा बनी । इसी तिए पुरातन । नाटकों में निम्नश्रेणी के लोगों की और प्रायः स्त्रियों की भाषा प्राकृत रही है।

संस्कृत नाटकों में स्त्रियों आदि की भाषा प्राकृत होने का एक और भी कारण है। भारतीय नाटक नट और नटियों द्वारा ही खेले जाते थे। स्त्री पात्राओं का अभिनय स्त्रियां ही करती थीं। नट श्रेणी की खियां अर्थात् नटियां शिष्ट संस्कृत में कृताभ्यासा न होती थीं। वे वाल्यावस्था से ही गृहकार्य के अतिरिक्त अभिनय का काम करने लग पड़ती थीं। अतः जब संस्कृताध्ययन की न तो जनकी किच रहती थीं और न उन्हें उसकी अधिक सुविधा थी। संस्कृत-भाषण करते हुए वे अशुद्धियां न करें, इस लिए भी सामान्य रूप से खी-पात्रों की भाषा प्राकृत ही हो गई। जब नटियों में से आत्रेयी आदि का अभिनय करने वाली संस्कृत-भाषा-भाषण-समर्थ नटियां खोजी अथवा शिक्ति की जाती थीं, तो पर्याप्त कष्ट होता था। अतः संस्कृत नाटकों में आत्रेयी आदि सहश खीपात्राएँ न्यून हैं। इतने पर भी यह निश्चित है कि जन-साधारण और देवियां भी संस्कृत सममने में पूर्ण समर्थ थीं। अतः भारत की एकमात्र माषा संस्कृत ही रही है, इसमें किचित् भी सन्देह नहीं। इक्तलेण्ड में लाखों अमजीवी और प्रामीण खियां गोराशाही अंग्रेजी ही बोलते हैं, पर इक्तलेण्ड की भाषा अंग्रेजी ही है, ऐसा कहने में कोई संकोच नहीं। फिर भारत की भाषा संस्कृत थी, ऐसा कहने में कोई संकोच क्यों करे।

(प्रश्न) योरुप के भाषा-अनुशीलन-कर्ताओं का मत है कि संस्कृत तथा वेद-वाक् से पूर्व एक अन्य अति-प्राचीन भाषा थो, जिस से पुरानी फारसी, प्रोक और संस्कृत आदि भाषाएँ निकली हैं। फिर कैसे माना जाए कि सतयुग में संस्कृत सारे भूमएडल पर के मनुष्यों की भाषा थी।

(उत्तर) यह मत पज्ञपात युक्त है। वेद वाक् तो आकाशी ऋषियों और देवों (प्राणों, महतों, अग्नि और विद्युत् आदि शक्तियों) द्वारा उस समय उत्पन्न हो चुकी थी, जब न पृथ्वी सूजी गई थी और न उस पर रहने वाले मनुष्य। वही दैवी वाक् मनुष्य और ऋषियों की उत्पति के समय ऋषियों में ईश्वर-प्ररेणा से प्रविष्ट हुई। ऋषियों ने उस श्रुति को सुना। तब उस दैवी वाक् का सब को उपदेश दिया गया। इस विषय की विस्तृत व्याख्या और विकास-मतानुयाईयों के सम्पूर्ण कुतकों का खण्ड अन्यत्र करेंगे।

(प्रश्न) भारत में संस्कृत तथा आर्षप्रन्थ प्रचार की जो उद्दाम तरङ्ग ऋषि द्यानन्द सरस्वती ने उत्पन्न की थी, उसे ऋषि-स्थापित आर्थसमाज स्थिर क्यों नहीं रख सका।

(उत्तर) त्रार्यसमाज के प्रारम्भिक काल के जो कार्यकर्ता थे, उन्हें तो संस्कृत-महत्त्व का कुछ झान था। पं० गोपलराव हरि देशमुख जज, पं० गोपालराव फरुखाबादी, पं० गुरुद्त्त, ला० हंसराज और ला० मुंशीराम त्रादि कार्यकर्ताओं ने संस्कृत का अभ्यास किया।

इन में से पहले दो महाशय संस्कृत के अच्छे पिएडत थे। पं० गुरुद्त्त के संस्कृत-प्रेम की कोई सीमा न थी। ला० हंसराज और ला० मुंशीराम ने संस्कृत का थोड़ा २ अभ्यास किया। इन से अतिरिक्त इनके कुछ उत्तरकालीन आर्थ्य प्रचारक स्वामी अच्युतानन्द, स्वामी दर्शनानन्द

१. इस के लिये हमारा वैदिक वाङ्मय का इतिहास प्रथम भाग 'वेद श्रीर उसकी शाखाएँ का प्रथम' श्राध्याय देखें। इसका नृतन परिवर्षित संस्करण छप रहा है।

पिहत गण्पित शर्मा, पं० श्वार्यमुनि, पं० शिवशंकर काठ्यतीर्थ और पं० हद्रदत्त जी श्वादि संस्कृत के श्रच्छे पिहत थे। परन्तु ये महाशय श्रार्यसमाज की संस्थाओं और समाजों श्वादि के प्रवन्धक न थे। पञ्जाब के कालेज श्रथवा गुरुकुल दल में ला० हंसराज और ला० मुंशीराम जो के पश्चात् जितने भी प्रवन्धक और श्रधिकारी हुए श्रथवा हैं, वे सब श्रंप्रेजी-प्रभाव-प्रभावित संस्कृत-ज्ञान-शून्य धनार्थी लोग हैं। यदि इन में कुछ दिन के लिए कभी कोई संस्कृतज्ञ, श्रधिभक्त हुश्चा भी है, तो उसे घुणाचरन्याय का फल समम्भना चाहिये। इन श्रंप्रेजी श्रीर उद्दे के उच्छिभोजी लोगों को संस्कृत से क्या प्रेम हो सकता है। संयुक्त प्रान्त श्रादि में भी श्रार्यसमाज के कार्य प्रवन्धकों की प्रायः यही श्रवस्था है। इसीलिए दुःख से कहना पड़ता है कि श्रपने श्रनुगामियों के विश्वास-शून्य होने के कारण श्रधि की उत्पन्न की की हुई तरंग का वेग मन्द सा पड़ रहा हैं।

(प्रश्न) कालेज दल तो अपने श्रंभेजी स्कूलों के जाल के कारण उसी में फंसा हुआ संस्कृत

का प्रेम खो बैठा था, क्या गुरुकुल दल भी वैसा ही हो गया है ?

(उत्तर) हां, गुरुकुल दल भी अब वैसा ही हो रहा है। जिस प्रकार द्यानन्द कालेज प्रवन्धकर्तृसभा के अनेक प्रधान और सदस्य संस्कृत न जानने के कारण संस्कृत-प्रेम से वस्तुतः रिक्त हुए हैं, वैसे ही बहुत दिन से अब गुरुकुल दल की भी अवस्था हो रही है। गुरुकुल दल में से महात्मा मुंशीराम जी का धका समाप्त हो चुका है। गुरुकुल दल की सभा में संस्कृत-ज्ञान रखने वाले जो दो चार सदस्य हैं, उनकी बात कोई सुनता नहीं। इस का फल स्पष्ट है। गुरुकुल की पाठप्रणाली पूरी सफल नहीं हो सकी। गुरुकुल के अनेक सख्यालकों को गुरुकुल में विश्वास न रहा था। उन्होंने अपने पुत्र, पौत्र, वहां नहीं पढ़ाये। गुरुकुल के अनेक उपाध्याय अपने पुत्रों को अंभेजी कालेजों में पढ़ाते रहे हैं। और अब तो ऐसे लोगों की संख्या इस दल में वृद्धि पर ही है। आचार्य रामदेव जी यद्यप संस्कृत के पण्डित न थे, पर इनकी अटूट ऋषि-भक्ति के दिन भी अब गये। अब तो गुरुकुन दल भी अपने स्कूलों द्वारा पाश्चात्य सभ्यता की जड़ों को दढ़ करने का एक साधनमात्र बन गया है।

(प्रश्न) ऐसी निराशामयी निशा में, अन्धकार की इस घोर रात्रि में, स्वार्थ की इस प्रवृद्धा रजनी में क्या कहीं त्याग, उत्साह और ज्ञान की आशारिश्म दृष्टिगत हो सकती है ? क्या संस्कृत-

भाषा पुनर्जीवित हो जाएगी ?

(उत्तर) हां आशारिम दिखती है। पर उस के सूर्य का उदय आगीरथ-प्रयत्न के अनन्तर ही होगा। संस्कृत पुनर्जीवित होगी, ऐसा हमारा अटल विश्वास है। ऋषि के चरणचिन्हों पर चलते हुए इस जन्म का गत भाग हम ने इसी निमित्त अपण किया है। हमारा निश्चय है कि संस्कृत भारत की भाषा है, और भारत इसे अपनायेगा। दासता की शृङ्खाता में शृङ्खातित भारतीय अपे जी और हिन्दुस्तानी का चाहे कितना ही पन्न कर लें, पर एक बार तो आर्थ-वैभव दृष्टिगोचर होगा और शीघ होगा। इस के लिये निम्नलिखित उपाय करने होंगे।

१. प्रत्येक त्रार्यसमाज के सब त्रधिकारी श्रेष्ठ संस्कृत-ज्ञान-युक्त होने चाहियें।

२. श्रार्थसमाजों का लेख श्रादि का सब काम संस्कृत-मिश्रित श्रार्थमाषा में होना चाहिये।

३. श्रार्थप्रतिनिधि सभाश्रों के समस्त सद्स्यों को संस्कृत बोलने का अभ्यास होना चाहिये।

- थे. सार्वदेशिक सभा के सब सदस्य संस्कृत के विद्वान होने चाहियें।
- प्. श्रार्थसमाज का उपदेशक मण्डल संस्कृत श्रीर श्रार्धमन्थों का प्रौढ़ पण्डित होना चाहिये।
- ६. पूर्वोक्त पांच बातों को चलाने के लिये परोपकारिगी समा अथवा सार्वदेशिक समा को संस्कृत और आर्षविद्या की कुछ परीचाएँ चलानी पड़ेंगी। विशेष परिचाओं में उत्तीर्ग भाई ही आर्थसमाजों के अधिकारी आदि बनेंगे। इस से वृथा कलह भी थोड़ी सी शान्त हो जायगी और पदिलिप्स लोग आर्थसमाज के सेवक रह सकेंगे, अधिकारी नहीं।

७. आर्यसमाज को वे सब संस्थाएँ तत्काल बन्द कर देनी चाहियें, जो छ: घएटे के अध्यापन में ३ या ४ घरटे संस्कृत और आर्ष प्रन्थ नहीं पढ़ातीं।

प्रति वर्तमान श्रधिकारी ऐसी संस्थाश्रों को बन्द न करें, तो किसी भी आर्थ-पुरुष को ऐसी संस्था को भविष्य में एक कौड़ी भी दान न देना चाहिये।

९. श्रार्थसमाज श्रौर समस्त भारतीय श्रायों को यह राजनीतिक श्रन्दोलन करना चाहिये। कि भारत की भाषा संस्कृत है।

१०. परोपकारिणी सभा को वैदिक यन्त्रालय में अन्य सब मुद्रण काम बन्द करके आर्ष-अन्य और श्री स्वामी जी के अन्य ही छापने चाहियें। इन अन्थों का मूल्य अत्यल्प रखना चाहिए।

११. भारत में न्यून से न्यून एक सहस्र संस्कृत पुस्तकालय स्थापित होने चाहिएँ। उनमें संस्कृत के समस्त प्रन्थ संगृहीत होने चाहिएँ। जो जो नए प्रन्थ छपते जाएँ वे भी तत्काल वहाँ मंगाये जाएँ।

१२. श्रार्थसमाज श्रीर श्रार्थमात्र की शिक्षा के लिये केवल संस्कृत विद्यालय ही खोलने चाहिएँ। पुरातन काल में यह काम श्रार्थ राजाश्रों की सहायता से होता था। उन के दान के शासन पत्र इस बात का एष्ट प्रमाण हैं। श्रव यह काम भारतीय जनता को करना होगा।

१३. भारत के देशी राज्यों की जहां और श्रुटियां दूर करनी होंगी वहां उन राज्यों में से श्रंपेजी भाषा के प्रमुत्व को दूर कराना भी एक श्रावश्यक श्रभीष्ठ हो रहा है। इन राज्यों के कार्यालयों में सब व्यवहार संस्कृत और श्रार्थभाषा में कराने चाहियें। इन में श्रायुर्वेद के ही श्रातुरालय होने चाहियें। वहां सैकड़ों लोग श्रायुर्वेद पढ़ने के लिये भी संस्कृत पढ़ेंगे ।

१४. इस सतयुग के आदि में श्री ब्रह्मा जी ने संकृत में ही समस्त विद्याओं का उपदेश दिया। उन सब विद्याओं का अब भी उद्धार हो सकता है। इस के लिये वैदिक अनुसन्धान के अनेक बृहत् केन्द्र स्थापित होने चाहियें। उनके अध्यक्त और कार्यकर्ती वेद, वेदाङ्ग, दर्शन, इतिहास, प्राचीन और नवीन भूगोल तथा पश्चिमीय लेखकों द्वारा उत्पन्न किए गए सब पूर्व-पन्नों के विशेषज्ञ होने चाहिएँ।

१५. लाखों रुपये व्यय करके भारत के उन घरों की खोज करनी चाहिए जहाँ अब भी

१. ग्रव ये देशी-राज्य भारत-शासन में विलीन हो खुके हैं। श्रतः सम्पूर्ण भारत में समान उपाय ही वर्तने चाहिएं। भारत-शासन श्रायुर्वेद के प्रति उपेचादृष्टि कर रहा है। यह इसके तत्सम्बन्धी संचालकों के महान् श्रज्ञान का निदर्शनमात्र है।

श्रतभ्य हस्तिलिखित संस्कृत प्रन्थ सुरिच्चत हैं। उन प्रन्थों को एकत्र और सुसम्पादित करके शीघ्र सुद्रित करना चाहिए।

- १६. भारतीय जनता को किसी ऐसे व्यक्ति को अपना धार्मिक या राजनीतिक नेता नहीं बनाना चाहिए जो संस्कृतिवद्या-सम्पन्न आर्यशास्त्र-प्रवीण और आस्तिक अर्थात् वेद-विश्वासी न हो । ब्रह्मा जी, किपल, सनत्कुमार, कृष्णद्वैपायन वेदव्यास, उद्योतकर, कुमारिल भट्ट, शङ्कराचार्य, द्यानन्द सरस्वती आदि हमारे धार्मिक नेता हुए हैं। ब्रह्माजी, स्वायंभुव मनु, वैवस्वत मनु, इक्ष्वाकु, ययाति, मान्धाता, भरत चक्रवर्ती, दाशरिथ राम, देवकीपुत्र कृष्ण, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, और द्यानन्द सरस्वती आदि हमारे राजनीतिक नेता हो चुके हैं। ये सब महात्मा, महानुभाव संस्कृत के पिछत थे। वे ही आर्यावर्त के यथार्थ पथ-प्रदर्शक थे।
- १७. उत्तर भारत की प्रान्तीय-भाषात्रों यथा—पञ्जाबी, मारवाड़ी, गुजराती, मराठी श्रीर बंगाली श्रादि में जो श्रवीं, फारसी श्रीर श्रंश्रेजी श्रादि के व्यर्थ शब्द सम्मिलित हो गये हैं, उन्हें प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। उदाहरणार्थ—श्रागर, रव्य, बरकत, काफी, विल्कुल, मगर, लेकिन, टाईम, लैकचर श्रादि शब्दों का बहिष्करण होना चाहिये।
- (प्रश्न) विदेशी भाषात्रों के जो शब्द हमारी व्यावहारिक भाषात्रों का श्रङ्ग बन गए हैं, उन्हें बाहर निकालना व्यर्थ है। श्रब तो वे हमारे हो गये हैं।
- (उत्तर) जिस प्रकार नख और केश हमारे शरीर के अङ्ग सङ्ग होते हैं और हमारे शरीर में ही वृद्धि को प्राप्त होते हैं, तथापि उन्हें निरर्थक समक्त कर हम समय समय पर उनका छेदन कराते रहते हैं, इसी प्रकार भारतीय दासता के काल में अपनी भाषा में मिले हुए विदेशी शब्दों का बहिष्कार बुरा ही नहीं, प्रत्युत पुर्य का कार्य है। जब हमारे पास यदि, ईश्वर, प्रथम, पर्याप्त, सर्चथा, परन्तु, समय और व्याख्यान आदि शब्द विद्यमान हैं, तो हम विदेशी अपभ्रंश के शब्दों का प्रयोग करों। हां, जो शब्द अभी वर्त्तमान संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध नहीं हुए, उनके स्थान में विदेशी शब्दों का प्रयोग कुछ काल के लिए कर लिया जाए तो इतनी हानि नहीं है। तिनक विचारो, यदि हम आर्थ लोग संस्कृत शब्दों का अधिक प्रयोग नहीं करेंगे, तो और कौन करेगा। संस्कृत शब्दों का प्रयोग न करना तो मानव-जाति-द्रोह और भारत-देश-द्रोह करना है।
- (प्रश्न) अनेक कथित आर्यसमाजी और श्री जवाहरलाल जी आदि कांग्रेस-पत्त वाले कहते हैं कि आर्यभाषा में संस्कृत शब्दों की भरमार नहीं करनी चाहिये। क्या उनका कथन भी सङ्गत नहीं।
- (उत्तर) हां, उन का कथन भी सक्तत नहीं। उनका कथन तो भ्रान्तिपूर्ण है। उनके ऐसे कथन का कारण है, उनका पाश्चात्य-शिचा की दासता में पलना। क्या संस्कृत आर्यजाति की भाषा नहीं है, क्या संस्कृत से भारत की सब भाषाएँ नहीं निकली हैं, क्या संस्कृत इस देश से सहस्रों वर्ष से सम्बद्ध नहीं रही है, क्या संस्कृत की इस दीन-हीन दशा में भी बीस सहस्र संस्कृत प्रन्थ उपलब्ध नहीं हो रहे, क्या पुरातन रीति पर चलने वाले समस्त आर्थ-परिवारों में विवाह सम्बन्धी साहे चिट्ठी अप भी संस्कृत में नहीं भेजी जातीं, क्या संस्कृत भाषा के स्रोत वेद-मन्त्रों द्वारा ही सत्र आर्थों के

संस्कार त्रादि नहीं होते , फिर जवाहरलाल जी त्रादि श्रंग्रेज़ी-मात्र पढ़े लिखे लोगों की संस्कृत से उदासीनता श्रज्ञानमात्र ही है। संस्कृत शब्द ही संसार-मात्र की भाषात्रों के मूल शब्द हैं, श्रतः क्लेच्छ = श्रव्यक्त तथा श्रपश्रंश शब्दों के स्थान में संस्कृत शब्दों का प्रयोग स्वर्ग का देने वाला है।

१८. व्यवहार और व्यापार में संस्कृत के उन शध्दों का जो कभी प्रयोग में आते थे, और अव विस्मरण से हो रहे हैं, पुनः प्रयोग आरम्भ करना चाहिए। धारा १४ में उल्लिखित अनुसम्धान केन्द्रों को ऐसे शब्दों की सूचियां समय २ पर प्रकाशित करनी चाहिए।

इत्यादि कितपय बातें यहां दिग्दर्शनमात्र लिख दी हैं। भारतीय उत्थान के इस अभूतपूर्व काम के लिये भगीरथ-प्रथन करना पड़ेगा। पर प्रयन यदि एक वार हो जाये, तो फल अत्यन्त श्रेष्ठ होगा। दो सौ वर्ष तक भारत पर राज्य करने के अनन्तर श्रंग्रेज़ी शासक विस्मित होंगे कि उनका शासन निष्फल कर दिया गया है। उस समय संसार कहेगा कि ऋषि द्यानन्द सरस्वती के अद्वितीय धक्के ने भारत को पुन: खड़ा कर दिया।

(प्रभ) आर्यसमाजों के सदस्य और अधिकारीवर्ग संस्कृत पढ़ें, इस का कहां विधान है।

(जतर) पूर्व पृ० १८ पर पूर्ण संख्या ३५४ के ऋषिपत्र से एक वचन दिया गया है। उस में ऋषि कहते हैं—पाठशाला में "हमारे रईस लोगों में से कोई पढ़ता है।" इस का स्पष्ट तात्पर्य यही है कि आर्यसमाज के सदस्य और अधिकारी वर्ग संस्कृत अवश्य पढ़े। इस से भी अधिक भावपूर्ण लेख उन के एक और पत्र में मिलता है—

"सन्धिविषय छप गया। श्रव श्राप लोग पढ़ने पढ़ाने का श्रारम्भ क्यों नहीं करते। श्रौर नामिक भी श्रव छपकर श्राता है।" (पूर्णसंख्या ३५१)।

यह पत्र परोपकारिणी सभा के प्रथम मन्त्री ला० रामशरणदास जी रईस मेरठ की भेजा गया था। ऋषि दयानन्द सरस्वती की यह उत्कट इच्छा थी कि आर्थसमाज के लोग संस्कृत का पठन पाठन आरम्भ कर दें।

(प्रश) यह बात इस काल में असम्भव दिखाई देती है।

(उत्तर) त्याग श्रीर तपस्या के विना कोई जाति श्रपने श्रस्तित्व को स्थिर नहीं रख सकती। यदि श्रार्यजाति सजीव रहना चाहती है, यदि श्रार्यसंस्कृति की संसार को श्रव भी श्रावश्यकता है, यदि श्रिश्रीय-ज्ञान वेर का संसार में प्रचार श्रभीष्ट है, यदि श्रिश् श्रिश से उर्श्वण होने का हद संकल्प श्रार्थमात्र के हृदय में निहित है तो इस कथित-श्रसम्भव को भी सम्भव करना ही होगा।

मनुष्य में श्रालस्य का भाव श्रधिक है, श्रतः स्वयं श्रालस्य युक्त होने के कारण वह सम्भाता है कि श्रमुक कार्य श्रसम्भव है। पर यदि श्रालस्य का परित्याग करके उचित श्रीर निरन्तर परिश्रम किया जायगा तो निश्चय ही सिद्धि हस्तामलकवत् होगी।

१. श्रमी २ गांधी जी ने एक विवाह श्रपने बनाए हुए 'हिन्दुस्तानी' वचनों द्वारा करवाया है । (ट्रिब्यून, लाहौर, श्रगस्त २१, सन् १६४५) इस से बढ़ कर वैदिक पद्धित की श्रवहेलना श्रीर नहीं हो सकती। श्रार्थ मर्यादाश्रों के नाश का जो काम कभी मुगल राजा श्रीरंगजेब मी न कर सका, वही काम श्रव गांधी जी पूरा करना चाहते हैं। परन्तु ऐसा कदापि न हो सकेगा। वे कहते हैं कि 'इस समय एक ही वर्ण श्रातिश्दूर श्रयवा हरिजन रहे।' (ट्रिब्यून, सितम्बर २०, १६४५)।

### २. वेदमहत्त्व और वेदभाष्य

ऋषि द्यानन्द सरस्वती वेद को संसार का सब से बड़ा निधि सममते थे। उन के काल में वेद और वैदिक शिचा भारत से लुप्त सी हो रही थी। इस श्रुटि को दूर करने के लिए ऋषि ने अनेक संस्कृत पाठशालाएँ स्थापित कराई। इन में वेदाध्यापन अनिवार्य था (पूर्ण सं०९), परन्तु उनका वेद-प्रचार का काम पाठशालाओं तक ही सीमित नहीं रहा।

वेदभाष्य का सूत्रपात — पत्र पूर्ण संख्या १० पूना से लिखा गया है। उस की तिथि सम्वत् १९३२ श्रावण शुक्रा = मंगल लिखी है। इस पत्र में सब से प्रथम वेदभाष्य का उल्लेख है। तभी श्री महादेव गोविन्द रानडे श्रादि सज्जनों ने वेदभाष्य के निमित्त धन एकत्र करने का प्रयास किया।

इस संप्रह के अनेक पत्रों से ज्ञात होगा कि श्री स्वामी जो का अधिकांश समय वेदभाष्य के कार्य में ही व्यतीत होता था। यह काम उनके जीवन का मुख्य ध्येय वन गया था'। इस से अधिक प्रिय और पुनीत कर्म उनकी दृष्टि में और कोई नहीं था। वे चाहते थे कि मनुष्यमात्र वेद के अध्ययन में प्रवृत्त हो जाएँ। वेदज्ञान के सम्बन्ध में फैलाई गई भ्रान्तियां संसार से दूर हों। विज्ञापन पर्ण संख्या २५ इसी महान् उद्देश्य से दिया गया था।

पहले ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका छपी। फिर ऋग्वेदभाष्य छपना आरम्भ हुआ। लाहौर से ६ जून १८०० पूर्ण संख्या ३६ के पत्र में श्री स्वामी जी पं० गोपालरावहरि देशमुख को लिखते हैं— "मैं आप के परामर्श के अनुकूल करने का इच्छुक हूँ और जैसा आप चाहते हैं, मैं शुक्त युजुर्वेद का भाष्य आरम्भ करूंगा।" १४ मई १८०० को श्री स्वामी जी ने पंजाब सरकार को वेदभाष्य की सहायता के लिए एक पत्र लिखा थारे। यह पत्र अस्वीकार होना ही था। अगस्त में श्री स्वामी जी ने सरकारी पत्र का खण्डन किया3।

(प्रश्न) सरकार ने श्री स्वामी जी को सहायता क्यों नहीं दी।

(उत्तर) १. सरकार यह नहीं चाहती थी कि श्री स्वामी जी के मार्ग से भारत का

२. यदि श्री स्वामी जी की वेद्भाष्य-सार्णि सत्य मान ली जाती तो इङ्गलैएड के अन्द्र संस्कृताध्यापन का जो प्रकार चलाया जा रहा था, वह असत्य सिद्ध होता। उस समय सरकार को निश्चय हो जाता कि पाश्चात्य भाषा-विज्ञान निर्मुल है।

३. मैकाले प्रदर्शित सरकारी नीति के पोषकजन भारतीय युवकों के दास बनने का जो मार्ग निकाल रहे थे, वह निष्प्रयोजन हो जाता। तब रामकृष्णगोपाल भएडारकर, राजेन्द्रलाल मित्र आदि लोग पाश्चात्य लेखकों का उच्छिष्ट खाकर भारतीय परम्परा के खएडन में प्रवृत्त न होते और वेद को पौरुषेय और कुछ ही सहस्र वर्ष पहले का बना हुआ न बताते।

उस काल की सरकार ने समक्त लिया था कि द्यानन्द सरस्वती का मार्ग भारतीय हृदय में आर्थगौरव का, आर्थ-मान का भाव उत्पन्न कर देगा, अतः सरकार ने ऋषि द्यानन्द सरस्वती को कोई सहायता न दी। परन्तु इतना धन्यवाद का स्थान है कि सरकार ने उस समय ऋषि के मार्ग में इस से अधिक कोई रोड़ा नहीं अटकाया।

१. पत्र पूर्ण संख्या ३४८, ४२१, ४४४, ५४४ ॥ २. (पत्र-स्त्त्रना) पूर्ण संख्या ६०८ । ३. पूर्ण संख्या ४१ ।

फरुखावाद से सहायता—वेदभाष्य के काम के लिए सरकार से सहायता प्राप्त न होने पर
ऋषि निराश नहीं हुए। उन का काम शनैः २ वृद्धि को प्राप्त हो रहा था। तीसरी और चौथी अक्तूबर
१८०९ को फरुखाबाद समाज ने एक सहस्र रुपया वेदभाष्य और यन्त्रालयादि की सहायता में
दिया । पुनः फरुखाबादस्थ सज्जनों ने एक भारी सहायता वेदभाष्य के लिये दी । फरुखाबादस्थ
आर्थजनों की इस दूरदर्शिता के लिये विद्वन्मण्डल उन का चिरऋणी रहेगा।

लगभग २५ सितम्बर १८८० को श्री खामी जी लिखते हैं-

"मैं जानता हूं बहुत घूमने में हर्ज होगा ।"

ऋषि अनुभव कर रहे थे कि अधिक घूमने से उनके वेद्भाष्यादि के काम में बाधा पड़ती है। तदनुसार ऋषि ने शीघ्र ही अपना प्रचार-क्रम बदला। वे एक २ स्थान में अधिक दिन वास करने लगे। यदि उनका देहान्त इतना शीघ्र न होता तो संवत् १९४३ तक चारों वेदों का भाष्य पूरा हो जाता। ऋषि भाद्र वदी ५ सं० १९४० को मंशी समर्थदान को लिखते हैं—

''परमेश्वर की कृपा से १ वर्ष में सब ऋग्वेदभाष्य पूरा हो जायगा और एक वा डेढ़ वर्ष

साम और अथर्व में लगेगा। (पत्र पूर्णसंख्या ५,७०)

परन्तु ऋषि के अकस्मात् दिवंगत हों जाने से यह महान् काम अधूरा ही रह गया।

(प्रश्न) आर्थसमाज का इस विषय में अब क्या कर्तव्य हैं।

(उत्तर) आर्यसमाज में तो अब घर घर में वेद्भाष्यकार हो रहे हैं । पं० चेमकरणदास, पं० तुलसीराम, पं० आर्यमुनि, पं० शिवशंकर काठ्यतीर्थ, पं० राजाराम, पं० हरिशंकर, पं० जयदेव, पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री और पं० बुद्धदेव जी ने वेदों अथवा वेद के अंशों पर अपने २ भाष्य रचे हैं । मास्टर दुर्गाप्रसाद जी ने अंप्रेजी में ऋग्वेद के एक बड़े भाग का अनुवाद निकाला था । इन सब के भाष्यों में अनेक उपादेय बातें मिलती हैं । इन के परिश्रमसे भावी कार्य में बहुत लाम होगा । परन्तु पूर्ण सुविधाएँ न होने से इन सब ही के काम में त्रुटियां भी भारी रही हैं । इन महानुभावों का पदला काम यह था कि वेदों तथा ऋषि द्यानन्द सरस्वती की भाष्यशैली पर जो आचेप पाआत्य पद्धित के लेखकों ने किए हैं, उनका परिहार करते । ऐसा करते हुये इन की विद्या परिमार्जित हो जाती । तब इन का परिश्रम भी अधिक मृल्यवान होता । इन महाशयों ने वैदिक वाङ मय का पूरा अवगाहन भी नहीं किया । आर्यसमाज ने इन्हें पूरी आर्थिक सहायता नहीं दी ।

श्रव श्रार्थसमाज का यही मुख्य कर्तन्य है कि लाखों रुपये एकत्र करके श्रपने श्रनुसन्धालयों द्वारा वेदों पर किये गए नूतन श्राह्में के उत्तर दिलवाये। उस के पश्चात् ऋषि के भाष्य की पूर्ति हो सकेगी। दुःख से कहना पड़ता है कि पूर्ण विद्वान वेदभाष्य कर सकने वाले पिंडतों की प्रोप्ति के लिये भी श्राज विज्ञापन दिये जाते हैं। पुष्प श्रपनी सुगन्धि से स्वयं पहचाना जाता है। पुष्प के पास लोग चलकर जाते हैं। इस प्रकार वेदभाष्य कर सकने वाले के पास लोगों को स्वयं जाना पड़ेगा। परम्तु श्रभी भारतीयों की मनोवृत्ति ऐसी नहीं बनी है। यही कारण है कि इस काम में यथार्थ

सफलता नहीं हो रही।

१. भारतसुदशाप्रवर्तक, अन्दूत्रर सन् १८७६, पृ० ७। तथा पत्र पूर्णसंख्या १६१ तथा ३३४।

२. देखो पत्र पूर्णसंख्या २५१। ३. पत्र पूर्ण संख्या २८०।

वेद-प्रचार—वेद का प्रचार तो पहले की अपेता अब कुछ अधिक हो रहा है, परन्तु ध्येय बहुत दूर है। हम उस से लाखों कोस परे हैं। मूल वेद और ऋषिकृत वेदभाष्य की लाखों प्रतियां प्रतिवर्ष भारत में विकनी चाहियें। अभी तक तो एक वर्ष में मूल वेद की तीन चार सहस्र प्रतियां भी भारत में नहीं बिकती हैं। लोग अन्य सब पदार्थों पर धन व्यय कर सकते हैं, पर वेद पर धन व्यय नहीं करते। ऋषि द्यानन्द सरस्वती प्रणीत सत्यार्थप्रकाश की लाखों प्रतियां अब तक विक चुकी हैं, परन्तु ऋग्वेदादिभाष्यमूमिका की, जो ऋषि की एक अपूर्व रचना है, बीस सहस्र से अधिक प्रतियां आज तक नहीं बिकी। आर्यमाज के लिए यह भी गम्भीर विचार का एक विषय है।

(प्रश्न) गांधी जी लिखते हैं—''मैं केवल वेद को ही अपौरुषेय नहीं मानता हूं। मैं तो वाइबल, कुरान और जिन्दावस्ता को भी वेदों की तरह ईश्वरप्रेरणा का फल मानता हूं।" (नवजीवन, ७ अक्तूबर सन् १९२९ सत्यिनर्णय, पृ० ५१ पर उद्धृत।)

( उत्तर ) श्री गांधी जी तो अपने अन्दर भी हजरत मूहम्मद और हजरत ईसा ऐसी ईश्वर-प्रेरणा मानते हैं। वे भले ही ऐसा मानें और बाइवल और कुरान को ईश्वर-प्रेरणा का फल अथवा अपने को ईश्वर-दूत सममें, परन्तु वैदिक विद्वान ऐसा नहीं मान सकते। गान्धी जी की अनुभव की हुई ईश्वर प्रेरणाएँ प्रायः परस्पर विरुद्ध और प्रत्यचादि प्रमाणों से सर्वथा विपरीत पड़ती हैं। पीछे से वे कह देते हैं कि उन से हिमालय-सहश महती भूल हुई है। यह अच्छी ईश्वर-प्रेरणा है कि उस में स्पष्ट ही विरोध और भूल हो। यह भी स्पष्ट है कि बाइवल, कुरान और गांधी जी के विचारों में शतशः परस्पर विरुद्ध है बातें हैं। अतः वे सब ईश्वर प्रेरणा नहीं हो सकती हैं। धूतनी बात से ही पाठक समम सकते हैं कि श्री गांधी जी को इस विषय का कुछ भी ज्ञान नहीं है। यदि उन्हें ज्ञान होता तो वे ऐसी असम्बद्ध बातें न करते। देखो वेद संसार की किसी भी और कभी भी बोली जाने वाली भाषा में नहीं हैं। उनकी वेद से क्या तुलना हो सकती है। इस लिये संसार में जो वेद का स्थान है वह अन्य किसी ज्ञान का नहीं है। गांधीजी का वेद सम्बन्धी यह विचार बाललीलामात्र ही है।

(प्रश्न) क्या गांधी जी अपने को पैगम्बर अथवा ईश्वर-दूत समभते हैं।

(उचर) स्पष्ट तो वे ऐसा नहीं कहते, पर जब वे बहुधा ऐसा लिखते हैं कि उनको ईश्वर-प्रेरणा होती है, तो अन्दर से वे अपने को पैगम्बर ही सममते हैं। वे अपने को वेदों से बहुत ऊँचा सममते हैं और इसी लिए वैदिक आज्ञाओं का तिरस्कार करते हैं।

(प्रश्न) पाश्चात्य भाषा-शास्त्री तो सिद्ध करते हैं कि वेद भीं एक बोली गई भाषा में है।

(उत्तर) वे भी कोरी निराधार कल्पना ही करते हैं। उन्हें आर्य इतिहास का ज्ञान नहीं है। यदि उन्हें सहस्रों वर्ष के आर्य इतिहास का ज्ञान होता, तो वे ऐसी असत्य कल्पनाएँ न करते।

यह विषय श्रत्यन्त जटिल श्रीर विस्तृत है, श्रत: इसका यहां वर्णन नहीं हो सकता। परन्तु इस विषय का विस्तृत उल्लेख हमने श्रपने श्रपने भारतवर्ष के इतिहास में कर दिया है।

### ३, आर्ष-ग्रन्थ और आर्य-संस्कृति

आर्ष-प्रन्थों के सम्बन्ध में तो आर्यसमाज बहुत उदासीन है। आर्यसमाज ने अनेक गुरुकुल चलाए, पर आर्ष-प्रन्थों द्वारा साङ्गोपाङ्ग वेद-शिचा का प्रवन्ध कभी भी नहीं किया। यह सत्य है कि श्रार्ष-प्रत्थों के श्रेष्ठ श्रध्यापकों का इस समय श्रभाव सा है, परन्तु श्रेष्ठ श्रध्यापक विपुल धन-व्यय से ही बनेंगे। उन्हें, यदि वे गृहस्थ हैं, श्रीर सारा जीवन वेद के श्रध्ययन में श्रपंत कर रहे हैं तो वेतन ३०० या ४०० रुपये मासिक से न्यून नहीं देना होगा। फिर उन्हें स्वतन्त्र स्वाध्याय के लिये समय भी बहुत मिलना चाहिये। वे तो सारे दिन में दो घएटे ही श्रध्यापन कार्य करेंगे।

(प्रश्न) इतना धन कहां से आएगा।

(उत्तर) हम पहले ही लिख चुके हैं कि आर्यसमाज को प्रधानता से अंग्रेजी शिचा देने वाली सब संस्थाए बन्द करनी पड़ेंगी। उनका सारा रुपया अथवा जिस शक्ति से उनके लिये रुपया आता था, वह रुपया और वह शक्ति संस्कृत विद्यालयों के संख्रालन में लगानी होगी। ऐसे विद्यालय एक-एक प्रान्त में एक दो से अधिक नहीं होने चाहियें। फिर सब काम चल सकेगा। वेद और आर्ष-प्रन्थों का मृरि प्रचार होगा।

(प्रश्न) प्रत्येक नगर या प्राप्त के आर्थ-समाज की यह इच्छा होती है कि उनके अधिकार में भी कोई संस्था रहै।

(उत्तर) यह इच्छा स्वार्थवश हुई है। अनेक लोग उन संस्थाओं के सद्भालक वन कर अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। उनको ऋषि द्यानन्द सरस्वती के ध्येय का कोई ध्यान नहीं। और कई भोले लोग तो देखा देखी ऐसा कर रहे हैं। उन का दोष अधिक नहीं। आर्थ-समाज को अपनी पूर्ण किन वेदादि शास्त्रों की और ही करनी पड़ेगी। ऋषि द्यानन्द सरस्वती ने अपने स्वीकारपत्र में यह स्पष्ट लिखा है कि परोपकारिणी सभा को आर्थ-अन्थों का अकाशन करना चाहिये। इस विषय में इस सभा ने अभी कि कोई खुत्य कार्य नहीं किया। ऋषि द्यानन्द सरस्वती सदा आर्थ-अन्थों को पढ़ते रहते थे। उन्हें उनकी आवश्यकता प्रतीत होती थी। पर परोपकारिणी सभा के अधिकांश सदस्य इस विषय में कोरे हैं, उन्हें अब कौन सममाए।

(प्रश्न) संस्कृति किसे कहते हैं।

(उत्तर) किसी जाती के सर्वोच श्रीर दिव्य-पुरुषों के सर्वपुनीत श्रीर श्रेष्ठतम विचार वा उन का ज्ञान-समूह जब मनुष्यों में व्यवहार में श्राता है तो उसे संस्कृति कहते हैं। संसार श्रीर श्राय-जाति का श्रेष्ठतम ज्ञान वेद है। वह ज्ञान मनुष्य के मित्रष्क की उपज नहीं। वह सर्वज्ञ सर्वात्मा ईश्वर का ज्ञान है श्रीर शब्द, श्रार्थ, सम्बन्ध रूप से श्रनादि है। उसका ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को होना चाहिये। इस-समय उस ज्ञान की प्रतिनिधि श्रार्थजाति है।

वेद ज्ञान से उतर कर आर्ष-ज्ञान का स्थान है। ऋषि अर्थात् 'क्रान्तदर्शी' त्रिकालज्ञ लोग ईश्वर तो नहीं, पर मनुष्यों से सर्वथा ऊपर होते हैं। वात्स्यायन मुनि न्यायभाष्य में लिखते हैं—

ऋष्यार्यम्लेच्छानां

श्रयीत् ऋषि, श्रार्य श्रीर म्लेच्छों का। इससे ज्ञात होता है कि इस भूतल पर ऋषि एक पृथक् ही श्रेणी हैं। वे श्रार्य श्रीर म्लेच्छों से बहुत उच्च हैं। ऐसे ऋषि ब्रह्मा, सनक, सनन्दन सतःकुमार, स्वायम्भुव मनु, किपल श्रीर हिरण्यगर्भ श्रादि इस सत्तयुग के श्रारम्भ से होते श्राये हैं।

१. तथा देखो, पत्र पूर्ण संख्या ५६३, उपदेश ५।

उन्होंने भी वेद से ही सारे ज्ञान लिये। उनकी योगज शक्ति उनकी सहायक थी। उन ऋषियों ने वेद के छाश्रय पर जो ज्ञान और व्यवहार मनुष्यमात्र को सिखाया, वही वस्तुनः संसार की वास्तविक संस्कृति है। उसी संस्कृति का पुनरुद्धार करने वाले भगवान दयानन्द सरस्वती थे।

(प्रभा) श्री जवाहरलाल जी कहते हैं — अब पुरानी बातों को, पुरानी संस्कृति को छोड़ो ।

श्रव एक नई संस्कृति उत्पन्न की जाएगी।

(उत्तर) वे अपने अल्पज्ञान के कारण ही ऐसा कहते हैं। उन्होंने केवल पाश्चात्य-विचार का ही थोड़ा सा अध्ययन किया है। प्राचीन भारतीय इतिहास जो यहां की संस्कृति का परिचायक है, उन्होंने नहीं पढ़ा। वे तो आयों को भारत का आदि वासी ही नहीं सममते। उन्हें वेद के महत्व का अणुमात्र भी ज्ञान नहीं है। अतः उनका ऐसा कथन विद्वानों के सम्मुख उपहासास्पद है। जवाहर-लाल जी ने आज तक एक भी स्वोपज्ञ विचार प्रकट नहीं किया। उन्हों ने तो सोवियट रूस आदि का ही अनुकरण करके कुछ वातें कही हैं। मौलिक विचार रखने के अभाव में वे नवीन संस्कृति उत्पन्न करने का स्वप्न लेते हैं।

वस्तुतः संस्कृति वैदिक ही है श्रीर शेष नाममात्र की संस्कृतियां श्रथवा उस का

अपभ्रंश हैं। जवाहरताल जी ने तो अपनी कन्या को भी इझलेंड में रखकर केवल अझरेजी का ही अधिक अभ्यास कराया है। न वे आप संस्कृत पढ़े और न उन्होंने अपनी एकमात्र कन्या को संस्कृत पढ़ाई! वे संस्कृत के प्रति अपने कर्तव्य को अथवा संस्कृत के आनन्द को क्या जान सकते हैं। मनु ने सत्य कहा है—

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति । तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते।।

यह पुरानी भारतीय संस्कृति ही है जो संसार को फिर शान्ति दे सकती है, जो मानव के शरीर श्रीर मन को नीरोग कर सकती है, तथा जो वास्तिवक दासता से मनुष्य को निकाल सकती है। जिन लोगों का मन कलुषित पाश्चात्य विचारों की दासता में जकड़ा हुआ है, वे प्राचीन भारतीय संस्कृति को क्या समक्रेंगे।

(प्रश्न) आर्थ संस्कृति यदि संसार-उपकारिणी होती, तो उसका ह्वास क्यों होता। प्रतीत होता
है कि इस संस्कृति की कोई उपादेयता नहीं थी, अतः यह चीण हो गई। अब यह जाप्रत नहीं होगी।

(उत्तर) यह बात हास्यास्पद है। क्या तुम कभी रोगी नहीं हुए। क्या स्वास्थ्य अनुपकारी होता है कि रोग आ जाता है। नहीं। हम किसी ज्ञात अथवा अज्ञात भूल से स्वास्थ्य खो बैठते हैं। परन्तु रोगी होने पर हम चिकित्सा अवश्य करते हैं। क्या तुम रोगी होने पर अपनी चिकित्सा नहीं करते। इसी प्रकार सत्य सममो कि अनेक कारणों से आर्यसंस्कृति रोगप्रस्त हो गई थी। इसका रोग साध्य है, असाध्य नहीं। अतः संस्कृति के सममने वालों का यह प्रधान कर्त्तव्य है कि वे इस संस्कृति को रोगमुक्त करें। ऋषि द्यानन्द सरस्वती का जन्म ही इस बात के लिए हुआ था। यदि इस अज्ञानान्ध-कार के युग में ऋषि ऐसा एक सत्युगीन पुरुष जन्म धारण कर सकता है, तो निश्चय है कि उसके चलाए हुए मार्ग को समम कर और सहस्रों व्यक्ति भी उसी काम में लगेंगे। ऋषि छुपा से सैकड़ों

लोगइस काम में लग रहे हैं। अतः यह संस्कृति निश्चित ही फिर फैलेगी। इसी वात का परिणाम है कि गांधी जी और जवाहरलाल जी की निर्मूल बातों का खण्डन करने के लिए हम कृत-संकल्प हए हैं।

(प्रश्न) आर्य संस्कृति में आर्षप्रन्थों का इतना आदर क्यों हैं।

(उत्तर) ऋषियों का ज्ञान बाह्य इन्द्रियों की सीमाओं से परे हो जाता है। वे क्रान्तदर्शी और प्रायः त्रिकालज्ञ हो जाते हैं। उनका सारा उपदेश मानव के हितार्थ होता है। वह वेद का व्याख्यानमात्र ही होता है। उस में आन्त नहीं होती। वह इस लोक और परलोक से सम्बन्ध रखता है। वर्तमान मनुष्य का विचार अनुभव और प्रयोग का फल है। इसी लिए उसमें परे परे आन्ति है। परन्तु ऋषि इससे ऊपर हैं। जो कोई आर्थ संस्कृति को पहचानेगा, उसे ऋषि दयानन्द सरस्वती के कथन की सत्यता ज्ञात हो जाएगी। ऋषियों के प्रआत् मुनियों के प्रनथ हैं। मुनियों के प्रनथ उपादेय तो होने हैं परन्तु उनमें यत्रतत्र भूल रह सकती है। वे क्रान्तदर्शी नहीं होते। इसके पश्चात् मनुष्य-रचित प्रन्थों का स्थान है। वर्तमान सारा संसार केवल इन्हीं के आश्रय पर चलता है, अतः दुःख पा रहा है।

(प्रश्न) वेद और आर्ष-प्रन्थों का मान गत २० वर्ष में भारत में बहुत ही न्यून हो गया है।

इस का क्या कारण है।

(उत्तर) इस का एक:कारण श्रंभेजी शिचा है। श्राज भाषा साहित्य पर भी श्रंभेजी की गहरी छाप पड़ जुकी है। श्रंभेजी श्रथवा भाषा का कोई प्रन्थ उठाश्रो, उस में श्राप को कहीं न कहीं यह भाव श्रवश्य मिलेगा कि मनुष्य उन्नति कर रहा है। वह पहले युगों में थोड़ा उन्नत था श्रौर श्रव दिन दिन श्रधिक उन्नति कर रहा है। प्रारम्भ से इस विचार में पले हुए लोग सत्य से बहुत दूर हो गये हैं। इसी लिए उन के हृद्य में पुरातन ज्ञान का श्रादर न्यून हो रहा है।

इस का एक दृसरा कारण है गान्धी-वाद। आर्थजाति सदा से शब्दप्रमाण को मानने वाली रही है। गांधी जी ने अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित होने के कारण शब्द-प्रमाण की अवहेलना की है।

गान्धी जी विकास-सिद्धान्त को मानने वाले हैं। वे लिखते हैं-

सम्पूर्ण अन्य बातों की तरह मजहवी विचार भी उसी विकास-सिद्धान्त के अधीन हैं, जो कि इस सृष्टि की हर एक वस्तु पर लागू हैं। (यक्क इण्डिया, ४ सितम्बर सन १९२४।)

इस असत्य को मानने के कारण ही गान्धी जी ने अनेक भूतें की हैं। सामूहिक रूप से तो संसार वस्तुतः हास की ओर ही जा रहा है। गत दो सौ वर्ष में जो कितपय यन्त्र बने हैं, ये पुरातन-ज्ञान का एक अंशमात्र भी नहीं है। इन्हें देख सुन कर केवल पाश्चात्य शिज्ञा में पला व्यक्ति आश्चर्य-चिकत हो जाता है। वह विकास-सिद्धान्त को मानने लगता है। उसे संसार के सहस्रों वर्ष पुराने ज्ञान का पता ही नहीं है। वह युग युग के हास से सर्वथा अपरिचित है। यही हेतु है कि प्राचीन ज्ञान को न जानने के कारण गान्धी जी ने उसकी प्रामाणिकता नष्ट करने का पूरा प्रयत्न किया है। जब आर्थ लोग आर्थ इतिहास को भले प्रकार पढ़ेंगे, तो उन्हें गांधी जी का मत सर्वथा निःसार प्रतीत होगा। वे सममोंगे कि गान्धी जी ने यह भारी अनिष्ट किया था। साधारण व्यवहार तो मनुष्य बुद्धि से चल सकता है, पर उच्च सत्य के जानने में मनुष्यबुद्धि प्रमाण नहीं है। वह तो वेद और आर्थज्ञान द्वारा जाना जा सकता है।

शब्द-प्रमाण को मानने का भाव आर्यसमाज में भी कुछ अल्प हुआ है। उसका कारण है श्री विश्वबन्धु जी ऐसे व्यक्तियों का आर्यसमाज की संस्थाओं में घुसे रहना । अपनी बुद्धि को ही प्रमाण मानने वाले बाबू लोग आर्यसमाज की निर्वलता का कारण बने हुए हैं। ऋषि द्यानन्द सरस्वती के आदर्श को समक्तने वाले व्यक्तियों को इन से सावधान रहना चाहिए।

# ४. अंग्रेजी शिचा की शालाएं खोलने के निरोधी ऋषि दयानन्द सरस्वती

पूर्वमुद्रित वचनों में पूर्णसंख्या ३५६ तथा ४९९ के कतिपय वाक्य ध्यान देने योग्य है। इन के साथ निम्नलिखित वचनों पर भी ध्यान देना चाहिए—

[३५६] श्रंग्रेजी का प्रचार तो जगह २ सम्राट् की श्रोर से जिन की यह मातृभाषा है भले प्रकार हो रहा है। श्रव इस की युद्धि में हम तुम को इतनी श्रावश्यकता नहीं दीखती। श्रीर न सम्राट के समान कुछ कर सकते हैं।

[३५९] जैसे मिशन स्कूलों में लड़के अपने अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिए बाईवन सुन लेते हैं और कुछ ध्यान नहीं देते, वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा।

श्रंप्रेजी शिचा की शालाश्रों का इस से श्रधिक बलवत्तर विरोध श्रौर क्या होगा। श्रार्थ-सामाजिक लोगों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

(प्रश्न) जिस प्रकार की शिक्षा के ऋषि दयानन्द सरस्वती इतने विरोधी थे, वही शिक्षा आर्थ-समाज ने क्यों अपनाई।

(उत्तर) यह दुर्भाग्य का विषय है कि ऋषि के निधन के पश्चात् उनकी पवित्र स्मृति में आर्यसमाज लाहौर, पञ्चाब ने वही काम किया, कि जिसका विरोध ऋषि तील्ल शब्दों में करते रहे। उसी कुकल्पना का फल आज प्रत्यच्च दिखाई देता है। ऋषि द्यानन्द सरस्वती की स्मृति में स्थापित की गई संस्था में ही वेद और आर्थ-प्रन्थों के अनेक विरोधी काम करते हैं। जब कोई सम्रा आर्थपुरुष इस पर आपत्त उठाता है, तो अनेक कथित-आर्यसमाजी जो प्रच्छन बौद्ध हैं और जो प्रबन्धक बने बैठे हैं, उसका मुख बन्द करने का यत्न करते हैं।

(प्रश्न) क्यां भारत की भावी शिचा संस्कृत माध्यम द्वारा होगी।

हां, होगी पर इस के लिए आयों का सारी राजनीतिक शक्ति अपने हाथों में लेनी होगी। उन्हें "इण्डियन नैशनल कांग्रेस" को या तो समाप्त करना पड़ेगा या इस की मनोवृत्ति भारतीय बनानी होगी।

(प्रश) क्या कांग्रेस की मनोवृत्ति भारतीय नहीं है ?

(उत्तर) नहीं है, सर्वथा नहीं है। कांग्रेस वालों ने ही "नैशनल" शिचा के नाम से अंग्रेज़ी शिचा की शालाएँ खोली थीं। श्री गान्धी जो विद्यामन्दिर योजना की आड़ में साचात् अबीं फारसी का प्रचार कर रहे हैं। सन् १९४२ में पंछ जवाहर लाल ने एक विदेशी पत्रकार से कहा था कि मारत में अंग्रेज़ी तो बनी ही रहेगी। ये बातें प्रमाणित करती हैं कि जब कांग्रेस के नेताओं की नीति अभारतीय है तो कांग्रेस की नीति भी वैसी हो होगी।

(प्रश्न) अव तो भारत में ये स्कूल ही चलेंगे। छात्र और छात्राओं में जो विला 👙 🖽

भाव इस वर्तमान शिचा ने, कार्लमार्क्स के सिद्धान्तों ने और पश्चिम तथा विशेष कर रूस के संसर्ग ने उत्पन्न कर दिया है वह ही प्रवल रहेगा।

(उत्तर) यह सत्य है कि इस शिचा ने युवक और युवितयों को विलासिता के कराल गाल में अत्यधिक धकेला है। हम देखते हैं कि इसी बात के परिणाम स्वरूप अनेक बी० ए० एम० ए० युवितयां प्रतिवर्ष आत्मधात कर रही हैं। परन्तु यह तो सब कोई जानता है कि यह मार्ग मृत्यु का सार्ग है। आर्थसमाज को तो इस मार्ग से बहुत परे रहना चाहिए। कन्याओं के स्कूल और कालेज खोल कर, जहां आधे से अधिक अध्यापक वर्ग कार्लमा क्सेवादी कम्यूनिस्टों का है आर्थसमाज ने एक अकथनीय अध किया है वह अधिमार्ग से पितत हुआ है।

(प्रश्न) ऋषि द्यानन्द सरस्वती वर्तमान स्कूलों के सम्बन्ध में क्या आदेश करते।

(उत्तर) ऋषि के भाव उन के एक पत्र से जाने जा सकते हैं। वे पत्र पूर्णसंख्या ४६१ में लिखते —

'पाठशाला में संस्कृत पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए। श्रथवा श्रंमेजी फारसी में ही व्यर्थ धन जाता है। सो नि बा। 'जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रखी जाय।' पृ० ३७६

इस पत्र से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ऋषि प्रवानतया श्रंत्रेजी शिचा देने वाली देने वाली शानाएँ खोलने के घोर विराधो थे। ऋषि वर्तमान समस्त स्कूनों और कालेजों को वन्द करा देते। श्रेष्ठ फन के श्रभाव में जब ऋषि न श्रपनी खोली या खुलवाई श्रनेक शालाएँ वन्द कर दीं, तो वे इन स्कूलों के वन्द कराने में लेश भर भी संकोच न करते । श्रार्थसमाज उन के मार्ग से सर्वया विपरीत जा रहा है।

(प्रश्न) स्कूल श्रीर कालेज संचालक श्रार्थसमाजी तो बड़े २ लम्बे व्याख्यान देते हैं कि स्कूलों द्वारा श्रार्थसमाजों का बड़ा प्रचार हुआ है। क्या यह सत्य नहीं ?

(उत्तर) इन स्कूलों और कालजों में से घुणात्तरन्याय से कभी २ कोई अच्छा संस्कृत विद्वान् तथा आर्थसंस्कृति का अनन्य सेवक उत्पन्न हुआ है। अधिकांश लोग तो पाश्चात्य विचारों के दास ही उत्पन्न हुए हैं। अतः इन स्कूलों की प्रशंसा में व्याख्यान देना अपनी दास-मनोवृत्ति का प्रकाश करना है।

प्यारे भारतीयों, ऋषियों की सन्तानों, राम और ऋष्ण के नाम लेवाओ, मत इधर उघर भटको। मार्ग तो एक ऋषि दयानन्द सरस्वती का ही बताया हुआ है। यह मार्ग यदापि कठिन, अमेजी शासन के बन्दी-गृहों में जाने की अपेजा शतगुण अधिक कठिन है, पर है यही एक मार्ग। इसके लिए कटिवद्ध होना पड़ेगा।

### ५ ऋषि दयानन्द सरस्वती और देशी रियासते

ऋषि दयानन्द सरस्वती जान चुके थे कि श्रंप्रेजी शिचा के कुप्रभावों के कारण देशी राज्यों में से श्रार्थ श्रादर्श लुप्र हो चुके हैं। वे रियासतों के प्रबन्धकों की श्रुटियाँ बहुत भले प्रकार जानते थे, पर वे चाहते थे कि—

(क) आर्थ राजा संस्कृत पढ़कर प्राचीन आदश को पुनर्जीवित करें।

(ख) श्रार्थ राजाश्रों के समस्त राज्य-संचालक संस्कृत पठित श्रौर इसी आदर्श के मानने वाले हों।

(ग) राज वर्ग के बालक आरम्भ से आर्थ शिचा प्राप्त करें और अंग्रेजी आदर्श न सीखें।

(घ) रियासतों में मनु का धर्मशास्त्र प्रचलित हो श्रीर नया कनून न चले।

(ङ) रियासतें आर्थ संस्कृति की रच्चक बनें।

(च) रियासतें नष्ट न हो जायें । उनका अस्तित्व बना रहे । उन में प्रजातन्त्र का वर्तमान निकृष्ट रूप प्रचलित न हो, प्रत्युत मनु-प्रदर्शित राज-नियम ही चलें ।

(छ) राजवर्ग व्यसनी न हों और पितृवत् प्रजा पालन करें।

(ज) रियासतों में गोरचा का पूरा ध्यान रखा जाये। रियासतों का सब कार्य संस्कृत और धार्यभाषा में हो।

(क) चत्रिवग में प्राचीन चात्र आदर्श स्थिर रहें और यज्ञ याग बहुत हों।

इत्यादि श्रानेक बातें हैं जो इन पत्रों से जानी जा सकती हैं। श्रार्थसमाज ने इस श्रोर श्राणुमात्र भी ध्यान नहीं दिया।

६. ऋषि दयानन्द सरस्वती और राज्य व्यवस्था

भारत की गहरी निद्रा के पश्चात् ऋषि दयानन्द सरस्वती पहले पुरुष थे जिन्हें भारत में देशोन्निति और स्वराज्य का यथार्थ ध्यान आया। उन के प्रत्येक तीसरे चौथे पत्र में देशोन्नित का शब्द दिखाई देता है। स्वराज्य का शब्द भी पहले पहल उन्होंने ही प्रयुक्त किया। उन्होंने स्वराज्य का उपाय भी आरम्भ किया। उनका स्वराज्य संसार पर सांस्कृतिक विजय द्वारा आता। वे इस विजय में अटल विश्वास रखते थे। वे इस महान कार्य के योग्य थे। भारत का स्वराज्य लाकर ऋषि संसार की राज्य व्यवस्था को ठीक करते। उन के देहान्त को आज ६२ वर्ष हो गये। आर्यसंस्कृति को सजीव रूप में जानने वाला अभी दूसरा व्यक्ति भारत में नहीं जन्मा। आर्यसमाज ऋषि के इस काम को नहीं चला सका। आर्यसमाज संसार का सांस्कृतिक विजय तो क्या करता, उस के अपने अन्दर ऐसे बहुसंख्यक लोग हो गये हैं जिन पर अंग्रेज़ी शिज्ञा के कारण वर्तमान संस्कृतियों का गहरा प्रभाव पढ़ चुका है। आर्यसमाज के लिये यह विषय विचारणीय है।

इसी प्रकार पत्रों में ऋषि ने और अनेक उउदाल विचार लिखे हैं। पाठक उन से स्वयं

लाभ उठायें। समयाभाव से हम उन पर प्रकाश नहीं डाल सके।

पत्रों के प्रकाशन में श्री मामराज जी का पृरा सहयोग रहा है। मेरे पुत्र श्री सत्यश्रवा एम० ए० ने कई वर्ष तक इस काम में सहायता दी है। श्री गुरुदेव जी विद्यालङ्कार ने प्रेस कापी के कई स्थान लिखे हैं। श्री पृष्य हरविलास जी सारडा मन्त्री परोपकारिग्णी सभा ने तो बहुत ही सहायता की है और परामर्श दिये हैं। श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और श्री पण्डित युधिष्ठिर जी मी० ने भी असाधारण सहायता की है। परिशिष्ट के पत्रों के लिये मेरठ निवासी ला० रामशरण दास के पौत्रों ने विशेष सहायता की है। उन में से ला० परमात्माशरण जी ने बहुत समय लगा कर पुराने

१. प्रथम संस्करण में कुछ पत्र परिशिष्ट में छुपे दे, उन की ब्रोर यह संकेत है । वे पत्र इस संस्करण में यथा स्थान जोड़ दिये गये हैं। यु० मी०।

कागज ढूंढे हैं। अनेक महानुभावों ने गत तीस वर्ष में समय समय पर इस कार्य में सहायता दी है। जन में से अनेक के नाम पहले लिखे जा चुके हैं। इन सब मित्रों और महानुभावों का मैं हार्दिक कुनज़ हूँ। मैं उन्हें शतशः धन्यवाद देता हूँ। उन की सहायता के विना यह महान कार्य इस रूप में कभी प्रकाशित न होता।

श्री प्रो० धीरेन्द्रवर्मा एम० ए० प्रयाग, श्री० प्रो० महेशप्रसाद जी साधु बनारस, श्री पं० वाचरपित एम० ए० लाहौर तथा कविराज सुरमचन्द बी० ए० लाहौर का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने पत्रों को प्रतिलिपियों के प्रदान में श्रथवा संशोधन में भारी सहायता की है। तथा वाबू श्रोम्प्रकाश वी० ए० खातौली निवासी और ला० उपसेन जी ने भी श्री सामराज को बहुत सुविधाएँ दी है। उन का भी बहुत २ धन्यवाद है।

इन सब के साथ श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट के प्रबन्धक श्री बाबू रूपलाल जी श्री ला० कानचन्द जी श्रीर श्री ला० इंसराज जी ने तो सहायता श्रीर उदारता में कोई न्यूनता नहीं रहने दी। ला० इंसराज जी ने प्रेस की श्रोर से सुद्रण में श्रसाधारण सावधानता दिखाई है। इन महाजु-भावों का मैं जितना धन्यवाद करूं थोड़ा है। युद्ध के गत महार्घ दिनों में सहस्रों रुपये का ज्यय करके इस प्रन्थ को सुद्रण कराना इन्हीं का सुख्य काम था।

ईडर राज्य के दीवान, वेदमक्त, स्वाध्यायशील, आर्य हृदय रखने वाले श्री ला० जगन्नाथ जी मण्डारी, एम० ए० हमें अत्यधिक सहायता दे रहे हैं। उन की आर्थिक सहायता के विना हमारा अनुसन्धान कार्य मन्थर गति से चलता । यदि गत दो वर्ष में हम अधिक कार्य कर पाये हैं, तो यह उन्हीं की उदार सहायता का फल है। हम उन के बहुत ऋणी हैं। यह प्रन्थ उन्हीं को समर्पित है।

आश्चर्य का विषय है कि श्री दीवान जी उसी राज्य के प्रधान मन्त्री हैं, जो शूरवीर ऋषि भक्त महाराजा श्री प्रतापसिंह जी के छंति में हैं।

ईधर करे अज्ञान में पड़ा संसार इस प्रन्थ से लाभ उठाये।

माडल टाऊन (लाहौर ) ९ दिसम्बर १९४५ रविवार

भगवहत्त

श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट काणस्र ता अंशिक सन्दर प्रकाशन श्रायं जगत् को यह जानकर महती प्रसन्नता होगी कि रामलाल कपूर द्रस्ट श्रमृतसर ने श्रपना प्रकाशन कार्य कुछ वर्षों से पूर्ववत् भले प्रकार प्रारम्भ कर दिया है। निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं-१ — सन्ध्योपासनविधि — ऋषि द्यानन्दकृत भाषार्थ, द्निक हवन और भजनों के सहित यह अब तक ३०५००० तीन लाख पांच हजार छप चुकी है। घटाया हुआ मृल्य -) २-- व्यवहारभानु -- ऋषि दयानन्दकृत। बाजकों को व्यवहार की उचित शिक्षा देनेवाला अपूर्व प्रन्थ । यह प्रन्थ प्रत्येक आर्थ बालक-बालिकाओं के विद्यालयों में पाठ्य पुस्तक रखने योग्य है। मू० =) ३—ऋषि दयानन्द सरस्वती का स्वलिखित और स्वकथित आत्मचरित्र—ऋषि दयानन्द ने अमेरिका-निवासी आल्काट महोदय की प्रेरणा से अपना कुछ वृत्तान्त लिखकर उन्हें भेजा था, जिसका श्रंपेजी श्रनुवाद उन्होंने थियोसोफिकत नामक श्रपने पत्र में छापा था। श्रार्थसमाज के **उद्भट विद्वान् श्री पं० भगवइत्तजी ने इस प्रन्थ का सम्पादन किया है।** ऋषि द्यानन्द् के प्रसिद्धि में धाने से पूर्व की घटनाओं का यही एकमात्र प्रामाणिक लेख है। 🏃 🕻 • ४ — हवन मन्त्र — प्रार्थना, स्वस्तिवाचन, शान्तिप्रकरण, बृहद् हवन और भजनों से युक्त। मू०\_) ५— आर्थामिविनय—ऋषि दयानन्दकृत ( प्रथम और द्वितीय संस्कर्ण से मिलाकर अत्यन्त शुद्ध और सुन्दर छापा गया है। संदिग्ध स्थलों पर टिप्पियां दी गई हैं)। म्लय (=) ६ -- त्रायोदिश्यरतमाला -- ऋषि दयानन्दकृत । शुद्ध, सुन्दर तथा सदिष्पण संस्करण मू० -) ७—पञ्चमहायज्ञविधि - ऋषि द्यानन्दकृत स्लय 🖘 ८—उरुज्योति अर्थात् वैदिक अध्यातम-सुधा -श्री डा० वासुरेवशरणजी अभवाल लिखित। वैदिक अध्यात्म विषयक उचकोटि का श्रेष्ठ प्रन्थ। कागज छवाई श्रेष्ठ और सुन्दर। सजिल्द ३) भात्र ६—ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास—जेखक-युधिष्ठिर सीमांसक। ऋषि दयनान्द के सभी मुद्रित और अमुद्रित प्रन्थों के विषय में पूर्ण जानकारी देनेवाला अपूर्व ग्रन्थ। प्रचारार्थ मूल्य में भारी कभी की गई है। घटाया हुआ मूल्य बढ़िया सं० सजिल्द ४), साधारण सं० अजिल्द ३) मात्र १०-अष्टाध्यायी मूल-( सूत्रपाठ ) अत्यन्त शुद्ध पाठ मूल्य ॥) ११ — ऋग्वेद-भाषाभाष्य -प्रथम भाग (जो वंदवाणी में क्रमशः छपता रहा) मूल्य २॥) १२ —वेदार्थप्रक्रिया के मूल भूत सिद्धान्त —लेखक श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु मूल्य 😑) १३—संस्कृत पठनपाठन की अनुभूत सरलतम विधि—,,

१४ वेदांक —वेदवाणी के संवत् २००५,२०१०,२०११ के विशाल-काय विशेषाङ्क । इन में कमशः २५, ३०, ३६ उच्चकोटि वेदविषयक निबन्धों का संग्रह है । प्रत्येक का मूल्य १)

१५—वेदवाणी की पुरानी फाइलें—वर्ष २ श्रङ्क १० मूल्य २॥), वर्ष ३ श्रङ्क १० मूल्य २॥) वर्ष ४ श्रङ्क १० मूल्य ३), वर्ष ४ वेदाङ्क सहित ४), वर्ष ६ वेदाङ्क सहित ४) थोड़ी प्रतियां शेष हैं,शीव्रता करें हाक व्यय सबका पृथक होगा । बड़ा स्चीपत्र विना मूल्य मंगवावें ।

रामलाल कपूर एण्ड सन्स, पेपरमर्चेण्ट

गुरु बाजार, श्रमृतसर। नई सङ्क, देहली। बिरहाना रोड, कानपुर वेदवाणी कार्यालय, पो० श्रजमतगढ़ पैलेस, बनारस ६।

#### \* ओ३म \*

# ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

--:O:X:O:X:O:X:O:---

#### [ 8 ]

# विज्ञापनपत्रम्

[ 8 ]

श्रीरस्तु ॥ ऋग्वेदः १ यजुर्वेदः २ सामवेदः ३ द्यथर्ववेदः ४। एतेषु चतुर्षु वेदेषु कर्मोपासनाज्ञान-काण्डानां निश्चयोस्ति ॥ तत्र संध्यावन्दनादिरश्वमेधान्तः कर्मकाण्डो वेदितव्यः । यमादिः समाध्यन्त जपासनाकाण्डश्च वोद्धव्यः । निष्कर्मादिः परब्रह्मसाज्ञात्कारांतो ज्ञानकाण्डो ज्ञातव्यः ।।

त्रायुर्वेदः ५ तत्र चिकित्सा विद्यास्ति॥ तत्र चरकसुश्रुतौ द्वौ प्रन्थौ सत्यौ विज्ञातव्यौ ॥

धनुर्वेदः ६ तत्र शस्त्रास्त्रविद्यास्ति ॥

गांधववेदः ७ तत्र गानविद्यास्ति ॥

अर्थवेदः = तत्र शिल्पविद्यास्ति ॥

एते चत्वारो वेदानामुपवेदा यथासंख्यं वेदितव्याः ॥

शिचा वेदस्था ९ तत्र वर्णोचारणविधिरस्ति॥

कल्पः १० तत्र वेदमन्त्राणामनुष्टानविधिरस्ति ॥

व्याकर एम् ११ तत्र शब्दार्थसम्बन्धानां निश्चयोस्ति । तत्र द्वौ प्रन्थावष्टाध्यायीव्याकर एमहा-भाष्याख्यौ सत्यौ वेदितव्यौ ॥

निरुक्तम् १२ तत्र वेदमन्त्राणां निरुक्तयः सन्ति ॥

१ पं॰ लेखराम कृत जीवन चरित ए॰ ५६७-५६८ पर उद्घृत । इस से प्रले जीवन चरित्र में निम्नलिखित पंक्तियां हैं—

"पं० हृदयनारायण वकील ने बयान किया कि एक विशापन स्वामी जी की आशा से मैं ने प्रमाणिक पुस्तकों का संस्कृत में छपवाया था। यह संस्कृत में स्वयं स्वामी जी ने लिख कर दिया था। जब छप कर आया तो उस की छापे की अशुद्धियों को स्वामी जी ने स्वयं शोधा था। श्रीर कहा कि देखो मूर्ख ने छापने में कितनी अशुद्धियां कर दीं। एक प्रति स्वामी जी की शोधी हुई हमारे पास विद्यमान है। शेष उस समय बांट दी थीं। वह आप को देता हूं," इति।

२ चारों वेदों में ज्ञान, कर्म और उपासना इन तीन विद्याओं का वर्णन होने से चारों वेदों को 'त्रयी' या 'त्रयी विद्या' भी कहते हैं। वेद शब्द विद्या का पर्यायवाची है। इसलिए चारों वेदों के लिए ब्राह्मण्यन्थों में 'त्रीन् वेदान्' आदि प्रयोग भी उपलब्ध होते हैं। यु० मी०।

छन्दः १३ तत्र गायत्र्यादिछन्दसां लक्त्यानि सन्ति ॥ ज्योतिषम् १४ तत्र भूतभविष्यद्वर्तमानानां ज्ञानमस्ति । तत्रैका भृगुसंहिता सत्या वेदितव्या॥ एतानि षट् वेदङ्गानि वेदितव्यानि ॥ इमाश्चतुर्दशविद्याश्च ॥

ईशकेनकठप्रश्रमुण्डकमाण्डूक्यतैत्तिरी[य]ऐतरेयछान्दोग्यबृहद्गरण्यकश्वेताधत्तरकैवल्योपनिषद्ो द्वादश १५ अत्र ब्रह्मविद्येवास्ति ॥

शारीरकस्त्राणि १६ तत्रोपनिषन्मन्त्राणां व्याख्यानमस्ति ॥ कात्यायनादीनि सूत्राणि १७ तत्र निषेकादिश्मशानान्तानां संस्काराणां व्याख्यानमस्ति ॥ योगभाष्यम् १८ तत्रोपासनाया ज्ञानस्य च साधनानि सन्ति ॥ वाकोवाक्यमेको प्रन्थः १९ तत्र वेदानुकूला तर्कविद्यास्ति ॥ मनुस्मृतिः २० तत्र वर्णाश्रमधर्माणां व्याख्यानमस्ति ॥ वर्णसंकरधर्माणाञ्च । महाभारतम् २१ तत्र शिष्टानां जनानां लच्चणानि सन्ति ॥ दुष्टानां जनानाञ्च । एतान्येकविंशति शास्त्राणि सत्यानि वेदितव्यानि ॥

एतेष्त्रेकविंशतिशास्त्रेष्विप व्याकरण्-वेद्-शिष्टाचारिकद्धम् यद्वचनं तद्व्यसत् । एतेभ्य एकविशतिशास्त्रेभ्यो ये भिन्ना प्रन्थाः सन्ति ते सर्वे गप्पाष्टकाख्या वेदितव्याः । गप्ट<sup>3</sup> मिथ्यापरिभाषणे । तस्मात्पः प्रत्ययः ॥ गपयते<sup>भ</sup> यत्तद्वपम् ॥

> श्रष्टौ गप्पानि यत्र स्युर्गप्पाष्टकं तिहृदुर्बुधाः। श्रष्टौ सत्यानि यत्रैव तत्सत्याष्टकमुच्यते।

कान्यष्टी गप्पानीत्यत्राह— मनुष्यकृताः सर्वे ब्रह्मवैवर्तपुराणादयो प्रन्थाः प्रथमम् गप्पम् १।

१ ऋषि दयानन्द के प्रारम्भिक पत्रों, तिज्ञापनों तथा भागवतखण्डन आदि कितपय पुस्तिकाओं (ट्रेक्टों) में कुछ ऐसी भी बातें उपलब्ध होती हैं, जिन्हें ऋषि दयानन्द ने उत्तरकाल में त्याज्य समका। तदनुसार यहां प्रामाणिक प्रन्थों में उिछिखित भृगुसंहिता को भी ऋषि दयानन्द ने उत्तर काल में अनार्ष तथा त्याज्य प्रन्थ समका (देखो सत्यार्थप्रकाश समु० ३)। ऋषि दयानन्द के अन्तिम रूप से निर्धारित सिद्धान्तों और मन्तव्यों के ज्ञान के लिए द्वितीय बार संशोधित सत्यार्थप्रकाश प्रन्थ ही मुख्यतया प्रमाण है। यु० मी०।

२ श्रान्यत्र चौदह विद्या इस प्रकार गिनी गई हैं— "श्रङ्गानि वेदाश्रत्यारो भीमांसा न्यायिवस्तरः। षुराणं घर्मशास्त्राणि विद्या ह्यात्र्यतुर्दश । ि(वि० षु० पू० ६१। ७८॥ वायु पुराण ६१। ७८) स्पर्धात्—६ वेदाङ्ग, ४ वेद, १ मीमांसादर्शन, १ न्यायशास्त्र, १ पुराण (ऐतिह्य), १ धर्मशास्त्र, ये चौदह विद्याएं हैं। इन्हीं में श्रायुर्वेद धनुर्वेद गान्धर्ववेद श्रौर श्रर्थशास्त्र जोड़ने से १८ विद्याएँ हो जाती हैं। (द्र० वायु पुराण ६१।७६)। यु० मी० ३ वाकोवाक्यम्—उक्तिपत्युक्तिरूपं तर्कशास्त्रम्। गौतमधर्मसूत्र मस्करी भाष्य ८। ६ मस्रसंस्करण।

यु॰ मी॰।

४ त्रगते वाक्य में 'गपयते' प्रयोग उपलब्ध होने से प्रतीत होता है कि यहां मुद्रण दोव से 'गप' त्र्यदन्त धातु के स्थान में 'गप्' ऋकरान्त छप गया है। ऋदन्त मानने से ही 'गपयते' में उपधा को वृद्धि नहीं होती। धातुपाठ में यह धातु साज्ञात् पठित नहीं है, परन्तु इस प्रकरण के 'वहुलमेतिश्चर्शनम्' इस गण स्त्र से प्रयोग के श्रनुसार स्वीकार की जाती है। यु० मी०। Vidyalaya Collection.

कानपुर, सं० १९२६]

विज्ञापन पत्रम् १

3

पाषाणादिपूजनं देवबुद्ध्या द्वितीयं गप्पम् २।
शैवशाक्तवैष्णवगाणपत्यादयः संप्रदायास्तृतीयं गप्पम् ३।
तन्त्रप्रन्थोक्तो वाममार्गश्चतुर्धं गप्पम् ४।
भङ्गादिनशाकरणम् पञ्चमं गप्पम् ५।
परस्त्रीगमनं षष्ठं गप्पम् ६।
चौरीति सप्तमं गप्पम् ७।
कपटच्छलाभिमानानृतभाषणमष्टमम् गप्पम् [=]।
एतान्यष्टौ गप्पानि त्यक्तव्यानि ॥

कान्यष्टौ सत्यानीत्याह--

ऋग्वेदादीन्येकविंशतिशास्त्राणि परमेश्वरिषिरिचतानि प्रथमं सत्यम् १॥ व्रह्मचर्गाश्रमेण गुरुसेवास्वधर्मानुष्ठानपूर्वकं वेदानां पठनं द्वितीयं सत्यम् २॥ वेदोक्तवर्णाश्रमस्वधर्मसन्ध्यावन्दनाग्निहोत्राद्यनुष्ठानं स्तीयं सत्यम् ३॥ यथोक्तदारादिगमनम् पञ्चमहायज्ञानुष्ठानसृतुकालस्वदारोपगमनं श्रोतस्मार्ताचाराद्यनुष्ठानम्॥ चतुर्थं सत्यम् ४॥

शमद्मतपश्चरण्यमादिसमाध्यन्तोपासनासत्संगपूर्वकं वानप्रश्याश्रमातुष्ठानं पञ्चमं सत्यम् ५ ॥ विचारविवेकवैराग्यपराविद्याभ्याससंन्यासम्हण्पूर्वकं सर्वकर्मफलत्यागाद्यनुष्ठानं षष्ठं सत्यम् ६ ज्ञानविज्ञानाभ्यां सर्वानर्थजन्ममरण्हर्षशोककामक्रोधलोभमोहसंगदोषत्यागानुष्ठानं सप्तमं

सत्यम् ७ ॥

अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशतमोरजःसत्त्वसर्वक्लेशनिवृत्तिः पञ्चमहाभूतातीतमोत्तस्वरूप-स्वाराज्यप्राप्तिः अष्टमं सत्यम् ८ ॥

> ऐतान्यष्टौ सत्यानि महीतव्यानि ॥ इति ॥ द्यानन्दसरस्वत्याख्येनेदम्पत्रं रचितम्, तदेतत्सज्जनैवेदितव्यम् ॥

शोलेतूर में छपा।

----

१. यह विशापन कानपुर में दिया गया था। वहीं के शोलेतूर यन्त्रालय में छपा।

. इस विज्ञापन का उल्लेख कानपुर के उर्दू के समाचार पत्र शोलेत्र के २७ जुलाई १८६६ के ऋइ भाग १० संख्या ३० में है। इस से ज्ञात होता है कि यह विज्ञापन २० जुलाई के समीप ऋथवा आवाद सं० १९२६ के अन्त में छपा होगा।

काशी का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ इस विज्ञापन के पश्चात् मङ्गलवार १६ नवम्बर सन् १८६९ में हुन्ना । छलकपटदर्पण के कर्ता ने त्राशुद्ध विज्ञापन छाप कर त्रापने स्वभावानुकूल ऋषि पर स्नानेक मिथ्या कटाच किए हैं।

प्रमाणिक प्रन्थों की जो सूची इस विज्ञापन में दी गई है, ठीक उसी प्रकार की एक सूची ऋषि दयानन्द सरस्वती ने बनारस संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल डाक्टर रडल्फ हार्नेले को काशी शास्त्रार्थ से कुछ दिन पहले ज्ञपने हाथ से लिख कर दी थी। देखों The Arya Samaj, by L. Lajpat Rai दूसरा संस्करण, लाहीर, पृ० ४६।

8

[8]

पत्र (१) [२] श्रीरस्तुं स्वस्ति श्री श्रेष्टोपमायोग्यस्य गङ्गाद्त्तशम्भीयो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशीर्वादो विदितो भवत्वत्र शं वर्त्तते तत्राप्यस्तु । भवत्पत्रमागतं तत्रस्थो वृत्तान्तोऽपि विदितः ।। भवान् बुद्धिमान् भूत्वा पत्रं त प्रेषितवान् परन्तु स्वयं च पत्रप्रेषगावन्नागत इदम्महदाश्चर्यम् ॥ इद्रपत्रं दृष्टेव पाठशालायाम्पाठनारम्भं करिष्यति तस्मिन्नेव दिने शीघ्रमागन्तव्यमागत्य यस्मिन्दिने भवानत्र एकमासस्य विचारितस्य तु प्रेषणां गृहम्प्रति कार्यमिति निश्चयो वेदितव्यो नात्र कार्या विचारणा ॥ इयं शङ्कापि भवता न कार्यो जीविका तत्र भवेद्वा नेति ।। इदानीन्तु प्रतिदिनम्मुद्धैका जीविकास्त्यत्र परन्तु यदा यदा भवतो गुणप्रकाशो भविष्यति तदा तदाधिकाधिका जीविका निश्चिता भविष्यतीति विज्ञेयम् ॥ इदानीन्तु भवतात्रैव स्थितिः कार्या पुनरन्यत्र वात्रैवाजीविका निश्चिता स्थास्यति, न जाने भवेदाजीविका न वेति गमने कृते सित मयीति भवतो ह शङ्कापि मा भूत् ॥ अत्रागमने कृते सित भवति सर्वं शोभनं भविष्यति ॥ परन्तु भवतात्रागमने च्रणमात्रोपि विलम्बो न कार्यः । किस्वहना लेखेनामिक्केषु ।। संवत् १९२७ भाद्रपद् शुक्तपत्तषष्टचां बृहस्पतिवासरे विखितसिद्म्पत्रं विदितम्भवत् ।

[2]

[३]

पं० गङ्गादत्त जी हम वृन्दावन अवश्य आवेंगे"।

१. मथुरा निवासी पं॰ गङ्कादत्त चौवे श्री स्वामी जी का सहाध्यायी था। इस पत्र द्वारा श्री स्वामी जी ने फर्र खाबादस्य ला॰ पन्नीलाल वाली पाठशाला में पढ़ाने के लिए उसे बुलाया है। इस पत्र के फर्र खाबाद से मेजने का संकेत पं॰ लेखराम कृत महर्षि दयानन्द के उर्दू जीवनचरित के पु॰ २१६ पंक्ति २ में है।

२. १ सितम्बर १८७० । यह पत्र फर्रुखाबाद से मथुरा मेजा गया।

३. पं॰ गङ्गादत्त के पौत्र पं॰ विद्रदत्त तान्तिक छत्ता बाज़ार मथुरा में रहते हैं। उन के घर में यह मूल पत्र अब भी सुरं जित है। उसी मूल पत्र से श्री महाशय मामराज जी ने भाद वदी १२ संवत् १६८५ को अपनी लेखनी से इस की प्रतिलिपि की ।

पं॰ गङ्गादत्त को श्री स्वामी जी ने मार्ग व्यय के जिए रुपये भी भेजे थे। जब पं॰ गङ्गादत्त फर्रखाबाद न गया, तो उसने १०) ६० वनमाली पिएडत को लौटा दिए। उन की रसीद ला॰ मामराज जी को पं॰ गङ्गादत्त के बस्तों में से मिली। वह निम्नलिखित है -

"जो दयानन्द सरस्वती स्वामी ने दश रुपये १०) मेजे गङ्गादत्त जी के रस्ता खर्च को सो नयनसुख के मारफत युगल जी की चिठी को लिखो देख, गङ्गादत्त जी से भर पाए, कलाधर तथा वनमाली नै।

श्रत्र साची दामोदरः" ॥

४ श्री स्वामी जी के पूर्व पत्र के उत्तर में पं० गङ्गादत्त चौवे ने पहले उन्हें मथुरा वृन्दावन श्राकर मूर्तिपूजा खरडन करने को लिखा था। उस के उत्तर में स्वामी जी ने जो पत्र लिखा, उसका उपर्युक्त सारांश पं ॰ लेखराम संकलित जी ॰ च ॰ पृष्ठ २१६ में लिखा है । मूल पत्र संस्कृत में रहा होगा । यु ॰ मी ॰ ।

५ यह पत्र मुस्यत्वतः संह ८६६३१ स्त्राक्षित् सामाने लिखा ग्रासा होसान। यु॰ मी० ।

हुगली; सं० १९३० ]

4

## [ २ ]

विज्ञापनपत्रमिद्मै

[8.

एक परिडत ताराचरण तर्करत्न नामक भाटपाड़ा र प्राम के निवासी हैं। जो कि प्राम हुगली के पार है। उस प्राम में उनकी जन्म भूमि है, परन्तु आजकल श्रीयुक्त काशीराज महाराज के पास रहते हैं। सम्वत् १९२९ में वे अपनी जन्मभूमि में गये थे। वहाँ से कलिकाता में भी गये थे और किसी स्थान में ठहरे थे।

१. यह विज्ञापनपत्र प्रतिमा पूजन विचार के नाम से १८×२२ के ब्राठ पृष्ठ वाले ब्राकार के २८ पृष्ठों पर श्री स्वामीजी ने स्वयं छपवा दिया था। इस के ब्रारम्भ के १३ पृष्ठों पर हुगली शास्त्रार्थ छपा है ब्रीर उस से ब्रागे प्रतिमा पूजन पर विचार किया है। उस का मुख्य पृष्ठ निम्नलिखित प्रकार का है—

प्रतिमा पूजन विचार॥

श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामी श्रौर ताराचरण तर्करत्न का शास्त्रार्थ जोकि हुगली में हुश्रा था। उसे बात्रू हरिश्चद्र की श्राज्ञा से बनारस लाइट छापेखाने में गोपीनाथ पाठकने मुद्रित किया सम्वत् १६३०॥

Beneras
Printed At "The Light Press"
1873

इस विज्ञापन का पूर्वीश अर्थात् हुगली शास्त्रार्थ पं० लेखराम कृत जीवनचिरत के पू० २०१-२०८ पर तथा देवेन्द्र बाबू और पं० घासीराम रचित जीवन चिरत के पू० २३६-२३८ पर छुपा है। दोनों स्थानों में यह विज्ञापन अपने शुद्ध रूप में नहीं है। दोनों ने इस का संचेप दिया है। पं० लेखराम ने देवेन्द्र बाबू की अपेचा मूल का अधिक रच्या किया है। इसकी मूल मुद्रित प्रति म० मामराज फर्रखाबाद से संवत् १६८३ में लाए थे। वह मूल प्रति अब इमारे संग्रह में सुरच्चित है।

हम ने विराम श्रादि चिह्न तो दिए हैं, परन्तु मूल पाठ सुरिच्चित रखा है। हां मुद्रण में रही मात्रा श्रादि की श्रशुद्धि दूर कर दी है।

इस हुगली शास्त्रार्थ की पुस्तक अथवा विज्ञापन पर पं॰ लेखराम जी का निम्नलिखित विवरण है—
"संवत् १६२६ में यह शास्त्रार्थ संस्कृत भाषा में हुआ †। उसी समय उसका अनुवाद बंगला
भाषा में मुद्रित किया गया। और बहुत ही शीव्र संवत् १६३० लाइट प्रेस बनारस में १८ [२८] पृष्ठका बा॰
हरिश्चन्द्र ‡ एक मूर्तिपूजक हिन्दू ने जो कि गोकुलिया गोस्वामी मत में था, उसे शब्दशः आर्थभाषा में छपवा
कर मुद्रित किया। आज तक (सन् १८६७) पांच बार छप चुका है, परन्तु पृथक् पुस्तक [ अर्थात् हुगली
शास्त्रार्थ] विक्रयार्थ नहीं मिलता।" जीवन चरित्र पृष्ठ० ७६१।

२. हुगली शाम हुगली नदी के दाहिने तट पर है और भाटपाड़ा प्राप्त नदी के बाएँ तट पर लगभग ४ मील दूर दिव्या पूर्व की स्रोर है । यु॰ मी॰।

\* ऋषि दयानन्द हुगली चैत्र सुदि ४ संवत् १६३० को गये थे। ऋतः यहां सं० १६३० चाहिये । सं० १६२६ भूल से छपा होगा। यु० मी०।

† ऋषि दयानन्द ने यह शास्त्रार्थं का सारांश भी संस्कृत भाषा में ही लिखा होगा, क्योंकि उस समय तक वे सम्भाषणा भी संस्कृत में ही करते थे। यु॰ मी॰। ‡ ये प्रसिद्ध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। यु॰ मी॰। जिन के स्थान में मैं ठहरा था उनका नाम श्री युक्त राजा ज्योतीन्द्र मोहन ठाकुर तथा श्रीयुक्त राजा शौरिन्द्र मोहन ठाकुर है। उनके पास तीन बार जा जा के ताराचरण ने प्रतिज्ञा की थो कि हम आज अवश्य शास्त्रार्थ करने को चलेंगे। ऐसे ही तीन दिन तक कहते रहे, परन्तु एक वेर भी न आये। इस्से बुद्धिमान् लोगों ने उनकी बात मूठी ही जान ली। मैं किलकाता से हुगली में आया' और श्रीयुक्त वृन्दाबनचन्द्र मण्डल जी के बाग में ठहरा था। सो एक दिन उन्होंने अपने स्थान में सभा की। उसमें मैं भी वक्त्व करने के वास्ते गया था तथा बहुत पुरुष सुनने को आये थे। उनसे मैं अपना अभिप्राय कहता था। वे सब लोग सुनते थे। उसी समय में ताराचरण पण्डित जी भी वहां आये। तब उन से वृन्द्राबनचन्द्रादिकों ने कहा कि आप सभा में आइये जो इच्छा हो सो किह्ये, परन्तु सभा के बीच में पण्डित ताराचरण नहीं आये किन्तु उत्तर जाकर दूर से गर्जते थे।

वहां भी उन्होंने जान लिया कि पिएड़त जी कहते तो हैं परन्तु समीप क्यों नहीं जाते । इस्से जैसे वे ताराचरण जी थे वैसे ही उन्होंने जान लिये । फिर जब नव घएटा बज गया तब लोगों ने मेरे से कहा कि अब समय दश घएटा का है। उठना चाहिये। बहुत रात आगई।

फिर मैं और सब सभाश्य लोग छठे। छठके अपने अपने स्थान में चले गये। फिर मैं बाग में चला आया। छसके दूसरे दिन वृन्दाबनचन्द्र मण्डल जी ने मेरे से कहा कि उस वक्त ताराचरण भी आए थे। तब मैंने छनसे कहा कि सभा में क्यों नहीं आये। छन्होंने कहा कि वे तो बड़ा अभिमान करते हैं। तब मैंने छनसे कहा जो अभिमान कर्ता है सो पण्डित नहीं होता किन्तु वह काम मूर्ख का ही है। और जो पण्डित होता है सो तो कभी अपने मुख से अपनी बड़ाई नहीं कर्चा। जो ताराचरण पण्डित जी अभिमान में डूबे ही जाते होवें तब तो छनको मेरे पास एक बार ले आइये। फिर वे अभिमानसमुद्र में डूबने से बच जायं तो अच्छा हो। तब वृन्दाबनचन्द्रादिकों ने कहा कि आप बाग में चितये और जैसी आप की इच्छा हो वैसा शास्त्रार्थ की जिये। पण्डित जी की कुछ इच्छा न देखी। तब वृन्दाबनचन्द्र से मैंने कहा कि आप उनसे कहें कि कुछ चिन्ता आप न करें। स्वामी जी ने हमसे कह दिया है कि पण्डितजी प्रसन्नता से आवें। मैं किसी से विरोध नहीं रक्खता। तब तो पण्डित जी ने कहा कि हम चलेंगे।

सो मङ्गलवार की सन्ध्या समय में बहुत लोग नगर से शास्त्रार्थ सुनने को आये।

वृन्दावनचन्द्र भी बहुत लोगों के साथ द्याये। तथा पाठशालात्रों के द्राध्यक्त श्री भूदेंव मुकुर्ज्या द्याये। तथा श्री हरिहर तर्कसिद्धान्त परिडत भी द्राये। उसके पीछे परिडत ताराचरण जी सिशाब्य तथा त्रापने प्राम निवासिद्रों के साथ द्याये (जोकि उनके पत्तपाती थे)। ये सब लोग द्राके सभा के स्थान में इकट्टे भये। तब मैं भी उस स्थान में द्याया। फिर सब यथायोग्य वैठे। तब ताराचरण्जी ने प्रतिज्ञा की कि हम प्रतिमा का स्थापनपत्त लेते हैं। फिर मैंने कहा कि जो द्यापकी इच्छा हो सो लोजिये मैं तो इस बात का खरडन ही करूंगा।

१. ऋषि दयानन्द हुगली में चैत्र शुदि ४ सं० १६३० को पधारे थे। यु० मी०।

२. चेत्र शु॰ ११ सिमेस् स्थित् Do (nain एक्सिस् Kश्यकावनी a Vidyalaya Collection.

तब उन्ने मुक्त से कहा कि इस संवाद में वाद होना ठीक है वा जल्प अथवा वितरहा। उनसे मैंने कहा कि वाद ही होना उचित है। क्योंकि जल्प और वितरहा सज्जनों को करना कभी उचित नहीं। वाद गोतमोक्त लेना। तब उनों ने भी स्वीकार किया। फिर दूसरी यह प्रतिज्ञा उस समय में की गई कि ४ चार वेद तथा ४ चार उपवेद, ६ छः वेदों के अङ्ग और छः दर्शन मुनियों के किये तथा मुनि और ऋषियों के किये छः शास्त्रों के व्याख्यान उन्हों के वचन प्रमाण से ही कहना। अन्य कोई का प्रमाण नहीं, अर्थात् जो कुछ खरडन वा मरडन करना सो उन्हों के अन्तरों से ही करना अन्यथा नहीं। तब उन ने भी स्वीकार किया। मैंने भी।

(जहाँ २ तर्करत्न शन्द आवै वहाँ २ ताराचरण पण्डित जी को जान लेना । और जहाँ २ स्वामी शन्द आवै वहाँ २ द्यानन्द सरस्वती स्वामी जी को जान लेना )।

तर्करत्न-पावज्ञतस्त्रम् (चित्तस्य आलम्बने स्थूल आमोगो वितर्क इति व्यासवचनम्) तर्करत्न के हाथ में पुस्तक भी थी। उस को देखा तब भी मिथ्या ही उन्ने लिखा,' क्योंकि योगशास्त्र पढ़ा होय तब उस शास्त्र को जान सक्ता है। तर्करत्न ने पढ़ा तो था नहीं। इस्से उन्ने श्रशुद्ध लिखा। जो पढ़ा भया होता है सो ऐसा अष्ट कभी नहीं लिखता।

देखना चाहिये कि ऐसा पातञ्जल शास्त्र में सूत्र ही नहीं है। किन्तु ऐसा सूत्र तो है—

विषयवती वा प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसःस्थितिवन्धनी इति । सो इस सूत्र के व्याख्यान में नासिकाग्रे धारयत इत्यादिक वहाँ लिखा है। यह तो उन ने जाना भी नहीं। इससे उन का लिखना भ्रष्ट है। फिर लिखते हैं कि इति व्यासवचनम्। इस प्रकार का वचन व्यास जी ने कहीं योगशास्त्र की व्याख्या में नहीं लिखा। इस्से यह भी उनका वचन भ्रष्ट ही है। फिर यह लिखा कि—

(खरूपे साक्षाद्वती प्रज्ञा आभोगः, स च स्थूलविषयत्वात् स्थूल इत्यादि) यह भी उनका तिल्ला अशुद्ध ही है, क्योंकि प्रतिज्ञा तो ऐसी पूर्व की गई थी कि वेदादिक शास्त्र वचनों से ही प्रतिमापूजन का स्थापन हम करेंगे और वचन फिर लिखा वाचस्पित का । इस्से तर्करक्ष की प्रतिज्ञाहानि हो गई। प्रतिज्ञा की हानि होने से उनका पराजय हो गया। क्योंकि—प्रतिज्ञाहानिः प्रतिज्ञान्तर मित्यादिक निम्रहस्थान होते हैं। यद्यपि हम को जय तथा पराजय की इच्छा कभी नहीं है तथापि गोतम मुनि जी ने इस प्रकार के २६ निम्रहस्थान लिखे हैं।

नियहस्थान सब पराजय के स्थान ही होते हैं। श्रीर पहिले प्रतिज्ञा की थी कि जल्प श्रीर वितंग्डा न करेंगे। फिर जाति-साधन से प्रतिमा का स्थापन करने लगे, क्योंकि प्रतिमा भी स्थूल साधर्म्य से श्राती है।

स्वामी—यावान जागरितावस्थाविषयः तावान सर्वः स्थूलः कुत इत्यादि । मैंने उन को ज्ञापक से जना दिया कि ये गृहस्थ हैं इन की अप्रतिष्ठा न हो जाय । तदिप उन ने कुछ नहीं जाना । जानें तो तब, जब कुछ शास्त्र पढ़ा हो अथवा बुद्धि शुद्ध हो । साधर्म्यवैधर्म्योत्कर्षापकर्षेत्यादिक २४ चौबीस प्रकार का शास्त्रार्थ जाति के विषय में गोतम मुनि जी ने लिखा है । इसके नहीं जानने से जलप और वितरहा तर्कर का ने किये । क्योंकि—

१. इस प्रकरण से प्रकट होता है कि यह शास्त्रार्थ लिखित हुआ था । यु॰ मी॰ ।

यथोक्तोपपन्नइछ्छजातिनिग्रहस्थानसाधनोपाछम्भो जल्पः ॥ १॥ सप्रतिपक्षस्थापनाहीनो वितण्डा । २। जैसा कि इन सूत्रों का श्रिभिप्राय है वैसा ही तर्करत्न जी ने प्रतिमापूजन का स्थापन करने में जल्प श्रीर वितण्डा ही किया।

इस्से दूसरी बेर प्रतिज्ञा हानि जनने की। द्वितीय पराजय जनका हुआ।। यदुक्तं भवता तेनैव प्रतिमापूजमेव सिध्यत्येव तस्याः स्थूळत्वात , इसमें तीन बेर एव शब्द लिखने से यह जाना गया कि ताराचरण जी को संस्कृत का यथावत् बोध भी नहीं है। इससे तर्करक्ष जी अभिमान में हुवे जाते हैं। क्योंकि हम बड़े पण्डित हैं। इस प्रकार का जो स्वमुख से कहना है सोई विद्याहीनता को जनाता है। फिर लोकान्त[र]स्थ शब्द से मैंने जन को जनाया कि जो चतुर्भुज को आप लेते हो सो तो वैकुएठ में सुने जाते हैं। जप अर्थात् समीप आसना अर्थात् स्थिति सो मनुष्य लोक में रहने वाला कैसे कर सकेगा। कभी नहीं। और जो पाषाणादिक की मूर्ति शिल्पी की रची भई सो तो विद्या है नहीं, तब भी पण्डित जी कुछ नहीं समसे। क्योंकि जो कुछ विद्या पढ़ी होती अथवा सत्पुरुषों का संग किया होता तो समक्ष जाते। सो तो कभी किया नहीं। इस्से ठाराचरण जी उस बात को न समक्ष सके।

फिर एक कहीं से सुनी सुनाई ब्राह्मण की श्रुति विना प्रसंग से पढ़ी। सो यह हैं—(अथ स यदा पितृनावाहयित पितृलोकेन तेन सम्पन्नो महीयते) इस श्रुति से लोकान्तरस्थ की भी उपासना स्थाती है, इस स्थानाय से देखना चाहिये। इस श्रुति में उपासना लेशमात्र नहीं स्थाती, क्योंकि यह श्रुति जिस योगी को स्थाणमादिक सिद्धि हो गई हैं वह सिद्ध जिस २ लोक में जाने की इच्छा कर्ता है उस २ लोक को उसी समय प्राप्त होता है। सो जब पितृलोक में जाने की इच्छा कर्ता है, पितृलोक को प्राप्त होके स्थानन्द कर्ता है। क्योंकि (तेन पितृलोकेन महीयते) इत्युक्तत्वात्। ऐसे इच्छामात्र से ही ब्रह्मलोकादिक में विहार कर्ता है। इस्से इस श्रुति में मर कर उस लोक में जाता है स्थावा पितरों की उपासना इस लोक में कर्ता है इस स्थानाय के नहीं होने से ताराचरण जी का कहना मिध्या ही है। इस्से क्या स्थाया कि स्थान्तर का जो कहना है सो निप्रहस्थान ही है। निप्रहस्थान के होने से पराजय हो गया।

स्वामी—सर्वः स्थूल इत्यनेनेत्यादि देहान्तरगतस्य प्राप्तित्वादिति दिव्ययोगदेहप्राप्तित्वा-द्योगिनो न तु प्राकृतदेहस्य माहात्म्यमिद्मित्यर्थस्य जागरूकत्वात् देहान्तर अर्थात् जो दिव्ययोग सिद्धियों से प्राप्त होता है। उस देह से यह बात होती है। श्रीर जो श्रयोगी का देह नाम शरीर उससे कभी यह बात नहीं होती।

तर्करतः — प्रथमतः अस्माभिरित्यादि दूषण् अथवा भूषण् का ज्ञान तो विद्या होने से होता है। अन्यथा नहीं। क्योंकि दूषण् तो आपके तचनों में है। परन्तु आपने नहीं जाने। यह आपके वृद्धि का दोष है। जो आपने प्रत्यत्त दिखाये दूषणों को भी नहीं जाना, ऐसे दूषणों को तो बालक भी जान सक्ता है। तन्मध्ये प्रतिमापि वर्त्तते इत्येवेत्यादि। आप देख लीजिये कि हम वाद ही करेंने जल्प और वितण्डा कभी नहीं। फिर बार बार स्थूलत्व साधम्य से ही प्रतिमापूजन स्थापन किया चाहते हो। सो अपनी अविज्ञा आपि ही जाम स्थापन किया

होवै। सो कभी नहीं हो सक्ता है। क्योंकि विजय तो पूर्ण विद्या और सत्य भाषण कहने से होता है। सो आप में एक भी नहीं। इससे आप विजय की इच्छा कभी मत करो। किन्तु आप को अपने पराजय की इच्छा करनी उचित है। किन्न जो आप लोगों की इच्छा होवे तो वेदादिक सत्य शास्त्रों को अर्थ ज्ञान सहित पढ़ना चाहिये। जब आप लोग यथावत् सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे तथा पढ़ावेंगे तब फिर आप लोगों का पराजय कभी न होगा। किन्तु सर्वत्र विजय ही होगा। अन्यथा नहीं। इप्टान्तत्वेनेत्यादि छान्दोग्य दहरविद्यायामित्यादि चेति। उस अति का एक अंश भी दार्ष्टान्त में नहीं मिलने से वह आप का कहना मिथ्या ही है। सो मैंने कह दिया पहिले उससे जान लेना। यह किसने कहा कि जीवता पुरुष को उपासना का अधिकार नहीं है। सो यह आपका कहना मिथ्या ही है। क्योंकि ब्रह्मविद्या का और पाषाणादिक मूर्तिपूजन का क्या प्रसङ्ग है, कुछ भी नहीं। इस्से वह भी अर्थान्तर है। अर्थान्तर के होने से निम्नहस्थान अर्थात् पराजय स्थान आप का है। सो आप यथावत् विचार करके जान लेवें।

( तर्करतः )— प्रथमतः अस्माभिः यत् भन्नत्पक्ष इत्यादि तत्र प्रतिमापि वर्त्तते इत्येवेति । आप जान लेवैं कि साधम्य हेतु प्रमाण से ही बोलते हैं।

इससे आपके कहे जितने दूषण है वे सब आप के ऊपर ही आ गये। क्योंकि आप अपनी प्रतिज्ञा अर्थात् वाद ही हम करेंगे ऐसा प्रथमतः कह चुके हैं। फिर जल्प और वितरखा ही बारंबार करते हैं। इससे अपना पराजय आप ही कर चुके। क्योंकि आप को जो विद्या और बुद्धि होती तो कभी ऐसी भ्रष्ट बात न करें। और निम्रहरथान में बारंबार न आते। आपको संस्कृतभाषण करने का भी यथावत् ज्ञान नहीं है। क्योंकि प्रथमतः अस्माभिः यत् ऐसा भ्रष्ट असंबद्ध भाषण कभी न करें। किञ्च प्रथमतोऽस्माभिर्यत् ऐसा श्रष्ट और संबद्धसंस्कृत ही कहते। इष्टान्ते सर्वविषयाणां साम्यप्रयोजनं नास्तीति। यह भी आप का कहना भ्रष्ट ही है। क्योंकि मैंने कब ऐसा कहा था कि सब प्रकार से दृष्टान्त मिलता है। वह श्रुति एक अंश से [भी] आप के अभिप्राय में मिलती नहीं। इससे मैंने कहा कि इस श्रुति का पढ़ना आपका मिथ्या ही है ऐसा ही आप का कहना सब भ्रष्ट है।

(स्वामी)—भवत्पक्ष इत्यादि तत्र प्रतिमापि वर्त्तत्ते यह आप का जो कहना है सो प्रतिज्ञान्तर ही है। क्योंकि स्थूलत्व तुल्य जो प्रतिमा में और गर्दभादिकों में है। इस हेतु से ही प्रतिमा पूजन का स्थापन करा चाहते हो। सो फिर भी जल्प और वितर्ण्डा ही आती है, वाद नहीं। इससे वारंबार आपका पराजय होता गया। फिर भी आप को बुद्धि वा लज्जा न आई। यह बड़ा आश्चर्य जानना

चाहिये कि अभिमान तो पिंडतता का करें और काम करें अपिंडत का।

(तर्करतः)—प्रतिमापि वर्त्तते इत्यादि अयं तु प्रकृतविषयस्य साधकः, न तु प्रतिक्षान्तरं इत्यादि । प्रकृत विषय यही है कि प्रतिमा पूजन का स्थापन, सो स्थापन वाद से और वेदादिक सत्य शास्त्रों के प्रमाण से ही करना । फिर उस प्रतिक्षा को छोड़ के जल्प तथा वितर्ण्डा और मिध्या कल्पित वचन ये वाचस्पत्यादिकों के, उनसे स्थापन करने में लग गये । अहो इत्याश्चर्य कि ताराचरण जी की बुद्धि विद्या के बिना बहुत छोटी है । जो प्रतिक्षा करके शीघ्र ही भूत जाती है । यह आपका दोष नहीं किन्तु आपकी बुद्धि का दोष है । और आपके काम क्रोध अविद्या लोम मोह भय विषयासक्ष्यादिक

दोषों का दोष है। तर्कर क्र जी यह आप देख लीजिये कि कितने बड़े २ दोष आप में हैं। प्रथम तो प्रतिमापूजन का स्थापन पन्न लेके फिर जब कुछ भी स्थापन न हो सका तब उपासनामात्रमेव भ्रममुख्य अपने आप ही खंडन प्रतिमापूजन का करने लगे कि भ्रम मूल अर्थात् प्रतिमापूजन सिध्या ही है। इससे आपके पन्न का आपने ही खरडन कर दिया। फिर मिथ्या अन्थ जो पञ्चदशी उस के प्रमाण देने लग गये। श्रीर जो प्रथम वेदादिक जो २० बीस सनातन ऋषि मुनियों के किये मूल श्रीर व्याख्यान तथा परमेश्वर के किये ४ चार वेद इन के प्रमाण से बोलेंगे सो आपकी प्रतिज्ञा मिध्या हो गयी। प्रतिज्ञा के मिथ्या होने से आप का पराजय भी हो गया। फिर भ्रान्तिरस्माकः न दृषणीया यह भी पहले आपका कहना है सो कोई भी पिएडत न कहेगा कि आनित भूषण होता है। यह तो आपकी भ्रान्त बुद्धि का ही वैभव है। श्रीर जे सज्जन लोग हैं वे तो भ्रान्ति को दूषरा ही जानते हैं। तथा भ्रमः खल द्विविधः इत्यादि यह पञ्चद्शी का वचन है यह भी प्रतिज्ञा से विरुद्ध ही है, क्योंकि वेदादिक शास्त्रों में इस की गणना नहीं है। पाषाणादिक की रचित मूर्त्ति में देवबुद्धि का जो कत्ती है सो दीप प्रभा में मिए अम की नाई ही है क्यों कि दीप तो कभी मिए न होगा और मिए तो सदा मिण ही रहेगा। सो त्रापने मुख से तो कहा परन्तु हृद्य में शून्यता के होने से कुछ भी नहीं जाना। ऐसा ही आपका सब कथन भ्रष्ट है। आपको जो कुछ भी ज्ञान होय तब तो जान सकते अन्यथा नहीं। तर्करत जी ने आगे २ जो २ कुछ कहा है सो २ सब भ्रष्ट ही है। बुद्धिमान लोग विचार लेवें। ताराचरण जी इस प्रकार के मनुष्य हैं कि कोई बुद्धिमान [के] सामने जैसा वालक। श्रीर आषण वा श्रवण करने के योग्य भी नहीं, क्योंकि जिस को बुद्धि और विद्या होती है सोई कहने वा अवण में समर्थ होता है। सो तर्करत्न जी [में] न बुद्धि है और न कुछ विद्या है। इस्से न कहने और सुनने में समर्थ हो सकते हैं। इन का नाम जो तर्करत्न कोई ने रक्खा है सो अयोग्य ही रक्खा है। क्योंकि अविकात तत्त्वेऽधें कारणोपपत्तितस्तत्त्वज्ञानार्थमूहस्तर्कः यह गौतम मुनि जी का सूत्र है। इस का यह अभिप्राय है कि जिस पदार्थ का तत्त्वज्ञान अर्थात् जिस का यथावत् स्वरूप ज्ञान न होवै उस के ज्ञान के वास्ते कारण अर्थात् हेतु और प्रत्यचादि प्रमाणों की उपपत्ति अर्थात् यथावत् युक्ति से ऊह नाम वितर्क अर्थात् विविध विचार और युक्तिपूर्वक विविध वाक्य कहना विनय पूर्वक श्रेष्टों से उसको कहते हैं तर्क, सो इस का लेशमात्र सम्बन्ध भी ताराचरण जी में नहीं होने से तर्करत्न तो नाम अनर्थक है। किन्तु इनके कथन में थोड़े से दोष मैंने देखाये हैं। जैस। कि समुद्र के आगे एक बिन्दु। किन्तु उनके भाषण में केवल दोष ही हैं गुए एक भी नहीं। सो विद्वान् लोग विचार कर लेवें। वेई ये ताराचरएाजी हैं कि जब काशी नगर के परिडतों से आनन्द बाग में सभा भई थी उसमें बहुत विशुद्धानन्द स्वामी तथा बाल शास्त्री इत्यादिक परिंडत आये थे उनके सामने डेढ़ पहर तक एक बात में मौन करके बैठे रहे थे। दूसरी कात भी मुख से नहीं निकली थी। श्रीर जो उन का कुछ भी सामध्ये होता तो अन्य परिडत लोग क्यों शास्त्रार्थं कत्तें ! जब उनने "उपासनामात्रमेंव भ्रममूलम्" [कहा तब] उसी वक्त श्री भूदेव मुख्यज्यी आदिक श्रेष्ठ लोग चठ गये कि पण्डित आये तो प्रतिमा पूजन का स्थापन करने को, किन्तु वह अपना आप खरडन कर चुके। ये परिडत कुछ भी नहीं जानते हैं, ऐसा कह के उठ के चले गये। फिर अन्य पुरुषों से उन्होंने कहा कि परिडत हार गया।

स्वामी--श्रीमत्कथनेनैव प्रतिमापूजनविद्यातो जात एवेति शिष्टा विचारयन्तु । ताराचरण जी से मैंने कहा कि व्यापके कहने से ही प्रतिमा पूजन का विद्यात व्यर्थात् खण्डन हो गया धौर मैं तो खण्डन कर्ता ही हूँ ।

फिर पिंडित जी चुप होके अपर के स्थान में चले गये। उसके पीछे मैं भी अपर जाने को चला। तब पिंडित सीढ़ि में मिले। मैंने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा कि अपर आओ। फिर अपर जाके सब वृन्दाबनचन्द्रादिकों के सामने उन पिंडित ताराचरण से मैंने कहा कि आप ऐसा बखेड़ा क्यों करते फिरते हैं। तब वे बोले कि मैं तो काकभाषा का खरंडन करता हूं और सत्य शास्त्र पढ़ने तथा पढ़ाने का उपदेश भी करता हूं और पाषाणादिक मूर्ति पूजन भी मिध्या ही जानता हूं परन्तु मैं जो सत्य सत्य कहूं तो मेरी आजीविका नष्ट हो जाय तथा काशीराज महाराज जो मुनें तो मुक्त को निकाल बाहर कर देवें। इस्से मैं सत्य सत्य नहीं कह सकता हूं। जैसे कि आप सत्य सत्य कहते हैं। देखना चाहिए कि इस प्रकार के मनुष्यों से जगत् का उपकार तो कुछ नहीं बनता किन्तु अनुपकार ही सदा बनता है। बिना सत्य सत्य उपदेश के उपकार कभी नहीं हो सकता। इतना मेरे को अवकाश नहीं है कि मिध्यावादिपुरुषों के साथ सम्भाषण किया करै। जो जो मैंने लिखा है इस में इसी से सज्जन लोग जान लेवें।

# [ प्रतिमापूजन-विचार ]

इस के आगे जिन शब्दों के अर्थ के नहीं जानने से टीकाकारों को अम हो गया है तथा नवीन प्रन्थ बनाने वाले और कहने वाजे तथा सुनने वाले को भी अम होता है उन शब्दों का शास्त्र रीति तथा प्रमाण और युक्ति से जो ठीक ठीक अर्थ हैं उन्हों का प्रकाश संदोप से लिखा जाता है। प्रथम तो एक प्रतिमा शब्द है। प्रतिमीयते यया सा प्रतिमा अर्थात् प्रतिमानम्। जिस्से प्रमाण अर्थात् परिमाण किया जाय उस को कहना प्रतिमा, जैसे कि छटांक, आध पाव, पावसेर, सेर, पसेरी इत्यादिक और यज्ञ के चमसादिक पात्र, क्योंकि इन से पदार्थों के परिमाण किये जाते हैं। इस्से इन्हों का ही नाम है प्रतिमा। यही अर्थ मनु भगवान ने मनुस्मृति लिखा है—

## तुलामानं प्रतीमानं सर्वे च स्यात् सुलक्षितम् । षट्सु षट्सु च मासेषु पुनरेव परीक्षयेत्॥

पत्त पत्त में वा मास मास में अथवा छटवें २ मास तुला की राजा परीचा करें । क्यों कि तराजूं की दण्ढों में भीतर छिद्र कर के पारा उस में डाल देते हैं। जब कोई पदार्थ को तौल के लेने लगते हैं तब दंडी को पीछे नमा देते हैं। फिर पारा पीछे जाने से चीज अधिक आती है। और जब देने के समय में दण्डी आगे नमा देते हैं उस्से चीज थोड़ी जाती है। इस्से तुला की परीचा अवश्य करनी चाहिये तथा प्रतिमान अर्थात् प्रतिमा की भी परीचा अवश्य करे राजा, जिस्से कि अधिक न्यून प्रतिमा अर्थात् दुकान के बांट जितने हैं उन्हों का ही नाम है प्रतिमा, इसी वास्ते प्रतिमा के भेद कि अर्थात् घाट बाढ़ तौलने वाले के ऊपर दण्ड लिखा है—

१. यहां पर शास्त्रार्थ समाप्त हो जाता है। इससे आगे प्रतिमापूजन की विस्तत आलोचना है।

## ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र श्रौर विज्ञापन

### संक्रमध्वजयष्टीनां प्रतिमानां च भेद्कः । प्रतिकुर्याच तत्सर्वे पश्च द्द्याच्छतानि च ॥

यह मनु जी कां श्लोक है। इस का अभिप्राय है कि संक्रम अर्थात् रथ, उस रथ के ध्वजा की यिष्ट जिस के ऊपर ध्वजा बाँधी जाती है और प्रतिमा छटाँक आदिक बटखरे इन तीनों को तोड़ डालै वा अधिक न्यून कर देवे उन को उससे राजा बनवा लेवे और जैसा जिस का ऐश्वर्य उस के योग्य द्र्यंड करें। जो दिरद्र होवे तो उससे ५०० पाँच से पैसा राजा द्र्यंड लेवे। जो कुछ धनाट्य होवे तो ५०० से क्पैया उससे द्रयंड लेवे। और जो बहुत धनाट्य होवे उससे ५०० से अश्रिक्त द्रयंड लेवे रथादिकों को उससे के हाथ से बनवा लेवे। इससे सज्जन लोग बटखरा तथा चमसादिक यज्ञ के पात्र उन्हों को ही प्रतिमा शब्द से निश्चित जानें।

दूसरा पुराण शब्द है। पुराभवं पुराभवा वा पुराभवश्च इति पुराणं पुराणी पुराणः। जो पुराणा पदार्थ होवे उस को कहते हैं पुराण। सो सदा विशेषण वाची ही रहता है, तथा पुरातन प्राचीन और प्राक्तन आदिक शब्द सब हैं। तथा इनों के विरोधी विशेषण वाची नूतन नवीन अद्यतन अर्वाचीन आदिक शब्द हैं। जे विशेषण वाची शब्द होते हैं वे सब परस्पर व्यावर्तक होते हैं, जैसे कि यह चीज पुरानी है तथा यह चीज नवीन है। पुराण शब्द जो है सो नवीन शब्द की व्यावृत्ति कर देता है यह पदार्थ पुराना है अर्थात् नया नहीं और यह पदार्थ नया है अर्थात् पुराना नहीं। जहाँ जहाँ वेदादिकों में पुराणादिक शब्द आते हैं वहाँ वहाँ इन अर्थों के वाचक ही आते हैं अन्यथा नहीं। ऐसा ही अर्थ गौतम मुनि जी के किये सूत्रों के अपर जो वास्स्यायन मुनि का किया भाष्य उसमें लिखा है—

वहाँ ब्राह्मण पुस्तक जे शतपथादिक, उनों का ही नाम पुराण है। तथा शङ्कराचार्य जी ने भी शारीरक भाष्य में और उपनिषद्भाष्य में ब्राह्मण और ब्रह्मविद्या का ही पुराण शब्द से ब्रह्म किया है। जो देखा चाहै सो उन शास्त्रों में देख लेबे। वह इस प्रकार से कहा है कि जहाँ जहाँ प्रश्न ऋौर उत्तर पूर्वक कथा होवे उसका नाम इतिहास है और जहाँ जहाँ वंश कथा होवे ब्राह्मण पुस्तकों में, उस नाम पुराण है। श्रीर ऐसे जो कहते हैं कि १८ श्रठारह प्रन्थों का नाम पुराण है, यह बात तो श्रत्यन्त अयुक्त है। क्यों कि उस बात का वेदादिक सत्यशास्त्रों में प्रमाण कहीं नहीं है और कथा भी इनों में अयुक्त ही है। इनों का नाम कोई पुराएं रक्खें तो इनों से पूछना चाहिये कि वेद क्या नवीन हो सकते हैं ? सब प्रन्थों से वेद ही पुराने हैं। श्रीर यह बात कहते हैं कि श्रश्वमेध की जो पूर्ति हो जाय उसके १० में दिन पुराण की कथा यजमान सुनै। सो तो ठीक ठीक है कि ब्राह्मण पुस्तक की कथा सुनै। स्रोर जो ऐसा कहे कि ब्रह्मवैवर्तादिकों की क्यों नहीं सुनै, इससे पूछना चाहिये कि सत्ययुग त्रेता और द्वापर में जब जब अश्वमेध भये थे तब तब किस की कथा सुनी थी। क्योंकि उस वक्त व्यास जी का जन्म भी नहीं भया था। तब पुराण कहां थे। श्रीर जो ऐसा कहै कि व्यास जी युग युग में थे। यह बात भो उसकी मिथ्या है क्योंकि अब तक युधिष्ठिरादिकों का निशान दिल्ली आदिकों में देख पड़ता है। उसी वक्त व्यास जी और व्यास जी की माता आदिक वर्तमान थे। इस्से यह भी उसका कहना मिथ्या ही है। पुराण जितने हैं ब्रह्मवैवर्त्तादिक वे सब सम्प्रदायी लोगों ने ऋपने २ मतलब के वास्ते बना लिए हैं। व्यास जी का अन्य ऋषि मुनियों का किया एक भी पुराण नहीं है। क्योंकि वे बड़े विद्वान थे और धर्मात्मा । उनका वचन सत्य ही है । तथा छः दर्शनों में उनों के सत्य वचन देखने में आते हैं, मिध्या एक भी नहीं और पुराणों में मिध्या कथा तथा परस्पर विरोध ही है और जैसे वे सम्प्रदायी लोग हैं वैसे ही उनके बनाये पुराण भी सब नष्ट हैं। सो सज्जनों को ऐसा ही जानना उचित है अन्यथा नहीं।

तीसरा देवालय और चौथा देवपूजा शब्द है। देवालय, देवायतन, देवागार तथा देवमिन्दर इत्यादिक सब नाम यज्ञशालाओं के ही हैं क्योंकि जिस स्थान में देवपूजा होवे उसके नाम हैं देवालयादिक। और देव संज्ञा है परमेश्वर की, तथा परमेश्वर की आज्ञा जो वेद उसके मन्त्रों की भी देव संज्ञा है। देव जो होता है सोई देवता है। यह बात पूर्वमीमांसी शास्त्र में विस्तार से लिखी है। जिस को देखने की इच्छा हो वह उस शास्त्र में देख ले। विस्तार से लिखी है। जो कि शास्त्र कर्मकाएड के ऊपर है वे जैमिन मुन के किये सूत्र हैं। यहां तक उसमें लिखा है कि ब्रह्मा विष्णु महादेवादिक देव जे देवलोक में रहते हैं उनका भी पूजन कभी न करना चाहिए एक परमेश्वर के बिना। सो उस में इस प्रकार से निषेध किया है कि (यक्षेत्र यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ) यह यजुर्वेद की श्रुति है ब्रह्मादिक जे देव वे जब यज्ञ कर्चे हैं तब उनों से अन्य कौन देव हैं जे कि उन के यज्ञों में आके भाग लेवें। सो उनों से आगे कोई देव नहीं है। और जो कोई मानेगा तो उस के मत में अनवस्था दोष आवेगा। इस्से परमेश्वर और वेदों के मन्त्र उनों को ही देव और देवता मानना उचित है, अन्य कोई को नहीं। अग्निर्देवतेत्यादिक जो यजुर्वेद में लिखा है सो अग्नि आग्नि साना परमेश्वर के ही हैं क्योंकि देवता शब्द के विशेषण देने से, इसमें मनुस्मृति का प्रमाण है।

आत्मैव देवताः सर्वाः सर्वमात्मन्यवस्थितम् । आत्मा हि जनयत्येषां कर्मयोगं रारीरिणाम् ॥१॥ प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोरपि । रुक्मामं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम् ॥२॥ पतमित्रं वदन्त्येके मनुमेके प्रजापतिम् । इन्द्रमेकेऽपरे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम् ॥३॥

इन क्लोकों से आत्मा जो परमेश्वर उसी का देवता नाम है। और अग्न्यादिक जितने नाम हैं, वे भी परमेश्वर के ही हैं। परन्तु जहां जहां ऐसा प्रकरण हो कि उपासना स्तुति प्रार्थना तथा इस प्रकार के विशेषण वहां र परमेश्वर का ही प्रहण होता है अन्यत्र नहीं। िकन्तु सर्वमात्मन्यवस्थितम् सिवाय परमेश्वर के कोई में सब जगत् नहीं ठहर सक्ता और प्रशासितारं सर्वेषामित्यादिक विशेषणों से परमेश्वर का ही प्रहण होता है अन्य का नहीं। क्योंकि सब का शासन करने वाला बिना परमेश्वर से कोई नहीं। तथा सूक्ष्म से भी अत्यवन्त सूक्ष्म और पर पुरुष परमेश्वर से भिन्न ऐसा कोई नहीं हो सकता है। निरुक्त में भी यह तिखा है कि (यत्र देवतोच्यते तत्र तिछुड़ो मन्त्रः) जहां जहां देवता शब्द आवै तहां तहां उस नाम वाले मन्त्र को ही लेना। जैसे कि अग्निर्वेवता इसमें अग्नि शब्द आया सो जिस मन्त्र में अग्नि शब्द होवे उस मन्त्र का ही प्रहण करना। अग्निमीड पुरोहितमिति यह मन्त्र ही देवता है, अन्य कोई नहीं। इससे क्या आया कि परमेश्वर और वेदों के मन्त्र तो देव और देवता हैं। जिस स्थान में होम, परमेश्वर का विचार ध्यान और समाधि करें उसके नाम हैं देवालयादिक। इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है—

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बिलमीतो नृयज्ञोऽतिथिसेवनम् ॥१॥

88

स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीत् होमैर्देवात् यथाविधि। पितृत् श्राद्धैर्नृतन्त्रेर्भृतानि बलिकर्मणा ॥

इन ऋोकों से क्या आया कि होम जो है सोई देवपूजा है श्रन्य कोई नहीं। और होमस्थान जितने हैं वे ही देवालयादिक शब्दों से लिये जाते हैं। पूजा नाम सत्कार क्योंकि अतिथिपूजनम् होमैदेवानचेयेत् अतिथियों का पूजन नाम सत्कार करना तथा देव परमेश्वर और मन्त्र इन्हों का सत्कार इसका नाम है पूजा अन्य का नहीं। और पाषाणादि मूर्ति स्थान देवालयादिक शब्दों से कभी नहीं लेना । तथा घरटानादादि पूजाःशब्द से कभी नहीं लेना । देवल और देवलक शब्द का यह अर्थ है कि—

> यद्वित्तं यज्ञशीलानां देवस्वं तद्विदुर्वधाः। अयज्वनां तु यद्वित्तमासुरस्वं प्रचक्षते ॥१॥

यह मनु का स्रोक है। इसका यह अभिप्राय है कि जिन्हों का यज्ञ करने का शील अर्थात स्वभाव होवै उसका सब धन यज्ञ के वास्ते ही होता है अर्थात् देवार्थ धन है। (यद्देवं तदेव देवस्वम् ) अर्थात् होम के लिए जो धन होवै उसका नाम देवस्व है सो भिन्ना अथवा प्रतिप्रह करके यज्ञ के नाम से धन लेके यज्ञ तो करै नहीं और उस धन से अपना व्यवहार करै इसका नाम है देवल। सो इसकी शास्त्र में निन्दा लिखी है। देव पितृकार्य में उसको निमन्त्रण कभी न करना चाहिये। ऐसा उसका निषेध लिखा है। और जो यज्ञ के धन की चोरी कर्ता है वह होता है देवलक ( कुत्सितो देवलो देवलक: कुत्सिते इत्यनेन कन् प्रत्ययः ) देवलक तो अत्यन्त निन्दित है।

एक यह अन्धकार लोगों का देखना चाहिये कि विद्वान् भोजनीयः सत्कर्त्तव्यश्चेति विद्वान् को भोजन कराना चाहिये श्रौर उसका सत्कार भी करना चाहिये। इस्से कोई की ऐसी बुद्धि न होगी कि पाषाणादिक मूर्ति को भोजन कराना वा उसका सत्कार करना चाहिये। वह भी बात ऐसी ही है। एक बात वे लोग कहते हैं कि पाषाणादिक तो देव नहीं हैं, परन्तु भाव से वे देव हो जाते हैं। उनसे पूछना चाहिये कि भाव सत्य होता है वा मिथ्या। जो वे कहें कि भाव सत्य होता है फिर उन से पूछना चाहिए कि कोई भी मनुष्य दुःख का भाव नहीं कर्त्ता फिर उसको क्यों दुःख है श्रौर सुख का भाव सब मनुष्य सदा चाहते हैं फिर उनको सुख सदा क्यों नहीं होता। फिर वे कहते हैं कि यह बात तो कर्म से होती है। अच्छा तो आपका भाव कुछ भी नहीं ठहरा अर्थात् मिथ्या ही हुआ, सत्य नहीं हुआ। आप से मैं पूछता हूँ कि अग्नि में जल का भाव करके हाथ डाले तो क्या वह न जल जायगा किन्तु जल ही जायगा। इस्से क्या आया कि पाषाण को पाषाण ही मानना और देव का देव मानना चाहिये श्रन्यथा नहीं। इस्से जो जैसा पदार्थ है वैसा ही उसको सज्जन लोग मानै। काश्यादिक स्थान-गंगादिक तीर्थ, एकादशी आदिक व्रत, राम शिव कृष्णादिक नामस्मरण तथा तीवा शब्द वा यीसू के विश्वास से पापों का छूटना और मुक्ति का होना, तिलक छाप माला धारण तथा शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णव क्रिश्चन और महम्मदी और नान्हक कबीर आदिक सम्प्रदाय इन्हों से पाप सब छूट जाते हैं और मुक्ति भी होती है, यह अन्यथा बुद्धि ही है, क्योंकि इस प्रकार के सुनने और मिध्या निश्चय के होने से सब लोग पापों में प्रवृत्त हो जाते हैं, कोई न भी होगा, कभी कोई मनुष्य पाप करने में भय नहीं करते हैं जैसे-

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं काशीक्षेत्रे विनश्यति ।
काशीक्षेत्रे कृतं पापं पश्चक्रोश्यां विनश्यति ॥१॥
पश्चक्रोश्यां कृतं पापमन्तर्गृद्धां विनश्यति ।
अन्तर्गृद्धां कृतं पापमविमुक्ते विनश्यति ॥२॥
अविमुक्ते कृतं पापं स्मरणादेव नश्यति ।
काश्यां तु मरणान्मुक्तिनीत्र कार्या विचारणा ॥३॥

इत्यादिक क्लोक काशीखण्डादिकों में लिखे हैं। काइयां मरणान्मुक्तिः कोई पुरुष इसको श्रुति कहता है। सो यह वचन उसका मिण्या ही है, क्यों कि चारों वेदों के वीच में कहीं नहीं है। कोई ने मिण्या जावालोपनिषद् रच लिया है किन्तु अथवेदेद के संहिता में तथा कोई वेद के ब्राह्मण में इस प्रकार की श्रुति है नहीं। इससे यह श्रुति तो कभी हो नहीं सक्ती, किन्तु कोई ने मिण्या कल्पना करली है। जैसे कि अन्यक्षेत्रे कृतं पापं इत्यादि क्लोक मिण्या बना लिये हैं। इस प्रकार के क्लोकों को सुनने से मनुष्यों की बुद्धि श्रष्ट होने से सदा पाप में प्रवृत्त हो जाते हैं। इससे सब सज्जन लोगों को निश्चित जानना चाहिये कि जितने जितने इस प्रकार के माहात्म्य लिखे हैं वे सब मिण्या ही हैं। इनों से मनुष्यों का बड़ा अनुपकार होता है। जो कोई धर्मात्मा बुद्धिमान राजा होवे तो इन पुस्तकों का पठन पाठन सुनना सुनाना बन्द करदे और वेदादि सत्य शास्त्रों की यथावत् प्रवृत्ति करा देवै। तब इस उपद्रव की यथावत् शान्ति होने से सब मनुष्य शिष्ट हो जायें अन्यथा नहीं।

विषयवती वा प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसः स्थितिनिबन्धनी ॥ [ यो॰ समा॰ ३५ ]

इस सूत्र के भाष्य में लिखा है कि एतेन चन्द्रादित्यग्रहमणिप्रदीपरत्नादिषु प्रशृत्तिकत्पन्ना विषयवत्येव वेदितव्येति । इससे प्रतिमापूजन कभी नहीं आसक्ता क्यों कि इनों में देवबुद्धि करना नहीं लिखा । किन्तु जैसे वे जड़ हैं वैसे ही योगी लोग उनको जानते हैं और वाह्यमुख जो वृत्ति उसको भीतर मुख करने के वास्ते योगशास्त्र की प्रवृत्ति है । बाहर के पदार्थ का ध्यान करना योगी लोग को नहीं लिखा । क्यों कि जितने सावयव पदार्थ हैं उनमें कभी चित्त की स्थिरता नहीं होती । और जो होवै तो मूर्तिमान धन पुत्र दारादिक के ध्यान में सब संसार लगा ही है, परन्तु चित्त की स्थिरता कोई की भी नहीं होती । इस वास्ते यह सूत्र लिखा—

'विशोका वा ज्योतिष्मती [ यो॰ समा॰ ३६ ] इसका यह भाष्य है—

प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसः श्वितिनिबन्धनीत्यनुवर्तते । हृद्यपुण्डरीके धारयतो या बुद्धिसंवित् वृद्धिसत्त्वं हि भास्वरमाकाशकल्पन्तत्र श्वितिवैशारद्यात् प्रवृत्तिः सूर्येन्दुग्रहमणिप्रभाक्षपाकारेण विकल्पते । तथास्मितायां समापन्नं चित्तं निस्तरङ्गमहोद्धिकल्पं शान्तमनन्तमस्मितामात्रं भवति । यत्रेद्मुक्तम्—तमणुमात्रमात्मानमनुविद्यास्मीति एवं तावत् संप्रजानीत इति । एषा द्वयी विशोका विषयवती, अस्मितामात्रा च प्रवृत्तिज्योतिष्मतीत्युच्यते यया योगिनश्चित्तं श्वितिपदं स्वभत इति ।

इसमें देखना चाहिये कि हृदय में धारणा चित्त की लिखी। इससे निर्मल प्रकाशस्वरूप चित्त होता है। जैसा सूक्ष्म विभु आकाश है वैसी ही योगी की बुद्धि होती है। तत्र नाम अपने हृदय में विशाल स्थिति के होने से बुद्धि की जो शुद्ध प्रशृत्ति सोई बुद्धि सूर्य चन्द्र प्रह मणि इनों की जैसी प्रभा,

वैसे ही योगी की बुद्धि समाधि में होती है। तथा अस्मिता मात्रा अर्थात् यही मेरा स्वरूप है ऐसा साज्ञात्कार स्वरूप का ज्ञान बुद्धि को जब होता है, तब चित्त निस्तरङ्ग अर्थात् निष्कम्प समुद्र की नाई एक रस व्यापक होता है। तथा शान्त निरुपद्रव अनन्त अर्थात् जिसकी सीमा न होवे यही मेरा स्वरूप है अर्थात् मेरा आत्मा है सो विगत अर्थात् शोक रहित जो प्रवृत्ति वही विषयवती प्रवृत्ति कहाती है। उसी को अस्मितामात्र प्रवृत्ति कहते हैं। तथा ज्योतिष्मती भी उसी को कहते हैं। योगी का जो चित्त है सोई चन्द्रादित्य आदिक स्वरूप हो जाता है।

सू० स्वप्ननिद्राज्ञानालम्बनं वा ॥ [ यो॰ समा॰ ३८ ]

भाष्य— स्वप्नज्ञानालम्बनं निद्राज्ञानालम्बनं चा तदाकारं योगिनश्चित्तं स्थितिपदं लभत इति । जैसे स्वप्नावस्था में चित्त ज्ञानस्वरूप होके पूर्वानुभूत संस्कारों को यथावत् देखता है तथा निद्रा श्चर्यात् सुषुप्ति में श्चानन्दस्वरूप ज्ञानवान चित्त होता है ऐसा ही जागृतावस्था में जब योगी ध्यान कत्ती है, इस प्रकार श्चालम्ब से तब योगी का चित्त स्थिर हो जाता है।

स्० यथाभिमतध्यानाद्वा ॥ [ यो॰ समा॰ ३१ ]

भाष्य०—यदेवाभिमतं तदेव ध्यायेत् तत्र छब्धिश्विकमन्यत्रापि स्थितिपदं छभत इति । नासिकाग्रे धारयतो या गन्धसंवित् । इस्से लेके निद्राज्ञानालम्बनं वा यहां तक शरीर में जितने चित्त के स्थिर करने के वास्ते स्थान लिखे हैं इनों में से कोई स्थान में योगी चित्त को धारण करै । जिस स्थान में अपनी अभिमति उस में चित्त को ठहरावै ।

स्० देशवन्धश्चित्तस्य धारणा। [ योग० विभू० १ ]

भाष्य० — नाभिचके हृद्येपुण्डरीके मुधि ज्योतिषि नासिकां प्रे जिह्वा इत्येवमादिषु देवेषु बाह्य वा विषये चित्तस्य वृत्तिमात्रेण बन्धइति । बन्धो धारणा । नाभि हृद्य सूद्धी ज्योति अर्थात् नेत्र नासिकाम जिह्वाम इत्यादिक देशों के बीच में चित्त को योगी धारण करै तथा वाह्य विषय जैसा कि अोङ्कार वा गायत्री मन्त्र इनमें चित्त लगावे हृद्य से । क्योंकि तज्जपस्तद्र्थभावनम् । [ स॰ पाद २८ ] यह सूत्र है योग का । इसका योगी जप अर्थात् चित्त से पुनः पुनः आवृत्ति करै और इसका अर्थ जो ईश्वर उसको हृदय में विचारै ।

स्० तस्य वाचकः प्रणवः। सि॰ २७]

श्रोङ्कार का वाच्य ईश्वर है श्रोर उसका वाचक श्रोङ्कार है। बाह्य विषय से इनको ही लेना श्रीर कोई को नहीं। क्योंकि श्रन्य का प्रमाण कहीं नहीं।

स्॰ तत्र प्रत्ययेकतानता ध्यानम् [ योग॰ विभू० २ ]

भाष्य० — तस्मिन्देशे ध्येयालम्बनस्य प्रत्ययस्यैकतानता सहशः प्रवाहः प्रत्ययान्तेरणापरा-मृष्टो ध्यानम् ।

तिन देशों में अर्थात् नाभि आदिकों में ध्येय जो आत्मा उस आलम्बन की और चित्त की एकतानता अर्थात् परस्पर दोनों की एकता चित्त आत्मा से भिन्न न रहें तथा आत्मा चित्त से पृथक् न रहें उसका नाम है सदृशप्रवाह, जब चित्त प्रत्येकचेतन से ही युक्त रहे अन्य प्रत्यय कोई पदार्थान्तर का स्मरण न रहे तब जानना कि ध्यान ठीक हुआ।

स्० तदेवार्थमात्रनिर्भासं खरूपञ्चन्यिमव समाधि: [ यो॰ विभू० ३ ]
जय ध्याता,ध्यान श्रोर ध्येय इन तीनों का पृथक् भाव न रहै तव जानना कि समाधि सिद्ध होगई।
स्० त्रयमन्तरक पूर्वेभ्यः। [ यो॰ वि॰ ७ ]
यमादिक पाँच श्रक्षों से धारणा ध्यान श्रोर समाधि ये तीन श्रन्तरक हैं श्रोर यमादिक विहरक हैं।

सू० भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात् । [ विभू० २६ ]
चन्द्रे तारान्यूहज्ञानम् ॥२०॥
ध्रुवे तद्गतिज्ञानम् ॥२८॥
नाभिचके कायन्यूहज्ञानम् ॥२९॥
मूर्द्वज्योतिषि सिद्धदर्शनम् ॥३२॥
प्रातिभाद्वा सर्वम् ॥३३॥

इत्यादिक सूत्रों से यह प्रसिद्ध जाना जाता है कि धारणादिक तीन श्रङ्ग आभ्यन्तर के हैं सो हृदय में ही योगी परमाणु पर्यन्त [जितने] पदार्थ हैं उनको योग ज्ञान से जानता है। बाहर के पदार्थों से किंचिन्मात्र भी ध्यान में सम्बन्ध योगी नहीं रखता। किन्तु श्रात्मा से ही ध्यान का सम्बन्ध है और से नहीं। इस विषय में जो कोई श्रन्थथा कहै सो उसका कहना सब सज्जन लोग मिध्या ही जानें। क्योंकि—

सू० योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥ [ समा० २ ]

तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम् ॥ [समा०३]

जब योगी चित्तवृत्तियों को निरोध कर्त्ता है, बाहर और भीतर से उसी वक्त द्रष्टा जो आत्मा उस के चेतन खरूप में ही स्थित हो जाती है अन्यत्र नहीं।

सू० विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रुपप्रतिष्ठम ॥ [ समा॰ ८ ]

विपरीत ज्ञान जो होता है उसी को मिथ्या-ज्ञान कहते हैं। उसको तो योंगी छोड़ के ही होता है अन्यथा कभी नहीं। इस्से क्या आया कि कोई थोगशास्त्र से पाषाणादिक मूर्ति का पूजन कहें के सो मिथ्या ही कहता है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

श्रोक :--

दयाया आनन्दो विल्लसित परः स्नात्मविदितः
सरस्रत्यस्थान्ते निवसित मुदा सत्यवचना।
तदाख्यातिर्यस्य प्रकटितगुणा राष्ट्रिशरणा
स को दान्तः शान्तो विदितविदितो वैद्यविदितः ॥१॥
श्रीदयानन्दसरस्रतीस्रामिना विरचितमिदमिति विद्वेयम् ॥

१.हुगली शास्त्रार्थं तथा प्रतिमापूजन विचार का एक संचित रूप "शास्त्रार्थं हुगली" के नाम से य्यार्थदर्पण के निम्नलिखिन ग्रङ्कों में छपा है—फरवरी १८८०, पृ० ३५—४२ । मार्च १८८० पृ० ५०—५३ । जून १८८० पृ० १२५—१२७ । [ ग्रार्थदर्पण मासिक पत्र हिन्दी उर्दू दोनों लिपियों में मुंशी बख्तावरसिंह द्वारा शाहजहांपुर से प्रकाशित होता था। यु० मी०]

वृन्दावन, सन् १८७४

१८

[8]

पत्र-सारांश-(२)

[4]

[रङ्गाचार्य, बृन्दावन ] आप कहते हैं कि मूर्ति-पूजा, कराठी तिलक वेद से सिद्ध हैं, सो कृपया अब उन्हें सिद्ध करके दिखलाइये।

[१] पत्र-सारांशै-(३)

[8]

विशुद्धानन्द निकल गया। इस में जो सत्य सत्य कारण होय सो शीघ्र लिख भेजना। वृन्दावन सेठ जी के बाग में पूर्व निकट मल्कदास जी का बाग ठिकाना लिफाफा के ऊपर लिख दीजिए। इस को अनुमान से ज्ञात है कि युगल किशोर से पढ़ाया नहीं गया होगा। अथवा और कुछ कारण हुआ होगा। जो ऐसे ऐसे विद्यार्थी चले जायेंगे तो पढ़ाने वाले की त्रुटि गिनी जाएगी। इसका हाल शीघ्र लिखो। और कौन क्या क्या पढ़ता है सो भी लिखना, जो जैसा वर्तमान होय। संवत् १९३० वि

[चैत्र बदी ४ शनि संवत् १९३०]

[8]

पत्र (४)



स्वामी द्यानन्द की आशीष पहुँचे। आगे सुदी ७ का लिखा पत्र पहुँचा समाचार भी विदित हुआ। यहाँ एक मास तक तो हमारी स्थिति होगी। सो जानना। यहाँ की पाठशालों का प्रबन्ध बहुत अच्छा है। एक छ: शास्त्रों का पढ़ाने वाला बहुत उत्तम अध्यापक रक्खा गया है। वैसा ही एक वैयाकरण स्थापन किया गया है। दशाश्वमेध पर स्थान लिया गया है, बहुत उत्तम। इसमें पाठशाला पूर्णमासी के पीछे बैठेगी। केदारघाट का स्थान अच्छा नहीं था। इससे अब हमारे पास बाग में

- १. यह पत्र फाल्गुन ग्रु० ११ सं० १९३० (२६ फरवरी सन् १८७४) के एक दो दिन पश्चात् लिखा गया होगा। इसी तिथि को स्वामी जी महाराज वृन्दावन पधारे थे। उपर्युक्त पत्रसारांश पं० देवेन्द्रनाथ सङ्कलित जी ०च० पृष्ठ २६१ पर उद्धृत है। यु० मी०।
- २: नहीं कह सकते कि यह पत्र किस को लिखा गया था, ग्रौर मूल संस्कृत में था श्रथवा ग्रार्थभाषा में। जीवनचरित से इतना निश्चित होता है कि पत्र में कासगंज जिला ऐटा की पाठशाला का उल्लेख है। ग्रतः वहीं के किसी ग्रधिकारी को लिखा गया होगा।
- ३. पं० लेखराम कृत जीवन चिरत पृ० ७८४ पर उद्घृत। इसके सम्बन्ध में पत्र से पहले पं० लेखराम जी ने लिखा है—"इस णठशाला के सम्बन्ध में स्वामीजी की ७ मार्च १८७४ की चिट्ठी वृन्दावन से लिखी हुई थी । उसका संज्ञिम ग्रामिप्राय नीचे हैं।" इति ।
- ४. सर्थू प्रसाद बनिया का बाग। देखो पं० लेखराम कृत जीवन चरित पू० ७८७ साधु ज्वाहरदास जी का कथन।

यह पत्र कानपुर निवासी बाबू शिवसहाय गौड़ ब्राह्मण् को लिखा गया था। यह व्यक्ति श्री स्वामी जी

काशी, प्रयाग, सं० १९३१ ]

विज्ञापनपत्रम् (४)

पाठशाला है। अच्छे २ विद्यार्थी भी पढ़ते हैं। सो जानना। आगे तुम पत्र देखते ही रुपया और पुस्तक जल्दी भेजदो। विलम्ब च्रण मात्र भी मत करना। और दिनेशराम को एक महाभाष्य पुस्तक देकर और सब पुस्तक यहाँ भेजदो। और जो दिनेशराम न दे तो फिर देखा जायगा। तुम अपने पास के पुस्तक और रुपया यह हुएडी कराके शीघ्र भेजदो। आगे गोपाल वा अन्य को पढ़ने की इच्छा होवे सो चला आवे। ब्रह्मचारी लक्ष्मीनारायण यहाँ अब तक नहीं आया। और न कोई तुम्हारा पुत्र । किन्तु पत्र आया इस का यह उत्तर जानना। और सब यहाँ आनन्द मङ्गल है। और पं० युगलकिशोर मेहता गोपालदत्त और दिनेशराम आदि को भी हमारा प्रत्यभिवादन कह देना।

संवत् १९३१ मिति ज्येष्ठ सुदी १३ शुक्रवार । [२९ मई १८७४ काशी ]

[3]

# [विज्ञापन सारांश]



जो कोई मुक्त से किसी धर्मसम्बन्धी विषय पर शास्त्रार्थ करना चाहे वह, नियत समय पर मेरे स्थल पर आकर कर सकता है।

[8]

# विज्ञापन पत्रै



एक समाचार सबको विदित हो कि आप का आर्थ्य-विद्यालय काशी में संवत् १९३० पौष मास तदनुसार दिसम्बर सन् १८७३ में केदार घाट पर जिसका आरम्भ हुआ था वही अब मित्रपुर भैरवी मुहल्ला, मिश्र दुर्गाप्रसाद के स्थान में संवत् १९३१ मिति आषाद सुदी ५ शुक्रवार १९ जून सन् १८७४ प्रात:काल ७ बजे से उपरान्त आरम्भ होगा। इसका प्रथन्ध अब अच्छे प्रकार होगा। प्रातः सात बजे से पठन और पाठन होगा दस ग्यारह तक और फिर एक बजे से पाँच बजे तक। इसमें अध्यापक गर्गेश श्रोत्रियजी रहेंगे। सो पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, पातक्षल, सांख्य, वेदान्त दर्शन, ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुरुडक, मारुड्डक्य, तैतिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारय्यक दश उपनिषद्,

का प्रमाण पत्र ले कर काशी की पाठशाला के लिए भिन्न २ नगरों में धन एकत्र कर रहा था। जब वह फर्वखाबाद में था, तब उसे यह पत्र लिखा गया। देखो पं॰ लेखराम कृत जीवनचरित पृ॰ ७८७।

संवत् १६३६ तदनुसार सन् १८८० में यही श्री शिवसहाय मिश्र जी ग्रार्थसमाज कानपुर के मन्त्री ये।

देखो भारत सुदशा प्रवर्तक मार्च १८८० पृ० ८।

१. विज्ञापन का उक्त सारांश पं० देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृ० २७६, पर उद्घृत है । यह विज्ञापन त्र्यापाढ़ वदी २ सं० १६३१ (१ जुलाई सन् १८७४) की प्रयाग पहुँचने के दो तीन दिन पश्चात् बांटा गया था। यु०मी०।

२. किववचन सुधा (हिन्दी मासिक पित्रका काशी) ग्राषाद सुदी ६ शिन संवत् १६३१ तदनुसार २० जून १८७४ में प्रथम मुद्रित हुग्रा। वहां से विहारबन्धु भाग २ ग्रङ्क २१ ग्राषाद सुदी १४ संवत् १६३१ तदनुसार २८ जून १८७४ में छुपा। बिहारबन्धु से पं० लेखराम जी ने लिया। जीवन चिरत पृ० ७८८, ७८६। पं० लेखराम कृत जीवन चिरत में ग्रंग्रेज़ी तिथि के देने में जो ग्रशुब्दि हुई है, वह हमने दूर कर दी है। पं० घासी रामकृत जीवन चिरत पृ० २७५ पर भी तिथि की थोड़ी सी ग्रशुब्दि रही है, पाठक उसे ठीक करलें। मनुस्मृति, कात्यायन और पारस्कर कृत गृह्यसूत्र, इनको पढ़ाया जायगा। थोड़े समय के पीछे चार वेद, चार उपवेद तथा ज्योतिष के प्रन्थ भी पढ़ाये जायें गे और एक उपवेयाकरण रहेगा। वह अष्टाध्यायी, धानुपाठगण आदिगण्, शिचा और प्रातिपदिक गण्पाठ यह पाँच पाणिनि मुनिकृत और पतछलि मुनिकृत भाष्य, पिङ्गलमुनिकृत छन्दोप्रन्थ, यास्कमुनिकृत निकृक्त, निघए दु और काव्यालङ्कार सूत्रभाष्य इन सब को पढ़ना होगा। जिनको पढ़ने की इच्छा होवे सो आकर पढ़ें। जो विद्या और श्रेष्टाचार की परीचा में उत्तम होगा उसकी परीचा के पीछे पारितोषिक यथायोग्य मिलेगा। सो परीचा मास मास में होगी। इसमें ब्राह्मण्, चित्रय और वैश्य सब पढ़ेंगे वेद पर्यन्त। और शूद्ध मन्त्र भाग को छोड़के सब शास्त्र पढ़ेंगे। फिर जब जब इस आर्य विद्यालय के लिए अधिकाधिक चन्दा होगा, तब तब अध्यापक और विद्यार्थी लोगों को भी बढ़ाया जायगा। इस की रचा और वृद्धि के लिए एक आर्यसभा स्थापित हुई है और एक आर्य-प्रकाश पत्र भी निकलेगा मास मास में। इन तीनों बातों की प्रवृत्ति के लिए बहुत भद्र लोग प्रवृत्त हुए हैं और बहुत प्रवृत्त होंगे। इससे ही आर्यावर्त्त देश की उन्नति होगी। इस विद्यालय में यथावत् शिचा दी जावेगी, जिससे कि सब उत्तम व्यवहार युक्त होवें।

इस्ताक्षर खामी दयानन्द सरखती

[4]

# [ विज्ञापनं ]

[60]

इस्से यह मेरा विज्ञापन<sup>7</sup> है आर्थावर्त्त देश का राजा इंगरेज बहादुर से कि संस्कृत विद्या की ऋषि मुनियों की रीति से प्रवृत्ति कराये। इस्से राजा और प्रजा को अनन्त सुख लाभ होगा। और जितने आर्थावर्त्त वासी सज्जन लोग हैं उनसे भी मेरा यह कहना है कि इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें ऋषि मुनियों की रीति से तो अत्यन्त आनन्द होगा। और जो यह संस्कृतिवद्या लोप हो जायगो तो सब मनुदयों की बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं।

[ सत्यार्थ प्रकाश की इस इस्तलिखित प्रति के त्रिशेष परिचंय के लिए देखो वेदवाणी वर्ष ३ ग्रंक ६ में [पृष्ठ १८-२१] श्री पं॰ मामराज जी का ''प्रथमसत्यार्थ प्रकाश के हस्तलेख का परिचय'' शोर्षक लेख तथा पं॰ युधिश्विरजी मोमांसक कृत ''ऋषि दयांनन्द के प्रन्थों का इतिहास'', परिशिष्ट ४ (पृष्ठ ७१-७४)। यु॰ मी॰ ]।

१. यहां मूल विज्ञापन में कदाचित् 'उणादिगण्' शब्द के स्थान में 'श्रादिगण्' छपा है। देखो उपदेशमझरी १० वां व्याख्यान पाणिनि मुनि कृत प्रन्थ वर्णन—'इन महामुनि ने पांच पुस्तकें वनाई हैं—
१ शिच्चा २ उणादिगण्, ३ धातुपाठ, ४ प्रातिपदिक गण् ५ श्रष्टाध्यायी।' पूर्ण संख्या १३ के पत्र में भी 'पाणिनि मुनि रचित उणादिगण् सूत्र' शब्द का व्यवहार हुन्ना है। उपर्युक्त विज्ञापन तथा उपदेशमझरी में लिङ्गानुशासन का नाम छूटा है। संस्कारविधिस्थ वेदारम्भान्तर्गत पठनपाठन विधि में पाणिनि मुनि कृत प्रन्थों में लिङ्गानुशासन की भी गण्ना की है। यु० मी०।

२. राजा जयकृष्णदास जी ने सत्यार्थप्रकाश का पहला संस्करण मुद्रित कराया था। यद्यपि श्री खामी जी ने १४ समुद्धास ही जिखनाए थे, तथापि छपे केवल १२ समुद्धास ही थे। उपर्युवत लेख हस्तालिखित प्रति के चौदहवें समुल्लास के ब्रान्त में (पृष्ठ ४८५, ४८६, ४६३-४९५ तक ) हैं।

मैंने अपने घर में क़छ वेद का पाठ और विद्या भी पढी। फिर नर्भदा तट में दर्शन शास्त्रों को पड़ा। फिर मथुरा में श्री स्वामी विरजानन्द सरस्वती दण्डी जी से पूर्ण व्याकरणादिक विद्याभ्यास किया जो कि वड़े विद्वान् थे। उनके पास रह के सव शंका समाधान किये। फिर मथुरा से आगरा नगर में दो वर्ष तक स्थिति किई। वहां ऋषि मुनियों के सनातन पुस्तक और नवीन पुस्तक भी बहुत मिले। उनको विचारा। फिर ग्वालेर में स्थिति किई। वहां भी जो २ पुस्तक मिला उनका विचार किया। ऐसे ही देश देशान्तर में भ्रमण किया। जहां २ जो २ पुस्तक मिला उनका विचार किया। जहां २ मुक को शंका रह जाती थी उनका स्वामी जी से उत्तर यथावत पाया। फिर पुस्तकों को देख के एकान्त में जाके विचार किया। अपने हृदय में शंका और समाधान किये। सो यह ठीक २ निश्चय हृदय में भया कि वेद श्रौर सनातन ऋषि मुनियों के शास्त्र सत्य हैं। क्योंकि—इन में कोई असंभव वा अयुक्त कथा नहीं है। जो कुछ है उन शास्त्रों में सो सत्य पदार्थ विद्या और सब मनुष्यों के वास्ते हितोपदेश हैं। श्रौर इनके पढ़ने से विना मनुष्य को सत्य २ ज्ञान कभी न होगा। इस्से इनको श्रवश्य सब मनुष्यों को पढ़ना चाहिये। श्रीर जिनको दूर छोड़ने कहा कि न इन को पढ़ें न पढ़ावें न इनको देखे, क्योंकि इनको देखने से वा सुनने से मनुष्य की बुद्धि विगड़ जाती है। इस्से इन प्रन्थों को संसार में रहने भी न दें तो बहुत उपकार होय। सब मनुष्यों को यह व्यवहार करना उचित है कि पहर रात्रि रहे तब उठे। उठ के शौचादि किया करे। फिर कुछ भ्रमण शुद्ध देश में करे। जहाँ २ शुद्ध वायु हो एकान्त में जाके गायत्री मन्त्रादिकों के अर्थ से परमेश्वर की स्तृति करे। फिर प्रार्थना करे कि "हे परमेश्वर आप की कृपा से हम पवित्र होके श्रीर धर्म में तथा अच्छे गुए प्रहिशों में तत्पर होवें। परन्तु श्रापकी कृपा से ही जो अच्छा होता है सो होता है। सो आप ऐसी सब जीवों पर कपा की जिये कि सब जीव आपकी आजा सद्गुण प्रहण और आपके स्वरूप में ही विश्वासादि गुण युक्त होके स्थिर होतें। फिर उपासना कि-सब इन्द्रिय प्राण और जीवात्मा को एकत्र स्थिर करके परमेश्वर में स्थिर समाधिस्थ होके अनन्त जो परमेश्वर का त्रानन्द उसमें मन्न हो जाय। फिर चिरकाल ऐसे परमेश्वर का ध्यान िकरें।]

परन्तु आर्यावर्त्त देश पर मुक्त को बहुत पश्चाताप है क्यों कि इस देश में प्रथम बहुत मुखों और विद्याओं की उन्नति थी। बहुत ऋषि मुनि बड़े २ विद्वान इस देश में भये थे जिन के अच्छे २ काम और अच्छे२ विद्यापुरतक अब तक चले आते हैं। अच्छे २ राजधर्म के चलाने वाले राजा भी हुए हैं जिनों ने कभी पच्चपात कोई का नहीं किया है किन्तु सदा धर्म न्याय में ही प्रवृत्त भये हैं। सो देश इस वक्त ऐसा बिगड़ा है कि इतना बिगाड़ कोई देश में नहीं देखने में आता है। सो हमारी प्रार्थना सब आर्यावर्त्त वासी राजा और प्रजा से है कि उक्त बुरे कामों को छोड़ के अच्छे कामों में प्रवृत्त होवें। और जो कोई अन्य देशीय राजा आर्यावर्त्त में है उससे भी मेरी प्रार्थना यह है कि इस देश में सनातन ऋषि मुनियों के किये उक्त प्रनथ और ऋषि मुनियों की गई वेदों की व्याख्या उसी रीति से वेदों का यथावत् अर्थ ज्ञान और उनमें उक्त जे व्यवहारों के नियम उनकी प्रवृत्ति यथावत् करावे। इसी से ही यह देश सुधरेगा अन्यथा नहीं। और भी यह है सत्य विद्या और सत्य व्यवहार सब देशों में प्रवृत्त होना चाहिये। परन्तु आर्यावर्त्त देश की स्वाभाविक सनातन विद्या संस्कृत ही है जो कि उक्त प्रकार से प्रथम कही, उसी से इस देश का कल्याण होगा, अन्य देश भाषा से नहीं। अन्य देश भाषा तो जितना

प्रयोजन, उतनी ही पढ़नी चाहिये। और विद्या स्थान में संस्कृत ही रखना चाहिए । राजा का मुर्खे होना तो बहुत बुरा है परन्तु प्रजा का भी मूर्ख रहना बुरा है। िकन्तु मूर्खों के उत्पर राज्य करने से राजा की शोभा नहीं। िकन्तु प्रजा को विद्या युक्त धर्मात्मा और चतुर करके उन पर राज्य करने में राजा की शोभा जोर सुखों की उन्नति होती है। ऐसा कानून राजा और प्रजा को चलाना और मानना चाहिये जिस्से द्युत चोरी परस्रीगमन और मिध्या साची और बाल्या स्था में विवाह और विद्या का लोप न होने पाने। िकर राजा और प्रजा उस कानून को धर्म माने और उस पर ही सब चलें। परन्तु ऐसा वह कानूनन होय जिस्से लोक और परलोक दोनों शुद्ध होनें। वह कानून धर्म से कुछ भी विरुद्ध न होने क्योंकि धर्म नाम है न्याय का और न्याय नाम है पच्चात का छोड़ना उनका ज्ञान सब मनुष्यों को यथावत होना चाहिये। धर्म का रचक विद्या ही है क्योंकि विद्या से ही धर्म परमेश्वर से अत्यन्त प्रार्थना कर्ता हूँ कि हे परमेश्वर हे सचिदानन्द अनन्त स्वरूप हे नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तत्वभाव हे न्यायकारिन हे सर्वशक्तमन हे अज हे अमृत हे अन्तर्यामिन हे सर्वजगदुत्पादक हे सर्वजगद्धारक हे करुणानिधे! सब जगत् के उपर ऐसी कुपा करें जिस्से कि सम्पूर्ण विद्या का लाभ वेदादिक सत्य शास्त्रों का ऋषि मुनियों की रीति से होगा। परन्तु सर्वत्र धर्म व्यवहार में परमेश्वर की प्रार्थना सब को करनी उच्चत है। इसी से सब उत्तम ला[भ] मनुष्यों को होते है।

श्रो३म शन्नो मित्रः रां वरुणः रान्नो भवत्वर्यमा। राज्ञ इन्द्रो वृहस्पतिः रान्नो विष्णुरुक्तिमः॥
नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् ॥ ऋतमवादिषं
सत्यमवादिषं तन्मामावीत्तद्वकारमावीदावीन् मामावीद् वकारम्॥ ओम् राान्तिः राान्तिः ।

इति श्रीमद्द्यानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकारो सुभाषाविर चिते चतुर्दशस्समुल्लासस्सम्पूर्णः ॥१४॥ र

#### -8:0\*\*

१. प्रथम संस्करण के सत्यार्थप्रकाश के लिए जो प्रेंस कापी लिखी गई थी, उस में १३ वां समुछास कुरानमत समीचा का था ख्रीर १४वां समुछास ईसाई मत ख्रथवा ''गौरगडमत'' समीचा का था। ईसाई मत समीचा के ख्रन्त में यह उपर्युक्त विज्ञापन था। उसका कुछ ख्रत्यन्त उपयोगी ख्रंश हम ने यहां छाप दिया है।

कुरान मत सभी ज्ञा श्रीर बाईबल समी ज्ञा दोनों लिखी जा चुकी थीं, इस का उछिख पूर्ण संख्या ११ (पृष्ठ २४) में देखिये। वह पत्र २३ जनवरी सन् १८७५ का है।

तेरहवें समुह्शास ग्रर्थात् कुरान मत समीज्ञा के सम्बन्ध में श्री स्वामी जी का लिखवाया हुग्रा निम्नलि-खित विवरण है। इसे ग्रत्युपयोगी ग्रौर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुमूल्य समक्त कर ग्रागे देते हैं —

"जितना इसने लिखा इस का यथावत सजन लोग विचार करें, पत्त्पात छोड़ के तो जैसा हमने लिखा वैसा ही उन को निश्चय होगा। यह कुरान के विषय में जो लिखा गया है सो पटना शहर टिकाना गुड़ हुटा में रहने वाले मुन्शी मनोहर लाल जी जो अरबी में भी परिडत हैं उनके सहाय से और निश्चय करके कुरान के विषय में इसने लिखा है।" इति।

२. यह सारा लेख संवत् १६३१ के मध्य ग्रथश सितम्बर १८७४ में लिखाया गया।

प्रयाग, सं० १९३१]

पत्र (५-६)

२३

[3]

पत्र (५) वलदेवसिंह शर्मा [88]

श्राजकल द्यानन्द स्वामी यहां पर टहरे हैं। उनको तुम्हारी बड़ी जरूरत है श्रीर तुम्हारे बिना इनको बहुत क्लेश है। इसलिये स्वामी जी की श्राज्ञानुसार तथा राजा साहब की सम्मित से तुमको लिखा जाता है कि तुम इस पत्र को देखते ही जल्द चले श्राश्रो। श्रीर कुछ विलम्ब मत करो। क्योंकि स्वामी जी दो चार दिनमें दिच्या में जायेंगे।

ता० २६ सितम्बर सन् १८७४ असूज बदी १ शनिवार सम्बत् १९३१ वि०।

ज्वाला प्रसाद (प्रयाग)<sup>1</sup>

[8]

पत्र [६]

[१२]

स्वस्तिश्रीमच्छेष्ठोपमायोग्य लाला हरिवंश लाल आदि को द्यानन्द सरस्वती स्वामी की आशिष पहुंचे। या आगे मंडनराम पण्डित और बलरेवदत्त स्वामी जी के शिष्य का आशीर्वाद यथोचित पहुंचे। यहां कुशल आनन्द है। आप लोगों का कुशल आनन्द चाहिये। आगे पौष बदि प्र सम्वत् १९३१ (२८ दिसम्बर सन् १८०४) को अहमदाबाद से राजकोट काठियावाइ में गये। वहाँ दस बारह वक्तृत्व थये। लोग सुन के बड़े प्रसन्न भये। राजकोट में एक राजकुमार पाठशाला है। सो इस में राजकुमार लोग पढ़ने हैं। कई राजकुमार वक्तृत्व में आते रहे। सुन के बहुत प्रसन्न भये। एक दिन मास्टर लोग स्वामी जी को राजकुमार पाठशाला में ले गये। स्वामी जी ने वहाँ भी वक्तृत्व किया। राजकुमार लोग सब बहुत प्रसन्न भये। फिर स्वामी जी ने राजकुमार लोगों को बहुत शिक्षा की। फिर राजकुमार पाठशाला के प्रिन्सिपल साहब ने स्वामी जी से कई बातें पूछीं। स्वामी जी ने सब का उत्तर दिया। साहव भी बहुत प्रसन्न हुए। स्वामी जी को दो जिल्द ऋग्वेद के पुस्तक नजर किये।

पौष सुदि ११ संवत् १९३१ सोमवार (१८ जनवरी १८०५) को राजकोट से श्रहमदाबाद को चले। पूर्णमासी बृहस्पतिवार (२१ जनवरी सन् १८०५) को श्रहमदाबाद में आये। पांच सात दिन रहेंगे। फिर मुम्बई की तरफ जायेंगे। बृड़ोदा में नहीं जायेंगे। बड़ोदा में गड़बड़ मची है। श्रांग्रेज लोग फीज लेके चढ़ गये, राजा को कैंद कर लिया। राजा के ऊपरविष का फरेब लगा के ।

श्रागे सत्यार्थ-प्रकाश कितने श्रध्याय तक छपा ? जितना छपा हो तितना राजा जयकृष्णदास के पास भेज दो। जल्दी छापो, यहां बहुत से लोग लेने को कहते हैं। इसके विना बहुत हरकत है श्रीर

१. श्री ज्वालाप्रसाद जी राजा जयकृष्णदास जी के पुत्र थे। श्री स्वामी जी की श्राज्ञा से ही यह पत्र लिखा गया था। पत्र किस स्थान को लिखा गया, यह ज्ञात नहीं हो सका।

२. पं॰ लेखराम कृत जीवनचरित पृ॰ २२३ से लिया गया।

३. इस समय कर्नल फेन्नर बड़ोदा में रेजिडेएट था। इसी को विष देने का दोष महाराजा बड़ोदा पर लगाया गया था। इस समय भारत का गवर्नर लार्ड नार्थ ब्रुक था यु० मी०।

४. इस समय सत्यार्थप्रकाश (प्रथमावृत्ति) हरिवंशलाल बनारस के स्टार प्रेस में छप रहा था। यु॰मी०।

शिचा की पुस्तक छपी कि नहीं। अगो शुभ हो।

संवत् १९३१ मिति माघ वदि २ शनिवार (२३ जनवरी सन् १८७५)

आगे मुरादाबाद में कुरान के खरडन का अध्याय शोधन के वास्ते गया रहा। सो शोध के आप के पास आया कि नहीं ? जो ना आया हो तो राजा जयकृष्णदास जी को खत लिखो। जल्दी छापने के वास्ते भेज देवें, और वायिवल का अध्याय सब शोध करके छाप [दो,] दो महीने में छापने के वास्ते जो आपने लिखा है। सो दो महीने में सब पुस्तक छाप दो। शुद्ध करके, अशुद्ध न होने पाये। और पाठशाला की व्यवस्था आप लोगों के ऊपर है ? जैसे चल वैसे चलाये जाओ। हम लोग और स्वामी जी अति प्रसन्न हैं। स्वामी जी का आशीर्वाद सब लोगों से कह देना। जवाब इस पता से लिखना।

मुम्बई में ठिकाना बालकेश्वर के समीप ठाकुर श्रीनारायण जी के नाम से भेज देना ।

हम को मिल जाएगा ।

[8]3

पत्र (७) श्रीरस्तु [83]

स्वित श्रीमच्छेष्टोपमायुक्तेभ्यो गोपालरावहरिदेशमुखाभिधेभ्यो द्यानन्दसरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयामुस्तमाय । शिमहास्ति तन्नाप्यस्तुतमाय । श्राशे भाषया वृत्तम् । श्रागे श्रापने जो द्वाइत श्रीर छतरी भेजा सो हमारे पास श्रागई । श्रीर प्रार्थना समाज में जो गान की घोपड़ी है सो हमारे पास नहीं श्राई । श्रागे यहां वक्तृत्व भी होने वाला है । वक्तृत्व के वास्ते स्थान भी बन रहा है । श्रीर श्रार्थ्यसमाज का भी प्रयत्न श्रच्छा हो रहा है । श्राप श्रहमदाबाद में श्रार्थ्यसमाज का ढील न करें । उसका यत्न किहीं रहें । श्रीर श्रापके पुत्र के हाथ ४ पुस्तक सत्यार्थ-प्रकाश के १२०० पृष्ठ तक छप गये हें सो श्राप के पास भेजे हैं । पहुँचे कि नहीं । १ श्रापके वास्ते । १ भोलानाथ जी के वास्ते । १ महीपितराम जी के वास्ते । १ वेचरभाई के वास्ते । जो न पहुँचे हींय तो पत्र भेज के मंगा लीजिये । श्रव तक श्राप लोगों ने श्रार्थसमाज का प्रारम्भ किया [वा] नहीं । जो न किया होय तो जल्दी करें । श्रीर श्रच्छे काम में देर नहीं लगाना चाहिये । श्रीर देखिये कि श्रार्थसमाज नाम रखने से उस पर किसी प्रकार का दोष नहीं श्राता । क्योंकि उस में ईश्वर की स्तुति प्रार्थना एपासना श्रीर सब उत्तम व्यवहार करने में श्रावेंगे । सो श्रार्थ्य नाम श्रेष्ठ का जो समाज । श्रीर प्रार्थना समाज नाम रखने से श्रनेक दोष श्राते हैं । प्रार्थना क्रिया, उसका समाज क्या होगा । तथा स्तुति उपासना श्रीर सदुपदेशादि व्यवहार

१. शिचापत्री संवत् १६३१ सहस्य = पौषं मास वद्य ११, (३ जनवरी १८७५) रविवार को समाप्त हुई।

२. यह पत्र पं॰ लेखराम कृत उर्दू जीवन चिरत पृ॰ २३६।२३४ से देवनागरी में प्रतिलिपि किया गया है। मूल पत्र पं॰ लेखराम जी के संग्रह से नष्ट हो गया प्रतीत होता है। उर्दू प्रतिलिपि में दो चार शब्द ही बदले गए हैं, शेष पत्र मूलवत् ही है। [ यह पत्र ब्राहमदाबाद से भेजा गया था।]

३. गोपालराव हरिदेशमुख जज ब्रह्मदाबादके नाम लिखे गए १—६ पत्रों की प्रतिलिपि श्री मामराज जी मेरठ निवासी पं वासी राम एम. ए. के पास से ब्रवटूबर सन् २६ में लाए थे। पं वजी के पास ये प्रतिलिपियां ऋषि भवत श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के संग्रह में ब्राई थीं।

४. गुजराती भाषा में चोपड़ी शब्द पुस्तक का वाचक है।

प्रयाग, सं० १९३१ ]

पत्र (८)

२५

भी किये जाते हैं सो नामार्थ से विरुद्ध होता है। इस्से हम लोग कूँ नाम ऐसा रखना चाहिये कि जिस्से दोष न आवै। सो आर्यसमाज ही नाम रखना उचित है। प्रार्थनासमाजादि नहीं। सो आर्यसमाज प्रारम्भ होने का विलम्ब करना उचित नहीं। जल्दी करना चाहिए। इसीसे सब का हित होगा, अन्यथा नहीं। आप कुछ फिकिर न करें। यहां निषेकादि अन्त्येष्टी पर्यंत संस्कार की चोपड़ी बनाने की तयारी हो रही है। और स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने के वास्ते वेदमंत्रों से चोपड़ी बनने की तयारी है'। और नियमों की भी और संध्या भाष्य की पुस्तक छप के तय्यार होने चहे है। दो चार दिन में तयार हो जायगा। सो आपके वास्ते भेज देवेंगे। मण्डनरांच बलदेवदत्त का नमस्कार यथोचित पहुँचे। आगे वेदविरुद्धमतखण्डन की पुस्तक जितनी मंगानी होय उत्तनी मंगा लीजिये। फिर नहीं मिलैगी। और सत्यार्थप्रकाश का भाग अभी एक २ रुपये मिलता है। सो जितना मंगाना होय मंगा लीजिये। और वहां का हाल सब लिखना। गान की चोपड़ी हमारे पास भेज दीजियेगा। इस पत्र का प्रत्युत्तर जलदी भेज दीजियेगा।

सं० १९३१ मिति फाल्गुन वदा २ इंदुवार<sup>3</sup>।

[2]

पत्र (८)

[88]

### श्रीरस्तु

स्वस्ति श्रीमच्छे छोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालरावहरिदेशमुखाभिधंभ्यो द्यानन्द्सरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयामुस्तमाम् । श्रीमहास्ति तत्राप्यम्तुतमाम् । श्रागे पत्र श्रापका श्राया । समाचार सब मालूम भया । गान श्रादि पुस्तक ४, छाता १, दवात १, सब हमारे पास पहुंच गये । श्रागे मुम्बई में कोट के मैदान में सद्गृहस्थ लोगों ने मण्डप रचा है । उसमें एकान्तरे वक्तृत्व प्रश्नोत्तर की सभा होती है । मुंबई के पण्डित लोगों ने कहा कि स्वामी जी को व्याकरण में श्रव्हा श्रभ्यास नहीं है । इस बात को सुनके एक दिन व्याकरण की सभा किया । उसमें पण्डित लोग श्राये । व्याकरण में प्रश्नोत्तर होने लगा । पण्डितों की घूड़ उड़ गयी । पण्डित लोग चुप हो गये । फिर सभा के लोगों ने पण्डितों से क्यूल करा लिया । पण्डित लोगों ने क्यूल कर लिया कि स्वामी जी को बहुत श्रव्हा व्याकरण श्राता है । फिर पण्डित लोगों से कहा कि व्याकरण का २ प्रश्न हम श्राप लोगों को लिखा देते हैं । उसका प्रमाण पूर्वक उत्तर लिख ल्याइये । उस दिन से सब लोगों को बहुत विश्वास हो गया है । मुम्बई में श्रार्थसमाज

शशिरामाङ्गचन्द्रेऽब्दे कार्तिकस्यासिते दलं। ग्रामायां भौमवारे च प्रन्थोऽयम्पूर्तिमागतः ॥ १ ॥—
[ग्रार्थात् संवत् १६३१ कार्तिक वद्य ३० मंगलवार (८ दिसम्बर १८०४)। वेदिविष्द्वमतखण्डन का उपर्युक्त लेखन काल गुजराती पञ्चाङ्ग के ग्रानुसार है। वेदिविष्द्वमतखण्डन का उपर्युक्त संस्करण गुजराती ग्रानुवाद सिंहत छपा था। यह गुजराती ग्रानुवाद श्री पं० श्यामंजी कृष्णवर्मा ने किया था। देखो न्या. द.के प्रन्थों का इतिहास पृष्ठ ६४]

३. २२ फरवरी १८७५ । यह पत्र बम्बई से लिखा गया है । यु० मी० ।

१. ऋर्यात् ऋार्याभिविनय ।

२. वेदिविरुद्धमत लएडन के ब्रन्त में उसका रचना-काल निम्नलिखित है-

होने की तयारी हैं। श्रीर इन्दुप्रकाश के सम्पादक विष्णुशास्त्री के पास श्राप लोगों में से कोई ने "आकृष्णेनेति" मन्त्र के अर्थ हमारा उनके पर' निश्चय के अर्थ पत्र भेजा होगा। उस पर उसने जो कुछ लिखा, सो सब मिथ्या ही है। श्रीर यह विष्णु शास्त्री धूर्त्त विद्याहीन हठी दुराग्रही मिथ्याचारी है। इसमें सन्देह नहीं। क्योंकि उस विष्णु शास्त्री के विषय एक बानगी लिखते हैं कि ऐसी मूर्खता कोई विद्यार्थी भी नहीं करेगा। "ऋ गतिप्रापणयोः।" इस घातु से रथ शब्द सिद्ध हुआ है। "रमु क्रीडायाम्" इस घातु से नहीं। इस्से यह अर्थ निर्युक्तिक और निर्मूल है। इस अंधा की भीतर और बाहर की दोनों फूट गई आंख। पाणिनिमुनि रचित उणादिगणस्त्र प्रमाण हनिकुषिनीरमिकाशि-भ्यः क्थन<sup>र</sup> । हथः । कुष्ठः । नीथः । रथः । काष्ट्रम् ॥ यास्को निरुक्तकारः—"रथो रहेर्तर्गतिकर्मणः<sup>3</sup> इत्यत्र "रममाणोऽस्मिस्तिष्ठतीति वेति।" इस से रमु धातु से ही रथ शब्द सिद्ध होने से 'रमणीयो रथो रमतेऽस्मिन्निति वा' अत एव विष्णुशास्त्री का कहना व्यर्थ ही हुआ। और उसको सभा के लिये निमंत्रण भी दिला है। परन्तु वहां काय को आवेगा। वह तो भूठा भूठा घर से बैठा बकेगा। जिसने उसके पास पत्र भेजा सो भी व्यर्थ किया। क्योंकि ऐसे मिध्यावादी मूर्ख के कहने का क्या ठिकाना। इसका खण्डन सभा में हमने सब को सुना दिया तथा लिख भी दिया है। परन्तु वह धूर्त्त अपने पत्र में छापेगा नहीं। श्रीर जो छापेगा तो उसका श्राप लोग लिखना कि हमारा किया समाधान श्रीर उनका खरडन छापै। जो विष्णु शास्त्री न छापेंगे तो फेर अन्यत्र छपाया जायगा। आप लोग इन नष्ट वृद्धि वाले पचपातियों को पूछते हो निश्चय करने को, सो सायणाचार्यादिकों को ही यथावत् वेदार्थ का बोध नहीं है तो उसके पीछे चलने वालों का यथावत् ज्ञान कहां से होगा। इसी लिये इन धूर्त्तों को मध्यस्थ हम नहीं करते। क्योंकि इन परिडतों की बुद्धि श्रविद्या लोभादि दोषों से नष्ट हो गई है । श्रीर सब श्रहमदाबाद के पिरडतों से उन्नीस वा बीस तथा वैसे ही सब पिरडतों का स्वभाव जानना । तथा हमारा नाम सुनते ही विपरीत उलटे चलते हैं। सो जिस पिएडत से पूंछोगे वह भूठा ही कहैगा। इन पिंडतों को वेदार्थ ज्ञान का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है । पुस्तक आपने भेजे । सो आगये । श्रार्यसमाज का स्थापन शीव करोगे तो श्रन्छा है।

सम्वत् १९३१ मिति फाल्गुन शुद्ध ९ मंगलवार ।

पत्र (१)

[9,4]

### श्रीरस्त

स्वस्ति श्रीमञ्जेच्छोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालरावहरिदेशमुखादिभ्यो दयानन्द्सरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयासुस्तमाम् । शमिहास्ति तत्राप्यस्तुतमाम् । श्रागे मुभ्वई में चैत्र शुद्ध ५ शनिवार के दिन संध्या के साढें पांच बजते आर्यसमाज का आनन्द पूर्वक आरम हुआ । ईश्वरानुष्रह से बहुत

२. उणा० राशा

४. १६ मार्च १८७५ यह पत्र बम्बई से लिखा गया है]।

१. 'उन के पर' ग्रर्थात् उन के पास । यु॰ मी॰ ।

३. निरुक्त ह। ११॥

प्र बम्बई त्रार्यसमाज की स्थापना चैत्र शुक्ला प्र शनिवार सं० १९३२ (१० त्राप्रैल १८७५) को हुई थी, यह उर्ग्युक्त लेख से स्पष्ट है। ऋषि द्यानन्द के जीवन चरित्र लेखक पं० लेखरामजी पं० देवेन्द्रनाथजी त्रादि

अच्छा हुआ। आप लोग भी वहां आरम्भ कर दीजिये। विलम्ब मत कीजिये। नासिक में भी होने वाला है। अब आर्य-समाजार्थ[नियम] और संस्कारविधान का पुस्तक वेदमन्त्रों से बनेगा शीघ्र। इन्दुप्रकाश वाले विष्णुशास्त्री सुधारे वाला तो नहीं, किन्तु कुधारे वाला मालूम पड़ता है। उसका प्रत्युत्तर करके उसके पास भेजा था, परन्तु उसने नहीं छापा। इससे पन्नपाती भी दीखता है। अब वह अन्यत्र छपवाया जायगा । संध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञविधान का भाष्य सहित प्रतक यहां छपवाया गया है । सो १० पुस्तक आपके पास भेजा जाता है। यथायोग्य उत्तम पुरुषों को बांट देना। उन नियमों में दो नियम वढ़े हैं। सो एक विवाहादि उत्साह किंवा मृत्यु, अथवा प्रसम्रता समय जो कुछ दान पुण्य करना उसमें से श्रद्धानुकूल आर्य्यसमाजके लिये अवश्य देना चाहिये । और दूसरा नियम यह है, जब तक नौकरी करने वाला तथा नौकर रखने वाला आर्य्यसमाजस्थ मिले तब तक अन्य को [न] रखना और न राखना । श्रीर यथायोग्य व्यवहार दोनों रखें । प्रीतिपूर्व क काम करें श्रीर करावें । डाकतर माणिकजी ने आर्थ्यसमाज होने के लिए स्थान दिया है, परन्तु संकुचित है । सो अब बहुत बढ़ेंगे मिंबर। तब दूसरा नया बनेगा, किंवा कोई ले लिया जायगा। अत्यन्त आनन्द की बात है कि आप लोगोंके ध्यान में स्वदेशहित की बात निश्चित हुई है। परमात्मा के अनुप्रह से उन्नति नित्य इसकी होय। संवत् १९३१ मिति चैत्र शुद्ध ६ रविवार।

श्रापके पुत्र के हाथ संध्यादि भाष्य के पुस्तक १०।

ने यही तिथि लिखी है। इस तिथि की पुष्टि बम्बई आर्थसमाज की प्रारम्भिक ११ मास की मुद्रित संदित कार्यवाही से भी होती है। यह कार्यवाही २०×३० = ३२ श्राकार ३२ पृष्टों में छुपी है। (बाह्य टाइटल पेज पृथक् हैं)। इस कार्थवाही के प्रथम पृष्ठ पर अन्दर का टाइटल है। द्वितीय पृष्ठ खालीहै स्त्रीर तृतीय पृष्ठ पर स्थूलाचरों में "श्री आर्यसमाज स्थापना सं०१९३१ना चेत्रशुद्ध शनिवार''स्पष्ट लिखा है (यहां सं० १९३१ गुजराती पञ्चाङ्गानुसार है)। इस कार्यवाही के मुख पृष्ठ पर मुद्रण काल ''संवत् १६३२ ना माहा वद० ॥ सन् १८७६'' (श्रर्थात् सं० १६३२ माघ वदि) छुपा है। त्र्रार्थसमाज स्थापना दिवस के सम्बन्ध में इस समय जितनी भी पुरानी सामग्री(रेकार्ड) मिलती है उस में यह सब से पुरानी त्रौर विश्वसनीय है। हमें यह कार्यवाही उक्त आर्थसमाज के कार्यकर्ता श्री पं० पदादत्त जी की कृपा से २६ त्र्यक्टूबर १९५२ को बम्बई में देखने को प्राप्त हुई। सन् १९३६ के क्रनन्तर से क्रार्थसार्वदेशिक सभा द्वारा "चैत्र शुक्का १" को ग्रार्थसमाज स्थापना दिवस मनाने की जो प्रति वर्ष घोपणा होती है उस का एक मात्र त्राधार वम्बई त्रार्यसमाज मन्दिर पर लगा हुत्रा शिलालेख हैं। इस मेवन का निर्माण त्रार्यसमाज स्थापना के ७ वर्ष के अनन्तर हुआ था यह उसी पर लगे अन्य शिलालेखों से स्पष्ट है। हमारे विचार में आर्यसमाज स्थापना दिवस वाला शिलालेख भवन निर्माण काल वाले शिलालेखों से भी त्रवीचीन है। इसलिये उवत त्रार्यसमाज स्थापना दिवस वाला शिलालेंख सर्वथा भ्रान्ति पूर्ण श्रीर श्रशुद्ध है। श्रतः उस शिलालेख श्रीर उसके श्राधार पर सन् १६३६ के श्रनन्तर सार्वदेशिक सभा द्वारा घोषित श्रायसमाज की स्थापना तिथि में संशोधन होना श्रत्यन्त श्रावश्यक हैं। यु॰मी॰

१. राजकोट में समाज की स्थापना के समय २६ नियम बनाये थे। उन्हीं की छोर यह संकेत है। यु॰मी॰

२. ११ अप्रैल १८७४। यहां सं० १९३२ चाहिए, वयोंकि बम्बई से लिखे अगले सभी पत्रों में उत्तर भारतीय पचाङ्ग के अनुसार ही व्यवहार किया है। यु॰ मी०।

अत्यां व

[8]

पत्र (१०)

१६

## श्रीरस्तु

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालर।वदेशमुख-भोलानाथमहीपतिरामशर्मभ्यो हि श्रीयुतवैचराख्यादिभ्यश्च दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम् । शमिहास्ति तत्रत्यं चाशास्महे। आगे आपका पत्र आया । देख के अत्यानन्द हुआ । यहां के आर्यसमाज अच्छी तरह चलता है। प्रतिदिन उन्नति ही होती जाती है। और ईश्वरकृपा से नित्य नित्य बढ़ता ही जायगा।

श्रार्याभिविनय के २ अध्याय तो बन गये। श्रीर चार श्रागे बनने के हैं। श्रागे संस्कार विधान पुस्तक भी अवश्य शीघ्र ही बनेगा। श्रार्थसमाज के नियम श्रीर उसकी व्याख्या पुस्तक छपता है। फिर आपके पास भी भेजों। सत्यार्थप्रकाश के भी १३ फार्म छप के श्रा गये हैं। श्रापके पुत्र के हाथ भेजे जायगे। ज्येष्ठ वद्य १५ के पूर्व व पश्चात् पूना को हमारा जाने का विचार है। सो जिसको लिखने का योग्य होय, उसको आप लिखना। बडोदे को जब आप लिखेंगे, तब आवेंगे। वहाँ भी आप लोगों को आर्यसमाज उस समाज का नाम प्रसिद्ध चलाना चाहिये। उसमें बड़ा फायदा है। विचार से यही ठीक दिखता है। फिर जैसी इच्छा होय वैसा करो। परन्तु स्वदेशादि सब मनुष्यों का निर्विघ्न हित आर्यसमाज से यथार्थ होगा। अप्रेडस्त्यत्रातीवानन्दस्तत्रत्योऽप्येवमेवास्त्वीश्वरानुमहेणेति। कि बहुना लेखेन बहु झेष्ठ। संवत् १९३२ मिति चेत्र वद्य ९ शनिवार।

श्रीर शिक्षापत्रि के खण्डन पुस्तक की गुजराती भाषा व्याख्या भी हो गई है। उसके तीन वा चार फार्म होंगे। १५ वा १६ रुपैये फार्म के हिसाब से ५० वा ६० रुपैये लगेंगे। सो वहाँ खुराओं वा मुम्बई में। परन्तु जो मुम्बई में छपेगा तो श्रच्छा होगा। इसका उत्तर शीघ्र सेज देना।

[4]

° पत्र (११<u>)</u>

[9,9]

### श्रीरस्त

स्वस्ति श्रीमच्छेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालर।वहरिदेशमुख-भोलानाथ-महीपतिराम वैचरभायाख्यादिभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयासुस्तमाम् । शमिहास्ति तत्रस्यं नित्यमा-

१. पूर्ण संख्या १२ के पत्र में १२० पृष्ठ छपने का उल्लेख है। ग्रतः यहां १३ फार्म के स्थान में १५ फार्म (१५×८ = १२०) होना चाहिए। यु० मी०। २. यहां ३० चाहिए। १५ सकेत पूर्णिमा का होता है।

३. चैत्रवद्य ६ को बुधवार था। वैशाखवद्य ६ को शुक्रवार था। ज्येष्ठ वद्य ६ को शनिवार था श्रर्थात् २६ मई १८७५। उसके पश्चात् श्री स्वामी जी पूना गए। श्रतः इस पत्र की प्रतिलिपि में ज्येष्ठ के स्थान में चैत्र भूल से लिखा गया है। श्रायामित्रिनय प्रन्थ स्वत १६३२ चैत्र सुदि १० गुस्वार तदनुसार १५ एपिल १८७५ को बनना श्रारम्म हुश्रा। यह पत्र उसके पश्चात् ही लिखा गया है। इस पत्र में ज्येष्ठ बदी १५ के समीप पूना को प्रस्थान करने का विचार प्रकट किया गया है। श्रतः इस पत्र की ज्येष्ठ तिथि ही ठीक है।

४. शिचापत्रीध्वान्तनिवारण का उपर्युक्त गुजराती श्रमुवाद श्याम जी कृष्णवर्मा ने किया था। देखो श्र. द. के प्रन्थों का इतिहास पष्ट ६७। यु० मी०।

४. यह पत्र बम्बई से लिखा गया है। यु॰ मी॰।

शास्महे । त्रागे पूना में महादेव गोविन्द रानडे, माधवराव मोरेश्वर कुएटे तथा लस्कर में गंगाराम भाऊ त्रादि पुरुषों ने अच्छी प्रकार व्याख्यानादि प्रबन्ध पूर्वक कराये। और व्याख्यन छपवाते भी हैं। तथा वेदभाष्य वनवाने के लिये पिएडत रखने के वास्ते कुछ फएड जमा किया है। श्रौर कुछ करने का भी है। तथा श्रार्यसमाज स्थापन श्रवश्य करना। इस लिए दो वक्त सभा होके व्यवस्थापक मण्डली निश्चित हो गई है। श्रीर एक सभा करने वाले हैं। उसमें प्रधान, मन्त्री श्रीर कोषाध्यज्ञादिक निश्चित करके आर्यसमाज का आरम्भ करने वाले हैं। सो शीघ ही होगा ऐसा मालूम पड़ता है। अन्य सब वर्त्तमान "ज्ञानप्रकाश" समाचार से आप लोगों ने देखा ही होगा । आगे हम यहां से सतारे की जाने वाले हैं दो एक दिन में। अथवा बड़ोदे की ओर आने वाले हैं। सो जब यहाँ से वा सतारे को जाके मुम्बई की स्रोर चलेंगे तब एक स्राद दिन दादरे के रेलय[र] पर ठहर के उधर स्राने का विचार है। सो दादरे से आपके पास तार द्वारा खबर देने में आवेगी। फेर जैसी आप खबर देंगे कि प्रथम बड़ोदे को ही आना किंवा सुरत और महत्व को होके वडोदे को आना, वैसा किया जायेगा। आगे एक परिडत रखने के लिये महादेव गोविन्द आदि ने ५० रुपैयों का निश्चय किया है। तथा मथुरादास लौजी और छिबलदास लिल माई आदि आर्यसमाज के समासदों ने भी वेदमाध्य होने के लिये २०००० रुपैये जमा करने के लिये सेर<sup>3</sup> १०० कपैयों का खड़ा करके १०००० कपैये तक तो सेर<sup>3</sup> भर गये हैं। श्रीर बहुत शीघ वे लोग बीस हजार ही रुपैये जमा कर लेंगे, ऐसा मालूम पड़ता है। एक परिडत के लिये राजा जयकृष्णदास जी ने स्वीकार किया ही है। तथा यहाँ महादेव गोविन्द आदि की तथा हमारी भी इच्छा है कि एक परिडत के रखने के लिये ५० रुपैयों का प्रवन्ध आप लोगों की श्रोर से होय तो अच्छा है। फेर जैसी आप लोगों को इच्छा होय वै[सा] कीजिये। आगे हम वहत आनन्द में हैं ईश्वरानुप्रह से। तथा त्राप लोग अत्यन्त आनन्द में रहना। आगे अन्य सब लोगों से हमारा आशीर्वाद कह देना। संवत् १९३२ श्रावण् शुद्ध प मंगला

यहां के परिडत लोग सामने तो कोई भी नहीं आये, किन्तु दूर से बड़ बड़ किया और करते भी हैं सो जानना।

[8]

पत्र (१२)

[9,6]

### श्रीयुक्तास्सन्त ।

स्वित श्रीमच्छ्रेष्टोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुतगोपालरावदेशमुखशम्मीभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयामुरतमाम् । शमिहास्ति तत्रत्यं च नित्यमाशास्महे । श्रागे पूना श्रौर सातारा का वर्त्तमान वर्त्तमान पत्रों से मुन लिया होगा । एक नवीन बात यह है कि पूना में श्रार्घ्यसमाज स्थापन होगया

१. त्रार्यभाषा में केवल १५ व्याख्यान ही मिलते हैं, परन्तु देवेन्द्र बाबू श्रीर पं॰ घासीराम कृत जीवनचरितानुसार ५० व्याख्यान छुपे थे।

२. ऋर्थात 'शेयर'।

३. १० ग्रगस्त १८७५, ग्रुक्क ८ को सोमवार है। ग्रतः मूल में ग्रुक्का ६ चाहिये।

४. यह पत्र पूना से लिखा गया है।।

है। आगे आर्थ्यसमाज स्थापनार्थं दो सभा पूना में हुई थी। सो तो समाचार पत्रों से जाना होगा। परन्तु हम सतारे से आये तब यह निश्चित हुआ कि महादेव गोविंद रानडे प्रधान, केशवराव गोडवोत्त मन्त्री। जितने प्रार्थनासमाज के सभासद् थे वे सब और अन्य बावा गोकुले तथा काशिनाथ गाडगील एवं गंगाराम भाऊ आदि लस्करस्थ ६० वा ७० सब सभासद हुवे हैं। और अन्य भी बहुत होने वाले हैं। तथा सतारे से भी कल्याणराव खजांची हेडमास्तर श्रादि तथा कृष्णराव विट्ठल विंचुरकर जज्ज आदि उसी वक्त मेरे सामने आरम्भ करने वाले थे। परन्तु हमने कहा कि शीघता मत करो। सो कुछ दिनके पीछे करने वाले हैं। आगे राखी का पुत्र आ के जब तक कलकत्ते की ओर न जायगा, तब तक मुम्बई में रहने का विचार है। फेर सुरत, मरूच, बढ़ोदे की छोर छाने का विचार है। मुम्बई के समाज की अच्छी प्रकार उन्नति होती जाती है। तथा पांच हजार रुपैये पर्यंत वेद्भाष्य बनाने के लिये इकट्ठा कर लिये हैं। श्रीर श्रागे होते जाते हैं। सो २०००० वा २५००० करने वाले हैं। सो माल्म होता है कि कर लेंगे। एक परिडत का खोज हो रहा है संस्कार की पुस्तक बनाने के लिये। सो अब तक मिला नहीं है। सो वहां कोई ऐसा पिएडत होय तो भेज देश्रो। ४०, ५० वा ३० पर्यन्त मासिक का बने तो भेज देवा। आगे आप लोगों को ईश्वर प्रसन्न रक्खे। हम भी तद्नुष्रह से प्रसन्न हैं। आगे भोलानाथ साराभाई, वैचरदास अम्बाईदास तथा महीपतराम आदि को हमारा अशीर्वाद कहना। संवत् १९३२ मिति त्राश्विन दद्य २ शनि ।

१. ग्रर्थात् एडवर्ड सप्तम ।

२. उत्तर भारतीय पञ्चाङ्ग के अनुसार आश्विन वदि २ (१७ सितम्बर १८७५) को शुक्रवार था, शनिवार नहीं था ; तथा उस समय श्री स्वामी जी महाराज सतारा नगर में थे। पत्र में सतारा से लौट आने का वर्णन है। श्रतः यह तिथि किसी प्रकार ठीक नहीं हो सकती। यदि श्राश्विन वदी २ को गुजराती पञ्चाक के श्रनुसार मानें तो उस दिन शनिवार पड़ता है, तदनुसार यह पत्र १६ ग्राक्ट्रचर १८७५ (उत्तर भारतीय पञ्चाङ्गनुसीर कौर्तिक बदि २) को ही लिखा गया होगा । यहां संवत् का निर्देश उत्तर भारतीय पञ्चाङ्गानुसार है (गु॰ पञ्चाङ्गानुसार सं॰ १६३१ था, वहां चैत्रशुक्का १ के स्थान में कार्तिक शु॰ १ से संवत् बदलता है) श्रीर महीने का निर्देश गुजराती पञ्चानुसार अर्थात दोनों का साङ्कार्य हो गया है।

श्री पं∘ देवेन्द्रनाथ जी द्वारा संकलित जी०च० पृष्ट ३५८ के श्रनुसार स्वामी जी महाराज २३ श्रक्टूबर १८७४ (कार्तिक विद ६-गु॰ पंञ्चाङ्गानुसार त्राश्विन विद ६) को सतारा से पूना लौटे, परन्तु इस पत्र से स्पष्ट है कि श्री स्वामी जी महाराज १६ अवदूवर से पूर्व ही सतारा से लौट श्राए थे। अतः २३ अवदूवर को सतारा से

पूना लौरना निश्चय ही अशुद्ध है।

सतारा से पूना लौटने ऋौर वहां से बम्बई जाने की वास्तविक तिथियां ज्ञात न होने से यह पत्र पूना से लिखा गया या बम्बई से, यह भी अनिश्चित है। पत्र में पूना और वम्बई के वृत्त का ऐसी अस्पष्ट भाषा में वर्णन है कि उस से भी किसी निर्ण्य पर नहीं पहुंचा जा सकता। " तब तक मुम्बई में रहने का विचार है" यह निर्देश पूना से पत्र लिखने पर मी किया जा सकता है। त्रात: यदि यह पत्र पूना से लिखा गया हो तो जीवन-चरित्र की सतारा से पूना लौटने की २३ अक्टूबर तिथि कदाचित् पूना से बम्बई लौटने की होगी, भ्रम से अस्थान में जुड़ गई होगी। श्रीर यदि यह पत्र बम्बई से लिखा गया हो तो स्वामी जी १६ श्रक्टूबर से पूर्व ही बम्बई पहुंच गये होंगे । य॰ मी० ।

| काशी, सं० | [६६२१ |
|-----------|-------|
|-----------|-------|

#### पत्र (१४)

3 9

|     | [१] [१] केशवलाल निर्भराम<br>[१] हरिश्चन्द्र चिन्तामिए | ा, मुम्बई।   | [१९–२१]<br>(१९)<br>(२०)<br>(२१) |  |
|-----|---|--|---------------------------------|--|
| [१] |   | <br>पत्र (१३)<br><sup>२</sup> खस्ति श्रीमच्छेषोपम- | [२२]                            |  |

युक्तभ्यः श्रीयुतलालजी लक्ष्मण्शास्त्रि-पूर्णानन्द्-नाथुरामाद्दिभ्यो द्यानन्द्सरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयामुरत[माम् श] मिहास्ति तत्र भवदीयं च नित्य[माशा] स्मेह ["चि] ठी मैंने भेजी है एक ""[दू]सरी केशवलाल नि[र्भय-राम]""" [ती]सरी हरिश्चन्द्र चिन्ता[मिण्] छौर यह चौथी चिठी भेजी जाती है। सब श्रन्थों का हिसाव एक के पास रहना श्रच्छा है। सेठ हनुमंतराम पित्ती जी के पास से ६० ७५) वा १५०) ले के लक्ष्मण्शास्त्री जी को श्राय्योभिविनय की छपाई में दिये होंगे तथा लिखे प्रमाणे केशवलाल निर्भयराम जी के पास पुस्तक १००० रख दिये होंगे। जो अब तक यह काम न किया होय तो पत्र देखते ही शीघ्र करना पीछे दूसरा काम करना। आगे आर्थ्याभिविनय के पुस्तक ५००० प्रयाग में पिखत सुन्द्रर लाल जी के पास पोह[त]मास्तर जनरल की कचेरी के ठिकाने से केशवलाल जी से कहके शीघ्र भेजवा देना। और जो लक्ष्मण्शास्त्री जी ने श्रव तक पुस्तक वहाँ न रक्खे होंय तो आप श्रम करके केश[व] ला० पास पु० १००० "" " " श्रव क० १५०) हनुमंत[राम पित्ती] " तथा केशवला० को " " [प्र]याग में उक्त ठिकाने पुस्तक " [आ]र्याभि० भेजवा देना। इतना काम [शी] च करना क्यों [कि] " इस देश में उसके गाहक बहु [त हैं] " इस्से विलम्ब करने में हानि है। शीघ्र काम करने में लाम है। सब आर्थ्य-समाज के समासदों को मेरा आशीर्वाद अति प्रेम से कहना। यहाँ परमानन्द है। सं० [१९३३] आवाद वद ९ शुकवार। व्यहाँ परमानन्द है।

[2]

पत्र-सूचना (४)

[२३]

[केशवलाल निर्भेयराम मुम्बई] <sup>१</sup>संस्कारिविधि के मुद्रण सम्बन्ध में १ नवम्बर १८७६ [कार्तिक शु० १५ बुद्ध सं० १७३३]।

१. देखो पूर्णं संख्या २२ का पत्र।

२. राजस्थान प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री पं० रामसहाय जी ने यह मूल पत्र हमें भेजा था। पं० कालूराम जी के शिष्य स्वामी स्वरूपानन्द जी से उन्हें यह हस्तगत हुआ। श्रव यह हमारे संग्रह में संख्या १ पर सुरित्त है। पीछे रङ्ग के कागज़ पर दोनों ओर श्री स्वामी जी के हाथ का छिसा हुआ है। फिटे हुए स्थानों पर हम ने बिन्दु दे दिए हैं।

३. १६ जून १८७६ । उस समय श्री स्वामी जी काशी में थे।

<sup>.</sup> ४. लखनऊ त्रथवा शाहजहांपुर से मुम्बई को मेजा गया । इस पत्र का संकेत केशोलाल निर्मयराम के श्री स्वामी जी के नाम ज़िले गए ता० ६ नवम्बर १८०६ के पत्र में है ।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

[बरेली, सन् १८७६

३२

पत्र (१४)

BREILLY 18 Nov. 1876?

FROM

[8]

Dayanand Saraswati Bareilly

To.

Babu Ramadhara Bajpai Hd. Clerk Govt. Tele: Office Lucknow.

Dear Sir.

The first copy of the Veda Bhashya will shortly issue so you must try with your whole heart and soul to secure as many subscribers as you can in your town.

My Babu will start for Benares on Monday to have the tract published atonce and distribute among the subscribers.-On his way down he will stop at your town for a day. I have instructed to take his quarters at the Patshala, if Gangesh Swami is there; please inform him about it.

As for my doings here and at Shajahanpur, I think, you have already heard from Gangesh Swami, the rest you can hear from my Babu. I don't think there is any necessity of detailing it here.

Hoping you are in the enjoyment of perfect health.

My blessings to all of you.

Yours ffly द्यानन्द सरस्वती

भाषानुवाद

बरेली १८ नवं० १८७६

द्यानन्द सरस्वती बरेली से

बाबू रामाधार वाजपेयी े हेड क्लर्क सरकारी तार घर लखनऊ।

प्रिय महाशय !

वेदभाष्य का प्रथमाङ्क शीघ्र निकलेगा, सो आप को अपने नगर में जिनने प्राहक आप बना सकते हैं, बनाने के लिए पूर्ण तन, मन से यक्न करना चाहिये।

१. मूल पत्र से प्रतिलिपि किया गया। मूलपत्र आर्यक्षमाज लखनऊ के संग्रह में सुरिक्ति है। यह संग्रह इमें श्री पं∘ रासिवहारी जी तिवारी प्रधान ऋार्यसमाज की कृपा से सन् १६१८ में हमें प्रतिलिपि करने के लिए माप्त हुआ था।

२. मार्गशीर्यं शका २ शनिवार सं० १६३३ । य० मी०।

ट्रैक्ट को तत्काल छपवाने श्रीर प्राहकों में बटवाने के लिये मेरा बाबू सोमवार को बनारस की श्रोर चलेगा। श्रीर नीचे को जाते हुये वह श्राप के नगर में एक दिन के लिये ठहरेगा। मैंने उसे कह दिया है कि यदि गंगेश स्वामी वहीं हों तो वह पाठशाला में उतरे। कृपया उन्हें यह कह दें।

शाहजहांपुर श्रीर यहां के मेरे कार्य के सम्बन्ध में, मेरा विचार है, श्राप पहले ही गंगेश स्वामी से सुन चुके होंगे। शेष श्राप मेरे बाबू से सुन सकते हैं। मेरा विचार है कि उस के यहाँ विस्तार करने की कोई श्रावश्यकता नहीं।

> त्राशा है त्राप पूर्ण स्वास्थ्य का त्रानन्द ले रहे होंगे। मेरा त्राप सब को त्राशीर्वाद।

श्रापका विश्वसनीय दयानन्द सरस्वती

[६]

[24]

श्रोम् नमः सवशक्तिमते जगदीश्वराय

# ॥ विज्ञापनपत्रमिदम्॥

श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामीकृतम् ॥
 ॥ वेदमाष्यप्रचारार्थं विद्यम् ॥
 इदं वेदमाष्यं संस्कृतार्य्यमाषाभ्यां भूषितं क्रियते ।
 कालरामाङ्कचन्द्रेब्दे भाद्रमासे सिते दल्ले ।
 पतिपद्यादिसवारे भाष्यारम्भः कृतो मया ॥ १ ॥
 विषयादिसवारे भाष्यारम्भः कृतो मया ॥

तदिदमिदानीं पर्य्यन्तं दशसइस्रश्लोकप्रमितं तु सिद्धं जातम् । तच्चेदं प्रसद्दमग्रेग्रे न्यूनान्न्यूनं पञ्चाशच्छ्लोकप्रमितं नवीनं रच्यत एयमधिकादधिकं शतश्लोकप्रमाणं च । तच

१. ग्रर्थात् २० नवम्बर १८७६ मार्गशीर्षं शुक्का ४. सं० १६३३।

२. ये महाशय एक वृद्ध सूक्षम काय सन्यासी थे। लखनऊ में इन्होंने एक संस्कृत पाठशाला खुलवा रखी थी। थे यह ग्रच्छे विद्वान्। श्री स्वामी जी से इन का प्रेम हो गया था। श्री स्वामी जी के देहावसान के पीछे भी लग भग दो वर्ष तक जीते रहे।

३. २० अगस्त १८७६ को वेदभाष्य वनना आरम्भ हुआ।

[यह काल ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रारम्भ करने का है। भूमिका के लेखन का प्रारम्भ ऋयोध्या के संख् बाग में बीधरी गुरुचरण लाल के मन्दिर में हुआ था। देखो देवेन्द्रनाथ संकलित जी० च० पृष्ठ ३७५ तथा ऋ० द० के प्रन्थों का इतिहास पृष्ठ ६६। यु० मी०।]

४. त्र्रार्थात् मार्गशीर्ष शुक्ला १५ सं० १७३३ (१ दिसम्बर १८७६) देखो माषानुवाद पृष्ठ ३५। सम्भवंतः बरेली में लिखा गया। यु॰ मी॰।

वाराणस्यां लाजरसकंपन्याख्यस्य यंत्रालये प्रतिमासं मासिकपुस्तकवद्यन्त्रितं कार्य्यते मासिकस्य मूल्यमेतावत् ।-) इदं द्वादशमासानां मिलित्वैतावदद्भवति ३।॥) इदं राजमार्ग-वेतनदानेन सहैतावन्मात्रं ४॥) वार्षिकं जायते । अस्य वेदभाष्यस्य ग्रहणेच्छा यस्य भवेत स लाजरसकंपन्याख्यस्य वा भाष्यकर्तुः श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिनः समीपं वार्षिकं धनं ४॥) मेषयेत्तस्य समीपमेकवर्षपर्यन्तं प्रतिमासं मासिकपुरतकं पोष्टाख्यराजमार्गपयन्धे-नावश्यमागमिष्यति ॥ पुनग्रीहकैर्वार्षिकं देयं चैवमेव पुनःपुनर्ज्ञेयम् । योस्य वार्षिकं सूल्यं प्रेषिषण्यति तन्नामलेखपूर्वकं मासिकपुस्तकपृष्ठोपरि यन्त्रयित्वैकवारं प्रसिद्धं भविष्यतीद्मेव तस्य विश्वासार्थं भविष्यति मद्धनं तेन भाष्यकत्री वा यन्त्रणकत्री प्राप्तं चेति ॥ अत्रान्यथा यः कुर्यात्तस्य समाधाता स एव भविष्यति ॥ सर्वशक्तिमदीश्वरानुग्रहेणात्र व्यययः कदाचिन्नेव भविष्यतीति विज्ञायतेऽस्माभिः।एकरौप्यमुद्रया श्लोकसहस्रद्वयमितं न्यूनान्न्यूनसुत्तमपत्रासर-लिलतद्र्शनं हृद्यं पुस्तकं ग्राहकाः पाप्स्यंसेव। इदं वेदभाष्यमपूर्वभवति। कुतः। महाविद्धामार्यी-णां पूर्वजानां यथावद्वेदार्थविदामाप्तानामात्मकामानां घर्म्मात्मनां सर्वलोकोपकारबुद्धीनां श्रोघि<sup>®</sup> याणां ब्रह्मनिष्ठानां परमयोगिनां ब्रह्मादिव्यासपर्य्यन्तानां मुन्यूषीणामेषां कृतीनां सनातनानां वेदाङ्गानामैतरेयशतपथसामगोपथबाह्मणपूर्वमीमांसादिशास्त्रोपवेदोपनिशच्छाखान्तरमूलवेदादि-सत्यशास्त्राणां वचनप्रमाणसंग्रहलेखयोजनेन प्रसक्षादिप्रमाणयुक्त्या च सहैव रच्यते ह्यतः। वेदानां यः सत्रार्थः सोऽनेनं भाष्येण सर्वेषां सज्जनानां मनुष्याणामात्मम् सम्यक् प्रकाशी-भविष्यति । पुनरर्नथव्याख्यानानि यानि वेदानामुपरिवर्त्तन्ते तिश्चटित्तरनेन तत्मयुक्तभ्रमजालोपि लयं गमिष्यसवदयमतश्च । ततो ससव्यवहारसागात् ससाचारग्रहण-पृष्टिचिभ्यां मनुष्याणां महान् सुखलाभो निश्चितो भविष्यति वेदेश्वरयोः संसार्थसाम्राज्यपका-शश्चातः ॥ ससधमिर्थकाममोक्षाणां यथावत् सिद्धेश्चेत्राद्योऽस्य भाष्यस्यापूर्वत्वे हेतवो विज्ञेयाः ॥ एतदर्थं ससविद्यापियैर्विद्वद्भिः ससार्थजिज्ञासुभिर्मनुष्योपकारससविद्योन्नतिं चिकीर्षुभी राजादिनृवय्यैरस्मिन्मइति सर्वोपकारके कार्ये मासिकपुस्तकग्रहणेनान्यनकारेण च सर्वेर्यथाशत्त्या सहायः कार्य इति विज्ञाप्यते ॥

#### ॥ विज्ञापनपत्र ॥

### ॥ भाषार्थ ॥

सो यह दयानन्द सरस्वती स्वामी जी ने प्रसिद्ध किया है। इस का यह प्रयोजन है कि चारों वेदों का भाष्य करने का आरम्भ मैंने किया है। सो सब सज्जन लोगों को विदित हो कि यह भाष्य

संस्कृत श्रौर श्रार्य भाषा जो कि काशी प्रयाग श्रादि मध्य देश की है, इन दोनों भाषाश्रों में बनाया जाता है। इस में संस्कृत भाषा भी सुगम रीति की लिखी जाती है। श्रौर वैसी श्रार्थ भाषा भी सुगम लिखी जाती है। संस्कृत ऐसा सरल है कि जिसको साधारण संस्कृत को पढ़ने वाला भी वेदों का अर्थ समम ले। तथा भाषा का पढ़ने वाला भी सहज में समम लेगा। संवत् १९३३ भाद्रमास के शुक्तपत्त की प्रतिपदा के दिन इस भाष्य का आरम्भ किया है। सो संवत् १९३३ मार्गशिर शुक्क पौर्णमासी पर्यन्त दश हजार ऋोकों के प्रमाण भाष्य बन गया है। श्रीर कम से कम ५० ऋोक श्रीर श्रिधिक से श्रिधिक १०० श्लोक पर्य्यन्त प्रति दिन भाष्य को रचते जाते हैं। इस भाष्य को काशी जी में लाजरस कम्पनी के छापेखाने में छपवाते हैं। सो छापने का प्रवन्ध इस प्रकार से किया है कि मासिक पुस्तक की नाईं छपता जायगा। इस का मासिक जो एक श्रंक होता है उस का मूल्य। ) पाँच श्राना है। सो बारह महिनों का मिलके ३।।।) पौने चार रुपैये होते हैं। सो डाक का खर्च महिने महिने में 一) एक आने का टिकट लगेगा सो मिलके एक वर्ष का था।) साढ़े चार रुपये होते हैं। सो जिस किसी को इस पुस्तक के लेने की इच्छा हो वह लाजरस कम्पनी के पास एक वर्ष का मूल्य भेज दे। अथवा स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी के पास भेज दे। उस के पास मिहने महिने में एक वर्ष पर्यन्त पोष्ट मार्ग से अर्थात् सरकारी डाक के प्रवन्ध से मासिक पुस्तक अवश्च पहुँचेगा। पुनः एक वर्ष के पीछे फिर भी दूसरे वर्ष का इसी प्रकार जमा करना होगा। और गाहकों के पास इसी प्रकार से मास मास में पुस्तक पहुँचा करेगा। सो जिस महिने में जो गाहक मृल्य भेजेगा उस महिने के ऋथवा दूसरे मिहने के श्रङ्क में उस का नाम लेख पूर्वक उस धन की पहुँच मासिक पुस्तक के पृष्ठ के ऊपर छपा के उस लेख द्वारा सर्वत्र प्रसिद्ध कर दिया जायगा। सो एक वर्ष में एक का नाम एक बार ही छपेगा। पुनः दूसरे वर्ष में भी इसी प्रकार से होगा। उस लेख को गाहक लोग अपने पास रख लें। और यह निश्चय जान लें कि मेरा धन उस के पास पहुँच गया। श्रीर जो पुस्तक देने वाला वा गाहक इस में अन्यथा करेगा वह इस बात को पूरी करने वाला होगा। सो हम लोग निश्चय जानते हैं कि जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा है उस की कृपा से इस काम में विपरीतता कभी न होगी । सो गाहक लोगों को एक रुपैये में २००० दो हजार ऋोक मिलेंगे। सो इस में कागज और श्रवार श्रव्छे रहेंगे जो वाँचने वाले श्रौर देखने वाले जिसको देख श्रौर बाँच के प्रसन्न हों। सो यह वेदमाध्य अपूर्व होता है। अर्थात् अत्यन्त उत्तम बनर्ता है क्योंकि इस में अप्रमाण वा कपोल कल्पित लेख नहीं होता। जे बड़े विद्वान आर्यावर्त्तवासी प्रथम हो गंथे हैं, जे वेदों के ऋर्य को यथावत जानते थे, जे कि सत्यवादी जितेन्द्रिय और धर्मात्मा थे तथा जिन की बुद्धि में सब लोगों का उपकार करना ही रहता था, जे कि वेदों में परम विद्वान थे और जिनकी निष्ठा एक श्रद्धितीय ब्रह्म में थी, जे ब्रह्मा से लेके व्यास जी पर्यन्त मनि जे कि मननशील थे, श्रीर ऋषि जे कि वेद मन्त्रों के अर्थों को यथावत् जानने वाले थे, उनके किये सनातन जे प्रन्थ हैं शिच्चा कल्प व्याकरण निघएटु निरुक्त छन्द और त्रयोतिष ए वेदों के छः अङ्ग कहाते हैं तथा ऐतरेय शतपथ साम और गोपथ ए चारों वेदों के चार ब्राह्मण कहाते हैं तथा पूर्वमीमांसा वैशेषिक न्याय

१. २० श्रगस्त १८७६ । यु० मी० ।

२. प्रथम दिसम्बर १८७६।

३. प्रनथ परिमाण बताने केलिये ३२ अन्तर का एक श्लोक मानकर गिनती करने की प्राचीन परिपाटी है।

योग सांख्य और वेदान्त ए छः शास्त्र कहाते हैं और चार उपवेद हैं आयुर्वेद जो वैद्यक शास्त्र है धनुर्वेद जो राजविद्या है गान्धर्ववेद जो गान शास्त्र है ऋौर अर्थ वेद जो शिल्पशास्त्र है ए चार उपवेद कहाते हैं तथा केन कठ प्रश्न मुख्डक मार्ख्डक्य तैत्तिरीय ऐतरेय श्रीर मैत्रेयी ए दश उपनिषद् कहाती हैं। ११२७ ग्यारह सै सचाईस वेदों की शाखा जे कि वेदों के ऊपर मुनि श्रीर ऋषियों के किये व्याख्यान हैं इनमें से जितनी शाखा मिलती हैं श्रीर मूल वेद जे ऋक् यजुः साम श्रीर श्रथर्व वेद इनकी जे चार मन्त्र संहिता हैं ए ईश्वर कृत सनातन चार वेद कहाते हैं शिचा से लेके शाखान्तर पर्यन्त वेद के जे सत्यार्थ युक्त व्याख्यान हैं जे कि ब्रह्मा से लेके व्यास जी पर्यन्त ऋषि श्रौर मुनियों के किये हैं उन सनातन सत्य प्रन्थों के वचनों का लेख प्रमाण से सिह्त स्रोर मूल वेदों के भी प्रमाणों से सिहत यह वेद आष्य रचा जाता है। स्रोर प्रत्यज्ञादि प्रमाणों की योजना भी इस में लिखी जाती है। इस कारण से यह वेद भाष्य अपूर्व होता है। श्रीर इस वेदमाध्य से वेदों का जो सत्य अर्थ वह सब सज्जन लोगों के आत्मात्रों में यथावत् प्रकाशित होगा। तथा वेदों के ऊपर लोगों ने मिध्या जे व्याख्यान किये हैं उन की निवृत्ति भी इस भाष्य से अवश्य होगी। और जो उन व्याख्यानों के देखने से मिथ्या जाल जगत् में प्रवर्त्तमान है सो भी इस भाष्य से नष्ट अवश्य हो जायगा। इस कारण से भी यह वेदभाष्य अपूर्व होता है क्योंकि जब वेदों का सत्य अर्थ सब को विदित होगा तब मनुष्य लोग असत्य व्यवहार को छोड़ के सत्य का प्रहरण श्रीर सत्य में ही प्रवृत्त होंगे। इस के होने से मनुष्यों को सुख की प्राप्ति अवश्य होगी। तथा वेद का सत्य श्रथ रूप जो राज्य श्रीर परमेश्वर का यथावत् प्रकाश रूप जो श्रखंड राज्य है सो भी इस आध्य के होने से जगत् में यथावत् प्रकाशित होगा। इस निमित्त से भी यह वेदभाष्य पर्मीत्तम होता है। श्रीर जब इस वेद्भाष्य को यथावत् विचार के उस के कहे प्रमाण से जे मनुष्य श्राचरण करेंगे उन को सत्य धर्म सत्य ऋर्थ सत्य काम और नित्य सुख रूप जो मोच्च इन चारों पदार्थों की सिद्धि यथावत् प्राप्त होगी। इस में कुछ सन्देह नहीं। बहुत लिखना बुद्धिमानों के लिये श्रवश्य नहीं किन्तु इस वेदभाष्य को जब देखेंगे तब उनको ए सब बात देखने में आवेंहीगी। और वेदों की भूमिका जो बनाई है उस को भी देखने से सज्जन लोगों के हृद्यकमल अत्यन्त आनिन्द्त होंगे। जिस से इन की प्रवृत्ति यथावत् हो इसलिये यह विज्ञापन किया जाता है कि जे सत्य विद्या के प्रेमी विद्वान् हैं तथा जे सत्य चर्थ के ज्ञानने की इच्छा करने वाले हैं तथा सब मनुष्यों को सत्य विद्या से सुख प्राप्त हो और सब मनुष्यों की बढ़ती हो इस उपकार की इच्छा करने वाले जे मनुष्य हैं उन राजाओं से लेके जे भृत्य प्रयन्त श्रौर जे ऐधर्य युक्त श्रौर उत्तम मनुष्य हैं जो सब मनुष्यों का उपकार करने वाला वेद्भाष्य का होना यह बड़ा कृत्य है इस में जितना जिस का सामध्ये हो उतना सहाय करना संब को उचित है। सो सहाय दो प्रकार से होगा एक तो मासिक पुस्तकों के प्रहण करने से श्रीर दूसरा इस के बनने और छपवाने में धन और पिंडतों के रखने में सहाय देने से होगा । यही सब सज्जनों से विज्ञापन है कि अत्यन्त प्रीति से इस कार्य में दो प्रकार का सहाय सदा करें।।

भाष्यस्यापूर्वत्वे दृष्टान्ताः संक्षेपतोऽन्येपि लिख्यन्ते । तत्र संसेष्वार्षेषु सनातन-ग्रन्थेषु रूपकाग्रलङ्कारेण संसविद्यापकाशिकाः प्रमाणयुक्तिसिद्धा अनुत्तमा बह्व्यः कथा

१. यहां बृहदारएयक श्रौर छान्दोग्य स्पष्ट ही रह गई प्रतीत होती हैं।

लिखिताः सन्ति। तासां मध्याद्दिग्दर्शनवत्काश्चित्कथा अत्र वेदमाष्यभूमिकायां मयोलिखिताः। यासामज्ञानादाधिनिकपुराणग्रन्थेषु भ्रान्सा मनुष्येस्ता अन्यथैव लिखिता उपदिष्यन्ते श्रूयन्ते च। तत्परीक्षार्थं संक्षेपतोऽत्र विज्ञापनपत्रेपि काश्चिलिख्यन्ते । तद्यथा । प्रजापितर्वे स्वां दुहितरमभ्यध्यायद्दिवमिस्रन्य आहुरूषसमिस्रन्ये तामृश्यो भूत्वा रोहितं भूतामभ्येत्तस्य तद्रेतसः भथममुददीप्यत तदसावादिसोऽभवत । एतरेयन्ना० पंचिका ३ अध्याय ३ ॥ प्रजापितः सविता । श्वाप० काण्डे १० अध्याय २ ॥ तत्र पिता दुहितुर्गर्भे दघाति पर्जन्यः पृथिन्याः ॥ निरू० अध्याय ४ खं० २१ ॥ द्योमें पिता जिनता नाभिरत्र वन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम् । उत्तानयोश्चम्बो ३ यीनिरन्तर्त्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात् ॥ निरू० अध्याय ४ खण्ड २१ ॥ शासद्विद्वंदितुर्नप्सङ्गाद्विद्वां ऋतस्य दीधितिं सपर्यत् ॥ पिता यत्र दुहितुः सेकमृत्यजन्तसं शाम्येन मनसा दथन्वे॥ ऋग्मंत्रद्वयमिदम्॥ ज्योतिर्भाग आदिसः॥ निरू०। अ० १२। खंड १॥

॥ भाषार्थं ॥

इस भाष्य के अपूर्व होने में तीन कथा दृष्टान्त के लिये इस विज्ञापन पत्र में संदोप से लिखते हैं। उनमें से एक यह कथा है कि जिसको श्रीमद्भागवतादि नवीन प्रन्थों में बहुत विपरीत करके लिखी है। जिस कथा को वेद विरोधी मत वाले नहीं जानके लोगों को मिध्या बहका के अपने चेले कर लेते हैं। श्रीर जे वेद मत वाले हैं वें भी सत्य कथाओं के नहीं जानने से श्रीर मिध्या कथाओं को सुनके भ्रान्त होके उनके चेले हो जाते हैं। सो देखो चित्त देकें कि कितना बड़ा भ्रम मनुष्यों को श्रज्ञान से हमा है। (प्रजापतिचैं०) प्रजापित नाम है सूर्य का, क्योंकि सब प्रजा का जो पालन होना उसका मुख्य हेत सर्य ही है। उसकी दो कन्या हैं। एक द्योः अर्थात् प्रकाश और दूसरी उपा जो चार घड़ी रात्रि रहने से प्रातः काल पूर्व दिशा में किंचित्प्रकाश होता है क्योंकि जो जिससे उत्पन्न होता वह उसका सन्तान कहाता है। सो इन दोनों का पिता की नाई सूर्य है। और उन दोनों को सूर्य की कन्या की नाई सममना उषा जो सूर्य की कन्या उस में पिता जो सूर्य उसने अपना किरण रूप वीर्य को डाला। उन दोनों के समागम से यह जो आदित्य अर्थात् प्रकाशमय दिन है यह एक पुत्र उत्पन्न होता है ॥१॥ तथा इसी प्रकार से पर्जन्य जो मेघ है सो पिता स्थानी है खाँर पृथिवी उसकी कन्या स्थानी है क्योंकि जल से पृथिवी की उत्पत्ति होती है। इससे ए दोनों पिता पुत्रवत् हैं सो अपनी कन्या जो पृथिवी उसमें मेघ जो पिता वह वृष्टिद्वारा जल रूप वीर्य को डालता है। इन दोनों के परस्पर समागम से गर्भ धारण होने से अन्न त्रोविध और वृत्तादि अनेक पुत्र उत्पन्न होते हैं। यह पिता और दुहिता की रूपकालंकार कथा से उत्तम विद्या का अत्यन्त प्रकाश होता है। इस उत्तम कथा को बिगाड़ के अज्ञानी लोगों ने बुरी प्रकार से लिखी है।।२॥ दूसरी यह कथा है जिसको बृहत प्रकार से लोगों ने पुराणों में विगाड़ के लिखी है।।

इन्द्रागच्छेति गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जारेति तद्यान्येवास्यचरणानि तैरेवैनमेतत्म-मुमोद्यिषति । रेतः सोमः। शतपथ० कांड ३ अ० ३ ॥ रात्रिरादिसस्योदयेन्तर्धीयते नि॰ अ॰ १२ खं॰ ११ ॥ सूर्यरिमश्चन्द्रमा गन्धर्व इसिप निगमो भवति । सोपि गौरुच्यते । नि॰ अ॰ २ खं॰ ६ ॥ जार आ भगम् । जार इव भगमादिस्रोत्र जार उच्यते । रात्रेर्जरियता। नि॰ अ॰ ३ खं॰ १६ ॥ एष एवेन्द्रो य एष तपति । श॰ कां॰ १ अ॰ ६ ॥

॥ भाषार्थ् ॥

इसको इस प्रकार से बिगाड़ी है। इन्द्र जो देव लोक का राजा था वह गोतम ऋषि की अहल्या जो स्नी उससे व्यभिचार करता था। इस बात को गोतम ने जय जाना तब इन्द्र को शाप दिया कि तेरे शरीर में हजार भग हों और अहल्या को शाप दिया कि तूं शिला हो जा। इस शाप का मोचण राम के पांव की धूल के स्पर्श से होगा। सो इसी कथा को विद्याहीन लोगों ने इस प्रकार से बिगाड़ी है। यह ऐसी कथा है कि इन्द्र नाम है सूर्य का तथा चन्द्रमा का नाम गोतम है और रात्रि का नाम अहल्या है क्योंकि अहर् नाम है दिन का, सो लय होता है जिसमें, इस कारण से रात्री का नाम अहल्या है। जैसे स्त्री और पुरुष का जोड़ा होता है इसी प्रकार रात्रि और चन्द्रमा का क्रपकालंकार किया है। इस रात्रि का जार सूर्य है, क्योंकि जिस देश में रात्रि है उसमें सूर्य का किरण क्रप जो वीर्य है वहां उसके गिरने से रात्रि अन्तर्धान अर्थात् निवृत्त हो जाती है। इससे सूर्य का नाम अहल्या का जार है। रात्रि की उमर को सूर्य ही बिगाड़ता है। अर्थात् उसकी हानि कर्चा है इससे सूर्य रात्रि का जार कहाता है। और चन्द्रमा अपनी स्त्री जो रात्रि है उससे सब संसार को आनन्द करता है। इस अत्यन्त श्रेष्ठ कथा को लोगों ने बिगाड़ के अन्यथा ही लिखी है। २।। तथा तीसरी यह कथा है जो इन्द्र और वृत्रासुर के युद्ध की कहानी है।।

तद्यथा ॥ अइन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वन्नं स्वर्यं ततक्ष ॥ वाश्रा इव धैनवः स्यन्दमाना अंनः समुद्रमवन्नग्मुरापः । ऋग्वेद् अष्टक १ अध्याय २ वर्ग ३०। इसाद्य एतद्विषया वेदेषु बहवो मंत्राः सन्ति । अद्गिरिसादिषु मेघस्य त्रिंशन्नामसु—वराहः । अहिः। छन्नः । असुर इति चत्वारि नामानि यास्कमुनिकृतनिष्टोः प्रथमाध्याये लिखितानि ॥ इन्द्रशञ्च-रिन्द्रोस्य शमयिता वा शातयिता वा तस्मादिन्द्रशञ्चस्तत्को वन्नो मेघ इति नैरुक्तास्त्वाष्ट्रोऽसुर इसैतिहासिकाः । उन्नं जिध्नवानपववार तद्दत्रो हणोतेर्वा वर्त्तरेर्वा वर्द्वतेर्वा । यद्वणोत्तद्वस्य व्यत्विमिति विज्ञायते । निरुक्त अध्याय २ खण्ड १६, १७।

हत्रो ह वा हद् अ सर्व हत्वा शिष्ये। यदिदमन्तरेण द्यावापृथिवी स यदिद् अ सर्व हत्वा शिक्ये तस्माद्धत्रो नाम।।४।।तिमन्द्रो जधान स हतः पूतिः सर्वत एवापोभिः प्रसुस्राव सर्वत इव ह्य समुद्रस्तस्मादु हैका आपो बीभत्सां चिक्ररे ता उपर्युपर्यति पुमुविरे त इमे दर्भास्ता हैता अनापृथिता आपोस्ति वा इतरामु स अस्ष्रष्टिष्टिमव यदेना हत्रः पृतिरिभप्रास्त्रवत्तदेवासामेताभ्यां पित्रत्राभ्यामपहन्स्थ मेध्याभिरेवाद्भिः प्रोक्षति तस्माद्रा एताभ्यामुत्पुनाति शतपथ कांड १ अ०१

१. रात्रि का नाश करने वाला (जृष् वयोहानौ )। यु॰ मी॰ i

बरेली, सं० १९५३]

#### विज्ञापनपत्रम् (६)

39

तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः । अग्निः पृथिवीस्थानो वायुर्वेन्द्रो वान्तरिक्षस्थानः सूर्यो 
युस्थान इति निरु० अ० ७ खण्ड ५ ।

#### ॥ भाषार्थ ॥

( अहम्रहिं० ) यह ऋग्वेद का मन्त्र है इत्यादि इस विद्या के निरूपण करने वाले और भो बहुत मन्त्र हैं। इन्द्र नाम है सूर्य का सो निघएटु में लिखे हैं। इन दोनों का रूपकालङ्कार से युद्ध की नाई वर्णन किया है। जब त्वष्टा जो सूर्य है अर्थात् मेघ और सब चीजों का काटने वाला है वह जब मेघ को अपनी किरण रूप वज से काटता है तब वह बुत्रासुर जो मेघ है सो पर्वत और भूमि का आश्रय लेता है। पुनः उसका शरीर रूप जो जल है सो समूद्र को प्राप्त होता है। पुनरिप सूर्य की किर गा से उसके शरीर का खण्ड २ होता है। सो वायु के साथ आकाश में ऊपर चढ़ता है। फिर भी बादल रूप सेना को जोड़ के सूर्य की सेना जो किरण रूप है उसको रोकता है। पुनः सूर्य भी अपनी किर ए रूप सेना से उसका हनन कर्ता है, पुनः वह मेघ पृथिती में गिर पढ़ता है। पुनरिप उठ के इसी प्रकार युद्ध कर्ता है (इन्द्रशतुः) इन्द्र शत्रु है। जिसका ऐसा जो मेघ उसका छेदन करने वाला सूर्य ही है। इससे सूर्य का नाम त्वष्टा है। उसके पुत्र की नाई मेघ है क्योंकि मेघ की उत्पत्ति सूर्य के निमित्त से ही होती है। इससे मेघ का नाम त्वष्टा है और असुर भी नाम है। वृत्र नाम मेघ का इस कारण से है कि सूर्य के प्रकाश को आवरण कत्ती है और सूर्य से ही वृद्धि को प्राप्त होता है। यही मेघ में वृत्रपन है। सो जब आकाश में वृद्धि को प्राप्त होता है तब सब को आवरण करके आकाश और पृथिवी के बीच में सोता है। पुनः जब सूर्य इस मेघ को हनन करके पृथिवी में गिरा देता है तब पृथिवी को आच्छादित करके पृथिवी में सोता है। पुनरिप उसी प्रकार ऊपर को चढ़ता है। इसी प्रकार से सूर्य श्रीर मेघ के रूपकालङ्कार से परमोत्तम जो मेघ विद्या है उसका इस कथा से परमेश्वर ने इसके अनुसार मृनि और ऋषियों ने भी उपदेश किया है। इसकी यथावत् नहीं जान के वालकों की नाई विपरीत कथा मनुष्यों ने रच लीं हैं। ऐसी अनेक कथा रूपकादि अलङ्कारों से वेदादि सत्य शास्त्रों में तिखी हैं। उन में से कई एक कथा वेद की भूमिका में सज्जनों को जानने के तिये लिखी है। तथा वेदों की उत्पत्ति किस प्रकार से है, वेद नित्य हैं वा अनित्य हैं, वेद ईश्वर ने बनाये हैं वा अन्य ने, वेदों में सब विद्या हैं वा नहीं इत्यादि बहुत कथा भूमिका में लिखी हैं। जब भूमिका छपके सज्जनों के दृष्टि गोचर होगी तब वेद शास्त्र का महत्त्व जो बड़ापन तथा सत्यपना भी सब मनुष्यों को यथावत विदित हो जायगा। सो भूमिका के ऋोक न्यून से न्यून संस्कृत श्रीर श्रार्थभाषा के मिल के ब्याठ ८ हजार हुये हैं। इसमें सब विषय विस्तार पूर्वक लिखे हैं। सो इस को छपवा के हम लोग प्रसिद्ध किया चाहते हैं। इसलिये सब सज्जन लोगों को यही विज्ञापन है कि अत्यन्त उत्साह से पूर्वीक दो प्रकार का सहाय इस उत्तम काम में यथावत् देवें ॥ ऋों नमः सर्वशक्तिमते जगदीश्वराय ॥ यही परमेश्वर स्वक्रपा से सब का सहायक हो॥

१. श्रर्थात् नवम्बर १८७६ के मध्य तक भूमिका बन चुकी थी। इस से श्रात होता है कि भूमिका के बनने में लगभग पौने तीन मास लगे।

दिहली, सन् १८७६

80

[9]

पत्र (१५)

[२६]

जोम्

स्वित श्रीमच्छेष्ठोपमा० वनमालीसिंह योग्य इतो स्वामी द्या० श्राशीर्वाद । पौष ग्रुदी २ रिववार को हम दिल्ली फेंश गये हैं। सो श्रापको लिखा जाता है कि विज्ञापनपत्र हजार १००० श्रीर वेदमाध्य पुस्तक १००० चिट्ठी देखते ही भेजो। श्रीर वाकी पुस्तक लाजरस किम्पिनी मैं रहने दो। भ्वां सें उठाना नहीं। पत्र देखते ही २००० पुस्तक श्रीर चिट्ठियां देशावर सें हमारे नाम की श्राई थी, श्रीर जो वेदमाध्य देखकर सूचीपत्र बनाया था, उस को वी लेते श्राना क्योंकि तुम को हमारे पास रहना होगा। श्रीर जो कुछ किराया रेल का होगा सो इहां सें दे दीया जाइगा। श्रगर जो पुस्तक लाजरस किम्पिनी ने रमाने किर दी हो तो वी श्रापु हमारे पास चले श्राना। श्रग्रे किमधिकम्।

पौष शुद्धो ४ भौमे सं० १९३३।

[9.]

पत्र (१६)

[२७]

स्विध्व श्रीमच्छेष्ठोपमायोग्येभ्यः श्रीयुतपरिडतकाल्राम शर्मभ्यो द्यानन्दसरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयामुस्तमाम् । शमत्रास्ति तत्र भवदीयं च नित्यमाशास्महे ॥ श्रागे प्रेत की गिनती जिस समय प्राण छूटे उसी समय से मानना श्रोर श्रद्धतन शब्द से श्रागामिनी श्रद्धरात्री पर्यंत काल का प्रहण होता है । इसी रीति श्रद्धरात्रि से दिवसारंभ जानना । श्रोर वेदोक्त मार्ग को कितने पुरुष स्वीकार करते हैं सो इसका परिगणन नहीं कर सक्ते । श्रसंख्यों में से दो चार लिख देते हैं जैसे महाराज इन्दोर के श्रोर बडोदा के श्रोर कपूर्थला के विक्रमासिंह महाराज, राजा जयश्रुष्णदास,ठाकर मुकुन्दसिंह

१. १६ दिसम्बर सन् १८७६ । यह पत्र देहली से काशी को लिखा गया था । मूल पत्र गुलाबी रंग के बारीक कागज पर लिखा हुन्ना है ।

यह पत्र श्री देवेन्द्र बाबू के संग्रह में था। इस पर उन की संख्या с 74 पड़ी है। श्री पं० घासी-राम जी मेरठ निवासी से म० मामराज जी ऋक्तूबर १६२६ में मूल पत्र ले छाए थे। ऋब यह हमारे संग्रह में संख्या २ पर सुरिद्धित है।

वनमालीसिंह श्री स्वामी जी का बाबू ग्रार्थात ग्राङ्गरेजी ग्रादि लिखने वाला क्लर्क प्रतीत होता है। [इस से स्वामीजी महाराज ने ग्रंग्रेजी पड़ना भी प्रारम्भ किया था। देखो पं० देवेन्द्रनाथजी संकलित जी०च० पृष्ट ३७७]

र. पं० कालूराम जी रामबढ़ (सीकर) रियासत जयपुर निवासी थे। इन की योग में ब्राच्छी गति थी। इन को तन्द्रावस्था में श्री स्वामी जी के दर्शन हुए। उसी समय से इन्हों ने श्री स्वामी जी को गुरु धारण कर लिया। बहुत काल पश्चात फिर श्री स्वामी जी के दर्शन को गए। इन्हीं के उपदेश से रामगढ़ के ब्रास पास के लोग ब्राय धर्म में श्रद्धावान हुए। इन्हीं के कारण मुं० समर्थदान ऐसा भक्त श्री स्वामी जी की सेवकाई करने लगा। ज्येष्ठ सु० १० संवत् १६५७ को ब्रापनी इच्छा से शारीर त्याग गए।

मेरठ, सं० १९३२]

पत्रम् (१७)

88

तथा लाला लक्ष्मी नारायण बरेली के इत्यादि बहुत जान लेना।। और मैं श्रव नहीं श्रा सक्ता परन्तु कथी श्रनोदक होगा तो जरुर श्राऊंगा। श्रनुमान है कि यहां से मेरठ की श्रोर जाना होगा।

संवत् १९३३ माघ कृष्ण ४ बुघवार।

[2]

पत्र(१७)

Negratt.

Meerutt, 6/2/773

My dear Sir,3

I am very happy to acknowledge the receipt of your letter date unknown, and feel much pleasure to learn from your writing that you have procured good many subscribe[rs for] Veda Bhasya. Please infrom all those subscribers who are ready to buy monthly tract, to send their subscription money to Benares to the address of Messrs E. J. Lazarus & Co. Medical Hall Press Benares. The Bigyapan Pattra's or notices are not intended to be sold for price, but only to improve the number of subscribers for Veda Bhasya, so please show and give them to all of your friends and neighbours who are expected to be subscribers for Veda Bhasya. E. J. Lazarus & Co. will acknowledge receipt for the money which is to be sent to him, but all subscribers must send their respective correct addresses for reciving their copies from him (Massrs. E. J. Lazarus & Co.)

I hope you will keep continue trying your utmost in increasing the No. of subscribers. Hoping you are alright with your family. I am to stay here up to 15th inst. and then will leave this for Saharanpore. An early answer will ever oblige. Annual subscription for Veda-Bhasya is 4/8/- only

Yours well wisher

Swami Dayanand Saraswati

(Sd.) दयानन्द सरस्वती

Please let me know the total No. of subscribers already collected by you in Lucknow. I have written five copies in my list against your name

१. ३ जनवरी १८७७ को देहली से मेजा गया । मूल पत्र हमारे पास श्री पं० रामसह।य जी ने मेजा
 था । पं० कालूराम जी के शिष्य स्वामी स्वरूपानन्द जी से उन्हें यह पत्र मिला था । यह गुलाबी रंग के बारीक हाथी मार्का कागज़ पर लिखा हुन्ना है । अब यह पत्र हमारे संग्रह में संख्या ३ पर सुरिच्चित है ।

२. फाल्गुन कृष्ण ६, मंगलवार, सं० १६३३। यु० मी०।

३. यह पत्र पं॰ रामाधार वाजपेयी लखनऊ को लिखा गया था। मूल पत्र ग्रार्थसमाज लखनऊ के संग्रह में सुरिच्चित हैं। यु॰ मी॰।

# ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

for furnish. you with five copies and others can get more on advancing their annual subscription Rs. 4/8/- only.

Sd. Swamee D. Nand Sarusswatti.

दयानन्द सरस्वती

भाषानुवाद

E-2-003.

मेरे प्रिय महाशय!

आप के अज्ञात तारीख के पत्र की रसीद की स्वीकृति बताने में मुक्ते बड़ा आनन्द है, और आप के लेख से यह जान कर बड़ा हर्ष है कि आपने वेदभाष्य के लिये बहुत से प्राहक बना लिये हैं। कृपया उन सब प्राहकों को जो मासिक श्रङ्क खरीदना चाहते हैं यह बता दें कि वे श्रपना चन्दा बनारस में मैसर्ज ई० जे० लजारस और कम्पनी, मैडिकल हाल प्रेस, बनारस के पते पर भेज दें। विज्ञापन पत्र मूल्य पर बेचने के लिये नहीं हैं, परन्तु वेदभाष्य की प्राहक संख्या बढ़ाने मात्र के लिये हैं। सो अपने उन मित्रों और पड़ौसियों को दिखा वा दे दें कि जिन के वेदभाष्य के प्राहक बनने की सम्भावना है। ई० जे० लजारस स्रौर कम्पनी, जो रूपया उन्हें भेजा जायगा, उस की रसीद भेजेंगे। परन्तु सब ब्राहकों को उन से ( मैसर्ज ई० जे० लजारस और कम्पनी से ) श्रङ्क प्राप्त करने के लिये अपना २ शुद्ध पता भेजना चाहिये।

मैं आशा करता हूँ कि प्राहक संख्या बढ़ाने में आप अपना पूर्ण यहा करते रहेंगे। आशा है आप सपरिवार आनन्द में होंगे। मैं यहाँ १५ तारीख तक रहूँगा और फिर यहाँ से सहारतपुर को जाऊंगा, शीघ उत्तर कृतार्थ करेगा। वेदभाष्य का वार्षिक चन्दा था।) मात्र है।

श्रापका शुभचिन्तक ह० दयानन्द सरस्वती

कृपया कुल प्राहक संख्या जो आप ने लखनऊ से अभी तक एकत्र की है मुमे लिखें । मैंने अपनी सूची में आपके नाम पर भेजने को पाँच प्रतियाँ लिखी हैं और अन्य लोग वार्षिक चन्दा था। भेजने पर और ले सकते हैं।

दयानन्द सरस्वती

१. पूर्व पत्र के साथ ही यह पुनर्लेख मिलता है ।

२. फाल्गुन कृष्ण ६, मंगलवार सं० १६३३ । यु० मी० ।

मेरठ, सं० १९३३]

पत्रम् (१८)

83

[3]

पत्र (१८)

[२९]

MEERUTT. 13/2/77

My dear sir,

I reced:—yours dated 9th inst. and in its reply I feel much pleasure to send you herewith ten more copies of Bigiapan-Patters as you wished to be distributed there.

Well done, my dear, why you not do so? Let Sanskar Biddhee come from Bombay, as soon expected, and then not only one, but ten or fifteen copies will be sent to you without fail.

I will leave Meerutt on the 15th of this month for Saharanpore and so your answer should reach me there and not here. Hoping you are well with your family.

Yours well wisher Swamee Dayanand Sarusswatti (Sd.) द्यानन्द सरस्वती

[भाषानुवाद]

मेरे प्रिय महाशय !

मेरठ, १३-२-७७

श्चाप का पत्र तारीख ९ का मिला। उसके उत्तर में, जैसा श्चाप ने वहाँ बांटने की चाहा था, मैं विज्ञापन पत्र की १० दश श्रीर प्रतियां मेजने में वहुत प्रसन्न हूँ।

मेरे प्रिय आपने बहुत श्रच्छा किया, भला आप ऐसा क्यों न करेंगे ? जैसा कि शीघ आशा है, संस्कारविधि मुम्बई से आ जाय और तब एक नहीं, परन्तु दश या पन्द्रह प्रतियाँ बिना देरी आप को भेजी जायेंगी।

में इस मास की १५ तारीख को मेरठ से सहारनपुर जाऊंगा श्रीर इस लिये श्राप का पत्र मुक्ते वहाँ मिलना चाहिये श्रीर यहाँ नहीं। श्राशा है श्राप सपरिवार श्रानन्द में होंगे।

> श्राप का शुभचिन्तक इ० दयानन्द सरस्वती

१. फाल्युन कृष्या ३०, मङ्गलवार, सं० १६३३ । यु० मी० ।

२. यह पत्र पं॰ रामाधार वाजपेयी लखनऊ को लिखा गया था। मूल पत्र स्नापं समाज लखनऊ के संबद्ध में सुरक्ति है।

88

[8]-

. पत्र (१९)

[30]

Saharun-pore. 28/2/77.

My dear Pundit

I am very glad to inform you that I will now visit the Chandapore Religious Fair situating in Rohelcund Shajahanpore District, where, I have been repeatedly invited by the Fair-Proprietors and others. The fair has been founded for assembling and collecting all the Religious Philosophers of India to enquire from, what is the God's true Religion to be followed for Salvation. I will leave Saharanpore by the 11th march and reach the fair-place on the 15th and so you are expected to join the Fair which will stop for a week (being postponed from 3 days to a week) with all your friends, who wish to come there. The fair will be most interesting and worthy to be seen and a great many Pundits, Moulvees and Padrees from all parts of India will attend and beautify it indeed. Hoping you are well with your children. Have you now recd./full required copies from Benares. An early answer will ever oblige.

yours will wisher Swami Dayanand Sarusswati (Sd.) द्यानन्द सरस्वती

To

Pdt. Ramadhar Bajpayee,

Lucknow.

[भाषानुवाद]

सहारनपुर २⊏-२-७७¹

मेरे प्रिय परिडत !

मैं आपको यह बताने में बड़ा प्रसन्न हूं कि मैं अब चान्दापुर धार्मिक मेले में जाऊंगा, जो कि रुहेलखण्ड जिला शाहजहांपुर में है, और जहां कि मेले के अध्यत्तों और दूसरों से मैं बारम्बार निमन्त्रित किया गया हूं। यह मेला आर्प्यावर्त के सब धार्मिक दार्शनिकों को एकत्र करने के लिये

१. चैत्र कृष्ण १, बुधवार, सं० १६३३। मूल पत्र श्रार्यसमाज लखनऊ के संग्रह में सुरिव्तत है।

बुलाया गया है, और उन से पूछा जायगा कि मुक्ति प्राप्त करने के लिये परमात्मा का सत्य धर्मी कौन सा है ? मैं ११ मार्च को सहारनपुर से चलूंगा और मेला स्थान पर १५ को पहुंचुंगा और इसलिये आप को भी अपने सब मित्रों के साथ जो आना चाहते हैं, मेले में आना चाहिये, जो कि एक सप्ताह तक रहेगा (३ दिन से एक सप्ताह के लिये हो गया है)। मेला बड़ा रुचिकर और देखते योग्य होगा और बहुत से पिएडत, मौलवी और पादरी भारत के सब भागों से आयेंगे और निश्चय ही इसे सुशोभित करेंगे। आशा है आप स्वसन्तान सहित आनन्द में होंगे। क्या आप को अब बनारस से अभीष्ट प्रतियां मिल गई हैं ? शीघ उत्तर कुतार्थ करेगा।

श्रापका शुभचिन्तक ह० दयानन्द सरस्वती

[4]

पत्र (२०)

[39]

Saharan-pore. 9/3/77

My dear Pundit,

I am in receipt of your letter D/6/3/77 and in its reply I am happy to infrom you that the five more copies of Veda Bhashya have been sent to you with my permission and Messrs E. J. Lazarus is not in mistake this while. Please distribute them among the subscribers about whom you had written to me some days ago. I will reach Chanda-pur Fair on the 15th inst. which will now continue to stop for a whole week from 19th inst. Please let me know how many Sanskar Biddhis you require and address me after the 11th Chandapore Fair and not Saharanpore which I will leave for, on the said date Please accept best Asheer-bad and see the Fair, if possble.

Yours well wisher

(Sd.) Swami Dyanand Sarusswati

द्यानन्द सरस्वती

P. S. You can send the subscription money for the five more copies you recd. twice, to the Medical Hall Press Benares, with addresses.

१. चैत्र कृष्ण १०, शुक्रवार, सं०१६३३। मूल पत्र श्रार्थसमाज लखनक के संग्रह में सुरिवृत है।

४६

#### [भाषा नुवाद]

सहारनपुर ९-३-७७

लुिंघयाना, सन् १८७७

मेरे प्रिय परिडत !

श्राप का ६-३-७० का पत्र मिला श्रीर उसके उत्तर में मैं यह प्रसन्नता से लिखता हूँ कि श्राप को वेदमान्य की पांच श्रीर प्रतियां भेज दी गई हैं श्रीर श्रव के मैसर्ज ई० जे० लजारस ने श्रशुद्धि नहीं की। कृपया उन्हें उन प्राहकों में बांट दीजिये जिन के विषय में श्रापने कुछ दिन पहले मुक्ते लिखा था। मैं इस मास की १५ तारीख को चाँदापुर पहुँचाँगा जो कि श्रव १९ तारीख से लेकर पूरा एक सप्ताह रहेगा। कृपया लिखें कि श्राप को कितनी संस्कारविधियों की श्रावश्यकता है श्रीर ११ के पीछे मुक्ते चाँदापुर मेले के पते से लिखें श्रीर सहारनपुर नहीं, जहाँ से मैं उक्त तारीख को चला जाऊंगा। कृपया मेरा हार्दिक श्राशीर्वाद स्वीकार करें श्रीर यदि सम्भव हो तो मेला देखें।

द्याप का शुभचिन्तक ह० दयानन्द सरस्वती

पु० नि० जो पाँच अधिक प्रतियाँ आप को दुबारा पहुँच गई हैं उनका चन्दा पता सहित मैडिकल हाल प्रेस बनारस को भेज दें।

[3]

पत्र (२१)

[32]

Loodhiana 16th April 1877.

My dear Baboo,

I am extremely happy to read yours of the 12th inst. and am over [glad]<sup>3</sup> to learn the delightful intention of Mr. Shamji to visit England for three ye[ars]. In my opinion this is the exampled opportunity for him [to]<sup>4</sup> grasp it without fail which will prove mutually best indeed for both countrymen for their success in many ways. Your Inducement to him in this respect will be considered as first rate and he will be crowned with high honours by all educated people both in England and India for his

१. चैत्र कृष्ण १०, शुक्रवार, सं० १८३३ । यु० मी०।

२. वैशाख शुक्ल ३. सोमवार संवत् १६३४। मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जो के संग्रह में सुरिव्त है।

३ कोष्ठगत पाठ फटा हुआ है।

४. यह शब्द मूल में नहीं है।

such a praiseworthy attempt, when returned successfully. Will he take his wife with him? Why his father-in-law Saith Chhabil Dass does not coincide with, and join your common opinion? Please give me further information again on this matter and I am very glad to express my best opinion this time that Mr. Shamji would not be considered a wise man if he turned his foot backward from this illustrious undertaking.

Now I will leave Loodhiana for Lahore on 19th of April 77 and will stop there in the garden of Ratun Chand Darhiwala. Please send all your letters to the above address till further information.

Accept my best ashirbad.

Swami Dyanand Saraswati.

To Baboo Harish Chander Chintamani Bombay.'

[ भाषानुवाद ]

लुधियाना १६ श्रप्रेल १८७०<sup>३</sup> Sd. द्यानन्द सरस्वती

मेरे प्रिय बाबू

में आपका १२ ता० का पत्र पढ़ कर ऋत्यन्त प्रसन्न हुआ और महाशय शाम जी की तीन वर्ष के लिए इङ्गलैग्ड जाने की इच्छा को जान कर असीम आनन्द हुआ। मेरी सम्मित में यह शुम सुअवसर है जिससे अवश्य लाभ उठाना चाहिए, जो वस्तुतः यह विचार दोनों देशवासियों की कई प्रकार की सफलताओं के लिए सर्वोत्तम सिद्ध होगा। इस विषय में आपकी प्रेरणा सर्वोत्तम होगी और जब सफल होकर लौटेगा तो अपने इस प्रशंसनीय प्रयन्न के लिए इङ्गलैग्ड और भारत दोनों देशों की शिच्चित जनता द्वारा अत्यन्त सम्मानित होगा। क्या वे अपनी पन्नी भी साथ ले जावेंगे। उनके असुर छिबलदास जी की इस सम्मित से सहमत और सहयोगी क्यों नहीं हैं; कृपया इस विषय में आगे सुके सृचित करें और इस समय अपनी सम्मित व्यक्त करता हुआ मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि शाम जी यदि इसे स्वीकार नहीं करेंगे तो यह उनकी बुद्धिमत्ता न होगी।

में १८ एप्रिल ७७ को लुधियाना से लाहौर को प्रध्यान करूंगा श्रौर वहां रतन चन्द दाढ़ी (१) वाला के बाग में ठहरूंगा। कृपया श्रगली सूचना मिलने तक सब पत्र उपर्युक्त पते पर भेजें। मेरा श्रुम श्राशीधींद स्वीकार करें स्वामी दयानन्द सरस्वती

सेवा में श्री बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि बम्बई।

१. बा॰ इरिश्चन्द्र चिन्तामणि मुम्बई ब्रार्यसमाज के प्रधान तथा वेदभाष्य के प्रबन्धक थे।

२. वैशाख शुक्ल ३, सोमवार, सं० १६३४।

निवास सूचना विज्ञापन

[8] विदित हो कि सं॰ १९३४ वैशाख महिने में देश पंजाब लुधियाना वा अमृतसर में स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे।

[8]

पत्र (२२)

LAHORE 15TH MAY 1877

My dear Pundit.3

I duly received your both letters and understood all the particulars stated therein. The reason I could not answer you was that the books required by you were not ready in my hand to despatch and so I waited to receive them all the while till this date.

I have got now some of them, however, though in very limited number and can send you a few copies whatever I have with me, on your informing me how many books of Suttiarth-Perkash and Aryabai Binoi etc. will suffice you, to be sold for ready payment because I also stand in need of money in my visiting places and at least fifty copies are required for Lahore and Amritsar.

Please send me an estimate of books, necessarily required for your Sabha and then I will send you some copies indeed.

May Permatma bless your object of establishing Satya-Niroopan-Sabha, which is expected to bring forth good fruit for the public. Hoping you are well with your friends. Accept my Asheerbad.

Yours well wisher Pundit Swami Dayanand Sarusswatti Sd/ दयानन्द सरस्वती

१. ऋ । भाष्य भूमिका, श्रङ्क (१) संवत् १६३४ ।

२. ज्येष्ठ शुक्ल २, मंगल, संवत् १६३४।

३. श्री स्वामी जी के मूल भाषा पत्र का श्रंग्रेजी उलथा करने वाला श्रवश्य ही कोई वंगाली था । मूल श्रंप्रेजी पत्र लखनऊ श्रा॰ स॰ के संप्रह में सुरित्ति है। यह पत्र बा॰ रामाधार वाजपेयी, लखनऊ को लिखा गया था।

४. इस प्रकार का लेख भी श्रंग्रेजी उलथाकार की बंगला मनीवृत्ति को प्रकट करता है।

लाहौर, सं० १९३४]

पत्र (२३)

89

#### [ भाषानुवाद ]

लाहौर १५ मई, १८७७

मेरे प्रिय परिडत !

मुक्ते आप के दोनों पत्र समय पर प्राप्त हुए और उन में लिखा सब समाचार विदित हुआ। मेरे उत्तर न देने का कारण यह है कि आप से मांगी गई पुस्तकों मेरे पास भेजने को तय्यार न थीं और इस लिये मैं आज तक उन की प्राप्ति की प्रतीक्षा में रहा।

मुसे अब उन में से कुछ मिल गई हैं। आप का पता आने पर कि सत्यार्थप्रकाश और आर्याभिविनय की कितनी पुस्तकें आप के लिये पर्याप्त होंगी, मैं उन्हीं में से कुछ प्रतियां आप को मेज सकता हूं। आप उन का मूल्य तत्काल प्राप्त करें, क्यों कि मुसे भी नये स्थानों में जाने के लिये धन की आवश्यकता है और न्यून से न्यून लाहौर और अमृतसर के लिये पचास प्रतियां चाहियें।

कृपया जितनी पुस्तकें त्राप की सभा के लिये ऋत्यावश्यक हैं, उन की गण्ना का अनुमान मुभे भेजें श्रौर तब निस्सन्देह मैं श्राप को कुछ प्रतियां भेजूंगा।

परमात्मा आप के 'सत्य-निरूपण-सभा' के स्थापन के उद्देश्य को फलीभूत करें। इससे जनता के बड़े लाभ की आशा है। आशा है आप स्विमत्रों सिहत आनन्द में होंगे। मेरा आशीर्वाद स्वीकार करें।

ष्ट्राप का शुभचिन्तक इ० दयानन्द सरस्वती

[२]

निवास-सूचना-विज्ञापन

[34]

विदित हो कि सं० १९३४ ज्येष्ठ महिने में प्रक्षाब देश के लाहौर नगर में पण्डित स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे।

[0]

पत्रम् (२३)

[३६]

LAHORE 6th JUNE 1877

Dear Sir,

I am exceedingly glad to read yours of the 30th ult. which refreshed my soul very much. Your boldness in virtuous path is beyond

- १. ज्येष्ठ शुक्ल २, मंगल, सं० १६३४ । यु० मी० ।
- २ ऋ भाष्यभूमिका, ग्रङ्क (२) संवत् १६३४।
- ३. ज्येष्ठ द्वि० वदी १०, बुध, संवत् १६६४। मूल पत्र प्रो० धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिच्त है।
- ४. यह पत्र पं॰ गोपालरावहरि देशमुख जी को लिखा गया था ।

measure and your exertions in Indian's welfare are unspeakable. By the laws of nature you are deserving good reward from heaven, your prosperity will grow higher and higher rapidly.

I am willing to follow your advice, and ready to translate white Yajur Veda as you wish.' But in this case I will stand in need of two Pandits more and the printing Charges will also get increased for the double issue of the work every month. Therefore you can yourslf think over the matter properly and inform me then of your final opinion on the matter so that I may employ two writers more and begin to translate the work with certainity. I have every reason to believe that the darkness of ignorant India—which has reduced the people to such low condition in which they seem and still careless will one day be banished away, if the sun of civilization shone over and the true knowledge of Vedas, diffused over the country.

Noble and high spirited person like you and your companion only can be expected to undertake this mighty work for the public good and though such souls are few in number but their rarity is better than their abundance.

I wish that Shamji Krishna Varma should come to me for some time before starting for Oxford. I wish to give him some of the most important hints on Vedas which are necessarily required for him. He must not care for his expenses or anything else and I will furnish him with all necessities indeed. In my opinion his going to England is very useful for him but let me know what is your opinion about the matters. I will also write directly to him. I have got no copy of Maha Nirwana Tantra with me but it is procurable from Calcutta. Hoping you are well. Please let me know Shamji K. Varma's answer about my enquiry and accept my Asheerbad.

Yours well wisher
Pandit S. Dayanand Saraswati.

१. इस पत्र से प्रतीत होता है कि ऋग्वेदभाष्य के सुद्रण के साथ साथ शुक्ल यजुर्वेद भाष्य का सुद्रण पं॰ गोपालरावहरि देशसुख के प्रस्ताव से ही हुआ था।

लाहौर, सं० १९३४]

पत्र (२३)

48

#### भाषानुवाद्

लाहौर ६ जून १८७७

त्रिय महोदय!

मैं श्रापका गत ३० ता० का पत्र पढ़ कर बहुत प्रसन्न हुआ और मेरी आत्मा को शान्ति मिली। सन्मार्ग में आप की निर्भीकता अपिरमेय है तथा आप के प्रयत्न भारत के कल्याए की दृष्टि से श्रकथनीय हैं। प्रकृति के नियमों के श्रनुसार श्राप पुरस्करणीय हैं, शीघ्र ही श्राप की समृद्धि उत्तरोत्तर बढेगी।

में आपकी सम्मति के अनुसार चलने के लिए सहमत हूँ और जैसी कि आपकी इच्छा है, शुक्त यजुर्वेद का भाष्य करने को वैयार हूँ । किन्तु ऐसी स्थिति में मुक्ते दो अन्य परिडतों की आवश्यकता होगी और प्रतिमास कार्य के द्विगुणित हो जाने से मुद्रण व्यय भी बढ़ जायगा। श्रतः श्राप स्वयं इस विषय पर उचित रूप से विचार करलें और अपनी अन्तिम सम्मति से मुक्ते सूचित करें जिससे मैं दो लेखक छौर रख सकूं जिस से निश्चित रूप से भाष्य का कार्य ग्रारम्भ हो जावे। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि देश में सभ्यता का सूर्य चमके और वेदों का सत्य ज्ञान फैले तो अज्ञानी भारत का अन्धकार जिसने जनता को ऐसी अधोगित में डाल दिया है, एक दिन अवश्य दूर हो जायगा।

श्राप और श्रापके साथियों जैसे भद्र श्रीर उच्च भावना वाले पुरुषों के सहयोग से ही जनहित के लिए इस महान् कार्य को हाथ में लेने की आशा की जा सकती है और यद्यपि ऐसी आशाएँ संख्या में कम हैं परन्तु उनकी न्यूनता उनकी अधिकता से अच्छी है

में चाहता हूँ कि श्रोक्सफोंड के लिए प्रस्थान करने से पहले शाम जी कृष्ण वर्मा थोड़े समय के लिए मेरे पास आ जावें। मैं वेदों के विषय में उनको कुछ अत्यन्त महत्त्व पूर्ण संकेत देना चाहता हुँ जो उनके लिये श्रात्यन्त श्रावश्यक हैं। उन्हें व्यय या श्रन्य किसी वस्तु की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। मैं उनकी सब आवश्यकताओं की पूर्ति कर दूँगा। मेरी सम्मति में उनका इक्कलैएड जाना उनके लिए बहुत उपयोगी है, परन्तु इस विषये में आप अपनी सम्मति से मुक्ते सुचित करें । मैं सीधा उनके पास भी पत्र लिखँगा । मेरे पास महानिर्वाण तन्त्र की कोई प्रति नहीं है, किन्तु यह कलकत्ता से प्राप्य है। आशा है आप कुशल होंगे। कृपया मेरे प्रश्नों के विषय में शाम जी कृष्ण वर्मा के उत्तर से अवगत करावें और आशीर्वाद स्वीकार करें।

व्यापका शुभचिन्तक

पिंडत स्वामी द्यानन्द सरस्वती

[3]

# निवास-सूचना-विज्ञापन

३७

विदित हो कि सं० १९३४ दूसरे ज्येष्ठ महिने में पञ्जाब देश के लाहौर नगर में परिडत स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे।

१. ज्येष्ठ द्वि० वदि १०, बुधवार, १६३४। २. देखो-पृष्ठ ५०, टि० १।

३. ऋ॰ भाष्य भूमिका, ऋङ्ग (३) संवत् १६३४।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

िलाहीर, सन् १८७७

प्र

[0]

पत्र (२४)

[36]

LAHORE

8th Jnne 1877

My dear Pandit

Please let me know whether you require some more copies of Sanskar-Bidhi or Suttiarth-Parkash for your Sabha as you requested once before. Have you recovered the price of twenty Sanskar-Bidhis and have you sold all of them to the people?

The other books are not ready with me but when come to hand, you will be informed at once. Successful lectures are going on here every day and with good consequence. Hoping you are well with your children. Accept my Asheerbad.

Yours well wisher

Pundit Swami Dayanand Strusswatti

Sd/ द्यानेन्द सरस्वती

[भाषानुवाद]

लाहौर

८ जून १८७७

मेरे ब्रिय परिहत ? !

कृपया मुमे बताएँ कि जैसा आप ने पूर्व एक बार तिखा था, क्या आप अपनी सभा के लिये संस्कारिवधि या सत्यार्थप्रकाश की कुछ और प्रतियाँ चाहते हैं ? क्या आपने बीस संस्कार-विधियों का मूल्य प्राप्त कर तिया है और क्या आप ने वे सब लोगों को बेच दी हैं।

दूसरे पुस्तक मेरे पास तथ्यार नहीं हैं, पर जब आ जायेंगे, तो आप को तत्काल सूचना दी जायगी। यहां प्रति दिन व्याख्यान बड़ी सफलता से हो रहे हैं। जनका परिगाम अच्छा होगा। आशा है आप स्वसन्तान सहित अच्छे हैं। मेरा आशीर्वाद स्वीकार करें।

श्राप का शुभिचन्तक ह० दयानन्द सरस्वती

१ इयेष्ठ द्वि॰ वदी १२, शुक्र संवत् १६३४।

२. पिडत रामाधार वाजपेयी को लिखा गया था। यह मूल पत्र लखनऊ आर्थ समाज के संग्रह में सुरित्तत है।

अमृतसर, सं० १९३४ ]

पत्र (२५)

प्३

[8]

पत्र (२५)

[ 5

My dear Baboo

Umritsar 21st. July 1877.

Your letter of the 17th instant duly come to hand. I was really glad to learn from it that by the mercy of Supreme Being you are in enjoyment of perfect health. According to your request and wishes I herewith send a pattern of the Veda's monthly commentaries also a copy of prospectus of the same for your information. The subscription for the current year has been fixed Rs. 4-8-0 only including postage, but for the future years, the amount of subscription will be increased or decreased according to the size of the work. I'll be very glad to inform you now and then all about my gradual progress in my undertakings and regular movement from place to place without fail. Hoping you are well and rejoicing. Please accept my best asheerbad I have intended to stop at Umritsur up to the end of August, and have arrived here since the 12th inst. from Lahore.

Your well wisher Pandit Swami Dayanand Sarusswatti. Sd/दयानन्द सरस्वती

P. S.

Address me Umritsur in the garden of Mohmed Jan Raees of the station.

Five parts for the five past months have already been published up to the end of June and the year for the work commences from February 1877.<sup>3</sup>

To

Baboo Deena Nauth Gangooly.

Darjeeling.

२. पं० लेखरामकृत जीवन चिरत पृ० ३२१ श्रीर देवेन्द्र बाबू तथा पं० घासीराम कृत जीवन चिरत पृ० ४२६ पर लिखा है कि श्री स्वामी जी ५ जुलाई को श्रमृतसर पहुँचे। इस पत्र से ज्ञात होता है कि श्री स्वामी जी १२ जुलाई को श्रमृतसर पहुँचे।

३. श्री देवेन्द्र बाबू के संग्रह में यह मूल पत्र विद्यमान था। म॰ मामरा ज ग्रक्तूबर सन् १६२६ में वह मूल पत्र पं॰ घासीराम जी से लाये थे। हम ने उसी से इस की प्रतिलिपि स्वयं की थी। मूल पत्र ग्रब हमारे संग्रह में संख्या ४ पर सुरिब्ति है। (इस पत्र के विषय में दीनानाथ का पत्र परिशिष्ट में देखें।)

४. बाबू दीनानाथ का पूरा पता ऋग्वेदादिमाध्यभूमिका प्रथमावृत्ति ऋइ ६, संवत् १६३४ के हरे रंग के अन्तिम पृष्ठ पर ब्राहक संख्या ४६५ पर इस प्रकार है—

इंजिनियर इन चीफ़स स्त्राफ़िस एन बी ॰ स्टेट रेलवे। सैदपुर, वाया [via] राजमहल स्त्रीर पार्वतीपुर।

१ं. ग्राषाढ शुक्ल ११ शनि संवत् १६३४ ।

48

भाषानुवाद्]

[लाहौर, सन् १९७७

श्रमृतसर २१ जुलाई १८७७°

मेरे प्रिय बाबू।

आपका १७ ता० का पत्र ठीक समय पर हस्तगत हुआ। मुक्ते यह जान कर प्रसन्नता हुई कि परमेश्वर की कृपा से आप पूर्ण ग्वस्थ हैं। आपकी प्रार्थना और इच्छा के अनुसार मैं इसके साथ वेह के मासिक भाष्य का नमूना और उसके नियमों की एक प्रति आपके सूचनार्थ भेज रहा हूँ। चाल वर्ष के लिए चन्दा डाक व्यय सिहत केवल ४ ६० म आ० निश्चित किया गया है, किन्तु आगामी वर्षों के लिए पत्रिका के आकार के अनुसार चन्दे की रकम घटा या बढ़ा दी जायगी। मैं आपको अपने कार्य की कमशः वृद्धि तथा अपने नियमित पर्यटन के विषय में समय समय पर अवश्य सूचित करता रहूँगा। मैं आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ और आनन्दित होंगे। कृपया मेरा ग्रुभाशीर्वाद स्वीकार करें। मैने अगस्त के अन्त तक अमृतसर में ठहरने का विचार किया है। और इसी मास की १२ ता० को लाहौर से यहाँ पहुँचा हूँ।

श्रापका शुभचिन्तक, ह० दयानन्द सरस्वती

पुनश्च—

मेरा पता—शहर के रईस मुहम्मद जान का बगीचा श्रमृतसर। जून के श्रन्त तक गत प् महिनों के पाँच भाग प्रकाशित हो चुके हैं श्रीर पत्रिका का वर्षारम्भ फरवरी १८७७ से होता है। सेवा में—बाबू दीनानाथ गांगोली, दार्जिलिङ्ग।

[4]

पत्र (२६)

[80]

# [ वेदभाष्यं सम्बन्धी पत्र ]

मन्त्री श्रार्य समाज लाहौर की श्रोर से' डाक्टर जी. डबल्यू. लाइटनर एम. ए. बार. ऐट. ला.

रजिस्ट्रार पञ्जाच यूनिवर्सिटी कालेज,

सिमला को

श्रीमन् !

पञ्जाब सरकार ने आपके यून्विसिटी कालेज की सैनेट को पण्डित खामी द्यानन्द सरस्वती के वेदमाध्य के गुर्णों को जानने के लिये एक पत्र मेजा था। उसका परिणाम जानने के लिए दिच्चण में

श्राषाद शुक्ल ११, शनिवार, संवत् १६३४। पृष्ठ ५३ की टि०२, ३, ४ मी देखें । यु० मी०।
 २०१४ मई १८७७ सोमवार को लगभग १० वजे श्री स्वामी जी पञ्जाव के लेफटिनैएट गर्दर्नर से मिले। देखो लैफटिनैएट गर्द्नर के निजी मन्त्री मि० जे० ग्रिफिय का १२ मई का श्री स्वामी जी के नाम का पत्र।

मुन्बई और पूना की, पश्चिमोत्तर प्रान्त में मुरादाबाद और शाहजहांपुर की और पञ्चाब में लाहौर और अमृतसर की आर्थ समाजें अत्यधिक उत्सुक थीं। जूंही मैसर्ज प्रिफिथ और टानि तथा लाहौर के कुछ पिडतों की दी हुई सम्मितियाँ प्रकाश में आई, तभी आर्थ समाज लाहौर ने, अभिमानी सममे जाने के भय में पड़ कर भी, अपना यह कर्तव्य सममा कि आप को ऐसी सूचना दी जाए, जैसी इसकी सम्मित में, सैनेट ऐसी विद्वत् सभा को अधिक ठीक और परिपक्क निर्णय पर पहुंचने के योग्य बना दे। वह विद्वत्सभा वह सब कुछ सुन ले, जो उस भावी कार्य के अनुकूल या विकद्ध कहा जा सकता है।

स्वामी द्यानन्द ने स्वयं भी इस विषय पर एक लेख लिखा है। समाज उसे स्वामी द्यानन्द सरस्वती के आलोचकों के समस्त आहेपों का सन्तोषदायक उत्तर सममता है। वह मूल लेख भी

साथ ही भेजा जाता है।

प्रतीत होता है कि महाभारत-काल से पहले, जिसे यूरोपियन काल-गणना के अनुसार तथा वहुत न्यून गिनती से भी ईसा के संवत् से ६०० या ७०० वर्ष पहले सरलता से धरा जा सकता है, भारत में वेदों का पठन पाठन नियम से होता था और उन पर भाष्य रचे जाते थे। उस समय ऐसे गुरुकुल वा विद्यालय थे, जिन में केवल वेद ही अध्ययनाध्यापन में आते थे, और भाष्य, कोष तथा व्याकरण लिखे जाते थे। ये प्रन्थ इस लिए रचे जाते थे कि वेदमन्त्रों का व्याख्यान और स्पष्टीकरण हो। इन में से कई प्रन्थ, काल के अनेक विनाशों के होने पर भी हम तक पहुंच पाए हैं। ये प्रन्थ यद्यपि अलभ्य हैं, पर सर्वथा अप्राप्य नहीं हुए। इन में सब से अप्रणी ब्राह्मण, निरुक्त, निघएदु और पाणिनि का व्याकरण आदि हैं। अत एव यही प्रन्थ वेदों के सब से पुरातन और विश्वसनीय भाष्य और व्याकरण हैं। क्योंकि जब महाभारत का महासंप्राम हुआ तो उसने हिन्दू समाज को उसकी जड़ तक हिला दिया। उस समय अध्ययन की अपेद्या लोगों को अपने प्राणों की चिन्ता अधिक थी उस युद्ध में सारा उत्तर भारत एक अथवा दूसरे पद्य की ओर हुआ।

उसी दिन गवर्नर से वार्तालाप के ग्रानन्तर स्वामी जी ने ग्रापने वेदभाष्य के सहायतार्थ पञ्जाब सरकार को एक पत्र लिखा था। पत्र के साथ ऋग्वेदादिमाध्यभूमिका ग्रीर वेदभाष्य का नमूना भी मेजा गया था।

पञ्जाब सरकार ने वे ग्रन्थ सम्मित के लिए यूनिवर्सिटी कालेज की सैनेट के पास मेज दिए । तब पञ्जाब यूनिवर्सिटी कालेज के रिजस्ट्रार ने स्वामी जी के भाष्य पर कुछ भारतीय श्रीर कुछ श्रंभेज श्रध्यापकों की सम्मितियां संगाई । वे सम्मितियां स्वभावतः श्री स्वामी जी के विपरीत थीं । उन सम्मितियों की श्रालोचना करने वाला यह उपरिलिखित पत्र जो श्रंभेजी से हमारे द्वारा भाषा में किया गया है लाहीर समाज की श्रोर से रिजस्ट्रार महोदय को लिखा गया । इस पत्र के स्थ श्री स्वामी जी का लिखा हुश्रा उत्तर भाषा में भी था । उसका भावानुवाद भी श्रंभेजी में भेजा गया । वह श्रागे पूर्ण संख्या ४१ पर छुपा है।

यह पत्र पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृष्ट ८०२-८०५ पुरू उर्दू में छपा है। इसने यह भाषानुवाद मूल त्रंग्रेजी पत्र से किया है। वह मूल पत्र निम्नलिखित पुस्तक में छपा है—Essays on Swami Dayanand Saraswati and the Arya Samaj, compiled and Edited by Lala Jiman Das Pensioner, Lahore, 1902. यह पुस्तक इमारे संग्रह में सुरिच्ति है।

१. यह पूर्ण संख्या ४१ पर छपा है। यु॰ मी॰।

लाहौर, सन् १८७७

तब न केवल युद्ध के काल में प्रत्युत उस के शताब्दियाँ पश्चात वेद घोर लुप्तावस्था में रहे। अधिक शान्तिप्रद कालों के लौटने पर वैदिक विद्या पुनर्जीवित हुई। नए विद्यालय उठे और नए आध्य निकल पड़े। इन्होंने पुराने ऋषियों की व्याख्याओं को तिलाञ्जिल दी और अपने युग की प्रवृत्तियों के अधिक अनुकूल व्याख्याएँ कीं। तथापि इस से निकृष्ट समय भी आने वाला था। बौद्ध धर्म भारत में सर्वोपिर हो गया। वेदों के विद्वान पकड़े और मारे जाते थे। उन की धार्मिक पुस्तकें जलाई जाती थीं और नष्ट की जाती थीं। ब्राह्मणों ने अभी बौद्धों को देश से निकाला ही था, अभी उन्हों ने अपना प्रमुत्व पुनः प्राप्त किया ही था, जब उन्हें एक अधिक भयानक शत्रु से सामना करना पड़ा। महाभारत के युद्ध ने और बौद्ध धर्म के विस्तार ने जो बात आँशिक रूप में की थी, देश पर मुसलमानों के अधिकार ने वह सर्वथा पूर्ण कर दी। सारी विद्या, सारा वाङ्मय और सारी सची वैदिक विद्वत्ता समाप्त हो गई। इन्हीं उत्तर समयों में सायण, महीधर, उव्वट और रावण के भाष्य हुए। इन से लाभ के स्थान में हानि अधिक हुई। सर्व साधारण लोगों पर इनके भाष्यों का इतना प्रभाव हो गया है कि पुराने भाष्यों को निरर्थक सममा जाता है और उन्हें कभी ही कोई देखता है।

तथापि कुछ दूरी पर एक उज्जवल भविष्य होने वाला था। [ईसा की] गत शताब्दी के छन्तिम दिनों में संस्कृत भाषा और वाङ्मय ने कोल बुक, जोन्स और कारी (Carey) ऐसे प्रसिद्ध विद्वानों के ध्यान को पुनः अपनी ओर खेंचा। उनके दिए हुए धक्के ने भाषा-विज्ञान में ही छा छर्य नहीं किया, बाप्प, बर्नफ श्लेगल, विलसन, वेबर और मैक्समूलर सहश चमकते हुए प्राच्य विद्या विशारदों की एक विशेष पंक्ति को ही उत्पन्न नहीं किया, और हमें एक राजेन्द्रलाल मित्र ही नहीं दिया, परन्तु हम आशा करते हैं, वह धका अवश्य ही स्वामी द्यानन्द सरस्वती के वेदभाष्य के रूप में परिणित होगा। परन्तु इस बात का बड़ा शोक है कि योरोपियन विद्वानों को अपनी अत्यधिक सामग्री के लिये एतहेशीय पिछतों पर आश्रित रहना पड़ता है। वे पिछत ऐसे हैं जिन का अधिक से अधिक ज्ञान भी गहरा नहीं है। और इन में से भी जो सब से अधिक ज्ञानवान हैं, सायण और महीधर से अधिक बड़े नाम नहीं जानते। यही कारण है कि वैदिक विद्वता ने अपेन्नाकृत धीमी उन्नति की है और योरोप में वेदों की शिन्ना के सम्बन्ध में अशुद्ध विचार फैले हुए हैं।

प्रति वर्ष, प्रति मास, और दिन दिन हमारे महान् देश के प्राचीन साहित्य और सभ्यता पर निस्सन्देह अधिक प्रकाश पड़ रहा है। यद्यपि इस साहित्य के लिए योरोप में प्राच्य-विद्या के विद्वानों के सिम्मिलित यत्नों द्वारा बहुत कुछ पहले ही किया गया है, परन्तु इससे भी अधिक अभी किया जाना शेष है। हमें विश्वास है, एक समय आयगा जब उपस्थित वेदभाष्य वैदिक विद्वता के प्रासाद का मूलाधार सममा जायगा। वेदों की उलटी व्याख्या करने वाले भाष्यकारों द्वारा योरोपियन विद्वान् जिस प्रकार उलटा सममें हैं, उससे गृह सर्वथा आश्चर्य नहीं होता कि वे कुछ काल के लिए इस विचार की अवहेलना करें कि वेद एक ही सद्ब्रह्म की उपासना सिखाते हैं। परन्तु हमारी धारणा है कि स्वामी द्यानन्द ने जो धक्का अब दिया है, वह अधिक गम्भीर अन्वेषण को प्रोत्साहन देगा और सत्य को प्रकाश में लायगा। तथापि इस देश के पिखड़तों की अपेचा योरोपियन विद्वानों से अधिक आशाएँ की जाती हैं। पिखतों का यह स्वार्थ है कि जब तक वे कर सकें तब तक मूर्तिपृजा और उसकी विधियों

को स्थिर रक्लें। समाज इस समय ऐसी ही त्राशा कर सकता है कि बढ़ता हुन्ना प्रकाश किसी दिन व्यन्धकार को दूर करेगा और सब को सचेत करेगा।

योरोप में वैदिक विद्वत्ता सम्प्रति भी थोड़ी है, इसके अधिक प्रमाण अपेत्तित नहीं। योरोप के सब से बड़े वैदिक विद्वान हढ़ता से कहते हैं कि अब भी अनेक मन्त्र हैं कि जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता। योरोप में अब तक जितना हुआ है वह शब्दों के अर्थों का अनुमान मात्र करने से अधिक नहीं है। इन से कोई सुसम्बद्ध विचार (मन्त्रों से) नहीं निकाले जा सकते। योरोप के सात प्रमुख प्राच्य विद्या-विशारहों के एक मन्त्र के निम्नलिखित अनुवाद, जो मूलार्थ से अत्यधिक भिन्न हैं चन्नस्वर से प्रमाणित करते हैं कि योरोप में वेदार्थ ज्ञान अभी स्थूल रूप में ही है।

उत बुवन्तु नो निद्ो निरम्यतश्चिदारत।

दधाना इन्द्र इद् दुवः ॥ ५ ॥

उत नः सुभगां अरिवींचेयुर्दस्म कृष्टयः

स्यामेन्द्रस्य दार्मणि ॥ ६ ॥

देखो - ऋग्वेद संहिता की मैक्समूलर की भूमिका पु॰ २२--२४।

- १. चाहे हमारे शत्रु कहते हैं, किसी और स्थान को चले जाओ तुम जो केवल इन्द्र की पूजा करते हो—
- २. अथवा चाहे हे बलशालिन, सारे लोग हमें भगवान कहें, हम सदा इन्द्र की रच्चा में रहें। इन मन्त्रों के सामान्य भाव के सर्म्बन्ध में मैंने विचारा कि कोई सन्देह ही नहीं हो सकता। यद्यपि इस में एक शब्द अर्थात् 'अरिः' व्याख्या योग्य है। फिर भी अनेक प्रकार की व्याख्याएँ जो. विविध विद्वानों ने की हैं, विलच्चण हैं। प्रथम यदि हम सायण को देखें, तो वह अर्थ करता है—

१ हमारे पुरोहित इन्द्र की स्तुति करें। हे शत्रुत्रो, इस स्थान से चले जात्रो श्रीर दूसरे स्थान से भी। हमारे पुरोहित (इन्द्र की स्तुति करें) वहीं जो सदा इन्द्र की स्तुति करते रहते हैं।

२ हे शत्रुश्चों के नाशक, शत्रु हमें घनवान कहे, कितना श्रधिक मित्र लोग ! हम इन्द्र की प्रसन्नता में हों।

प्रोफेसर विलसन ने सायण का पूरा अनुकरण नहीं किया। परन्तु उसने अनुवाद किया—

१ हमारा पुरोहित उत्सुकता से उस की स्तुति करता हुआ बोले, ऐ गालियाँ निकालने वालो यहाँ से चले जाओ और प्रत्येक दूसरे स्थान से (जहाँ वह पृजा जाता है)।

. २. हे शतुश्चों के नाशक, हमारे शत्रु कहें कि हम समृद्ध हैं। लोग हमें (वधाई दें)। हम सदा उस आनन्द में वास करें जो इन्द्र की (अनुकूनता से मिलता है)।

हैंगलाएस ने श्रतुवाद किया—

स्टीवन्सन ने अनुवाद किया-

१ इन्द्र की स्तुति में सब लोग पुनः सिमलित हो जायें। तुम दुष्ट और घृणा करने वाले सब यहाँ से चले जाओ और प्रत्येक दूसरे स्थान से, जब कि हम इन्द्र सम्बन्धी कृत्य को करते हैं।

१. ऋग्वेद शक्षाप, ह॥

२. लैटिन भाषा में होने के कारण इस का अनुवाद नहीं दिया गया।

## ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

२, हे रात्रु-नाशक (तेरी कृपा से) हमारे रात्रु भी हमारे साथ जो हम धनों के स्वामी हैं शान्ति से बोलें। तब क्या आश्चर्य है कि यदि दूसरे आदमी ऐसा करते हैं। हम सदा उस आनन्द को भोगें जो इन्द्र के आशीर्वाद से उपजता है।

प्रोफेसर बैनकी अनुवाद करता है--

१ श्रीर घृणा करने वाले कहें, वे हर एक दूसरे से अस्वीकृत किये गये हैं, अतः वे इन्द्र का उत्सव करते हैं।

२ और शत्रु और देश हमें प्रसन्न घोषित करें, हे नाशक यदि हम इन्द्र की रच्ना में हैं।

प्रोफेसर राथ ने 'अन्यतः' का ठीक अर्थ लिया है अर्थात् भिन्न स्थान को । और इस लिये उसने उस वचन का यही अर्थ किया होगा किसी दूसरे स्थान को गति करो अर्थात् उसी अर्थ में, जैसा भाव मैंने लिया है। तथापि कुछ काल पश्चात् S. V. ar उसने अपने आप को ठीक किया, और उन्हीं शब्दों का यह अनुवाद प्रस्तावित किया—"तुम किसी अन्य पदार्थ को भुला दो।"

प्रोफेसर बोल्लेनसन (श्रांरियएट एएड श्राक्सिडेएट वाल्यूम १, प्र० ४६२) ने किसी सीमा तक प्रोफेसर राथ के दूसरे श्रनुवाद का श्रनुसरण किया श्रोर प्रोफेसर बैनफी के श्रनुवाद को ठीक न समम कर यह दिखाने का यह किया कि "वह श्रन्य पदार्थ जो भुलाया गया है" कुछ श्रनिश्चित पदार्थ नहीं है, परन्तु इन्द्र के श्रतिरिक्त दूसरे सारे देवताश्रों की पूजा है।

यह है वेदार्थ की [योहप में ] अनिश्चित अवस्था जिसने प्रोफेसर मैक्समूलर को ऋग्वेद संहिता के प्राक्तथन में यह लिखने पर विवश किया है कि उसका अनुवाद अनेक स्थानों में शुद्धि योग्य हैं और शीघ्र या कालान्तर में इस का स्थान एक नए अनुवाद को लेना पड़ेगा।

श्रीर कि भारत में वैदिक विद्वत्ता इस से भी श्रधिक स्वल्प है, यह इसी बात से जाना जा सकता है कि स्वामी द्यानन्द के बारंबार के आह्वानों पर भी एक परिडत भी अभी तक ऐसा प्रकट नहीं हुआ जो वेदों से यह सिद्ध करे कि उन में मूर्ति पूजा पाई जाती है, यद्यपि वे सब इस बात को कह तो देते हैं। ऐसी अवस्था का यही कारण कहा जा सकता है कि इस देश में वेद अपितु उन के थोड़े २ भाग ही अर्थज्ञान के बिना कएठस्थमात्र किए जाते हैं। इस के विपरीत स्वामी द्यानन्द न केवल अपनी वाग्मिता से, न केवल अपने तर्क के असाधारण बल से अपने श्रोता गणों के मनों में विश्वास उत्पन्न करा देता है, प्रत्युत श्रपने वेदभाष्य में शब्दों के इतिहास को खोलता हैं, प्रत्येक बात की व्याख्या करता है कि जिस से वह अपने अर्थ पर पहुँचा है और शब्दों के जो अर्थ करता है उनकी पुष्टि में वेदों, ब्राह्मणों, निघएंद्र श्रीर पाणिनि के व्याकरण से प्रमाण देता है । संज्ञेप में कह सकते हैं कि अपनी महती विद्वत्ता की योग्यता से, अपनी धैर्य युक्त गवेषणा से, अपने काम के लिए श्रसीम प्रेम के द्वारा वह मानव-पुस्तकालय के इस सब से पुराने प्रन्थ में जीवन-प्राण का संचार कर रहा है। वह उन कठिनाइयों को प्रकटे करता है, जिन्होंने अब तक उस विद] की स्वतन्त्र उस्रति को रोक रखा है। वह भाषा विज्ञान की सारेग्न्य रूप से और भारतीय भाषा-विज्ञान की विशेष रूप से श्रचिन्त्य सेवा कर रहा है। उस के वेदभाष्य के एक हजार से ऊपर प्राहक श्रव तक बन गए हैं। श्रीर प्राह्कों की संख्या प्रति दिन उन्नति पर है। इन बातों का विचार करके और इस बात को जान कर, जैसा कि पंजाब सरकार श्रौर भारत में दूसरी प्रान्तीय सरकारें जानती हैं कि वेदों ने भारतीय इतिहास के सब उत्तरवर्ती युगों पर कैसा प्रबल प्रभाव डाला है, श्रौर उन का भारतीय वाङ्मय की प्रत्येक शाखा के साथ कैसा घनिष्ठ सम्बन्ध है, श्रौर उन के धार्मिक श्रौर सदाचार के विचारों ने भारतीय जाति के हृदयों में कितनी गहरी जड़ पकड़ी है, तथा उन के सनातन प्रभाणों से भारतीय जीवन के जनता सम्बन्धी श्रौर व्यक्तिगत सब काम नियमित किए जाते हैं, यह सब जान कर समाज विश्वास रखता है कि सरकार ऐसे महाशयों की दो हुई सम्मतियों के श्रनुकूल नहीं चलेगी कि जो श्रम्य गुणों के रखते हुए भी, समाज की नम्न दृष्टि में, वैदिक विद्वान होने की प्रतिष्ठा नहीं रखते।

अन्ततः समाज आज्ञा चाहता है कि उन मुख्य कारणों को संनेप से दोहराए कि जिन के आधार पर वह स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदमाध्य की पंजाब सरकार द्वारा संरच्चकता चाहता है, और आशा प्रकट करता है कि सरकार देश की दूसरी सब प्रान्तीय सरकारों को प्रेरित करे कि वे भी एक महान सुधारक और विद्वान के इस पुख्य और परोपकारयुक्त उरहें य के प्रोत्साहन में इस के साथ सम्मितित हों।

- (१) कि भारतीय भाषा-विज्ञान यदि यह स्वाभाविक गति पर चले, तो अवश्य ही वेदों के स्वाध्याय से प्रारम्भ होगा। श्रतः उन के ज्ञान का प्रचार श्रात्यधिक श्रामिष्ट है।
- (२) कि इस वेद्भाष्य के प्रकाश ने गवेषणा का भाव उत्पन्न कर दिया है। इस को प्रोत्साहन देना श्रेष्ठ है।
- (३) कि आशा की जाती है कि वेदों के सच्चे ज्ञान के प्रचार द्वारा हिन्दू मन मिथ्या विश्वास और गहरे गड़े हुए पच्चपात से मुक्त होगा।
- (४) कि स्वामी द्यानन्द का भाष्य उन सब से अधिक विश्वसनीय प्रमाणों पर समाधारित है कि जिन को योरोपीय विद्वान् भी प्रामाणिक स्वीकार करते हैं, परन्तु जिन्हें वे अभी तक पूर्णत्या प्रयोग में नहीं लाए।
- (५) कि वर्तमान परिस्थितियों में स्वार्थी ब्राह्मणों श्रथवा भ्रान्त सममने वाले योरोपियनों से निष्पच सम्मतियों की श्राशा नहीं हो सकती।

श्रतः पूरा श्रवसर मिलना चाहिए।

लाहौर २५ श्रगस्त १८७७ मैं हूँ जीवनदास निन्त्री आर्थसमाज

१. पं लेखरामकृत जीवन चरित पृ॰ ८०५ पर इस के स्थान में यह लिखा है— हम हैं जीवन दास वा सारदा प्रसाद महाचार्य इत्यादि । पत्र (२७)

पत्र (२७)

मुक्ते वकील हिन्द और यूनीवस्टीं कालिज पंजाब के [प्रकाशित] पत्रों से ज्ञात हुआ कि
कई एक साहवों ने मद्रचित वेद भाष्य पर प्रतिकूल अनुमित दी है। इसिलए मैं उनकी शंकाओं का
उत्तर क्रम से निवेदन करता हूं।

प्रथम उन शंकात्रों का उत्तर है जो मिस्टर आर ग्रिफ़िश एम. ए. प्रिंसिपल वनारस कालिज ने की हैं। पांच हजार वर्ष के लगभग से वेद विद्या जाती रही। महाभारत से पहले इस देश में सब विद्या ठीक २ प्रचरित थीं। परन्तु पीछे से पढ़ने पढ़ाने के प्रन्थ और रीति बिल्कुल बदल गई। तब से अबं तकवही अशुद्ध प्रणाली प्रचरित है। यद्यपि कहीं २ के लोग वेदादिक सत्य प्रन्थों को कंठ कर लेते हैं परन्तु उसके शब्दार्थ को कोई भी नहीं जानता। न ऐसे कोई व्याकरणादिक प्रनथ अर्थ सहित पढ़ाये जाते है जिन से वेदों का अर्थ हो सके। आधुनिक जो महीधर आदि के बनाए हुए वेद भाष्य देखने में आते है वे महाभ्रष्ट और अन्धकार के बढ़ाने वाले हैं। उनके देखने वालों को मद्रचित भाष्य ठीक समम में नहीं आता। मेरा भाष्य शुद्ध वेदार्थ बोधक और प्राचीन भाष्यों के ठीक अनुकूल है। वह तभी समक्त में आवेगा जब लोग प्राचीन भाष्यादिक प्रन्थों की सहायता स्वीकार करेंगे। मैंने प्रत्येक मन्त्र का अर्थ सत्य प्रतीत होने के अर्थ बहु प्राचीन आप्त व्याख्यानकारों का प्रमाण बहुत स्पष्ट पतेवार लिख दिया है। यदि प्रिक्षिथ साहब ने प्राचीन भाष्य वा मेरे लिखे प्रमाणों और उदाहरणों को पढ़ा होता तो कभी उन की ऐसी विरुद्ध सम्मति न होती जैसी कि उन्हों ने हाल में दी है। उवट सायण महीघर रावण आदि के रचे हुए भाष्य प्राचीन भाष्यों से सर्वथा विपरीत हैं। केवल इन्हीं भाष्यों का इलथा ऋंगरेजी में विलसन ऋौर माक्समूलर ऋादि श्रोफेसरों ने किया है। इसलिए मैं इन के भाष्यों को भी शुद्ध और न्यायकारी नहीं कह सकता। इन्हीं प्रन्थों के कारण प्रिफिथ साहब आदि लोग भी सन्देह मार्ग में पड़े हैं और मुम को यह कह कर दूषित करते हैं कि स्वामी जी ने अर्थ पलट कर अपने प्रयोजन के सिद्धार्थ दूसरे ही अर्थ नियत किये हैं। परन्तु उन का यह तर्क सर्वथा निर्मृत है। मैंने सर्वत्र ऐतरेय श्रौर शतपथ नामक ब्राह्मण प्रन्थ श्रौर निरुक्त तथा पाणिनीय व्याकरणादिक सत्य प्रन्थों का प्रमाण देकर प्रत्येक मन्त्र का सत्य २ अर्थ लिखा है। यदि प्रिकिथ साहिब उस को देखते तो कभी ऐसा न लिखते। विचार करता हूँ कि उनने मेरा भाष्य बिना ही देखे भाले श्रपनी मनमानी अनुमति प्रकाशित कर दी है।

मैं नहीं समक सकता हूँ कि प्रिफिथ साहब मेरा श्रम वृथा क्यों समकते हैं, जब कि मेरे भाष्य के लेने वाले हजार से अधिक बड़े २ सत्पुरुष हैं और प्रत्यह नवीन जनों के निवेदन पत्र मेरी पुस्तक लेने के विषय में बराबर चले त्राते हैं। मेरे प्राहकों में से बहुत से अच्छे २ संस्कृतज्ञ और बहुतेरे ग्रंगरेज़ी और संस्कृत में पूरे २ विद्वान हैं। प्रिफिथ साहब का यह ग्रंतिम लेख कि वेदों की ऋचाओं से

१. हमने यह पत्र दयानन्द दिग्विजयार्क, द्वितीयाङ्क पृ० ८२—८८ से लिया है । प्रतीत होता है दिग्विजयार्क के रचियता पं० गोपाल शास्त्री ने इसका अप्रेजी से ही माला में उलथा किया था। हम ने इस की अप्रेजी अनुवाद से कुछ तुलना कर ली है। कहीं २ हमने अनुवाद में शोधन भी किया है। शोक है कि श्री स्वामी जी का मूल पत्र लाहीर आर्यसमाज की असावधानी के कारण नष्ट हो गया।

२. कोष्ठगत पाठ स्रंग्रेजी स्रनुवाद से लिया गया है। CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

बहुत से देवताओं के नाम प्रकाशित होते हैं सो उन की यह बात मुक्त को तब प्यारी लगे और विद्वानों के समीप प्रामाणिक ठहरे जब वे उस मतलब की कोई ऋचा मुक्त को लिख भेजें—

पूर्वितिखत की पुष्टि में निम्नितिखित उद्धरण दिये जाते हैं--

(a) ऐच टी. कोलबुक रचित 'दी वेदाज' से '

- (b) चार्ल्स कोलमैन रचित "माईयालोजी आफ दी हिन्दूज" से र
- (c) पाद्री गैरट के अनूदित "भगवद्गीता" के परिशिष्ट से ब
- (d) मैक्समूलर रचित "हिस्टरी आफ ऐन्शएट संस्कृत लिटरेचर" पृ० ५६७ से

ऋग्वेद में जो प्रथम मंत्र है उसमें श्रिप्त शब्द श्राया है। उसका उल्था सी. एच. टानी साहब एम. ए. प्रिन्सिपल मेसीडेन्सी कालिज कलकत्ता ने श्राग के श्रर्थ में श्रपने उस प्रथमोक्त ध्यान

१. यद्यपि वेदों को शीघ दृष्टि से देखने से दैवता आं के नाम उतने दीख पड़ते हैं जितने कि स्तुति करने वालों के हैं, परन्तु पुराने व्याख्यान अन्यों के अनुसार कि जो ठीक आर्थ धर्म के विषयक हैं वे अनेक नाम देवता वा मनुष्यों और वस्तुओं के नहीं ठहर सकते अर्थात् वे सब तीन देवता आं ही के नाम से सम्बन्ध रखते हैं और फिर वे तीनों नामों की देवता भी पृथक २ नहीं है अर्थात् वे तीनों नाम एक ही परमेश्वर के हैं। निघए अर्थात् वेदों के शब्दकोष के अन्त में तीन नामावली देवता ओं की है। उनमें से पहिली में अपि के, दूसरी में वायु के, तीसरी में सूर्थ के पर्याय वाची नाम है।

निरुक्त के अन्त भाग में जिस में केवल देवताओं का वृत्तान्त है, यह दो बार कथन किया गया है कि देवता केवल तीन हैं (तिस्र एव देवताः) इन से अधिकतर अनुमान सिद्धान्त यह निकलता है कि केवल एक ही देवता है। यह बात वेद के अनेक वाक्यों से भी सिद्ध होती है और यही आश्रय निरुक्त और वेद के प्रमाण के अनुसार अति सुगम और संदोप रीति से अपृग्वेद के सूची पत्र में वर्णन किया है। इस से यह निर्णय होता है कि आयों के पुराने धर्म मार्ग की पुस्तक केवल एक ही ब्रह्म को गाती हैं और सूत्रों से भी ऐसा ही सिद्ध होता है।

- २. वेदों से ज्ञात होता है कि आर्थ ऋषियों का धर्म मार्ग केवल एक बड़े ब्रह्म के पूजन और श्रद्धा वा मिनत में था जिस को वे सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ और सर्वन्यापक जानते ये और जिसके सम्बन्धी गुणों को वे अत्यन्त पूजनीय वाक्यों में प्रगट करते ये और वे सम्बन्धित गुण उस की तीन प्रकार की शक्तियां हैं। उनमें से प्रथम उत्पादक, दूसरी पालक, तीसरी संहारक नाम से वर्णन की जाती हैं।
- ३. इन स्रित सत्य ध्यानों से हमें पूर्ण निश्वास होता है कि चारों वेद एक ब्रह्म को गाते हैं जो सर्वशक्तिमान् स्रान्त चिर स्थायी स्वयंभू संसार का द्योतक स्रोर पालक है। मैं इसके संग एक स्रोर ऋचा लिखता हूँ जिससे एक ही ब्रह्म निश्चित होता है। इस से इम स्रापकी शंका निवृत्ति करते हैं जानिये कि स्राये लोग स्वाभाविक बुद्धि से सदैव स्रदेत सेवी स्रर्थात् केवल एक ईश्वर को ही मानते थे।
- ४. उसी उनत ऋचा का एक चरण यह है जिससे निस्धन्देह केवल एक ही ब्रह्म का निरूपण होता है— यद्यपि हम उस को अनेक नाम से आवाहन करते हैं। ऋग्वेद मण्डल १ स्क्त १६४ की ४६वीं भ्रम्चा को देखो स्पष्ट लिखा है कि उसी एक परब्रह्म को ज्ञानवान् इन्द्र मित्र वक्ण और अप्रि के नाम से पुकारते हैं। कोई कहते हैं कि वह आकाश में सपन्न गरुत्मान् है और कोई २ बुद्धिमान् उसी के अप्रि यम मातरिश्वा आदि अनेक नाम मानते हैं।

से किया है कि अग्नि भी एक पदार्थ प्रतिष्ठा का वेद में है, परन्तु अग्नि को तत्त्व मान कर किसी प्राचीन अर्थि मुनि ने पृजन वा आवाहन नहीं किया और अग्नि शब्द का जो स्वाभाविक अर्थ आग का है वह केवल उन वाक्यों में लिया जाता है जिन में लौकिक सम्बन्धी बातें हैं परन्तु ऐसे वाक्यों में जहाँ ईश्वर की स्तुति प्रार्थना निवेदन आदि का प्रसंग होता है वहां अग्नि शब्द का अर्थ परमेश्वर का घटित किया जाता है यह अर्थ कुछ मैंने मिथ्या किल्पत नहीं किया। इस प्रकार के युक्तार्थ ब्राह्मण और निकक्त नामी अन्थों में बराबर वर्णन हो आए हैं।

अन्त पर टानी साहब की जो यह सम्मित है कि मैंने जो भाष्य बनाया है वह इस कारण से रचा है कि सायण और अंगरेजी उल्याकारों के भाष्य कट जावें अर्थात् अगुद्ध ठहरें, सो इस विषय में मैं कभी दूषित नहीं हो सकता हूँ। यदि सायण ने भूल की है और अंगरेजों ने उसको अपना मार्ग प्रदर्शक जान कर अंगीकार कर लिया तो भले ही करें, परन्तु मैं जान बूम कर कभी भूल का काम नहीं कर सकता। परन्तु मिध्या मत बहुत काल तक नहीं ठहर सकता, केवल सत्य ही ठहरता है और असत्य सत्यता के सन्मुख शीघ्र धुमैला हो जाता है। पण्डित गुरुप्रसाद हेड पण्डित ओरियंटल कालिज लाहौर ने यह बात कह कर कि स्वामी जी के भाष्य में कोई अगुद्धि छापे की कहे सो नहीं है, मेरे प्रत्येक आश्यय को दूषित ठहराया है। तथापि मैं उन को धन्यवाद देता हूँ। उनने मेरे आव्य के छापने वाले का विश्वास माना, यह क्या थोड़ी बात है। परन्तु मैं कहता हूँ कि उसका भी दोष वे मेरा ही जानें, परन्तु थोड़ा मुंह खोल कर कहें तो कैकियत् खुले नहीं तो क्या जान पड़े। और जो वे मुमे दूसरे स्थल पर यह दोष लगाते हैं कि अपने ही पंथ का प्रचार किया चाहता है सो मैं ऐसी बातों को मुन अति पश्चात्ताप से कहता और सममता हूं कि वे वेद विद्या से नितान्त अजान हैं। यदि उन्होंने प्राचीन भाष्यों का अवलोकन किया होता तो कभी ऐसा न कहते।

श्रीर तीसरा कलंक जो वे मुक्ते यह लगाते हैं कि इन्द्र मित्र श्रीर त्वष्टा श्रादि शब्दों के श्रर्थ स्वामी जी ने श्रपनी श्रोर से गढ़े हैं सो उनकी इस शंका के उत्तर में मैं उनको वेदभाष्य के विज्ञापन का प्रमाण देता हूँ श्रीर एक प्रति साथ ही इस उत्तर के ऐसी लगाये देता हूं कि जिस में उन शब्दों का यथावत वर्णन है। फिर भी इन सब बातों के परिणाम में मुक्ते निस्सन्देंह हो यही कहना पड़ता है कि उन में पुरातन संस्कृत विद्या श्ररयन्त ही कम है।

चौथा दोष जो वे मेरे व्याकरण में यह आरोपण करते हैं कि परस्मैपद के स्थान में आत्मनेपद लिखा है सो अब मैं इस बात का निश्चय कराने को कि स्वयं पण्डितजी व्याकरण का ज्ञान नहीं रखते कैयट [के भाष्य प्रदीप ] और नागेश, रामाश्रम आचार्य, अनुभूतिसरूप आचार्य आदि के प्रन्थों के कई एक प्रामाणिक उदाक्षरण पृथक् लिखता हूं। वे मेरे विद्धीमिह के प्रयोग को सर्वथा युक्त सममते हैं। वदामहें के शुद्ध प्रयोग के लिये मैंने पाणिनीय व्याकरण के प्रथमाध्याय के

१. यह विज्ञापन इसी प्रन्थ में पूर्णाङ्क २४ पर छपा है । यु॰ मी॰।

२. इससे आगे का कुछ पाठ दयानन्द दिग्विजयार्क में छूट गया है।

३. वेदानां यथार्थे भाष्यं वयं विदधीमहि - ऋग्वेदा । भा भूमिका ईश्वरपार्थनाविषय ।

४. एवं प्राप्ते वदामहे—ऋग्वेदादिमाध्यभूमिका वेदोत्पत्तिविषय । CC-0.ln Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

लाहौर, सं० १९३४]

पत्र (२७)

६३

तीसरे पाद के ४७ वें सूत्र का प्रमाण दिया है। श्रौर उन स्थलों की नकल भी हूबहू उन को भेज सकता हूँ जिस से मेरा किया प्रयोग कैसा शुद्ध है यह प्रतीति यथेच्छ हो जावेगी। परन्तु विना व्याकरण बोध क्योंकर उनके समक्त में श्रावे।

### [सत्र प्रमाण मूल भाषा लेख के साथ नष्ट हो गए।]

पाँचवीं शंका उनको मेरे एक छन्द के प्रयोग पर उपस्थित हुई है। वह ऋत्यन्त हास्यजनक है। जो मैं उसका इस संचित्र उत्तर में कुछ वर्णन करूं तो असार विस्तार होगा। रहा उनका समाधान सो उसके लिये पैक्नल सूत्र और उसके भाष्यकार हलायुधभट्ट का एक स्पष्ट प्रमाण पृथक् लिखता हूँ ! देख शान्त होवें।

### [ वह प्रमाण मूल भाषा लेख के साथ ही नष्ट हो गया । ]

ज्ञात होता है कि पण्डित हृषीकेश महाचार्य द्वितीय पण्डित ज्ञोरियंटल कालिज लाहौर सर्वत्र पण्डित गुरुप्रसाद जी के ही श्रतुगामी हुए हैं। इससे उन की शंकाओं का उत्तर वही समकता चाहिए जो पीछे लिख श्राए हैं। (उपचक्रे') शब्द में उनकी शंका एक पृथक् है। सो उन्हें यह बात सुमाने को कि मेरा श्रर्थ बहुत ही निर्मल है मैं उन्हें केवल पाणिनीय व्याकरण के प्रथमाध्याय के तीसरे पाद के ३० वें सूत्र का प्रमाण देता हूँ। उसको देख तुष्ट होवें।

अव रहे पण्डित भगवान दास असिस्टेस्ट श्रोफेसर संस्कृत गवर्नमेस्ट कालिज लाहौर। सो उनकी कोई नवीन शंका नहीं है। इसलिए जो मैंने ऊपर कहा वही बहुत है। वे भी तुष्ट होवें इति।

श्रन्त में मुक्ते प्रतीत होता है कि इन विरुद्ध लेखों का सारा बल देश के विद्यालयों में मेरे वेदमाध्य के लगाए जाने के विपरीत है। परन्तु मेरे श्रालोचक मारी मूल कर रहे हैं। मेरा वेदमाध्य महाभारत के पूर्व के माध्यों के प्रमाणों को देने के कारण श्रीर शेरोपीय विद्वानों के विचारों के विरुद्ध होने के कारण गवेषणा का एक ऐसा भाव उत्पन्न कर देगा कि जिससे सत्य प्रकट हो जायगा श्रीर हमारे विद्यालयों में सदाचार के भाव को उन्नत करेगा। श्रीर इसी कारण सरकार की संरच्नता का श्रिकारी है।

## [8,4]

# निवास-सूचना-विज्ञापन

िश्री

विदित हो कि सं० १९३४ श्राघे श्राषाढ़ से श्रावण मास के श्रन्त पर्यन्त पञ्चाब देश के श्रमृतसर नगर में पिएडत स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे।

२. यहां से अन्त तक का पाठ दिग्विजयार्क में नहीं है। इमने इस का अंग्रेजी से अनुवाद किया है।

३. ऋ । भाष्यभूमिका, ग्रङ्क (४, ५) संवत् १६३४।

६४

पत्र (२८)

(83)

(9) श्रार्घ्यसमाज' के सब सभासरों को स्वामी जी का आशीर्वाद पहुँचे। आगे सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की कृपा से प्रतिदिन श्रमृतसर आर्यसमाज का उत्साह वृद्धि को प्राप्त होता जाता है। १०० नियम का पुस्तक, (श्राय्योद्देश्यरत्नमाला) भी श्राज कल छप के जिल्द बन्ध के तैयार हो जावेगा। पांच सी पुस्तक लाहौर श्रीर पचास पुस्तक गुरुदासपुर को भेजे जावेंगे। श्रीर सम्वत् १९३४ भाद्र सुदी ६, गुरुवार ता० १३ सितम्बर सन् १८७७ प्रातःकाल ९३ की रेल में जालन्थर को जाना होगा, सो जानना। जो वेदभाष्य पर विरुद्ध सम्मति के उत्तर के पत्र व छपवा कर मुम्बई आदि में भेज दिये जावेंगे, तथा समाचार पत्रों में छपवा दिए जांए, तो बहुत अच्छी बात होगी। आगे आप लोगों की जैसी इच्छा हो वैसा की जियेगा। सं०१९३४, मिति भाद्रपद सुदी ३, सोमवार, ता०१० सितम्बर सन १८७७।

दयानन्द सरस्वती

[६]

# निवास-सूचना-विज्ञापन

88

विदित हो कि सं०१९३४ भाद्र मास के अन्त पर्यन्त पञ्जाव देश के जलंधर नगर में परिडत स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करंगे।

[9]

# निवास-सूचना-विज्ञापन

[84]

विदित हो कि सं० १९३४ आश्विन मास के अन्त पर्यन्त पंजाब देश के लाहौर वा रावलपिंडी नगर में पिख्डत स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे।"

(२)

## पत्र (२९)

[४६]

आर्च्यसमाज लाहौर के सब समासदों को नमस्ते विद्ति हो। इशागे अमृतसर से जाकर

१. श्रार्थ्यसमाज लाहीर।

२. इस का अंग्रेजी से मध्या में किया, हमारा अनुवाद पूर्ण सं० ४०, ४१ पर छपा है।

३. पं॰ लेखराम कृत जीव र् चिरत पृ॰ ३२६ पर उद्धृत। मूलपत्र लुप्त हो चुका है । [यह पत्र श्रमृतसर से लिखा गया था।

४. ऋ • भाष्यभूमिका, श्रङ्क (६) संवत् १६३४।

५. ऋ० भाष्यभूमिका, श्रङ्क (७) संवत् १६३४।

६. पं॰ लेखराम झत जीवनचरित्र प्॰ ३४१ पर उद्धृत । मूल पत्र ऋव लुप्त हो चुका है।

जालन्धर, सं० १९३४]

पत्र (२९)

EU

जालन्धर में पहुंचे गये। सरदार सुचेतसिंह जी के बाग में ठहरा हूं। आगे जो जो विशेष व्यवहार होगा सो लिखा जायगा। आगे सरदार विक्रमांसिंह जी बहुत अच्छे पुरुष हैं। वेदभाष्य का छठा श्रंक आ गया वा नहीं। मोहर लगाकर मोहर को अमृतसर भेज देना। सम्वत १९३४ मिति साद्र सुदी शनिवार, ता० १५ सितम्बर सन् १८७७।

जालन्धर

दयानन्द सरस्वती

[6]

पत्र (३०)

[86]

Jullundher
2nd October 1877<sup>2</sup>

My dear Pandit

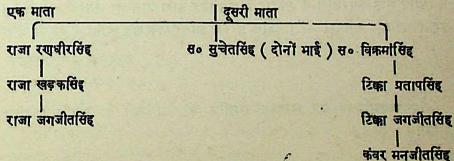
I believe you might have received one hundred copies of Aryodesh Ratun Malla from Umrit-Sar which according to my permission had been sent to your address by Munsookh Rai of Arya Samaj.

Please acknowledge them, if received duly and inform me of your sound health.

Daily lectures are given here and hope they will end with fair result. I will stop here about 9 or 10 days more and then visit next place or perhaps Lahore once more.

#### १. इनका वंश-वृत्त् निम्नलिखित है ।

महाराज निहालसिंह (कपूरथला रियासत के राजा



कपूरथला की राजगद्दी राजा रण्धीरिसंह के कुल में रही । एं स्वेतिसंह श्रीर स॰ विक्रमंसिह दोनों माई दूसरी माता के पुत्र थे। वे भी पीछे राजा की उपाधि से युक्त हुए। श्री स्वांमी जी उन्हीं के पास जालन्घर में उहरे थे।

- २. सुदी ८ चाहिए। पं॰ लेखरामकृत जीवन चरित में सुदी नहीं है।
- ३. [त्राश्विन कृष्ण १०, मङ्गल, सं० १६३४ ।] मूल पत्र त्रार्यसमाज लखनऊ में सुरद्गित है ।

जालन्धर, सन् १८७७ भ्राष दयानन्द सरस्वती कं पत्र और विज्ञापन

You can address me Jullundher city to the care of Sirdar Bikraman Singh of Kapoorthala wala. Please accept my Asheerbad. The said copies are to be sold at one and half annas each.

> Yours well wisher Pandit Swami Dayanand Sarusswatti Sd. द्यानन्द सरस्वती

Vedas Bhomika has now come to its end nearly and the text is to be commenced soon.

## भाषानुवाद

जालन्धर

२ अक्तूबर १८७७

मेरे प्रिय परिडत !

मैं विश्वास करता हूं कि अमृतसर से आर्थोद्देश्यरत्नमाला की एक सौ प्रतियां आप ने प्राप्त की होंगी, जो कि मेरी आज्ञानुसार आर्य्य समाज के मनसुखराय ने आप के पते पर्से मेजी हैं।

कृपया उन्हें स्वीकार करें, यदि वे समय पर मिलें और अपने अच्छे स्वास्थ्य से मुभे स्चित करें।

यहां व्याख्यान प्रतिदिन होते हैं और आशा है कि अच्छे परिणाम के साथ समाप्त होंगे मैं यहां ९ या १० दिन तक और ठहरूंगा और पुनः अगला स्थान देखूंगा या कदाचित फिर लाहौर जाऊं।

श्राप मुम्ने कपुरथला के सरदार विक्रमांसिंह द्वारा जालन्धर नगर के पते से लिख सकते हैं। क्रपया मेरा आशीर्वाद स्वीकार करें। पूर्वोक्त प्रतियां प्रति पुस्तक डेढ़ आना के दर से बेचनी हैं।

> श्राप का श्रमंचिन्तक . ह० द्यानन्द सरस्वती

वेदभाष्यभूमिका अब लगभग समाप्ति को आ रही है और वेद शीघ्र ही आरम्भ किया जायगा।

जालन्धर, सं० १९३४]

पत्र (३२)

EG

(3)

पत्रसारांश (३१) [विनय माधव जी ब्रानन्द रहो]

[8<]

१२ सितम्बर से यहां हैं र ..... प्रअक्तूबर १८७७ जालन्धर

[2]

पत्र (३२) [ डर्वू पत्र ]<sup>3</sup>

[86]

लाला मनसुख र [ाय जी आनिस्तत रहो] बाद आशीर्वाद के वाजे हो कि यहां खैरीयत हाल यह है कि अब हम तार कि द्वारा सूचना नहीं देंगे पीर को प्रातः काल यानी सुबह को [7] चलकर् 101 वर्जे श्रमृतसर के स्टेशन पर पहुँ चिंगे। रोज यानी तारीख़ १६ माह हाल [को तरफ रवाना हो जावेंगे। अगर मौक देंगे जो कुछ हात किताबों की निसबत को जुवानी कह दिया जावेगा । श्रा ौर से ग़लती से बावानारायग्रसिंह जी हुई है और नारा यिए सिंह जी के त्रा गया हो तो ... हजा के मकान का वन्दोवस्त वासते निस्फ रोज श्रव्वल [चा] हिए। एक रोज से ज्या [दा]

[ ... ] वरोरा की गुफतगू जुबानी होगी। सब [समासदों से आशी] वींद कह देना। बाक़ी खैरीयत है। ज्यादा आशीर्वाद।

१. पं० लेखराम कृत जीवन चिरत पू० ३४१ पर यही स्रिमिश्राय लिखा है । महाश्रय विनयमाधव कौन थे, इस का हमें ज्ञान नहीं हो सका । [ पूर्ण संख्या ४३ के पत्र में १३ सितम्बर को जालन्धर जाने का उल्लेख है । जीवनचिरित्रों में भी १३ सितम्बर को जालन्धर पहुँचना लिखा है । स्रतः सम्भव है यहां १३ के स्थान में भून से १२ लिखा गया होगा । यु. मी. ।] २. स्राश्विन कृष्ण १४, शुक्रवार, सं० १६३४ ।

३. श्रमृतसर निवासी पं॰ रुद्रदत्त जी ने यह पत्र श्रक्त्वर १६२६ में हमें दिया था। इस का श्राघा माग लुप्त हो चुका था। शेष भी बहुत जीर्णावस्था में है। हम ने इस के जीर्णाभाग जोड़ दिये हैं। इस के एक श्रोर उर्दू श्रौर दूसरी श्रोर उर्दू श्रौर श्रगरेज़ी दोनों हैं। उर्दू भाग ह शियों पर भी लिखा हुआ। है। लुप्त श्रंश की पूर्ति कहीं २ को श्रों में की गई है।

५. यहां से पृष्ठ की दूसरी स्त्रोर का लेख स्त्रारम्म होता है। इस पंक्ति का पूर्वार्ध पत्र फट जाने से लुम हो चुका है। यह पत्र जालन्धर से श्रमृतसर को लिखा गया है।

६. यहां से त्रागे का लेख हाशिये पर है।

# ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

जिल्नियर, सन् १८७७

, E

[८]

११ अक्तूबर १८७७ सन ईस्वी<sup>9</sup> राकम

[स्वामी]जी महाराज [ ऋंग्रेजी भाग ]

I will start for Umr[itsar ... on] the 15th inst. by m[orning train] at 7-30 A, M. and [ will reach there ] at about 10-30 [ A. M. ... ... ] Please keep a h[ouse there for ] my short stay of [ a night and half day] [sure]ly, for the occ[assion ... Accept] my best ashee[rbad. ... ... ] Sd. द्यानन्द स[रस्त्रतो]?

निवास-सूचना-विज्ञापन

[40]

विदित हो कि सं० १९३४ आश्विन मास के अन्त पर्ध्यन्त पञ्जाब देश के लाहौर वा रावलिपडी नगर में पण्डित स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे।

[७] विज्ञापर्ने [५१]

सबको विदित हो कि प्रथम वर्ष पूरा होने पर आ गया, और चारों वेद की भूमिका भी पूरी हो गई केवल थोड़ी सी छपने को बाकी है। अगले वर्ष से मंत्रभाष्य ही छपा करेगा इस विषय में विशेष प्रकाश करना यह है जितने २ पृष्ठों के मासिक पुस्तक अब निकलते हैं उतने २ ही ऋग् और

- १. म्राश्विन शुक्ल ५, बृहस्पतिवार सं० १६३४॥१६ म्रक्तूबर म्राश्विन शुक्ल ६ सोमवार को म्रमृतसर पहुंचे। पं० लेखराम जी ने विजयादशमी से म्रगले दिन म्रर्थात् १७ म्रक्तूबर १८७७ को लाहौर पहुंचना लिखा है (पू० ३१७)। पं० घासीराम जी ने एक म्रशुद्धि म्रिधिक की है। वे लिखते हैं—"जालन्घर से १७ म्रक्टूबर सन् १८७७ ई० को महाराज लाहौर पधारे।"इस पत्र से म्रीर जीवनचरितों के लेख से निश्चित होता है कि १५ का म्राधा दिन १६ म्रीर १७ की पादः तक भी स्वामी जी म्रमृतसर रहे।
  - २. जीए श्राघा मूलपत्र श्रव इमारे संग्रह में संख्या ५ पर सुरित्तत है।
  - ३. ऋ भाष्य भूमिका, ऋंक (८) संवत् १६३४।
- ४. यह विज्ञापन श्री स्वामीं जी महाराज का लिखाया हुन्ना प्रतीत होता है। यह ऋग्वेदादिमाष्यभूमिका के ह वे स्रांक के स्नादि में एक स्लिप पर छपा है। इस विज्ञापन का उल्लेख मार्गशीर्ष कृष्ण ८ बुधवार १६३४ पूर्ण संख्या ५१ [पृष्ठ ७१, ७२] में है। स्नतः यह विज्ञापन कार्तिक १६३४ के स्नन्त में लिखा गया होगा। यु०मी०।

यजु: इन दोनों वेदों के मंत्रभाष्य प्रतिमास दो श्रंक छपवाने का विचार है इसलिए ये भाष्यकार उक्त विषय में सब गाहकों की सम्मित जानना चाहता है कि कौन २ गाहक लोग दो २ श्रोर कौन २ एक २ श्रंक लेंगे श्रोर जिस २ गाहक ने श्रंब तक चन्दा नहीं भेजा है उन सभी को उचित है कि श्रंब रुपये भेजने में च्रणमात्र विलम्ब न करें, किन्तु दिसम्बर पूर्व २ जरूर २ भेज देवें श्रोर श्रागे के वर्ष में मासिक दो श्रंकों का जो कुछ नियत होगा उस का विज्ञापन पौष वा माघ मास में दिया जावेगा, परन्तु श्रागे सब गाहकों को वार्षिक चन्दा माघ वा फालगुन में जमा करना होगा श्रोर श्रंब वेदमाच्य बनाने का क्रम ऐसा रक्खा गया है कि सब श्रिभप्राय सब को सुगमता से खुल जावेगा। सो क्रम यह है कि एक मूलमंत्र की भूमिका, दूसरा मंत्र, तीसरा पदपाठ, चौथा पदार्थ श्रोर प्रमाण,पांचवा श्रन्वय श्रीर छठा भावार्थ ये क्रम से पृथक २ लिखे जायंगे जिसमें सब को निर्श्रमता से उक्त विषय विदित होने जायंगे। यह विज्ञापन इसलिये है कि इस को देख के श्रंपनी २ प्रसन्नता से स्वामी जी वा लाजरस कम्पनी बनारस के पास पत्र भेज के श्रंपना २ श्रमित्राय विदित करें।

[९] निवास-सूचना-विज्ञापन [५२]

विदित हो कि सं० १९३४ कार्तिक मास के अन्त पंर्यन्त पञ्जाब देश के लाहौर वा रावलिएंडी नगर में पण्डित स्थामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे ।

# [१] (विपक्षी-पत्र अशुद्धि-संशोधन) [५३]

श्राम्†

श्री गणेशाय नमः। श्रथाज्ञमतमञ्जनं ‡ प्रारभ्यते। रावलिष्ड्यियासी लचीरामाभिषो द्विजः कश्चित्। द्विजो विद्वान्। नत्वा गण्पत्यादीनज्ञमतस्य खण्डनं कुरुते॥१॥

तावनमध्यस्थ स्वामिसंपद्गिरिसंमत्या सम्मुखमस्मद्विवादो भवतानंगीकृतोतः पत्रोक्लेखने वयं प्रवृत्ताः सम । हे विद्वन यत्वयोक्तं शतपथत्राद्मणादिभागः पुराणमुच्यतेतो ऋष्टादशपुराणानि[न]पुराण-शब्दामिधेयानि इति । तदसत् । प्रमाणाभावात् । यतः पूर्वभीमासायामुक्तं-"वेदेषु त्राह्मणं विध्यर्थवाद-

\* ऋ॰ भाष्य भूमिका, श्रंक (६) संवत् १६३४।

† संवत् १९३४ के मध्य में स्वामी दयानन्द सरस्वती रावलिपराडी में थे। वहां एक परिडत लिखराम रहता था। उस ने स्वामी जी को नीले रंग के फल्स केप के पूरे ६ पृथों पर एक पत्र शास्त्रार्थ के लिए लिखा। श्री स्वामी जी ने उसी पत्र पर स्वलेखनी से उस की त्रश्राद्धियां त्रादि निकालीं। कहीं र उत्तर के लिए उपयोगी टिप्पणी भी लिख दी। वह संशोधित मूल पत्र भक्त ईश्वरदास जी एम० ए० ने मुझे दिया था। मैंने उसी मूल पत्र का कुछ भाग ऊपर छाप कर नीचे श्री स्वामी जी का संशोधन छापा है। तुलना करो पं० लेखराम कृत जीवन चरित्र ५० ३४६, ३४७। इस का मूल त्रत्र इसारे संग्रह में सुरिच्ति है।

‡ यहां जिन पर संख्या दी गई है, उनका क्रमशः संशोधन आगे दर्शाया गया है। यु॰ मी०।

भूतं, मन्त्रस्तु कर्माक्रभूतद्रव्यदेवतास्मारकः इत्यत्र ब्राह्मण्स्य वेद्त्वमवसीयते । श्रत एव शतपथादीनां वहुषु वाक्येषु "अनुस्वारस्य १९ छन्द्सीति, सूत्रेण १९ कारादेशो दृश्यते । तथा च छन्दःशव्देन वेद एवोच्यते तत्रैव तहर्शनात् नान्यत्र । वेदे तु छन्दो लच्चणाभावेनापि छन्दः शब्दश्योगात् । तथा च पूर्वमीमांसासूत्रम् "स्यादाम्रायधर्मित्वाच्छन्दसि नियमः, इति । छन्दोवत् सूत्राणि इति च । छन्दो १९ सि जिह्नरे तस्मादिति श्रुतेश्च ।।

अन्दोत्ताच्यामाने विश्वासाने विश

(१) [श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का संशोधन] (५०)

१ श्रासभ्यकथन। २ अर्थ से अशुद्ध। ३ लिचि०। ४ एक मात्रा अधिक होने से क्ष्रोक शुद्ध नहीं।२७ मात्रा होने में २८ मात्रा करना अशुद्ध है। ५ संपत्णिर जी का मध्यस्थ होना असम्भव है, विद्या कम होने से। ६ यत्त्वयोक्तं। ७ इस की टीका में। ८ वेद्व्याख्यानत्वम्। ९ अपाणिनीयम्। १० शब्देन। ११ अशुद्ध है एवार होने से। १२ पण्डित इन का अर्थ नहीं जानते। १३ पि।१४ अशुद्ध है। १५ नहीं है। ह्य्यहोर्भश्छन्दसीति। १६ पण्डित इन का अर्थ नहीं जानते। १७ ब्राह्मणानीतिहा०। १८ पण्डितों ने इस का, और इस का अर्थ नहीं जाना है। १९ पण्डितों ने इस का भी अर्थ नहीं जाना है। २० यह बात अशुद्ध है। २१ —२२ पण्डितों ने इस का अर्थ नहीं जाना है। २० यह बात अशुद्ध है। २१ —२२ पण्डितों ने इस का अर्थ नहीं जाना है। २० निति०। २४ —णानि खि—। २५ श्रुतेः। २६ —स्मृतेः। २७ —जरतीयन्या०। २८ इसमें कहीं नहीं है। २९ पाषाणिलोहमणिमृन्मया। ३० सोम्या।

[c] q\(\frac{1}{3}\) [4\(\frac{1}{3}\)

Rawalpindi 28th November, 1877.\*

Dear Pandit

The accompanying is a specimen of my Veda Bhashya (which is to be commenced and published soon) showing the style and made of dividing the interpretations of the texts into peculiar ways for the fecility of its

<sup>\* [</sup>मार्गशीर्ष कृष्ण ८, बुधवार, सं० १६३४] मूल पत्र प्रो० धीरेन्द्र जी वर्मा के संग्रह में सुरद्धित है।

रावलपिगडी, सं० १९३४]

पत्र (३३)

90

readers. I will do my best to disclose all the most difficult points into plain Sanskrit and Devanagari so that even the boys of insufficient knowledge will be able to understand them without any help.

Please see it yourself first and then circulate it in Ahmedabad

and Bombay etc., for approval of the people.

I hope you loose no time in doing so and in communicating your final opinion to me either to keep the style or change into another better one.

The work of text Bhashya has been set up and is under my pen every day so the delay in answer expressive of your and others opinions like that of Moreshwar Kunte is not advisable. Address me Rawalpindi to the care of Post Master only. I have also given a notice on my Veda's Bhoomika Part No. 9 for the present month regarding the two issues of Rig and Yaju from the next year 1878 for learning the subscribers wishes for their acceptance and another notice for fixing subscription etc., and as settled will be published again in the next month. Please reply my other letter too and accept my best Asheerbad. I am very glad to hear that you visit Bombay A. Samaj every fortnight and deliver a beautiful lecture there on different subjects with the view of public interest. Hoping you are well and rejoicing.

Your well wisher
Pt. Swami Dayanand Saraswatti.
द्यानन्द सरस्वती

To

R. R. Gopal Rao, Hari,

D. Mukh, Torman.

[ भाषानुवाद ]

रावलपिएडी २८ नत्रम्बर १८७७<sup>२</sup>

प्रिय परिडत !

साथ में वेदमाध्य का (जो शीघ्र ही आरम्भ तथा प्रकाशित होने वाला है) नमूना मेज रहा हूँ जिसमें पाठकों की सुविधा के लिए वेदों के भाष्य के विभाग की पद्धति विचित्र ढङ्ग से दिखलाई गई है। सभी कठिन स्थलों को सरल संस्कृत तथा देवनागरी में खोलने का शक्ति भर यह करूंगा। जिससे

१. यह नोटिस (=विज्ञापनं) पूर्ण संख्या ४८ पर छपा है। यु॰ मी॰।

<sup>.</sup> २. मार्गशीर्ष कृष्या ८, बुधंवार, सं० १६३४ । यु० मी० ।

श्रल्प ज्ञान वाले बच्चे भी बिना किसी सहायता के उसे समझ सकेंगे । कृपा करके पहले इसे स्वयं देखिए, फिर इसे जनता की सम्मित श्रीर श्रनुमोदन के लिए श्रहमदाबाद श्रीर बम्बई श्रादि में प्रचारित कीजिए । मैं श्राशा करता हूँ कि श्राप ऐसा करने श्रीर इस पद्धति को रखने या इसे श्रीर श्रच्छी बनाने के लिए परिवर्तन के विषय में श्रपनी श्रन्तिम सम्मिति देने में विलम्ब न करेंगे।

वेदमान्य का कार्य आरम्भ हो चुका है और प्रतिदिन लेखन कार्य चल रहा है अतः आप तथा मोरेश्वर करटे जैसे अन्य व्यक्तियों के सम्मित सूचक उत्तर में विलम्ब उचित नहीं। मेरा पता—'द्वारा पोस्ट मास्टर रावलिएडी' केवल इतना ही लिखिए। अगले वर्ष १८७८ से ऋग और यजुः हो अङ्क निकालने के विषय में प्राहकों की स्वीकृत्यर्थ इच्छा जानने के लिए इस मास की अपनी भूमिका आग ९ में एक सूचना' निकाली है और दूसरी सूचना चन्दा निश्चित करने के लिए, जैसा निश्चित होगा पुनः अगले मास में प्रकाशित की जायगी। कृपया मेरे अन्य पत्र का भी उत्तर दीजिए और आशीर्वाद स्वीकार कीजिए। मुक्तेयह जान कर प्रसन्नता हुई कि आप वम्बई आर्यसमाज में हर पन्न में जाकर जनता की हित की दृष्टि से विभिन्न विषयों पर सुन्दर व्याख्यान देते हैं। आशा है आप आनन्द सक्तुशल होंगे। आपका शुभिचन्तक

ह० द्यानन्द सरस्वती

सेवा में--- आर आर गोपाल राव, हरि देशमुख, तोरमाण

[9]

पत्र [३४]

[44]

Rawal pindi 6th December, 1877.

Dear Pandit,

Yours of the 30th ultimo, is to hand. To correct Proof-sheets in Hindi must be considered my own duty, and I will do that twice or thrice with my own hand every month.

You will have no difficulty at all in conducting this part of the business but do other things which are performable by you only. I think Baboo H. Chinta Mani is well qualified and clever enough to superintend the work, but tell me first, what you like to do in this case. I have not given contract of the work to Dr. Lazauras for any fixed length of period, but his charges have been settled as follow—

(Monthly account for 3100 copies)

१. यह सूचना (विज्ञापन) पूर्ण संख्या ४८ पर छपी है। यु० मी०।

२. [मार्गशीर्व शुक्ल २, बृहस्पतिवार, सं० १६ ३४।] मूल पत्र प्रो० घीरेन्द्र वर्मा के संग्रह में सुरिच्ति है।

For office allowance and agency Rs. 30/-/- per month.

The list of subscriptions paid and unpaid with full particulars you will get afterwards at the close of the current year.

I will issue Yajoor Yeda too; if God wished. At what rate per ream the papers like that of my Sanskar Vidhi is procurable in Bombay? Hoping you are well and rejoicing. My asheerbad to you. Address me still Rawalpindi.

Yours well wisher.

Pt. Swami Dayanada Sarswatti. Sd. दयानन्द सरस्वती

To

R. B. Gopal H. Desh Mookh Sarma.

P. S.

What will be the printing rate of such size of copies in equal number, as Dr. Lazauras prints at present, in Bombay, if I supply paper on my own cost separately.

If you find the printing cheaper done by contract, let the work be published in Bombay and there is no objection at all from my side.

•[भाषानुवाद]

रावलपिएडी ६ दिसम्बर १८७७

प्रिय परिडत!

आपका गत ३० ता० का पत्र हस्तगत हुआ। हिन्दी के प्रूफ शोधना मेरा ही कार्य सममना चाहिये और मैं उसे प्रतिमास दो तीन बार अपने हाथ से करूंगा। आपको यह कार्य करने में कोई कठिनाई न होगी परन्तु आप कुछ दूसरे कार्य भी कीजिए जिन्हें आप ही कर सकते हैं। मेरे विचार में बाबू ह० चिन्तामणि बहुत योग्य और कार्य के निरी ज्ञण में चतुर हैं, परन्तु पहले आप सुमे यह बतलाइयें कि आप इस विषय में क्या करना चाहते हैं। मैंने डा० लाजरस को किसी निश्चित अविध के लिये प्रन्थ का ठेका नहीं दिया है। किन्तु चार्ज निम्न प्रकार से तय हुआ है।

( ३१०० प्रतियों का मासिक ब्यूय ) वे छपाई ख्रौर कागज के लिये ६ ॥॥॥ प्रति प्रष्ठ चार्ज करते हैं———१६१ ॥॥॥॥ । टाइटल पेज की छपाई मोड़ाई खोर सिलाई सहित १५ प्रति सहस्र की दर से ४६ ॥। दक्षर ब्यय खोर एजेंसी के ३०) प्रति मास

१. मार्गशीर्ष शुक्ल २, बृहस्पतिवार सं० १६३४ । यु० मी० ।

प्राप्त और अप्राप्त चन्दे की लिस्ट पूर्ण विवरण सहित चालू वर्ष के अन्त में आप के पास भेज दी जायगी।

यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो मैं यजुर्वेद भी प्रकाशित करूंगा। मेरी संस्कारविधि के प्रकार का कागज बम्बई में प्रति रीम किस भाव से मिल सकता है। आशा है आप सकुशल होंगे। आप को मेरा आशीर्वाद। अभी मुसे पत्र रावलिए डी के पते पर ही लिखें।

श्रापका शुभचिन्तक ह० द्यानन्द्र सरस्वती

सेवा में--गोपाल हिर देश मुख शर्मा

पुनश्च-यित मैं कागज पृथक अपना दूँ तो बम्बई में वैसे ही आकार और उतनी ही संख्या में प्रतियों
की जितनी कि आजकल डा॰ लाजरस छापते हैं, छपाई की दर क्या होगी। यित आपको छपाई ठेके

हारा उससे सस्ती पड़े तो प्रन्थ को बम्बई में ही छपने दीजिये। इसमें मुक्ते कोई आपित नहीं।

[30]

पत्र (३५)

[५६]

Rawal pindi 13th December, 1877

Dear Pandit Ji,

In continuation of my yesterday's letter, I again inform you about something more which I remembered afterwards.

I want to have a sample of the paper which to be used and selected for the Veda-Bhashya and also you shauld bear in mind that the said Bhashya must be published in three different types according to my Ms. i.e., M. large, round and small bands.

Please write to Baroda subscribers to pay up their subscriptions without further delay.

Yours well wisher Pt. Swami Dyanand Sarusswati

द्यानन्द्र सरस्वती

To

R. B. Gopal Rao H. Desh Mookh. Sarma. [भाषानुवाद]

रावलपिएडी १३ सितम्बर १८७७

प्रिय परिंडत जी

अपने कल वाले पत्र के सिलेलिले में कुछ अन्य बातों के विषय में आप को पुनः सूचित करना चाहता हूँ। जिसका मुक्ते बाद में स्मरण आया।

१. [मार्गशीर्ष शुक्त ८, बृहस्पतिवार, संवत् १६३४।] मूल पत्र प्रो॰ घीरेन्द्रजी वर्मा के संग्रह में सुरिच्तित है।

वेदभाष्य के लिए जिस कागज का प्रयोग निश्चित हुआ है मैं उसका नमूना देखना चाहता हूँ। आपको यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि उक्त भाष्य मेरे हस्तलेखों के अनुसार अर्थात् 'एम लार्ज राउएड' और 'स्माल' इन विभिन्न टाइपों में अवश्य प्रकाशित हो।

कृपया बड़ौदा के प्राहकों को लिख दें कि वे श्रौर देर किये बिना श्रपना चन्दा मेज दे। श्रापका श्रुभचिन्तक ह० द्यानन्द सरस्वती

सेवा में--- आर० वी० गोपाल राव हरि देशमुख शर्मा

[2]

पत्र (३६)

[49]

Jehlum 27 Decr. 1877.

Dear Pandit Jee.

I recd/ your delightful letter of the 22nd inst, this morning and am extremely glad to read all the particulars stated therin.

I have arrived at Jehlum to-day the 27th' current and intend to stop here about a fortnight at least. You can remit the money to me freely according to my above shown address, remarking to the care of Post Master only but please don't send me tickets as you did before, because I find some difficulty in changing or getting money for them. Better send currency Notes or money-order, which are both safest ways indeed. Hoping you are well and rejoicing—

yours well wisher Pandit Swami Dayanand Sarusswati Sd. द्यानन्द सरस्वती

[भाषानुवाद]

जेह्तम २७ दिसम्बर १८७७

प्रिय पिडत जी !

श्राप का २२ तारीख का श्रानन्ददायक पत्र श्राज शातः काल मिला श्रीर उसकी सब बातों को पढ़कर मुक्ते श्रत्यन्त श्रानन्द हुश्रा।

मैं आज २७ तारीख को जेहलम पहुंचा हूं और कम से कम यहां पन्द्रह दिन तक रहने का

१. [ पौष कृष्ण ८, वृहस्पतिवार, सं॰ १६३४। ] पं॰ रामाधार वाजपेयी को लिखा गया। मूल पत्र त्रार्थ समाज लखनऊ के संग्रह में सुरिक्ति है।

२. यं ० लेखराम कृत जीवन चरित पृ० ३४६ पर लिखा है कि श्री स्वामी जी ३० दिसम्बर को जेइलम

30

विचार रखता हूँ। त्राप मुमे उपरितिखित पते पर केवन पोस्ट मास्टर द्वारा तिख कर खुले तौर पर क्षिया भेज सकते हैं, परन्तु पूर्ववत् मुमे टिकट न भेजें, क्योंकि उनके बदलवाने या उनके स्थान में क्षिया लेने में मुमे कष्ट होता है। अञ्जा है कि कर्रन्सी नोट या मनीआर्डर भेजें जो निश्चय ही दोनों अत्यन्त सुरचित प्रकार हैं। आशा है, आप अञ्छे और प्रसन्न होंगे।

त्रापका शुभचिन्तक

ह० द्यानन्द सरस्वती

[90]

पत्र (३७)

[44]

Jehlum 28/12/77.°

Dear Pandit Jee,

Please tell me how many copies of Sandhio-Pasan you wish to have for sale in Lucknow? These are the best copies with good translation in *Deva-Nagri Bhashya* paragraph by paragraph one after the other Orderly in improved and enlarged edition. The average price per copy has not been fixed as yet, because the said book is still under Press, but on its coming out, every thing will be settled and decided with good will.

However I can suggest you so much that the price would be under half rupee per copy. And this would be an excellent work for the

Arya-people indeed.

It is raining here since yesterday evening, so heavily that in the *Kothi* where I am sitting now and writing this letter to you, is all leaking over, except a few hand of floor inside.

Hoping you are well and rejoicing.

Yours well wisher Pandit Swami Dayanand Sarusswatti Sd/ द्यानन्द्सरस्वती

पहुंचे। इसी का श्रमुकरण करते हुए पं॰ घासीराम जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र पृ॰ ४५० पर लिखा है कि "३० दिसम्बर १८७७ को महाराज रावलपिएडी से गुजरात जाने के विचार से शिकरम पर सवार होकर ३१ दिसम्बर को जेहलम रेल्वे स्टेशन पर पहुंचे।" पं॰ लेखराम जी तो सामग्री के श्रमाव से ठीक तिथि नहीं जान सके, परन्तु इस पत्र के मुद्रित हो जाने पर भी पं॰ घासीराम जी ने इस का प्रयोग करके तिथि को ठीक नहीं किया।

१. [ पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, सं० १६३४। ] मूल पत्र आर्यसमाज लखनक के संग्रह में सुरिच्छत है।

## [भाषा नुवाद]

जेहलम

25-22-001

प्रिय परिडत जी !

कृपया मुक्ते वतायें कि लखनऊ में विक्री के लिये आप सन्ध्योपासन की कितनी प्रतियौं चाहते हैं ? यह सर्वोत्तम प्रतियाँ हैं। अनुवाद अच्छा है। और एक के पीछे प्रत्येक दूसरे वाक्य का क्रमशः देवनागरी में भाष्य है। यह संस्करण संशोधित और परिवर्धित है।

प्रति पुस्तक का श्रनुमान से मूल्य श्रभी नहीं रखा गया, क्योंकि पूर्वोक्त पुस्तक श्रभी यन्त्रालय में है, पर इस के निकलने पर प्रत्येक बात श्रुभ भाव से स्थिर श्रौर निश्चित की जायगी।

फिर भी मैं श्रापको इतना बता सकता हूं कि मूल्य प्रति पुस्तक श्राठ श्राने से न्यून होगा, श्रीर यह निस्सन्देह श्रायों के लिये श्रत्युत्तम पुस्तक होगा। कल सायंकाल से यहाँ इतने वेग से वर्षा हो रही है कि जिस कोठी में श्रव वैठा हूँ श्रीर श्राप को यह पत्र लिख रहा हूं; श्रन्दर दो चार हाथ छोड़ कर सब स्थानों से चू रही है।

श्राशा है त्राप अच्छे श्रीर प्रसन्न होंगे।

श्रापका शुभचिन्तक ह० दयानन्द सरस्वती

[33]

पत्र (३८)

[49]

Jehlum 4th January 1878<sup>2</sup>

Dear Pandit Jee

The Sandhio Pasan Panch Maha Juggya Bidhi with easy translation in Bhasha, is now ready in its completion for use and you will soon get 100, one hundred copies of it from Benares Press within a short time.

The price per copy has been published on their covers and If you wish to have more of them, you can be furnished with, in required number on your further request. I believe you would have recd/ my other letters also in due time. Hoping you are well with your children and family.

Yours well wisher Pandit Swami Dd. Sarusswatti Sd/ द्यानन्द सरस्वती

Address me Jhelum city to the care of Post Master only.

१. पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, सं० १६३४। यु० मी०।

२. [पौष शुक्ल १, शुक्रवार, सं॰ १६३४।] पं॰ रामाधार वाजपेयी को लिखा गया मूल पत्र आर्थ समाज लखनऊ के संग्रह में सुरिव्ति है।

## [भाषानुवाद]

े जेहलम ४ जनवरी, १८७८

प्रिय परिडत जी !

सन्ध्योपासन पञ्चमहायज्ञविधि भाषा में सरलार्थ युक्त श्रव काम श्राने के लिए तय्यार हो

गई हैं, और आप को इस की १०० एक सौ प्रति शीघ्र ही बनारस प्रेस से पहुँचेगी।

मृत्य प्रति पुस्तक का उस के मुखपूष्ठ पर छाप दिया गया है, और यदि छाप को अधिक की आवश्यकता हो, तो आगे पत्र आने पर अभीष्ठ संख्या में भेजी जा सकती है। मैं विश्वास करता हूँ कि मेरे दूसरे पत्र भी आप को उचित समय पर मिल गये होंगे। आशा है आप सपरिवार कुशल सहित होंगे।

आप का शुभचिन्तक ह० द्यानन्द सरस्वती

मुमे केवल इस पते से लिखें — द्वारा पोस्टमास्टर जेहलम नगर।

[93]

पत्र (३९)

[60]

Jehlum 6th January 1878

Dear Pandit Jee

Received your letter of the 3rd. inst. enclosing a currency Note for Rs. 10 ten only which I accepted with thanks. Nothing is new here worthy to be stated, but I hope sincerely that an Arya-Samaj will also be made here within a short time. Hoping you are well with your children. Please accept my best Asheerbad,

Yours well wisher Pandit Swami Dd. Saruswatti

Sd. द्यानन्द सरस्वती

[भाषानुवाद]

जेहलम ६ जनवरी, १८७८

प्रिय परिडत जी !

श्रापका ३ तारीख का पत्र जिस में १० रुपये का कर्रन्सी नोट था, मिला। उसका धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किया। यहां लिखने योग्य कोई नया समाचार नहीं है। परन्तु मैं शुद्ध हृदय से श्राशा

१. पौष शुक्ल १, शुक्रवार, सं० १६३४। यु० मी०।

२. [ पौष शुक्ल ३, रिववार सं० ११३४ | ] पं० रामाधार वाजपेयी को लिखा गया। मूल पत्र श्रार्थ समाज लखनऊ के संगृह में सुरिच्चित है । जेहलम, सं० १९३४]

पत्र (४०)

30

करता हूँ कि थोड़े ही काल में यहाँ भी एक आर्य्यसमाज बनाया जायगा। आशा है आप स्वसन्तान सहित कुशलपूर्वक होंगे। कृपया मेरा हार्दिक आशीर्वाद स्वीकार करें।

> श्राप का शुभचिन्तक ह० दयानन्द सरस्वती

[2]

पत्र(४०)

[ 8 9 ]

सुखस्वरूप परिडत कालूराम जी प्रसन्न रहो।

कुशल पत्र आपका मि० पौ० कु० ७ का हमारे पास पहुँचा। पढ़ कर मन आनन्द हुआ। आगले वर्ष अर्थात् सम्वत् १९३५ से दो २ अङ्क ऋक् और यजु प्रति मास में आपके और समर्थदान के नाम भेजे जावेंगे। हम धन्यवाद देते हैं कि आप लोग ऐसी प्रीति से वेदभाष्य का सहाय करना चाहते हैं। परमात्मा आपका कल्याण करेगा। पुस्तक सन्ध्योपासना भाषा टीका सहित बहुत उत्तम छपवाया है। २५ पन्नीस जिल्दें आपके पास बनारस यन्त्रालय से शीघ्र पहुंचेगी। रसीद भेज देना। आगे जो पुस्तक नवीन होगी भेजी जायगी। सत्य[ार्थ] प्रकाश का दूसरा माग नहीं छापा गया है विचार था परन्तु छपा नहीं। रावलिएएडी में आर्य समाज हो गया। इस स्थान (जेहलम) में भी होने की आशा है। पञ्जाव में बहुत ठिकाने समाज बन गये हैं। वेद धर्म की बड़ी उन्नति है।। शीत और पाला बहुत पड़ता है। वर्ष भी खूब हो चुकी है। अप्रे कि बहुना। समर्थदान आदि को आशीर्वाद पहुँचे। इति० मि० पौ० शु० ४'। ता० ७ जनवरी स० ७८ ई०।

ह० द्यानन्द सरस्वती

पता—जेहलम वा गुजरात के डाक खाने की मार्फत स्वामी जी के पास पहुँचे। इतना ही लिखना काफी होगा।

[80]

# निवास-सूचना-विज्ञापन

[६२]

विदित हो कि सं० १९३४ पौष मास के अन्त पर्यन्त पञ्जाब देश के वजीराबाद नगर में पर्याखत स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी निवास करेंगे।

१. संवत् १६३४ जेइलम से।

२. यह पत्र हमारी प्रार्थना पर पं॰ रामसहाय जी महोपदेशक आ ॰ प्र॰ स॰ श्रजमेर ने ता॰ २२-५-३३ को दो और पत्रों सहित हमारे पास मेजा था। मूलपत्र अब हमारे संप्रह में सुरिच्चत है।

३. ऋ॰ भाष्यभूमिका, ग्रंक (१०) संवत् १६३४। शिष्ट॰ भाष्यभूमिका तथा वेदभाष्य के ग्रंक नियत समय पर नहीं निकलते थे, ग्रतः श्रागे से उन पर दी गई सूचना देना ग्रनावश्यक समका गया।



#### Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

पत्र(४१)

गुजरात, सन् १८७७

[६३]

Gujrat 14 January 1878

Dear Pandit Jee

Your welcome note of the 9th inst. duly came to hand and I

uuderstood all what you stated therein.

Your good wishes for learning the Veda Bhashya's subscription for the current year will soon be fulfilled. The only delay is that with the consent of the Bombay people I am now making some better arrangements for the Bhasya's publication both in paper and type. All this will soon be finished with united efforts of us and a notice will be given in the '11th or 12th part of the Veda Bhashya for the public information on the matter. The subscription for this year is surely to be fixed with some reduction and the people would be able to buy one or both numbers of the Rig and Yaju easily.

I dare say, that all the subscribers for this year would be fully satisfied to find good paper and fine order of interpretation, which are very necessarily required to discover the real sense of the Mantras. On my returning from the Punjab, I will tell you whether and what time I will be able to visit Lucknow but it would be done so sooner or later once again certainly. Hoping you are well and rejoicing. Accept my best Asheerbad and beleive me your ever well wisher.

Pandit Swami Dd. Sarusswati

Sd / द्यानन्द सरस्वती

[भाषानुवाद]

गुजरात १४ जनवरी, १८७८

प्रिय पिंडत जी !

आपका ९ तारीख का ग्रुमं समाचार डिचत समय पर मिला और आपका लिखा सब विषय समभा।

१. [ पौष शुक्क १०, सोमवार, सं० १६३४ । ] पं० रामाधार वाजपेयी को लिखा गया । मूल पत्र स्रार्थसमाज लखनक के संब्रह में सुरिच्चत है।

गुजरात, सं० १९३४]

पत्र (४२)

प्रचित्त वर्ष के तिये वेदमाध्य का चन्दा जानने की आपकी शुद्ध भावना शीघ्र पूर्ण की जायगी। देरी केवल इस वात की है कि मुम्बई के लोगों की सम्मित से मैं अब भाष्य के छपने का, कागज और टाइप दोनों की दृष्टि से, अच्छा प्रबन्ध कर रहा हूँ। हम सब के इकट्टे परिश्रम से यह सब शीघ्र समाप्त होगा, और इस विषय पर जनता के ज्ञान के लिये वेदमाध्य के ११ वें वा १२ वें अंक में एक विज्ञापन दिया जायगा। इस वर्ष का चन्दा निस्सन्देह कुछ घटा कर रखा जायगा, और लोग सरलता से ऋग् या यजु: के एक या दो श्रंक खरीद सकेंगे।

मैं निश्चय से कहता हूँ कि इस वर्ष के सब प्राहक अच्छा कागज और भाष्य का सुन्दर कम देख कर, जो मन्त्रों के यथार्थ अर्थ जानने के लिये बड़ा आवश्यक है, पूर्ण सन्तुष्ट होंगे। पंजाब से लौट कर मैं आपको लिखूंगा कि क्या मैं लखनऊ देख सकूंगा और कब देख सकूंगा, पर यह आगे या पीछे एक बार फिर निश्चय ही होगा। आशा है आप अच्छे और आनन्द में होंगे। मेरा हार्दिक आशीर्वाद स्वीकार करें और मुक्ते जानें—

त्र्यपना शुभचिन्तक ह० दयानन्द सरस्वती

[3]

पत्र [४२]

[६४]

Gujrat, 16th January, 1878.

Dear Baboo,

With the consent and united opinion of Moonshi Inder Mani (a famous learned of Arabic and Persian) and other experienced persons of N. W. provinces, I feel necessity to inform you that the Veda-Bhashya must not be translated into English or Vernacular before reaching its completion because if translated into English or Urdu then it will weaken the hearts of the people to study Sanskrit, thinking that they would be able to gain their object either by English or Urdu without caring for Sanskrit and Bhasha. Under such circumstances, we need not try to translate the work into English or Urdu which instead of producing any good result, will bring forth something bad in the end.

Let the Bhashya first be reached its completion in pure Sanskrit and Bhasha only, afterwards, if it would be thought proper to translate into other languages, you all would get liberty to work according to your wishes with the view of public benefit in the world,

१. [पौष शुक्त १२ बुधवार, सं० १६३४।] मूल पत्र प्रो० धीरेन्द्र जी वर्मा के संग्रह में सुरित्तत ।

Now better bookshop to send me sample of paper selected and suggested by Mr. Sham Ji Krishana Verma some time ago to be procurable at Rs. 16 per ream in Bombay. Settle the matter soon get agreement of the printers for working according to their words and mutual fixed terms which all should be entered on the stamped paper without longer delay.

If Sham Ji Krishna Verma can work for me, I am very glad to engage him in my work even on extra pay and without caring for Rs. 10 or Rs. 15 more or less in the monthly account. Ask him if he likes to do so and hold a committee of your friends for proposing some better scheme

about the Veda Bhashya's publication if possible.

The first year ended and the 2nd is to be commenced from February, so I wish to fix subscription on receipt of your settlement with the printers etc., and tell me what subscription should be kept for both the Vedas according to their printing expenses. The buyers will be unwilling to pay high subscription if the translation be added and enlarged along with the Sanskrit one.

Gujrat, Futtehgurh and Wazeerabad have been blessed with Arya Samajees in December last and January 1878. Address me Gujrat city

to the care of Post Master only and accept my Asheerbad.

Yours Well Wisher
Pt. Swami Dayanand Sarswatti.
दयानन्द सरस्वती

To

B.H. Chinta Mani, Bombay.

[भाषानुवाद]

गुजरात १६ जनवरी १८७८

प्रिय बाबू

मुन्शी इन्द्रमिण ( अरबी तथा फारसी के प्रसिद्ध विद्वान् ) श्रौर उत्तर पश्चिम प्रान्त के श्रमुमवी व्यक्तियों की संयुक्त सम्मित श्रौर स्वीकृति से मैं श्रापको सूचना देने की श्रावश्यकता श्रमुमव करता हूँ कि सम्पूर्ण होने से पूर्व वेदमाध्य का श्रमुवाद श्रंप्रेजी या वर्नाक्यूलर में नहीं करना चाहिए। क्योंकि यदि श्रंप्रेजी या उर्दू में श्रमुवाद किया गया तो इस से लोग संस्कृत श्रौर माषा

१. पौष शुक्ल १२, बुधवार, सं० १६३४ । यु० मी० ।

के अध्ययन में निरुत्साह हो जावेंगे, क्योंकि वे सोचेंगे संस्कृत और भाषा के बिना ही अंग्रेजी वा उर्दू के द्वारा ही हम अपना उद्देश्य प्राप्त कर लेंगे। ऐसी स्थिति में हमें प्रन्थ के अंग्रेजी या उर्दू में अनुवाद करने के प्रयन्न की आवश्यकता नहीं। जिस से सुपरिणाम के स्थान पर अन्त में दुष्परिणाम प्राप्त हो। पहले केवल शुद्ध संस्कृत और भाषा में पूर्ण हो जाने दीजिए, पश्चात अन्य माषाओं में अनुवाद करना आवश्यक सममा गया तो आप सब अपनी इच्छानुसार संसार में जनहित की दृष्टि से कार्य करने में स्वतन्त्र होंगे।

कुछ समय पूर्व शाम जी कृष्ण वर्मा ने मुमे कागज का नमूना भेजने के लिए एक नई अच्छी दुकान बम्बई में चुनी तथा बताई है। जहाँ से १६ रुपया प्रति रिम के हिसाब से मिलेगा।

इस मामले को आप शीघ तय कर लीजिए। और छापने वालों के साथ उनके तथा पारस्परिक निश्चय के अनुसार जो शीघ ही स्टाम्पकागज पर लिखे होने चाहिए सममौता कर लीजिए।

यदि शाम जी कृष्ण वर्मा मेरे कार्य में लग गए तो मैं मासिक व्यय में १०, १५ रुपयों वा न्यूनाधिक पर न विचार कर अतिरिक्त वेतन पर भी अपने काम पर प्रसन्नता पूर्वक लगा लूंगा। उन्हें पूछ लीजिएगा कि क्या वे ऐसा करना चाहते हैं और यदि सम्भव हो सके तो अपने मित्रों की एक् सभा बुलाइये जो वेद भाष्य के प्रकाशन के विषय में कोई और अच्छी योजना प्रस्तुत करे।

प्रथम वर्ष समाप्त हुआ और अब द्वितीय वर्ष फरवरी से आरम्भ होने वाला है। अतः मैं छापने वालों के साथ सममौते की प्राप्त के पश्चात् चन्दा निश्चित करना चाहता हूँ और बतलाइये कि छपाई व्यय के अनुसार दोनों वेदों के अङ्कों के लिए क्या चन्दा रक्खा जावे।

यदि अनुवाद संस्कृत भाग के साथ जोड़ कर वढ़ा दिया जाय तो सम्भव है गाहक लोग अधिक चन्दा न देना चाहेंगे।

गुजरात फतेहगढ़ और वजीराबाद में गत दिसम्बर और जनवरी सन् १८७८ में कुछ लोग आर्थसमाजी हो गए हैं। मेरा पता द्वारा "पोस्टमास्टर गुजरात सिटी" केवल इतना ही है और आशीर्वाद स्वीकार करें।

श्रापका शुभचिन्तक दयानन्द सरस्वती

सेवा में—

बी-एच-चिन्तामणि बम्ब =8

[8]

# पत्र-सारांश-(४३)

[६4]

[माधोलाल] पञ्जाब के हाता में बहुत से शहरों में समाज कायम हो चुका है। श्रौर वराबर तादाद वढ़ती हुई चली जायगी। मेरा श्राशीर्वाद प्रहण करो श्रौर श्रपनी हालत से हमेशा वाकिफ रक्खो। गुजरात

२० जनवरी १८७८।

[२]

# पत्रांश (४४)

[88]

[माधोलाल]<sup>3</sup>

पंजाब से लौट कर जब मैं बंगाल हाता में आऊँगा तुम्हारी मुलाकात से जरूर खुशी खठाऊँगा। तुम्हारी कोशिश और इच्छा अपने देसी भाइयों की उन्नति में देख कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। सकल सृष्टि का कर्ती आप को स्वस्थ और हरा भरा रखे। तुम्हारी यह इच्छा देख कर कि तुम अपने देश की अवस्था उत्तम करने का यन करते हो मुक्ते ऐसा आनन्द हुआ कि वर्णन नहीं कर सकता। इस में कुछ सन्देह नहीं कि तुम इस जीवन में इसके फल को चखोगे। तुम सब को मेरा आशीर्वाद।

द्यानन्द सरस्वती

गुजरात २८ जनवरी १८७८

[6]

विज्ञापन

[69]

सब सन्जनों को विदित हो कि आगे भूमिका के अङ्क नम्बर १२।१३ और १४ छपने को बाकी रहे हैं। सो फाल्गुण चैत्र और वैशाख में छप चुकेंगे। इसके आगे ज्येष्ठ महीने से लेकर श्रंक १ अध्य और श्रंक १ यजुर्वेद के मन्त्रभाष्य के छपा करेंगे। इसमें एक २ अङ्क का एक वर्ष में रुपैये डाक

- १. पं० लेखरामकृत जीवनचरित्र पृष्ठ० ३५७, ३५८ पर इतना ग्रंश उद्धृत है।
- २. माघ कृष्या २, रविवार, सं० १६३४ । यु॰ मी॰ ।
- ३. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ३५८ पर इतना ग्रंश छुपा है। उस में लिखा है कि पत्र के पूर्व भाग में " पुस्तकें भेजने का उल्लेख है।"
- ४. पौष वदी १० सोम, संवत् १६ ३४। यही पत्र स्वामी सत्यानन्द जी कृत जीवनचरित पर भी कुछ आगे पीछे करके छापा गया है। वहां पौष सु० १५ सं० १६३४ तिथि दी है। यह तिथि आशुद्ध दी गई है। इसने विक्रम संवत् की ठीक तिथि दी है।

५. ऋ॰ भाष्यभूमिका यांक ११ के ग्रान्त में छुपा। CC-0 in Public Domain. Panini Kanya Mana Vidyalaya Collection.

महसूल सिहत ४) चार २ रहेंगे। जो एक ऋग्वेद का श्रंक लिया चाहें सो ४) ६० लाजरस कंपनी काशी वा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के पास भेज देवें श्रौर जो कोई यजुवेंद का ही १ श्रंक लिया चाहें सो ४) ६० गत वर्ष के श्रौर ४) ६० श्रगले वर्ष के भेज देवें। उनको श्रारम्भ से श्राज पर्यन्त श्रौर विक्रम के संवत् १९३५ के माघ पर्यन्त प्रति मास एक २ श्रंक मिलता जायगा। श्रौर जो दोनों वेद को लिया चाहें वे ८ ६० भेज देवें। परन्तु जो ऋग्वेद का श्रंक लेते हैं श्रौर दूसरे यजुवेंद का भी भूमिका सिहत लिया चाहें वे १२) ६० श्रागे के वर्ष के भेज देवें। ऐसे ही जो २ एक वेद के नवीन श्राहक हों वे भी ८) ६० दोनों वर्ष के भेजें। श्रौर जो भूमिका एक तथा मन्त्रभाष्य दोनों लेवें, वे ११) ६० भेज देवें। श्रोर जो दो भूमिका सिहत दोनों श्रंक लिया चाहें वे दोनों वर्ष के १६) ६० भेजें। श्रौर जो केवल भूमिका मात्र लिया चाहें वे १।।। ८० देकर लेवें।

ऋग्वेद के १० सुक्त पर्यन्त और यजुर्वेद के १ अध्याय पर्यन्त का भाष्य संवत १९३४ मि० माघ वदि १३ गुरुवार तक बन चुका है। <sup>8</sup> छौर भूमिका भी बन कर तैयार हो गई। आगे प्रतिदिन मन्त्रभाष्य बनाया जाता है। <sup>8</sup>

[3]

## दुसरा विज्ञापन

[६८]

जिन प्राहकों ने पुस्तक लेके अब तक दाम नहीं भेजे हैं उन को उचित है कि शीघ भेज देवें। नहीं तो उन के पास दाम लेने के लिये पत्र वा मनुष्य भेज के लिया जायगा। और उसका मार्ग खर्च भी उन से लिया जायगा। इससे उचित है कि वे शीघ भेज देवें। आगे जैसा काराज भाष्य में अब लगाया जाता है, इस से भी उत्तम मन्त्रभाष्य में लगाया जायगा।

[9]

## पत्र (४५)

[६९]

लाला जीवनदासै

आज की तारीख मुलतान से भी एक चिट्ठी डाक्टर जसवन्त राय साहब की आगई है। उस श्रोर जरूर जाना पड़ेगा।

गुजरांवाला ९ फरवरी १८७८

१. यहां १२) रु॰ होने चाहियें । यु॰ मी॰ ।

२. इस और अगले पूर्ण संख्या ६८ विज्ञापन का संकेत पूर्ण संख्या ६४ के पत्र में है।

३. ३१ जनवरी १८७८। तुलना करो पृ० ३३ पूर्ण संख्या २५।

४. यह अन्तिम भाग छुपने को पीछे मेजा गया होगा।

५. यह विज्ञापन पिछले विज्ञापन के साथ ही ऋ॰ मा॰ भू॰ ऋंक ११ के ऋन्त में छपा है। यु॰ मी॰

इ. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृष्ठ ३६५।

७. माघ शु॰ ७ शनिवार सं॰ १६३४।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रौर विज्ञापन

[गुजरांवाला, सन् १८७८

**=**§

पत्रांश (४६)

[00]

[२]

लाला जीवनदास'
इस स्थान में प्रतिद्न व्याख्यान होता है श्रभी तक कोई विशेष बात लिखने योग्य नजर नहीं श्राती है फिर थोड़े काल में लिखा जावेगा। श्राज ६ बजे से पादरी लोगों से बहस होगी।
१९ फरवरी १८७५

गुजराँवाला

[80]

# ॥ विज्ञापनै ॥

[98]

एक विज्ञापन जो गत मास के श्रंक ११ में मंत्रभाष्य के नियम विषय में दिया गया था उस में कुछ भाष्यभूमिका के नियम वदल दिए गए थे, परन्तु उससे बहुधा सज्जनों को श्रम होकर वे लोग इस भाष्यकार के श्राशय से विरुद्ध कुछ का कुछ ही समम गये थे अर्थात् यह जाना कि यजुर्वेद की भूमिका पृथक दूसरी होगी इस शङ्का के निवारण करने के अर्थ यह विज्ञापन फिर दिया जाता है कि भूमिका चारों वेदों की एक ही है जो कि छपकर १२ अङ्कों में माहकों के पास पहुँच चुकी श्रौर वाकी रहीं हुई श्रागे वैशाख तक छप कर सम्पूर्ण हो जावेगी। इसी एक भूमिका को कदाचित् कोई नवीन वा पुराना माहक फिर लिया चाहें अपने किसी दूसरे विचार से अथवा दोनों वेदों में श्रलग २ लगाने को तो उनके लिए मोल का नियम आगे को बदल दिया गयां है दूसरी भूमिका नवीन कोई नहीं बनती है। बाकी नियम जैसे श्रङ्क ११ के विज्ञापन में छपे हैं वैसे ही ठीक २ समभ लेना।।

[११] नोटिसँ [७२]

सब सज्जन लोगों को विदित हो कि इसके आगे अर्थात् सं० १९३५ ज्येष्ठ महीने से ले के वेदमाध्य उत्तम कागज और अन्नरों से युक्त मुम्बई में छपा करेगा। हमारी ओर से इस काम के प्रबन्ध करने वाले प्रधान आर्य्यसमाज के रा० रा० बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिण जी स्थापित किये गये हैं उनका ठिकाना मुम्बई बाहर कोटघर नम्बर ६ मेडो स्ट्रीट फोर्ट का है। वहाँ से सब प्राहकों के पास पूर्व लिखित ठिकानों में यथोचित काल में प्रति मास अङ्क पहुँचते रहेंगे और जो अङ्क ११वें में नोटिस दिया गया था कि मूमिका के अङ्क नम्बर १२।१३ और चौदह १४ वाँ छपने को बाकी रहे हैं सो अनुमान अधिक होने से अङ्क १५वें में मूमिका पूरी होगी। सो अगले महिने में अङ्क १ ऋग्वेद

१. पं॰ लेखराम कृत जीवन चरित्र पृ॰ ३६२ पर उद्धृत।

२. फाल्गुन कु० २ सं० १६३४।

३. यह त्रिज्ञापन ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के १२वें ऋड़ के ब्रान्त में है। सम्भवतः यह फाल्गुन सं० १६३४ में लिखा गया था। यु॰ मी॰।

४. यंह विज्ञापन ऋग्वेदादिमाष्यभूमिका ब्रङ्क १३ के ब्रान्त में छुपा है। सम्भवतः यह विज्ञापन चेत्र १६३५ में लिखा गया था। यु० मी०।

मुलतान, सं० १९३४]

पत्र (४८)

60

के मन्त्रभाष्य श्रीर श्रद्ध १५ वाँ भूमिका का दोनों साथ छुपेंगे श्राषाढ़ से लेके १ ऋक् श्रीर १ यजुर्वेद का मन्त्र भाष्य साथ २ प्रति मास वरावर छपा करेंगे जो कोई केवल भूमिका मात्र लेंगे वे क० ५) देके ले सकते हैं। श्रीर जो मन्त्रभाष्य दो लेंगे श्रीर भूमिका १ वे दोनों वर्ष के लिये ११) देंगे जिन्होंने सं० १९३४ का वार्षिक मूल्य दिया है श्रीर दो मन्त्रभाष्य लेंगे वे सम्वत् १९३५ का क० ७) श्रीर जो एक लेंगे वे ४) देंगे श्रीर जो नवीन प्राहक होंगे वे इन दोनों वर्षों का एक पुस्तक का मूल्य श्राठ ८) क० श्रीर दोनों का क० ११) देंगे॥ श्रीर यह भी जानना चाहिये कि चारों वेद की भूमिका एक ही है॥ श्रागे मुम्बई उक्त बाबू जी श्रीर स्वामी जी के पास पत्र भेजने से नवीन गाहकों को वेदभाष्य मिला करेगा श्रीर इन दोनों में से एक के पास दाम भी भेजना होगा॥

[8]

## पत्रांश-(४७)

[७३]

लाला पोइलोराम जी'

मुलतान में समाज होने वाला है। सो जानोगे। व्याख्यान प्रतिदिन हुन्ना करता है। नवीन समाचार कुछ नहीं है। सब सभासदों को नमस्ते।

२९ मार्च १८७८

द्यानन्द् सरस्वती

[३]

## पत्र (४८)

[88]

श्रीयुत मूलराज, जीवनदास, साईंदास, बलदास जी त्रानन्द रहो। व

श्रागे रामरखा से पत्र मिल सकेंगे तो भेज दिये जायेंगे वा नवीन लिखवा कर भेज देंगे। परन्तु जैसे श्राज पर्य्यन्त नहीं छपे, वैसे हो तो परिश्रम व्यर्थ है। जैसी श्रन्तरंग सभा के नियमों का ममेला श्राज तक पूरा नहीं हुश्रा है, ऐसा न हो। इस लिखने का प्रयोजन यह है कि जो काम जिस समय करना चाहिये, वह उस समय में होने से सफल हो जाता है, इसलिये समय पर काम करना बुद्धिमानों का लज्ञ् ए है। यहाँ बहुत श्रानन्द में हम लोग हैं। श्राशा है कि श्राप लोग भी श्रानन्द में होंगे।

एक काम यह आवश्यक है कि इस मुन्शी से यह काम ठीक २ नहीं हो सकता । इस लिए एक मुन्शी श्रंग्रेजी फारसी और नागरी भाषा का पढ़ा हुआ, हिसाब नकशा निकालना भी जानता हो, जो ऐसा न मिल सके तो श्रंग्रेजी, फारसी, उर्दू तो ठीक जानता हो कि चिट्टी पत्र ठीक २ पढ़ और लिख सके, वह आलसी न हो और जिसका स्वभाव किसी प्रकार बुरा न हो, उसका मासिक २५) क० से

१. पं लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ३६६ पर उद्घृत । यह पत्र गुजरांवाला के मन्त्री लाला पोहलो-राम के नाम है ।

२. चैत्र कृष्या ११ शुक्रवार सं० १६३४ । यह पत्र मुलतान से मेजा गया । यु॰ मी० ।

३. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ १७० पर उद्धृत।

[१२]

श्रिष्ठित करके मुक्त को लिखिये। यहाँ व्याख्यान नित्य होते हैं। समाज होने का भी कुछ २ सम्भव है। मिति चैत्र ११ सम्बत् १९३४, शनिवार, ता० २४ मार्च १८८८।

दयानन्द सरस्वती

विज्ञापनपत्र

[94]

आगे यह विचार किया जाता है कि, संस्कृत विद्या की उन्नति करनी चाहिये; सो विना व्याकरण के नहीं हो सकती जो आजकल कौ मुदी, चिन्द्रका, सारश्वत, मुग्धवोध और आशुवोध आदि प्रन्थ प्रचलित हैं, इनसे न तो ठीक ठीक बोध और न वैदिक विषय का ज्ञान यथावत होता है; वेद और प्राचीन आर्ष प्रन्थों के ज्ञान से विना किसी को संस्कृत विद्या का यथार्थ फल नहीं हो सकता और इसके विना मनुष्य जन्म का साफल्य होना दुर्घट है ॥ इसलिए जो सनातन प्रतिष्ठित पाणिनीय अष्टाध्यायी महाभाष्यनामक व्याकरण है, उसमें अष्टाध्यायी सुगम संस्कृत और आर्यभाषा में वृत्ति बनाने की इच्छा है; जैसे वेदभाष्य प्रतिमास २४ पृष्ठों में १ अङ्क छपावता है, इसी प्रकार ४९ पृष्ठों का अङ्क मुम्बई में छपवाया जाय तो बहुत सुगमता से सब लोगों को महालाभ हो सकता है, इसमें हजारों रुपयों का खर्च और बड़ा भारी परिश्रम है ॥ इसका मासिक मुल्य जो प्रथम दें उनसे ॥ अश्वाने के हिसाब से अशे रुपये लिए जायें उधार लेने वालों से ॥ अशे हिसाब से ११। लिये जायें, विद्योत्साही सब सज्जनों की सम्मित प्रथम मैं जाना चाहता हूँ, सो सब लोग अपना अपना अभिप्राय जनावें इति ॥

१ चैत्र कु० ११ शनिवार को द्वादशी भी थी। यहां २४ मार्च के स्थान में ३० मार्च होना चाहिये। २४ मार्च को चैत्र कु० ६ रविवार था। पत्र मुलतान से भेजा गया था। यु० मी०।

२. यह पत्र मुलतान से भेजा गया । यु॰ मी० ।

३. यहां '४८ पृष्ठ' चाहिये।

४. यह विज्ञापन ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ब्रङ्क १४, १६ के ब्रान्तिम पृश्चें पर छपा है ब्रीर सम्भवतः चैत्र संवत् १६३५ के ब्रन्त में लिखा गया था। तब स्वामी दयानन्द सरस्वती लाहीर में थे। पंजाब छोड़ने के ब्रानन्तर उन्हों ने वृत्ति बनानी ब्रारम्भ कर दी थी। वृत्ति की समाप्ति ब्रानुमानतः सं १६३६ तक हो गई। परन्तु प्राहकों के ब्रमाव से यह ब्रव्च तक ब्राप्तकाशित पड़ी है। इमने इसका ब्राधिकांश माग पढ़ा है, ब्रीर कह सकते हैं कि ब्रन्थ ब्रपूर्व है। इसी के ब्राधार पर पीछे वेदांगप्रकाश बना। इस वृत्ति का सम्पादन हमने ब्रारम्भ किया था। तदुपरान्त डा० रघुवीर एम. ए. ने इस के दो ब्राध्याय सम्पादित किये। तीसरे ब्रीर चौथे ब्राध्याय का सम्पादन पं ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी ने (सन् १६३७-१६३६) किया। चतुर्थ ब्राध्याय ब्रामी तक प्रकाशित नहीं हुब्रा। प्रतीत होता है कि श्री स्वामी जी ने वृत्ति के चार ब्राध्याय ही शोधे थे।

मुलतान, सं० १९३४]

पत्रम् (४९)

59

[83]

विज्ञापन पत्री

[ ३९]

सब को विदित हो कि, चार वेंदों की भूमिका पूरी हो गई है। इस श्रद्ध १५ और १६ में समाप्ति हुई, इसकी जिल्द जिसको इच्छा हो, वंधवाले, जो एक वेद लेते हैं, उनके पास श्राषाद में ऋग्वेद का श्रद्ध नहीं श्रावेगा; क्योंकि ये दो श्रद्ध श्राये हैं, इसके श्रागे श्रावण से लेकर एक लेने वालों के पास एक एक श्रीर दो लेने वालों के पास दो दो ऋग्वेद के श्रीर यजुवेंद के श्रद्ध श्राया करेंगे, धीरज करो कि, मुम्बई में बहुत श्रच्छा काम चलेगा। यह पहिला महिना था, इसलिये थोड़ी देर हो गई है, श्रागे वरावर मितिवार पहुंचा करेंगे इति॥

[३] पत्र (४९) [७७] वाबू माधोलाल जी श्रानन्द रहो !<sup>२</sup>

श्रापका कुशल पत्र तारीख २४ वीं गत मास का उचित समय पर हमारे पास पहुँचा, विषय लिखा सो प्रकट हुआ। आपके इच्छा के अनुसार कल्ल की तारीख ३१ मार्च को दो छपे हुए आर्च-समाज के मुख्य दश उद्देश्य अर्थात नियमों के भेज चुके हैं और आज एक कापी उक्त समाज के उपनियमों की भी भेजते हैं सो निश्चय होता है कि दोनों कापियाँ नियम और उपनियमों की आप के पास अवश्य पहुँचेगी। रसीद शीघ्र भेज दीजिये। और इन नियमों को ठीक २ समक्त कर वेद की श्राज्ञानुसार सब के हित में प्रवर्त्त होना चाहिये, विशेष करके श्रपने श्रार्थ्यावर्त्त देश के सुघारने में अत्यन्त श्रद्धा और प्रेम भक्ति सब के परस्पर सुख के ऋर्थ तथा उनके क्लेशों के मेटने में सत्य व्यवहार श्रीर उत्करठा के साथ श्रपने ही शरीर के सुख दुखों के समान जान कर सर्वदा यह श्रीर उपाय करना चाहिए। सब के साथ हित करने का ही नाम परमधम्मे है। इसी प्रकार वेद में बराबर आज्ञा पाई जाती है जिसका हमारे प्राचीन ऋषि मुनि आदि यथावत पालन करते और अपनी सन्तानों को विद्या श्रीर धर्म के श्रनुकूल सत्य उपदेश से श्रनेक प्रकार के सुखों की वृद्धि श्रथीत् उन्नति करते चले श्राये हैं। केवल इसी देश से विद्या और सुख सारे भूगोल में फैला है क्यों कि वेद ईश्वर की सब सत्य विद्याओं का कोश त्रौर त्रनादि है। बाकी सब व्यवहार तथा ईश्वर की उपासना त्रादि के विषय हमारी पुस्तकों श्रीर उपनियम श्रादि के देखने से समक्त लेना उचित है। श्रापको हिन्दूसतसभा के स्थान में आर्य समाज नाम रखना चाहिये क्योंकि आर्य्य नाम हमारा और आर्यावर्त्त नाम हमारे देश का सनातन वेदोक्त है।

त्रार्थ है। त्रार्थ के द्यर्थ श्रेष्ठ और विद्वान धर्मात्मा को हिन्दू शब्द यवन श्रादि ईर्शक लोगों का विगाड़ा और वदला हुआ है जिस का अर्थ गुलाम काफर और काला आदमी आदि विचार कर

१. यह विज्ञापन भी पूर्व विज्ञापन पूर्ण संख्या ७६ के साथ ही ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रङ्क १५,१६ के अपनत में छपा था। यु॰ मी॰।

२. यह पत्र पं० लेखरामकृत जीवनचिरत पृ० ३६६ पर पूरा छपा है। इस ने इसे मूल पत्र से छापा है। यह मूल पत्र दानापुर समाज में सुरिच्चित है। इस से प्रतीत होता है कि पं० लेखराम जी ने अपनेक मूलपत्रों की प्रतिलिपियां ही ली थीं। मूल पत्र अपने लिए वे अपने साथ नहीं ला सके होंगे। हमारा पाठ मूल के सर्वेथा अनुकल है।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन मुलतान, सन् १८७८ 90 नाम अपनी सभा का आर्थ्य समाज दानापुर रख कर वेदोक्त धर्मों पर और सब समासदों में परस्पर नमम्ते कहना चाहिए सलाम व बन्दगी नहीं। इति। ता० १ अप्रैल सन १८७८ ई०।

[30] पत्र (५०) [8]

बाबू माधोलाल जी आनन्द रहो !

पत्र आप का ताः ७ अप्रैल का पास हमारे पहुँचा । विषय माल्म हुआ नीचे लिखी हुई पुस्तकें आप के पास भेजी जाती हैं। इनको क्रमपूर्वक समम कर रसीद हमारे पास शीघ भेजिये लाहौर के पते से-

१-श्रायींदेश्यरत्नमाला १-सत्यार्थप्रकाश रा।) १-मेले चाँदापुर की उर्दू में 11=) १—संस्कारविधि १-प्रश्नोत्तर हलधर १-श्रार्थाभिविनय II) १-सन्ध्योपासन 1=) ७--कुल दाम पुस्तक 년=)!! 1-)111 डाकमहस्रल महसूल डाक सहित कुझ दाम 411-)111

पाँच रुपये नौ आने और नौ पाई हुए। बड़ी प्रसन्नता की बात हुई कि आप अपनी सभा का नाम आर्य्यसमाज रक्ला है। अब आप की दृष्टि देश के सुधार पर होनी चाहिये । अप्रे किमधिकम । इति । ता० १२ अप्रैल सन् १८७८ ई०<sup>३</sup>।

हः दयानन्द सरस्वती

दः द्यानन्द सरस्वती

[2] पत्र (५१) ७२

स्वस्ति श्रीयुतानवद्यगुणालङ्कृतेभ्यः सनातनसत्यधम्मीप्रयेभ्यः पाखण्डमतनिवृत्तचित्तभयोऽद्वैते-श्वरोपासनमिच्छुभ्यो बन्धुवर्गेभ्यो महाशयेभ्यः श्रीयुतहेनरी एस् श्रोलकाटाख्यप्रधानादिभ्यः श्रीमन्मेडम एच् पी विलावस्टक्यास्यमन्त्रिसहितेभ्यः थीयोसोफीकलसोसाईट्यास्यसभासद्भयो द्यानन्दसरस्व-तिस्वामिन आशिषो भवन्तुतमाम् ॥

१. चैत्र कृष्ण १४ सोमवार सं० १६३४ । यह पत्र मुलतान से मेजा गया । यु० मी० ।

२. 'प्रसन्नता'—से ले कर 'चाहिये' तक भाग पं० लेखरामकृत जीवन चरित के पृ० ३७० पर छुपा है। पं० लेखराम जी ने इस की प्रतिलिपि ही की होगी। मूल पत्र दानापुर समाज के संग्रह में ऋव भी सुरिह्तत है। वहीं से लेकर इमने इसे छापा था ।

३. चैत्र शु०१० शुक्रवार स०१६३५ । यह पत्र मुलतान से मेजा गया। यु०मी०।

शमत्रास्ति तत्र भवदीयं च नित्यमाशासे ॥ यच्छ्रीमद्भिः श्रीमन्महाशयमूलजीठाकरशीहरिश्चन्द्रचिन्तामणितुलसीरामयाद्वज्याभिधानानां द्वारा पत्रं मिश्रकटे संप्रेषितं तद्दृष्ट्वाऽत्यन्त आनन्दो जातः ॥

अहो अनन्तधन्यवादाहें कस्य सर्वशक्तिमतः सर्वत्रैकरसञ्यापकस्य सिद्दानन्दानन्ताखण्डाज-निर्विकाराविनाशन्यायद्याविज्ञानादिगुणाकरस्य सृष्टिस्थितिप्रलयमुख्यनिमित्तस्य सत्यगुणकम्मीस्वभावस्य निर्भ्रमाखिलिविद्यस्य जगदीश्वरस्य कृपया पञ्चसहस्राविधसंवत्सरप्रमितव्यतीतात् कालान्महाभाग्योदये-नासमज्ञव्यवहाराणामस्मित्रियाणां पातालदेशे निवसतां युष्माकमार्व्यावर्जनिवासिनामस्माकं च पुनः परस्परं प्रीत्युद्भवोपकारपत्रव्यवहारप्रश्नोत्तरकरणसमय आगतः। मया श्रीमद्भिः सहातिप्रेम्णा पत्रव्यव-हारः कर्तुः स्वीक्रियते । अतः परं भवद्भिर्यथेष्टं पत्रप्रेषणं श्रीयुतमूलजी ठाकरश्याख्यहरिश्चन्द्रचिन्ता-मएयादिद्वारा मित्रकढे कार्यम् । श्रह्मपि तद्द्वारा श्रीमतां समीपे प्रत्युत्तरपत्रं प्रेषयिष्यामि । यावन्मम सामर्थ्यमस्ति तावदहं साहाय्यमपि दास्यामि । भवतां यादृशं कुश्चीनाख्यादिसंप्रदायेषु मतं वर्त्तते तत्र ममापि तादृशमेवास्ति । यथेश्वर एकोस्ति तथा सर्वैभीतुष्यैरेकेनैव मतेन भवतिन्यम् । तच्चैकेश्वरोपासना-करणाज्ञापालनसर्वोपकारं सनातनवेदविद्याप्रतिपादितमाप्तविद्वत्सेवितं प्रत्यज्ञादिप्रमाणसिद्धं सृष्टिकमा-विरुद्धं न्यायपचपातरहितधरम्ययुक्तमात्मप्रीतिकरं सर्वमताविरुद्धं सत्यभाषणादिलच्चणोञ्ज्वलं सर्वेषां सुखदं सर्वमनुष्यै: सेवनीयं विज्ञेयम् ॥ श्रतो भिन्नानि यानि चुद्राशयछलाविद्यास्वार्थसाधनाधर्म्भयुक्तैर्म-नुष्यैरीश्वरजन्ममृतकजीवनकुष्टादिरोगनिवारणपर्वतोत्त्थापनचन्द्रत्वण्डकरणादिचरित्रसहितानि प्रचारि-तानि सन्ति तानि सर्वाण्यधर्मममयानि परस्परं विरोधोपयोगेन सर्वसुखनाशकत्वात् सकलदुःखोत्पादकानि सन्तीति निश्चयो मे । कदैवं परमेश्वरस्य कृपया मनुष्याणां प्रयत्नेनैषां नाशो भूत्वाऽऽय्यैः परम्परया सेवितमेकं सत्यधरमीमतं सर्वेषां मनुष्याणां मध्ये निश्चितं भविष्यतीति परमात्मानं प्रार्थयामि । श्रीमतां पत्रमागतं तदाहं पद्भालदेशमध्यवर्त्तिलवपुरे न्यवात्सम् ॥ श्रत्राप्यार्थ्यसमाजस्था बह्वो विद्वांसः श्रीमतां पत्रमवलोक्यातीवाऽऽनिन्दिता जाताः । नाहं सततमेकस्मिन् स्थाने निवसामि तस्मात् पूर्वोक्तद्वारैव पत्रप्रेष्णेन भद्रं भविष्यति।।यद्यपि बहुकार्य्यवशान्ममावकाशो न विद्यते तथापि भवादृशानां सत्यध्रम्भवर्धने प्रवत्तिरिश्चित्रात्ममनसां सर्विप्रियकरणे कृतैकिनिष्ठानां सत्यधम्मीं स्नत्या सर्वमनुष्यप्रियस्य कर्तुं णां हढोत्साह्युक्तानां श्रीमतामभीष्टकरणाय मयावश्यं समयो रच्चणीय इति निश्चित्य परोपकाराय भवन्तो मया सहाहं च श्रीमिद्धः सह सुखेन पत्रव्यवहारं कुर्य्यामित्यलमितविस्तरलेखेन बुद्धिमद्वरेषु॥

श्रीमन्महाराजविक्रमस्य पञ्चित्रशदुत्तरे एकोनविंशतितमे १९३५ संवत्सरे वैशास्त-कृष्णपत्त प् पञ्चम्यामादित्यवासरे पत्रमिदं लिखितमिति वेदितव्यम्॥

( द्यानन्द सरस्वती )

१. हैनरी एस. श्रल्काट ने श्रपना पहला पत्र १८ फरवरी सन् १८०८ को श्रमरीका से लिखा । उसी का उत्तर इस पत्र में है। २१ एपिल १८७८। यह पत्र लाहीर से भेजा गया।

[9]

पत्र (५२)

[60]

मन्त्री और सभासद श्रानन्द रही !'

प्रकट हो कि अब हम ११ जुलाई सन् १८७८ बृहस्पतिवार को यहाँ से पूर्व की ओर प्रस्थान करेंगे, और जालन्धर, लुध्याना आदि नगरों में मिलते हुए आगे को चले जावेंगे। सम्भव है कि दो चार दिन के लिए अम्बाला ठहर जावें। अब हमारा और आप लोगों का मिलाप केवल पत्र द्वारा ही हो सकेगा। इसलिये आप सदा पत्र भेजते रहना, तथा हम भी भेजा करेंगे। अब आप को लिखते हैं कि प्रतिदिन समाज की उन्नति करते रहो क्योंकि यह बड़ा काम आप लोगों ने उठा लिया है, इसके परिणाम पर्यक्त पहुँचाने ही में सुख और लाम है। यहाँ का समाज प्रतिदिन उन्नति पर है और कई प्रतिष्ठित पुरुष समासद हो गये हैं। यहाँ के पण्डितों ने शास्त्रार्थ के लिये सलाह की थी, सो वे समा में न तो कुछ बोले न कुछ बात का उत्तर दिया। केवल मुख दिखला कर चले एये। और यहाँ के लोगों ने जो कई पोपों की आर थे, हाकिम से आर्य्यसमाज की चुगली खाई थी, जिसका परिणाम सत्य के प्रताप से यह हुआ कि अब कोई आर्य्यसमाज की आर आँख उठा कर भी नहीं देखता। सब समासदों को नमस्ते

२६ जून सन् १८७८।3

द्यानन्द् सरस्वती श्रमृतसर्।

[8]

पत्र (५३)

[69]

ला० मोहनलाल प्रधान वा ला० साईंदास मन्त्री आनिन्द्त रही।

विदित हो कि परसों कई चिट्ठियां अमरीका की आई हैं। जिन में ६ चिट्ठियां पढ़ी गई। एक दाखला, एक नमूना, एक डिसोमा है। इसलिये कि जितने समाजों में प्रधान मन्त्री आदि हैं सब की संख्या लिखी जावे। संख्या ४ की चिट्ठी आर्थ लोगों के नाम है। जिस का विषय यह है कि आर्थसमाज थियासोफिकल सोसायटी के साथ लगाया गया। और इस का यह नाम स्थिर हुआ है कि "थियासोफिकल सोसायटी आफ आर्थ समाज आफ दि इण्डिया"। और यहां यह नाम रखा जावे कि आर्थवर्तीय आर्थ-समाज आफ थियासोफिकल सोसायटी और मुहर भी समाज की खुदवानी चाहिये। अच्छे होश्यार मन्त्री और प्रधान लिख कर डिसोमा में लिखना चाहिये। और सोसायटी के नियमादि भी आते हैं। और सब समाजों में पत्र लिख भेजो कि सब अच्छे २ बुद्धिमान् प्रधान और मन्त्री की संख्या लिख भेजें। और यदि कोई अक्ररेजी वाला बाबू कमलनयन साहव अब के

१. यह पत्र स्रार्थसमाज गुजरांवाला के मन्त्री स्रौर सभासदों के नाम लिखा गया था । हमने इसे श्रीमान् पं लेखराम जी रिचत जीवन चरित्र पृष्ठ ३३४ से लिया है।

र. पूर्ण सं ० ८१ तथा ८२ से पता चलता है कि श्री स्वामी जी महाराज १५ जुलाई तक अमृतसर में विद्यमान थे। यु० मी०।

३. श्राषाद कृष्ण ११ बुधनार सं० १६३५ । यु० मी० । ४. पं० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० २८५ पर उद्धृत ।

शिन को आवें तो सब की नकल कर ले जावें। अभी हम १५ ता० तक और ठहरेंगे। और ला० मूलराज जी पर यह भी प्रकट हो कि दिन परीचा के निकट हैं। बहुत इस ओर ध्यान न दें। परीचा में यक्ष करें। और ४ हजारे वर्ष के पश्चात् अमरीका से आज सम्बन्ध हुआ है इस को धन्य समको। और धन्य है। और खूब यत्न करो। जिस से समाज में विन्न हो उस को रखने से कुछ लाभ नहीं है। ९ जुलाई ७८ अमृतसर। आषाढ़ सुदी १० संवत् १९३५।

दयानन्द सरस्वती

[3]

पत्र (५४)

[63]

श्री श्यामजी कृष्ण वस्मी आनन्द रही

विदित हो कि हमने सुना है कि आपका इरादा संस्कृत पढ़ाने के लिये इक्क लैएड जाने का है सो यह विचार बहुत अच्छा है परन्तु आपको पहिले भी लिखा था और अब भी लिखते हैं कि जो हमारे पास रह कर वेद और शास्त्र के मुख्य २ विषय देख लेते तो अच्छा होता। अब आपको उचित है कि जब वहां जावें, जो आपने अध्ययन किया है उसी में वार्तालाप करें और कह देवें कि मैं कुल वेद शास्त्र नहीं पढ़ा; किन्तु मैं तो आर्यावर्त देश का एक छोटा विद्यार्थी हूँ, और कोई बात का काम ऐसा न हो कि जिससे अपने देश का हास होने, क्योंकि वे लोग संस्कृत पढ़ाने वाले की अत्यन्त इच्छा रखते हैं। इसलिये आपके पास सब तरह के पुरुष मिलने और बातचीत करने के कारण आवेंगे सो जो कुछ उन के मध्य में आप कहैं, समम कर कहवें, और इस चिट्टी का उत्तर हमारे पास मेज देवें, श्रीर भी मोहन लाल विद्यालाल पंडितजी को हमारा आशीर्वाद कह दीजिये, हम बहुत आनन्द में हैं।

१५ जुलाई १८७८

हस्ताच्चर द्यानन्द सरस्वती श्रमतसर<sup>3</sup>

श्रीर पाद्री लोगों से भी बचे रहें श्रीर श्रमरीका की चिट्टी का नागरी में तर्जमा करके भेजा करें। इससे काम जल्दी चलेगा श्रीर उनके पास श्रार्घ्य समाज बम्बई श्रीर पंजाब के नियमोपनियम का श्रंमेजी में तर्जमा करके भेज दीजिये। जो कुछ श्राप बदलना सुनासिब सममें, बदल भी देवें श्रीर हम को इत्तला दे दें।।

१. यहां '५ हजार' चाहिये। देखो पूर्व मुद्रित पूर्य संख्या ७६ का पत्र, पृष्ठ ६१। यु॰मी॰।

२. मूल पत्र प्रो॰ घीरेन्द्र वर्मा जी के पास है।

<sup>्</sup> ३, श्रावण वदी १ सोम सं ० १६३४। पं ० लेखरामजी (पू० ३२१) तथा उनका अनुसरण करने वाले पं ० घासीराम जी (पू० ४८०) ने ११ जुलाई तक ही अमृतसर में ठहरना लिखा है। इस पत्र से निश्चित होता है कि श्री स्वामी जी १५ जुलाई तक तो अमृतसर में ही थे।

[38]

॥ विज्ञापनम् ॥

[53]

सबको विदित हो कि जो जो बातें वेदों की और उनके अनुकूल हैं उनको मैं मानता हूं विरुद्ध बातों को नहीं।। इससे जो जो मेरे बनाये सत्यार्थप्रकाश वा संस्कारविधि आदि प्रंथों में गृह्यसूत्र वा मनुस्मृति श्रादि पुस्तकों के वचन बहुत से लिखे हैं ॥ वे उन उन प्रंथों के मतों को जनाने के लिये लिखे हैं जनमें से वेदार्थ के अनुकूल का साचिवत प्रमाण और विरुद्ध का अप्रमाण मानता हूँ जो जो वात वेदार्थ से निकलती हैं उन सब को प्रमाण करता हूं क्योंकि वेद ईश्वर वाक्य होने से सर्वथा मुफ्तको मान्य है।। श्रौर जो जो ब्रह्माजी से लेकर जैमिनि मुनिपर्यंत महात्माश्रों के बनाये वेदार्थानुकूल प्रथ हैं, उनको भी मैं साची के समान मानता हूं। श्रौर जो सत्यार्थप्रकाश के ४२ पृष्ठ श्रौर २५ पंक्ति में पित्रादिकों में से जो कोई जीता हो उसका तर्पण न करै और जितने मर गये हैं उनका तो अवश्य करे।। तथा पृष्ठ ४७ पंक्ति २१ मरे भये पित्रादिकों का तर्पण श्रौर श्राद्ध करता है इत्यादि तर्पण श्रौर श्राद्ध के विषय में जो छापा गया है सो लिखने और शोधने वालों की भूल से छप गया है। इस के स्थान में ऐसा सममना चाहिये कि जीवितों की श्रद्धा से सेवा करके नित्य तृप्त करते रहना यह पुत्रादि का परम धर्म है और जो जो मर गये हों उनका नहीं करना क्योंकि न तो कोई मनुष्य मरे हुए जीव के पास किसी पदार्थ को पहुँचा सकता और न मरा हुआ जीव पुत्रादि के दिये पदार्थों को प्रहण कर सकता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि जीते पिता आदि की प्रीति से सेवा करने का नाम तर्पण और आदि है अन्य नहीं। इस विषय में वेद्मंत्रादि का प्रमाण भूमिका के ११ श्रंक के पृष्ठ २५१ से लेके १२ श्रंक के २६७ पृष्ठ तक छपा है वहां देख लेना।।

[ 84]

॥ विज्ञापनम् ॥

[68]

सब सज्जन लोगों को विदित हो कि अब वेदभाष्य के दो दो अंक मुंबई में छपा करेंगे और सब प्राहकों के पास बराबर प्रतिमास में पहुंचा करेंगे, मुंबई में हमारी श्रोर से रा० रा० बावू हरिचन्द्र चिंतामिण जी इस काम में प्रधान ठहराये गये हैं, उनका ठिकाना कोट मुम्बई है ॥ श्रौर निम्नलिखित नाम ठिकाने पर मूल्य भेजने से सब पुस्तक मिल सकते हैं प्रयाग में पंडित सुन्दरलाल रामनारायण पोस्टमास्टर जनरेल्स आफिस ॥ लाहौर में लाला बल्लभदास बिहारीलाल मंत्री आर्थ्यसमाज गली

१. यह विज्ञापन ऋग्वेद श्रौर यजुर्वेद भाष्य के श्रंक १ श्रौर २ के टाइटल के पृष्ठ पर छपा है। इस से यही त्रिदित होता है कि ऋषि ने इसे सं० १६३५ मास श्रावरा के प्रारम्भ में लिखा होगा। [यग्रपि विज्ञापन के अन्त में स्वामी जी के इस्तात्वर नहीं हैं तथापि यह विज्ञापन उनकी श्रोर से ही है, यह इस विज्ञापन की

२. यह विशापन भी ऋग्वेद श्रौर यजुर्वेद भाष्य श्रंक १ श्रौर २ के टाइटल के पृष्ठ पर छपा है। इससे यही विदित होता है कि ऋषि ने इसे सं० ११३५ मास श्रावरा के प्रारम्म में लिखा होगा। यद्यपि इस विज्ञापन पर भी स्वामी जी महाराज के हस्ताच्चर नहीं हैं तथापि इस विज्ञापन की दूसरी पंक्ति के 'हमारी श्रोर से' पदों से स्पष्ट है कि यह विज्ञापन स्वामी जी महाराज की त्रोर से ही दिया गया था। यु॰ भी०।

वच्छोवालियां ॥ अमृतसर में बाबू ज्ञानसिंह की दुकान पर हाल दरवाजे क्रिप्चिन स्टोर के पास के ठिकाने ॥ और स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी के पास पत्र और उसका मृत्य मेजने से वेदमाध्य और अन्य पुस्तकों भी स्वामी की बनाई मिलती हैं ॥ जो प्राहक वर्ष के आरम्भ वा पहिले वेदमाध्य का वार्षिक मृत्य दे देगा, उसको प्रत्येक वेद के वर्त्तमान के ४) और गतवर्ष के ४॥) देना होगा, और जो पुराना प्राहक है, क्पये प्रथम नहीं भेजेगा तो उसने गतवर्ष के ५। और वर्त्तमान वर्ष के ४) प्रत्येक वेदमाध्य पर देना होगा ॥ और जो नवीन प्राहक होंगे, और प्रथम मृत्य देके पीछे पुस्तक लोंगे उनसे गतवर्ष के प्रत्येक वेद पर ४॥) साढे चार २ और वर्त्तमान वर्ष का ४) चार २ लिये जायंगे जो केवल भूमिका लेगा वह ५) देकर ले सकता है ॥ अब इस महीने से लेकर ऋग्वेद और यजुर्वेद के मन्त्रमाध्य प्रतिमास में छपा करेंगे ॥ जिन प्राहक ने दाम नहीं भेजे हैं उनको उचित है कि वेदमाध्य का चंदा शीघ भेज देवें ॥

[५] नं० २१६° पत्र (५५)

[64]

बायू माधवलाल जी आनन्द रही!

विदित हो कि चिट्ठी आपकी आई बहुत हर्ष हुआ। आप पाणिनीयाष्टाध्यायी भाष्य के आहकों का सूचीपत्र बना कर भेज दीजिये, क्योंकि जो इस में खर्च होगा वह तो आप को ज्ञात ही होगा। १७०० प्राहक जब हो जायेंगे तब आरम्भ करेंगे। सब सभासदों को नमस्ते।।

रुड़की जिले सहारनपुर २५ जुलाई ७८°

द्यानन्द सरस्वती

[2]

पत्र (५६)

[68]

स्वित्वश्रीमद्वर्यगुणाढ्यभ्यः सर्विहतं चिकीर्षभ्यो विद्वदाचारसिहतेभ्य एकेश्वरोपासनातत्परेभ्यस्तेनोक्तवेदविद्याप्रीत्युत्पन्नेभ्यः प्रियवरेभ्यः पातालदेशनिवासिभ्योऽस्मद्वन्धुवर्गेभ्य आर्य्यसमाजेकसिद्धांतप्रकाशियोसोफीकलाख्यसभापतिभ्यः श्रीयुतहेनरी एस श्रोलकौटसंज्ञकप्रधानादिभ्यस्तत्रत्यसर्वसमासद्भयो द्यानन्द्सरस्वतीस्वामिन आशिषो भवन्तुतमाम् । अत्रत्यं शमीश्वरानुमहतो वर्त्तते तत्र भवदीयं च
नित्यमाशासे ॥ मया श्रीमत्प्रेषितानि पत्राणि सर्वार्यायर्थसमाजप्रधानश्रीयुतहरिश्चन्द्रचिन्तामणिद्वारा
प्राप्तानि तत्रत्यं वृत्तान्तं विदित्वा ममात्रत्यानामार्यसमाजप्रधानमन्त्रिसभासदां चात्यन्त आह्वादो जात
इति । एतदुत्तमकार्यप्रवृत्तावीश्वराय सहस्रशो धन्यवादा देयाः । येनाद्वितीयेन सर्वशक्तिमताऽखिलजगत्स्वा-

१. इस प्रन्थ में छपे हुए सब पत्रों में से यह पहला पत्र है जिस पर पत्र संख्या लिखी हुई है। यह संख्या कब से लिखी जानी ब्रारम्भ हुई, इस का जानना ब्रामीष्ट है। मूल पत्र ब्रार्थसमाज दानापुर के संग्रह में सुरिच्चित है।

२. सम्भव है यहां १००० का लेखकप्रमाद से १७०० बन गया होगा। यु० मी०।

३. श्रावण कृष्ण ११ बृहस्पतिवार सं० १६३५ । यु० मी० ।

मिना सर्वजगज्जनकथारकेण परमात्मना बहुकालात्पाखण्डमतदुष्टोपदेशभावितपरस्परावरोधान्धकारस-हितमनसां भवदादीनामस्मदादीनां च भूगोलस्थानां सर्वेषां मनुष्याणामुपरि पूर्णकृपान्यायौ विधाय पुनस्तद्दुःखनिमित्तकपटारूढमतविच्छेदनाय स्वोक्तेषु सर्वसत्यविद्याकोशेषु वेदेषु प्रीतिरूत्पादिताऽनो वयं सर्वे भाग्यशालिनः स्म इति निश्चितं विज्ञाय सकुपाकट। होणास्माकमिदं सर्वोहतसम्पादि कृत्यं प्रतिज्ञणमुन्नतं करिष्यतीति प्रार्थयामहे ।

१—यच्छ्रीमत्प्रेषितसभाव्रतिष्ठापत्रस्योपरि मया स्वहस्ताचराणि सुद्रितं च कृत्वा श्रीमतः प्रति पुनः प्रेषितं तद्भवन्तः सद्यः प्राप्स्यन्ति । यच श्रीमद्भिर्तिखितमार्ग्यावर्चीयार्ग्यसमाजशाखाथियोसो-फोकलसुसायटीति नाम रिच्नतं तद्दसमाभरिप स्वीकृतिमिति विजानीत ॥

२—सर्वेर्मनुष्यैयंथेश्वरोपासना चतुर्वेद्रभूमिकायां प्रतिपादिता तथैवानुष्ठेयेति । तत्रोक्तस्यायं संत्तेपः । सर्वमनुष्यैः शुद्धदेशस्थिति कृत्वात्ममनःप्राणेन्द्रियाणि समाधाय सगुणिनर्गुणिविधानाभ्यामी-श्वर उपासनीयः । एतस्या उपासनायास्त्रयोऽवयवाः । स्तुतिः प्रार्थनोपासना चेति । एतेषामेकैकस्य द्वौ द्वौ भेदौ स्तः । तत्र यया तदीयगुण्कीर्त्तनेन सहेश्वरः स्तूयते सा सगुणा स्तुतिः ॥ तद्यथा—

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमत्रणमस्नाविर १ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूयीथातथ्यतोऽर्थान् व्यद्धाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

य० ग्र० ४० । सन्त्र ८॥

(स पर्यगात्) यः परितः सर्वतोऽगाद्व याप्तवानस्ति (शुक्रम्) सद्यः सर्वजगत्कर्चाऽनन्त-वीर्यवान् (शुद्धम्) न्यायसकलिव्याद्सित्यगुणासहितत्वात् पवित्रः (कविः) सर्वज्ञः (मनीषी) सर्वात्मनां सान्ती (परिभूः) सर्वतः सामर्थ्ययोगेन सर्वोपरि विराजमानः (स्वयम्भूः) सद्रा स्वसामर्थ्ययोगैकरसत्वाभ्यां वर्त्तमानः (शाश्वतीभ्यः, समाभ्यः) सर्वदैकरसवर्त्तमानाभ्यो जीवरूपाभ्यः प्रजाभ्यः (याथातथ्यतोऽर्थान् व्यद्धात्) वेदोपदेशेन यथावदर्थानुपदिष्टवानस्ति । एवमादिना स सगुणारीत्या सर्वैः स्तोतव्यः । यत्र यत्र क्रियया सह सामानाधिकरण्येनेश्वरगुणा स्तूयन्ते सा सा सगुणा स्तुतिरिति मन्तव्यम् । श्रथ निर्गुणा—(श्रकायम्) श्रर्थाद्यो न कदाचिज्जन्मशरीरधारणेन साऽत्रयवो भवति (श्रव्रणम्) नाऽस्य कहिँ चिच्छेदो भवति (श्रपापविद्धम्) यो न कदाचित्पापकारित्वेना-न्यायकारी भवति ॥

> न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थी नाष्युच्यने ॥१॥ न पश्चमो न षष्ठः सप्तमो नाष्युच्यते ॥२॥ नाष्ट्रमो न नवमो दशमो नाष्युच्यते ॥३॥ तिमदं निगतं सहः स एष एक एकट्टदेक एव ॥४॥

> > अथवं को १३ । अनु १४ । मं० १६ । १७ । १८ ।२० ॥

श्रत्र नवभिर्नकारैर्द्वितीयत्वसंख्यावाच्यमारभ्य नवत्वसंख्यावाच्यपर्यन्तस्य भिन्नस्येश्वरस्य निषेधं कृत्वैकमेवेश्वरं वेदोऽवधारयति यथा। सर्वे पदार्थाः स्वगुर्णैः सगुर्णाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः सन्ति तथेश्वरोऽपि स्वगुर्णैः सगुर्णाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः सन्ति तथेश्वरोऽपि स्वगुर्णैः सगुर्णाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः स्वित्रद्धगुर्णैनिर्गुणाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः स्वविरुद्धगुर्णैनिर्गुणाः स्वविरुद्धगुर्णेनिर्गुणाः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्याः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्वेनिर्गिष्याः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्वेनिरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्थाः स्वविरुद्धगुर्थाः

१. श्रत्र 'नवत्व'स्थाने 'दशम' शब्दस्य पाठो युक्तः, मन्त्रे 'दशमो नाप्युच्यते' इति वचनात् । यु०मी० । CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

## ।। अथ प्रार्थना ॥ यां मेघां देवगणाः पित्रश्चोपासते ।

तया मामद्य मेधयाऽग्रे मेधाविनं क्रुरु स्वाहा ॥ यजु॰ श्र॰ ३२ । १४ ॥

हे अग्ने सर्वप्रकाशकेश्वर कृपया त्वं यां मेधां देवगणा विद्वत्समूहाः पितरो विज्ञानिनश्चोपासते स्वीकुर्वन्ति तया मेधया स्वाहया सत्यविद्यान्वितया भाषया चान्वितं मामद्य कुरु सम्पाद्य । येन मनुष्येण विद्याबुद्धिर्याचिता तेन सर्वशुभगुणसमूहो याचित इत्येवमादिसगुण्रीत्या परं ब्रह्म प्रार्थनीयम् । अथ निर्गणा—

मा नो वधीरिन्द्र मा परादा मा नः त्रिया भोजनानि प्रमोषीः ।
आण्डा मा नो मधवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत्सहजानुषाणि ॥१॥ ऋ॰ रार०४।
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः त्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥२॥ ऋ॰ रारर४।
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीईविष्मन्तः सदिमन्त्वा हवामहे ॥३॥ ऋ॰ रारर४।
मा नस्तोके स्वर्थानिकारिकार स्वर्थाना स्वर्थानी स्वर्थाना स्वर्यं स्वर्थाना स्वर्थाना स्वर्थाना स्वर्थाना स्वर्थाना स्वर्थाना स्वर्थाना स्वर्थाना स्वर्

हे कद्र दुष्टरोगदोषपापिजननिवारकेश्वर स्वक्रुण्या त्वं नोऽस्मान् मा वधीः । स्वस्वरूपानन्द्विज्ञानप्रेमाज्ञापालनशुद्धस्वभावात् कदाचिद् दूरे मा प्रचिप त्वं च मा परादा दूरे मा तिष्ट । नोऽस्माकं प्रियाणि भोजनान्यभीष्टान् भोगान् मा प्रमोषीः पृथक् मा कुरु । हे शक्क सर्वशक्तिमँस्त्वं नोऽस्माकमाण्डा गर्भान् मा निर्भेद्भययुक्तान् मा कुरु । हे भगवन् नोऽस्माकं सहजानुषाणि सहजेनानु- पङ्गीणि पात्राणि सुखसाधनानि मा निर्भेन्मा विदीर्णानि कुरु॥ १ ॥ हे कद्र सर्वदुष्टकर्मशीलानां जीवानां तत्तत्फलदानेनरोद्यितरीश्वर त्वं नोऽस्माकं महान्तं विद्यावयोवृद्धं जनं मा वधीर्मा हिंसय । उतापि नोऽस्माकमर्भकं खुद्धं जनं मा वधीर्मा वियोजय । हे भगवन् नोऽस्माकमुच्चन्तं विद्यावीर्थसेचनसमर्थं मा वधीः । उतापि नोऽस्माकमुच्चितं विद्यावीर्थसिक्तं जनं सद्गुण्यस्पन्नं वस्त्वन्तरं वा मा वधीः । नोऽस्माकं पितरं पालयितारं जनकमध्यापकं वोत मातरं मान्यकर्त्री जनयित्रीं विद्यां वा मा रीरिषो मा विनाशय । नोऽस्माकं प्रियास्तन्वः सुखरूपलावण्यगुण्यसिहतानि शरीराणि मा रीरिषो मा हिंसय ॥२॥ हे कद्र सर्वरोगविदारकेश्वर त्वं कृत्या नोऽस्माकं स्तोके हृस्वे तनये मा रीरिषः । नोऽस्माकमायौ मा रीरिषः । नोऽस्माकं गोषु पशुष्टिनन्द्रयेषु मा रीरिषः । नोऽस्माकमश्वेष्वमन्द्रयोदवेगवत्पदार्थेषु मा रीरिषः । त्वं भामितः पापानुष्ठानेनाऽस्मामिः क्रोधितो नोऽस्माकं वीरान् मा वधीः । हे कद्र हविष्मन्तो वयं सदं ज्ञानस्वरूपं त्वामिदेव हवामहे गृहीम इत्येवमादिना निर्णुणरीत्या प्रार्थनीय इति ॥

## ॥ अथ सगुणोपासना ॥

न्यायकुपाज्ञानसर्वप्रकाशकत्वादिगुणैः सह वर्त्तमानं सर्वत्र व्याप्तमन्तर्यामिणं यथास्तुतं यथाप्रार्थितं परमेश्वरं निश्चित्य तत्रात्ममनइन्द्रियाणि स्थिरीकृत्य दृढा स्थितिस्तदाज्ञायां च सदा वर्त्त-मानमिति सगुणोपासनम् ॥

विड्की, सन् १८७८

## ॥ अथ निर्गुणोपासना ॥

सर्वक्केशदोषनाशनिरोधजन्ममरणशीतोष्णचुचृद्शोकमोहमदमात्सर्व्यक्रपरसगन्धस्पर्शादिरहितं परमेश्वरं ज्ञात्वा स सर्वज्ञतयाऽस्माकं सर्वाणि कर्माणि पश्यतीति भीत्वा सर्वथा पापाननुष्टान-मित्येवमादिना निर्गुणोपासना कार्या। एवं स्तुतिप्रार्थनोपासना भेदैश्विधारूपां सगुणनिर्गुणलच्चणान्वितां मानसीं क्रियां कृत्वेश्वरोपासनं कार्यमिति ॥

३-अथार्य्यशब्दार्थः-यो विद्याशिचासर्वोपकारधम्मीचरणसमन्वितत्वाज्ञनैज्ञीतुं प्राप्तुमहः स आर्थः । आर्थो ब्राह्मण्कुमारयोः ॥ अ० ६ । २ । ५८ ॥ वेदेश्वरयोर्वे दितृत्वेन तदाज्ञानुष्ठातृत्वं ब्राह्मण्त्वम् । अष्टमं वर्षमारभ्याष्टचत्वारिंशद्वर्षपर्यन्ते समये सुनियमजितेन्द्रियत्व-विद्वत्संगसुविचारैर्वेदार्थश्रवण्मनननिदिध्यासनपुरःसरं सकलविद्याग्रहणाय ब्रह्मचर्यसेवनं पश्चाद्यकाले स्वस्त्र्यभिगमनं परस्त्रीत्यागश्च कुमारत्वमेतदर्थवाचिनोः परस्थितयोरेतयोः सामानाधिकरएयेन पूर्वस्थित-स्यार्थ्यशब्दस्य प्रकृतिस्वरत्वशासनादेवस्यैतद्रथेवाचित्वं सिद्धमिति विज्ञेयम्।

# विजानीह्यार्थान् ये च दस्यवी बहिष्मते रन्थया शासदव्रतान् ॥

वेदविद्भिवेदेष्वार्थ्यशब्दार्थं दृष्ट्वोत्तमपुरुषाणामार्थेति संज्ञा रिचता। यदा दृष्ट्वेदौ प्रादुर्भृतौ तदा नाम रच्चणिचकीर्षाभूत्। पुनर्ऋषिभः श्रेष्ठदुष्ट्योद्वयोर्भनुष्यविभागयोर्वेदोक्तानुसारेण द्वे नाम्नी रचिते श्रेष्ठानामार्थेति दुष्टानां दस्य्वति । श्राहमन् मन्त्रे मनुष्यायेश्वरेणाज्ञा दचा हे मनुष्य ! त्वं बर्हिष्मते <del>ष्चमगुणकर्मात्वभावविज्ञान</del>प्राप्तये श्रेष्ठगुणस्वभावकर्माचरणपरोपकारयुक्तान् विदुष श्रार्यान् विजानीहि। ये च तिष्ठकृद्धा दस्यवः सन्ति तानिप दुष्टगुण्खभावकम्मीचरणान् परहानिकरण्तत्परान् दृश्यूश्च विजानीहि। एतान् सत्रतान्सत्याचरणादियुक्तानार्यान् रन्धय संसाधय विद्याशिद्याभ्यां च शासत् शाघि । एवमव्रतान सत्यानुष्टानाद्विरुद्धाचरणान रन्धय हिन्धि द्गडेन शासत् शाघि ताडय । श्रनेन स्पष्टं गम्यते श्रार्यस्वभावविरुद्धा दस्यवी दस्युस्वभावविरुद्धा श्रार्थी इति ॥

> ा यवं चकेणाश्विना वपन्तेषं दुइन्ता मनुषाय दस्रा। अभि दस्युं वकुरेणाधमन्तोरुज्योतिश्चऋथुरार्याय ॥२॥

> > ऋ०१।११७।२१॥

अश्विनावध्वर्यू दस्युं दुष्टं मनुष्यमभित्रमन्तौ मनुषायार्यायोक वहुविधं विद्याशिचासिद्धं ज्योतिश्वक्रयुः कुर्याताम् । अत्रापि मनुष्यनाम्नी आर्यद्रस्यू इति वेद्यम् । एते नाम्नी प्राङ्मनुष्यसृष्टिसमये किञ्चित्कालानन्तरं वेदाज्ञानुसारेण विद्वन्ती रित्तते । हिमालयप्रान्त आद्या सृष्टिरभूत् । यदा तत्र मनुष्याणां वृद्धचा महान् समुदायो बभूव तदा श्रेष्ठमनुष्याणामेकः पच्चोऽश्रेष्ठानां च द्वितीयो जातः। तत्र स्वभावभेदादेतयोविंरोघो बभूव पुनर्य आर्थास्त एतद्देशमाजग्मुः पुनस्तत्संगेनास्या भूमेरार्ग्यावर्त्तेति संज्ञा जाता । आर्य्याणामावर्त्तः समन्ताद्वर्त्तनं यस्मिन् स आर्यावर्त्ता देशः । तद्यथा--

सरस्वतीदृषद्वसोर्देवनद्योर्यदन्तरम् । तं देवनिर्मितं देशमार्य्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥१॥ आसमुद्रात्तु वै पूर्वाद्रासमुद्रात्तु पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्घ्योरार्घ्यावर्त्तं विदुर्बुधाः ॥२॥

मनु॰ ग्रा॰ २। क्ष्रो॰ १७। २२॥

देवनद्योर्देवानां विदुषां संगसिहतयोः सरस्वतीद्दवद्वत्योर्या पश्चिमप्रान्ते वर्त्तमानोत्तरदेशादृ ज्ञिण्देशस्थं सागरमिगच्छन्ती सिन्धुनद्यस्ति तस्याः सरस्वतीति संज्ञा। या प्राक् प्रान्तवर्त्तमानोत्तरदेशा-दिशस्थं सागरमिगच्छन्ती सिन्धुनद्यस्ति तस्याः सरस्वतीति संज्ञा। या प्राक् प्रान्तवर्त्तमानोत्तरदेशा-दिज्ञ्यस्थितं समुद्रमिगच्छन्ती ब्रह्मपुत्रनाम्ना प्रसिद्धा नद्यस्ति तस्या द्दवद्वतीति संज्ञा एतयोर्मच्ये वर्त्तमानं देवैविद्वद्विराय्येर्मय्यादीकृतं देशमाय्यावर्त्तं विज्ञानीत ॥ १॥ तथा च यः पूर्वसमुद्रं मर्यादी-छत्य पश्चिमसमुद्रपर्यन्ते विद्यमानो हिमालयिन्ध्याचलयोकत्तरदि्तिणप्रान्तस्थितयोर्मच्ये देशोऽस्ति तमाय्यावर्त्तं बुधा विदुः । आर्याणां समाजो या समा स आर्य्यसमाजः । दस्युमावत्यागायार्य्यगुण-प्रहणाय च या समा साप्यार्यसमाजसंज्ञां लभते । अतः किमागतं सर्वासां शिष्टसमानामार्य्यसमाजनामरक्तणं परमं भूषणमस्ति । नात्र काचित् ज्ञतिरिति विज्ञानीमः ॥

॥ ४ ॥ स्वयं सत्यशित्ताविद्यान्यायपुरुषार्थसौजन्यपरोपकाराद्याचरणे वर्त्तेत तत्रैव प्रयत्नतो वन्धुजनानिप वर्त्तयेत् । इति संद्येपत उत्तरम् । एतस्य विस्तरविज्ञानन्तु खलु वेदादिशास्त्राध्ययनश्रवणा-भ्यामेव वेदितुं योग्यमस्ति । ये च मया वेदभाष्यसम्ध्योपासनार्थ्याभिविनयवेदविरुद्धमतखण्डनवेदान्ति-ध्वान्तिनवारणसत्यार्थप्रकाशसंस्कारविध्यार्थ्योद्देश्यरत्नमालाद्याख्या प्रन्था निर्मितास्तद्शीनेनापि वेदो-देशयविज्ञानं भवित्मर्हतीति विज्ञानीत ॥

॥ ५ ॥ यच्चेतनवत्त्वं तज्जीवत्वम् । जीवस्तु खलु चेतनस्वभावः । अस्येच्छादयो धम्मस्ति निराकारोऽविनाश्यनादिश्च वर्त्तते । नायं कदाचिद्धत्पन्नो न विनश्यति । एतस्य विचारो वेदेष्वार्य्यकृत- अन्थेषु च बहुभिर्हेतुभिः क्वतोऽस्ति । अत्र खलु विस्तरलेखावकाशाभावात् स्वरूपं प्रकाश्यते ।

कुर्वनेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतध्रसमाः ॥ यजु० ग्र० ४०। मं० २।

कुर्वन्नेवेह कम्मांगीति जीवस्य शतवर्षेपर्यम्तं प्रयन्नकर्णं धम्मीः। जिजीविषेत् जीवितुमिच्छे-दितीच्छाधम्भीः॥

> सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु । दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥१॥

> > यजुः ग्र० ६ ।२२ ॥

सुमित्रिया न त्राप त्रोषधयः सन्त्वित सुखेच्छाकरणात् सुखं धर्माः । दुर्मित्रियास्तस्मै सिन्त्वित दुःखत्यागेच्छाकरणाद् दुःखं धर्माः । योस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म इति द्वेषो धर्माः । वेदाहमेतं पुरुषम् । यजुः त्र०३१ । मं० १८ । इति ज्ञानं धर्माः । जीवश्चेतनस्वरूपत्वाद्यद्वतुकूलं तत्तत्सुखमिति विदित्वा सदेच्छिति । यद्यत् प्रतिकूलं तत्तद् दुःखमिति ज्ञात्वा सदा द्वेष्टि सुखप्राप्तये दुःखहानये च सदा प्रयत्ते । एतद्ग्तर्गताः सूक्ष्मा बह्वोऽन्येऽपि जीवस्य धर्माः सन्तीति वेद्यम् । इच्छाद्वेषप्रयत्रसुखदुःखज्ञानन्यात्मनो लिंगमिति ॥ न्याय० त्र०१ । सू०१० । जीवस्यैतानि लिंगानि धर्मतत्त्वणानि सन्तीति ज्ञातव्यम् । प्राणापानिनमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रयान्तरिकाराः सुखदुः- खेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि—वैशेषिक० त्र०३ त्रा०२ सू०४ । कोष्टचस्य वायोनिस्सारण् प्राणः । बाह्यस्य वायोराचमनमपानः । नेत्रस्यावरणं निमेषः । तदुद्घाटनसुन्मेषः । जीवनं प्राणधारणम् । मनो ज्ञानम् । गतिरुत्वेपणाद्यनुष्ठानम् । इन्द्रियान्तरिकाराः इन्द्रियसंयोजनं कस्माचिद्विषयान्निवर्तम् । अन्तर्हृदये व्यापारकरणम् । विकाराः ज्ञन्वङ्वरादिरोगादयः । धर्मानुष्ठानमधर्मानुष्ठानं च । अन्तर्हृदये व्यापारकरणम् । विकाराः ज्ञन्वङ्वर्वरादिरोगादयः । धर्मानुष्ठानमधर्मानुष्ठानं च ।

संख्याजात्यभिप्रायेगौकत्वं व्यक्त्यभिप्रायेग् वहुत्वम् । पूर्वानुभूतस्य ज्ञानमध्येऽङ्कनं संस्कारः । परिसाग्रं परमसूक्ष्मत्वम् । पृथक्त्वमस्यान्योऽन्यं भेदः । संयोगो मेलनम् । वियोगः संयुज्य पृथग्भवनं वियोगत्विमिति च जीवधर्माः। मानसोऽग्निजीव इति महाभारतस्य मोचधर्मान्तर्गते भरद्वाजोक्तौ वर्तते। अस्यायमर्थः। यो मनस्यन्तः करणे भव इच्छादिज्ञानान्तसमृहप्रकाशसमवेतः पदार्थोऽस्ति तस्य जीवसंज्ञेति वोध्यम् । श्रयं खलु देहेन्द्रियप्राणान्तःकरणाद्भित्रश्चेतनोऽस्ति । क्रतः । श्रनेकार्थानां युगपत् संघातृत्वात् । तद्यथा । श्रहं यच्छ्रोत्रेणाश्रौषं तच्च वा पश्यामि । यच बुषाऽद्राचं तद्धस्तेन स्पृशामि । यद्धस्तेनास्पाचं तद्रसनया स्वदे । यद्रसनयाऽस्वदिषि तद्वार्णेन जिघामि । यद्घार्णेनाघासिषं तन्मनसा विजानामि । यन्मनसा-Sक्वासिषं तिचित्तेन स्मरामि यिचत्तेनास्मार्षं तद्बुध्या निश्चिनोमि । यद्बुध्या निरचैषं तद्हङ्कारेणाभिमन्य इत्यादिप्रत्यभिज्ञया सह वर्तमानं यदस्ति तदात्मस्वरूपः सर्वेभ्यः प्रथगस्तीति वेदितव्यम् । कुतः । यः स्वस्वविषये वर्त्तमानैरन्यविषयाद्भिन्नवर्त्मभः श्रोत्रादिभिः पृथक पृथग्गृहीतानां शब्दार्थानां वर्त्तमानसमये सन्धातास्ति स एव जीवोस्त्यतः। नह्यन्यदृष्टस्थान्यः स्मरति नहि श्रोत्रस्य स्पर्शेप्रहर्गे साधकत्वमस्ति न च त्वच शब्दमहर्णे परन्तु श्रोत्रेण श्रुतो घटस्तमेवाहं हस्तेन स्पृशामीति यस्य पूर्वकालदृष्टस्यानुसंधानेन पुनरतस्यैवार्थस्य प्रत्यभिज्ञया वर्त्तमाने दर्शनमस्ति स उभयद्शिनः सर्वसाधनाभिव्यापकस्य सर्वाधिष्ठातु-र्ज्ञानस्वरूपस्य जीवस्यैव धम्भे उपपद्मत इति मन्तव्यम् । एवम।दिप्रकारेण वहूनामार्थ्याणां वेदशास्त्रगोध-समाधियोगविचाराभ्यां जीवस्वरूपज्ञानं बभूव भवति भविष्यति वेति यदायं शरीरं त्यजति तदा मरणं जातमित्याचत्तते, निह खलु तस्य देहाभिमानिनो जीवस्य वियोगाद्विना मरणं सम्भवति । शरीरं त्य-क्त्वायं खल्वाकाशस्थः सन्नोश्वरव्यवस्थया स्वकृतपापपुण्यानुसारेण शरीरान्तरं प्राप्नोति । यावतपूर्वं शरीर-न्त्यक्त्वाऽऽकाशे गर्भवासे बालाज्ञावस्थायां वा तिष्ठति न तावदस्य किञ्जिद्विरोषविज्ञानमुपपद्यते । किन्तु यथा निद्रामुच्छक्कितो जीवो वर्त्तते तथा तत्रास्य गतिरिति। यद्येतस्य वार्त्ताकरणे कपाटताडने परशरीरावेशे सामध्यं वर्त्तते तर्हि स कथं न पुनः प्रियं स्थानं धनं शरीरं वस्त्रभोजनादिकं प्रियान् स्त्रीपुत्रपितृवन्धु-मित्रभृत्यपशुयानादीन् प्राप्नोति । यद्यत्र कश्चिद् ब्र्याद्यदा सम्यग्ध्यानं कृत्वा तमाह्वयेत् । तर्हि तत्समीप-मागच्छेत्। अत्र ब्रमः। यदा कस्यचित्कश्चित्त्रियो स्त्रियते तदा स तस्य प्राप्त्यर्थमहर्निशं सम्यग्ध्यानं करोति पुनः स कथं नागच्छति । यदि कश्चिद् ब्यात्पूर्वसम्बन्धिनः प्रति नागच्छत्यन्यान् प्रत्यभ्याग-च्छतीति । नैतदुपपद्यते । कुतः । पूर्वसम्बन्धिनः प्रति प्रीतेर्विद्यमानत्वेनासम्बन्धिषु प्रीतेरदर्शनात् । नेदमनिधष्ठातृकं स्वतन्त्रं जगत्सम्भवति । सर्वस्यास्याधीशस्य न्यायकारिणः सर्वज्ञस्य सर्वेभयो जीवेभ्यो पापपुरयानां फलप्रदातुरीश्वरस्य जागरूकत्वात् । अतः श्रीमद्भिर्यो मृतकस्य प्रतिविम्वो मत्समीपे प्रेषितः तत्र कापट्यधूर्त्तत्वव्यवहारो निश्चीयत इति । यथेंद्रजाली चातुर्येगाश्चर्यान् विपरीतान् व्यवहारान् सत्या-निव दर्शयति तथाऽयमस्तीति प्रतीयने यथा कश्चित्सूर्य्यचन्द्रप्रकाशे स्वच्छायायां कर्ण्ठशिरस उपरि निमेषोन्मेषवर्जितां स्थिरां दृष्टि कृत्वा किञ्चित्कालानन्तरं शुद्धमाकाशं प्रत्यू ध्वं पुनरेवमेव निमेषोन्मेषवर्जितां दृष्टि कुर्य्योत् स स्वस्माद्भिन्नां स्वच्छायाप्रतिबिम्बरूपां महतीं मूर्तिं पश्यति तथैवाऽयं व्यवहारो भवितुमहित। संस्कृतविद्यायां भूतशब्देन यः कश्चित्सशरीरः प्राणी वर्त्तित्वा न भवेत्तस्य प्रहण्मस्ति । यस्तु खलु निर्जीवो देहः समन्ने वर्त्तते यावद्यस्य दाहादिकं न क्रियते तावत्तस्य प्रेत इति संज्ञा। ईश्वरेण समः कश्चिन्न भूतो न भविष्यतीत्याप्तवाक्यम् ।

गुरोः पेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्। पेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुध्यति ॥

मन् श्रव्य श्री० ६५॥

श्रत्र भूतशब्देन भूतस्थस्य प्रहण्म् । "प्रेतस्य" "प्रेतहारै" रेताभ्यां पदाभ्यां मृतकशरीरस्य प्रेत इति नाम । यथा पितृमेधं समाचरित्रति पदेन मृतकस्य पितृशरीरस्य दाहवद् गुरोर्मृतकशरीरस्य दाहकरणं पितृमेधसंज्ञां लभते तथा मृतकानां शरीराणां विधिवदाहकरणं नृमेध इति विज्ञेयम् । इदं प्रसंगादुक्तम् । यथा भूतप्रेतेष्विदानींतनानामभिप्रायोस्ति तथेदं नैव सम्भवति । कुतः । समूलतोऽस्य मिध्यात्वेन भ्रान्ति-रूपत्वात् । नात्र कश्चित्सन्देह इदमस्ति नास्ति वेति किन्तु सर्वमिदं कपटजालिमिति विजानीमः । श्रत्राल-मितिवस्तरेणैतावतैवाधिकं भवद्भिविज्ञेयमिति ॥

॥ ७ ॥ भवन्तो यां शिक्षां मत्तो ब्रहीतुमिच्छिन्ति सा परमार्थं व्यवहारविषयभेदेनातिविस्तीग्रास्ति । पत्रद्वारा लिखितुमशक्या । सा संज्ञेपतो मद्रचितेषु ब्रन्थेषु लिखितास्ति । विस्तरशस्तु चेदादिशास्त्रेषु । परन्त्वेतदुत्तरदानाय मया श्रीयुतहरिश्चन्द्रचिन्तामणीन् प्रति लिखितं मद्रचितस्य स्वल्पस्यार्थ्येद्देश्यरक्षमालाग्रन्थस्येगलण्डभाषया विवरणं ऋत्वा भवतां समीपे सद्यः प्रेषयन्त्विति ते तत्र शीघ्रं
प्रेषयिष्यन्तीति बुष्यध्वम् । तद्दर्शनेन श्रीमतामुद्देशतो मदुपदेशशिक्षा भविष्यति ॥

॥ द ॥ वेदोक्तानुसारेण वक्ष्यमाण्रात्या मृतकक्रिया कर्त्तव्या । तद्या । सेयं संस्कारिविधप्रन्थे विस्तरशः प्रतिपादिता तथाप्यत्र संदेषतो लिख्यते । यदा कश्चिन्मनुष्यो म्रियेत तदा मृतकं शरीरं
सम्यक् स्नर्पायत्वोत्तमसुरिभण्डानुलेप्य सुगन्धियुक्तेन्वीनैः शुद्धेन्वेद्धेराच्छाच मिलनानि वस्नाणि पृथक्
कृत्वा श्मशानभूमि नीत्वा तत्र यावान्ध्वंषाहुकः पुरुषस्तावद्दीर्घा पार्श्वतो व्यायाममात्रविस्तीर्णामुरुद्ध्री
गम्भीरां वितिस्तमात्रीमधस्तादेतत्पिरमाणां वेदि रचित्रता जलेनाभ्युक्ष्य शरीरभारसमं घृतं वस्नपृतं
कृत्वा तत्र प्रतिप्रस्थमेकैकरिक्तकापिरमाणां कस्त्रीमेकमाषपिमाणं कंशरं च संपेष्य यथावन्मेलयेत् ।
चन्द्रनपलाशाम्नादिकाष्टानि गृहीत्वा वेदिगक्तंपिरमाणेनैतेषां खण्डान् कृत्वाऽधस्ताद्धंवेदि पूरियत्वा
तद्यपि मध्यतो मृतकं वेद्दं संस्थाप्य कर्पूरगुरगुत्तुचन्दनादिचूर्णान् मृतकदेद्दाभितो विक्रीय्यं पुनस्तैयेव
काष्ट्रेस्तरत उध्वं वितिस्तमात्रीं वेदि संचित्य तन्मध्येऽभिर्यापनं कृप्यात् । तद्घृतं स्वल्पं स्वल्पं गृहीत्वा
यजुर्वेद्रस्यैकोनचत्वारिशाध्यायस्थं प्रतिमन्त्रमुचार्य्याभितो दाह्येत् । पुनर्यदा भस्मीभूतं शरीरं भवेत्तदा ततो
निवत्ये जलाशयं स्व स्व गृहं वा प्राप्य स्नानादिकं कृत्वा निःशोका संतो यथायोग्यं स्वानि स्वानि कार्याणि
कुर्ग्युः । पुनर्यदा दाहदिवसाचृतीये दिवसे सर्व शीवलं भवेत् तदा तत्र गत्वा सास्य सर्वं मस्म गृहीत्वा
स्थानान्तरे शुद्धदेशे गर्तं खनित्वा तत्र तत्सर्वं संस्थाप्य खनितगर्तं मृदाऽऽच्छादयेन् । एतावानेव वेदोक्तः
समातनोत्तमतमो मृतकसंस्कारोऽस्ति नातोधिको न्यूनश्चिति । एवमेव यानि स्वमित्रशरीरास्थीनि भवतः
समीपे स्थितानि संति तान्यपि कचिचच्छुद्धभूमौ गर्तं खनित्वा तत्र स्थापयित्वा मृदाच्छादनीयानीति ॥

॥ ९ ॥ पत्रद्वयमिङ्गलएडाख्यदेशे यथालिखितस्थाने प्रेषितम् ।

॥ १० ॥ यदा युष्माकं निश्चयः स्यात्तदा सभानामितपर्य्यासः कार्यः । विदुषां सभाया अयं नियमोस्ति यत् किञ्चिन्तृतनं कार्यं कर्त्तव्यं तत्सर्वमुत्तमान् विदुषः सभासदः प्रति निवेद्य तदनुमत्या कार्य्यमिति यद्यत्सर्वोपकारिवरुद्धं सभाकृत्यं तत्तन्नेव कदाचिदाचरणीयम् । यद्यत्तु खलु परिणामानन्दफलं तत्तद्विरादेव पुरुषार्थेन समयं प्राप्य कर्त्तव्यम् । तस्माद्यदावसर आगच्छेत्तदा तत्रत्यसभाया आर्य-समाजेति नामरत्त्रणे न काचित्त्वतिरस्तीति मतं मे ॥

॥ ११ ॥ अत उच्चे श्रीमन्तो यद्यत्पत्रं मत्समीपे प्रेषयेयुस्तत्तन्मन्नामांकितं प्रेषणीयम् । परन्तु पूर्वितिखितेन श्रीयुतहरिश्चन्द्रचिन्तामण्यादिद्वारैव प्रेषणीयम् । तत्रायं क्रमः । पत्रोपरि मन्नाम पत्रावरणपृष्ठोपरि श्रीयुतहरिश्चन्द्रचिन्तामणीनां नाम लिखित्वा प्रेषणीयम् । सिच्चतानन्दादिलच्चणाय सर्वशक्तिमते द्यासागराय सर्वस्य न्यायाधीशाय परत्रद्वणेऽसङ्ख्याता धन्यवादा वाच्याः । यत्कृपया भविद्धः सहाऽस्माकमस्माभिः सह भवतां च संप्रीत्युपकारसमयः प्राप्तः । एतममूल्यं समयं प्राप्य यूयं वयं चैवं प्रयतामहे यतो भूगोलमध्ये मनुष्याणां पाषण्डमतपापाचरणाविद्यादुरामहादिदोषनिवारणे नैकं सनातनं वेदप्रमाणसृष्टिक्रमानुकूलं सत्यं मतं प्रवचेतित । पत्रद्वाराऽतीवस्वलपं कार्य्यं सिध्यति । यावत्समन्ते परस्परं वार्ता न भवन्ति न तावत्समस्तो लाभो जायते । परन्तु यस्येश्वरस्यानुप्रहेण पत्रद्वारा वार्ताः प्रवृत्ताः सन्ति तस्यैव कृपया भवतामस्माकं च कदाचित्समन्तेऽपि समागमो भविष्यतीत्याशासे कि वहुना लेखेन बुद्धमद्वर्थेषु ॥

भूतकालाङ्क्रचन्द्रेऽब्दे नभोमासासिते दले । शुक्रे रुद्रतिथौ सम्यक् पत्रपूर्तिः कृता मया ॥ १ ॥ संवत् १९३५ श्रावणवदी ११ शुक्रवासरे पत्रमिदमलङ्कृतमिति विज्ञेयम् ॥

(दयानन्द्सरस्वती)

[9]

पत्र (५७)

[60]

बावू द्याराम श्रानन्द रहो।

श्रमरीकन चिट्ठी की नकल कराकर रवाना करेंगे। श्रौर यह भी श्राप को विदित होगा कि श्रमरीका थियोसोफिकल सोसायटी श्रार्थसमाज की शाखा बन गई श्रौर श्रमरीका वाले बरावर वेद को मानते हैं श्रौर उस की शिह्मा के इच्छुक [हैं] श्रौर हम बहुत राजी ख़ुशी हैं।

२७ जुलाई ७८ श्रावण वदी १३ [शिन] संवत् १९३५

द्यानन्द् सरस्वती रुड्की

[१] २५५

पत्र (५८)

[25]

ला० मूलराजजी एम. ए. आनन्द से रहो।

विदित हो कि कल आप के पास एक पारसल अमरीका की चिट्ठियों का भी पहुँचा होगा। सो उन में से डिसोमा और छपी हुई चिट्ठी जो उन के साथ है, सो हमारे पास भेज दीजिये। और

१. २६ जुलाई १८७८। [शुक्रवार २६ जुलाई को द्वादशी थी]।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ⊏३२ पर उद्धृत ।

३. यह संख्या हमने ला॰ मूलराज को लिखे गए श्रमले पत्र [पूर्ण संख्या ६०] की पंक्ति दो से ली है ।

४. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ८३२ पर उद्घृत।

रुड़की, सं० १९३५]

पत्र (६०)

१०३

लाहौर में अथवा ट्रिव्यून में शीघ छपवा दीजिये, क्योंकि इन की बहुत आवश्यकता है, और सब स्थानों से उनकी मांग आती है। इस लिए २०० कापी शीघ छपवा दीजिए। डिसोमा और छपी चिट्ठी जो असल है, वह हमारे पास भेजें। और जो नकल करके भेजी गई है सो छपने के लिये प्रेस में दीजिये। यहाँ पर व्याख्यान नित्य होते हैं। और लोगों के विचार बहुत अच्छे हैं। हम बहुत आनन्द में हैं। सब समासदों को नमस्ते।

५ अगस्त ७८ रुड्की

द्यानन्द् सरस्वती

[१] नं २५८

पत्र (५२)

[68]

ठाकुर भूपालसिंहजी त्रानन्द रहो।

विदित हो कि ठाकुर रणजीतसिंहजी ने रूपया हमारे पास भेज दिया है। परन्तु ठाकुर सुकुन्दिस् ने अब तक रूपया नहीं [भेजा] और पहले यहां उनकी दो तीन चिट्टियां इस विषय की आई कि रूपया हमारे पास मौजूद और तय्यार रक्खा है कहां भेज देवें। सो उनको कई बार लिख चुके कि हमारे पास भेजो। अब वे फिर चुप हो बैठे। इसका कारण ही मालूम नहीं होता कि क्या भेद है। और रूपये की हमको बहुत जरूरत है। इस लिए एक बार लिखा जाता है कि उन से फर्रखाबाद शहर की हुँडी बनवा कर यहां हमारे पास भिजवादो। ताकीद जानो। और हम बहुत आनन्द में हैं।

रुड़की जिं० सहारनपुर े ६ अया० १८७८ ३

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती

[२]

पत्र (६०)

[20]

ला० मृतराज एम० ए० त्यानन्द रहो। <sup>४</sup> विदित हो कि इससे पहले एक चिट्ठी सं० २५५ लिखी ५ त्यगस्त की त्याप के पास मेजी गई

१. श्रावण गु० ७ सोमवार सं० १६३५ । यु० मी० ।

२. प्रसिद्ध किववर पं॰ नाथूरामशङ्कर शर्मा जी हरदुश्रागंज, [ श्रालीगढ़ ] निवासी को यह पत्र किसी रही में से मिला था। पत्रों का श्रन्वेषशा करते हुए ला॰ मामराज सितम्त्रर सन् १६२८ को पं॰ जी के घर पहुँचे थे। वहीं किव जी ने बहुत श्राग्रह पर यह पत्र उन को दिया था।

मूल पत्र ऋब इमारे संब्रह में संख्या ७ पर सुरिच्त है।

ठाकुर भूपालसिंह ग्राम ऐख (जिला अलीगढ़) के रहने वाले ऋषि के अनन्य भक्त थे। ऋषि के अन्तिम दिनों में इन्होंने ही बड़ी अद्धा भिक्त से उनकी सेवा की थी।

उनके पौते चौ॰ मित्रसेन से ला॰ मामराज सितम्बरं सन् १६२८ को मिले थे। उन के काग्ज़ों के खोजने पर रामानन्द ब्र॰ के कितने ही पत्र मिले थे, परन्तु ऋषि का कोई पत्र नहीं मिला।

३. श्रावण शु॰ ८ मंगलवार सं० १६३५ । यु॰ मी०।

४. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पु॰ ८३२ पर उद्धृत ।

[रुड़की, सन् १८७८

१०४

है। सो पहुँची होगी। श्रीर श्रव फिर लिखते हैं। श्राप के पास जो चिट्ठी मेजी गई है सो उन में से दो श्रमली छपी हुई चिट्ठियां श्रीर डिसोमा बहुत शीघ्र हमारे पास मेज दो। क्योंकि उनकी नकल बाबू कमलनयन जी कर ले गये थे। वह समाज में विद्यमान है। श्रीर श्राघा खर्च छपाई का श्राप के ऊपर रहेगा। श्रीर श्राघा रुड़की निवासी पण्डित उमरावसिंह वा शङ्कर लाल श्रादि देवेंगे। परन्तु लाहौर प्रेस वा ट्रिब्यून प्रेस जहां छपवाने की इच्छा हो शीघ्र छपवा दीजिए क्योंकि २८ ता० को यहां पर टामसन कालेज की परीचा गवर्मिएट लेवेगी। फिर दो मास की छुट्टी में सब अपने २ घर चले जावेंगे। कभी तीसरे मास में श्रावेंगे। जो पास या फेल हो जावेंगे। इस लिए श्राप को लिखा जाता है कि २८ ता० से पहले छपवा लीजिए।

९ श्रगस्त ७८

दयानन्द सरस्वती

रुड़की

[६]

पत्र (६१)

[९१]

बाबू माधोलालजी आनन्द रही !

विदित हो कि आप को इस बात का विज्ञापन दिया जाता है कि बहुत से मनुष्य हुमारे नाम से आप को लूटते फिरते हैं और कहते हैं कि हमको स्वामीजी ने भेजा है, सो हमने अब तक किसी को व्याख्यान के लिए नियुक्त नहीं किया और जब नियत करेंगे तो सब समाजों में अपनी मोहर करके चिट्ठो भेज देवेंगे और एक नकल उसी चिट्ठो की मोहर करके उस मनुष्य को देदी जावेगी।। कभी ऐसे मनुष्य के धोले में न आना।। और प्राहक अष्टाष्यायी के भेज दो क्योंकि अब वैयार होने लगी है।।

९ अगस्त 3

-

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती रुड़की जि० सरारनेपुर

[8]

पत्र (६२)

[२२]

जनाव मौलवी मुहम्मद कासिम श्रली साहिव !

आपकी खिद्मत शरीफ में बजा (वाजिह) हो कि कल बवक्त शाम ६ बजे के रिजस्ट्री चिट्ठी आप की मेरे पास पहुँची। उस चिट्ठी पर आपके द्स्तखत न थे इस वास्ते आप को तकलीफ दी

- १. आवण ग्रु॰ १२ शुक्रवार सं० १६३५ । यु॰ मी।
- २. मूलपत्र आर्थसमाज दानापुर के पास सुरिच्चत है।
- ३. श्रावण शु० १२ शुक्रवार, सं० १६३५ । यु० मी० ।
- ४. पं ॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ ॰ ७३६ से उद्धृत।

रुड़की, सं० १९३५]

पत्र (७३)

१०५

जाती है कि मुन्शी चिट्टी लेकर आप की खिदमत में पहुँचता है। आप इस पर दस्तखत साबत कर देवें। क्योंकि इश्तिहार और लिफाफे पर तो आप के दस्तखत मौजूद थे मगर सिर्फ चिट्टी पर न थे, लिहाजा अर्ज है कि बराय इनायत दस्तखत चिट्टी मजकूर पर कर देवे। ताकि हम भी अपने दस्तखत कर के चिट्टी बराय डाक रजिस्ट्री आप के पास रवाना कर देवें। ज्यादा खैरियत।

रुड़की जिला सहारनपुर । १० त्र्यगस्त सन् १८७८ ।

द्यानन्द सरस्वती

[0]

पत्र (६३)

[93]

नं० ३०३

वाबू माधोलालजी आनन्द रही !

विदित हो कि चिट्ठी आप की आई एक नोट १०) के और २८) के टिकट पाये सो आप के लेखानुसार

४. सत्यार्थप्रकाश १०)

३. पं० महायज्ञविधि १)।।

१. श्रार्थ्याभिविनय ॥)

११॥)॥

डाक महसूल।।)

भेजते हैं सो जब आप के पास पहुँच लेवें रसीद भेज दीजिये और आर्य्यसमाज की उन्नति करते रहो॥ अष्टाध्यायी की वृत्ति बनने का आरम्भ हो गया है।

यहाँ पर सब प्रकार से कुशल है और हम आनन्द में हैं।

रुड़की जिले सहारनपुर १५ श्रगस्त ७=3

हस्ताच्र

दयान्न्द सरस्वती

[3]

पत्र (६४)

[68]

ला० मूल्राज जी एम० ए० श्रानन्द रहो। <sup>४</sup>

विदित हो कि चिट्ठी आप की लिखी हुई १४ अगस्त को पहुंची। और एक पारसल डिस्रोमा और दो छपी हुई चिट्ठियों से युक्त पहुंचा। आप को चाहिये कि इन चिट्ठियों के छापने में जो कुछ

- १. श्रावण शु० १३ शनिवार, सं० १६३५ । यु० मी० ।
- २. मूल पत्र श्रार्यसमाज दानापुर के संग्रह में सुरित्तत हैं।
- ३. भाद्र कुष्ण २, बृहस्पतिवार, सं० १६३५ । यु० मी०।
- ४. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ८३२, ८३३ पर उद्धृत।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञ।पन

[सङ्की, सन् १९७८

खर्च हुआ है सो लिख भेजें। क्योंकि खर्च रुड़की वाले देवेंगे। श्रीर आशा है कि यहां पर श्रार्थ्यस-माज अवश्य बन जावेगा। १७ अगस्त ७८

रुड़की

[3]

पत्र (६५)

[२५]

[मन्त्री श्रायेसमाज मुलतान] रुड़की में व्याख्यान नित्य होते हैं। दृढ़ आशा है कि आर्यसमाज अवश्य बन जावेगा। मौलवी महम्मद कासम भी हम से मुबाहिसा करने के लिये आया है और १८ ता० निश्चित है । सो अभी कुछ ठीक २ नहीं है, जब कुछ होगा सूचना दी जावेगी। हम बहुत आनन्द और छुशल में हैं। सब सभासदों को नमस्ते।

१७ स्रगस्त १८७८

द्यानन्द सरस्वती रुड़की

[8]

पत्र (६६)

[२६]

लाला मूलराजजी एम. ए. आनंद रहो !\*

विदित हो कि तारीख १८ अगस्त को बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणिजी और श्री श्यामजीकृष्ण वम्मी हम से मिलने के लिये बम्बई से अलीगढ़ को चले हैं और २१ वा २२ तारीख तक वे वहां श्रा पहुंचेंगे श्रौर हम भी २२ तारीख को श्रतीगढ़ पहुंच जावेंगे।

आपको उचित है कि आप भी २२ वा २३ तारीख तक श्रतीगढ़ पहुंच जायँ, परंतु आप

श्रकेले ही चले श्राना।

श्रीर स्टेशन के पास ही ठाकुर मुकुन्दसिंहजी का बाराीचा पूछ लेना, वहीं पर हम ठहरेंगे।।

श्रीर इस चिट्ठी तथा श्रपने श्रागमन की प्रसिद्धि न करिना

हम बहुत आनंद में हैं। रुड़की जि॰ सहारनपुर

२० अगस्त १८७८

१. भाद्र कृष्या ४, शनिवार सं० १६३५ । यु॰ मी० ।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पू॰ ७५७, ७५८ पर उद्धृत।

३. भाद्र कृष्ण ४. शनिवार सं० १६३५। यु० मी०।

४. मूल पत्र रायबहादुर मूलराज जी के पास है।

प्. मद्भि क्रीक्री प्रीं मङ्गलबाग्र संका १११६ Maस्कारामी अवर्

अलीगढ़, मेरठ, सं० १९३५ ]

पत्र (६९)

१०७

[५] नं० ३४० पत्र (६७)

[९७]

लाला मृलराजजी एम० ए० त्रानन्द रहो !

विदित हो कि हम और हिरश्चन्द्र चिन्तामिण जी कल २६ अगस्त को यहां से सवार होकर मेरठ पहुंचेंगे, और वाबू हिरश्चन्द्र चिन्तामिण, रयाम जीकृष्ण वर्मा और मूलजी ठाकुरशी, २७ अगस्त दिन मंगलवार मेल ट्रेन पर सवार होकर बुधवार २८ वा० को प्रातःकाल ८ बजे लाहीर आवेंगे । सो आप सब आर्थ लोक स्टेशन पर मौजूद रहें और उनको अच्छी प्रकार खातिर के साथ लेकर अपनी बैठक वा आर्थ्यसमाज वा किसी और अच्छे मकान में ठहरा देवें। और हर तरह से खातिर रक्खें।

एक व्याख्यान हरिश्चन्द्र चिन्तामिण देवेंगे। श्रीर दो व्याख्यान श्यामजी कृष्ण वम्मी देवेंगे एक श्रंग्रेजी श्रीर एक संस्कृत। फिर वे श्रमृतस[र] श्रावेंगे सो श्राप सब लोक श्रच्छी तरह से उनका इस्तकबाल करें। रुड़की में श्राय्येसमाज बन गया है। हम बहुत श्रानन्द में हैं। सब समासदों को नमस्ते॥

ामस्त ॥

२५ अगस्त १८७५

हस्ताच्चर

दयानन्द सरस्वती

**अलीगढ़** 

[६]

पत्र (६८)

[26]

लां मूलराज जी एम० ए० त्रानन्द से रहो। व त्रापने लिखा था कि ता० २४ को छपी हुई चिट्ठी भेज देंगे। सो अब तक नहीं आई। जो अब तक रवाना न कि हो तो मेरठ भेजना।

२७ अगस्त ७५

द्यानन्द सरस्वती

मेरठ

[48]

पत्र (६९)

[९९]

नं० ३७७

परिडत रामाधार वाजपेई जी आनन्द रहो !"

विदित हो कि आपको लिखते हैं कि आप के पास जो रूपया जमा है, वा किसी माहक से वसूल हो और पुस्तकादि के मूल्य की बाबत जो हो और सब माहकों से रूपया वसूल करके मेरठ के

- १. मूल पत्र रायबहादुर मूलराज जी के पास है।
- २. माद्र कृष्ण १२ रिववार, सं० १६३५ यु॰ मी०।
- ३. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ८३३ पर उद्धृत।
- ४. भाद्र कृष्ण १४, मंगलवार, सं ० १६३५ यु० मी ०।
- प्र. मूल पत्र त्रार्थसमाज लखनऊ के संग्रह से सुरित्त है।

मिरठ, सन् १८७८

१०५

पते से हमारे पास भेज दो, क्योंकि हम को रूपये की बहुत जरूरत है और इसी कारण आपको लिखा है कि जल्दी कुल रूपया हमारे पास भेज दो और यह भी लिखो कि स्वामी गंगेश आज कल कहां हैं॥ उत्तर शीघ्र भेज दीजिए॥

२ सितम्बर १८७७

हस्ताच्चर द्यानन्द सरस्वती मेरठ

[9]

पत्र (७०)

[800]

मौलवी अञ्दुल्ला साहिब सलामत

दरजवाब आपके लिखा जाता है। बेहतर है कि आप अपनी हस्वमन्शा बजरिये मुअजिज रईसान शहर और सदर के सिलसिला जुम्मवानी कीजिये। मुक्तको कुछ उजर नहीं। और जुमला मुआमलात तहरीरी होने चाहियें न कि तकरीरी। फक्तत।

ता० ७ सितम्बर सन् १८७५

द्यानन्द सरस्वती

[७]

पत्र (७१)

[808]

लाला मूलराज जी एम० ए० श्रानन्द रहो !

विदित हो कि परिडत श्यामजी कृष्ण वम्मा ९ सि० को यहां से रवाना हो कर लाहौर गये हैं सो पहुंचे होंगे। सो उन को अपने मकान पर वा जहाँ पर आराम हो ठहरा देना, और ये संस्कृत तथा इङ्गलेग्ड भाषा में व्याख्यान देवेंगे।। वाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि एक जरूरी कार्य्य के कारण से मुम्बई को वापिस चले गये हैं। यहां पर नित्य व्याख्यान होता है और हम बहुत आनन्द में हैं। सब सभासदों को नमस्ते।। शायद समाज भी हो जावेगा।

११ सि० १**८७**८

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती मेरठ

[2]

पत्र (७२)

[305]

४६५

बाबू माधोलाल जी त्रानन्द रहो !" विदित हो कि पत्र त्रापका १०।<)।। के साथ पहुँचा सो रसीद भेजते हैं त्रीर मुम्बई को

- १. भाद्र शु॰ ६ सोमवार, सं० १६३५ यु॰ मी०।
- २. पं० लेखरामकृत जीवनचरित पु० ३१६ से उद्घृत किया।
- ३. भाद्र शु० ११ शनिवार सं० १६३५ यु० मी० ।
- ४. भाद्र शु० १५ बुधवार, सं० १६३५ यु० मी०।
- ५. मूलपत्र त्रार्थसमाज दानापुर के संग्रह में सुरिक्ति है । इस की प्रतिकृति श्रीमह्यानन्द चित्रावली में है ।

मेरठ, सं० १९३५]

पत्र (७३)

१०९

लिख दिया है वहाँ से १०-११ दिन में २ वेदभाष्यभूमिका आप के पास पहुँचेंगी।

हम त्राज कल मेरठ में हैं। यहाँ से दिल्ली की त्रोर का विचार है। जब पूर्व को बढ़ेंगे त्राप को लिख भेजेंगे। यहां पर भी व्याख्यान नित्य होता है, त्राशा है कि समाज भी हो जावेगा। हम बहुत त्रानन्द में हैं। सब सभासदों को नमस्ते।।

मेरठ

१३ सि० १८७५

हस्ताच्चर द्यानन्द सरस्वती

[8]

पत्र (७३)

[903]

लाला किशनसहाय जी साहब आनन्द रहिये!<sup>3</sup>

जो के कल ह्स्बुलईमा आपके पं० मानसिंह और नीज दीगर साहिबान ने सभा के नियम लिखवा दिये हैं। हम उनके वखूबी पावन्द हैं। अगर आप को फिलहकीकत और बदिल निश्चय करना सत्य और असत्य का मंजूर है तो आप उनपर गौर कीजिये और अमल फरमाइये। वरना अम्रात मुनासिब में तहरीर व तकरीर खिलाफ वरजी के नतायज भी वहरंज वेक्ही होवेंगे फक्त।

१८ सितम्बर १८७५

[38]

विज्ञापन

[808]

विदित हो कि सत्यार्थप्रकाश" के १०० पृष्ठ पंक्ति १४ में रोहिए विलदेव की स्त्री थी इसके स्थान में रोहिए बलदेव की माता श्रीर वसुदेव की स्त्री थी ऐसा जान्ना ।।

[5,6]

विज्ञापन पत्र

[१०५]

'आर्यदर्पण' शाहजहांपुर

इस नाम का एक मासिक पत्र उर्दू भाषा में आर्यसमाज शाहजहाँपुर की ओर से प्रकाशित होता है, इसमें वेदादि सत्यशास्त्रानुकूल सनातन धम्मोंपदेश विषय के व्याख्यान और आर्य्यसमाजों के नियम उपनियम आदि प्रकाशित होते हैं, जो उसके देखने से मालूम होगा, जो इस पत्र को लेना चाहें वे आपना नाम पते सिंहत लिख कर मुन्शी बखतावर सिंह मैनेजर आर्य्यदर्पण शाहजहांपुर के पास मेज दें, पूर्वोक्त पत्र का वार्षिक मूल्य डाक महसूल सिंहत ३। 🗢 ) है।। यह पत्र मेरी समक्त में भी बहुत अच्छा है।।

१. त्राश्विन कृष्ण २, शुक्रवार सं० १६३५ । यु० मी० ।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवन चरित पृष्ठ ४०४ पर उद्धृत।

३. श्राक्षिन कृष्ण ६, बुधवार सं० १६३५ । यु० मी० ।

४. यह विज्ञापन ऋग्वेद श्रीर यजुर्वेदमाध्य के तीसरे श्रङ्क पर छपा था। यह सम्भवतः श्राधिन सं०१६३५ के श्रारम्म में लिखा गया था। यु० मी०।

५. ग्रर्थात् सं० १६३२ (सन् १८७५) के छपे सत्यार्थप्रकाश के। यु० मी०।

६. यह विज्ञापन मी ऋग्वेद श्रौर यजुर्वेदमाष्य के तीसरे श्रङ्क में छपा है। यु॰ मी॰।

880

पत्र (७४)

808

[3]

बाबू माधोलालजी आनन्द रहो ! प्रकट हो कि चिट्ठी स्त्राप की नम्बरी १६४-२० सि० की लिखी हुई पहुँची । सब हाल मालूम हुआ, आप के प्रश्न का उत्तर यह है कि हम १ अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक मेरठ और दिल्ली रहेंगे जो आप लोग १ अक्टूबर के पीछे मेरठ आ जाओगे तो फिर साथ २ दिल्ली चले जावेंगे।

यहां पर आर्य्यसमाज हो गया है और व्याख्यान भी होता है। सब प्रकार से कुशल है ॥

हम वहुत त्रानन्द में हैं। सब सभासदों को नमस्ते।

मेरठ

हस्ताच्चर

२३ सि० ७५

द्यानन्द सरस्वती

[8]

पत्रसूचना (५)

[800]

[ मुन्शी सेवाराम, नहर जिलेदार, मेरठ ] नहर के डिप्टी मजिस्ट्रेट हो जाने पर बधाई श्रौर वेद्भाष्य की सहायतार्थ की गई प्रतिज्ञा का स्मर्ग कराना।

[94]

पत्रमुचना (६)

906

[बाबू रामाधार वाजपेई जी त्र्यानन्द रहो] मेरठ में समाज स्थापित होने श्रीर दिल्ली जाने के सम्बन्ध में।

[२]

पत्र (७५)

1805

पिंडत श्यामजी कृष्णवन्मा त्रानन्द रही

विदित हो कि आपका पत्र मुम्बई से आया था हाल मालूम हुआ। आपने वहां जाकरं काम देखा ही होगा कि क्या प्रवन्ध है और अब की बार भी वेदभाष्य के लिफाफे के ऊपर देवनागरी नहीं लिखी गई जो कहीं प्राम में श्रंप्रेजी पढ़ा न होगा तो श्रङ्क वहां कैसे पहुंचते होंगे श्रौर प्रामों में देवनागरी पढ़े बहुत होते हैं इसलिए तुम बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणी जी से कहो कि ऋभी इसी पत्र के देखते ही देवनागरी जानने वाला मुनशी रख लेवें कि जो काम ठीक ठीक हो नहीं तो वेद्भाष्य

१. मूलपत्र त्रार्यंसमाज दानापुर के संग्रह में सुरित्तत है।

२. श्राश्विन कृष्ण १२, सोमवार, सं० १६३५ । यु० मी० ।

३. देखो पं देवेन्द्र नाथ जी संकलिंत जी० च० पृष्ठ ५०३। यह पत्र कहां से तथा कव लिखा गया यह ऋशत है। ऋनुमान से यहां रखा है। यु॰ मी॰।

४. इस पत्र का संकेत पूर्ण संख्या ११४ पृष्ठ ११३ के पत्र में है। मेरठ त्रार्थ्य समाज की स्थापना २६ सितम्बर १८७८ को हुई थी। श्रतः यह पत्र उसी दिन या श्रगंले दिन लिखा होगा।

५. मूलपत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिच्चत है।

दिल्ली, सं० १९३५]

के लिफाफों पर किसी से रजिस्टर के अनुसार प्राहकों का पता किसी देवनागरी [जानने]वाले से नागरी में लिखा कर टपास लिया करें और तुम जाकर काम की खबरदारी करो कि वहां क्या हाल हो रहा है और उनसे पुस्तकों का हिसाब भी जो कि श्रङ्क प्राहकों के पास भेजे गये हों श्रीर जो उनके यहां मौजूद हों भिजवा दो और बाबू साहब से कह दो कि जब वेद का प्रूफ भेजा करें तो उस के सा[थ] टाइटल पेज भी भेजा करें और वहाँ के समाचार से बहुत जल्दी हम को पत्र द्वारा विदित कर दीर्जिये। मेरठ में आर्र्यसमाज हो गया है और हम ३ अक्टूबर को दिल्ली आगये हैं। यहां पर कुराल है॥

द्यानन्द सरस्वती दिल्ली ७ अक्टू० ७८

[3]

विज्ञापन-सूचना [ १३ अक्टूबर सन् १८७८ से व्याख्यान देने का ]

[880]

[3]

[363]

परिडत श्यामजी कृष्णवम्मी स्त्रानन्द रहो !४ 488

विदित हो कि इससे पहले एक चिट्ठी आप के पास मेजी गई थी पहुँची होगी आज फिर आवश्यकता समम कर आप को लिखते हैं वह पत्र जिस के लिये मेरठ बात हुई थी शीघ्र मेज देना और" जब तक तुम वहाँ रहो हम से पत्र व्यवहार करके वेदभाष्य के काम का तुम ही प्रबन्ध करो, क्योंकि बिना आप के यह काम न चलेगा वा किसी देवनागरी वाले को वहाँ रखा दो क्योंकि बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिए जी श्रंग्रेजी में भी लिखते हैं तो भी छेदीलाल को शादीलाल लिख देते हैं और न ग्राहकों के नम्बर लिखते हैं विवेचन पूर्वक पहले पत्र में भी आपको लिखा गया है आप इस का कुछ प्रवन्ध अवश्य शीघ ही कीजिये। और वहाँ के प्रवन्ध और सब हाल से विदित कीजिये और एक कामसूत्र का पुस्तक भी हमारे पास भेज दीजिए। हम बहुत आनन्द में हैं॥

१४ अक्टूबर ७५%

द्यानन्द सुरस्वती

१. पं ु लेखराम (पृ ० ३८६, ४१०) तथा पं वासीराम (पृ ० ५०३) ने लिखा है कि श्री स्वामी जी ह ग्राक्टूबर को दिल्ली पहुँचे। यह भूल है। श्री स्वामी जी ३ ग्राबटूबर को दिल्ली पहुँचे थे यह इस पत्र से स्पष्ट है।

२. त्राश्विन शु० १३, बुधवार, सं० १६३५ । यु० मी० । ३. कार्तिक कृष्ण २ रिव, सं० १९३५ । देखो पं० घासीराम सम्पादित जी० च० पृष्ठ ५०३ । यु० मी०

४. मूल पत्र प्रो० धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में मुरित्तित है।

५. स्थूल श्रद्धरों का पाठ श्री स्वामी जी के स्वइस्त का है।

६. पूर्ण संख्या १०६ का ७ अक्टूबर १८७८ का पत्र।

७. कार्तिक कृष्ण ३ सोम, सं० १६३५।

११२

## ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

[30]

पत्र (७७)

[335]

No. 597.

Dehllee, Kaboolee Gate

near the Subzimandee

in the Garden of

Lallah Kaishree Chand & Balmookund.

15. 10. 78.

To

Baboo Madho Lall

Arya Samaj, Dinapore.

Dear

I have received your letter No. 181 of 31st. October to-day, I shall be glad to see you at Dehllee on the address. which has [been] written up. And I have appointed an Arya Samaj in the *Meerutt* and always here I am delivering the Lecture of Vedic reform. I am well and hope you the same.

15-10-78\*

Signature [ दयानन्द सरस्वती ]

Dehllee,

[ भाषानुवाद ]

प्रुज

देहली काबुली गेट, सन्जी मण्डी के समीप

ला० केशरीचन्द और बालमुकुन्द के ख्यान में

१4-१0-55

बावू माधोलाल, आर्य्यसमाज दीनापुर को।

प्रिय!

श्राप का पत्र सं० १८१, ३१ श्रक्तूबर का श्राज प्राप्त हुश्रा। देहली में उपरिलिखित पते पर श्राप को मिल कर मैं प्रसन्न हूँगा श्रीर मेरठ में मैंने समाज स्थापन किया है।

वैदिक धर्म पर मैं प्रतिदिन यहाँ व्याख्यान देता हूँ। मैं प्रसन्न हूँ श्रोर श्राप की प्रसन्नता चाहता हूं।

8-80-05

हस्ताचर द्यानन्द सरस्वती दिल्ली

१. कार्तिक कृष्ण ४, मङ्गलवार, सं० १६३५ । यु० मी० ।

२. मूल अंग्रेजी पत्र में 'दानापुर' के स्थान में 'दीनापुर' भूल से लिखा गया है।

३. सम्भवतः यहां १३ श्रक्तूबर चाहिए।

४. मूलपत्र आर्यसमाज दानापुर के संग्रह में सुरिव्त है।

देहली, सं० १९३५]

. पत्र (२९)

११३

[१६]

पत्र [७८]

[443]

बाबू रामाधार वाजपेई जी आनन्द रहो !

विदित हो कि आप की एक चिट्ठी मेरठ में आई थी सो आपने लिखा था कि हम पुस्तकों का रूपया भेजोंगे परन्तु अब तक नहीं भेजा, इसिलये आपको लिखते हैं कि आप बहुत जल्दी हुएडी बनवा कर हमारे पास यहाँ दिल्ली में भेज दीजिये, आवश्यकता के कारण से आपको लिखा गया है और मेरठ में समाज होने तथा वहाँ से दिल्ली को गमन करने का समाचार आप को पहिले पत्र में लिख चुके हैं।

हम बहुत आनन्द में हैं।।

हस्ताच्चर

दयानन्द सरस्वती

[२] ६०=

पत्रसूचना (५)

[348]

भूपालसिंह जी ......<sup>२</sup> १५, या १६ श्रक्तूचर<sup>३</sup> दिल्ली

पत्रसारांश (७२)

[ 294]

[ठा० रणजीतसिंह जागीरदार श्रवरील राज्य जयपुर] हम कार्तिक में जयपुर श्रावेंगे। '

- २. इस पत्र का संकेत ठाकुर भूपालसिंह के पत्र में है।
- ३. कार्तिक कु० ४ या ५ सं० १६३५ । यु० मी० ।
- ४. देखो पं॰ देवेन्द्रनाथ जी संक॰ जी॰ च॰ पृ॰ ५०४। इसी पृष्ठ पर गायत्री पुरश्चरण की सन विधि लिख कर देने का भी उछिल है। यह पत्र देहली से भेजा गया था। यु॰ मी॰।

१. पं० रा० वा० ने लाल स्याही से १५ अक्तूबर १८७८ की तारीख (कार्तिक कु० ४ सं० १६३५) स्वामी जी से इस पत्र के चलने की लिखी है [ता० १५-१०-७८ का ५६७ नं० का पृष्ठ ११२ तथा १४-१०-७८ का ५६७ नं० का पृष्ठ ११२ तथा १४-१०-७८ का ५६४ न० का पृष्ठ १११ पर पत्र पहले छप चुका है] इस लिए इस पत्र की संख्या ५६८ होगी, ५८८ नहीं । अथवा यह भी सम्भव है कि पत्र की ५८८ संख्या ठीक हो और यह पत्र १३ या १४ अक्टूबर को लिखा गया हो। क्योंकि पत्र पर तारीख नहीं है। पं० रा० वा० ने तारीख अनुमान से ही लिखी होगी] मूल पत्र आर्य समाज लखनऊ के संग्रह में सुरिच्चित है।

883

[20]

पत्र (८१)

[3,88]

६२६

बाबू रामाधार वाजपेई जी आनन्द रहो !

विदित हो कि पत्र आपका आया सब हाल मालूम हुआ हुँ हो ४६) की अभी हमारे पास नेहीं पहुंची, शायद कल वा परसों ऋा जावेगी, तब्ही ऋापके पास रसीद भेजी जावेगी ऋौर ७ ऋग्वेद श्रीर छः यजुर्वेद श्रापके पास भेजने के लिए मुम्बई को लिख दिया है। वहाँ से जल्दी श्रापके पास पहुँचेंगे और आगे से बराबर पहुँचा करेंगे।।

श्रीर केवल भूमिका ५) को मिल सकती है श्रीर जो ग्राहक लोग ४॥) गत वर्ष में दे चुके और भूमिका पर्यंत लेकर छोड़ते हैं, उन से ॥) श्रीर वसूल कर लो श्रीर जो केवल एक वेइ लेते हैं छन से ४) लेने चाहियें और जो प्राहक पिछले साल में ४॥) दे चुके और इस वर्ष में दोनों वेद लेना चाहते हैं उन से ७) श्रौर जो एक वेद लेते हैं उन से ४) वस्त करो, जो नवीन प्राहक हों श्रौर वे दोनों वेद भूमिका सहित लेवें उन से ११॥) श्रौर जो भूमिका सहित एक वेद लेवें उन से ८॥) श्रौर जो केवल एक वेद लेवें उन से ४) वसूल कीजिये। यहाँ पर आज कल नित्य व्याख्यान होता है।। हम आनन्द पूर्वक कुशल द्येम से हैं।।

२० अक्टूबर ७५

द्यानन्द सरस्वती

[3]

पत्र (८१)

नं० ६२८

वाबू समर्थदानजी चारण आनिन्दत रही!

विदित होवे कि आज जुगल बिहारी शम्मी की एक चिट्टी आई, जिससे जाना गया कि वहाँ चन्दे का कुछ प्रबन्ध नहीं हुआ है। सो तुम कुछ चिन्ता मत करो। अब मिलना न हो तो फिर कभी मिलेंगे। और कुछ अफसोस मत समको। इम तुम्हारे प्रेम की खुव जानते हैं और कुछ शोक की बात नहीं है। यहाँ पर भी आनन्द पूर्वक व्याख्यान हो रहा है, और सब प्रकार से कुशल है। हम बहुत आनन्द में हैं।

२१ अक्तुबर सन् १८७५

दिल्ली

ह० (दयानन्द संरक्ष्त्रती)

१. मूलपत्र त्रायंसमाज लखनऊ के संग्रह में सुरिव्ति है।

२. कार्तिक कु० ६ रिववार सं० १६३५ । यु० मी०।

३. यह पत्र ग्राजमेर को लिखा गया था। यह पत्र पं० लेखरामकृत जीवन चरित पृ० ४१४ पर छपा है। यही पत्र भारत सुदशा प्रवर्तक दिसम्बर १८८१, पृ॰ २३ पर भी छपा है। पहले इमने जीवनचरित से इसे छापा था। श्रव भा० सु० प्र० से शुद्ध कर के छापा है।

४. कार्तिक कु० १० सोमवार सं १६३५ । यु० मी०

देहली, सं० १९३५]

पत्र (८१)

884

[8]

पत्र सारांश (८२)

[296]

[नं॰ ६२९]' हरिश्चन्द्र चिन्तामिण, बम्बई। [ वेदभाष्य का काम पं॰ रयामजी कृष्णवर्मी को सौंप दो ] २२ अक्टूबर सन् १८७८

[8] {\$0

पत्र (८३)

[336]

पंडित र्यामजी कृष्ण वस्मी आनन्द रही !

विदित हो कि तुम्हारी चिट्टी १८ अक्टूबर की लिखी पहुंची, सब हाल मालूम हुआ, हम बहुत प्रसन्नता पूर्वक लिखते हैं कि जब तक तुम मुम्बई में रहो तभी तक वेदमाच्य का काम उठालो और खूब होशियारी से करो और ३०) जो नौकर चाकरों के लिये हैं, उन में तुम को अख्त्यार है चाहे जैसे खर्च करो और जो ३५) तक भी कभी खर्च हो जावेगा हमको स्वीकार है और यह संख्या भी जब तक है कि काम कुछ कम चलता है, जब दो हजार प्राहक हो जावेंगे फिर हम कुछ गिनती न रक्खेंगे चाहे जितना खर्च हो और जब तुम इस काम को ठीक ठीक चलाओंगे तो प्रतिदिन उन्नति ही होगी और आज ही हमने बाबू हरिचन्द्र चिन्तामणि जी को भी लिखा है। वे आप को बुला कर प्रसन्नता पूर्वक काम सौंप देंगे, तुम यह शंका मत करो कि शायद वे बुरा मानें, वे कभी बुरा न मानेंगे और न वे ऐसे आदमी हैं और उनकी और तुम्हारी तो घर के सी बात है, वे तुम पर सदैव प्रसन्न हैं।

यह पहिला पत्र व्यवहार का हमारा तुम्हारे पास पहुंचता है, इस को रख लेना और आगे से सब रखते जाना है, हम भी तुम्हारे पत्र रख लिया करेंगे, और तुम्हारे पास पत्र भेजा करेंगे और पुस्तक आदि सब संभाल कर रखना और जैसा काराज अब की बार लगा है, ऐसा ही सदैव लगाना। इस से कुछ भी न्यून न हो और अगले मास में ५००) भी तुम्हारे पास भेज देंगे। बाबू हरिचन्द्र चि० जी को यह हमारा पत्र दिखा देना और गोपालरावहरि देशमुख जी को हमारा आशीर्वाद कह देना। अगले मास में तुम्हारा नाम भी टाईटिल पर छाप दिया जावेगा जिस से प्राहक लोग भी चिट्ठी पत्री और कपया पैसा तुम्हारे पास भेजा करेंगे। हम बहुत आनन्द में हैं।।

२२ अक्टू० ७५

हस्ताच्र

दयानन्द सरस्वती दिल्ली

१. यह पत्र संख्या तथा पत्रांश श्रगले पत्र (पूर्ण संख्या ११६) के 'श्राज ही हमने बात्रू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को भी लिखा है' वाक्य से ली है। यु॰ भी॰

२. कार्तिक कृष्ण ११ मंगलवार, सं० १६३५ । यु० मी०।

३. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरित्त है।

४. इसी ब्रादेश के ब्रानुसार ये सब पत्र सुरिच्ति रहे।

५. कार्तिक कृष्ण ११ मंगलवार, सं॰ १६३५ । यु॰ मी॰।

दिहली, सन् १८७८

११६

[9,6]

पत्र (८४)

[930]

६३२

े बाबू रामाधार वाजपेई जी त्र्यानन्द रहो !

विदित हो कि एक पत्र इससे पहिले आपके पास भेजा गया है' पहुँचा होगा, अब इस चिट्ठी के भेजने की आवश्यकता यह है कि आपने पत्र में लिखा था कि ४६) की हुएडी दूसरे लिफाफे में भेजी है, सो आज तक हमारे पास नहीं पहुँची, सो जानना और सब प्रकार से आनन्द है।

२२ अक्टूबर ७८³

हस्ताच्चर

द्यानन्द सरस्वती

दिल्ली

[86]

पत्र (८५)

[353]

६२७४

बाबू रामाधार वाजपेई जी आनन्द रहो।।"

विदित हो कि आज आपका भेजा हुआ मनी आर्डर ४६) का पहुँच गया है, आप खातिर जमारक्वें, और बाकी रुपया भी जल्दी ही भेज देना क्योंकि रुपये की आज कल बहुत आवश्यकता है।।

श्रीर यह भी लिखना चाहिए कि कितना रूपया किस पुस्तक का है वा किस प्राहक के नाम छपना चाहिए श्रीर ७ ऋग्वे० श्रीर छ: यजु० श्राप के पास मुम्बई से पहुंचेंगे, वहां को लिख दिया गया है, यहां पर व्याख्यान नित्य होता है श्रीर हम बहुत श्रानंद में हैं ॥

हस्ताचर

२३ अक्टू० १८७५

द्यानन्द सरस्वती

दिल्ली

[9.]

पत्र सूचना (६)

[१२२]

लीलाधर हरिदास बम्बई <sup>७</sup> [श्यामजी से वेदभाष्य के काम में सलाह कर के उनको सहाय दो]

१. मूल पत्र त्रायंसमाज लखनऊ के संग्रह से सुर्राह्नत है।

२. यह संकेत २० अवटूबर १८७८ पूर्ण संख्या ११६, पृष्ठ ११४ पर मुद्रित पत्र की स्रोर हैं। यु० मी०।

३. कार्तिक कृष्ण ११ मंगलवार सं० १६३५ । यु० मी०।

४. इस पत्र की संख्या ६२७ लिखी है। यह संख्या ठीक प्रतीत नहीं होती । श्रथना ठीक भी हो सकती है। संभवतः कोई पिछली संख्या छूट गई हो श्रीर उसी पर इसे रख दिया गया हो।

५. मूल पत्र श्रार्थसमाज लखनऊ के संग्रह में सुरित्तत है।

६. कार्तिक कृष्ण १२ बुधवार सं० १६३५ । यु० मी० ७, देखो पूर्ण संख्वा १३० । यु० मी०

देहली, सं० १९३५]

पत्र (८६)

883

[33]

पत्र (८६)

[823]

No. 636

Dehllee. 26-10-78.

To

Baboo Madho Lall

Arya Samaj,

Dinapore.3

My dear.

I have recieved your letter just now and knew the all subjects of it. You must send the account of books to me. When you will go to Arra I hope you will say to Baboo Hurbansh Sahai for the Chanda of Ved Bhashya.

Here I am delivering the Vedic Lecture in these days and hoping that the Arya Samaj will be appoint at Dehllee. I am well and hope you the same.

26-10-78.

Swamee D. Nd. Sarrasswatee. [ द्यानन्द सरस्वती ]

Dehllee.

[ भाषानुवाद ]

देहली

सं० ६३६.

₹६-१०-७५.

बाबू माधोलाल

श्रार्यसमाज दीनापुर को।

मेरे प्रय!

अभी आपका पत्र मिला सब समाचार ज्ञात हुआ। आपको पुस्तकों का हिसाव मुक्ते अवश्य भेजना चाहिये। जब श्राप श्रारा जायेंगे तो मैं श्राशा करता हूं कि श्राप बाबू हरबंससहाय को वेदभाष्य के चन्दा के लिये कहेंगे। मैं यहां त्राज कल वैदिक विषय पर व्याख्यान दे रहा हूं और आशा करता हैं कि दिल्ली में समाज स्थापित हो जावेगा। मैं प्रसन्न हूं और आपकी प्रसन्नता चाहता है।

दिल्ली

281801051 दयानन्द सरस्वती

१. कार्तिक शक्क १ शनिवार सं० १६३४ । मूल पत्र आर्थसमाज दानापुर के संग्रह में सुरिचत है ।

२. मुलपत्र में दानापुर के स्थान में भूल से दीनापुर लिखा गया है। यु॰ मी॰

११८

[4]

### ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञायन

पत्र-सूचना (७)

[858]

[सं० ६३७]'
हरिचन्द्र चिन्तामणि बम्बई
[पिण्डत श्यामजी कृष्ण वर्मा को वेद भाष्य का काम सौंप दो]
२७ अक्टूबर सन् १८७८ दिल्ली

[4]

पत्र (८७)

[१२५]

६३८

पंडित श्यामजी कृष्ण वम्मी आनंद रही !ª

विदित हो कि इस से पहले तुम्हारे पास एक पत्र भेजा गया है पहुंचा होगा और वाबू हिरिश्चन्द्र चिन्तामणि जी को तुम्हें काम सोंपने के लिये तीन चिट्ठी लिख चुके हैं, और एक चिट्ठी खाज फिर लिखी है, सो शायद है कि उन्होंने तुम को बुलाकर सब काम सोंप दिया होगा, पहिली नवम्बर से सब काम तुम ही करो और प्राहकों के पास भी वेदभाष्य तुमही भेजना और रिजस्टर, वेदभाष्य के ग्रंक और लिखित पत्र आदि चिट्ठी वगेरे और सब काम उन से लेकर समक्ष लो, जो वे प्रसन्न हों तो पुस्तक उन्हों के मकान में रहने दो और कुंजी अपने पास रक्खो और जो वे न रहने दें तो जहां तुम चाहो रक्खो परन्तु प्रबन्ध से रखना कि कुछ हानि न हो, और जो कुछ रुपया वेदभाष्य के ग्रंकों के ऊपर लगाने के टिकटों के लिये चाहिये सो बाबू साहब से ले लेना, फिर आगे से प्रबन्ध कर दिया जायगा, जब तुम यह काम ले लोगे और हमको लिख भेजोगे, तब सब व्यवस्था तुम्हारे पास लिख कर भेज देंगे उसी के श्रनुसार काम करना।। श्रव शीघ लिखो कि काम तुमने लिया वा नहीं और वहाँ का कुल हाल लिखो, हम बहुत श्रानन्द में हैं।

२७ श्रक्टू० ७८

हस्ताच्चर द्यानन्द सरस्वती दिल्ली

१. यह संख्या श्रीर पत्र की स्चना पूर्ण संख्या १२५ के 'एक चिट्ठी श्राज फिर लिखी है' पदों से संग्रहीत की है सम्मत्रत: इसी पत्र के विषय में पूर्ण संख्या १२६ (पृष्ठ १२०) भी लिखा है—'श्रीर बाबू जी की इन्हें काम देने के लिये...'।

२. कार्तिक शुक्र २, रविवार, सं० १६३५ । यु० मी० ।

३. मूलपत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संप्रह में सुरिच्चित है।

४. इन तीन चिडियों में से १ चिडी २२ श्रक्टूबर को लिखी गई थी। देखो पूर्ण संख्या ११६ पृष्ठ ११४। दो चिडियों की तिथियां ज्ञात नहीं हो सकीं। यु० मी०

देहली, सं० १९३५]

पत्र (९०)

888

[2]

पत्रांश (८८)

(१२६)

मिन्शी समर्थदान को 1

हम अवश्य आवेगे। यहाँ हम ने समक लिया है कि जुगुलबिहारी शर्मा के नाम से किसी ब्राह्मण ने पोप लीला की है, परन्तु क्या होता है, ऐसे धूर्त बहुत हैं।

[8] ६४३ पत्र (८९)

120

पिंडत श्यामजी कृष्ण वम्मी त्रानन्द रहो !

विदित हो कि पहले भी आप को दो तीन चिट्ठियाँ लिखी गई हैं पहुँची होंगी और वाबु हरिश्चन्द्र चिन्तामणि जी को भी तुम्हें काम देने के लिये कई बार लिखा गया है सो आशा है कि तुम को उन्हों ने सब काम सोंप दिया होगा और जो कुछ उनसे वातें हुई हों सो इस को जल्दी लिखी श्रीर बाबू जी से काम लेकर पहिली नवम्बर से तुम्हीं करो, यह भी लिखो कि छापेखाने करने में यन्त्र और अवर और टाइप आदि के मंगाने में क्या खर्च होता है और मोहन लाल विष्णु लाल पंड्या जी आज कल कहाँ हैं, मुम्बई में हैं वा नहीं।।

अब हम यहाँ से ६ नवम्बर बुधवार को पुष्कर जायेंगे सो इस मिति के पीछे पत्र हमारे पास अजमेर में भेजना चाहिए, कल वहाँ पर भी आर्थ्य समाज के लिए प्रधानादि नियत हो गए हैं श्रीर ३ नवम्बर रिववार को समाज का श्रारम्भ हो जायगा उत्तर शीघ्र भेजो कि जिस मिती तुम काम सम्भाल लो, आगे उस मिती से पत्र तुमारा हमारा बरावर आनन्दै से पत्र व्यवहार होगा ॥

हस्ताच्चर

३० श्रक्द्र० ७८

दयानन्द सरस्वती

दिल्ली

पत्र (९०)

[१२८]

[રુ]

गण्डा सिंह जी श्रानन्द रहो।

वाजह कि एक चिट्टी बखत नागरी तुम्हारी पहुँची। जवाव उस का यह है कि हमारे पास खर्च तो ज्यादा है और श्रामदनी कम है इस लिये हम कुछ नहीं [कर] सकते । मगर हाँ जो तुम

- १. उपर्युक्त त्रांश भारतसुदशापवर्तक दिसम्बर १८७८ के ब्राङ्क के पृष्ठ २३ पर छुपा है। इसी प्रकार ५० देवेन्द्रनाथ जी संकलित जी० च० पृष्ट ५०६ पर भी उद्भृत । यु० मी०
  - २. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्माजी के संग्रह में सुरिच्चत है।
  - ३. स्थूलाच्र का पाठ श्री स्वामी जी के स्वइस्त का है।
  - ४. कार्तिक शुक्ल ५ बुधवार, सं० १६३५।
- प्. इस पत्र के श्रन्त में ३१ श्रक्टूबर सन् १८७८ (कार्तिक शु० ६ बृहस्पतिवार सं० १६३५) लिखा गया है। २ नवम्त्रर १८७८ के क्रम संख्या ६४८, ६४६ के पत्र आगो पूर्ण संख्या १२६, १३० पर छपे हैं। त्रातः यहां क्रम संख्या ६५५ के स्थान में ६४५ होनी चाहिये।

अपना खर्च करो तो हम को पढ़ाने में कुछ उत्तर नहीं है क्योंकि जितना फायदा तुम्हारे पढ़ाने से दुनिया को होता है उतना ब्राह्मण लोगों के पढ़ाने से नहीं होता। हम तुम को बहुत ख़ुशी से पढ़ा सकते हैं। अगर खर्च का तुम कुछ बन्दोबस्त कर लो तो पढ़ना हो सकता है, मगर फिर भी पाँच या छः माह में तुम आना क्योंकि अब तो हम बतारीख ६ नवम्बर यहाँ से पुष्कर जी को चले जावेंगे। फिर वहाँ से वापिस होते वक्त मेला कुम्भ में हरिद्वार पर या देहली बरौरा में तुम आ जाना, तब पढ़ना हो सकता है और अब पढ़ना नहीं हो सकता क्योंकि इस सफर में तुम्हारा खर्च भी ज्यादा होगा और पढ़ना भी ठीक २ न होगा, इस लिए तुम को लिखा गया सो वाजह रहे, यहाँ पर हमारा ज्याख्यान रोज मर्रा: होता है। और आर्य समाज भी यहाँ पर कायम हो गया है और बहुत से मोजिज लोग उस में शरीक हैं और रोज बरोज तरकी होती जाती है और ऐसे ही ढड़की व सहारनपुर व मेरठ व लुधियाना में बहुत आर्य समाज कायम हो गये हैं। अब दुनिया से अन्धकार जाने वाला है और सत्य का प्रकाश होता जाता है।

३१ अक्टूबर सन् १८७८

दयानन्द सरस्वती

दिल्ली

[१०] **६**४⊏ पत्र (२१)

[353]

पंडित गोपालहरि देशमुख जी आनंद रहो !3

विदित हो कि जिस दिन से बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिण जी के प्रबंध में वेदभाष्य का काम गया है तब से किसी प्राहक के पास भी श्रंक यथार्थ ठीक ठीक नहीं पहुंचते और वे चेचारे क्या करें, जन के पास कोई श्रादमी इस काम के योग्य नहीं, श्रव हम इस बात से बहुत प्रसन्न हुए कि श्रापने श्यामजी कृष्ण वर्मा को इस काम के स्वीकार करने को उद्दित किया, यह पुरुष इस काम के बहुत योग्य है श्रीर बावू जी को इन्हें काम देने के लिये लिखा था, सो वे लिखते हैं कि इस की बाबत एक दो दिन में लिखूँगा, सो देखिए क्या लिखते हैं। प्रथम तो श्राशा है कि वे कुछ इसमें तकरार न करेंगे और जो शायद वे कुछ तकरार करने लगें तो जब श्राप मुम्बई में श्राव वा पत्र द्वारा उन को समसा कर इन को काम दिला दीजिए।।

श्राप इस काम के श्रिधिपति रहें श्रीर बांबूजी भी नाम मात्र रहें परन्तु सब काम श्राप के

१. यह पत्र सरदार गर्गडासिंह मशरकी श्रकाउंटेएट मिलिट्री वर्कस, स्थान रोपड़ जिला श्रम्बाला को मेजा गया था। पत्र के लिफाफे पर रोपड़ पोस्ट श्राफिस की मोहर २ नवम्त्रर १८७८ ई० श्रौर पता ''गएडासिंह ग्रंथी, रोपड़, जिला श्रम्बाला' है। यह पत्र उर्दू में लिखा गया था।

इस पत्र की फोटो तथा प्रतिलिपि स्वर्गीय सरदार गणडासिंहजी के सुपुत्र सरदार नारायण्सिंह विम्भरात्रो स्वेदार हैडक्लर्क पैंशनर प्रन्थी बाग रोपड़ जि॰ श्रम्बाला की कृपा से प्राप्त हुई । मूल पत्र उन्हीं के पास सुरिह्नत है।

- २. कार्तिक ग्रु० ६ बृहस्पतिवार सं० १६३५।
- ३. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिव्तत है।

नीचे श्याम जी करें, तब यह काम ठीक ठीक होगा और श्याम जी ' ... ... और जब अवश्यकता होगी आप को भी लिखा करेंगे। यहां दिल्ली में आर्थ समाज नियत हो गया है, अब हम यहां से ६ मवंबर को पुष्कर जावेंगे और सब प्रकार से हम आनन्द में हैं।

[१३0]

६४९

पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा आनन्द रहो !

विदित हो कि कल आप का पत्र आया था, सब हाल माल्स हुआ और कल ही वाबू हिरिश्चन्द्र चिन्तामिए जी का भी पत्र आया था, वे लिखते हैं कि श्याम जी को काम देने की बाबत सोच विचार के दो एक दिन में लिखाँगा, सो जब वे कुछ लिखेंगे तब तुमको लिखा जावेगा और वे तुम्हें काम देने में कुछ तकरार नहीं करेंगे, क्योंकि उन की हानि ही क्या है, जो वे लिखेंगे कि हमारा नाम टाइटिल पेज पर छपवा कर हमको बदनाम किया, तो उनका नाम माघ तक ऐसे ही छपता रहेगा, फिर अगले वर्ष में बदल दिया जावेगा, और हम उनको भी यही लिख देंगे।।

हमने एक चिट्ठी लीलाघर हरिदास को लिखी थी कि रयामजी से वे० के काम में सलाह करके उनको सहाय दो, सो उन्हों ने लिखा है कि हम उनसे मिल कर अवश्य सम्मित करेंगे, सो तुम तथा वे सुन्दर दास और पुरुषोत्तमादि मिलकर इस काम को चलाओ और सब काम तुम करो, वे तुमको सहाय देंगे .................................ते रहा करों। अौर गोपाल रावहरि देशमुख जी के नाम एक चिट्ठी लिख कर तुम्हारे पास इस चिट्ठी के साथ मेजते हैं, सो जहाँ वे हों मेजदो वा जब वे मुंबई में आवें तब उनको दे देना, और बाबू जी के पास और भी चिट्ठियां लिखी गयी हैं, जो उनसे बात हुआ करें सो सब लिखा करो। यहाँ पर आर्ट्य समाज हो गया है अब हम कार्ति० शु० १२, ६ नवंबर को पुष्कर जावेंगे और दो तीन मास इघर ही जयपुर अजमेर आदि नगरों में घूमेंगे फिर हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर आवेंगे, जो हम दूर देश में हों और तुम को जो कुछ क़ाम पड़े सो लीलाघर हरिद्वास जी से कह कर सहाय लेना और सब काम ठीक करना और वाबू हरिश्चन्द्र से भी मिला करना, अब उन का दूसरा पत्र आने वाला है जब वह आ लेवे तब प्रबन्ध कुछ दूसरा किया जावे

१. ग्रमला थोड़ा सा पाठ फट गया है।

२. कार्तिक शु॰ ८ सं १६३५।

३. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरित्त है।

४. ब्रिन्दु वाले स्थान के तीन या चार शब्द फट गये हैं।

५. यह पत्र पूर्ण संख्या १२६ पर छुपा है।

श्रीर तब ही तुम को भी लिखेंगे श्रीर तुम सब हाल वहां का लिखो श्रीर यह भी लिखो कि गोपाल-रावहरि देशमुख जी श्राज कल कहां हैं, हम बहुत श्रानंद में हैं।

[3]

तार का सारांश

[838]

हम आते हैं। व ६ नवम्बूर १८७८, दिल्ली।

[26]

विज्ञापनपत्रमिद्म "

[333]

सब सज्जन लोगों को विदित हो कि पं० स्वामी द्यानन्दसरस्वतीजी महाराज संवत् १९३५ कार्तिक शुक्त १३ गुरुवार को पुष्कर में आकर नाथजी के दरीचे अर्थात् जोधपुर के घाट पर ठहरे हैं। जिस जिस सज्जन को सनातन वेदोक्त धर्मविषय में कहना वा सुनना होवे, सत्य पुरुष उक्त स्थान में जाकर और समागम कर के सभ्यता और प्रीतिपूर्वक वेद और प्राचीन शास्त्रों के विषय में सम्भाषण करें।

सब मनुष्यों को अत्यन्त आवश्यक है कि अति पुरुषार्थ से सत्यासत्य का निर्णय करके जससे सब मनुष्यों को जानकार करें। क्योंकि यह मनुष्य जन्म अति दुर्लभ, धर्म के सेवने और अधर्म के छोड़ने, परमात्मा की भक्ति और परमानन्द भोगने के लिये है। इस लिये जो शुभ काम कल करना हो आज ही करें, जिससे सब मंगलकारी बना रहे।। इति।।

१. तिथि का स्थान फट गया है। यह पत्र पूर्ण संख्या १२६ के पत्र के साथ लिखा गया था। देखो यही पत्र। ग्रात: यहां २ नवम्बर [कार्तिक शु∘ ८ सं० १६३५] चाहिये।

२. कार्तिक शुक्ल १२, सं० १६३५ । देहली से रात में रेल में सवार होते समय उपर्युक्त तार आजमेर दिया था। देखो पं० देवेन्द्रनाथ जी संकलित जी० च० पृष्ठ ५०६ । यु० मी० ।

३. मासिक पत्र भारतसुद्शाप्रवर्तक, फरुखाबाद, नम्बर ३१ पृष्ठ १६, १७, जनवरी सन् १८८२ से लिया गया । पं॰ लेखरामकृत—जी॰ च॰ के पृष्ठ ४१५ पर भी छुपा है।

४. ७ नवम्बर बृहस्पतिवार सन् १८७८ । भारतसुद्रशाप्रवर्तक में भूल से संवत् १६३८ छप गया है। देखो पत्र, पूर्ण सं० १२६ व १६०, १३३।

पुष्कर, अजमेर, सं० १९३५]

पत्र (९४)

१२३

[4]

पत्र (२३)

[9,3,3]

६७६

पंग्डि श्यामजी कृष्ण वस्मी आनन्द रही !"

विदित हो कि आज एक पत्र बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिण जी का आया, उसमें वे लिखते हैं कि वर्ष दिन के अन्त पर्यंत हम काम नहीं छोड़ सकते, इसमें हमारी वदनामी होगी। सो आज उनको उत्तर लिख दिया है कि इस में आपकी वदनामी किसी प्रकार से नहीं हो सकती, क्योंकि वर्ष दिन तक टाइटिल पेज पर आप ही का नाम बना रहेगा और प्राहकों के पत्रादिक भी आप ही के पास आया करेंगे, और सब काम श्यामजी करेगा। अब देखिये क्या उत्तर लिखते हैं, अब तुम चौथे अङ्क का शोधना, सब प्राहकों [ के ] पास यथावत् भेजना, और सब काम ठीक ठीक करो और काराज का प्रबन्ध भी करो, कि काराज अच्छा लगा करे, जैसा दूसरे अंक में लगा है। हम चेम कुशल पूर्वक पुष्कर में पहुंच गए हैं, अब यहां से अजमेर जाकर ठहरेंगे, वहां का सब हाल जल्दी लिखाकर उसी जगह हमारे पास मेजना और बाबू जी से मिलना।।

पुष्कर जि० श्रजमेर १० नवम्बर १८७८

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती

[9]

पत्र (१४)

[8 \$ 8]

800

पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा आनन्द रहो !

विदित हो कि आज आप के पास हम एक स्चीपत्र भेजते हैं कि जिस में उन प्राहकों का नाम लिखा है जिन्हों ने अब तक वेदमाध्य का मोल नहीं दिया, सो इस कुल सूची को पाँचवें अक्क के टाइटिल पेज पर छाप देना और दिसम्बर के मास से सब काम सम्भाल कर पाँचवें अक्क का सब काम तुम ही करना, बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिए जी को तो हम ने कई बार बहुत कुछ लिखा, परन्तु अब हम ने पिडत गोपालरावहरि देशमुख जी को भी लिखा है, वे मुम्बई में आकर अपने सामने तुम को सब काम सोंपवा देंगे, और जो कुछ हिसाब किताब होगा सो सब तुम समम्म लेना वा बाबू जी हमारे पास भेज देंगे, और वहाँ का कुल हाल लिखो कि बाबू जी का क्या विचार है, और प्रेस में आजकल क्या काम होता है। और चौथा अक्क भी प्राहकों के पास तुम ही भेजना और बहुत होशयारी के साथ अक्कों को बाँध कर अंग्रेज़ी और नागरी में लिखना और अच्छी तरह से रिजस्टर से मिला लेना यह काम बहुत होशयारी से करना चाहिये, उत्तर शीघ्र भेजो।

२० नवम्बर ७५

हस्ताचर द्यानन्द् सरस्वती श्रजमेर

१. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिच्चित है। २. कार्तिक शु॰ १५ रविवार, सं॰ १६३५।

३. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिच्ति है। ४. मार्गशीर्ष कृष्ण ११ बुधवार, सं० १६३५।

128

[80]

पत्र (२५)

[836]

950

पिंडत श्यामजी कृष्ण वम्मी आनन्दयुक्त रहो!

प्रकट हो कि अब हमारी सम्मित है कि वेदमाध्य की ३१०० कापी जो हम छपवाते हैं उन की जगह १५०० कापी छपवावें, क्योंकि ३१०० कापी छपने में खर्च अधिक होता है। इसलिए तुम से पूछते हैं कि १५०० कापी के छपने में क्या खर्च रह जावेगा, और छापे वालों का तथा कागजादि का कितना खर्च कम हो जावेगा, इसकी सब व्यवस्था लिखो: और यह भी लिखो कि राव साहब गोपालरावहरि देशमुख जी कहाँ हैं और तुम से मिले वा नहीं और अमरीका वालों का समाचार क्या है, और केशव लाल निर्भयराम कहाँ हैं। इस पत्र का उत्तर जयपुर में भेजना क्योंकि हम यहाँ से १४ दिसम्बर को चलकर अजमेर होते हुए १५ दि० को जयपुर पहुँच जावेंगे, हम बहुत प्रसम्भ हैं।

११ दि० उद

द्यानन्द् सरस्वती नसीरावाद् जि० अजमेर

[2]

तार का सारांश

[388]

हम सकुशल हैं। \* [१९ या २० दिसम्बर १८७८ (कार्तिक कृष्ण ८ या ९ सं० १९३५) जयपुर]

[9]

पत्र (२६)

[१३७]

बाबू प्यारे लाल सभासद आर्यसमाज लाहौर।"

श्राज श्रापका खत हमको रिवाड़ी में मिला, बहुत खुशी हासिल हुई। हम अजमेर से जयपुर श्राये थे श्रीर ९ रोज वहाँ कयाम किया, इस श्ररसे में वहाँ पर ठाकुर फतेसिंह साहब व बाबू श्री प्रसाद मोहतिमम बन्दोबस्त व जी श्राखत्यार वो मुश्राजिज शख्स कपतान वगैरा हम से मिले। श्रीर निहायत श्रानन्द रहा। मगर राजा साहब से मुलाकात नहीं को गई। श्रीर वहाँ से हम २४ दिसम्बर को खाना होकर २५ को रिवाड़ी जिला गुड़गांवां में पहुंचे श्रीर व्याख्यान दिया। श्रव यहाँ व्याख्यान पूरा हो चुका है। लिहाजा हम परसों बतारीख ९ जनवरी १८७९ देहली में जाकर सव्जी मएडी के पास बाबू केशरी लाल के बारा में ठहरेंगे श्रीर जो कैं कियत वहाँ की होगी सो तहरीर की जावेगी श्रीर

१. मूल पत्र प्रो॰ घीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिच्ति है।

२. १४ ग्रीर १५ दिसम्बर को क्रमशः पौष कृष्ण ५ शनिवार ग्रीर ६ रिववार सं० १६३५ था। यु॰मी०।

३. पौष क्वारण २ सं० १६३५। यु० मी०।

४. देखो, पं वेवेन्द्रनाथ जी सं जी व च पृष्ठ ५१७। जयपुर से मेरठ दिया गया । यु मी ।

५. पं लेखरामजी कृत जीवन चरित्र पृष्ठ ५४१ पर उद्धृत ।

६. १५ दिसम्बर (पौष कृष्ण ६) से २४ दिसम्बर (पौष शु० १) तक जयपुर रहे थे। यु० मी०।

७. २४ श्रीर २५ दिसम्बरको कमशः पौष शु० १ मंगलवार श्रीर २ बुधवार सं० १६३५ था। यु०मी०।

रिवाड़ी, मेरठ, सं० १९३५]

पत्र (९८)

१२५

सब तरह से खैरियत है हम बहुत श्रानन्द हैं सब सभासदों को नमस्ते।।

जनवरी १८७९

द्यानन्द सरस्वती रिवाड़ी जिला गुड़गाँवाँ

[88]

पत्र (९७)

[236]

९३७

पण्डित श्यामजी कृष्ण वस्मी श्रानन्द रही !

विदित हो कि आप के पास एक पत्र पहिले भेजा गया है पहुंचा होगा, आज फिर लिखा जाता है कि तुम लिखो कि चौथा अङ्क वेदभाष्य का अब तक क्यों नहीं निकला और छापेखाने में आजकल क्या काम हो रहा है और बावू साहब क्या करते हैं। दो दो महीने हो जाते हैं कि अङ्क नहीं निकलता, प्राहक लोग बहुत तकाजा करते हैं।। इस लिए तुम को लिखा है कि जल्दी लिख कर भेजोंकि चौथे अङ्क के निकलने में क्या देरी है, हम कल दिल्ली से मेरठ आगए हैं, यहां पर आठ नव दिन ठहरेंगे, फिर मुजफ्कर नगर, सहारनपुर, इड़की होते हुए चैत्र मास में हरिद्वार पहुंचेंगे सो जानना।।

उत्तर शीघ्र भेजो, हम बहुत त्र्यानन्द में हैं।।

मेरठ १७ जन० ७९3

हस्ताच्चर दयानन्द सरस्वती

[१२] ९४२ पत्र (९८)

[3\$6]

पंडित श्यामजी कृष्ण वम्मी आनन्द रहो !

विदित हो कि १७ जन० को तुम्हारे पास एक पत्र मेजा गया है पहुंचा होगा, आज फिर लिखा जाता है कि तुम जल्री वहां का हाल तलाश करके लिखो कि चौथा आहू हरिश्चन्द्र ने छपवाया है वा नहीं वा छपवा कर रख छोड़ा है और हानि करना चाहते हैं इसका व्योरा जल्दी लिख मेजो और बाबू जी की प्रतिज्ञानुसार माघ महीना पूरा होने वाला है इसलिए तुम उन से अब वेदमाध्य का काम ले लो और पाचवां अहु तुमही निकालो, और छापे वालों से इकरार लिखा लो कि हमारा काम मितिवार निकला करे और हम कपया दूसरे महीने और हर तीसरे महीने तक चुकाते रहेंगे, और तुम कपये पैसे का कुछ संदेह न करो, हम इसका प्रबंध ठीक ठीक कर देंगे और तुम विस्तारपूर्वक जिखो कि १५०० वा २००० कापी के छापने में कितना खर्च कम होगा, बाबू जी लिखते हैं कि

१. पौत्र शुक्त १४ सं० मंगलवार सं० १६३५ । यु० मी० ।

२. मूल पत्र प्रो॰ घीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिव्तत है।

३. माघ कृष्ण १० शुक्रवार सं० १९३५ । यु० मी०।

४. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्मा जी के संग्रह में सुरिव्तित है।

प्. यह पत्र ऊपर पूर्ण संख्या १३८ पर छपा है। यु॰ मी॰।

१५०० के छपाई में कुल १००) कम होगा जिस में से ७०॥) तो काराज ही के कम हुए फिर छपाई छौर बंधाई वगैरे का कुछ भी कम नहीं होता, इससे यह हिसाब तुम तलाश करके विस्तापूर्व के लिखो। जो तुम को हजार काम भी हों तो उनको छोड़ कर इस पत्र के प्रत्येक अज्ञर का उत्तर लिखकर बहुत जल्दी भेजो, और यहां मेरठ में कई एक धनाढ्य छापाखा नि। किया चाहते हैं, इस लिए इसका निश्चय करके लिखो कि टाइप आदि के लेने में कितने रुपये लगेंगे।

हस्ताच्चर दयानन्द सरस्वती मेरठ, १९ जनवरी ७९

जिसे तुम ने मेरठ में फोटोग्राफ खेंचने को कहा था उस ने तैय्यार कर लिया है ५) भेज कर मंगा लो।।

[9]

#### पत्र-सूचना (८)

[380]

बखतावरसिंह, शाहजहांपुर [जयपुर से रिवाड़ी तथा देहली होते हुए मेरठ पहुँचने की सूचना]

[2]

## उर्दू पत्र (९९)

[5.85]

लाला रामशरनदास जीव साहिव आनिन्दत रही। 3

जो कि तजवीज हुई है कि आर्थ्यसमाज की तरफ से एक छापहखाना जारी किया जावे। और हर एक हिस्सा मुन्तिरा सौ रुपया का मुकरिर हुआ है। लिहाजा हमारे भी उस में दो सौ रुपया

१. माघ कृष्ण १२ रविवार सं० १६३५ । यु० मी०।

२. मासिक पत्र त्रार्यदर्पण, जनवरी सन् १८७६, पू॰ २४ पर निम्नलिखित स्चना छपी है। उन दिनों यह पत्र उर्दू में निकलता था—

"सब आर्थ भाइयों को वाजेह हो कि बतारीख २४ माहे अकत्वर (दिसम्बर चाहिए। भूल से अकत्वर छुपा है। म॰ द०) सन् ७८ पिडित स्वामी दयानन्द सरस्वती मुकाम जयपुर से रवाना होकर मुकाम रिवाड़ी, जिला गुइगावां में पहुंचे। और ६ तारीख जनवरी को रिवाड़ी से देहली तशरीफ लाए। तारीख १६ जनवरी को देहली से रवाना होकर बमुकाम मेरठ पहुँचे। और वहां पर आठ रोज रह कर मुकाम मुज़फ्फर नगर, देवबन्द, सहारनपुर रहकी होते और हर जगह हफता अशरा ठहरते हुए माहे चेत में कुम्म के मेले पर बमुकाम हरहार पहुंच जावेंगे। इतलाअन अर्ज किया, फक्त।" [पूर्ण सं० १३७ में २५ दिसम्बर को रिवाड़ी पहुंचना लिखा है।]

श्री स्वामी जी ने मेरठ से कोई पत्र मु॰ बखतावर सिंह को शाहजाहांपुर भेजा होगा । उस पत्र में यह सब वृत्तान्त लिखा होगा। उसी पत्र के ऋाधार पर मुंशी जी ने यह सूचना ऋपने पत्र में छाप दी होगी।

३. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्तित है। यह पत्र सेट धनपितराय जी सुपुत्र ला० रामशरनदास जी मेरठ से प्राप्त हुन्ना था। ला० मामराज जी इसे लाए थे॥ के दो हिस्सा शामिल कर लेवें। और जब आप चाहें रूपया मज़कूर हम से ले लेवें। स्वामी दयानन्द सरस्वती

मेरठ, २० जनवरी सन् १८७९

दयानन्द सरस्वती

[36]

विज्ञापन

[483]

## ओं नमः सर्वशक्तिमते परमेश्वराय विज्ञापनपत्रमिदम् ॥

सब सजन लोगों को विदित हो कि पिण्डत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज विक्रमा-दित्य के सं० १९३५ फा० ग्रु० ६ गुरुवार को हरिद्वार में आकर अवणनाथ के बाग के पास निर्मलों की छावनी के सामने बूचा नाला के पार मूलामिस्त्री के खेतों में ठहरे हैं। जो महाशय मनुष्य उन स्वामी जी से संभाषण करके लाम उठाना चाहें, वे पूर्वोक्त स्थान पर उपस्थित होकर सभ्यता 'श्रौर प्रीतिपूर्वक वार्तालाप करें।

सव सज्जनों के लिये वेदोक्त उपदेश

ऐसा कौन मनुष्य होगा जो अपना, अपने बन्धुवर्गों का हित और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना न चाहे। क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो परस्पर मित्रता, सदुपदेश, प्रीति, धर्मानुष्ठान, विद्या की वृद्धि, दुष्टकाम और आलस्य के त्याग, श्रेष्ठ कामों के सेवन, परोपकार और पुरुषार्थ के विना सर्वहित कर सके। और ईश्वर प्रतिपादित वेदोक्त अनुसार आचरण किये विना सुख को प्राप्त हो सके। इसलिये आयों के इस महा-समुदाय में वेदमन्त्रों के द्वारा सब सज्जन मनुष्यों के हित के लिये ईश्वरकी आज्ञा का प्रकाश संचेप से किया जाता है। जिसको सब मनुष्य देख सुन और विचार कर प्रहण करें। और इस मेले में तन मन और धन से आने के सत्य सुखरूप फलों को प्राप्त हों और अपने मनुष्य देहरूप वृद्ध के धर्म, अर्थ, काम और मोचरूपी चार फलों को पाकर जन्म सुफल करें। और अपने सहचारी लोगों को भी उक्त फलों की प्राप्त करावें। इस विषय में नीचे लिखे वेदमन्त्रों का प्रमाण देख लीजिये।

ओ रम विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्गद्रं तन्न आसुव। १।

ऋ० मं० ५ सू० ८।

उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नेंनं हिन्वन्त्यिप वाजिनेषु । अधन्वा चरित माययेष वाचं शुश्रुवामफलामपुष्पाम । २ । यस्तिसाच्य सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यिप भागो अस्ति । यदीं श्रृणोसलकं श्रृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम । ३ ।

- १. माग कृष्ण १३ सोमवार सं० १६३५
- २. यह ब्राद्भुत विज्ञापन संवत् १९३५ के कुम्म के मेले पर सहस्रों की संख्या में हरिद्वार के समस्त मागों, घाटों, पुलों ब्रीर मन्दिरों की दीवारों पर लगवाया गया था।
  - पं॰ लेखरामकृत जीवन चरित पु॰ ६१६-६१८ पर देवनागरी श्रज्रों में उद्घृत है।

सर्वे नन्दिन्त यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः ।

किल्विषस्पृत्पितुषणिर्धेषामरं हितो भवति वाजिनाय । ४ ।

सक्तुमिव तितज्ञना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमकत ।

अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रेषां लक्ष्मीनिहिताधि वाचि । ५ ।

ऋ० मं १० एक्त ७१ मन्त्र ५ । ६ । १० । २ ॥

सह नाववतु सह नौ भुनवतु सह वीर्य करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।६।
तैत्तिरीयारययके प्र॰६। श्रनु॰१।

## ।। इन मन्त्रों के अर्थ।।

सब मनुष्य इस प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करें कि है (देव) सब सुखों के देने और (सविता सब जगत की उत्पत्ति और धारण करने वाले परमेश्वर, आप कृपा कर के (नः) हमारे जितने (विश्वानि) सब (दुरितानि) दुष्ट कर्म और दुःख हैं, उन सब को (परासुव) दूर की जिये और (यत्) जो (भद्रम्) शुभकर्म और नित्य सुख हैं उनको हमारे लिये सदा प्राप्त की जिये। १।

परमात्मा ऐसे धार्मिक मनुष्यों को वेद और अन्तर्यामीपन से उपदेश करता है कि जो अविद्वान मनुष्य (अपुष्पाम्) साधन रूप पुष्पों और (अफनाम्) अर्थ काम और मोन्न रूपी फलों से रिहत (वाचम्) अर्थ ज्ञान के विना वाणी को (शुश्रुवान) सुन कर (एषः) यह पुरुष (अधेन्वा) सुशिन्ना शब्द अर्थ और सम्बन्ध के बोध रिहत वाणी और छल कपटादि बुरे कामों से युक्त हो कर (चरित) चलता है, जिसको अज्ञानी (आहुः) विद्वान लोग कहते हैं (उत्) जिसको कुछ भी दुःख (न) नहीं प्राप्त होता और जो आप विद्वान हो कर (एनम्) इस विद्या रिहत मनुष्य को (स्थिरपीतम्) दृद्विद्यायुक्त करके (हिन्बन्ति) बढ़ाते (त्वम्) उसको (सख्ये) वैर विरोध छुड़ा कर मित्र होने के लिये प्राप्त करते (अपि) और उसको (वाजिनेषु) अतिश्रेष्ठ गुणकर्म युक्त करके सुखी कर देते हैं, वे मनुष्य धन्य हैं। २।

इन से विरुद्ध (यः) जो मनुष्य (सचिविदम्) सब से प्रीति प्रेम भाव से सब को सुख प्राप्त कराने वाले (सखायम्) सर्विहतकारी मित्रों को (तित्याज) छोड़ देता है अर्थात् औरों से मित्र भाव नहीं रखता (तस्य) उसका (वाचि) सुशिच्तित विद्या की वाणी में (अपि) कुछ भी (भागः) ग्रंश (नास्ति) नहीं है, अर्थात् वह भाग्यहीन पुरुष और (यत्) जो कुछ वह विद्वानों वा अविद्वानों के मुख से (ईम) शब्द को (श्रणोति) सुनता है सो सब (अलकम्) अर्थ प्रयोजन रहित (श्रणोति) सुनता है अर्थात् वह विद्या और ज्ञान के विना अर्थ का अनर्थ और अनर्थ का अर्थ समक्त कर (सुकृतस्य) धम्मे के (पन्थाम्) मार्ग को (न हि प्रवेद) कभी नहीं जान सकता। और जो आप सब का मित्र और सब को अपने मित्र समक्त के सत्य से सब का उपकार करता है, वही धम्मे के मार्ग को जान कर आप उसमें चल और सब को चला के धन्यवाद के योग्य होता है।।।

इन का ऐसे न होने और होने चाहिये। जो मनुष्य (वाजिनाय) विद्यादि शुभ गुण प्राप्ति करने और कराने के लिये (किल्विषस्पृत्) पाप का सेवन कराने द्वारा (पितुषिणः) स्वार्थी (भवित) होता है, वह सुख को कभी प्राप्त नहीं होता। और जो (हि) निश्चय करके (एषाम्) इन मनुष्यादि वर्त्तमान जीवों का (अरं हितः) अत्यन्त हितकारी है, उस (यशसा) कीर्तिमान (सभासाहेन) सभा का भार उठाने और सभा को उन्नित करने (आगतेन) सब प्रकार से प्राप्त होने वाले (सख्या) मित्र के साथ (सखायः) मित्र भाव रखते हैं वे (सवें) सब लोग (नन्दन्ति) परस्पर सदा आनन्दयुक्त रहते हैं। ।।

जहाँ ऐसे मनुष्य होते हैं, वहां दुःख का क्या काम है। (सक्तुमिव) जैसे सन्तू को (वितर्जना) चालनी से छान कर सार असार को अलग २ करके शुद्ध कर देते हैं, वैसे (यत्र) जिस देश, जिस समुद्राय, जिस सभा में (धीराः) धार्मिक विद्वान लोग (मनसा) विज्ञान और प्रीति से (वाचम्) वाणी को सुशिच्चित और विद्या युक्त कर के सत्य का सेवन और असत्य का त्याग करने के लिए (सखायः) परस्पर सुद्धद होकर (सख्या) मित्रों के कम्म और भावों को (जानते) जानते और जनाते हैं। (अत्र) इस में वर्त्तमान होने वाले (एषाम्) मनुष्यों ही की (वाचि) सत्य वाणी में (भद्रा) कल्याण और सुख करने वाली (लक्ष्मी) विद्या शोभा और चक्रवर्ती राज्य की श्री (निहिता) सदा स्थित रहती है, और जो एक दूसरे के साथ सुख करने में निश्चित नहीं होते, उनको दरिद्रताचेर कर सदा दुःख देती रहती है।।।।। इसलिए हे मनुष्य लोगो तुम ऐसा समक्त के इस आगे लिखी बात को सदा करते रहियो।

(सह नाववतु) हम लोग परस्पर एक दूसरे की रच्चा सदा करते (सह नौ मुनक्तु) एक दूसरे के साथ विरोध छोड़ कर आनन्द भोगते (सह वीर्य करवावहै) और एक दूसरे का बल पराक्रम, विद्या के साथ विरोध छोड़ कर आनन्द भोगते (सह वीर्य करवावहै) और एक दूसरे का बल पराक्रम, विद्या और मुख को बढ़ाते रहें और (तेजस्विनावधीतमस्तु) हमारे बीच में विद्या का पठन पाठन (तेजस्वी) अर्थर मुख को बढ़ाते रहें और (तोजस्विनावधीतमस्तु) हमारे बीच में विद्या का पठन पाठन (तेजस्वी) अर्थर मुख काश हो। (मा विद्विषावहै) और हम लोग आपस में वैर विरोध कभी न करें। इस प्रकार चाल चलन गुद्ध करने से (ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः) जो हमारे (अध्यात्मक) शरीर की पीड़ा (आधिमौतिक) शत्रु आदि से पराजय आदि क्लेश का होना, (आधिदैविक) अर्थात् अति वर्षा होने, न होने आदि और मन आदि इन्द्रियों की चक्र्यलता से तीन प्रकार का दुःख होता है वह कमा उत्पन्न न हो, किन्तु सदा सब मुख बढ़ते रहते हैं।

विचारना चाहिये ॥ हे मनुष्य लोगो ! ऊपर लिखी व्यवस्था पर श्रातमा में ध्यान देकर देखों कि परमेश्वर ने वेद द्वारा हम सब मनुष्यों को सुखी होने के लिये कैसा सत्योपदेश किया है कि जिस में चलने से अपने लोगों में सब दु:खों का नाश और सत्य सुखों की वृद्धि बनी रहे । क्या तुम ने नहीं सुना कि अपने पुरुष ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्य्यन्त महर्षि और स्वायंभव[मनु] से लेके महाराजे युधिष्ठिर सुना कि अपने पुरुष ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्य्यन्त महर्षि और स्वायंभव[मनु] से लेके महाराजे युधिष्ठिर पर्य्यन्त राजिं लोग वेदोक्तधर्म के अनुकूल चलके कैसे २ बड़े विद्या और धर्म को फैला कर सदा आनन्द में सुखों को भोगते, विमान आदि सवारियों में बैठते, सर्वंत्र विद्या और धर्म को फैला कर सदा आनन्द में रहते थे । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, वर्ष, अयन, रहते थे । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, वर्ष, अयन, रहते थे । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, वर्ष, अयन, रहते थे । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, वर्ष, अयन, रहते थे । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, वर्ष, अयन, रहते थे । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, वर्ष, अयन, रहते थे । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी के त्यों बने हैं और हम आरों का हाल क्यों बदल गया। वनस्पति, खाना, पीना आदि व्यवहार क्यों के त्यों बने हैं और हम आरों का हाल क्यों बदल गया। हो मनुष्यो ! आप लोग अत्यवहार विचार करके देखों कि जिसका फल दुःख वह धर्म और जिसका फल सुख हम अधर्म कभी हो सकता है ? अपना हाल अन्यथा होने का यही कारण है कि जिसको ऊपर लिख चुके, वह अधर्म कभी हो सकता है ? अपना हाल अन्यथा होने का यही कारण है कि जिसको ऊपर लिख चुके,

[हरिद्वार, सन् १८७९

वेद-विरुद्ध चलना। श्रीर उस प्राचीन श्रवस्था की प्राप्ति कराने वाला कारण वेदोक्तानुकूल चलना है। श्रीर वह चाल चलन यह है कि जैसा श्रार्थ्यावर्त्तवासी श्रार्थ्य लोग श्रार्थ्यसमाजों के सभासद करते श्रीर कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशियों की बढ़ती के श्रियलाषी, परोपकारक निष्कपट हो के सब को सत्यविद्या देने की इच्छा युक्त, धार्मिक विद्वानों की उपदेशक मण्डली श्रीर वेदादि सत्य शास्त्रों के पढ़ने के लिये पाठशाला किया चाहते हैं। इस में जिस किसी श्रार्थ्य की योग्यता हो वह श्रपने श्रियाय को प्रसिद्ध करके इस परोपकारक महोत्तम कार्य्य में प्रवृत्त हो। इसी से मनुष्यों की शीघ उन्नति हो सकती है। मैं निश्चित जानता हूं कि इस बात को सुन के सब भद्र लोग स्वीकार कर के श्रार्थोन्नति करने में तन, मन, धन से प्रवृत्त होंगे निस्सन्देह।।

भूतरामाङ्कःचन्द्रेऽब्दे माघमासि सिते वले। अमायां बुधवारे वै पत्रमेतदलेखिषम् ॥

(3)

पत्र (१००)

[१४३]

नं० १००७

श्रीयुत कुपाराम स्वामी श्रानन्द रहो !

ता० १ फरवरी सन् १८७९ का लिखा रजिस्टर पत्र पहुँचा । देख कर आनित्त हों के समाचार जानके प्रत्युत्तर लिखता हूँ । वहाँ रहने वालों से मेरा आशीर्वाद कहना । वहां आने में सुमको बहुत प्रसन्नता है । परन्तु मैं अनुमान करता हूँ कि जो वन सकेगा तो सं० १९३६ वैशाख लगते ही आने का सम्भव है । यहां सहारनपुर से ता० ६ फरवरी को रुड़की की जाके वहां ८ वा १५ दिन रह के हरद्वार में जाके कनखल और ज्वालापुर के बीच नहर के पुल पर बड़ी सड़क पर मूला मिस्तरी के बाग में डेढ़ महीना ठहरने का विचार है । पीछे आप लोगों के यहाँ आने का विचार है । सो जानिये । क्या आप लोगों से मैं नहीं मिला चाहता ऐसा सम्भव है ।

सम्वत् १९३५ मिति माघ शु० १० श्रादित्यवार ।

दयानन्द सरस्वती

१. विज्ञापन के अन्त में श्री स्वामी जी का नाम अवश्य होगा। यहां मैं शब्द से वे अपना संकेत करते हैं। [इस विज्ञापन का निर्देश अगले पत्र पूर्ण संख्या १४५ पृष्ठ १३१ में भी है।]

२. पं॰ लेखराम जी के जीवन चरित में " माघमासासित दले " शुद्ध पाठ है । ऊपर के पाठ में किसी कारण श्रशुद्धि हो गई प्रतीत होती है।

३. २२ जनवरी १८७६ । यह विज्ञापन चशमाएं फैज प्रेस मेरठ में छुपा था।

४. मूल पत्र श्रातिजीर्या पं॰ बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार की भगिनी के पास हरिद्वार गुरुकुल काङ्गड़ी में है। इसे इमने पहले मेरठ से आई प्रतिलिपी से छापा था, फिर सन् १६३३ में ला॰ मामराज जी ने मूल पत्र से मिला लिया था। यह पत्र सहारनपुर से देहरादून मेजा गया था। २ फरवरी १८७६॥

हरिद्वार, सं० १९३५]

पत्र (१०२)

१३१

[33]

पत्र (१०१)

[888]

सं १९३५ मि० फाल्गुण ग्रु० प शनि ता० १ मार्च १८७९। पिएडत स्यामजी कृष्ण वर्मा स्थानिन्दत रही !

ता० २४ फरवरी का लिखा पत्र आप का आया, सब हाल विदित हुआ। मेरी ओर से पाताल देश वासी लोगों को बहुत २ प्रेम प्रीति के साथ आशीर्वाद यथोचित कहके कुशल दोम पूछना और वे वहां कितने दिन रहके किघर २ जाना होगा। जब लाहौर आदि समाजों में जाना हो तब पहिले ही हम को विदित कर देना उचित है, उन का सरकार यथायोग्य सर्वंत्र हो और वे सुम्बई में नवीन समाज और थियोसोफिकल सुसायटी का स्थापन करेंगे सो क्या वात है समाज तो है ही है, पुनर्नवीन समाज और थियोसोफिकल का स्थापन करना कुछ समक में नहीं आया, इस का खुलासा लिखो, जिस से समकता सुगम हो। आगे जो कपैयों के विषय में लिखा सो विदित हुआ, उन सब की इच्छा हो तो वेदमाण्यदि के छपाने में खरच हो तो अच्छा है, आगे इस से अधिक परोपकारक विषय हम को नहीं विदित होता, आगे जैसी सब की प्रसन्नता हो सो करें। आगे एक सुन्शी समर्थदान वेदमाण्य का काम वहां करेगा। यह बड़ा भद्र पुक्ष है, नागरी पारसी तो अच्छी तरह से जानता है थोड़ी सी इंगरेजी भी जाने है, अपने घर का प्रतिष्ठित मातवर पुक्ष है। यह यहां हरद्वार से दो चार दिनों में मुम्बई को आने के लिये रवाना होके वहां पहुँचेंगे। इस को सब काम छापे वालों से और कागज बालों से नियम व्यवहार करा देना और इन को किसी प्रकार का दुःख न हो, स्थान आदि का प्रवन्ध कर देना, सब से मिलाप भी करा देना और एक चपरासी भी, मातवर आगे का हो तो वहीं नहीं तो कोई दूसरा रखवा देना, ठीक २ व्यवस्था करवा देना चाहिये॥

(दयानन्द सरस्वती)

[88]

पत्र (१०२)

[ 9,84]

सं० १९३५ मि० फाल्गुगा ग्रु० ११ मंगल ता० ४ मार्च १८७९। र परिडत श्यामजी कृष्ण वस्मी श्रानन्दित रहो!

तुम्हारा ता० २६ फरवरी का लिखा पत्र आया सब हाल विदित हुआ। मैं बहुत शोक इस बात में करता हूं कि हमारे प्रिय बन्धुवर्ग पाताल देश निवासी लोगों को मुबई में आके मिल नहीं सकता, क्योंकि हरद्वार में चैत्र की समाप्ति पर्य्यन्त ठहरने का नोटिस फाल्गु ग्रा शुदि ६ गुरुवार से दे चुका हुँ और यहां इस बात कि प्रसिद्धि भी कर चुका हूँ, अब इस बात को अन्यथा नहीं कर सकता। जब वे इस देश में लाहीर आदि के समाजों को देखने को आवेंगे तब यहां वा कहीं अत्यन्त प्रेम के साथ उन से मिल्गा और बात चीतें भी यथोचित होंगी। उन से मेरा आशीर्वाद कहके कुशल दोम प्रेम

१. यह पत्र ब्राद्योपान्त श्री स्वामीजी के स्वहस्त से लिखा हुन्धा है। मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्माजी के संग्रह में सुरक्षित है। हरिद्वार से लिखा गया।

२. यह पत्र त्राद्योपान्त श्री स्वामी जी के स्वहस्त से लिखा हुन्त्रा है। मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्र वर्माजी के संग्रह में सुरिच्चित है। ३. यह नोटिस पूर्ण संख्या १४२ पृष्ठ १२७-१३० तक छुपा है। यु॰ मी॰।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

से पूछना और जो तुमने समाज के विषय में लिखा कि न आश्रोगे तो यहां का आर्थ्यसमाज दूट जायगा क्या तुम ने समाज हरिश्चन्द्र चिन्तामिण के ही भरोसे किया था और जो मेरे श्राने जाने पर ही समाज की स्थित है तो मैं श्रकेला कहां २ जा श्रा सकता हूँ जो समाज में श्रयोग्य प्रधान हो उसको छुड़ा कर दूसरा नियत करके समाज का काम ठीक २ चलाना चाहिये। कर्ल यहां से चल के मुन्शी समर्थदान वेदभाव्य के काम पर नियत होके मुन्वई को श्राते हैं, तुम से मिलेंगे। छापेवालों श्रीर कागजवालों से ठीक २ नियम करा देना और बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिण से भी सब पुस्तक पत्रे दिला देना, सब हिसाब किताब करा के शीघ खुलासा करा देना श्रीर इन को मकान श्रादि का क्लेश कुछ भी न होने पावे।।

(दयानन्द सरस्वती)

[86]

पत्र (१०३)

[388]

सं० १९३५ फाल्गुरा शुदि १२ बुधवार ता० ५ मार्च १८७९

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमायुक्तेभ्यः श्रीयुत्तरयामिजकुष्णवर्मभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशीषो मूयासुस्तमां, शिमहास्ति तत्रत्यं मवदादीनां च नित्यमाशासे ॥ अप्र इदं बोध्यमेकं मनस्विनं समर्थदान-नामानं पुरुषं वेदभाष्यप्रबन्धार्थं भवत्सनीढं मुम्बापुर्यां वर्त्तमानेऽहिन प्रेषयामि, युश्रासम्यमयं तत्र प्राप्यत्यस्मै कथंचित्क्लेशो न स्यात्तथानुष्ठेयं, वेदभाष्यसम्बन्धिकार्याणि संसेधनीयानि, नैविश्व विलंबः कार्य इति ॥ ये तत्र समासदः सज्जनाः सन्ति तैः सह संमेलनम् । ये तत्र पातालदेशनिवासिनो वर्त्तन्ते तेभ्योऽत्यन्तादरेणाशिषः संश्राव्य कुशलद्दोमता प्रष्टव्या ॥ यथा मिय प्रीति वर्त्तते तथैवैतस्मिन् प्रेम-भावो विधेयो विद्याऽध्ययनसहायः स्थानभृत्यप्रबन्धद्ध यथावत्समर्थदानस्य कार्य इति च ॥

(द्यानन्द सरस्वती)

[3]

#### टिप्पणी

[880]

इन पुस्तकों में से शिचापत्री ध्वान्तिनवारण को छोड़ के खोर सब पुस्तक आधे हमारे पास भेजो खोर आधे वल्लभदास जी के पास भेजिये।

(द्यानन्द सरस्वती)

१. यह पत्र त्राद्योपान्त श्री स्वामी जी के स्वहस्त से लिखा हुत्रा है। मूलपत्र पो॰ धोरेन्द्र वर्मा जी के संब्रह में सुरित्तत है।

२. त्यार्यसमाज लाहीर के पुस्तकाध्यत् श्री वल्लभदास का एक पत्र पूर्ण पत्र संख्या १४० के साथ लगा है। उस पर श्री स्वामी जी ने यह टिप्पणी दी है।

हरिद्वार, सं० १९३५]

पत्र (१०४)

१३३

[3]

पत्रांश (१०४)

[386]

[मुन्शी समर्थदान .....] मुन्बई जा कर अमरीका वालों से मिलना और हाल लिखना ॥ चैत्र चदी २ सोमवार संवत् १९३५॥ र

(हरद्वार)

[35]

पत्र (१०५)

[286]

Hardwar.

16 March 1879.

Lalla Madho Lall Secretary, Arya Samaj Dinapore,\*

Dear Sir,

I have the pleasure to acknowledge receipt of your letter of 13th instant, containing 3 Currency notes aggrigating Rs. 20/- and postage stamps for annas five, being cash of the books mentioned therein:—

I am very glad to hear that efforts are being made for establishing Arya Sanskrit Patsala still more that Rs. 102/5 are collected in its aid. I shall be happy to hear further of your progress-

There are 10 copies of Satyarth Prakash available. The other contents of your letter the 5th Number of Veda Bhash.

Always your well wisher.

[भाषानुवाद]

[दयानन्द सरस्वती]

हरद्वार १६ मार्च १८७९³

लाला माधोलाल

मन्त्री आर्यसमाज

दीनापुर ४

प्रिय महाशय!

श्चाप का १३ तारीख का पत्र मिला, प्रसन्नता हुई। उस में ३ करेन्सी नोट २०) रु० के श्रीर पाँच श्चाना के टिकट थे। यह रुपया वहाँ लिखी पुस्तकों का मृत्य है।

- १. पं े लेखरामकृत जीवनचरित पृ े ८३४ पर इतना श्रंश उद्धृत है।
- २. १० मार्च १८७६ ।
- ३. िचैत्र कृष्ण ६, रविवार सं० १६३५ ] मूल पत्र आर्थसमाज दानापुर के संग्रह में सुरिवृत है।
- ४. यहां लेखक प्रमाद से दानापुर का दीनापुर बन गया है।

मुक्ते यह सुन कर बहुत प्रसन्नता हुई है कि आप आर्थ्य संस्कृत पाठशाला का यह कर रहे हैं, और भी अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि १०२। ) रु० इस की सहायता में एकत्र हो गये हैं।

मैं आगे आप की उन्नति सुन कर प्रसन्न हूँगा।

सत्यार्थप्रकाश की १० प्रतियाँ मिल सकती हैं। आप की दूसरी बात का उत्तर है, वेद्भाष्य का पाँचवाँ अङ्क। आप का सदा हितैवी

(द्यानन्द सरस्वती)

[3]

पत्र-सूचना

[960]

[8]

पत्रांश (१०६)

[368]

अमरीका वालों से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उन से कुशलता पूछना कि लाहीर आदि के समाज में आप लोगों के लिये तय्यारी कर चुके हैं, वहाँ कब तक जावेंगे और उन्होंने संस्कृत पढ़ने का आरम्भ किया है वा नहीं और जो कुछ वे हमारे विषय में कहा करें सो लिख दिया करना और हम नहीं लिखें तो भी उन की कुशलता आदि सदैव लिखते रहें पूछाँ मेला अब तक साधुओं का ही है। गृहस्थ लोग तो कम आद हैं। हम ने एक पत्र कर्नल अलकाट साहव को २४ ता० को और दिया है। तुम उन से उत्तर लिखवाना । शामलाल खन्ना को नमस्ते । चैत्र सुदी ४ संवत् १९३६। हरदार।

२६ मार्च १८७९

द्यानन्द सरस्वती

[4]\*

पत्रांश (१०७)

[१५२]

दो लाख के लगभग वैरागी तथा सन्यासी आदि आए हैं। मेला के समाप्त होने का समाचार है। हैजा से ५ व्यक्ति तीन दिन में मर गये हैं।

> चेत्र सु० [४]" [सं० १९३६] २७ मार्च १८७९

द्यानन्द सरस्वती हरद्वार

- १. इस पत्र की स्चना अगली पूर्ण संख्या १५१ के पत्र में है।
- २. प्रबन्धकर्ता वेदभाष्य ( मुं समर्थदान १ ) को लिखा गया ।
- ३. पं० लेखरामकृत जीवनचरित प्० ६२४ पर उद्घृत । [२६ को चतुर्थी का भी संयोग था ।]
- ४. प्रबन्धकर्ता वेदभाष्य (मु॰ समर्थदान) को लिखा गया।
- ४. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ६२४ पर उद्घृत । ४ के स्थान में वहां माघ पाठ है । यह माघ पाठ ग्रागुद्ध है ।

हरिद्वार, सं० १५३६]

पत्र (१११)

१३५

[6]

पत्रांश (१०८)

[१५३]

हम को पन्द्रह दिन से द्रस्त आते हैं। दिन भर में १०, १२। अब दिन दिन से आराम है परन्तु निर्वलता बहुत है। सो यहाँ से १२ ता० को देहरादून के पर्वत को जावेंगे। वहाँ से मुम्बई आने का प्रवन्ध करेंगे जब शरीर अच्छा होगा, सो तुमने अमरीका वालों से कह देना। उनको सममा दो कि हमारा शरीर महीने ढेढ़ तथा दो से कम में अच्छा भी नहीं होगा और जो इस गर्मी के दिनों में रेल में भी बड़ी गर्मी होगी। सो आठ दिन के जाने और आठ दिन के आने में बड़ा कष्ट होगा और देह को बड़ा दु:ख होगा। तुम उनको अच्छे प्रकार सन्तुष्ट कर देना कि हम अवश्य आवेंगे जिस दिन हमारी देह को आराम होगा। और हम को बड़ा दु:ख है कि अमरीका वाले ऐसे समय में आए हैं जिसमें हमारा उनसे शीध मिलाप नहीं हो सकता।

चैत्र शुक्त ११ [सं० १९३६]। र त्रप्रेत १८७९

दयानन्द सरस्वती हरिद्वार

[2]

पत्रसारांश (१०९)

[298]

स्वामी विशुद्धानन्द

मैं जो बात कर रहा हूँ उस को आप सब लोग जानते हैं कि वह सर्वथा ठीक है, परन्तु विद्वान होते हुए भी आप उसे प्रसिद्ध क्यों नहीं करते।

[9]

पत्रसारांश (११०)

[944]

स्वामी जीवनगिरि

[8]

पत्रसारांश (१११)

[१५६]

स्वामी सुखदेवगिरि जी

१. अर्थात् १८ या १६ मार्चे अर्थात् चैत्र वदी ११ या १२ से।

- २. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ६२४ पर उद्घृत । यह पत्र सम्भवतः सु॰ समर्थदान को सम्बई लिखा गया है ।
  - ३. यह पत्रसारांश पं वेवेन्द्रनाथ जी संकलित जीवनचरित पृ पूरि पर उद्धृत है। यु मी ।
- ४. इस पत्र की तिथि अज्ञात है। यह सं० १६३६ (सन् १८७६ के हरिद्वार के कुम्म के मेले में लिखा गया था। यु॰ मी॰।
  - ५. इन को भी पूर्व संख्या १५४ वाला अभिप्राय ही लिख कर मेजा गया था। देखोटि० ३ । यु॰ मी०।

पत्रसारांश (११२)

[860]

शास्त्रार्थं के लिए मैं हर समय उद्यत हूं, परन्तु उस का प्रबन्ध कर्चा कोई राजपुरुष हो। शास्त्रार्थ में पिडितों के अतिरिक्त कोई अपिठत मनुष्य न आने पाए। शास्त्रार्थ की जगह न मेरी हो न आप की। जूना अखाड़ा में आने में मुक्ते शारीरिक हानि पहुँचने का भय है। शरीरपात की तो मुक्ते चिन्ता नहीं, परन्तु जो उपकार कार्य में कर रहा हूँ वह अधूरा रह जायेगा।

[वैशाख वदी १ सं० १९३६]

पत्रसारांश (११३)

यदि स्वामी विशुद्धानन्द्जी कह दें कि आप लोग मेरी अपेत्ता वेदों को अधिक सममते हैं, तो मैं शास्त्रार्थ करने को उद्यत हूँ और मैं उन्हीं को मध्यस्थ नियत करता हूँ।

पत्रांश (११४)

[6] तुम्हारे जाने के पीछे हमारा शरीर अच्छा नहीं रहा। अर्थात् ४०० से अधिक अधिक दस्त हुए। इस से शरीर अति दुर्वल हो गया। विचार था कि शरीर अच्छा रहा तो हम हरद्वार से ही मुम्बई को अवश्य आते, परन्तु अब यहां[से] देहरादून जाने का विचार है। सो वहां जा कर थोड़े दिनों में शरीर अच्छा हो जायगा। तब आने के विषय में तिखेंगे। सो तुम ने अमरीका वालों के पास हमारा नमस्ते कहना और किसी प्रकार का सोच विचार वे लोग न करें। क्योंकि मुम्बई में आ कर उन लोगों से हम अवश्य मिलेंगे। मुनशी इन्द्रमिण जी भी यहां हमारे पास आ कर ठहरे हैं और मेला भी कुछ विशेष नहीं जुड़ा है।

वैशाख सु० २ संवत् १९३६

द्यानन्द सरस्वती हरद्वार

[क्योंकि वैशाख वदी ८ (१४ अप्रेल) को श्री स्वामी जी देहरादून चले गये थे ]।

१. पत्र का यह सारांश पं व देवेन्द्रनाथ संकलित जीवनचरित पृष्ठ ५३५ पर उद्घृत है। यु॰ मी॰।

२. यह पत्र हरिद्वार के कुम्म के मेले में वैशाख वदी १ सं० १६३६ (७ अप्रैल १८८६) को शास्त्रार्थी पिंडतों की च्रोर से लिखे गये पत्र के उत्तर में उसी दिन लिखा गया था। यु॰ मी॰।

३. पत्र का यह सारांश पं वेवेन्द्रनाथ सं विवनचरित्र पृष्ठ ५३५ पर उद्घृत है यु विश्व मी ।

४ यह पत्र पूर्ण संख्या १५७ के पत्र के कुछ दिनों के अपनन्तर (पग्नतु वैशाख वदी म सं०१६३६-१४ अप्रैल १७८६) से पूर्व लिखा गया था, क्योंकि इसी तिथि को श्री स्त्रामी जी देहरादून चले गये थे। यु॰ मी॰।

५. पं व लेखरामकृत जीवनचरित पृ व ६२४ पर उद्घृत । यह पत्र संभवतः मुंशी समर्थदान को मुम्बई में लिखा गया है। मुंशों समर्थदान को ही वेदभाष्य के प्रतन्धकर्ता के रूप में ता० ५ मार्च को श्री स्वामी जी ने हरिद्वार से मुम्बई भेजा था। देखो पं॰ श्यामजी कृष्ण वर्मा के नाम का पत्र, पूर्ण संख्या १४६ पृ॰ १३२। ६. ८ स्रप्रेल १८७६ मंगलवार । वैशाख वदी चाहिये । सुदी छापने में जीवनचरित की भूल है

हरिद्वार, सं० १९३६]

विज्ञापन (२०)

१३७

[93]

पत्र (११५)

950

Hardwar. 10-4-78

Baboo Madho Lall

Arya Samaj, Dinapore.3

Dear Sir,

Informs that American Mission (col. H. S. Olcott and countess H. Blavatsky) is coming to see me at Dehra Dun about the 14th current and I hope will stay with me for some months.

Sd. Dianand Sarasswatti.

दः द्यानन्द सरस्वती

#### [भाषानुवाद]

हरद्वार

बाबू माधोलाल

श्रार्यसमाज दीनांपुर<sup>8</sup>।

**जिय महाशय**!

आप को सूचित किया जाता है कि अमेरिकन मिशन (कर्नल एच० एस० अल्काट और काऊएटेस एच० व्लवसकी) इस मास की १४ तक मुक्ते देहरादून मिलने आ रहा है और मैं आशा करता हूँ कि मेरे साथ कुछ मास तक ठहरेंगे।।

द्यानन्द सरस्वती

[२०]

# विज्ञापन

[888]

- (१) सब को विदित हो कि वेदमाध्य के तीसरे वर्ष का आरम्भ सम्वत् १९६६ के वैशाख मास के छठे ऋडू से गिना जायगा। और पीछे के दो वर्षों का हिसाब प्राहकों के पास प्रतिमास ऋडू
  - १. यहां ७८ भूल से लिखा गया है । ७६ चाहिये । विशाख कृष्ण ४ बृहस्पति सं० १६३६ ।]
  - २. भूल पत्र त्रार्थसमाज दानापुर के संग्रह में सुरिवत है।
  - ३. इस पत्र में भी दानापुर को दीनापुर लेखक प्रमाद से लिखा गया है।
- ४. यह नोटिस ऋग्वेद श्रीर यजुर्वेद भाष्य के श्रद्ध पांच के टाइटल पेज ३, ४ पर छपा है । यह श्रङ्क देर से निकला था। नोटिस सम्मवतः वैशाख कृ० ७-३० के बीच में लिखा गया था।

न पहुँचने के कारण से ठीक न रहा। इसलिए हम वर्षों के हिसाब को छोड़कर अङ्कों का हिसाब लगाते हैं।। एक अङ्क नमृते का १६ भूमिका के और इस अङ्क सहित १० अङ्क दोनों वेदों के निकले, सव मिलाने से २७ अङ्क हुए ।। इनमें से १२ अङ्कों के ४॥) रुपये और शेष १५ के (२४ अङ्कों के ८) रु० के हिसाव से ५) ह० हुये।। सम्वत् १९३६ के वर्ष के दो वेदों के २४ अङ्कों के ८) ह० रक्खे हैं। जिन लोगों ने वेद्भाष्य के आरम्भ से आज तक रूपये नहीं दिये हैं, वे इस अङ्क तक के ९॥) रू०, सं० ३६ के अन्त तक के १७॥) रु० और जो लोग ४॥) रु० दे चुके हैं वे इस अङ्क तक के ५) रु० और उक्त सं० के अन्ति ति के १३) के और जो लोग ११) के दे चुके हैं वे अगले वर्ष के लिये ६) के भेजें। यह दो वेदों का हिसाब हुआ।। एक वेद के प्राहकों के पास १ अङ्क नमूने का १६ भूमिका के और इस श्रङ्क सिहत ५ श्रङ्क वेद के पहुँचे सब मिलाने से २२ श्रङ्क हुये। इनमें से १२ श्रङ्कों के ४॥) क० और बाकी के १० अड्डों के (१२ अड्डों के ४) कु के हिसाव से) ३। –)।। हुये। अगले वर्ष के १२ अड्डों के ४) क हैं। जिनके रुपये भाष्य के आरम्भ से उधार हैं वे अब तक के आ। )।। और सं० ३६ के अन्त तक के ११।।।-)।। श्रीर जिन्होंने था।) रु० दे दिये हैं वे श्रव तक के ३।-)।। श्रीर श्रगले वर्ष के श्रन्त तक के ७। और जो लोग न।।) रु० दे चुके हैं वे अगले वर्ष के ३। 🗥।। देवें ।। अब जो नया प्राहक होना चाहे वह सं० ३६ के अन्त तक के दो वेदों के १७) और एक वेद के ११॥) रु० भेजें। आगे नये प्राहकों को नमूने का श्रष्ट नहीं मिलेगा। जो कोई भूमिका के बिना केवल वेद ही लिया चाहे सो नहीं पिल सकते किन्तु भूमिका ५) २० देने से पृथक् मिल सकती है ॥

(२) सब प्राहकों को विदित किया जाता है कि इस पाँचवें ब्रङ्क से मुम्बई में वेदभाष्य का प्रवन्ध ब्रथीत भाष्य का चन्दा वसूल करना, मासिक ब्रङ्क छपकर प्राहकों के पास भेजना, नवीन प्राहक करना ब्रादि वेदभाष्य सम्बन्धी जो काम बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणी जी करते थे, सो हमारी छोर से मुनशी समर्थदान करेंगे ब्रौर पिखत उमरावसिंह भी चन्दा वसूल करना, नये प्राहक करना, मुम्बई के सिवाय सब स्थानों के उधार वाले प्राहकों से तक्षाजा करके रूपये वसूल करना, ये सब काम करेंगे। ब्रब नीचे लिखे ठिकानों से रोक रूपये देने पर वेदभाष्य का पुस्तक मिला करेगा।

मुनशी समर्थदान प्रबन्ध कर्ता "वेद्भाष्य कार्यालय" मारवाड़ी बाजार मुम्बादेवी की चाली मुम्बई ।। (Munshi Samartha Dana Manager of the Veda Bhashya office Marawari Bazar Mumba Devi's chalee Bombay.)

पण्डित उमरावसिंह मंत्री आर्य्यसमाज रुड़की जिला सहारनपुर। और जहां मैं स्थित होऊं वहाँ के लोग रुपया दे सकते हैं और पुस्तक ले सकते हैं, परन्तु पत्र द्वारा मेरे पास रुपये भेजने और मेरे पास से पुस्तक मंगाने का कुछ काम नहीं। पर पत्र द्वारा तो ऊपर लिखे दोनों स्थानों में जिसको जहाँ सुगम हो रुपये मेजकर पुस्तक मंगावें। अब पीछे कोई भी प्राहक भाष्य सम्बन्धी रुपया और पत्र बाठ हरिश्चन्द्र चिन्तामणी जी के पास न भेजे।

(३) यह बड़े उत्साह की बात है कि वेदभाष्य के प्राहक बहुत से हो गये हैं । कि जिनकी सहायता से इस महान कार्य वेदभाष्य के बनने श्रीर छपने का काम श्रन्छी तरह से चल सके, परन्तु

१. ग्रर्थात् कोई भी ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पढ़े विना स्वामी जी का वेदभाष्य का ठीक ठीक ग्रिमियाय नहीं समक्त सकता। इस लिथे वे भूमिका के विना वेदभाष्य देना ही नहीं चाहते थे। यु० मी०।

शोक की वात यह है कि ऐसे मद्र पुरुषों ने धर्मीपकारार्थ वेदभाष्य का लेना स्वीकार किया और अभी तक वरावर लेते हैं परन्तु उनमें से बहुत से ऐसे लोगों ने कि जिनको इतना चन्दा देना कुच्छ भी कठिन नहीं है वेदभाष्य के आरम्भ से अभी तक रुपये नहीं भेजे हैं। अब सब महाशयों को उचित है कि इस विज्ञापन को देखते ही उक्त हिसाब के अनुसार उत्साह पूर्वंक चन्दा भेज देवें। अब यह अङ्क तो सबके पास भेजते हैं और सूचना करते हैं कि उन लोगों के पास कि जिन्होंने पीछे कुच्छ भी चन्दा नहीं दिया है अब तक के चूकते रुपये न भेजोंगे तो उनके पास हठा अङ्क नहीं भेजा जायगा और अगले अङ्क में रुपयों सहित सब उधार वालों के नाम छपाकर प्रगष्ट करेंगे और दाम लेकेंगे। तकाजा करने उधार का चन्दा वसूल करने का काम मुम्बई का मुं० समर्थदान और सब स्थानों का पं० उमरावसिंह को सौंपा है। बाहक लोग तकाजा करने के पहिले ही रुपये भेज दें तो अच्छी बात है।।

(४) जिन भद्र पुरुषों ने मासिक धम्मीर्थ चन्दा देना स्वीकार किया है उनमें से बहुत से लोगों का चन्दा कई महिनों से नहीं आया है उन को उचित है कि आज तक का चन्दा अगले अड्ड

के पहिले ही भेज देवें।

हस्ताच्चर दयानन्द सरस्वती

[2]

पत्रांश (११६)

[983]

[पं० क्रपाराम]' हम पर्वी से दूसरे दिन डेरादून को कूच करेंगे।

[6]

पत्रांश (११७)

[१६३]

हरद्वार में श्रोंकारमल श्रीर मुनन्दराज हम को नहीं मिले। रामगढ़ से मी बहुत से प्रेमी लोग पहुंच गए। इरद्वार में बहुत लोगों से बात चीत हुई। साधु लोगों ने उपदेश मुना लाम भी बहुत सा हुआ। हैजा बहुत सा नहीं है थोड़ा सा हुआ। जब श्रमरीका वाले मुनेंगे श्रीर उन से बातचीत होगी, तब सब श्रम निकल जावेंगे। हम को हरद्वार में लग भग ४०० दस्त हुए श्रीर श्रब तक भी कुछ २ श्राते हैं परन्तु यहां कि वायु ठएडा होने से कुछ २ श्रराम होता श्राता है परन्तु शरीर बहुत निर्वल हो गया है। श्राज दस्त बन्द हुआ दीखता है। जो बन्द हो जावेंगे तो शरीर भी १५, २० दिन में श्रच्छा हो जावेगा।।

वैशाख वदी १२, शुक्रवार संवत् १९३६ ।

द्यनन्द सरस्वती देहरादून।

१. यह मूल पत्र का श्रंश श्रथवा उस का श्रमियाय है। यह पत्र हमें नहीं मिल सका। इस का उल्लेख पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ४२७ पर हैं।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवन चिरत पृष्ठ ६२४ पर उद्धृत ।

३. मंगलदान चारण के पुत्र मुंशी समर्थदान रामगढ़ सीकर (जयपुर राज्य) के समीप, नेठ्या प्रामके रहने वाले थे। उन्हें ही, पूर्ण संख्या १४७, १५०, १५१, १५२, १५८ ग्रीर १६२ के पत्र लिखे गए प्रतीत

४. १८ एप्रिल १८७६।

180

[8,8]

[देहरादून, सन १८७९

पत्र (११८)

988]

Sir.

Dehra Dun 24th April 1879.

l am very glad to receive your letter of 20th instant by this day's post.

You were quite right in remitting the value of ved Bhashya Bhoomika to pandit Sunder Lall at Allahabad who can supply you as many more copies as you will want. I have also received the price of the books you had taken from Delhi.—

I have great pleasure to hear of your intention for opening a Sanskrit School, but before you take this most advantageous work in hand, I should be informed as to what arrangement you have made about the standard of various sciences to be studied at the School, have you got all the necessary books ready yet, I think not! I mean to say that before you go into the work, you should have all the books printed first of all. The "koran" in Nagri is entirely ready but has not been printed yet.

The Astadhyaee has not met the sufficient number of subscribers yet; the 4 adhya[ya]s of this are just ready but the work is going on quite well though not (a) copy (has) passed in the press up to date.

The great dishonesty and misconduct on the part of Babu Harish Chandra Chintamani has been the cause of delay in getting the Ved Bhashya out of the press in the proper time. Now the man has been turned out and another man has been appointed in his stead and it is hoped that he will carry out the work very satisfactorily.—

I intend setting up a press at Moradabad under the auspices of Munshi Indra Mani for which purpose a subscription to the amount of Rs. 5,000/- is necessary to be raised by shares of 100/- each. Of this sum Rs. 2,500/- has already been raised. I hope it will be a great help to the work should you be inclined to take as many shares as you can. In that

१. वैशाख शुक्क ३ बृहस्पतिवार सं० १६३६ । मूल पत्र दानापुर श्रार्यसमाज में सुरिच्ति है ।

२. बाबू माधीलाल, दानापुर को लिखा गया।

case you should apply to Lallah Ram Saran Das of Meerut who is authorized to receive money when the time comes.

Yours truly Sd. Daya Nand Saraswati

[द्यानन्द सरस्वती]

[भाषानुवाद]

देहरादून २४ एप्रिल, १८७९

महाशय!

श्राज की डाक में श्राप का २० तारीख का पत्र प्राप्त करके मुक्ते बड़ा हर्ष हुश्रा। वेदभाष्यभूमिका का मूल्य प्रयाग में पिएडत सुन्दरलाल को भेजने में श्राप ने सब ठीक किया। वे श्राप को जितनी प्रतियां श्राप श्रीर चाहें, भेज सकेंगे। जो पुस्तकें श्राप ने दिल्ली से ली थीं, मुक्तें भी उनका मूल्य मिल गया है।

आप के संस्कृत पाठशाला खोलने का विचार सुन कर मुक्ते बहुत हर्ष है। पर इस से पूर्व कि आप इस सर्वोपयोगी काम को हाथ में लें, मुक्ते सूचना दें कि पाठशाला में पढ़ाये जाने वाले भिन्न २ शाखों के प्रमाण प्रन्थों के संवन्ध में आप ने क्या क्रम रखा है? क्या अभी आप के पास सब आवश्यक प्रन्थ तय्यार हैं। मेरा विचार है, नहीं। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि काम को आरम्भ करने से पूर्व आप को सब से पहले सब प्रन्थ छपवा लेने चाहियें। "कुरान" नागरी में पूरा तय्यार हैं परन्तु अभी तक छापा नहीं गया।

अष्टाध्यायी के अभी तक पर्याप्त संख्या में प्राहक नहीं हुए हैं। इस के ४ अध्याय अभी तय्यार हुए हैं। काम सर्वथा भले प्रकार चल रहा है, यद्यपि कोई कापी आज तक यन्त्रालय में से नहीं निकली।

बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिए की बड़ी कुटिलता और बुरे आचार के कारण वेदभाष्य के प्रेस में से उचित समय पर निकलवाने में देर हो गई है। अब वह बाहर निकाल दिया गया है और उसके स्थान में अन्य पुरुष नियुक्त हुआ है और यह आशा की जाती है कि वह कार्य्य को सन्तोष-जनक रीति से करेगा।

मुन्शी इन्द्रमिण की अध्यत्तता में मुरादाबाद में मेरा एक यन्त्रालय खोलने का विचार है। एतद्र्थ ५,०००) क० का चन्दा करना आवश्यक है जो १००) क० के प्रति भाग द्वारा होगा । इतने

१. वैशाख शुक्क ३, बृहस्पतिवार, सं० १६३६ । यु॰ मी० ।

२. इस इस्तिलिखित कुरान के म्रान्तिम पृष्ठ पर यह लेख है—"सं० १६३५ कार्तिक गु० ६ गिवासरे कुरागाख्योऽयं ग्रन्थः संपूर्णः। इन्द्रप्रस्थनगरे+॥+॥+॥" इस पर जिल्द संख्या ११६ है, पृष्ठ मंख्या ७२५ सिपारे ३० मं० ७, स्रत ११४। श्री महाशय मामराज जी ने इस प्रन्थ को २१-२-३३ को देखकर इन, पंक्तियों की प्रतिलिपि की थी। यु० मी०।

१४२

में से २,५००) ६० पहले एकत्र हो चुका है। मैं आशा करता हूं कि इस से हमारे काम में बड़ी सहायता होगी, यदि आप की अभिकिच अधिक से अधिक माग, जितने आप ले सकते हैं, लेने की हो तब आप को ला० रामशरणदास मेरठ वालों को लिखना होगा। उन्हें समय आने पर धन लेने का अधिकार है।

त्रापका शुभचिन्तक [दयानन्द सरस्वती]

सिहारनपुर, सन् १८७९

[8]

पत्र (११९)

[१६५]

Saharanpur N. W. P. May 2nd 1879.

I hereby authorize Henry S. Olcott, to caste my vote upon all questions relating to the Theosophical Society which may be brought before the General Council for action in my absence; and, generally, to use my authority as Supreme Chief of the Eastern and Western Theosophists of the Arya Samaj according to the general views which I have personally expressed to him.

(द्यानन्द सरस्वती)

[भाषानुवाद]

सहारनपुर, पश्चिमोत्तर प्रदेश

मैं इस लेख द्वारा हैनरी ऐस आल्काट को थिसोसोफिकल सोसायटी सम्बन्धी सब प्रश्नों पर जो मेरी अनुपिश्वित में साधारण सभा के सम्मुख कार्यार्थ लाये जायें, अपनी ओर से सम्मित देने का अधिकार देता हूं और वे उन सामान्य विचारानुसार जो मैंने इन्हें स्वयं जताए हैं, आर्य-समाज के पूर्वीय और पश्चिमीय थियोसोफिस्टों के प्रधानाध्यन्न के रूप में साधारणतया मेरा अधिकार वर्त्त सकते हैं।

[दयानन्द सरस्वती]

१. वैशाख शुक्ल ११, शुक्रवार, सं० १६३६ । यु० मी० ।

२. जब यह पत्र लिखा गया था तब कर्नल और मैडम श्री स्वामी जी के साथ सहारनपुर में ही थे। इस पत्र की प्रतिकृति थियोसोफिस्ट जुलाई १८८२ के परिशिष्ट में छपी है। उसके नीचे एक नोट है कि म॰ मूलजी ठाकुरशी ने कहा है कि उन्होंने स्वामी जी को इस पत्र का अनुवाद सुनाया था। तब उन के सम्मुख ही स्वामी ने अपने इस्ताज्ञर कर दिये थे॥

१४३

मेरठ, सं० १९३६]

पत्र (१२१)

[2]

पत्रांश (१२०)

[१६६]

हम डेरादृन से चल कर सहारनपुर आए और वहां पर अलकाट साहव और ब्लेवेस्तकी लेडी वा मूलिज ठाकरसी से जो कि अमरीका से आए हैं, समागम हुआ। दो दिन वहां ठहर कर हम मेरठ आ गये हैं। यहां पर [पांच छः] ५, ६ दिन ठहरेंगे। पश्चात् साहब सुम्बई को आवेंगे और हम कुछ दिन यहां ही वास करेंगे परन्तु आज कल कुछ अवकाश नहीं है। साहब कि और हमारी सम्मित मिल गई है। किसी प्रकार का मेद नहीं है और जो कुछ हरिश्चन्द्र ने उन के चित्त में शङ्का डाली थी, वह सब निवृत्त हो गई है। साहब अत्यन्त शुद्ध अन्तः करण सज्जन पुरुष हैं। इन में किसी प्रकार का छल छिद्र नहीं है। परन्तु हरिश्चन्द्र ने ऐसा कपट किया कि जिस को हम कथन नहीं कर सकते हैं। परन्तु अब होश्यार रहना चाहिये।।

वैशाख सु ० १४ सं० १९३६।

द्यानन्द सरस्वती

[90]3

पत्रांश (१२१)

[9,60]

कल अल्काट साहब और ब्लेबेस्तकी लेडी समाज में गये थे और आज उक्त साहब सदर मेरठ में उपदेश करेंगे और कल परसों यहाँ से मुम्बई जाने वाले हैं। उक्त साहबों की अपनी समाज से कोई बात विरुद्ध नहीं है अर्थात् अनुकूल आचरण स्वभाव है। क्योंकि चार पाँच दिन से जो हम उन के साथ बात करते हैं तो बिलकुल ये लोग अद्ध अन्तः करण प्रतीत होते हैं और थियोसोफिकल सोसायटी में जो हमारा नाम लिखा गया है यदि तुम उस पत्र को भेज देते तो हम साहब को दिखला देते। परन्तु जुवानी जो साहब से कहा गया तो उन्हों ने उत्तर दिया कि हमारी थियोसोफीकल सोसायटी का अभी तक यह प्रयोजन था कि संब मतों के लोग इस में दाखल हों और अपनी र सम्मित देवें। अब आर्यसमाज के नियमों को समम्म कर जिस प्रकार आपकी आज्ञा होगी, उसी प्रकार किया जावेगा। आगे ऐसा न होगा और जो आर्यसमाज के नियमों को पसन्द नहीं करता है, वह थियोसोफिकल सोसायटी में नहीं रहेगा। इस वृत्तान्त को जब मूलजिमाई आवेंगे तब तुम को सममा देंगे।।

५ मई ७९५

द्यानन्द सरस्वती

मेरठ

१. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ८३६, ८३७ पर उद्धृत । यह पत्र सम्भवतः सुं॰ समर्थदान प्रवन्धकर्त्ता वेदभाष्य मुम्बई को मेरठ से लिखा गया है ।

२. ५ मई सोमवार १८७६ । अगली पूर्ण संख्या १६७ का पत्र मी ५ मई का है । स्वामी जी महाराज वै॰ शु॰ १२ (३ मई) को मेरठ पहुँचे ये । पूर्ण संख्या १६६, १६७, १६८ के पत्रों को मिला कर पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह पत्र वै॰ शु॰ १२ (३ मई) को ही लिखा गया होगा । शु॰ मी॰ ।

३. पं॰ लेखरामकृत जीवन चरित पृ॰ ८३७ पर उद्धृत । यह पत्र भी मु॰ समर्थदान के नाम हो सकता है। ४. मूलजिमाई मुम्बईवासी थे। वे भी सहारनपुर श्राए थे। ५. वै॰ शु॰ १४ सं॰ १६३६।

[3,4]

पत्र (१२२)

[386]

बाबू माधोप्रसादादि आनन्दित रही !

वृत्तांत यह है कि सब सज्जनों के प्रति एक आनन्द का समाचार प्रकट किया जाता है वोह यह है कि एस० एच० अलकाट साहब तथा एच० पी० ब्लेवेस्तकी लेडी जिन की पत्री पहिले अमेरिका से अपने समाजों में आई थी उन से हमारा पहिली मई सन् हाल को सहारनपुर में समागम होने से माल्म हुआ कि जैसी उनकी पत्रियों से बुद्धि प्रकट होती थी उनके मिलने से अधिक योग्यता और सज्जनता प्रकट हुई। उनके साथ दो दिन सहारनपुर में समागम रहा और समाज के सब पुरुषों ने यथावत् सत्कार किया। उनका उपदेश सुनने से लोगों के चित्त बड़े प्रसन्न हुए । पश्चात् वे हमारे साथ मेरठ को आये। वहाँ पर भी सब समाज के लोगों ने सुन्दर रीति से सत्कार किया श्रीर उपदेश का ऐसा सुन्दर चरचा रहा कि जिससे सब को श्रानन्द हुआ श्रीर उपदेश में सब श्रमीर वा उमराव तथा श्रहतकार और श्रंप्रेज लोग भी पाँच दिन तक बराबर श्राते रहे श्रौर जिस किसी ने मतमतांतर में कुछ शङ्का की उनका यथार्थता से उत्तर मिलता रहा। अर्थात् अमरीकन साहिबों ने सब लोगों के चित्त पर यह निश्चय करा दिया कि जितनी भलाई और विद्या है वे सब वेद से निकली और जितने वेद विरुद्ध मत हैं वे सब पाखरड़ रूप हैं पश्चात् उक्त साहिब तो ७ मई को वस्बई चले गये और हम कुछ दिन यहाँ पर ठहरेंगे। यह जो उन साहिबों से हमारा समागम है यह इन आर्थावर्तादि देशों के मनुष्यों की उन्नति का कारण है। जैसे एक परम श्रीषध के साथ किसी सुपध्य का मेल होने से शीघ ही रोग नाश हो जाता है इसी प्रकार इस समागम से आर्यावर्तीद देश [में] वेदों का प्रकाश और श्रसत्यरूपी रोग का विनाश शीव्र हो जावेगा श्रीर उक्त साहिबों का श्राचरण तथा स्वभाव हम को अत्यन्त शुद्ध प्रतीत होता है, क्यों कि वे लोग तन मन धन से सब प्रकार वेद मत की स्थापना करने में उचत हैं। जो बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने उक्त साहिबों के विषय में यह बात उड़ाई थी कि ये लोग जादू जानते हैं श्रीर जासुसों की तरह छल कपटी बातें करते हैं उस की यह बात सब मिध्या है। क्योंकि जिस को जादू कहते हैं वोह यथार्थ में पदार्थ विद्या है उस विद्या को उन्होंने मूर्खों के भ्रम दूर करने और सत्य मार्ग में चलाने के लिए धारण किया है सो कुछ दोष नहीं है परन्तु हरिश्चन्द्र जैसे मुर्खों को भूषण भी दूषण ही दीख पड़ता है। इस हरिश्चन्द्र ने इन साहिबों के चित्त में ऐसा भ्रम किया कि जिस का हम वर्णन नहीं कर सकते परन्तु वे सब भ्रम हमारे मिलने से दूर हो गये । देखो इस हरिश्चन्द्र की बेइमानी कि बहुत सा विन्न वेदभाष्य के काम में कर चुका है और अब तक भी करता जाता है, इस लिए सब आर्थ्य भाइयों को उचित है कि इस को अपने आर्थ्यसमाजों से बहिष्कृत समभें श्रीर इस का किसी प्रकार का विश्वास न करें। देखो पूर्व काल में हमारे ऋषि मुनियों को कैसी पदार्थ विद्या आती थी कि जिस से आत्मा के बल से सब के अन्तः करण के भेद को शीव ही जान लिया करते थे। जैसे बाहर की पदार्थ विद्या से सिद्ध किये हुए रेल तारादि विद्या को मूर्ख लोग जादू समक्तने हैं वैसे ही भीतर के पदार्थों के योग से योगी लोग अनेक अद्भुत कर्म कर सकते हैं इस में कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि मनुष्य लोग जितनी विद्या बाहर के पदार्थों से सिद्ध करते हैं उस से कई गुणी श्रधिक

१. मूल पत्र आर्थसमाज दानापुर में सुरिच्त है।

मेरठ, सं० १९३६]

पत्र (१२४)

284

भीतर के पदार्थों से सिद्ध कर सकते हैं। जैसे वाहर के पदार्थों का उपयोग वाहर से होता है वैसे ही भीतर के पदार्थों का उपयोग भीतर से होता है। जैसे स्थूल पदार्थों की क्रिया आँखों से देख पड़ती है वैसे सूक्ष्म पदार्थों की किया आंखों से नहीं देख पड़ती, इसी कारण लोग आश्चर्य मानते हैं। हां, यह कह सकते हैं कि बहुत से धूर्त लोग उस विद्या को तो जानते नहीं, भूठे जाल रच कर सत्य विद्या को बदनाम करते हैं, इस प्रकार भूठों का तिरस्कार श्रीर सचीं का सत्कार सर्वथा करना चाहिये, परन्तु जिस समय किसी का श्रसत्य प्रकट हो जावे, उसी समय उस का परित्याग करना चाहिये, जैसे बहुत दिनों के पश्चात् हरिश्चन्द्र का कपट प्रकट होने से अपने आर्य्यसमाजों से बाहर किया गया। इस प्रकार जिस किसी पुरुष का प्रकट हो जावे उसको तत्काल ही अपने समाजों से अलग करदो चाहे कोई क्यों न हो। असत्यवादी की सर्वदा परीचा करते रहो। इसी का नाम सुधार है क्योंकि बुद्धेः फलमनाप्रहः। जब यही सत्पुरुष का लच्चण है, तब उसको सचा ज्ञान हुआ जानो जब अपने निश्चय किये हुये में भी, जितना श्रसत्य जाने उस को उसी समय त्याग दे। तो उस को दूसरे का श्रसत्य छोड़ने में क्या श्राश्चर्य है। ऐसे काम के विना न आप सुधर सकता है और न दूसरे को सुधार सकता है। अब इस पत्र को इस वृत्तांत पर पूर्ण करता हूँ कि इन साहिबों के पूर्व पत्रों श्रीर सात दिन बात चीत करने से निश्चय किया है कि इन का तन धन सत्य के प्रकाश श्रीर श्रसत्य के विनाश श्रीर सब मनुष्यों के हित करने में है। जैसा कि आप लोगों का निश्चय खद्योग है। वेदमाध्य अब शीघ्र आने वाला है कुछ चिन्ता मत करना ॥

जापाश्यज्व मेरठ।

(दयानन्द सरस्वती)

[१] पत्र (१२३) . [१६९] मन्त्री आर्यसमाज शाहजहाँपुर<sup>3</sup> दाप्र १९८९ मेरठ

पत्र (१२४)

[१] मन्त्री आर्थसमाज श्रमृतसर

११।५।१८७५ मेरठ

[200]

१. ज्येष्ठ कृष्णा १ बुधवार, सं० १६३६।

२. लग भग पूर्ण सं० १७ वाला ही पत्र मन्त्री द्रायंसमाज शाहजहांपुर को लिखा गया था। देखों पं० लेखरामकृत दयानन्द चरित पृ० ८३५, ८३६ । शाहजहांपुर से प्रकाशित होने वाले द्रायंदर्पण ( उर्दू ) जून १८७६ के द्रान्तिम पृष्ठ पर इस पत्र का कुछ द्रांश छुपा है। वह ८ मई [ज्येष्ठ कृष्ण २ बृहस्पतिवार सं० १६३६] मेरठ का है।

३. पूर्ण सं० १५७ वाला पत्र मन्त्री आर्यसमाज अमृतसर को ११ मई १८७६ जियेष्ठ कृष्ण ६ रविवार सं० १६३६] को लिखा गया था। देखो, उर्दू मासिक पत्र विद्याप्रकाशक आगस्त १८७६।

१४६

[8 8],

पत्रांश (१२५)

[202]

त्रालीगढ़, सन् १८७९

पाताल देशस्थों का पत्र तुम्हारे द्वारा वाला अब तक नहीं पहुँचा है। उन को हमारा नमस्ते कह के कुशल पूछना और अब वह क्या काम करते हैं सो लिखते रहना। जिन बाबू छेदीलाल वा शिवनारायण गुमास्ता कमसरेट मेरठ की कोठी पर वे उतरे थे, उन से लैकचर छपवा कर भेजने को कह गये थे, सो अब तक नहीं भेजा, कदाचित् भूल गया, याद दिला देना। हम यहां से परसों अलीगढ़ जावेंगे।

ज्येष्ठ वदी १४ मंगलवार २० मई ७९ मेरठ

द्यानन्द् सरस्वती

[92]

पत्रांश (१२६)

1902

[मुंशी समर्थदान]

. .....हमें हरिश्चन्द्र ने एक बार लिखा था अमेरिका वाले कुछ धन भेजना चाहते हैं। उस के पश्चात् जब वह हमसे मिला तो हमने उससे कह दिया कि इस बात को सर्वसाधारण में और विशेषतः आर्यसमाजियों में प्रचरित कर दो कि अमेरिका वाले आर्यसमाज की सहायता के लिये धन भेजना चाहते हैं और जो धन आवे उसे दाताओं के नाम सिहत पत्रों में मुद्रित करा दो। उसने यह उत्तर दिया कि मैं अमेरिका वालों की इच्छा के अनुसार कार्य करूंगा। हमने उस से कह दिया कि जो धन प्राप्त हो उसे तीन कार्यों में ज्यय करना।

(१) वेदों के सम्बन्ध में ज्ञान और पुस्तक प्रचार में, (२) सदाचार की शिचा देने वाली सभाओं की सहायता में और (३) दीन दिर्द्रों की सहायता में। परन्तु अब ज्ञात होता है कि उसने इन कार्यों में से एक भी नहीं किया।

[२५ मई १८७९ ऋलीगढ़]

[8]

## [मुख्तियार नामाँ]

[१७३]

मैं कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज शिष्य स्वामी डगडी प्रज्ञाचज्जु जी महाराज मथुरावासी मुकीम हाल कोलक्ष का हूँ। जो कि तरजुमा वेदभाष्य व दीगर पुस्तकों का किया है उनके खरीदारान हर जिला व शहर व कसवा व मौजा मुमालिक मगरबी व शुमाली व मुल्क श्रवध व

२. देखो पं॰ देवेन्द्रनाथ जी सङ्कः जी॰ च॰ पृष्ठ ७६७ पर उद्धृत।

इ. जेष्ठ शु० ४ रविवार, सं० १९३६ । उपर्युक्त तारीख उक्त जीवनचरित्र में दी है ।

४. इस मुखल्यारनामे की प्रतिलिपि श्री महाशय मामराज जी ने श्री वा । पीतमलाल जी बी । ए॰

१. पं े लेखरामकृत जीवनचरित पृ े ८३७ पर उद्धृत । सम्भवतः मु े समर्थदान के नाम मुम्बई को यह पत्र मेजा गया है । [\* कोल = कोयल (ग्रालीगढ़) ।]

पञ्जाब व बम्बई व मद्रास व कलकत्ता व ..... व बंगाला व इक्कलैएड व योरप में मौजूद हैं श्रीर जरे कीमत व जुम्मे खरीदारान वाजिबुल अदा है और आयन्दा भी कीमत व जुम्मे खरीदारान के वाजिबुलअदा होगी इस वास्ते जानिब अपने से ठाकुर मुकन्दसिंह व मुझासिंह खलफ ठाकुर नरायन सिंह साकिन व रईस छलेसर व ठाकुर भूपालसिंह खनफ ठाकुर कब्बनसिंह साकिन व रईस मौजा श्रहक तहसील कोल को मुखत्यार श्राम मुक्तरिर करके ये इक्तरार है के मुखत्यार श्रान मौसूफ मुत्फर्दन खुत्रा मुस्तरकन जरे कीमत वेदभाष्य व दीगर पुस्तकान जो श्रव तक बाकी हमारी है या श्रायन्दा व जुम्मे खरीदारान वेदभाष्य वर्रोरा भी वसून करें श्रोर रसीद लिखदें ख़ुश्रा व जरिये नालिश अदालत दीवानी के रुपया वसूल करें या नालिश अदालत दीवानी या कलक्टरी में दायर करें और इबारत तस्दीक हमारी जानिब से श्ररजी दावा या ब्यान तहरीरी पर लिखें या मुख्तयार खास या वकील या कारिन्दा मकररर करें और नालिश बनाम कारिन्दा या मुख्तियार या वकील बाबत खयानत जारे कीमत वेदभाष्य वरौरा या खरीदारान पर दायर करें श्रौर निस्वत कारिन्दा मुकररर किये हुये हमारे मातहत मुखत्यारान मज्जकूर के होंगे या किसी श्रमर में जवाब देही करें या किसी नालिश में बाज-दावा या तसफिया नामा या दस्तवरदारी गुजराने या महक्षमा सवरिजस्टरार खुत्रा रिजस्टरार में हाजिर होकर दस्तावेज नविस्ता हमारी पर बाबत वेदभाष्य या दीगरं पुस्तकान की रजिस्ट्री करावें खुत्रा खजाना कलक्टरी से रुपया हायत्रदा बजरिये वाडचर त्रादालत मुन्सफी या जज मातहत या जनाव जज बहादुर वसूल करके रसीद लिखदें या अदालत से रूपया वसूल करें इस जिले या दीगर इजला में कोई कार्रवाई किसी किस्म की मामलात अदालत में करें और बहुत सी जिल्दें अक्सर पुस्तकों की जो ममलूका हमारी हैं वह दीगर श्रसखास के पास श्रमानतन मौजूद हैं श्रीर श्रायन्दा भी होंगी हमको इसकदर फुर्सत नहीं है कि हम बजात खास पैरवी करें श्रीर जो कोई नीलाम या डिगरी हमारी खरीद करके रसीद जरे समन लिखदें वह सब साखता परदाखता मुखतारान कबूल व मंजूर है। लिहाजा यह मुखतार नामा आम लिख दिया है के सनद हो। तहरीर तारीख ४ जून सन् १८७९ मुकाम कोल तहरीर हुआ, बकलम शौपरशाद वल्द छीतर मल कायस्थ साकिन कोल। अलब्द स्वामी दयानन्दसरस्वती जी महाराज बखत हिन्दी,

गवाह—परिडत गोविन्दराम वल्द पं० नारायणदास ब्राह्मण साकिन अतरौली, वस्तत हिन्दी,

गवाह - हरप्रशाद वल्द दुर्गा परशाद कीम कायस्थ साकिन हाल अलीगढ़,

गवाह--पिडत भीमसैन वल्द नेकराम वरहमन साकिन मौजा लालपुर, जिला एटा मुलाजिम स्वामी जी महाराज बखत हिन्दी मुड़िया।

'[इबारत तस्दीक-

यह दस्तावेज दफ्तर सब रजिस्ट्रार मुकाम तहसील कोल जिला अलीगढ़ में बतारीख ४ जून

एल॰ एल॰ बी॰ वकील, प्रधान श्रा॰ स॰ श्रलीगढ़ तथा श्री बा॰ सुलतान सिंह जी वकील श्रलीगढ़ के विशेष प्रयत्न से ता॰ २६-१- ५३ को प्राप्त की। इस की प्रतिलिपि वर्तमान सब रिजस्ट्रार श्री मोहम्मद उमरखां श्रलीगढ़ के हस्ताज्ञर से युक्त ता॰ २६-२-५३ को प्राप्त हुई। यु॰ मी॰।

१. यह कोष्ठक वाला भाग उपर्युक्त मुखत्यार नामे से संबन्ध रखता है श्रीर श्री स्वामी जी की श्रात्यधिक

शारीरक ग्रस्त्रस्थता को प्रकट करता है, ग्रतः हम इसे यहां छाप रहे हैं। यु० मी०।

[छलेसर, सन् १९७९

सन् १८७९ रोज चहार शंबा माबैन ११ व १२ बजे दिन के पेश हुई वजरिये द्रख्वास्त कमीशन मुकन्दसिंह बकलमखुद। दस्तखत गुलाम हैदर खां साहब सबरजिस्ट्रार—

तकमील तहरीर दस्तावेज हाजा में मुसम्मी स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी महाराज शिष्य स्वामी द्या प्रज्ञाचल जी महाराज मथुरावासी मुक्कीम हाल कोल उम्र ५४ वर्ष पेशा परिडताई ने रोवरू मुबारिक श्रली मुहर्र दोयम जो हमारी तरफ से वास्ते तस्दीक व तहरीर इजहार मुसम्मी मजकूर के श्रहले कमीशन मुकर्र हुआ था इकबाल किया और मिकर निवासिन्दा दस्तावेज हाजा से—मुबारिक श्रली मुहर्र एडीशनल बजात खुद वाकिफ है। हम को इतमीनान है कि यह दस्तावेज व रजाय मुसम्मी मजकूर लिखी गई श्रीर मिकर मजकूर बवजह कसरत जारी दस्तों और पेचिस के असाछतन हाजरी से मुवाफ किया गया।

पू जून सन् १८०९ खलब्द मुबारिक खली मुहरर दोयम खहले कमीशन, द्रतखत मोहम्मद् गुलाम हैदर खां साहब सब रिजस्ट्रार, बतारीख ४ जून सन् १८७९ रोबक छहले कमीशन द्रतखत मिकर के माबैन ४ व प बजे रोज चहार शंबा सबत हुए, द्रतखत मोहम्मद् गुलाम हैदर खां साहब, सब रिजस्ट्रार-रिजस्ट्री नम्बर १५७ सफहा १८५ जिल्द २५ रिजस्टर नम्बर ४ में बतारीख प जून सन् १८७९ की गई द्रतखत मोहम्मद गुलाम हैदर खां साहब सब रिजस्ट्रार।

[२१] (विज्ञापन)

सब सज्जन लोगों को विदित हो कि ठिकाना जिले अलीगढ़ परगना मौरथल प्राम छलेश्वर ठाकुर मुकुन्दिसिंह ठाकुर मुम्नासिंह रईस तथा ठाकुर मुपालसिंह ऐख रईस को हमने वेद्साध्य और सत्यार्थप्रकाशादि पुस्तकों के मूल्य वसूल करने का अधिकार दिया है अर्थात् इनके नाम मुखित्यारनामा रिजस्टरी कराके दिया है। इनमें से ठाकुर मुम्नासिंह के नाम पूर्वोक्त ठिकाने वेद्साध्यादि पुस्तकों का मूल्य भेजें। वे प्राहकों के पास रसीद भेज देवेंगे। जो कोई पुस्तक लिया चाहे वह भी मुम्नासिंहजी के नाम पत्र भेजें वा इस विषय में जो कुछ लिखना आवश्यक हो सो भी लिखे और जो अङ्क ५ वें में पिछत उमरावसिंहजी के नाम से नोटिस दिया था सो अब नहीं रहा। अब मैं सब प्राहकों से प्रीतिपूर्वक सूचना करता हूं कि जैसी प्रीति से इस काम में पुस्तक लेके सहायक हुए हैं वैसे मूल्य भेजने में भी विजम्ब न करें। क्योंकि अब जो मुखतियार किये हैं वे जिस उपाय से मूल्य वसूल होगा वह २ उपाय करके शीघ वसूल करेंगे। और जो श्रंक ५ वें में नोटिस दिया था कि उधार वाले प्राहकों के पास ६ श्रंक नहीं भेजा जायगा सो भी नहीं रहा, क्योंकि जब तक प्राहक अपनी खुशी से बंघ न करावेगा तब तक बराबर पहुँचता रहेगा। जो प्राहक वर्ष की आदि में पहिले ही मूल्य भेज देगें उनसे प्रत्येक वेद का वार्षिक मूल्य ४) क० लिये जायेंगे और जो प्रथम न भेजेंगे उनसे एक २ वर्ष के ४॥) क० के

१. यह विज्ञापन ऋग्वेदभाष्य तथा यजुर्वेदभाष्य ग्रांक ६ (वैशाख १६३६) पर छवा है। यह ग्रांक देर से निकला था। इस में जिस मुख्तियार नामे का उल्लेख है वह ५ जून १८७६ (ग्राषाढ कृष्ण १ सं० १६३६) को रजिस्त्री कराया गया था। देखो पूर्ण संख्या १७३ का ग्रान्त । यु०मी०। २. यह पूर्ण संख्या १७३ पर छपा है।

३. यह पूर्ण संख्या १६१ पृष्ठ १३७-१३६ पर छपा है। यु॰ मी॰।

छलेसर, सं० १९३६]

पत्र (१२८)

188

हिसाब से लिये जायेंगे और जो प्राहक अपनी प्रसन्नता से नहीं भेजेगा उससे डाक महसूल भी लिया जायगा। और हमारे इस काम में कोई मनुष्य किसी प्रकार की बुराई की है वा करेगा, उसका भी प्रबंध पूर्वोक्त मुखतियार लोग यथोचित करेंगे। जैसा कि बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामिण ने बहुत से ६० पुस्तकों की बाबत आये वे हमारे पास न भेजे, न हिसाब ठीक २ दिया और सुना है कि विलायत को चले गये। जो नोटिस पहुंचने पर ६पये न भेज देंगे तो उन पर जब नालिश पड़ेगी।

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती

[१३]

पत्रांश (१२७)

[9.94]

हम वमुकाम छलेसर परगना थल जिला ऋलीगढ़ में क्याम पजीर हैं। जुलाब जो लिया था, उस से फ़ारिंग हो गये मगर कमजोरी किसी कदर है। बाद ७, ८ दिन के मुकाम मुरादाबाद को जायेंगे। मुशी इन्द्रमन भी यहां आये है।।

२३ जून १९७९

द्यानन्द सरस्वती छलेसर

चन्दा वेदभाष्य का मुन्नासिंह वसूल करेंगे।

[48]3

पत्रांश (१२८)

[१७६]

पाताल निवासियों के पत्र का मतलब यहां लिखना कठिन है, जब समर्भेगे, तब जवाब लिखा जावेगा।...

हमारा शरीर श्रव कुछ श्रच्छा होता श्राता है। श्रावाद सुदी ५ मंगलवार १९३६।

द्यानन्द सरस्वती इलेसर

१. पं॰ लेखराम कृत जीवनचरित पृष्ठ ७६ = पर उद्भृत [संभवतः यह पत्र मुं॰ समर्थदान को लिखा गया था]।

२. मिति त्राषाद सुदी ४ संवत् १६३६ सोमवार ।

३ पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ७६८ पर उद्घृत । [सम्भवतः यह पत्र संशी समर्थदान को लिखा गया था]।

४. २४ जून १८७६।

१५०

[बम्बई, सन् १८७९

[१६]

पत्र (१२९) ॥ श्रो३म् ॥

[500]

वेदभाष्य कार्यालय मारवाङी वाजार मुवाहे वीका चाली मुंबई ता० ३० जून सं० १८७५ ई०

पंडितवर श्यामजी कृष्णवम्मी त्राक्सफोर्ड

प्रियतम महाशय, नमस्ते !

निवेदन यह है कि पत्र आप के मास्तर प्राण्जीवनदास के पास आये। आपके आनन्द के समाचार सुन कर बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ। आप वरिस्टर की परीचा देने के लिये कालेज में भरती हुए सो बड़ी आनन्दकारक बात हुई। मैं यह पत्र स्वामी जी की आज्ञानुसार लिखता हूं। वाबू हरिश्चन्द्र, श्रमेरिका वालों श्रौर केशवलाल निर्भयराम का हाल श्राप को मास्तर का पत्री इस पत्र में मैं डालता हूँ उससे मालूम होगा। उक्त बाबू बहुत रूपये खा गया। इस लिये अमेरिकन के द्वारा उस पर नालिश करने का विचार है। आप तलाश करके लिखें कि बाबू किस शहर में और किस ठिकाने पर है इसकी ऋति आवश्यकता है। लंदन में है तो उसका एड्रेस भी लिख भेजें। मेरे नाम पर पत्र भेजना। मेरा ठिकाना छपे करा परचे में भेजता हूं सो विदित होगा। आप वहां के समाचार पत्रों में छपा के ऐसा प्रगट कर दें कि बाबू मुंबई के आर्यासमाज का प्रधान था सी बिलकुल समाज से निकाल दिया गया है और उस समाज के प्रधान रावबहादुर गोपालराव हिर देशमुख नियत हुए हैं स्वामी जी के नाम के पत्र त्यादि इंगलैएड से त्याते हैं वे श्रभी तक बाबू के नाम से त्याते हैं त्यव त्याप इतना काम कृपा करके करना कि वहां के नियूज पेपरों में नोटिस दे दें कि अब पीछे जिस किसी को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के पास पत्र वा समाचारपत्र भेजना हो सो स्वामी जीके एजेन्ट मुनशी समर्थदान के द्वारा भेजें और मेरा नाम और पता और मुम्बई सब यथार्थ छाप देना यह काम बड़ी आवश्यकता का है नोटिस आदि छपाने के बाबत कुछ दाम खर्च होंगे सो आप के लिखने से यहां धनजी को दे दिये जायेंगे। आज बुकपोस्ट के द्वारा वेदभाष्य का श्रंक ५।६ और पंचमहायज्ञविधि १ श्रौर पंचांग १ भेजता हूँ सो रसीद भेजना। अंक प्रोफेसर मोनियर विलियमस के हैं श्रौर पुस्तक श्रौर पंचांग आप के लिये भेजे हैं सो उक्त प्रोफेसर से लेना। आप ने लिखा कि प्रोफेसर के पास आंक नहीं पहुँचे सो आप के लिखने से विदित होगा कि कौनसे श्रंक नहीं पहुँचे तब मैं श्रंक भेज दूँगा । वेदभाष्य का मुल्य पः ६ में नोटिस में दिये हैं उनके अनुसार भेजवा देना। विलायत का महसून जो श्रंको पर लगता है उसका मूल्य भी भेजवाना प्रोफेसर मेक्समूछर और मोनियर विछियमस दोनों से मूल्य मेजवा देना और छिखना कि उन छोगों का स्वामी जी और वेदभाष्य के विषय में क्या कहना है। स्वामी जी उनके भाष्य का खण्डन करते हैं उसके बावत वे क्या कहते हैं। अमेरीका वालों के विषय में वे क्या कहते हैं सो भी लिखना। वहां संस्कृत का कालेज है उसमें कैसे पुस्तक पढ़ाये जाते हैं सो लिखना। श्रीर कोई भाष्य का प्राहक हो तो करना। वहां के लोगों से कहना कि तुम पढ़ नहीं

१. त्राषाद् शुक्ल ११ सोमवार, संवत् १६३६ । यु॰ मी॰

२. इसीलिए यह पत्र इस संग्रह में छापा गया है।

मुरादाबाद, सं० १९३६]

पत्र (१३०)

१५१

सकते तो पुस्तकालयों में रखने के लिये ही ऐसा पुस्तक मंगाना चाहिये। संस्कृत विद्या का वहां कैसा प्रचार है और आर्य समाजों के बाबत वे लोग क्या कहते हैं ? मैं जानता हूं कि आप का समय बहुमृल्य है, परन्तु क्या करें उधर का हाल सुनने को चित्त बहुत चाहता है। आप जैसे मद्रपुरुष हमको हाल नहीं लिखेंगे तो और कौन लिखेगा। स्वामी जी बहुत प्रसन्न हैं। आपके भाई धनजी बहुत प्रसन्न हैं। धनजी का पत्र इसमें भेजता हूं सो लेना। बाबू के रहने का पता तलाश करके शीघ्र लिखना और मेरे योग्य काम हो सो सदैव लिखा करें। हम विचारते हैं कि बाबू वहां आर्यसमाज और स्वामी जी के विरुद्ध कहता होगा सो आप लिखना। जो वह पेपर में कुछ बुराई छापें तो आप उसका उत्तर यथार्थ देना जिस बात की खबर आप को न हो सो लिखना हम बराबर भेजेंगे। बाबू आप से कुछ सहायता चाहे तो देने के योग्य नहीं है।

श्रापका ग्रुभचिन्तक समर्थदान प्रबन्धकर्त्ता वेदभाष्य कार्यालय मुम्बई

[4]

पत्र (१३०)

[906]

Moradabad,'
The 13th July 1879.

Dear Col. Olcott,

Your letters of 10th June and 5th July duly to hand. Also of Madam H. P. Blavatsky of probably 30th June in Hindi.

You have acted very wisely in negotiating with the Governor of Bombay; and that British Government has no more suspicions regarding your stay in India and your movements to different places on sacred duty of preaching the Vedic religion.

The Kunte brothers are fickle minded I knew. I am glad to hear,

you have begun reading "Nagari."

Your proposal for publishing a monthly journal is very sound, I only add a little to the name you have already proposed. My object is

१. कटघर मुहला, मुरादाबाद निवासी ठाकुर शंकरिष्ट उपनाम भूपजी श्री स्वामी जी के बड़े भक्त ये। श्री स्वामी जी के श्रानेक पत्रों का वे ही श्रंग्रेजी श्रानुवाद करते थे। यह पत्र भी उन्होंने ही श्रंग्रेजी में श्रानुदित करके दिया होगा। सौभाग्यवश श्रंग्रेजी प्रतिलिपि उनके घर मुरिच्चित रही। १३ नवम्बर सन् १६२६ तदनुसार कार्तिक शुक्ल ८, शनिवार संवत् १६८३ को श्री भूपजी के पुत्र ठाकुर चैतन्यदेवजी से ला॰ मामराज यह पत्र लाये थे।

२. श्रावण कृष्ण १ रविवार, सं० १६३६ ।

that the name will convey to the subscribers that joint exertions are made in the paper—this may perhaps cause a great influx of subscribers. Call the journal by name "The Theosophist or Aryaprakash."

The date of the foundation of Arya Samaj you can get from Bombay Samaj. The object of this Samaj is that all mankind.

(1) "give up bad ideas, deeds and habits."

- (2) and take hold of good ideas, deeds and habits." Guna (गुण) karma (कम्मे) and Svabhava (स्वभाव) through the ancient (Sanatana) (सनातन) (1) Veda Vidya. (2) God-creation (ईधर-कृतसृष्टि).
- (3) The question with regard to my life, I should say that at present, I am not quite prepared to undertake so long a business. I shall give you a brief account of me after sometime. I shall do this work my-self or have it done directly under my own eye. Certificate will follow.

Yours truly, (Sd.) ———

[भाषानुवाद]

मुरादाबाद १३ जुलाई १८७९

प्रिय कर्नल आल्काट

श्चापके दस जून श्चौर पाँच जुलाई के पत्र हस्तगत हुए श्चौर श्रीमती एच० पी० ब्लावट्स्की का भी सम्भवतः ३० जून का हिन्दी पत्र मिला। बम्बई के गवर्ननर के साथ बात चीत करके श्चापने बुद्धिमत्ता का काम किया है श्चौर श्रव श्चापके भारत में रहने तथा वैदिक धर्म के प्रचार के पवित्र कार्य के लिये विभिन्न स्थानों में भ्रमण के विषय में ब्रिटिश सरकार सशङ्क न होगी। मैं समक्ष गया कण्टे बन्धु चक्कलचित्त व्यक्ति हैं। यह सुन कर कि आपने नागरी पढ़नी आरम्भ कर दी है बहुत प्रसन्न हुआ।

एक मासिक पत्रिका के प्रकाशन के लिये आपका प्रस्ताव बहुत ठोस है। जो नाम आपने प्रस्तुत किये हैं उसमें कुछ थोड़ा और जोड़ना चाहता हूँ। मेरा उद्देश्य यह है कि नाम से प्राहक यह सममें कि पत्रिका चलाने में संयुक्त प्रयक्ष किया जा रहा है। इससे सम्भवतः प्राहकों की संख्या में बृद्धि हो।

पत्रिका का नाम ध्योसोफिस्ट अथवा "आर्यप्रकाश" रखें। आप आर्यसमाज स्थापना तिथि वस्बई आर्यसमाज से प्राप्त कर सकते हैं। इस समाज का उद्देश्य है कि सभी मनुष्य—

(१) बुरे कर्म और स्वभाव छोड़ दें।

१. श्रावण कृष्ण ६, रविवार, सं० १६३६।

मुरादाबाद, सं० १९३६]

पत्र (१३१)

१५३

(२) सनातन वेद विद्या और ईश्वर कृत सृष्टि से अच्छे प्रकार अच्छे गुण कर्म स्वभाव प्रहण करें जो किये जा सकते हैं।

जहां तक मेरे जीवन के विषय में प्रश्न है, मैं कहूँगा कि इस समय मैं इतने लम्बे कार्य को अपने हाथ में लेने के लिये सर्वथा तय्यार नहीं हूँ। कुछ समय पश्चात् मैं स्वयं अपना संचिप्त वृत्तांत दूँगा। या तो यह कार्य मैं अपने आंखों के सामने करवाऊंगा।

प्रमाण्पत्र बाद में भेजूंगा।

**आ**पका— (ह)—————

[8]

-

पत्र (१३१)

[9.99]

Dear M. Blavatsky,

(1) After death man's or any one's "Atma" lives in air "Vayu" according to the sins and virtues of the departed soul. God allows the transmigration or a new life. When there is small proportion of sins and numerous good deed, then the soul gets a body of highly educated man or "Deva" in proportion to good deeds, and after leaving the Vidvan body, ascends to Moksha or becomes free of sorrow and troubles. When Sins and virtues are equal, then soul gets a man's body. When Sins increase and virtues decrease the soul is sent to lower creation and vegetable world.

The "Jiva" or soul suffers for the increased quantity of sins in the bodies of lower animals or in form of trees plants, & c., and after a lapse of time when sins and virtues again kick the beam equally, then the soul again gets a human body.

In the same manner "Vidvan" after the enjoyment of blessings in Deva-life, becomes man again, when the Virtues and Sins are in equal proportion.

Sins and Virtues are of Various stages and degrees.

The inferior or superior body is given according to their proportion both in the brute creation and human being as well as of Deva.

The Mukta Jiva enjoys eternal happiness till Mahakalpa (36,000 times creation and destruction of the world) and comes into the human

१. यह पत्र मुरादाबाद से मुम्बई को भेजा गया। इस पत्र की प्राप्ति वैसे ही हुई है, जैसे इससे पूर्व पत्र की। पूर्ण संख्या १८० के ३१ जुलाई ७६ के पत्र में इस पत्रान्तर्गत वेदमाष्य के श्रंग्रेजी श्रनुवाद के विषय का उल्लेख है।

[मुरादाबाद, सन् १८७९

body again and transmigration goes on again, according to good and bad deeds.

(2) The first rishis were Aditya, Vayu, Agni, and Angira.

The Omnipresent (Sarva Vyapka), God inspired the sacred Vedas into their Atma. "Nothing like a Heavenly book coming from Heaven and sent by God thro' his Messenger." This is detailed at length in my Ved Bhashya from the very beginning (Vide Anka I, & c.,). You can have it read to you. All such things are discussed at length in my books both in Sanskrit and Bhasha, which see.

- (3) The Verbal prayer as well as practice is to teach others but for ones own good it should be done internally.
- (4) (a) In order to obtain the advantage of Diksha and yoga, company of the learned (Vidvano ka sang), (4) Atmaki-pavitrata, (purification of soul) and (5) "pratyakshadi pramana." (The essence and reality of the Universe) one is to practice.

The practitioners are allowed to embrace the deeds which are to help in the matter; the contrary to be rejected— (see Upasanaprakarna in Veda Bhumika 9 Anka).

(b) The soul in human body can perform wonders. By knowing the properties and formation of all the things in the universe (between God and Bhumi (earth)—a human being can acquire power of seeing, hearing, &c., far distant objects which generally is unable to attend to.

You can write articles on any subject; but first consult my books and write cautiously in their light. The contrary or the offspring of your own brain will have to be answered by you if criticized.

| Yours | ) <del></del> |  |
|-------|---------------|--|
| (Sd.) |               |  |

- P. S. I received the other day under cover of Col. Olcott's letter 9th July—letters from :—
  - (1) Peter Davidson Scotland (13th June 1879).

I shall send answer to Peter Davidson in English as you say- The others will be replied in Hindi.

In these matters I shall take steps according to your suggestions.

With regard to your enquiry of translating Veda-Bhashya into English and publish it into your journal, I am of opinion that:—

- (1) It is an uphill work to translate faithfully one language into another—and if at all possible the translator should be equally learned in both languages. My Bhasha version is not like common vernacular; word for word of Sanskrit is translated in Bhasha. A most competent man both in English and Sanskrit is required to translate my Veda-Bhashya—and that even not quite to the mark.
- (2) Unless I hear the gist of translation thus made in English—myself, I cannot be satisfied of its accuracy and I have not time enough to do this.

If you can manage to keep the translator with me, it is possible that at leisure moments he can read it over to me and have it rectified where necessary—and where he might be unable to understand, he can ask its explanation from me.

- (3) Supposing all these arrangements can be successfuly made—the greatest drawback then is that the Aryan (English student) community of India will, on the appearance of English translation of my Veda-Bhashya-give up the Sanskrit and Hindi studies which they are so vehemently pursuing now a days in order to enable themselves to read Veda-Bhashya, and which is the chief object of mine, so of course English translation will be greatly serviceable to European scholars only.
- (4) This will lead to the diminution of the number of subscriber's of Hindi Edition of Veda-Bhashya and cause a great deterioration in its publication. This will result very probably in the stoppage of the Hindi version altogether. The treasure whence you wish to take will exhaust. The final result will be the total destruction of both Hindi and [Sanskrit and] English will thus be a favourable issue? It is not my desire to prohibit you from translating, as without the English translation the European nation cannot catch the true light. But first consider the above points.

First of all the four Vedas should be expeditely translated. I have estimated that it will take 10 years for me at the present rate of translation of all the Vedas. It is most important to finish them.

Please answer all the points.

Your---

# [ भाषानुवाद ]

प्रिय श्रीमती ब्लैवट्स्की

१-मनुष्य या किसी की मृत्यु के पश्चात् आत्मा मृत व्यक्ति के पाप पुण्यों के अनुसार वायु में निवास करता है। ईश्वर पुनर्जन्म या नया जन्म देता है। जब पापों का अनुपात कम और शुभ कमें अधिक होते हैं तथा शुभ कमों के अनुपात से सुशिचित या देव का शरीर प्राप्त करता है और विद्वान का शरीर छोड़ कर मोच प्राप्त करता है। या दु:ख और विपत्तियों से मुक्त हो जाता है। जब पाप पुण्य बराबर होते हैं, तब मनुष्य का शरीर प्राप्त करता है। जब पाप अधिक और पुण्य कम होते हैं तो आत्मा निम्नयोनि या स्थावर योनियों में जाता है। पाप अधिक होने से जीव निम्नकोटि के प्राण्यों तथा बृच्चादिकाओं के शरीरों में कष्ट पाता है और कुछ समय बाद जब पाप और पुण्य वराबर हो जाते हैं तो आत्मा पुन: मनुष्य का शरीर पाता है।

इसी प्रकार 'देव जीवन' का आनन्द लेने के बाद पाप पुण्य के बरावर हो जाने पर विद्वान पुनः मनुष्य शरीर धारण करता है।

पाप और पुर्य के अनेक स्तर और श्रेणियाँ हैं। अमानुषी सृष्टि और मानुषी तथा दैवी सृष्टि में उनके अनुपात के अनुसार अच्छा या बुरा शरीर दिया जाता है।

मुक्त जीव महाकल्प तक (संसार की ३६ हजार बार सृष्टि और प्रलय होने तक के समय का) अनन्त सुख का भोग करता है और पुनः मनुष्य शरीर में आता है। और पुनः अच्छे बुरे कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म चल पड़ता है।

२—प्रथम ऋषि त्रादित्य वायु त्राग्नि त्रौर त्राङ्गरा थे।

सर्वव्यापक परमात्मा ने उनकी आत्मा में पिवत्र वेदों की प्रेरणा की। परमात्मा ने आपने पैगम्बर द्वारा स्वर्ग से ईश्वरीय पुस्तक जैसी कोई चीज नहीं मेजी। इस का मेरे वेद्भाष्य में आरम्भ से ही बड़े विस्तार से वर्णन है। (देखो अङ्क १, आदि) आप इसे अपने लिये पढ़वा सकती हैं। मेरी संस्कृत और भाषा की दोनों पुम्तकों में इस प्रकार की बातों पर विवेचन किया गया है। उसे देखिए!

३— उच्चारण सहित प्रार्थना तथा आवृत्ति दूसरों को शिच्चा देने के लिये है । किन्तु अपने हित के लिये मन में ही करनी चाहिये।

४—(क) दीचा श्रौर योग, विद्वानों का सङ्ग, श्रात्मा की पवित्रता श्रौर प्रत्यचादि प्रमाणों (जगत् की तत्त्व श्रौर वास्तविकता) का लाभ प्राप्त करने के लिये श्रभ्यास करना चाहिये।

श्रभ्यासी को इस विषय में सहायक कार्यों को करने की श्रनुमित है। श्रीर विपरीतों को छोड़ देना चाहिये (देखो खपासना प्रकरण ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)।

(ख) आत्मा मनुष्य शरीर में श्रद्भुत कार्य कर सकती है। संसार में (ईश्वर से लेकर पृथिवी पर्यन्त) सभी पदार्थों के स्वरूप और गुणों को जानकर मनुष्य अत्यन्त दूर के पदार्थों के दर्शन अवण आदि की शक्ति प्राप्त कर सकता है। जिसे प्राप्त करने में प्रायः असमर्थ रहता है।

श्राप किसी भी विषय पर लेख लिख सकती हैं। परन्तु पहले मेरे प्रन्थों का अवलोकन

मुरादावाद, सं० १९३६]

पत्र (१३१)

१५७

करलें और उनके प्रकाश में सावधानी से लिखें। विपरीत लेखों या आपकी अपने मस्तिष्क की उपज के लिये आलोचना होने पर आप ही उत्तरदायी होंगी।

श्रापका—

हः—

पुनश्च-

कल मुम्ते कर्नल आल्काट के ९ जुनाई के लिफाफे में पीटर डैविडसन स्काटलैयड (१३ जून १८७९) के पत्र मिले।

त्रापके कथनानुसार मैं पीटर डैविडसन को श्रंप्रेजी में पत्र लिख दूँगा । शेष का उत्तर हिन्दी में दिया जायगा।

इन मामलों में आपके सुमावों के अनुसार कार्य करूंगा। वेदभाष्य के अंग्रेज़ी में अनुवाद करने और आपकी पत्रिका में उसे प्रकाशित करने के आपके प्रश्न के विषय में मेरा मत है कि--

१-एक भाषा से दूसरी भाषा में ठीक २ अनुवाद करना अति कठिन कार्य है और यदि सम्भव भी हो तो अनुवादक को दोनों भाषाओं पर समान अधिकार होना चाहिये। मेरा भाषानुवाद साधारण भाषा सा नहीं है। संस्कृत के शब्दों का भाषा में शब्दशः अनुवाद किया जाता है। मेरे वेद भाष्य का अनुवाद करने के लिए अंग्रेजी और संस्कृत दोनों में निपुण व्यक्ति की आवश्यकता है, यद्यपि वह भी सर्वथा ठीक नहीं कर सकता।

२-इस प्रकार घ्रांग्रेज़ी में किये गये चानुवाद के सारांश को जब तक मैं स्वयं न सुन लं, तब तक मैं उसकी यथार्थता से सन्तुष्ट नहीं हो सकता चौर इस के लिये मेरे पास इतना समय नहीं है।

यदि आप अनुवादक को मेरे साथ रहने का प्रवन्ध कर सकें तो सम्भव है कि अवकाश के समय वह उसे मुक्ते पढ़ कर सुना दे और जहां अवश्यक हो शुद्ध कराले। और जहां वह समक न सके वहां मुक्त से अर्थ पृष्ठ सकता है।

३-कल्पना कीजिए कि यह सब प्रबन्ध सफलता पूर्वक कर भी दिये जायं, तो भी सब से बड़ी वाधा यह है कि भारत की आर्य जनता (अंग्रेजी के विद्यार्थी) मेरे वेदभाष्य के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित होने पर संस्कृत और हिन्दी का अध्ययन त्याग देगी। मेरे वेदभाष्य को समक्षने के लिये संस्कृत और हिन्दी का अध्ययन, जिस को वे कर रहे हैं, और जो मेरा मुख्य उद्देश्य है, नष्ट हो जायगा। अतः वस्तुतः अंग्रेजी अनुवाद प्रधानतथा केवल यूरोपियन विद्वानों के लिये ही लाभप्रद हो सकता है।

8-इस से वेदमाध्य के हिन्दी संस्करण के प्राहकों की संख्या में कमी हो जायगी और उस प्रकाशन में बड़ी हानि होगी और सम्भवतः इस का यह परिणाम हो कि हिन्दी अनुवाद सर्वथा बन्द हो जाय। वह निधि जहां से आप लेना चाहते हैं; समाप्त हो जायगी और अन्तिम परिणाम हिन्दी और संस्कृत दोनों संस्करणों का पूर्ण विनाश होगा और इक्कलिश संस्करण ही अभीष्ठ बन जायगा। मेरा विचार आप को अनुवाद करने से रोकने का नहीं है, क्योंकि बिना अंभेजी अनुवाद के यूरोपियन जातियां सत्य प्रकाश को नहीं पा सकतीं, किन्तु पहले उपयुक्त बातों पर ध्यान दीजिए।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञापन

[बदायूं, सन् १८७९

१५=

सबसे पहले चारों वेदों का शीघ्रता से अनुवाद हो जाना चाहिये। मेरा अनुमान है कि सारे वेदों का इसी वेग से भाष्य करने में मुक्ते १० वर्ष लगेंगे। उन्हें समाप्त कर लेना सबसे आवश्यक कार्य है। आपका

कृपया सभी बातों का उत्तर देवें

[१५]

पत्रांश (१३२)

[960]

श्रमरीका वालों से हमारा नमस्ते कह देना।

वेदभाष्य के श्रंत्रेजी करने के विषय में श्रमरीका वालों के पत्र का उत्तर हमने भेज दिया है। र इस का उत्तर श्रभी तक हमारे पास नहीं पहुंचा। उनके पास जाश्रो तो प्रसंग से कह देना कि श्रव तक हमारा शरीर श्रच्छा नहीं था। इस लिये विलायत की चिट्ठियों का उत्तर नहीं भेजा है। श्रव कुछ शरीर श्रच्छा है। श्रव भेजेंगे। वहां मुम्बई में इस समय हम नहीं जा सकते, किन्तु पटना से दानापुर को जावेंगे।

> ३१ जुलाई ७९° मुरादाबाद स्राज मुरादाबाद से बदांयूं जाते हैं।

[१६]

पत्र (१३३)

[5<5]

[मैनेजर प्रेस के नाम .....]

हम मुरादाबाद से चलकर बदायूं ठहरे हैं। यहां से भाद्रपद कृष्ण १२ गुरुवार १४ अगस्त ७९ को बरेली पहुंचेंगे। श्रब तक हमारा शरीर काम के योग्य ठ्वेक २ नहीं हुआ है।

दयानन्द सरस्वती

बदायं

[80]"

पत्रांश (१३४)

[962]

हमारा शरीर बहुत दिनों से बीमार है। श्रित दुर्बल हो गया है। सो तुम जा कर श्रमरीका वालों से कहना कि और कुछ न सममें। हमारा शरीर दो दिन से कुछ श्रच्छा है। जो ऐसा ही रहेगा

- १. पं० लेखरामकृत जीवनचरित प्० ८३७ पर उद्धृत [सम्भवतः मुंशी समर्थदान को लिखा गया]।
- २. देखो, इस से पहला श्रंग्रेजी पत्र।
- ३. श्रावण शुक्क १३ गुरुवार, सं० १६३६ । यु० मी०।
- ४. पं लेखरामकृत जीवनचरित पृ ४४० से उद्घृत । मैनेजर श्रर्थात् मुं समर्थदान ।
- पं० लेखरामकृत जीवनचरित प्० ८३७ पर उद्धृत [मुंशी समर्थदान को] ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

बरेली, सं० १९३६]

पत्र (१२२)

१५९

तो हम उन के पत्रों का उत्तर शीघ भेजेंगे। श्रीर अपने जन्म से लेकर दिनचर्या अभी कुछ संहोप से देवनागरी श्रीर श्रंधेजी में करवा कर हम उन के पास भेजदेंगे। श्रीर विलायत के पत्रों का उत्तर भी शीघ भेजेंगे। श्रमरीका वाले लोग समाचार पत्र छापेंगे, सो उनको भूमिका श्रादि से बातें सममा देना।

२१ अगस्त ७९

द्यानन्द सरस्वती बरेली

[96]

पत्र (१३५)

[१८३]

[मैनेजर वेदभाष्य के नाम]

करनैल साहब ने हमको लिखा था कि आप अपना जन्मचरित्र लिख दीजिये, प्रथम तो हमारा शरीर अच्छा नहीं रहा इस कारण से नहीं भेज सके। अब दो चार दिन से कुछ अच्छा है सो आज तुम्हारे इस पत्र के साथ कुछ थोड़ा सा जन्मचरित्र छिख कर भेजते हैं। सो तुम जिस समय पहुंचे उस समय उनके पास पहुंचाना। क्योंकि उनका समाचार में छापने का समय आ गया है। अलकाट साहब को यह बात भी हमारी श्रोर से सुना देना कि हमारा यह अभिप्राय नहीं कि इस समाचार का नाम केवल आर्यप्रकाश वा थ्योसोफिस्ट हो, किन्तु दोनों को मिला कर रक्खा जावे। और यह भी कह देना कि आपने जो चिट्ठी के साथ दो पत्र विलायत के भेजे सो पहुँच गये। हमारा शरीर दस्तों की बीमारी से बहुत दुर्बल हो गया था। अब आनन्द है।

२७ अगस्त सन् १८७९ व

द्यानन्द सरस्वती बरेली

[२0]

पत्र (१३६)

[286]

My Dear friend,

My friend M. Indermuni requires the address of M. Hurprasad,

१. भाद्रशुक्ल ४ बृहस्पतिवार, सं० १६३६ । यु॰ मी॰ ।

- २. पं ० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ४४१ से उद्धृत । मैनेजर श्रर्थात् प्रबन्धकर्ता मुंशी समर्थदान ।
- ३. भाद्र शुक्ल ११ बुधवार, सं० १६३६ । यु० मी०। ४. पं० रामाधार वाजपेयी को।

[बरेली, सन् १८७९

१६०

the copy-navis. I hope you will send it to him as soon as possible.

Yours ever

Swamee Diyanund Sarusswatti.

[भाषानुवाद]

मेरे प्रिय मित्र !

मेरे मित्र मुन्शी इन्द्रमिण, म० हरप्रसाद कापी-नवीस का पता चाहते हैं। मैं आशा करता हूं कि आप उन्हें यथासम्भव यह शीघ्र भेज देंगे।

त्राप का

स्वामी द्यानन्द सरस्वती

रामाधार वाजपेई जी आनन्दित रही !

मुंशी जी ने जो पत्र तुम्हारे पास भेजा उस का उत्तर क्यों नहीं दिया, जो २ पूछे वा मंगवावे उसी समय उत्तर भेज दिया करो। यहां व्याख्यान खूब हो रहे हैं। पादरी स्काट साहब से तीन दिन भर बहस हुई उनकी विरुद्ध बातें सब कट गईं सो जब छपेगा तब तुम्हारे पास भी भेजा जायगा। श्रीर यहां से चार पाँच दिन के पीछे शाहजहांपुर आकर वहां कुछ ठहर कर तुमको लिखेंगे। जैसा मकान हमारे रहने के लिये किया है, वैसा ही व्याख्यान के लिये भी एक मकान शहर में कर रक्खो, क्योंकि हमारा ठहरना अब थोड़ा २ ही होगा।

ता० २९ अगस्त।

द्यानन्द सरस्वती



### "सत्यासत्य विवेक

इस पुस्तक में सिवस्तर वृत्तान्त तीनों दिन के शास्त्रार्थ कि जो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी श्रौर पादरी टी॰ जी॰ स्काट साहब का राजकीय पुस्तकालय वरेली में, इस प्रकार की प्रथम दिन अनेक जन्म के विषय में, दूसरे दिन अवतार अर्थात् ईश्वर देह धारण कर सकता है इस विषय में और तीसरे दिन इस विषय में कि ईश्वर पाप चमा कर सकता है, हुआ था, बहुत उत्तम फारसी लिपी और उर्दू माधा में मुद्रित हुवा है। इस शास्त्रार्थ में प्रत्येक विषय पर उत्तम प्रकार से खरडन-मरडन हुआ है कि जिसके देखने से सत्यप्रेमी जनों को सत्य और असत्य प्रगट होता है। जो विद्यार्थी मिशन स्कूलों में पढ़ते हैं और बहुत करके गुमराह होते हैं, उनको यह पुस्तक गुमराही से बचाता है। डाक महसूल सहित।)॥ मूल्य मेज कर मंगवा लें?।

४. सन् १८७६ (भाद्र शुक्ल १३ शु॰ सं॰ १६३६) बरेली से लिखा गया । मूल पत्र आर्यसमाज लखनऊ के संग्रह में सुरिच्चत है।

१. ये दोनों लेख एक ही पत्र पर हैं।

<sup>्</sup>र. यह प्रसिद्ध शास्त्रार्थ २५, २६, २७ ग्रागस्त १८७६ (भाद्र शु० ८, १०, ११ सोम मंगल बुध सं० १६३६) को बरेली में हुग्रा।

३. यह पुस्तक प्रथम वार त्राश्विन सं० १९३६ में छुपा था। इस की सूचना ऋग्वेद तथा यजुर्वेद भाष्य के ११वें ब्रङ्क पर इस प्रकार दी थी—

शाहजहांपुर, सं० १९३६ ]

पत्र (१३७)

१६१

[2]

पत्र (१३७)

[१८५]

श्रोम् नमः सर्वशक्तिमते परमेश्वराय'

श्रीयुताङ्गदशास्त्र्यादिपिखतान् प्रतीदमाज्ञापनम् ।

क्या आप लोग मूर्तिपूजा आदि वेदिवरुद्ध काम करने से वेद विमुख होकर वेदप्रतिपादित एक अद्वितीय ईश्वरपूजा और सद्धर्मादि से उलटा चल और चला कर अपना मतलब (प्रयोजन) सिद्ध नहीं करते हैं।

और क्या मैं कोई धर्म अर्थ काम मोच सम्बन्धी कर्म वेद्विरुद्ध कभी करता और कराता हूं। जो आप को शास्त्रार्थ करने की सची इच्छा होती तो सभ्यता वा विनयपूर्वक शास्त्रार्थ करने

का निपेध मैंने कब किया था और खब भी नहीं करता।

परन्तु जो शास्त्रार्थ को आप की सची इच्छा होती तो जहां मैं ठहरा था उसी स्थान में आकर ठहरते।

अन्य स्थान में ठहरने से विदित होता है कि आप की इच्छा शास्त्राथ करने की नहीं है।

किन्तु कहने ही मात्र है और अब आगे जैसी होगी वैसी विदित भी हो जायगी।

हां जहां मूर्ख श्रीर श्रसभ्य पुरुषों का हल्ला गुल्ला होता है; वहां मैं खड़ा भी नहीं होता। तुम ने जो यह लिखा कि मैं जहां २ जाता हूँ वहां २ से तुम किनारा काट कर चले जाते हो, यह बात तुम्हारी श्रस्थन्त भूठ है।

तुम से मुक्त को किञ्चिन्मात्र भी भय न कभी हुआ था, न है और न होगा। क्योंकि आप

में ऐसे गुण ही नहीं हैं, जो भयपद हों।

बांसबरेली में भी तुम्हारी उलटी कारवाई अर्थात् दंगा बखेड़ा करने वाले मनुष्यों के संग लाने के कारण खजानची लक्ष्मीनारायण आदि ने अपने बंगला में तुमको आने से रोक दिया था। यह तुम को तुम्हारे ही कम्मों का फल है। सिवाय बरेली और शाहजहांपुर के मैंने कभी आप का आना सुना भी नहीं। अब आप और मैं दोनों शाहजहांपुर में हैं, जो इस समागम सेभागे सो सूठा। अब आप को जितना शाखार्थ करने का बल हो कर लीजिये। परन्तु विदित रखना चाहिये सब आपों की यही रीति है कि जो सर्वदा सत्य को जताना है और मूठ को हराना है। इस को मत मूलियेगा। मैं अपनी विद्या और बुद्धि के अनुसार निश्चित जानता हूं कि मैं और पुरुषों को जहां तक शाक्य है, वेदोक्त सनातन धर्म में चलता और चलाता हूं। इस में जो तुम को वेदिवरुद्धपने का अम हुआ, सो जो शाखार्थ होगा। तो तुम वेदिवरुद्ध चलते हो या मैं, निश्चय हो जायगा। हां मथुरा में श्री स्वामीजी के पास बहुत विद्यार्थी जाते थे, आप भी कभी गये होंगे, परन्तु जो आप स्वामी जी के

१: मासिकपत्र श्रायेदर्पण, शाहजहांपुर, सितम्बर १८७६, पू॰ १४-१६, २६१-६२ पर उद्घृत । पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पू॰ ४६६-७१ पर श्रायेदर्पण से ही उद्घृत किया गया है । परन्तु कई पाठ श्रशुद्ध हैं । हमारा पाठ श्रायेदर्पण के श्रनुकृल है।

२. पं ० लेखरामकृत जीवनचरित में यह पंक्ति लुप्त है।

शिष्य होते तो उन के उपदेश से विरुद्ध आचरण क्यों करते और ज्येष्ठ किन छ उत्तम गुण कर्म और नीच गुण कर्मों से ही होते हैं। इस शास्तार्थ में निम्नलिखित नियम उभयपत्त वालों को मानने होंगे।

१. इस शास्त्रार्थ में चारों वेद मध्यस्थ हैं श्रर्थात् वेदिवरुद्ध मूठा श्रीर वेदानुकूल सन्ना माना जायगा।

- २. इस शास्त्रार्थ में जो वेद के किसी मन्त्रपद के अर्थ करने में विप्रतिपत्ति हो तो जिस के अर्थ पर ब्रह्मा जी से ले कर जैमनि मुनि पर्यन्त उक्त सनातनं मान्य प्रन्थों का प्रमाण साची में मिलेंगे, उन का अर्थ सत्य माना जायगा, दूसरे का नहीं। और वेदानुकूलता श्रेष्ठ कर्मानुसार प्रत्यचादि प्रमाण, तच्च लिचत, आप्तानुचरण अविरुद्ध और अपने आत्मा की विद्या और पवित्रता इन पांच कसौदियों से परीचा में जो २ सच्चा वा मूठा ठहरेगा सो २ वैसा ही माना जायगा, अन्यथा नहीं।
- ३. एक एक की त्रोर से सभ्य धार्मिक विद्वान् चतुर पचास पचास पुरुष शास्त्रार्थ में सभासद होना चाहियें।
- ४. डमय पत्त के १०० मनुष्य को प्रथम से सभा में प्रवेश करने के लिये टिकट मिल जायेंगे। वे ही सभा में आ सकेंगे, अन्य नहीं।
- ५. जो जिस का पच होगा वही अपने सप्रमाण पच को लिखा कर सुना सममा या दृसरे से सुना कर समकाया करेगा।
- ६. डमय पत्त वालों को अपने अपने समय में एक एक अत्तर प्रश्न या उत्तर्क लिखवा कर आगे चलना होगा, अन्यथा नहीं।
- ७. इस शास्त्रार्थ में उभय पत्त वाले जो २ कहेंगे, उस २ को तीन लेखक लिखते जावेंगे। अपने २ पत्त के लेख लिखवा कर अंत में तीनों पर स्वहस्ताचर कराके एक प्रति मुफ को दूसरी आप को और तीसरी सरकार में रहेगी कि जिस से कभी कोई घटा बढ़ा न सके।
- द. अपने पत्र में जो आपने दस २ मिनट लिखे सो स्वीकार करता हूं, परन्तु उत्तर देने के लिये दस मिनट और प्रश्न करने के लिये दो मिनट होना योग्य है।
- ९. शास्त्रार्थ विषय में मुक्त और आप को ही बोलने लिखवाने सुनवाने का अधिकार होगा, अन्य को नहीं। अन्य सभासद तो ध्यान देकर सुनते रहेंगे।
- १०. जहां खजानची जी के बंगला में मैं ठहरा हूं, यह ही शास्त्रार्थ के लिये निश्चित रहना चाहिये। क्योंकि यह न मेरा स्थान है न स्त्राप का।
- ११. इस शास्त्रार्थ में वेद आदि सनातन शास्त्रों की रीति से पाषाणादि मूर्तिपृजा और पुराणादि पत्तों का खरडन विषय मेरा और आपका मरडन विषय रहेगा।
- १२. कुवचन, हठ, दुराम्रह, क्रोध, पत्तपात, भय. शङ्का, लज्जा खाद्रि को छोड़ कर सत्य का महण खोर असत्य का परित्याग उभयपत्त वालों को अवश्य होना चाहिये। क्योंकि खाप्तों का यह ही सिद्धान्त है।
- १३. जब तक किसी विषय का खएडन या मएडन पृरा [न] हो तब तक शास्त्रार्थ बन्द न होगा। किन्तु प्रतिदिन होता ही जायगा। क्योंकि ऋगरब्ध कम्मों को बीच में निष्फल न छोड़ कर

१. श्रार्यदर्पण्-विप्रतिकत । जीवनचरित-विप्रतिपन्न ।

शाहजहांपुर, सं० १९३६]

पत्र (१३८)

१६३

सिद्धान्त पर्यन्त पहुंचा देना विद्वानों का मुख्य सिद्धान्त है और इसी रीति से बहुत दिनों वा महीनों तक शास्त्रार्थ होने से आप के शास्त्रार्थ करने की उत्सुकता भी परिपूर्ण होगी, अन्यथा नहीं।

१४. उमयपत्त वालों को सरकार से पोलीस आदि का प्रवन्ध अवश्य करना होगा कि जिस से कोई असभ्य मनुष्य शास्त्रार्थ में विघ्न न कर सके।

१५. इस शास्त्रार्थं का समय जिस दिन से आरम्भ होगा उस दिन से सम्ध्या के ५ बजे से द. बजे तक प्रतिदिन होना चाहिये।

१६. एक दिन पहले मैं बोलूँगा, तो दूसरे दिन आप वोलेंगे और जो पहले बोलेगा वही उस दिन अन्त में भी बोलेगा। और सब सुनने वाले वा जब छप कर सब सज्जन लोग बाचेंगे तब अपनी २ विद्या और बुद्धि के अनुसार सच्चा वा भूठा को जान कर भूठ को छोड़ कर सत्य का प्रहण कर लेंगे। आप की चिट्टी कल दोपहर समय आई। इस से आज उत्तर लिखा गया। जो प्रातःकाल आती तो कल ही लिख दिया होता। आप के पत्र में संस्कृत और भाषा में अनेक प्रकार से बहुत अशुद्ध है। सो जब मिलोगे तब सममा दिया जायगा।

श्राधिन कृष्ण ११ शुक्रवार ' १९३६।

दयानन्द सरस्वती

[२]

पत्र (१३८)

[१८६]

श्रोम् नमः सर्वशक्तिमते जगदीश्वराय

श्रीयुताङ्गदशास्त्र्यादिपिखडतान्प्रतीद्मप्रख्यापनम् ।

संवत् १९३६ श्राधिन कृष्ण १२, शनिवार का लिखा तुम्हारा पत्र श्राधिन कृष्ण १३ रिववार को दिन के ११३ वजे मेरे पास पहुँचा। तत्रस्थ लेखाभिनाय सब प्रकट हुआ। मुक्त को श्रित निश्चय है कि तुम लोग शास्त्रों का विचार करना कराना तो तब जानोगे कि जब तुम्हारे अनेक जन्मों के पुण्य चित्त होंगे, परन्तु जो मैं तुम्हारे निश्चय किये स्थानों में बातचीत करने को आऊं तो तुमको हुल्ला गुल्ला करने को अवसर अच्छा मिल जावे। अब जो तुमको पूर्वोक्त ५० धार्मिक बुद्धिमान रईसों के साथ यहाँ आकर कुछ कहना सुनना हो तो मैं आने से रोकता नहीं। आगे तुम्हारी प्रसन्नता। दयानन्द सरस्वती

सं० १९३६ स्राधिन कृष्ण १३, रविवार।

श्रार्थदर्पण में शुम्वार छपा है। प्रतीत होता है कि उदू के लेखक ने शुक्र को शुम्वार लिखा है।
 जीवन चिरत में सोमवार छपा है। चाहिये वस्तुतः शुक्रवार।

२. १२ सितम्बर १८७६।

३. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ४७७ पर उद्घृत । यह पत्रव्यवहार शाहजहांपुर में हुआ । ग्रङ्गद शास्त्री के पत्र भी जीवन चरित में छुपे हैं । ग्रार्थदर्पंश पृ॰ २७२, २७३ सितम्बर १८७६ ।

४. १४ सितम्बर१८७६ ।

१६४

[22]

।। विज्ञापनपत्रमिद्म् ।।

[9.69]

सब को विदित हो कि ठाकुर मुकुन्द्सिंह भूपालसिंह और मुझासिंह जी के नामका ६ अक्क में विज्ञापन दिया गया था और मुझासिंह जी ने परोपकार बुद्धि से प्राहकों से उधार का रुपया लेने का काम स्वीकार किया था, परन्तु उक्त ठाकुर की किसी विशेष कार्य के होने से प्राहकों से रुपया जमा करने की फुरसत नहीं है। इसलिये सब स्थानों के प्राहकों से तकाजा करके रुपया लेने का अधिकार मुन्शी समर्थदान, प्रबन्धकर्ता "वेदमाष्ट्यकार्यालय" मुन्वई को दिया गया है। और इनके तकाजा करने पर भी प्राहक लोग रुपया देने में हीला हवाला करेंगे तो उनसे रुपया, समर्थदान के विदित करने से राजकीय नियमानुसार ठाकुर मुझासिंह ही लेंगे अब पीछे सब प्राहक मुन्वई में रुपया भेजा करें वहाँ से सब के पास बराबर रसीद पहुंचेगी। इम प्राहकों को सुगमता होने के लिये यह नियम भी लिखते हैं कि जिस २ स्थान के लोगों के नाम हम नीचे लिखते हैं उस २ स्थान के प्राहक उनके पास रुपया जमा करा देंगे तो वे लोग सबके नाम की पृथक २ रसीद मुन्वई से मंगवा दिया करेंगे॥

मुनशी इन्द्रमणीजी प्रधान श्राय्येसमाज मुरादाबाद ।
मुनशी बखतावरसिंह मन्त्री श्राय्येसमाज शाहजहांपुर ।
लाला रामशरणदास रईस उपप्रधान श्राय्येसमाज मेरठ ।
लाला सांईदास मन्त्री श्राय्येसमाज लाहौर ।
लाला बळ्ळभदास जी खजानची श्राय्येसमाज गुरदासपुर ।
चौधरी लक्ष्मणदास सभासद श्राय्येसमाज श्रमृतसर बाजार माई सेवा ।
बाबू रामाधार वाजपेई तार श्राफिस रेलवे लखनऊ ।
पं० सुन्दरलाल रामनारायण पोस्ट मास्टर जनरेल्स श्राफिस इलाहाबाद ।
बाबू माधोलाल मन्त्री श्राय्येसमाज दानापुर बंगाल ।

मुन्शी समर्थदान और मुन्शी इंद्रमणी जी के पास हमारे बनाए सब पुस्तक रहते हैं जिसको इच्छा हो मंगवा ले॥

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती

[93]

पत्रांश (१३९)

[966]

श्रमरीका वालों के पास हम एक पत्र भेजेंगे तो उस में सब बातें लिखेंगे । श्रावू में कोई

- १. यह विज्ञापन ऋग्वेद श्रीर यजुर्वेद भाष्य के नवम तथा दशम श्रंक पर छपा था। श्रावण का श्रद्ध देर से प्रकाशित हुन्ना था। विज्ञापन सम्भवत: प्रथम श्राश्विन १९३६ में लिखा गया होगा।
  - २. पं० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ८३७ पर उद्धृत [सम्भवतः मुन्शी समर्थदान को लिखा गया]।

शाहजहांपुर, लखनऊ, सं० १९३६]

पत्र (१४१)

१६५

विष खाता था, यह बात हमने सुनी हुई कही थी। ठीक नहीं समकते। इस लिये जन्मचरित्र में नहीं लिखी श्रीर एक साधु समुद्र पर चलता था, ऐसी श्रसंभव बातें मैं ने कदापि न लिखी होंगी।

१७ सितम्बर७९

द्यानन्द् सरस्वती शाहजहांपुर

[30]

पत्रांश (१४०)

[969]

[मैनेजर वेद्भाष्य के नाम]

कुंवर मुन्नासिंह छलेसर वाले का श्रव चंदा वसूल करने का कुछ भरोसा नहीं । इस लिये तुमको चाहिये कि यहां तक वने चंदा वसूल करो । श्राठ दिन पीछे लखनऊ जावेंगे । श्रव हमारा शरीर कुछ श्रन्छा है।

१७३ सितम्बर ७९

द्यानन्द सरस्वती शहाजहांपुर

[28]

(383)

[360]

हम १८ सितम्बर सन् [१८] अ९ को सायंकाल को शाहजहांपुर से लखनऊ आये और ता० २४ सितम्बर सन् [१८] अ९ वुधवार के दिन प्रातःकाल कानपुर को जायेंगे और वहां से उसी दिन फर्कखावाद को जावेंगे और वहां एक सप्ताह या दस दिन ठहर कर फिर कानपुर आवेंगे और फिर यहां दो चार दिन ठहर कर प्रयाग मिर्जापुर काशी होते हुए कार्तिक पूर्णमासी तक दानापुर पहुँचेंगें और अब हमारा शरीर पहले से अच्छा है।

२१ सितम्बर १८७९,

द्यानन्द सरस्वती लखनऊ

४. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ४८० से उद्धृत । यह पत्र दानापुर के बाबू माधोलाल को लिखा गया होगा । मूल पत्र पं॰ लेखरामजी के संग्रह के साथ नष्ट हो गया प्रतीत होता है ।

१. प्रथम ग्राश्विन शुक्ल १ बुधवार सं० १९३६ । यु० मी० ।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ४७१ से उद्धृत।

३. ५० लेखराम जी के जीवन चरित्र में १७ सितम्बर ही छपा है । इस पत्र में ८ दिन पीछे लखनऊ जाने का उल्लेख है, परन्तु अगले पूर्ण संख्या १६० के पत्र में १८ सितम्बर को ही लखनऊ पहुँचने का निर्देश है । अतः सम्भव है जीवनचरित्र में छपने की असावधानता से पूर्ण सं०१८८, १८६ दोनों में ७ सितम्बर का १७ वन गया होगा । ७ सितम्बर १८७६ को प्रथम आश्विन कृष्ण ६ रिववार १९३६ था। यु॰ मी०।

५. प्रथम ब्राश्विन शुक्ल २ बृहस्पतिवार सं० १९३६ । यु० मी०।

६. प्रथम त्राश्विन गुक्ल ६ बुधवार सं० १६३६ । यु० मी० ।

७. प्रथम ग्राश्विन शुक्त ६ रिव, सं० १६३६ । यु० मी० ।

१६६

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन [लखनऊ, कानपुर, सन् १८७९

[२२]

पत्रांश (१४२)

[363]

छापाखाना के वास्ते एक हजार फरुखाबाद से हुआ है। अब अपना छापाखाना स्वतंत्र कराया जानेगा। तुम भी मुम्बई में इसके वास्ते चंदा करो। हमारा विचार मार्गशीर्ष तक अपना छापाखाना कर लेने का है।

द्यानन्द सरस्वती

कानपुर ११ अक्टूबर १८७९ आश्विन वदी ११ शनि०। [आश्विन द्वितीय ग्रुक्त १ बृहस्पतिवार] अधर्थात् १६ अक्टूबर को यहां से प्रयाग को जावेंगे!

[२३]

पत्रांश (१४३)<sup>3</sup>

[355]

श्रीर कर्नल श्रलकाट साहब के पत्र श्राये। उसका उत्तर पोछे से तुमको नागरी में भेजेंगे। उनकी नकल श्रंग्रेजी में करके दे देना तो हम सीधा भेज दिया करें।

दयानन्द सरस्वती

११ अक्तूबर ७९<sup>४</sup> कानपुर

[१६]

पत्र (१४४)

[१९३]

श्रार्य्यसमाज के मन्त्री बाबू माधोलाल श्रानन्दित रही !"

तुम्हारी कई चिट्ठियां आईं। हम सफर में रहे, इस लिये चिट्ठी का जवाब नहीं भेज सके। विज्ञापन तुम ने छपवा लेने। नमूना भेजते हैं और हम १६ अक्तूबर को प्रयाग जायेंगे तब तुमकों और चिट्ठी भेजेंगे। अब हम बनारस नहीं जावेंगे। मिरजापुर से दानापुर सीधे चले जावेंगे, रास्ते में कहीं न ठहरेंगे। हमारे पास कोई आद्मी आप भेजें। जब हम दूसरी चिट्ठी लिखें तब मिरजापुर में भेजना। मुरादाबाद से विज्ञापन बाबत नवीन पुस्तक छपवाने के आप के पास गया होगा, उसके मुताबिक चन्दा करने का बन्दोबस्त कर रहे होगे। फर्रुखाबाद से एक हजार रुपया हो

१. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ४१२ पर उद्धृत । यह पत्र संभवतः मुन्शी समर्थदान को लिखा गया है। ग्रगला पत्रांश मी इसी में सम्मिलित होगा।

२. सम्भवतः कोष्ठन्तर्गत पाठ पं० लेखरामजी के जीवनचरित में लेखकप्रमाद से छूट गया होगा। यु॰मी०।

३. पं॰ लेखरामकृत जी॰ च॰ पृ॰ ८३७पर उद्घृत । ४. त्राश्विन (२) वदी ११ शनित्रार ११३६ I

प्र. जो पत्र हमें दानाषुर से प्राप्त हुए हैं उनमें यह पत्र नहीं है, परन्तु पिएडत लेखरामजी रचित बृहद् जीवनचरित के प्र ४६६ पर यह मिलता है। हम ने वहीं से लेकर इसे शब्दशः देवनागरी लिपी में कर दिया है।

कानपुर, सं० १९३६]

विज्ञापनपत्र (२३)

१६७

गये होंगे। यह चन्दा हम को बनारस में मार्गशीर्ष में जाना होगा सो समक लेना। हम को दानापुर से लौट कर आरा अथवा जहां कहीं ठहरना होगा वहां ठहरेंगे। मार्गशीर्ष तक बनारस लौट कर आ जावेंगे। और विज्ञापन में स्थान की जगह छोड़ दी है, सो तुम जो जगह निश्चित हो, लिख कर छपवा देना और तारीख की जगह छोड़ देना। जब हम आयेंगे लिखवायेंगे। हमारे रहने का मकान शहर से एक मील अलग रहे, इस से दूर न हो। व्याख्यान का मकान शहर में हो। और रहने के मकान की आवोहवा अच्छी देख लेनी। और हरिहर चेत्र के मेला में जायेंगे। वहाँ का भी बन्दोबस्त, मकान, डेरा, तम्बू वगैरा का कर लेना, अब हम चिट्ठी मिरजापुर से लिखेंगे। और अगले महीना में बनारस में आकर छापाखाना अपना बनवाने की तजवीज करेंगे। सो चन्दा अपने हां जल्दी करना और अब वनारस में छः महीने रहने का बन्दोबस्त हुआ है, जिस में वेदमाध्य और बाकी पुस्तक जल्दी छप कर तय्यार हो जावेंगे, ऐसा विचार है।

द्यानन्द सरस्वती

मुकाम कानपुर, १२ अक्तूबर ७९ ई०।

[२३]

## (विज्ञापनपत्रम्)

[368]

ठाकुर मुकुन्दिसह वा मुन्नासिह त्राम मुन्नहमा के वास्ते मुख्तार हैं। परन्तु पुस्तक वेचने त्रीर रुपया लेने के मुख्तार ये हैं मुन्शी समर्थदान मुम्बई वाले। मुन्शी इन्द्रमिण जी प्रधान आर्यसमाज मुरादावाद। बख्तावरिसह मन्त्री आर्यसमाज शाहजहांपुर, लाला रामशरणदास उपप्रधान आर्यसमाज मेरठ। लाला साईदास मन्त्री आर्यसमाज लाहौर। लाला बलदेव दास वा डा० विहारीलाल मन्त्री आर्यसमाज गुरुदासपुर। चौधरी लक्ष्मणदास सभासद आर्यसमाज आमृतसर। वाबू रामाधार वाजपेई तार आफिस रेलवे लखनऊ। पं० सुन्दर लाल रामनारायण पोस्ट मास्टर जनरल आफिस प्रयाग। बाबू माधोलाल मन्त्री आर्यसमाज दानापुर। इन सब को चन्दा वेदमाष्य के उगराहने का अधिकार है। और जिसके पास जितना चन्दा होवे, जैसराज गोटेराम साहूकार

१. ग्राश्यिन (द्वितीय) कृष्ण १२, रिववार सं० १६३६ । यु० मी०।

२. पं ० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ४६२ पर उद्धृत [इसी श्राशय का एक विज्ञापन पूर्ण सं० १८७ पर छपा है।]

३. पूर्ण संख्या १८७ में 'लाला वल्लभदास' नाम है।

४. ये ही चौधरी लक्ष्मण्दास थे, जो पीछे लक्ष्मणानन्द स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए । इन्होंने श्री स्वामी जी से योग की ग्रानेक कियाएं सीली थी। इन्हों का प्रन्थ ध्यानयोगप्रकाश योगशिह्मा के लिए अपूर्व है। इमने उन्हीं की कृपा से सन् १९१२ में अमृतसर में जप की विधि सीली और सत्यार्थप्रकाश के कई प्रकरण पदे। ऋषि दयानन्द सरस्वती का महत्त्व हमने इन्हीं से समक्ता था।

५. जीवनचरित में ऋर्जुन ऋाधार नाम छपा है, परन्तु शुद्ध नहीं। रामाधार जी के नाम के अनेक पत्र इस संग्रह में छापे गए हैं। पूर्ण सं०१८७ में भी रामाधार शुद्ध नाम ही है।]

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन [कानपुर,मिर्जापुर,सन्१८७९

फरुखाबाद के पास रुपया भेज कर रसीद मंगा लें। श्रीर मुं० समर्थदान मुम्बई वाले श्रीर मुं० इन्द्रमणि जी मुरादाबादी के पास मेरे बनाए सब पुस्तक मिलेंगे।

दयानन्द सरस्वती

१४ श्रक्तूबर १८७९।

[9,9]

१६५

पत्र (१४५)

[ १९५]

बाबू माधोलालजी आनन्दित रहो !

विदित हो कि १९३६ द्वि० आश्विन सुदी ९ गुरुवार ता० २३ अक्टूबर को हम प्रयाग से मिरजापुर आकर सेठ राम रतन के बाग में ठहरे हैं अब तुम लोगों का क्या विचार है। हमारा शरीर बीमार है, परन्तु तुम्हारे यहां आने को लिख चुके हैं। आना तो होगा ही, व्याख्यान होना, न होना वहां आकर माल्म होगा। अऔर तुम लोगों ने लिखा था कि हमारे सभासद आप को लेने को आवेंगे सो जो आने का विचार हो तो ६ छः दिन के विच यहाँ मिरजापुर में पूर्वोक्त पते पर आ जावें। क्योंकि कार्तिक विद प्रतिपदा ता० ३० अक्टूबर को हम यहां से चल कर दुमरांव वा आरा अथवा पटना में पहुँचेंगे। इस में सन्देह नहीं।

सब से मेरा नमस्ते।

मिर्जापुर

दयानन्द सरस्वती।

[28]

पत्रांश (१४६)

[११६]

[मुंशी समर्थदान....]

कर्नल अलकाट साहब को मेरे शरीर का हाल विदित नहीं है कि दस मास तक तो दस्तों का रोग रहा। पश्चात् एक बड़ा क्वर आने लगा सो तीन बारी आकर छूट गया है अब दोनों रोग

१. श्राश्विन (द्वितीय) कृष्ण १४, मंगलवार सं० १६३६ । यु० मी०।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ४६६, ४६७ पर उद्धृत । परन्तु हमने यह पत्र दानापुर समाज में सुरुक्तित मूलपत्र से ही छापा है।

३. 'व्याख्यान न होगा तो तुम लोगों से बातचीत तो ग्रावश्य होगी।' जीवनचिरत में ऐता लेख ग्राधिक है। सम्भवत: पं॰ लेखरामजी ने यह पत्र वैदिक यन्त्रालय के संग्रह के पत्र से प्रतिलिपि किया हो। ग्रीर उस पत्र से प्रतिलिपि होकर दानापुर को जाने वाले पत्र में परिवर्तन कर दिया होगा।

४. २३ श्रौर २६ श्रक्टूबर १८७६ के मध्य की किसी तिथि को यह पत्र लिखा गया होगा। सम्भवतः २५ श्रक्तूयर को लिखा गया।

प्र. मैनेजर वेदमाष्य के नाम। पं० लेखरामकृत जीवनचरित पू० ८३७, ३८ पर उद्घृत । अगला पत्र मी इसी पत्र का एक अंश प्रतीत होता है। दानापुर, काशी, सं० १९३६]

पत्र (१४८)

१६९

नहीं हैं, परन्तु विचार करो कि इतने रोग के पश्चातु निर्वलता और सुस्ती कितनी हो सकती है। इस में भी हमको कितने काम श्रावश्यक हैं जिन से दम भर श्रवकाश नहीं मिल सकता। जो एक जन्मचरित्र के लिखने लिखवाने का काम ही होता, तो एक बार लिख लिखवाके भेज दिया होता।

द्यानन्द सरस्वती

६ नवम्बर ७९

दानापुर

[24]

पत्रांश (१४७)

१९७

मिनेजर प्रेस के नाम ]

श्राजकल दानापुर में प्रतिदिन व्याख्यान होते हैं, श्राज पांचवां दिन है । यहां का समाज श्रीर समाज के पुरुष बहुत उत्तम हैं। समाज का प्रबन्ध भी बहुत उत्तम किया है। यहां से श्रमावस के पश्चात् हरिहरचेत्र के मेले में जाना होगा। वहां से कार्तिकी पूर्णमासी के अनन्तर काशी में जाकर छापेखाने का प्रबन्ध किया जावेगा और वहां आधे चैत या अन्त चैत तक ठहरेंगे।

६ नवस्बर १८७९

दयानन्द सरस्वती दानापुर

[२६]

पत्रांश (१४८)

[996]

शोक की वात है कि त्रार्यपुरुष ठाकुर मुन्नासिह का शरीर खूट गया। द्यानन्द सरस्वती

२० नवम्बर १=७९४

काशी

लिखा गया।

१. कार्तिक कृष्ण ७ बृहस्पतिवार सं० १९३६ । यु० मी० ।

२. पं लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ४६६ पर उद्धृत।

३. पं ० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ७६८ पर उद्घृत । [सम्भवत: संशी समर्थदान के नाम

४. भ्रमोच्छेदन के प्रारम्भ में तथा त्रार्थदर्पण फरवरी १८८० पृ० ४२ पर स्वामीजी महाराज के काशी पहुँचने की तिथि कार्तिक सुदि १४ सं० १६३६ गुक्वार (२७ नवम्बर सन् १८७६) लिखी, वह अशुद्ध प्रतीत होती है, क्योंकि २० नवम्बर से २४ नवम्बर तक के काशी से लिखे गये तीन पत्र पूर्ण संख्या १६८, १६६, २०० पर छाप रहे हैं। पं० घासीरामजी संपा० जी० च० पु॰ ५६२ में दानापुर से चलने की ता॰ १६ नवम्बर लिखी है। पं॰ लेखराम जी कृत जीवन चरित पृ॰ ५०५ में लिखा है-"कार्तिक सुदि ७ गुक्वार मुताबिक १६ नवम्बर को

[काशी, सन् १८७९

१७०

[१८] पत्र (१४९)

866]

बाबू माधोलाल जी आनन्दित रहो !

हम वहाँ से चल के आनन्दपूर्वक काशी में पहुँच कर महाराजे विज[य]नगर के आनन्द वाग में ठहरे हैं यह बाग बहुत अच्छा है। हवा और जल यहां का बहुत अच्छा है मकान भी इस बाग में बहुत और उत्तम हैं यह बात प्रसिद्ध है। इस में ठहरने के लिये लाजरस साहेब ने प्रवन्ध कर रक्खा था चिट्ठी पहुँचने पर। जैसा यह बाग है वैसा काशी में दूसरा नहीं है इसके आगे जो २ अवश्य लिखने योग्य समाचार हों वे २ लिखे जायेंगे आप लोग भी लिखने रहना। सब से हमारा नमस्ते कहना।

सं० १९३६ मि० का० सुद० ⊏ शुक्रवार।

दयानन्द सरस्वती काशी ।

[23]

पत्र (१५०)

[२००]

Benares
The 24th Nov. 1879<sup>3</sup>

Babu Ramadhar, Bajpaye,\*

May you prosper! I returned from Danapore and have lodged now-a-days in the garden of His late Highness the Maharajah of Vizianagram, at Benares. I will write for the books about which you told me, to Bombay and Moradabad. You will try your best to treat in a friendly manner the son of Munshi Indra-Man, named Narayan Das, who wishes to go to Lucknow from Morada-bad in the search of a copywriter on a printed lithographic paper, you will procure for him such a writer if

दानापुर से चलकर उसी रोज बनारस में सुशोभित हुए।" परन्तु पं॰ लेखरामजी कृत जीवन चरित्र में ही पृष्ठ १,५१ पर लिखा है —'मिर्जापुर ब्रौर दानापुर का एक दौरा करके कार्तिक सुदि १४ गुरुवार मुताबिक २७ नवम्बर सन् १८७६ ईस्वी को काशी नगर में तशरीफ … ।'

यहां यह भी ध्यान रहे कि १६ नवम्बर को कार्तिक सुदि ७मी श्रौर गुरुवार नहीं था, श्रापितु कार्तिक सुदि ६ बुधवार था। श्रातः यहां श्राग्रेजी तारीख लिखने में श्रावश्य ही कुछ भूल हुई है। हमारा विचार है कि श्री० स्वामीजी २० नवम्बर (कार्तिक सुदि ७) गुरुवार के दिन ही काशी पहुँचे थे। यु० मी०।

१. मूलपत्र आर्यसमाज दानापुर में सुरिच्ति है। इसकी प्रतिकृति श्रीमह्यानन्द चित्रावली (संस्क॰ ३) में छपी है।

- २. २१ नवम्बर शुक्रवार सन् १८७६ । यु॰ मी॰ ।
- ३. कार्तिक सुदी ११, सोमवार सं० १६३६।
- ४. मूलपत्र श्रायंसमाज लखनक के संग्रह में सुरिच्चत है।

काशी, सं० १९३६]

विज्ञापनपत्र (२४)

१७१

you can find one,—for such a writer is urgently required.

द्यानन्द सरस्वती काशी ॥

[भाषानुवाद]

वनारस

२४ नवं० १८७९

वाबू रामाधार बाजपेई आनन्द रही!

मैं दानापुर से लौटा हूं और बनारस में म्वर्गवासी श्री महाराजे विजयनगर के बाग में आजकल ठहरा हूं। जिन पुस्तकों के निये आप ने मुम्ने कहा था, उन के लिये मैं मुम्बई और मुरादाबाद को लिख्ँगा। मुन्शी इद्रमन के पुत्र नारायणदास को मित्रवत् रखने में आप अपना पूर्ण यह करेंगे वह मुरादाबाद से छपे हुए लिथो कागज पर कापी लिखने वाले की खोज में लखनऊ जाना चाहता है। यदि ढूंढ सकें तो उस के लिये ऐसा लेखक निकालें, क्योंकि ऐसे लेखक की अत्यन्तावश्यकता है।

(दयानन्द सरस्वती)

काशी॥

[२४]

## विज्ञापनपत्र

[२०१]

।। श्रोश्म्। नमः सर्वशक्तिमते परमेश्वराय।।

## ॥ प्रथमं विज्ञापनपत्रमिद्म् ॥

सर्वात् सज्जनात् प्रतीदं विज्ञात्यते सम्प्रति द्यानन्दसरस्वतीस्वामिनः श्रीयुतमहाराजविजयनगराधिपतेरानन्दारामे निवसन्ति । यैर्वेदानां मतमङ्गीकृत्य तद्विरुद्धं किंचिद्दपि नैव मन्यते । किन्तु
यानीश्वरगुण्कर्मस्वमाववेदोक्तेभ्यः सृष्टिक्रमात्प्रत्यचादिप्रमाणेभ्यः ब्याप्ताचारसिद्धान्तास्वात्मपवित्रता
सुविज्ञानतश्च विरुद्धत्वात्पाषाण्विद्मूर्तिपृजा, जलस्थलादौ पापनिवारण्यक्तिः, व्यासमुन्यादिभिरप्रणीतास्वन्नामव्याजेन प्रसिद्धीकृता नवीना व्यर्थपुराण्वादिसंज्ञा ब्रद्धवैवर्ताद्यो प्रन्थाः, परमेश्वरस्यावताराः, सपुत्रो मूत्वा स्वविश्वासिनां पापानि चिमत्वा सुक्तं प्रद्वाति, चपदेशाय स्वमित्रं भूमौ
प्रेषितवान, पर्वतोत्थापन-मृतकसंजीवनचन्द्रखण्डनाकारण्कार्व्योत्पत्तिस्वीकरण्वानीश्वरवाद्-जीवब्रह्मणोः
स्वरूपैक्यादीनि, कर्ण्यतिलक्षरुत्वादिघारण्यम्, शैवशाक्तवैष्ण्वगाण्यपतादि नवीनाः सम्प्रदायाद्यश्च
निराकर्त्तुमहाण्यि सन्ति, तानि खण्ड्यन्ते ॥ अत्रोऽत्र यस्य कस्यचिद्वदादिसत्यशाक्षार्थविज्ञाने प्रवीणस्य
सभ्यस्य शिष्टस्यामस्य विदुषो विप्रतिपत्तिः स्वमतस्थापने परमतखण्डने च सामर्थ्यं वर्तते । स स्वामिमः
सह शास्त्रार्थं कृत्वैतेषां मण्डनाय प्रवर्तेत नेतरः खलु । इह शास्त्रार्थे वेदा मण्यस्य मविष्यन्ति ।
एतेषामर्थनिश्चयाय ब्रह्माद्रिमीनिपर्यन्तिर्मुनिमिनिर्मिता ऐतरेयब्राह्मणादि पृवसीमासापर्यन्ता आर्षा
वेदानुकृता वादिप्रतिवाग्नुभयसम्मता प्रन्था मन्तव्याश्च । येऽत्र सभासदो भवेयुस्तेऽपि पच्नपातविरहा
धर्मार्थकाममोच्चपदार्थस्वरूपसाधनाभिज्ञाः सत्यप्रिया असत्यद्वेषिणः स्युर्नातो विपरीता। यत् किंचित्पाच्नप्रतिपच्चित्रयामुच्येत तत्सव विप्रिमिरिमिज्ञैलिक्वैर्तिपीक्वतं भवेत् । स्वस्वलेखान्ते वादिप्रतिवादिनौ

१. कार्तिक सुदी ११ सोम, सं० १६३६ । यु० मी०।

[काशी, सन् १८७९

सम्मत्यर्थं स्वह्रताच्चरैः स्वस्वनाम लिखेताम्, ये च मुख्याः सभासदः । एतत्कृत्वैकद्निलेखसिद्धं पुस्तकमेकं वादिने, द्वितीयं प्रतिवादिने देयं, तृतीयं च सर्वसम्मत्या कस्यचित्प्रतिष्ठितस्य राजपुरुषस्य सभायां स्थापितं भवेद्यतः कश्चिद्प्यन्यथा कर्तुं न शक्नुयात् । यद्येवं सित काशीनिवासिनो विद्वांसः सत्यानृतयोनिंश्चयं न कुर्य्युस्तर्ध्वोषामतीव लज्जास्पद्मस्तीति वेदितव्यम् । विदुषामयमेव स्वभावो यत्सत्यासत्ये निश्चित्य सत्यस्य प्रह्णमितरस्य परित्यागं कृत्वा कारियत्वा स्वेनान्यैः सर्वैर्मनुष्येश्चान-निद्वतव्यमिति ॥

### ॥ प्रथम विज्ञापन ॥

## ॥ भाषार्थ ॥

सब सज्जन लोगों को विदित किया जाता है कि इस समय पिएडत स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी महाराज काशी में आकर जो श्रीयुत् महाराजे विजयनगर के अधिपति का आनन्दवाग महमूदगञ्ज के समीप है उसमें निवास करते हैं। वे वेदमत का प्रह्ण करके उससे विकद्ध कुछ भी नहीं मानते, किन्तु जो २ ईश्वर के गुण कर्म स्वमाव और वेदोक्ति १, सृष्टि कम २, प्रत्यच्च आदि प्रमाण ३, आप्तों का आचार और सिद्धान्त ४, तथा अपने आत्मा की पवित्रता और उत्तम विज्ञान से विकद्ध होने के कारण जो पाषाणादि मूर्ति पूजा, जल और स्थल विशेष में पाप निवारण करने की शक्ति, व्यास मुनि आदि के नाम पर छल से प्रसिद्ध किये नवीन व्यर्थ पुराण नामक आदि ब्रह्मवैवर्त आदि प्रन्थ, परमेश्वर के अवतार, ईश्वर का पुत्र होके अपने विश्वासियों के पाप चमा करके मुक्ति देने हारे का मानना, उपदेश के लिये अपने मित्र पैगम्बर को पृथ्वी पर मेजना, पर्वतों का उठाना, मुरदों का जिलाना, चन्द्रमा का खण्ड करना, कारण के विना कार्य की उत्पत्ति मानना, ईश्वर को नहीं मानना, स्वयं ब्रह्म बनना, अर्थात् ब्रह्म से अतिरिक्त वस्तु कुछ भी न मानना, जीव ब्रह्म को एक ही समम्तना, कण्ठी तिलक और कहाचादि धारण करना, और शैव, शाक्त, वैद्याद, गाण्यपतादि सम्प्रदाय आदि हैं, इन सब का खण्डन करते हैं।

इस से इस विषय में जिस किसी वेद आदि शास्त्रों के आर्थ जानने में कुशल, सभ्य, शिष्ट, आप्त विद्वान को विरुद्ध जान पड़े, अपने मत का स्थापन और दूसरे के मत का खण्डन करने में समर्थ हो, वह स्वामी जी के साथ शास्त्रार्थ कर के पूर्वोक्त व्यवहारों का स्थापन करो । इस से विरुद्ध मनुष्य कभी नहीं कर सकता।

इस शास्त्रार्थ में वेद मध्यस्य रहेंगे। वेदार्थ निश्चय के लिये जो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त के बनाए ऐतरेय ब्राह्मण से लेके पूर्वमीमांसा पर्यन्त वेदानुकूल द्यार्ध प्रन्थ हैं, वे वादी द्यौर प्रति-वादी उभय पत्त वालों को माननीय होने के कारण माने जावेंगे। द्यौर जो इस सभा में सभासद् हों, वे भी पत्त्वपात रहित धर्म, द्रार्थ, काम द्यौर मोत्त के स्वरूप तथा साधनों को ठीक २ जानने सत्य के साथ प्रीति द्यौर द्यसत्य के साथ द्वेष रखने वाले हों, इन से विपरीत नहीं। दोनों पत्त वाले जो कुछ कहें, उसको शीघ्र लिखने वाले तीन लेखक लिखते जावें। वादी द्यौर प्रतिवादी द्यपने द्यपने लेख के खन्त में द्यपने २ लेख पर स्वहस्तात्त्वर से द्यपना द्यपना नाम लिखें। तथा जो मुख्य सभासद् हों, वे भी दोनों के लेख पर हस्तात्त्वर करें।

जन तीन पुस्तकों में से एक वादी दूसरा प्रतिवादी को दे दिया जाए और तीसरा सब समा की सम्मित से किसी प्रतिष्ठित राजपुरुप की सभा में रखा जावे कि जिस से कोई अन्यथा न कर सब । जो इस प्रकार होने पर भी काशी के विद्वान लोग सत्य और असत्य का निर्णय करके औरों को न करावेंगे, तो उनके लिये अत्यन्त लजा की बात है, क्योंकि विद्वानों का यह ही स्वभाव होता है जो सत्य और असत्य को ठीक २ जान के सत्य का प्रह्ण और असत्य का परित्याग कर दूसरों को कराके आप आनन्द में रहना औरों को आनन्द में रखना।

[२५] ।। दूसरा विज्ञापन ॥ े [२०२]

स्वामी जी को छः पुरुषों की अपेद्या है ॥ एक—वेद वेदाङ्ग निघएटु निरुक्त व्याकरण् मीमासादि शास्त्रों में निपुण शुद्ध लिखने पूर्वापर शब्द अर्थ और सम्बन्ध के विचार से शुद्धाशुद्ध को जान के शुद्ध करने और भाषा के व्याकरण की रीति से संस्कृत की भाषा की सुन्दर रचना करने वाला विद्वान् ॥

दूसरा--व्याकरण में निपुण लिखने में शीव्रकारी पूर्वोक्त रीति से संस्कृत की ठीक २ भाषा की रचना करने हारा ॥

> तीसरा—शुद्ध लेखक शीघ्र लिखने वाला ॥ चौथा—ब्राह्मण रसोई बनाने में अति चतुर ॥ पांचवां—चतुर सेवक कहार काछी कुर्मी वा किशान ॥

श्रीर छटा—नागरी इङ्गलिश श्रीर उद्भाषाश्रों का लिखने पढ़ने वाला हो । इन छ: पुरुषों की जैसी २ योग्यता श्रपने २ काम में होगी उस को मासिक भी वैसा ही दिया श्रीर उस से यथायोग्य काम लिया जायगा। जिस किसी को ऐसा करना श्रपेचित हो वह उक्त स्थान पर जाकर स्वामी जी से मिल के प्रवन्ध कर लेवे।।

ऋतुकालाङ्कचन्द्रेऽब्दे मार्गशीर्षेऽिसते दले। चन्द्रवारे तृतीयायां पत्रमेतदलेखिषम् ॥ १ ॥ संवत् १९३६ मिती मार्गशीर्षे वदी ३ सोमवार को यह पत्र मैंने लिखा है॥<sup>3</sup> हस्ताच्चर पण्डित भीमसेन शर्मा

Printed At The Medical Hall Press, Benares: -3-12-1879-200.

- १. ग्रार्थदर्भण दिसम्बर १८७६, पृ० ३४७, ३४८ पर मी इतना श्रार्थमाण का माग फारसी ग्राचरों में छपा है। [यह माग ग्रार्थदर्पण फरवरी १८८० पृ० ४२ पर मी छपा है। यु० मी०।]
  - २. यह विशापन पूर्व विशापन के साथ ही छुपा है।
  - ३. प्रथम दिसम्बर १८७६ को लिखा गया ख्रीर ३ दि० १८७६ को छुपा कर बांटा गया।
  - ४. इमने सारा विज्ञापन मूल-विज्ञापन से छापा है। मूल विज्ञापन इमारे संग्रह में सुरिवृत है।
- ५. ये दोनों विज्ञापन पं॰ लेखराम जी कृत जीवनचरित्र में पृ॰ १५१, १५२ पर छपे हैं। उन में श्रन्त की प्रेस लाइन श्रीर पं॰ भीमसेन के इस्ताचर नहीं हैं। साथ में एक विज्ञापन श्रीर छपा है। उसे इस श्रागे दे रहे हैं। देखो पूर्ण संख्या २०३ तथा उस की टिप्पणी। यु॰ मी॰।

१७४

[काशी, सन १८७९

[26]

तृतीय विज्ञापन'

[२०३]

सन्ध्या के चार बजे से लेके रात्रि को दश बजे पर्यन्त स्वामी जी को सब से मिलने और बातचीत करने का अवकाश प्रतिदिन रहता है।

हस्ताचर परिडत भीमसेन शर्मा दशाश्वमेध आर्थ यन्त्र में मुद्रित हुआ।

[36]

पत्र (१५१)

[208]

वाबू माधोलालजी आनन्दित रही ! र

श्रव तक छापेखाने की कुछ सामग्री आई नहीं और न कुछ पिडत सुन्दरलाल का जवाब श्राया। श्रव आप लोग इसका बहुत शीघ्र भाव ताव टेप् का नमुना और रायलप्रेस का मूल्य लिखकर हमारे पास भेजिये। इसमें जितना बने उतनी शीघ्रता की जिये। हम को सब छापेखानों से तिगुना चौगुना टैप् लेना होगा। उसके केस, लकड़ी, सबका भाव लिखना।

मुंशी बखतावरसिंह मन्त्री आर्थसमाज साहजहांपुर ने ३०) रूपये मावारी पर छापेखाने का सब प्रबन्ध करने के लिये सरकारी नौकरी छोड़के आने का स्वोकार किया है। ये बहुत अच्छे आदमी हैं तीनों भाषा पड़े हुये सब काम अच्छा चलेगा छापेखाने का काम सब जानते हैं। और विज्ञापन पत्र आज छप चुके हैं सो भी तुम्हारे पास भेजते हैं।

[दयानन्द सरस्वती]

[२०]

पत्रांश (१५२)

[२०५]

[बाबू माधोलाल जी]

ता० १५ दिसम्बर ७९ को साहब लोग श्रंग्रेज निम्नलिखित बनारस आकर मेरे पास राजा

- १. उपर्युक्त दो विज्ञापनों के साथ यह विज्ञापन पं० लेखराम जी कृत जीवनचरित पृष्ठ १५२ पर मिलता है। पं० लेखराम जी द्वारा संग्रहीत तीनों विज्ञापनों के ग्रन्त में 'दशाश्वमेघ ग्रार्य यन्त्र में मुद्रित हुन्ना' पाठ है ग्रीर पूर्व मुद्रित दोनों विज्ञापनों के ग्रन्त में 'मेडिकल हाल यन्त्रालय' में छुपने का उल्लेख ग्रीर हस्तान्तर पिडत मीमसेन' इतना पाठ नहीं है। प्रतीत होता है कि मेडिकल हाल वाला प्रथम संस्करण है ग्रीर ग्रार्थ यन्त्र में छुपा द्वितीय संस्करण। द्वितीय संस्करण के समय यह तृतीय विज्ञापन बढ़ाया गया, ऐसा प्रतीत होता है। यु० मी०।
  - २. मूल पत्र आर्यसमाज दानापुर के संग्रह में सुरिह्तत है।
- ३. इस पर कोई तिथि नहीं है । परन्तु इस पत्र के अन्त में लिखित 'विज्ञापन पत्र' ग्राज छप चुकें हैं, वाक्य में पूर्व (पूर्ण संख्या २०१, २०२ पर) मुद्रित विज्ञापनों की ग्रोर संकेत है। ग्रात: यह पत्र ३ दिसम्बर सन् १८७६ को लिखा गया होगा। यु० मी० ।
- ४. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ८३८ पर उद्धृत । यह पत्र सम्भवत: उद्दे में था । जीवनचरित में सब उर्दु शब्द ही हैं । ५. मार्गशीर्ष शुक्क २ सोमवार, सं॰ १६३६ । यु॰ मी॰ ।

काशी, सं० १९३६]

पत्र (१५४)

१७५

विजयनगर के बाग में जो निकट महमूद्रगंज है, ठहरेंगे। इस लिये आप को लिखा जाता है कि यदि आप को इन अंग्रेजों से मुलाकात करनी हो, तो सोलहवीं तक मेरे पास उक्त बाग में चले आइये। और कृपा करके छपरा में महावीरप्रसाद आदि को भी इस विषय में विदित कीजिये।

१२ दिसम्बर ७९

नाम उन साहब लोग ग्रंग्रेजों के जो बनारस में १५ को धावेंगे। करनेल एच० एस० ध्रलकाट साहब बहादुर श्रमरीकन। मेडम एच० पी० व्जेवेटरकी साहिबा। इ० एफ० सिनेट साहब प्रबन्धक पायोनियर समाचार इलाहाबाद। श्रतिरिक्त इन श्रंग्रेजों के उनके साथी श्रोर भी दो तीन श्रंग्रेज श्रावेंगे।

द्यानन्द सरस्वती

[20]

पत्रांश (१५३)

[२०६]

[प्रबन्धकर्ता वेदभाष्य]

करनल श्रल्काट श्रादि सब श्रंश्रेजी १५ दिसम्बर ७९ की मेरे पास श्रा गये । श्रीर मेरा संवाद उन से प्रारम्भ हो गया।

१७ दिसम्बर ७९\*

दयानन्द सरस्वती

वनारस

[8]

पत्र (१५४)

[200]

[काशी के मजिस्ट्रेट" के नाम]

श्रीमन् !

क्या आप मुमे बताने की कृपा करेंगे कि आप की कल की आज्ञा कि में सम्प्रति व्याख्यान न दूँ किन आधारों पर निहित थी। आप की सूचनार्थं उस आज्ञा की प्रतिलिपि इस पत्र के साथ भेजी जाती है। मैं आप का उपकृत हूंगा यदि आप मुमे यह भी बतायेंगे कि यह प्रतिबन्ध कितने समय तक रहेगा। आप की सुविधानुसार आपके पत्र का प्रतीच्चक—

त्राप का प्रतिष्ठाभावसम्पन्न द्यानन्द सरस्वती स्वामी

१. मार्गशीर्व कृष्ण १४ शुक्रवार सं० १९३६ । यु० मी० ।

२. पं ० लेखरामकृत जीवन चरित्र पृष्ठ ८३८ पर उद्धृत ।

३. मुन्शी समर्थदान ।

४. मार्गशीर्ष शुक्ल ४, बुधवार, सं० १६३६।

५. इस मजिस्ट्रेट का नाम "मिस्टर बाल" था। देखो पं॰ घासीराम जीवन चरित्र पृष्ठ ५६५ ।

इ. यह पत्र २१ दिसम्बर १८७६ (मार्गशीर्ष शु॰ ८ रिव, सं॰ १९३६) को लिखा गया था। पं॰ घासीरामजी सम्पादित जीवन चरित्र पृष्ठ ५९५ पर उद्धृत। यु॰ मी॰।

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र श्रौर विज्ञापन

[काशी, सन् १८७९

[9]

१७६

कार्ड (१५५)

२०८

जैसराज गोटीराम [जी त्रानन्दित रहो] ।

मुनशी बखताबर सिंह ... ... वार को कलकत्तं रवाने हुए । जब [वह आप] के पास पहुँचें तो मेरा यह पत्र उनके [हवा]ले कीजिये।

मुन्शी साहब—

एक रोयल प्रेस तो आप लेंहिंगे परन्तु एक छोटा प्रेस भी जिस से प्रूफ उठाने का काम लिया जाता है अवश्य लेना चाहिये। और यह सब सामग्री अमृत [बजार] पत्रिका के सम्पादक की सम्मति से लीजियेगा क्योंकि वे इस विषय के जानकार हैं। चीज अच्छी और कीमत वाजिब दिलावेंगे। यहां एक बंगाली का प्रेस, टाइप के अच्चर, केस आदि सब चीज बिकाऊ हैं। हम दो एक दिन में उनको देख भाल कर यदि वह अच्छे और काम के लायक होंगे तो खिरीद लेंगे

२३ दिस० ७९ ई० !3

दियानन्द सरस्वती

[कार्ड पर उर्दु तथा देवनागरी में निम्नलिखित पता है] कलकत्ता श्रफीम का चौराहा जुगल किशो[र] विलासराय की कोठी में जैसराज गोटी राम के पास

[2]

पत्रसूचना (१५६)

[२०१]

वल्लभदास लाहौर । मार्ग सु० १२ सं० १९३६ बृहस्पतिवार २५ दिसम्बर १८७९

॥ त्रो३म् । नमः सर्वशक्तिमते जगदीश्वराय ॥

[२७]

।। विज्ञापनपत्रमिद्म् ॥

[380].

समस्तान्धार्मिकान्त्रतीद्मप्रत्याय्यते । यच्छीताराचरणप्रकाशितं वाराणसीस्थविदुषां स्वामिभिः सह शास्त्रार्थं करणाभिप्रायस्चकं सभ्यविद्वल्लेखविरुद्धं पत्रमस्ति । तद्दृष्ट्वाऽत्यन्तमाश्चर्यं प्रतिभाति नः । यद्त्रत्यो द्यालुरुपानहान्निर्माताऽन्त्यजोऽपि विद्वदुपमां विभितं तहीहत्याः पण्डिताः खलु कस्योपमां द्धतीति । निह्वयोग्ययोविदुषोः समागमेन विना कदापि सत्यासत्यव्यवहाराणां सिद्धान्ता भवितु महीन्त ।

१. यह कार्ड म॰ मामराज जी ने ता॰ २३ जुलाई सन् १६४५ को स्वर्गीय लाला रामशरण दास जी रईस मेरठ शहर वालों के पुराने पत्रों में से उनके पौत्र लाला परमात्माशरण जी के साथ खोज कर प्राप्त किया। मूलकार्ड हमारे संग्रह में सुरिच्चित है।

२. विन्दु वाला स्थान नष्ट हो गया है। कोछों में हमने पूर्ति की है, बनारस से लिखा गया।

३. मार्गशीर्ष सुदी १० संवत् १६३६ मंगलवार ।

४. इस पत्र का संकेत लाहौर समाज के कोषाध्यत् ब्रह्मभदास जी के पत्र में है।

५. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित प॰ १५७, १५८ से उद्धृत ।

तस्माद्भाविनि समागमे विशुद्धानन्दसरस्वतीस्वामिनो बालशास्त्रिणो वा संवादक्कर्तुं प्रवर्तेरन्नेतराः किल यदैतेऽत्र प्रवर्त्स्येन्ति तदा स्वामिनोऽप्युद्यताः सन्त्येवेत्यलमतिविस्तरेण ।

विद्वांसः सुविचारशीलसहिता धर्मोपकारे रता
दुष्टं कर्म विद्वाय सत्यसरणा नौकेव पाराय ते।
क्रूराः कामसिताः किमत्र समलाः स्वार्था श्रहो भावना
विद्वाः कस्य नरस्य नैव विततान कुर्ज्युः सदा दूषिताः ॥१॥
ऋतुरामाङ्कचन्द्रेज्दे मार्गशीर्षे सिते दले।
चतुर्दश्यां शनीवारे पत्रमेतदलेखिषम् ॥

#### ॥ भाषार्थ ॥

सब काशीस्थ धार्मिक विद्वान् महाशयों पर प्रगट हो कि श्री ताराचरण् शम्मों ने एक विज्ञापन पत्र छपवाया जिसका अभिप्राय यह है कि काशी निवासी विद्वज्जन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से शासार्थ करने की इच्छा करते हैं। यह पत्र विश्वास करने योग्य तो है परन्तु ऐसा लेख सम्य विद्वानों का नहीं होता। इसके देखने से हम को बड़ा आश्चर्य होता है कि जब जूते गांठने और बनाने हारा काशी का चमार विद्वानों की उपमा को धारण करता है तो पिरडत लोग किस की उपमा को धारण् करेंगे। मला बक और हंस की समता कहीं सम्भव है। यदि यह बात एक मूर्ख से भी पूछी जावे तो वह भी हढ़ता पूर्वक कहेगा कि सत्य का सिद्धान्त बिना पिरडतों के समागम के कदापि नहीं हो सकता। अब इस काशी में सर्वोत्तम पिरडत दो हैं। एक स्वामी विश्वद्धानन्द सरस्वती दूसरे बालशास्त्री। जो इन दानों महाशयों में से कोई एक भी यदि शास्त्रार्थ करना चाहे तो स्वामी जी भी सर्वथा उपस्थित हैं। सिवाय इन दोनों के दूसरों को विज्ञापनपत्र देना और लिखना सर्वथा निरर्थक है।

### स्रोक की भाषा।

सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की सृष्टि में दो प्रकार के मनुष्य हैं। एक उत्तम दूसरे निक्कष्ट । उत्तम वे हैं जो कि विचारयुक्त सुशील धर्म और उपकार करने में सन्तुष्ट दुष्ट कमों से दूर सत्य के प्रेमी नौका के समान श्रविद्यादि दोषों और कष्टों से लोगों को पार उतारने वाले विद्वान हैं। वे श्रपनी शान्ति परोपकार और गंभीरतादि को कभी नहीं छोड़ते। और जो करूर कामी श्रविद्यादि मलयुक्त स्वार्थी दूषित मनुष्य हैं वे श्रेष्ठ मनुष्यों को बड़े २ विन्न सदा क्या नहीं करते हैं १ ये बड़ा आश्रये है कि श्राप्त लोग असभ्य लोगों पर कृपा करके सदा उनका उपकार ही किया करते हैं। परन्तु वे अपने दोषों से उपकार को श्रनुपकार ही माना करते हैं। इसलिए हम प्रार्थना करते हैं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा अपनी कृपा से उन मनुष्यों को सब बुरे कामों से हटाकर सत्यमार्ग में सदा प्रवृत्त करें।

संवत् १९३६ मि० मार्ग शुक्त १४ शनिवार।

१. यहां 'विन्नान्' पाठ चाहिये । यु॰ मी॰ ।

२. २७ दिसम्बर सन् १८७६।

# ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

[१] उर्दू पत्र (१५७)

[533]

जनाब मुंशी इन्द्रमन जीव साहब आनिन्दत रहिये!

नमस्ते ! ५९९ पंचसौ निनानवें जिल्द सन्ध्याभाष्य मुरसले आपकी पहुंची । हम्बुल ईमा आपके मैं यहां चिन्द्रका तलाश कर रहा हूँ । अनकरीय बशरते दस्तयाची अरसाल खिदमत होगी । कैफीयत यहां की यह है कि जमीअ असवाब आपेखाने का मय कागज व रौशनाई व प्रूफ सीट वगैरा के कलकत्ता से यहां आ गया। व ५ पाँच मन टाइप तो राजा साहब ने मुरादावाद से मेरे पास मेज दिये हैं। व करीब प आठ मन के कलकत्ते से खरीद किये गये हैं गरज कि अन्दर एक महीने के कार आपेखाने का इजरा हो जावेगा। मेरा कस्द है कि पेशतर शिचा पुस्तक जो छोटी व हाल में तसनीफ हुई है अपवाई जावे। व बाद उसके दूमरी किताबें जो काबिल निवश्त खवांद हैं अपवाई जावें। व जब कार आपेखाने का बखूबी इजरा हो जावेगा तब वस्बई से बुला वेदमाध्य का कारखाना उठवा कर बनारस में जारी किया जावेगा।

अव यहां रूपये के लिए कमाल दिकत है। व यह कारखाना सिर्फ आप लोगों की उम्मीद पर चलाया जाता है आगाजकरदय सास मासाह।

इसलिये आप बराये मेहरबानी ला० श्यामसुन्दर से कह कर अरदूनी महकमा जहां २ जिस कदर रूपया जमा हो यकजा कराकर मेरे पास भेज दीजिये। ताकि इजराय कार में तब क्कुफ व तसाहुल न हो। अब बनिसवत निकालने अखबार के क्या कस्द हैं। मेरी दानिस्त में तो अगर अखबार अंग्रेजी व हिन्दी व उर्दू तींनों एक ही परचे में हों तो निहायत सुनासिब होगा। या जैसी राय शरीफ हो वही अनसब है। बराये मेहरबानी द्वीरए निकालने अखबार के जो तजवीज आप की मुसम्मि हो उसको तहरीर फरमाइये। बाकी कैफियत यहां की बदस्तूर है। हनूज यहां के परिडत शास्त्रार्थ करने के लिये मुसतइद नहीं हुए। जैसा हाल होगा उस से आप को मतले करूंगा। फक्त १० जनवरी सन् १८८० ई०।

द्रतखत

[ द० दयानन्द सरस्वती ]

१. यह उर्दू पत्र काशी से मुरादाबाद भेजा गया था। मूल पत्र मुंशो जी के पोते ला॰ भगवतसहाय के पास लिफाफे के अन्दर मुरादाबाद में है। इसकी प्रतिलिपि ता॰ १० नवम्बर सन् १६२६ को म॰ मामराज जी ने उन के स्थान मुरादाबाद से प्राप्त की।

२. पौष कृष्ण १३ शनिवार सं० १६३६ । यु० मी० ।

काशी, सं० १९३६]

पत्र (१६१)

१७९

[26]

पत्रांश (१५८)

[२१२]

[मुंशी समर्थदान मुम्बई]
तुम सब काम उठाकर बनारस चले आश्री।
[लगभग ता० १७ जनवरी १८८० काशी]

[2]

पत्र सूचना (१५९)

[२१३]

[मैडम व्लेवेटस्की के नाम]। व लाहौर समाज से श्रंग्रेजी भाषान्तर मुम्बई समाज को गया श्रीर वहां से मैडम को। जनवरी १८८० का श्रारमभ

[3]

पत्रांशं (१६०)

[२१४]

[थियोसोफिस्ट के सम्पादक]

मजिग्ट्रेट मिश्ट बाल ने मेरे उस पत्र का जो मैंने उनकी आज्ञा के प्रतिवाद के रूप में भेजा था और जिस में कुछ बातें पूछी थीं नोटिस तक नहीं लिया।

[3]

पत्र सूचना (१६१)

[२१५]

[लेफ्टिनेस्ट गवर्नर] काशी में मजिस्ट्रेट की खाज्ञा से व्याख्यान बन्द करने के सम्बन्ध में।

- १. श्री पं॰ कालूराम जी रामगढ़ के नाम मुंशी समर्थदान जी ने ता॰ २० जनवरी १८८० की मुम्बई से एक पत्र लिखा था। उसमें श्रमली सूचना है —स्वामी जी का पत्र श्राज श्राया है उन्होंने लिखा है कि "तुम सब काम उठा कर बनारस चले श्राश्रो।" उक्त पत्र हमारे संग्रह में सुरिक्ति है। यु॰ मी॰।
  - २. पौष शुक्क ६, शनिवार, सं॰ १६३६ । यु॰ मी॰।
- ३. इस पत्र का संकेत मुम्बई समाज के मन्त्री श्री सेवकलाल ऋष्णदास के पत्र में है। देखो महात्मा मुंशीरामकृत पत्रव्यवहार पृ०२६५। ४. पौष सं०१६३६। यु॰ मी०।
- प्र. थियोसोफिस्ट फरवरी सन् १८८० (माघ सं ० १६३६) में उद्धृत । देखो पं० घासीरामजी सम्पादित जी० च० पृष्ठ पृष्ट्य । यु० मी० ।
- ह. इसकी सूचना के लिए देखों पं॰ घासीराम जी द्वारा सम्पादित जीवनचरित्र पृष्ठ ५६४। यह पत्र सम्मवतः जनवरी १८८० के उत्तरार्ध (पीष शुक्त पत्न सं॰ १६३६) में भेजा गया होगा। बा॰ मूलराज के पूर्ण संख्या २२२ के पत्र में भी इसका संकेत है।

उपर्युक्त पत्र के उत्तर में यू॰ पी॰ सर्कार के जूनियर सेकेट्री 'पी॰ समीटन'' साहब ने सं॰ ४६१ ता॰ २४

१८०

## ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञापन

काशी, सन् १८८०

[8]

## पत्र सूचना (१६२)

[२१६]

चीफ किमश्नर] -काशी में मजिम्ट्रेट की स्राज्ञा से न्याख्यान बन्द करने के सम्बन्ध में।

[9]

उर्दू पत्र (१६३)

[२४७]

चौधरी लक्ष्मणदास जी आनन्दित रहो।

बाद नमस्ते त्रां के त्रापने जो पापोश पेशतर भेजा था वह भी बड़ा था। यह तो निहायत बड़ा व चौड़ा है। देखिये इसमें आप का आठ आने पारसल व चार आने रजिस्ट्री में फजूल सर्फ हुआ। अगर मालगाड़ी में आता तो शायद कम खर्च होता। पापोश तो हर जगह उमदा किसम के द्स्तयाब हो सक्ते हैं। श्रब बदून हमारे मंगवाये कोई चीज भेजने की तक्लीफ न उठाइयेगा । फकत। बाकी हाल बनारस का बदस्तूर है। होर कोई पंडत शास्त्रार्थ के लिये मुस्तइद नहीं हुआ। जो कुछ आइन्दा हाल होगा लिखेंगे। फकत।

मुत्रका २८ जनवरी सन १८८०।

[9]

पत्र सूचना (१६४)

शिकदेवप्रसाद नसीराबाद ]। फरवरी १= ५० के आरम्भ में लिखा गया।

[3]

पत्र सूचना (१६५) बाबू श्रीप्रसाद जयपुर अष्टाध्यायी [भाष्य] बहुत शीघ्र छपने वाला है।"

फरवरी १८८०

[२१२]

फरवरी सन १८८० (माघ शु० १३ सं० १६३६) में जो पत्र लिखा वह इस प्रकार था—

"दयानन्द सरस्वती स्वामी का निवेदन पत्र पढ़ा गया, जिस में उन्हों ने बनारस के मजिस्ट्रेट की श्राज्ञा की कि वह बनारस में धार्मिक विषयों पर व्याख्यान न दें शिकायत की है। श्राज्ञा हुई कि निवेटक को सूचना दी जावे कि लेफ्टिनेस्ट गवर्नर व चीफ कमिश्नर की सम्मित में उक्त श्रवसर पर मजिस्ट्रेंट ने ठीक कार्यं किया था स्त्रौर निवेदन स्रस्वीकार किया जाता है।" इनके संम्वन्ध में पृष्ठ १६७ टि० ४ देखो।

यह पत्र पं॰ घासीराम जी द्वारा सम्पादित जीवन चरित्र पृष्ठ ५६४ पर उद्घृत है। यु॰ मी॰।

- १. इसकी सूचना पं॰ घासीराम सम्पा॰ जी० च० पृष्ठ ५६४ पर है। यु॰ मी०
- २. इस पत्र की उर्दू प्रतिलिपि म॰ मामराज जी ने मेरठ निवासी लाला रामशरण दास जी के पत्रों में से जुलाई सन् १६४५ में खोजी। प्रतिलिपि हमारे संग्रह में सुरिच्चित है। इन के संबन्ध में पृष्ठ १६७ टि० ४ देखी।
  - ३. माघ कृष्ण १ बुधवार सं० १६३६। यु० मी०।
  - ४. शुकदेवपसाद के पत्र में निर्देश । माघ सं० १९३६ ।
  - ५. बाबू श्री प्रसाद जयपुर के १७ मार्च १८८० (फा० शु० ८ सं० १९३६) से पूर्व के पत्र में है।

काशी, सं० १९३६]

पत्र (१६६)

8=8

[२८]

विज्ञापन पत्र'

[२२०]

सब सज्जां पर विदित हो कि अब वेदमान्य तेरहवें १३ श्रंक पर्यन्त मुम्बई में छपेगा, इस के आगे १४ वें श्रंक से ले कर आगे आगे काशी में आर्यप्रकाश यंत्रालय में सदा छपा करेगा। मैंने इस यंत्रालय में अधिष्ठाता मुन्शी बखतावरसिंह मन्त्री आर्य्यसमाज शाहजहांपुर को नियत किया है, इस लिए सब प्राहक और दूसरे सज्जां से यह निवेदन हैं कि इस के आगे अब जो कुछ वेदमान्यादि पुस्तकों के लेने के लिये पत्र और मूल्यादि भेजा चाहें सो उक्त यंत्रालय में उक्त स्थान पर उक्त मुन्शी जी के पास भेजा करें। और इस के आगे बाहर के लोग मुम्बई में मुन्शी समर्थदान के समीप वेदमान्य संबंधी कार्य्य के लिए पत्र अथवा मूल्य आदि न भेजें क्योंकि १३ श्रंक छपे पीछे मुम्बई में इस का कुछ भी संबंध नहीं रहेगा, किन्तु मुम्बई के लोग दूसरा विज्ञापन दिया जाय तब तक सब व्यवहार मुम्बई में ही रक्खें।

( द्यानन्द सरस्वती )

[8]

पत्र (१६६)

[२२१]

मुंशी मनोहरलालजी [त्रानन्दित] रहो !

स्राप ले जाइये सव, परन्तु जितना शोधा जाय उतना भेज दें। वा सब को शोध के शीघ

१. यजुर्वेद श्रीर ऋग्वेदभाष्य के बारहवें श्रङ्क पर छपा। यह श्रङ्क कार्तिक मांस सं० १९३६ का है। [यह श्रङ्क देर से प्रकाशित हुश्रा था।]

[इस ग्रङ्क से सम्बन्ध रखने नाला एक विज्ञापन यजुर्वेद ग्रौर ऋग्वेद भाष्य के १३ वें ग्रङ्क (मार्गशीर्प १९३६) पर छपा था। ग्रावश्यक होने से हम उसे नीचे दे रहे हैं।

### "विज्ञापन

(१) सब सजनों को विदित हो कि मुम्बई में १३ श्रङ्क छपने का था सो छप चुका श्रव पीछे सब काम काशी श्रर्थात् बनारस में रहेगा। १२ श्रङ्क में काशों के यन्त्रालय का नाम 'श्रार्थ्यप्रकाश' छपा था उसके बदले ''वैदिक'' यन्त्रालय नाम रक्खा गया है इस लिये श्रव पीछे वेदमान्य सम्बन्धी पत्र व्यवहार मुम्बई श्रीर बाहर के सब लोगों को मुन्शी बखतावरसिंहजी प्रबन्धकर्ता ''वैदिक'' यन्त्रालय काशी से करना चाहिये। मुम्बई में इसका कुच्छ काम नहीं है।"

स के साथ दो विज्ञापन श्रीर छुपे हैं। श्रन्त में मुन्शी समर्थदान के इस्तात्त्र हैं श्रतः यह विज्ञापन

भी उन्हीं की त्र्योर से छुपा होगा। यु॰ मी॰।

२. श्री स्वामी जी ने कुरान का माषानुवाद करवा रखा था [देखो पृ० १४१ की टिप्पणी २]। मुंशी मनोहर लाल रईस गुड़ हुद्धा. पटना निवासी अरबी के अञ्छे विद्वान् थे। वे ही उस अनुवाद को शोधने के लिए अपने घर ले गये। यह पत्र उसी अनुवाद की पुस्तक में पड़ा रहा। हमारे मित्र श्री साधु महेशप्रसाद मौलवी पाजिल प्रो० हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी, उस अनुवाद को अजमेर में देखने गये। वहीं से वे इस पत्र की प्रतिलिपि कर लाये। वह प्रतिलिपि उन्होंने अपने पत्र ७---१६४३ के साथ सोलन में हमारे पास मेजी।

१=२

[काशी, सन् १८८०

भेजियेगा। क्योंकि इस का काम हमको बहुत पड़ता है। और जगन्नाथ के हाथ और भी सब पूरे पत्रे भेजते हैं। आप संभाल लीजिये।

मि० मा० ३० मंगल'

१०४ से लेकर १२५ पृष्ठ सब हैं।

[द्यानन्द सरस्वती]

[c] To

पत्र (१६७)

[२२२]

Lala Mulraj, M. A., Officiating Extra Assistant Commissioner, Multan.

Benares, dated 16th February 1880.3

NAMASTE,

Your letter, dated 11th February 1880, received. It has given me great pleasure to hear of your appointment as an Extra Assistant Commissioner. May God raise you still higher. As regards matters over here, the Lieutenant-Governor has as yet sent us no reply. The Magistrate Sahib verbally tells us to commence lecturing, but shrinks from giving the order in writing. We have come to know that the Lieutenant-Governor forwarded our application to the Magistrate for his remarks, and the Magistrate returned it (about one week ago) saying that he had stopped the lectures on account of the Muharram procession, fearing lest a quarrel may not arise. We expect to get a reply in a day or two. We have not thought it proper to commence lecturing without a written order of the Local Government. This will settle the matter once for all.

We will commence our series of lectures with great earnestness. The press has been started and named Vedic Pres. A notice to that effect is sent separately to-day. Namaste to all.

(Sd.) Dayananda Saraswati.

मार्गशीर्ष ३० संवत् १६३४ मंगल तदनुसार ४ दिसम्बर १८७७ को पड़ता है। ग्रौर माघ ३० संवत् १६३६ मंगल, १० फरवरी १८८० को पड़ता है। यही सं० १६३६ की तिथि ठीक प्रतीत होती है।

२. माघ ग्रु॰ ६ सोमवार सं० १६३६ । यु॰ मी॰ ।

काशी, सं० १९३६]

पत्र (१६८)

१=३

### [भाषानुवाद]

लाला मूलराज एम० ए० स्थानापन्न ऐकस्ट्रा त्र्यसिस्टेंट कमिश्रर, मुलतान बनारस, १६ फरवरी १८८०

नमस्ते !

श्चाप का पत्र, ११ फावरी १८८० का मिला। श्चाप की ऐकस्ट्रा श्चिसर्टेंट किमश्चर पद पर नियुक्ति सुन कर मुमें बड़ी प्रसन्नता हुई। परमात्मा श्चाप को श्चौर भी उन्नत करे। यहां का हाल यह है कि लाट साहब ने श्वभी तक हमें कोई उत्तर नहीं दिया। मिजिस्ट्रेट साहिब मौिखक रूप से हमें व्याख्यान श्चारम्भ करना कहते हैं पर लिखित श्चाइता के देने में संकोच करते हैं। हमें पता लगा है कि लाट साहब ने हमारा प्रार्थनापत्र मिजिस्ट्रेट को उस की सम्मत्यर्थ भेजा था, श्चौर मिजिस्ट्रेट ने (लग भग एक सप्ताह हुआ) उसे यह कह कर लौटा दिया था कि उस ने मुहर्म मेले के कारण व्याख्यान बन्द किये थे, इस भय से कि कोई मगड़ा न उठ पड़े। हम एक या दो दिन में उत्तर की श्चाशा रखते हैं। हम ने स्थानीय सरकार की लिखित श्चाइत विना व्याख्यान श्चारम्भ करना उचित नहीं सममा। इस से इस बात का सदा के लिये निर्णय हो जायगा।

हम अपने व्याख्यानों का क्रम बड़े उत्साह से आरम्भ करेंगे। यन्त्रालय का आरम्भ कर दिया गया है। इस का नाम वैदिक यन्त्रालय रखा गया है। इस विषय का एक विज्ञापन आज प्रथक भेजा जाता है। सब को नमस्ते।

ह० दयानन्द सरस्वती

[6]

पत्रांश (१६८)

[२२३]

[मिस्टर सिनेट सम्पादक पायोनियर प्रयाग] आप काशी आने का कष्ट न उठावें, मैं स्वयं ही प्रयाग आकर आपसे मिल्ंगा।

१. माघ गु॰ ६ सोमवार सं॰ १६३६। यु॰ मी॰।

२. मूलपत्र त्रार्यभाषा में था। उस का श्रंग्रेजी श्रनुवाद दि॰ गुरुकुल मैगजीन, गुजरांवाला, श्रक्त्वर-दिसम्बर, सन् १६०८, पृ॰ २४८ पर छपा है। ला॰ मूलराज जी ने कहा था कि गुजरांवाला गुरुकुल के संचालक ला॰ रलाराम जी की श्रसावधानी से मूलपत्र चूहों से नष्ट किया गया।

३. देखो पं वासी राम जी सम्पादित जीव चव पृष्ठ ४६७।

पायोनियर प्रयाग के सम्पादक मिस्टर सिनेट साहब ने श्री स्वामीजी महाराज को ख्रंग्रेजी में १८ फरवरी सन् १८८० को जो पत्र भेजा था उसके उत्तर में स्वामीजी ने उपर्युक्त पत्रांश लिखा था। मिस्टर सिनेट का मूलपत्र जो श्री मामराज जी लाये थे, श्रानेक बहुमूल्य पत्रों के साथ लाहौर में देशविभाजन के समय नष्ट हो गया।

१८४

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञापन

[काशी, सन् १८८०

12]

पत्र-सूचना (१६९)

[338]

बाबू श्रीप्रसाद जयपुर । व्याकरण सम्बन्धी पुस्तकों के सम्बन्ध में ।

[28]

पत्र-सूचना (१७०)

[२२५]

उद् पत्र

मुन्शी समर्थदान मुन्बई। र पुस्तकों का महसूल आदि अधिक लगा। लगभग २० फरवरी १८८० बनारस

[3]

लेख

[२२६]

श्राद्ध (श्रोरिजन) अर्थात् असली है। श्राद्ध शब्द के अर्थ श्रद्धा के हैं। पुत्र को माल पिता आदि की सेवा श्रद्धा से उनके जीवन पर्यन्त करना अवश्य है। परन्तु जो लोग मरे हुए माता पिता का श्राद्ध करते हैं वह असली नहीं है क्यों कि जीते माता पिता आदि की सेवा श्रद्धा से करनी श्राद्ध कहाता है। मृतक के लिये पिएड देना व्यर्थ है क्यों कि मरे हुए को पिएड देने से कुछ लाभ नहीं होता। विद्यानन्द सरस्वती

[9]

पत्र-सूचना (१७१)

[२२७]

गोपालराव हरि फर्रुखाबाद । लग भग १० मार्च १८८० [फाल्गुन कु० ३० सं० १९३६]

[६]

पत्रांश (१७२)

[१२८]

Though I am very anxious that my autobiography which you are publishing in your journal, should be completed, I have not yet been able

१. इस का संकेत बा॰ श्रीप्रसाद जयपुर के पत्र में था। वह पत्र लाहौर में नष्ट हो गया। यु॰ मी॰।

२. इस का संकेत मुंशी समर्थदान के पत्र में था। वह पत्र लाहीर में नष्ट हो गया। यु॰ मी॰।

३. किसी पुरुष ने सम्पादक थ्यामोफिस्ट को ८ फरवरी १८८० को एक पत्र लिखा । उसमें उनसे आद विषय में उनकी ख्रौर विशेष कर स्वामी दयानन्द सरस्वती की सम्मति मांगी थी । वह मूल द्यौर स्वामी जी की ख्रोर से उसका पूर्वोक्त उत्तर थ्यासोफिस्ट मार्च १, १८८० [फा० कु० ५ सं० १९३६] में छुपा है ।

४. इस पत्र का संकेत गोपालराव के १८ मार्च ८० फा॰ शु० ७ सं० १६३६] में है [यह पत्र

लाहीर में नष्ट हो चुका है।

काशी, सं० १९३७]

पत्र (१७४)

१८५

to give the necessary time to it. But as soon as possible I will send the narrative to you.....

[भाषानुवाद]

यद्यपि मैं बहुत उत्सुक हूँ कि मेरी स्वयंतिखित आत्मकथा जिसे आप अपनी पत्रिका में प्रकाशित कर रहे हैं, पूर्ण हो जावे तथापि अभी उसे आवश्यक समय नहीं दे सका । किन्तु जितना शीघ हो सकेगा मैं आप को आत्मकथा मेज दूँगा.....।

[३] पत्र-सूचना (१७३)³ - [२२९] किशवलाल निर्भयराम सूरत] संस्कारविधि की छपाई के हिसाब के सम्बन्ध में। ३१ मार्च १८८० चित्र कु० ५ बुध सं० १९३६] काशी।

[१] पत्र (१७४)

[२३०]

॥ ओम्॥

सं० १९३७ चैत्र शुदी १२ गुरुवार । उ राजा शिवप्रसादजी श्रानन्दित रहो !

श्रापका चैत्र शुक्त ११ बुधवार का लिखा पत्र मेरे पास श्राया । देख के श्रापका श्रमिप्राय विदित हुआ । उस दिन श्राप से श्रीर मुक्त से परस्पर जो २ बातें हुई थीं वे तब श्रापको श्रवकाश कम

१. यह पत्रांश ध्यासोफिस्ट ऐपिल सन् १८८० चैत्र १६३७ के पृ० १६० पर छपा है। इस से पहले निम्नलिखित सूचना है। ग्रावश्यक समक्त कर वह भी छापी जाती है।

THE FOOLISH EMBARGO LAID UPON SWAMIJI DAYANAND SARASWATI BY MR. WALL, THE BENARES MAGISTRATE, HAS AT LAST BEEN RAISED, AND THAT LEARNED AND ELOQUENT PANDIT WAS TO HAVE RESUMED HIS LECTURES ON THE EVENING OF THE 21ST MARCH. BEFORE GRANTING THE PERMISSION-WHICH THE SWAMI OUGHT NEVER TO HAVE BEEN OBLIGED TO ASK-MR WALL HAD A CONVERSATION OF NEARLY AN HOUR WITH HIM. THE EXCUSE, OFFERED BY THE LIEUTENANT GOVERNOR FOR THE ACTION IN THE PERMISES, WAS THAT IT WAS NOT SAFE FOR THE SWAMI TO LECTURE IN THE MOHURAM HOLIDAYS I THE SUBJECT OF THE OPENING DISCOURSE WAS "THE CREATION."

त्रधात "बनारस के मैजिस्ट्रेट मिस्टर वाल द्वारा स्वामी दयानन्द के ऊपर लगाई गई रोक अन्त में उठा ली गई और वह विद्वान और वाग्मी पिरडत २१ मार्च सायङ्काल को अपना व्याख्यान पुनः आरम्म करने वाले थे। अनुमित देने से पूर्व, जो अनुमित मांगने के लिये स्वामी जी कभी भी विवश नहीं किये जाने चाहिये थे, मि॰ वाल ने उनके साथ लगभग एक घरटा वार्तालाप किया। लेफिनेस्ट गवर्नर ने इस कार्य के लिये जो बहाना बताया था वह यह था कि मुहर्रम के त्यौहार पर व्याख्यान देना स्वामी जी के लिये सुरद्धा की हिं से ठीक नहीं था, व्याख्यान का विषय सृष्टि था।"

होष्ट संठोक नहां था, व्याख्यान का प्याप्य पाट गा। २. इस पत्र का संकेत म० मुंशीरामकृत पत्रव्यवहार पु० २७८ पर है।

३. २२ एप्रिल १८८०।

४. २१ एप्रिल १८८० ।

होने से मैं न पूरी बात कह सका और न आप पूरी बात सुन सके, क्योंकि आप उन साहबों से मिलने को आए थे। आप का वही मुख्य प्रयोजन था। पश्चात् मेरा और आपका कभी समागम न हुआ जो कि मेरी और आपकी बातें उस विषय में परस्पर होतीं। अब मैं आठ दश दिनों में पश्चिम को जाने वाला हूँ। इतने समय में जो आपको अवकाश हो सके तो मुक्त से मिलिये। फिर भी बात हो सकती है। और मैं भी आपको मिलता, परन्तु अब मुक्तको अवकाश कुछ भी नहीं है इससे मैं आप से नहीं मिल सकूंगा क्योंकि जैसा सम्मुख में परस्पर बात हो कर शीच सिद्धान्त हो सकता है, वैसा लेख से नहीं, इसमें बहुत काल की अपेना है।

श्रापका प्रश्न १ श्रापका मत क्या है ? -२ श्राप वेद किसको मानते हैं ? ३ क्या उपनिषदों को वेद नहीं मानते ?

४ क्या श्राप ब्राह्मण पुस्तकों को वेद नहीं मानते ? मेरा उत्तर

- १ वैदिक।
- २ संहितात्रों को।
- ३ मैं वेदों में एक ईशावास्य को छोड़ के अन्य उपनिषदों को नहीं मानता'। किन्तु अन्य सब उपनिषद् ब्राह्मण् अन्थों में हैं। वे ईश्वरोक्त नहीं हैं। ४ नहीं, क्योंकि जो ईश्वरोक्त है वही वेद होता है जीवोक्त नहीं। जितने ब्राह्मण प्रन्थ हैं वे सब ऋषि मुनि प्रणीत और संहिता ईश्वर प्रणीत है। जैसा ईश्वर के सर्वज्ञ होने से तदक्त निर्भान्त सत्य और मत के साथ स्वीकार करने के योग्य होता है वैसा जीवोक्त नहीं हो सकता क्योंकि वे सर्वज्ञ नहीं। परन्तु जो वेदानुकृत ब्राह्मण प्रनथ हैं उनको मैं मानता और विरुद्धार्थों को नहीं मानता हुं। वेद् स्वतः प्रमाण श्रौर ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं। इससे जैसे वेद्विरुद्ध ब्राह्मण प्रन्थों का त्याग होता है वैसे ब्राह्मण प्रन्थों से विरुद्धार्थ होने पर भी वेदों का परित्याग कभी नहीं हो सकता क्योंकि वेद सर्वथा सब को माननीय ही हैं।

२. प्रश्न श्रीर उत्तर का भाग एक दो शब्दों के श्रन्तर से भ्रमोच्छेदन में भी छपा है।

१. श्रर्थात् ईशोपनिषद् को स्वामी जी महाराज यजुर्वेद के श्रन्तर्गत मानते हैं। इसी कारण पृ० ३६ पंक्ति २, ३ में जो १० उपनिषदें गिनाई हैं उन में ईश का उछेख नहीं है। दश संख्या की पूर्ति "मैन्नेयी" को गिन कर की है। यह भी ध्यान रहे कि स्वामी जी महाराज ईशोपनिषद् के माध्यन्दिन संहितानुसारी पाठ को ही वेदान्तर्गत मानते हैं, कायव शाखानुसारी पाठ को नहीं। क्योंकि श्री स्वामी जी महाराज माध्यन्दिन संहिता को ही मूल वेद मानते हैं। उसी का उन्हों ने भाष्य किया है। कायव संहिता को उसकी शाखा अर्थात् व्याख्यात्मक पाठ मानते हैं। इसिलए उन के मत में कायव शाखानुसारी ईशोपनिषद् माध्यन्दिन ईशोपनिषद् की व्याख्यात्म होने से उसकी पृथक् गण्ना की कोई श्रावश्यकता नहीं रहती। यु० मी०।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन।

राजाणिव प्रसार्ती स्नानित रही
स्नापका पत्र में रेपास स्मापा देखकर स्मित्र मानासि
या रसके से मुनको निश्चित हुमा कि स्नापने वे हों से लेके
एक मी माना पर्य निवास कि माना है इस सिये स्मापको में रिक मिंदी में तु के
सिक सा स्मित्र के सियाप सि में में मिंदी के भी प्रस्त माने से सिक में से कि मिंदी में ति का हि
सिक का स्मित्र में में के सित्र में मान सि माने सा सि माने से मान सि मान सि

ऋषि द्यानन्द सरस्वती का त्राद्यन्त स्वहस्तितिखित पत्र । पृ० १८७ पर मुद्रित ।

काशी, सं० १९३७]

पत्र (१७५)

१५७

श्रव रह गया यह विचार कि जैसा संहिता ही को ईश्वरोक्त निर्श्वान्त सत्य वेद मानना होता है वैसा ब्राह्मण प्रन्थों को[क्यों]नहीं, इसका उत्तर मेरी बनाई ऋग्वेदादिमान्यभूमिका के नववें पृष्ठ से ९ लेके प्र श्रद्धां पृष्ठ तक वेदोत्पत्ति, वेदों का नित्यत्व, श्रीर वेदसंज्ञाविचार विषयों को देख लीजिये। वहाँ मैं जिसको जैसा मानता हूँ सब लिख रक्खा है। इसी को विचार पूर्वक देखने से सब निश्चय श्रापको होगा कि इन विषयों में जैसा मेरा सिद्धान्त है वैसा हो जान लीजियेगा ॥

(दयानन्द सरस्वती) काशी।

[2]

पत्र (१७५)

[२३१]

राजा शिवप्रसाद जी आनन्दित रहो !

श्रापका पत्र मेरे पास श्राया देखकर श्रमिप्राय जान लिया। इस से मुक्त को निश्चय हुश्चा कि श्रापने वेदों से लेके पूर्वमीमांसा पर्यन्त विद्या पुस्तकों के मध्य में से किसी भी पुस्तक के राज्दार्थ संबंधों को जाना नहीं है। इसलिये श्राप को मेरी बनाई भूमिका का श्रार्थ भी ठीक र विदित न हुश्चा, जो श्राप मेरे पास श्राके समक्तते तो कुछ समक्त सकते। परन्तु जो श्रापको श्रपने प्रश्नों के प्रत्युत्तर सुनने की इच्छा हो तो स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती व बालशास्त्री जी को खड़ा करके सुनियेगा तो भी श्राप कुछ र समक्त लेंगे, क्योंकि वे श्राप को समक्तवेंगे तो कुछ श्राशा है समक्त जांयगे। भला विचार तो कीजिये कि श्राप उन पुस्तकों के पढ़े विना वेद श्रीर ब्राह्मण पुस्तकों का कैसा श्रापस में सम्बन्ध, क्या र उन में हैं श्रीर स्वतः प्रमाण तथा ईश्वरोक्त वेद श्रीर परतः प्रमाण श्रीर श्रवि मुनि कृत ब्राह्मण पुस्तक हैं इन हेतुश्रों से क्या र सिद्धान्त सिद्ध होते श्रीर ऐसे हुए बिना क्या र हानि होती है इन विद्यारहस्य की बातों को जाने बिना श्राप कभी नहीं समक्त सकते।।

(दयानन्द सरस्वती)

सं० १९३७ मि० वै० व० सप्तमी शनिवार

मूल पत्र अब हमारे संग्रह में सुरिक्त है । इस पर अधिकांश श्री स्वामी जी के हाथ का संशोधन
 है । इसी की प्रतिलिपि राजा जी को मेजी गई होगी ।

२. इस स्थल पर राजा जी ने अपने निवेदन में एक टिप्पण दिया है। उस में उन्होंने इस बात पर हास्य किया है कि स्वामी जी महाराज पूर्वमीमांसा पर्यन्त ही पढ़े थे, उन्होंने उत्तरमीमांसा न देखी थी। राजा जी इस पर बड़े प्रसन्न दीखते हैं, परन्तु यह भी उनका अज्ञान है। उन्हें यह ज्ञान नहीं कि अन्तिम आर्षप्रन्थकार जैमिनि मुनि हुए हैं। उन्हीं का बनाया पूर्वमीमांसा है। प्रन्थ गणना में चाहे वह पहले गिना जाय वा पीछे, परन्तु रचिता की दृष्टि से जैमिनि ही अन्तिम है, अतएव अपूर्वि का उपर्युक्त लेख सत्य ही है। राजा शिवप्रसाद के निवेदन में मुद्रित।

३. १ मई १८८० ।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रौर विज्ञापन

[लखनऊ, सन् १८८०

[8]

१८८

पत्र-सूचना (१७६)

[२३२]

[पं० ज्वालादत्त फर्रुखाबाद] ज्वाला दत्त को बुलाने के विषय में।

[2]

पत्र (१७७)

[२३३]

मुंशी बखतावर सिंह जी आनिन्दत रही

कल एक पत्र आपके पास भेजा है पहुँचा होगा। आज यहां आर्थसमाज का आरम्भ होगा। फिर दो दिन और व्याख्यान देंगे। बुववार के रोज व्याख्यान देंगे वा न देंगे, परन्तु रहेंगे यहीं। बृहस्पति[वार] के प्रातःकाल कान्हपुर कम्पू को जायंगे। खरवूजे यहाँ अव तक चले ही नहीं ठीक २। और जो चले हैं वे पूर्ववायु से फीके भी हैं जैसे कि काशी में। रामाधार वाजपेयी से हमने कह दिया कि जब अच्छे आने लगें तब तुम्हारे पास भेज देंगे।

पिंडत इन्द्रनारायण के पास नीचे लिखे हुए पुस्तक भेज दैना—

ऋग्वेद् का अङ्क आठवां। दशवां

१ सत्यार्थप्रकाश

51 80

१ संस्कारविधि

यजुर्वेद का श्रङ्क । श्राठवां । दशवां । बारहवाँ

१ वर्णोचारणशिचा

न। १० । १२ ।

१ संस्कृतवाक्य प्र०

वहां रह गये हैं सो सेठ सेवाराम काल्राम

१ भ्रान्तिनिवारण

की दूकान में भेज देना कान्हपुर में

१ आर्थोहेश्यरत्नमाला

श्रीर स्त्रीणताद्धित के पत्रे यहाँ भीमसेन ने नहीं रखे हैं। श्रीर किस पत्रे में कहां से आगे लिखा जायगा कि कौन पंक्ती कहां तक लिखा गथा श्रीर कहां से लिखना होगा वहां चिन्ह कर देना। जिस २ चिठी में जो २ लिखें उस २ का ख्याल रखा करना। फिर दूसरी वखत वह विषय न लिखेंगे। पिछल इन्द्रनारायण ने ५) क० हमारे पास जमा किये। उनमें )।। टिकट का श्रीर ४।।। )।। पुस्तकों के का दाम जमा हुआ )।। इस के आगे जो महसूल लगे सो उन से वसूल कर लेना। वा श्रीर जो रामाधार वाजपेयी के पास पुस्तक भेजें उनके साथ भेज देना तो रामाधार को लिख भेजना कि ये पुस्तक पिछल इन्द्रनारायण के पास शीघ भेज देवें।

श्रीर जो ब्रह्मचारी काशी में रसोई करता था वह भाग उठा था सो यहां मिला हमारे पास है। भैरव कहार एक रूपया नरसिंह थापा को दिलाता है। सो भीमसेन उसके पास नेपाली रानी

३. लखनक में।

४. अर्थात् १३ मई १८८० को जायेंगे ।

१. स्त्रार्थसमाज फर्र खाबाद के १७-५-८० (वैशाख शु० ८ सोम सं० १६३७) के पत्र में श्री स्वामी जी के ३ पत्र पहुंचने का संकेत है। जिन में पं० ज्वालादत्त को बुलाया था। देखो म० मुन्शीराम जी द्वारा सं० पत्र व्यवहार पृष्ठ ३६५, ३६६।

२. पत्र, लेखक ने लिखा है त्रीर श्री स्वामी ने त्रानेक स्थानों पर बढ़ाया तथा शोधा भी है।

लखनऊ, फरुखाबाद, सं० १९३७]

पत्र (१८०)

858

के स्थान में जाके रसीद लेके १) रू० उसको देदे । श्रौर चपरासी को पहेचान करवादे । जब मैरव उस को रूपया दिलवाने तब उसके पास पहुंचा दिया करे ॥

मिती वैसाख कृष्ण ३० सं० १९३७।

द्यानन्द सरस्वती?

[\$]

पत्र (१७८)

[२३४]

मुन्शी बखतावरसिंह जी आनिन्दत रही!

वैशा[ख] सुदी ११° को कान्हपुर से फरुखाबाद आनन्दपुर में पहुँच कर टोकाघाट पर कालीचरण रामचरण के बाग में ठहरे हैं। पिछले पत्र में वर्षमा[न] जो लिखा है सो सब करते होंगे। और कलकत्ते से टैपादि आ गया होगा तो वेदमाध्य का आरंभ कर दिया होगा और जो न आया हो तो चिठी के देखते हि कलकत्ते जाके टैपादि लाके शीघ्र ही वेदमाध्य का आरंभ चलाओ। और दूसरे पुस्तक का संधिविषयक का भी शीघ्र २ छपना चाहिये। व्यवहारमानु का पुस्तक छप गया हो तो भेजदो। और पिछले पत्र के लिखे मुताबिक सब काम करो। और पिछले पत्र का जवाब लिखो। सबसे नमस्ते कह देना।

मिती वैशाख शुक्त १२ शुक्रवार सं० १९३०।<sup>४</sup>

द्यानन्द् सरस्वती

[8]

पत्र-सूचना (१७९)

[२३५]

मु० बखतावरसिंह बनारस। प ९जून १८८० ह

[4]

पत्र (१८०)

[२३६]

श्रोम

मुन्शी बखतावर सिंह जी त्रानंदित रहो ! दशमी [१०] जून का लिखा हुत्रा पत्र तुमारा त्राया वर्त्तमान विदित हुत्रा । क्या डेड़

- १. ता॰ ६ मई सन १८८० रविवार । छखनऊ से बनारस को मेजा गया ।
- २. ता॰ २४ जुलाई सन् १९४५ को म॰ मामराज जी ने लाला रामशरण दास मेरठ वालों के पुराने पत्रों में से खोजा। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्चत है। जीवनचरितों में लखनऊ से कानपुर जाने का उल्लेख नहीं है। वह इस पत्र से सिद्ध है।
  - ३. २० मई १८८०
  - ४. २१ मई १८८०, फरुखाबाद । मूलपत्र हमारे संग्रह में सुरिच्ति है ।
  - प्. इस पत्र के संकेत वाला पत्र लाहीर में नष्ट हो गया। यु॰ मी॰।
  - ६. क्येष्ठ शुक्ल १ बुघ, सं० १६३७ । यु॰ मी० ।
  - ७. ज्येष्ठ शुक्ल २ बृहस्पतिवार सं० १९३६।

महीना हुआ जब मैं चला था। तब व्यवहारभानु थोड़ा सा वाकी रहा था। क्या अवतक ढेढ़ महीना हुआ बाकी ही पड़ा रहा है। और संधि विषय का भी एक ही फर्मा तैयार हुआ। व्यवहारभानु रहा खंडित। संधिविषय का एक ही फर्मा। अब कहो कोई प्रन्थ पढ़ने के लायक हुआ ? अब जलदी व्यवहारभानु का बाकी फर्मा तैयार करके जहां २ भेजना है भेज दो। और वेदभाष्य का काम भी चलता रहे।

फोंडरी का बंदोबस्त कर लिया अच्छा हुआ। अभयलाल व चुन्नी लाल का ढीलापन मैं खूब जानता हूँ। जब किसी दूसरे साहूकार के यहां काम होगा तब वहां से उठा लिया जावेगा। और भीमसेन को मेजकर तीन अशर्फी और थोड़ा सा सोना है मंगवालो। अथवा जो अरंडीयें उसमें हिसाब किताब करें उनसे कहदों कि हम बाजार में बेंचलेंगे। तो बाबू अविनाशी लाल चौक [खं]में वाले के साथ जो अपना सभासद आर्य स० है बेचलेना। और रुपया अलग ही जमा रखना खर्च मत करना। क्योंकि वह अरंडीन उसके ही लिये हैं। वेदभाष्य का फर्मा हमने देखा तुम भी मिला लो। बंबई के फर्में से आध अंगुल कम है सो जिल्द बांधने में कैसा होगा। और जड़ में आर्वल भी कम रहता है। इस लिये चारों ओर बराबर रहना चाहिये जैसा कि बंबई के छापे में है। परन्तु हां जब वैसा कागज इतना लंबा चौड़ा नहीं मिलता तो इसी में छपवाना होगा। शिव प्रसाद का खंडन हमने तैयार कर लिया है शोध के भेज देंगे। और उसके टाटल पेज पर (रिचता) शब्द (रिचतः) अर्थात् (ता को तः) करदो।

क्या दफ्तरी ने नौकरी छोड़ दी ? मुक्त को मालूम होता है कि अब काम अच्छी तरह चलेगा और तुम चलाओंगे। कल फर्कखाबाद के कंपू में भी शाखा समाज स्थापित हो गया है। जो जो पुस्तक जैसराज गोटीराम के नाम पर फर्कखबाद भेजो वह कालूराम सेवाराम के नाम पर उसी दूकान पर कानपुर कम्पू में रेल पर भेज दिया करो। वहां से फर्कखाबाद चला आवेगा। और उनको चिट्ठी में भी लिखदो कि तुम फर्कखाबाद भेज दिया करो। और जब फर्कखाबाद तक सुधा रेल हो जावे तब जैसराज गोटीराम की दूकान पर सूधा फर्कखाबाद ही भेज दिया करो।

मुन्शी इन्द्रमिण के पास रूपये भेजे या नहीं उनका जवाब लिखो। श्रीर न भेजा हो तो जितना उनने हिसाब करके लिखा हो भेज दो। जब हम नखलऊ में थे तब हमने लिखा था कि रामाधार वाजपेई के पास जो जो पुस्तकें वे लिखें भेज दिया करो। सो तुमने नहीं भेजीं। शायद तुम काम काज में भूल गये होगे। ऐसा न होना चाहिये। उनने तुमारी शिकायत लिखी है। वह कार्ड भी तुमारे पास भेजते हैं देख लेना। जब हम यहां से कहीं को जावेंगे, तुमको इत्तला करेंगे।

श्रीर संधिविषय जो हम ने शुद्ध कर लिखा है सो भी भेज देवेंगे। जैसी कि स्याही वेदभाष्य में तुमने श्रव लगवाई है ऐसी ही लगती रहे। श्रीर श्रभी ये श्रङ्क श्राये हैं। भूल चूक देखके पीछे से लिखेंगे। श्रीर भीमसेन से व्यवहारभानु में शुद्धाशुद्ध पत्र लिखवाके साथ छपवा के लगवादो। क्योंकि

१. त्रारंडीये या त्रारंडीन उन कारीगरां का नाम है जो दुपटा व त्रारंडी कपड़ा बनाते हैं। उन को ही देने के लिये यह रुपये त्रालग रखवाये गए थे। देखो पत्र पूर्ण संव २३७, पृष्ठ १६१।

२. इन्हीं बा॰ ग्रविनाशीलाल ने स्त्रामी जी कृत पञ्चमहायज्ञविधि मूलमात्र छपवाई थी। उसमें जीवित श्राद्ध के स्थान में मृतक श्राद्ध का विधान छपवाया था। देखो हमारा 'ऋ ॰ द॰ के प्रन्थों का इतिहास' पृष्ठ ५०। यु॰ मी॰।

फरुखाबाद, सं० १९३७]

पत्र (१८१)

१९१

जस्में बहुधा शुद्ध अशुद्ध है। और वेदभाष्य के पत्रे जो कमती होते हैं वे टाटल पेज पर नोटिस लगवादों कि इतना चौड़ा लम्बा कागज नहीं मिलता जो कि बम्बई के बराबर हो। इसलिए इसी प्रकार के कागज से छपा करेगा। हम आनन्द में हैं आप आनन्द में हूजिये। और समाज आदि का सब काम अच्छे प्रकार चले। भीमसेन से कह दो कि व्याख्यान अच्छे प्रकार दिया करे। और अपने पढ़ने पढ़ाने व शोधने में होशियारी रखे। परिडत सूवेराव जी और हिर परिडत जी से हमारा नमस्ते कह देना। पंव अमरनाथ का शरीर आरोग्य हो गया है वा नहीं। वहां जो काररवाई जो कुछ हुआ करे आठवें दिन लिख भेजा करो। और हम को जब जरूरत होगी तब हम भी लिखेंगे। इति

ह्येष्ठ शुक्त ६ सं० १९३७।

द्यानन्द सरस्वती र

[६]

पत्र (१८१)

[२३७]

श्रोम्

मुंशी व[खतावर ]िसंह जी आनिन्द[त] रहो।

श्राज रजस्टरी करके राजा शिवप्रसाद का उत्तर यहां से रवाना करेंगे। उस के पहुंचते बखत ही रसीद भेजनी। इस पुस्तक को प्रथम भीमसेन देख कर कम्पोजीटर को सममा देवे। कहीं दूट फूट श्रशुद्ध न होने पावे। नोट जैसा कि इस में है वैसा ही छपे। श्रीर इस की भी २,००० दो हजार कापी छपवानी। —) मूल्य। श्रीर वेदभाष्य के साथ जहाँ २ भेजना योग्य समम्में वहाँ भी भेजना। [सब श्रार्थस]माजों में भेज देना। श्रीर [संन्यासि]यों के पास भी। श्रीर जो भाष्य के गाहक योग्य हैं उन [सब] के पास [एक]२ पुस्तक भेज देनी। सब कालेज ग[वर्नमेगट स्कूलों] श्रीर शरकारी पुस्तकालय में भी भेजना।।

तुमारे लिखे प्रमाण सीसा (टैप आदि) के लिए सेठ निर्भयराम से कह दिया है। जैसी तुम लिखो [गे वै]सी कलकत्ते से आजावेगी। परन्तु प्रथम कलकत्ते में सौ रुपैये जैसी[राज गुट]राम की दूकान पर भेज दो। उन्हों में से जो २ चीजें तुम का चाहने पड़ेंगी सो २ वे भेज दिया करेंगे। और जो तुमने लिखा के अभयराम चुन्नीलाल अच्छी तरह से बन्दोबस्त नहीं रखते उसके लिए वहाँ काशी में एक साहूकार के पास रुपैये जमा करने के लिये यहां बन्दोबस्त किया है। उसी की दो[का]नक्ष पर जमा करना। और अभयराम चुन्नीलाल के यहां केवल सौ रुपैये बाकी रहने भी देना जिस में [लेन दे] न न दूटे। फिर दिवाली पर हिसाब करके सब चुका लेना। तुमने जो पारसल भेजा ठीक २ पहुँचा। परन्तु उसका डाक महसूल बहुत क्यों लगा। जिस कारीगर ने ये दुपट्टा और अरंडी बनाई है उसको ३) रुपैये इनाम दे देना। मैं खूब जानता हूँ कि तुम तन मन धन से काम करते हो। परन्तु मेरे जरूरी

२. जुलाई सन् ११४५ में म॰ मामराज जी ने लाला रामशरणदास जी रईस मेरठ वालों के पत्रों में

से खोजा। मूल पत्र हमारे संप्रह में सुरिच्चत है। ३. इस पत्र पर श्रानेक स्थलों में श्री स्वामीजीने स्वहस्त संशोधन किया है।

१. ता॰ १४ जुन सन् १८८० सोमवार को फरुखाबाद से बनारस को मेजा। इस पत्र की आरम्म की २॥ पंक्ति दूसरे लेखक की हैं, शेष पत्र पं॰ गर्गशप्रसाद शर्मा फरुखाबाद वालों के हाथ का लिखा हुआ है। इस्ताच् ऋषि के हैं।

वार २ लेख से कुछ सन्देह न करना। क्यों कि तुम अपना और मेरा काम [दो] नहीं समभने। सिन्धिविषय और वेदभाष्य कि पत्रे] आपने मंगवाये। वे इस बखत राजा शिवप्रसाद के [उत्तर देने से फु]रसत नहीं मिली। इस वास्ते नहीं पहुंचे। आगे...

जो' भैरव कंहार हमारे साथ आया था " [उस]ने कलमदान खोल १॥) वा २॥) रूपैये चोर लिये थे। इस [लि]ये उसको जितना मासिक चढ़ा था दिया। और म[गि] [ख]रच ॥। अपने देकर यहां से निकाल दिया। जब तक यह भ्रमोच्छेद[न] अपन्य छपके बाहर न हो तब तक किसी को मत दिखलाना। जब छप जाय तब काशीराज, राजा शिवप्रसाद, विशुद्धानन्द, बाल शास्त्री और राय शंकटाप्रसाद की लायब्रेली तथा पिडत सुवेराव औ[र] हरि पिडत जी को भी एक पुस्तक दे देना। श्रीर जिस २ को योग्य जानो उस २ को भी देना। बाकी मूल्य से देना। सब से हमारा न[मस्ते क]ह देना। हम बहुत प्रसन्न हैं। आप लोग सब प्र[सन्न रहि] थे।

संबत् १९३७ं आषाद कृष्ण २ गुरुवार।3

[दयानन्द सरस्वती]

[१] पत्र (१८२) [२३८]

स्वस्ति श्रीमच्छेष्ठोपमाहीयै श्रुतशास्त्रविद्याभ्यासापन्नायै श्रीयुत्तरमायै द्यानन्दसरस्वतीस्वामिन श्राशिषो भूयासुरतमाम् ।

शमत्रास्ति । तत्रत्यं भवदीयमेधमानं च नित्यमाशासे ।

श्चभ्यस्तसंस्कृतविद्याया भवत्याः शुभां कीर्त्तं निशम्योत्पन्नस्वान्तानन्देन मया श्रीमतीम्प्रति लेखद्वाराभिप्रायं प्रकाश्यैवमेव भवत्या श्रभिप्रायं विज्ञातुमिच्छामि सद्यः स्वाभिप्रायविज्ञापनेन मामलङ्करोतु ।

इदानीमग्ने च भवती कि कि कर्तुं चिकीर्षति । कि यथा लोकश्रुतिरस्ति सा ब्रह्मचारिणी वर्त्तत इतीद्मेवं विद्यते न वा। सा यत्र क्रुत्र जनतायां सुरोभितं शास्त्रोक्तलच्चणप्रमाणान्वितं विद्वदाह्वाद-करं वक्तृत्वं करोतीत्येतच्चथं न वा। श्रुतं मयासा स्वयंवरविधिना विवाहाय स्वतुल्यगुणकर्मस्वभावसहितं कुमारं पुरुषोत्तममन्विच्छतीति सत्यमाहोस्विन्न । किमेतदकृत्वा ब्रह्मचर्थे स्थातुमशक्यमस्ति ।

यथाऽऽर्घ्यावर्चीयाः सत्यो विदुष्यो गार्ग्याद्यः कुमार्घ्यो ब्रह्मचर्घे स्थित्वा स्त्रीजनादिभ्यो यावान् सुखलाभः प्रापित[वत्य]स्तथा तावान् विवाहे कृतेऽनेकप्रतिबन्धकप्राप्त्या प्रापितुमशक्यः । एवं सत्यपि स्वसमानवरं पुरुषं प्राप्य विवाहं कृत्वा यथाऽनेकाः स्त्रियः सन्तानोत्पत्तिपालनस्वगृहकृत्यानुष्ठाने प्रवर्त्तन्ते तथैव भवत्या इच्छास्ति वा पुनर्राप कन्यकाभ्योऽध्यापनस्य स्त्रीभ्यः सुशिक्षाकर्णेच्छास्ति । श्रीमती वंगदेशनिवासं कृत्वाऽन्यत्र यात्रां न करोति किमत्र कारण्म् । यावदुपकारः सर्वत्र गमनागमनेन

१. 'जो ...' भैरव से आगे सारा लेख ऋषि के अपने हाथ का ही है। विन्दु से परिचिन्हत कोधों को छोड़ कर शेष सब कोधों के स्थान का पत्र फटा हुआ है। हमने कोधों में अपनी ओर से पूर्ति की है।

२. हरि परिडत महाराज विजय नगर की बनारस कोठी के कामदार थे। देखी आषाढ़ शुक्ल ११ सं० १६३७ (१८ जुलाई १८८०) पूर्ण संख्या २४५ का पंत्र।

३. २४ जुन १८८०, फरुलाबाद । मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिवृत है ।

जायते न ताहगेकत्र स्थिताविति निश्चयो मे।

यद्यत्रागमनाभिलाषास्ति चेत्तह्यांगम्यतां, यावानस्यां यात्रायां मार्गे धनव्ययो भविष्यति तावान् भवत्या अत्र प्राप्तेऽवश्यं लभ्येत । यद्याजिगमिषाऽत्र वर्त्तते तिर्द्धं ततो गमनात्प्राक् पत्रद्वारा समयो विज्ञाप्यतामतोऽत्र भवत्याः स्थित्यर्थं स्थानादिप्रवन्धः स्यात् । यदि श्रीमत्युपदेशाय सर्वत्र यात्रां चिकीर्षेत्तह्येतस्थानादिनिवासिन धार्यां भवत्याः सर्वत्रार्थ्यावर्त्तयात्राये योगन्नेमाय च धनं दातुं शक्तुवन्ति नात्र काचिच्छङ्कास्ति ।

यदि भवती पत्रं प्रेषयेद्थवाऽऽगच्छेत्तर्हि निम्नलिखितस्थानस्य सूचनया पत्रं भवती वाऽऽगन्तु-मह्तीत्यलमतिविस्तरलेखेन विदुषीं प्रति।

रसरामाङ्कचन्द्रेऽज्दे आषाढस्य शुभे दले । षष्ट्यां शनौ शिवं पत्रं लिखितं मान्यवर्द्धकम् ॥

(मेरठ छावनी बाबू छेदीलाल गुमारते कमसरयट के द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती) जी के पास पहुँचे। परन्तु इतना लिखना बहुत है कि (मेरठ स्वामी दयानन्द सरस्वती) बराबर पहुंचेगा।

[२]

पत्र (१८३)

[२३९)

श्रो३म्

परिडत गोपालरावहरि आनिन्दत रहो-

मैं आशा करता हूं कि जो २ बातें करनी आपके लिए नीचे लिखता हूँ, सो २ यथावत् स्वीकार करेंगे।

- (१) जो मीमांसक उपसमा नियत की गई है उसके पाँच समासद् निश्चित किये गये हैं। एक आप, द्वितीय बाबू जी, तृतीय लाला जगन्नायप्रसाद, चतुर्थ लाला रामचरण, पद्धम लाला निर्भयराम और उसकी अनुपिश्यित में क्रमशः यथा आप के लाला रामनारायण्दास मुस्तार, लाला हरनारायण, ला० हितमनीलाल, लाला कालीचरण और लाला निर्भयराम के कोई पुत्र अर्थात् तीनों में से एक जो उपस्थित हो, नियत किये गये हैं॥
  - (२) जहाँ तक बनें श्रीर श्राप यहाँ उपस्थित हों तो व्याख्यान भी समाज में दिया करें ॥
- (३) जो मासिक पुस्तक निकलता है वह भी आपके हाथ से बनेगा, अथवा बनने पर शुद्ध कर हैंगे। तो भी अच्छा होगा। इति—

त्राषाढ कृष्ण ८, सम्वत् १९३७।

द्यानन्द सरस्वती

२. ३० जून १८८० फर्रखाबाद। मूल पत्र पहले हमारे पास था। अब प्रो० महेशप्रसादजी के पास है।

१. सं० १६३६ आषाढ़ सुदी ६ शनि । यह तिथि सर्वथा अशुद्ध है। संवत् १६३७ चाहिये १६३६ नहीं । रमा ने इस पत्र का उत्तर आषाढ़ शुक्त १, मृगुत्रासर शक वत्सर १८०२ अर्थात् ६ जुलाई १८८० को दिया । अतः श्री स्वामी जी का पत्र आषाढ़, वदी ६ सोमवार अथवा २८ जून १८८० का हो सकता है। आषाढ़ सुदी ६ को शनिवार मी नहीं था।

[0]

पत्र (१८४)

[280]

[मुन्शी बख]तावर सिंह जी आनिन्दत रहो।

हम कल यहाँ [से चल] कर बुध की रात को सकूराबाद स्टेशन से रेलमें [सवार हो] कर मेरठ जायंगे। वेदभाष्य जहां तहां भेजा ग[या होगा] श्रीर राजा शिवप्रसाद का उत्तर छप के जहां तहाँ पहुँचा वा नहीं। [श्रव हम] को चिठी पत्री भेजना हो तो मेरठ के पते से हमारे पास भेज[ना। हम] को यहाँ कार्य विशेष था इसलिए वेदभाष्य [श्रीर सिन्ध] विषय के पत्रे नहीं पहुंचे। मेरठ में जाके वहाँ [से भेज देंगे'

"" मो छापना और न हों तो जिस " " " हो तिख भेजना और संधिविषय का य " " " यहाँ जो पत्रे हैं तिखवा तिये हैं। शोध के भेज देंगे। संस्कृतवाक्यप्रवोध का एक फर्मा जो वाकी रह गया है छाप कर ज[हां तक हो] जलदी भेज दो जो पठन पाठन में काम आवे। राजा शिवप्रसाद के उत्तर में तीन चार दिन का काम थ[ा] इतनी देर क्यों लगा[ई, जो] वेदभाष्य अब तक किसी के पास नहीं भेजा। और [इस] अङ्क के साथ जिस २ के हपैये आय [कर जो] बाकी [हैं] [ उन सब के ] पास चिठीं पहुंचाईं जायंगी

..........की लेना हो सब हिसाब कर रखना और हम [ पहले जो चि ]ठी लिख् चुके हैं उसी के माफिक सब काम करना।

मिती आषाढ़ वदी १३ सोमवार संवत् १६३७॥<sup>3</sup>

(दयानन्द सरस्वती)

[8]

पत्र सूचना (१८५)

[389]

[जीवाराम टीकाराम शीतनाघाट काशी]" दोनों जने चले आस्रो। [स्राषाढ़ वदी १३ सोमवार १८३७]"

[6]

पत्र (१८६)

[२४२]

मुन्शी बखतावरसिंह जी श्रानन्दित रही।

हम आज मेरठ में पहुँचके लालकुर्ती बजार में रामशरणदास के वंगले में ठहरे हैं । श्रीर यहां महीना भर ठहरने का विचार भी है । जो कुछ चिट्ठी पत्रादि भेजो मेरठ में इसी पता से भेजना ।

- १. विन्दुस्रों वाला स्थान फट चुका है। कोष्ठों में हमने पूर्ति की है। २. सम्भवतः पृष्ठ १६१ पर छपी हुई।
- ३. ता० ५ जुलाई सन् १८८०। श्रिषाढ़ कृष्ण ६—१४ सं०१६३७=१-६ जुलाई १८८० को स्वामी जी मैनपुरी में थे। अतः यह पत्र मैनपुरी से मेजा गया था। यु० मी०।]
- ४. फटे हुए पत्र के दो दुकड़े म॰ मामराज जी ने ता॰ २४ जुलाई सन् १९४५ को लाला रामशरण दास जी मेरठ वालों के यहां से खोजे। मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्ति है।
  - ५. इस पत्र की सूचना पूर्ण संख्या २४६ के पत्र (पृष्ठ १६८) में है। मैनपुरी से। यु॰ मी॰

तुम ने लिखा था कि पत्रीसवीं जून को दोनों वेदों [का] १४ वां [ग्रंक] छपकर वैयार हो जांयगे। श्रीर हमने २४ वीं जून को राजा शिवप्रसाद का उत्तर भेजा था। २६ वीं को पहुंचा होगा। श्रीर वह भी पहिली अप्रेल' वा पांचवीं तारीख अप्रेल' तिक] छपके तैयार हो ही गया होगा । सब के पास वेदभाष्य के साथ रमाना भी तुमने कर दिया होगा। जैसा कि हमने पहिले पत्रों में लिखा है वैसा करना। तुमको चाहिये कि आप जो २ वहां की कारवाहै २ दूसरे तीसरे पत्र में जो काम किया लिख भेजा करो। भीमसेन ने पांच रुपैये माहवारी के लिये लिखा। सो आजकल इतना आश्रादि महगा - नहीं है। कि जिस में खान पानादि का निर्वाह ना हो। श्रौर मेरे आये पीछे कोई भी पुस्तक छोटा वा बड़ा जिसका आरंभ मेरे पीछे आप ने वा भीमसेन ने किया हो नहीं पहुंचा । वेदभाष्य और राजा शिवप्रसाद् का उत्तर छपकर श्रमी तक नहीं श्राया। संधिविषय का श्रव तक प्रारंभ न हुआ होगा। एक फर्मा व्यवहारभानु का छपना था श्रो भी पूरा न हुआ होगा। श्रव भीमसेन कहता है कि मैंने वड़ा परिश्रम किया सो दो तीन महीने में क्या बनाके तयार किया। अपने लोगों की ये व्यवस्था है कि रुपैये के लिये तैयार और काम कुछ भी नहीं दिखाते। और जो हम काम देखेंगे तो आप ही बढ़ा देंगे। श्रौर वेदभाष्य श्रौर राजा शिवप्रसाद का उत्तर जलदी मेजना चाहिये। श्रौर राजाराम शास्त्री के लिये हमने लिख भेजा है कि पैंतीस रुपैये में मंजूर हों तो चल आवें और एक विद्यार्थी जो कि पचास क्लोक काम करके लिख सकता हो रसोई आदि के लिये पांच क्पैये माहवारी का लेते आवें। कुछ ज्याकरण भी पढ़ा हो। श्रीर जो इनकार करे तो चालीस रूपये के वीच में दो पंडित श्रज्छी तरह लिख[ने] वाले बहुत जलदी आप और भीमसेन अच्छी तरह परीचा करके भेज देना । वे भी व्याकरण पढ़े हों। और भीमसेन [से] कह देना कि जब छापाखाने का काम अच्छी तरह चलेगा तब पांच रुपैये हो जांयगे। भारौल वाले ठाकर फतेसिंह के १७) रुपैये वेदभाष्य के लिये तीन वर्ष के हमारे पास जमा कर दिये हैं।

[द्यानन्द सरस्वती]

मिती आ० सुदी १ संवत् १९३७

[৭]

उर्द् पत्र (१८७)

[383]

मुन्शी बखतावरसिंह जीव आनिन्द्त रहो।

श्राज कल तुम्हारा कोई चिट्ठी पत्र नहीं श्राता। तुमने लिखा था कि २५ जून को वेदमाध्य तथ्यार हो जावेगा। श्रीर २४ जून को राजा शिवप्रसाद का जवाब हम ने फर्रुखाबाद से तुम्हारे पास मेज दिया था। श्रीर वेदमाध्य को दुरुत हुए भी श्राज १६ या १० दिन हुए। राजा जी के जवाब का पुस्तक हइ के दरजह प दिन में छपकर तथ्यार हो सकते हैं। पर न मालूम श्रव तक क्यों नहीं तथ्यार हुए। श्रीर हम ने तुम से कहा था कि दूसरे तीसरे दिन खत भेजते रहना। मगर श्रव २०-२० दिन तक श्रापके चिट्ठी पत्र का दुर्शन नहीं होता। श्राप को चाहिये कि हफ़ता में दो दफा चिट्ठी भेजा करो।

१. यहां जुलाई के स्थान में अप्रेल भूल से लिखाया गया प्रतीत होता है।

२. ८ जुलाई १८८०, मेरठ से।

३. मूलपत्र इमारे संग्रह में सुरित्त है।

[मेरठ, सन् १८८०

और सब हाल कचा पक्का आमदनी खर्च का मुक्तिसल लिखा करो और यह भी लिखना कि राजा शिवप्रसाद का जवाब और वेदभाष्य अब तक छप कर क्यों नहीं आया। और फाऊएडरी यानि हरफ वगैरा ढालने का साँचा श्रौर श्रौजार कलकत्ता से श्राये या नहीं। श्रौर हरफ वगैरा ढालने शुरु हो गये या नहीं अब इम वेदभाष्य के पत्रे तय्यार कर रहे हैं। और सन्धिविषय के पत्रे भी शोधे जाते हैं। दो चार दिन में वेद्भाष्य श्रीर सन्धिविषय के पत्रे तुम्हारे पास पहुंचेंगे। श्रीर क्या श्राज तक हमारे नाम की कोई चिट्ठी काशी में ऐसी नहीं श्राई होगी जो हमारे पास भेजने के लाइक हो। जरूर आई होगी। मगर तुम भेजनी भूल गये होगे। श्रौर तुम जो अपने आर्यद्र्ण निकालो तो जो वृत्तान्त मुंशी इन्द्रमनजी की बद्नामी का मुसलमानों ने अपने अखबार जामे जमशेद में छापा था, श्रीर उस का जवाब श्रीर मुखतसर हाल श्रखवार नैय्यरे श्राजम मथरा मतबूशा ३० जून सन् ५० श्रीर श्रखबार दबदबा कैसरी बरेली मतबूत्रा ३ जुलाई सन ८० में छपा है । तुम भी अपने समाचार में छाप देना। उस में साहब मैजिस्ट्रेट बहादुर मुरादाबाद के नाम तहकीकात का हुक्म गवर्नमेएट से श्राया है। श्रीर जो कोई काशी में श्रीर समाचार हो, तो उसमें से श्रङ्गरेजी से श्रीर भाषा वन सके तो जरूर छपवा दीजिये। और कलकत्ता में भी जो समाचार या अखबार अङ्गरेजी का निकलता हो, और तुम उसमें छपवा सकते हो, तो वहां भी छपवा दो, और अमृतवाजार पत्रिका के एडीटर को भी लिख के इस को छपवा देना। और अब वेदभाष्य के १५ [अङ्क के] भेजने में तुम क्यों देर कर रहे हो। लोग घबरा रहे हैं। इसमें जितनी देर करोगे, उतना ही महा हानि का सबब होगा। श्रीर मुशी जी का सब हाल मुफरिल लिख कर अमृतवाजार पत्रिका में और ध्यासोफिस्ट में छपने के लिये भेज देना । और हम यहां र एक महीने तक ठहरेंगे।

(दयानन्द सरस्वती)

[80]

पत्र (१८८)

[२४४]

स्वस्ति श्रीमच्छेष्ठोपमार्हाय विद्वद्वर्य्याय वैदिकधर्ममार्गैकनिष्ठाय निगमोक्तलच्चण्रभागौर्धम्य-कर्मोपदेशप्रवर्त्तितस्वान्तायैतद्विकद्धस्योच्छेदने प्रोत्साहितचित्ताय सद्विद्वद्भयोऽभ्यानन्दार्थं सूक्तसमूह-वाक्यानुवाक्यप्रयुक्तवक्तृत्वाभ्यासशालिने सर्वदा विद्यार्जनदानोत्कृष्टस्वभावाय लब्धार्यविपश्चिन्माना-यास्मत्प्रियवराय श्रीयुतश्यामजि[छुष्ण]वम्मेणे दयानन्दसरस्वतीस्वामिन छाशिषो भूयासुस्तमाम्। शमत्रास्म[दीयम]स्ति तत्रत्यं भवदीयं नित्यमेधमानं चाशासे।

बहुमासाभ्यन्तरे भावत्कपत्रानागमेन चित्तानन्दाह्यासात् पुनरानन्दप्रजननायेदानीमेतिसमित्रिन्न-लिखिताभिप्रायाणां भवतः स[का] शात् सद्यः प्रत्युत्तराभिकांचिणोत्साह्युक्तं भया पत्रं श्रीमत्सनीडं प्रेड्यते ।

तत्र कीहरगुण्कर्मस्वभावा मानवा भूजलवायुभक्ष्यभोज्यलेह्यचूच्याः पदार्थाश्च सन्ति । अतो गत्वाऽद्यपर्यन्तं तत्र भवदात्मशरीरारोग्यमस्ति न वा । यदर्था यात्रा कृता तत्प्रयोजनं प्रतिदिनं सिष्यिति

१. यह पत्र इस तिथि के ६, ७ दिन पश्चात् लिखा गया है।

२. यहां ऋर्थात् मेरठ में।

न वा। भवत्समर्थ्यादे तत्रक्ष्याः कित जनाः संस्कृतमधीयते कं कं प्रन्थं च। तत्र भवतः िकयती मासिकी प्राप्तिच्ययश्च। किसन् किसन् समये पठ्यते पाठ्यते चिन्त्यते च। ततोऽत्र कदाऽऽगमनाय निश्चितं कृतमित् । किमिदं यथात्र सद्धर्मोपदेशजन्या भवत्कीर्तिस्तूरणं देशदेशान्तरे प्रसृता तत्र कुतो न जाता। जाता चेद्यतो दूरदेशस्थास्ति, तस्माद्स्माभिनं श्रुता किम्। किं वैतत्कारणेऽवकाशो न लब्धः। एवं चेद् यदा भवता पठनपाठने सम्पूर्यं(१) वेदार्थोत्कर्षाभिप्रायसूचकानि वक्तृत्वानि तत्रत्येषु देशेषु कृत्वैवात्राग्मने मद्रं नान्यथेति निश्चयो मेऽस्ति । कुतः। धनलाभात् सत्कीर्त्तिलाभो महान् शिवकरोस्त्यतः। श्रीयुतिप्रयदाध्यापकमुनियरविलियंस[मो]चमूलराक्यानामधुना वेदादिशास्त्राणां मध्ये कीदृङ् नि[श्चयः] प्रेमतद्र्थप्रचारा[य] चिकीर्षाऽस्त्यन्येषां च। तत्र नन्द्नपुर्य्या काचिद् वैदिकी शा[खा]ख्या थियोसो-फीकलसभाप्रेरिता सभास्तीति श्रुतं तत्त्रथ्यं न वा। भवता [कदा] चिच्छीमतीराजराजेश्वरी महाराज्ञी पारलीमेंटाख्या सभा च दृष्टा न वा। भवता श्रीमित्रयवराध्यापकमुनियरविलियंसाख्यादिश्यो ऽत्यादरेण मित्रयोगतो नमस्त इति संश्राव्य कुशलं पृष्ट्या ते श्रुत्वा यद्यत्रस्त्रपुत्तरं श्रुयुस्तत्त्वद्ग्यच यद्यवुक्तं च लिखितुं तत्त्रस्यक्त (१) प्रत्युत्तराणि यद्यस्यानुक्तप्रश्रस्थापि लेखाईमुत्तरं वैतत्सवं विस्तरेण संलिख्याविलम्बेन पत्रं मत्सिश्वि । प्रेवणीयमेवेत्यलमधिकलेखेन विच्च्याित्कृष्टेषु

मुनिरामाङ्कभूम्यव्द श्राषाढस्य शुभे दले । षष्ठ्यां हि मंगले वारे पत्रमेतदलेखिषम् ॥

इस पते से पत्र भेजना । बनारस लक्ष्मीकुण्ड मुंशी बखतावरसिंहजी मैनेजर वैदिक यन्त्रालय के द्वारा स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी के समीप पहुँचे ॥

इदं वैदिकयन्त्रं स्वाधीनं नवीनस्थापितमस्मा[मि]राय्येंवें दादिशास्त्राणां मुद्राऽत्तरसंसिद्धय

इति वेद्यम्।।

[द्यानन्द सरस्वती]

(मेरठ)

१. संवत् १६३७ स्त्राघाढ् सुदी ६ मंगलवार । १३ जुलाई ६८८० ।

२. पहले हम ने यह पत्र श्रार्थभाषा में संख्या ३० के श्रन्तर्गत छाषा था। इस का श्रंग्रेजी श्रनुवाद सन् १८८० या ८१ में इझलेएड के एथिनियम पत्र में श्रध्यापक मोनियर विलियम की श्रोर से छपा था। मारत में भी उसी श्रंग्रेजी के कई श्रनुवाद समय २ पर प्रकाशित हुये थे। हम ने मूल श्रंग्रेजी की सहायता से भाषा उल्थे को ठीक बनाया था। पाठक श्राक्ष्य करेंगे कि पत्र के लिखे जाने की तिथि वाला क्लोक जो हम ने बना के घरा था, उस में श्रौर श्री स्वामी जी के रचे मूल क्लोक में एक ही श्रव्य का भेद रहा था। क्लोक के तीसरे पाद में श्री स्वामी जी ने "हि" रखा था। उसके स्थान में हमने 'च" बनाया था। ईश्वर कृपा से इस पत्र का मूल परोपकारिशी के संग्रह में सुरिवृत रहा। उसी की प्रतिलिपि विलायत गई होगी। दीवान बहादुर हरविलास जी सारडा मन्त्री सभा ने मूल पत्र का चित्र द्यानन्दग्रन्थमाला शताब्दी संस्करण संवत् १६८१ में छापा था। उसी से श्रव यह मूलपत्र संस्कृत में ही छापा गया है।

१९८

[मेरठ, सन् १८८०

[3]

पत्र-सूचना (१८९)

[२४५]

[लाला निर्भयराम फरुखाबाद]
श्रेस सम्बन्धी सामान के विषय में।

[3]

पत्र (१९०)

[२४६]

बाबू विश्वेश्वरसिंह जी आनिन्दत रही !

बड़े आश्चर्य की बात है कि तुमने वहां जाके एक भी पत्र न भेजा। अब जो २ लिखने योग्य हों सब समाचार लिख भेजना। सुना है कि बाबू केशवचन्द्रसेनजी आज कल वहाँ हैं। तुम आनन्द में होंगे हम बहुत आनन्द में हैं। एक बात तुमको आवश्यक जान के लिखी जाती है। जो वहां ब्रह्मी श्लोषधी मिलती हो तो उसको ले सुखा पारसल कर डाक में भेज दो, उसका महसूल वहां दे दिया जाएगा उस पर पता यह लिखो। (हरि पिखत जी कामदार महाराजे विजयनगराधिपति बनारस भेल्पुरा)। अब छापा का काम चलने लगा है। हम यहां मेरठ में बीस या पश्लीस दिन रहेंगे। जब तुम प्रयाग को आश्चो तब ब्रह्मी श्लोषधी बहुत सी लेते आना। जो आज कल न हो तो भादों और आश्विन में बहुत होती है, वहां के मनुष्यों से पूंछ के निश्चय कर लेना, वहाँ रईस उस को जानते होंगे। सब से मेरा नमस्ते कह देना।

द्यानन्द सरस्वती

सं० १९३७ मि० आ० शु० ११ रविवार।

[90]

पत्र (१९१)

[२४७]

मुंशी बखतावर सिंह जी आनन्दित रही।

श्राप ने जो पुस्तक श्रीर पत्र भेंजे सब पहुँचे, हिसाब सहित ""चिठी भी "" यजुर्वेद के पत्रे तो कल वा परसौ तैयार करके भेजता हूं। श्रीर ऋग्वेद के पत्रे लिख रहें हैं। तथा यजुर्वेद के भी जितने तैयार होते जायंगे भेजते जायंगे। श्रापने लिखा कि तीनों श्रक्क बराबर निकालें उसमें फिर भी देर लगेगी। इस वास्ते [एक श्रक्क] श्रभी निकाला जाय फिर दोनों साथ निकालना ये [तो हमारी] सलाह है। श्रीर तुमरी सलाह "" नाथ को दो कपैये देके पुस्तक पूर्ण [करालो। उन] से कह देना कि शीतलाघाट पर जो पण्डित जीवाराम [टीकारा]म रहते हैं उनके वास्ते मैनपुरी से चिठी मेजी थी सो दी [वा नहीं] नहीं दी हो तो वहाँ जाके उनसे कहना कि स्वामीजी ने तुम से कहा है दोनों जने चले श्रावो श्रवश्य। हम मेरठ में हैं। जो उनके पास खर्च न हो तो तुम मेरठ का टिकट दिवादो यहाँ उनका काम है। उनने कहा था कि हम श्रापके पास श्रावेंगे, सो क्यों नहीं श्राये। हमारे पास चले

१. इस का संकेत पूर्ण संख्या २४६ के पत्र (पृष्ठ १६६ ) में है। यह पत्र आषाढ़ सुदी ११ रविवार सं० १६३७ [१८ जुलाई १८८०] को या उस से पूर्व लिखा गया होगा। यु॰ मी।

२. श्राषाढ़ १८ जुलाई सन् १८८० । यह सारा पत्र श्री स्वामी जी के हाथ से लिखा हुश्रा है । मूल पत्र श्री नारायण स्वामी जी के संग्रह में सुरित्तृत है ।

मिती त्राषाढ़ सुदी ११ रविवार संव[त् १९३७] '

<sup>3</sup>यहां के समाज की बड़ी उन्नति है। मैं यहां बीस वा [पचीस] दिन तक रहूँगा। हरि पिंदित जी से कहना कि ब्राझी ओषधी के लिये हमने नैग्णीताल को लिखा है। अनुमान है कि आप के पास पहुँच जाय[गी]। <sup>४</sup>

[88]

पत्र (१९२)

[286]

मंशी बखतावर सिंह जी श्रानन्दित रहो।

कल कुछ पत्रे यजुर्वेद और ऋग्वेदके पहुंचा दिये हैं पहुंचे होंगे। वैयार करते जाते हैं जैसे वैयार होंगे तेसेही पहुंचाते जायंगे। परन्तु तुमने तीन २ अङ्क का निकालना एक ही वखत अकस्मात् प्रारम्भ कर दिया है। जो हमको पहिल कहते तो पत्रे आगे से ही वैयार कर भेज देते। अब भी चार दिन आगे पीछे पौचा देंगे। काशी में से कोई लेखक जो कि संस्कृत की भाषा बना जाने तो पंद्रह क्ष्पैये माहवारी कर भेज दो। व्याकरण भी पढ़ा हो। विहारी चौवे को पुस्तक न दो। जो वह दस

१. १८ जुलाई सन् १८८० मेरठ से।

२. यहां से त्रागे की तीन पंक्तियां ऋषि ने स्वहस्त से लिखी हैं। हस्ताच् तथा बिन्दुश्रों वाला स्थान फट चुका है। कोष्ठों में हम ने पूर्ति की है।

३. यह नैसीताल का पत्र पूर्य सं० २४५ (पृष्ठ १८८) पर है।

४. म॰ मामराज जी ने २४ जुलाई सन् १६४५ को मेरठ निवासी ला॰ रामशरणदास जी के सहस्रों पत्रों में से उनके पौत्र ला॰ परमात्माशरण जी के साथ खोजा। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्चत है। रूपैये सैकड़े कमीसन पर ले तो दे दो। परन्तु पचीस रूपैये से ले तो कमीसन देना। कम में नहीं।

हां ब्रजभूषण दास वाले दस रूपैये पर भी कमीसन लें [तो] उधार भी देदो।

श्रीर जगदंवा प्रसाद बरेली के पास अब तक तुमने तीनों पुस्तक नहीं भेजे, क्योंकि उसने हमको परसों चिठी मेजी कि हमारे पास पुस्तक अभी नहीं आये। ऐसा क्यों करते हो कि जिसके दाम आये उसको उसी वखत पुस्तक मेज देना चाहिये। नहीं तो आगे को दाम कैसे आवेंगे कोई भी न भेजेगा। श्रीर जीवाराम टीकाराम की क्या खबर है। वे वहां है वां नहीं।

मिती आषाढ सुदी १३ मंगलवार संवत् १९३७।

(द्यानन्द सरस्वती)

[9]

पत्र (१९३)

[२४९]

श्रो३म

लाला रूपसिंहजी त्रानिद्त रही!

वारीख १९ जुलाई को एक पत्र आपका दो टिकटं सहित और २३ जुलाई<sup>3</sup> को ६०) रूपैये का मनियाडर हमारे पास आया । इस बात पर जैसा कि हमने आशीर्वाद आर्थसमाज फरुखाबाद को दिया वैसा तुम को भी देते हैं। ज्ञाप ज्ञागे की साल से फरुखाबाद मन्त्री ज्ञार्यसमाज कालीचरण रामचरण के पास साठ २ हपैये हर साल भेजना । ये हपैये भी दो तीन दिन में फरुखाबाद में उक्त मन्त्री के पास भेजेंगे वहां से अपना हिसाब समभ लिया करों। शुक्रिया अदा करना इसका अर्थ संस्कृत में धन्यवाद देना ऐसा है।

में मेरठ में २० दिन तक रहूंगा।

(दयानन्द सरस्वती)

मिति त्राषाढ सुदी १५ संत्रत् १९३७।

[3]

पत्र (१९४)

[२५०]

श्रीमद्नवद्याभ्यस्तसुविद्यालङ्कारपरिशोभितायै भारतवर्षीयेदानीन्तनस्त्रीजनानां निवारितमूर्ख-त्वादिकलङ्कदार्ष्टीन्तस्वरूपायै सत्त्वसौजन्याद्रैतासभ्यार्य्यविद्वद्वर्यस्वभावान्वितप्रकाशितस्वाभिप्रायलेखायै श्रियवरमनसे श्रीयुतरमायै द्यानन्द्सरस्वतीस्वामिनः स्वाशिषो भूयासुस्तमाम् ।

१. २० जुलाई सन् १८८० को मेरठ से बनारस मेजा गया।

२. म॰ मामराज जी ने ला॰ रामशरखदास जी के पुराने कागजों में से उनके पौत्र ला॰ परमात्मा-शरण जी तथा ला॰ श्यामलाल जी प्रधान त्र्यार्यसमाज मेरठ के साथ २३ जुलाई सन् १६४५ को खोजा। मूल पत्र हमारे संग्रह में स्रिव्ति है।

३ २३ भूल से लिखा गया है। २० या २१ जुलाई चाहिए। यु० मी०।

४. २१ जुलाई १८८० । मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिचत है । यह पत्र सरदार रूपसिंह जी ने इमें दिया था।

शिवमत्रास्ति तत्र भवदीयं च नित्यमाशासे । यद्भवत्याः प्रेमास्पदानन्दप्रदं पत्रमागतं तत्समा-लोक्यातीव सन्तुष्टि प्राप्तोऽहं पुनरपि श्रीमत्यै यत्कित्वित्कष्टं दातं प्रवर्ते तत्त्वन्तुमर्हति । महदाश्चर्यमे-त्तव्यदानम्दवद्धेनाय भवतीं प्रति पत्रं प्रेषितं तत्प्रत्युत्तरितमागतं सद्धर्षशोककरं कृतो जातमिति प्रतिभाति नः। कस्य श्रीमत्या त्रार्जवलेखं दृष्ट्रा सुखं, सनाभ्यस्य मरणं श्रुत्वा दुःखं च न जायेत। परन्त्वेवं जाते सत्यपीदानीमशक्ये सांसर्गिकसंयोगिवयोगात्मकजन्ममरणस्वरूपे लोकव्यवहारे भवती शोचितुं नाहिति। श्रीमत्याः क्रुत्रत्यं जन्म कियदायुः कि किमधीतं श्रुतं च ? कि संस्कृतादाय्यीवर्त्तीयभाषाभ्यो भिन्ना काचिद्नयहेशभाषाभ्यस्तास्ति न वा ? कास्ति निजं गृहमभिजनश्च मातापितरौ विद्यमानौ नो वा ? मृताद् वन्धोरन्ये ज्येष्टाः कनिष्ठा वा भ्रातरो भगिन्यश्च सन्ति न वा ? यो मृतः स स्वतो ज्येष्टः कनिष्टो वा ? अधुनाऽनघायाः संनिधौ स्वजातीयः पुरुषः स्त्री वा काचिद्वर्त्ततेऽथवैकाकिनी च ? अहो क्रुतोऽस्मदीयं पत्रं काकतालीयन्यायवत्सुखदुः खसंयोगसूचकं जातिमिति विस्मयामहे । परन्तु विद्वद्वय्यीयां भवत्यां शोकस्य लेशोऽपि स्थातुमनह इति निश्चित्य मृडयामः । यदि मार्गव्ययार्था धनापेचास्ति तर्हि सद्यो विज्ञाप्यतामि-यद्धनमत्र प्रेषण्यिमिति नात्र शङ्कितुं लिक्कितुं योग्या वर्त्ततेऽपूर्वेपरिचये कथं घनार्थं लिखेयमिति । यदि स्वसमीपे वर्त्तते तहिं लेखितुं न योग्यम् । यथा मया पूर्वपत्रे लिखितं तथैवात्र प्राप्तायां श्रीमत्यां लब्धव्यमित्येवानवद्ये कार्य्यमस्तु । यथा भवत्यात्र स्वशुभागमनसूचना द्विविधा कृता तत्राद्यायां प्रतिज्ञायां मासात्पर इति वचसि यदि शक्यमत्रागन्तं तह्यत्यन्तं वरमिति नियोजनम् । श्रहमप्यत्र पञ्चविंशतिदि-नानि स्थातुमिच्छाम्येतद्न्तराले समयेऽत्रागमिष्यति चेत्ति मत्समागमो भविष्यति । पुनरितो यत्र गमिष्यामि तस्यापि सचना श्रीमती प्रति विज्ञापयिष्यामीत्यलमधिकलेखेन विपश्चिद्विचच्चायाम्।

> मुनिरामाङ्कचन्देऽव्हे शुचौ मासे सिते दले । पौर्णमास्यां बुधे वारे लिखित्वेदं हालङ्कुतम्॥

[23]

पत्र (१९५)

[२५१]

ओ३म्

मुन्शी वखतावरसिंह जी श्रानन्दित रही।

जो हमने ऋग्वेद और यजुर्वेद के पत्रे भेजे थे पहुंचे होंगे। कल और भी पत्रे भेजेंगे। हमने फरूखाबाद को लिख भेजा और कलकत्ते का पत्र भी भेज दिया। परन्तु यह काम उन से होना. कि हि। अन्य किसी भद्र मनुष्य से कराना चाहिये। जो रुपैये हमारे सामने कलकत्ते में भेजे थे उन का हिसाब लिख भेजना। जिने १७) रुपैये दिये थे हमको, वह ठाकर फतेसिंह पहिले के गाहक हैं। उसको भीमसेन भी जानता है। वह ठाकर जाल[म] सिंह का सम्बन्धी है। क्या उसका नाम र जष्टर में नहीं लिखा है। जो मुक्त से पूछते हो। निम्नलिखित पुरुषों की रसीद छपा देना कि जिनेंने दो पिडतों के लिये जितने २ रुपैये दिये हैं। बाबू दुर्गात्रसाद रईस फरूखाबाद ने ५०० रुपैये अनायों के पालन के लिये। १०) स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अनाथों के पालन। और ५००) रुपैये वेदभाष्य बनवाने के लिये दिये। २५०) सेठ निर्भयराम रईस फरूखाबाद ने पिडतों के लिये दिये।

१. सं० १६३७ त्राषाढ सु० १५ । २१ जुलाई १८८० ।

१५०) लाला कालीचरण रामचरण रईस फिरुखाबाद ने पं० वे० के लिये दिये। २००) लाला जगन्नाथ प्रसाद रईस फिरुखाबाद ने पं० वे० के दिये। १००) लाला गणेशराम रईस फिरुखाबाद ने पं० वे० के लिये दिये। ५०) लाला गुरुमुखराय रईस फिरुखाबाद ने पं० वे० के लिये दिये। ५०) लाला नारायणदास रईस फिरुखाबाद ने दिये पं० वे० के लिये दिये। ६०) बाबू रूपसिंह त्रेजरी क्रार्क कोहाट पंजाब ने पं० वे० के लिये दिये। ४०) आर्य्यसमाज दानापुर ने पं० वे० के लिये दिये। २५) आर्य्यसमाज देहरादून ने पं० वे० के लिये दिये। २५) आर्य्यसमाज देहरादून ने पं० वे० के लिये दिये। २५) आर्य्यसमाज रुइकी ने पं० वे० के लिये दिये। २५) आर्य्यसमाज सहा[र]नपुर ने दिये। इस में इतना विशेष है कि पिएडतों को रख के वेदभाष्य को बनाने में १००) मावारी हम खर्च किया करेंगे। छः वर्षों तक इस में ५०) रुपैये मावारी देने में सब लोग और ५०) रुपैये देने में अकेला फर्रुखाबाद रहेगा। यह चन्दा छः वर्ष का है। शाय[द] और भी इकट्टा भया होगा। अगाडी मालूम होगा।

मिती श्रावण वदी १ संवत १९३७। रे मेरठ [दयानन्द सरस्वती]

ैदो पिएडतों को रखने के लिये ६ छः वर्ष पर्यन्त देंगे। प्रित मास १००) हपैयों के हिसाब से दिया करेंगे। मावारो १००) हपैया में जितना चन्दा न्यून रहेगा उतना आर्य्यसमाज फुरुखाबाद दिया करेगा। और बाकी अन्य सब समाज देंगे। अर्थात् ५०) मावारी छः वर्ष तक अर्केला फुरुखा[बा]द आर्य्यसमाज और ५०) हपैये मावारी अन्य सब समाज देंगे। परन्तु शोक है कि अब तक कोई योग्य पिडत नहीं मिला है बहुत ठिकानों में लिखा तो है। तुम भी जहां तहां लिखना और वेदभाष्य के टाटिलपेज पर जो विज्ञापन पिएडतों के छिये छिखा है वह अवश्य छाप देना।

[श्री स्वामी जी। र

यह भी लिखिये कि यह रूपया एक दफा दे दिया वा वार्षिक देते हैं। सो सब वृत्तान्त सपष्ट करके लिखिये। जो रसीद गडबड छप जावे अच्छा नहीं। इसलिये जो स्पष्ट हो जावे अच्छा है।]

[१३] पत्र (१९६) [२५२]

मुशी बखताबरसिंह जी आनिन्दत रहो।

टाटाल पेज बादामी पर अच्छा होगा, छाप दो। आज यजुर्वेद और ऋग्वेद के पत्रे शोध कर भेज दिये हैं। तेली की चिठी कोई नहीं आई। ऐसे बीमारों को इनाम देने लगोगे तो कहां पूरा

१. इस पत्र की कई बातें, श्रर्थात् रुपयों का न्योरा मुंशी बखतावरिंसह जी को समक्त में नहीं श्राया। उन्होंने पत्र पर वहां २ चिन्हा कर के स्पष्टीकरणार्थं पत्र श्री स्वामी जी को लौटा दिया । स्वामी जी महाराज ने जैसा ठीक करके पत्र पुनः मेजा वैसा हम ने ऊपर छाप दिया है । तथा श्राग्जी पंक्तियां भी श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से उसी पत्र की पीठ पर लिख दीं। वे श्रागे छापी जाती हैं। २. २२ जुलाई १८८० ।

३-३. यह श्री स्वामी जी के श्रपने हाथ का लेख है। [परन्तु यह लेख श्रावण वदी १ (२२ जुलाई) के श्रनन्तर का है (देखों टि०१)। इसमें वेदमान्य के टाइटल पेज पर जिस विज्ञापन के छापने का उछेख है, वह पूर्ण संख्या २५१ के पत्र के श्रन्त में लिखा है।

४. पूर्व पत्र की पीठ पर यह लेख मुन्शी बखतावरसिंह का है। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिचत है।

मेरठ, सं० १९३७]

पत्र (१९५)

२०३

पड़ेगा। पंद्रह का अब भेजोगे और सोलह सत्रका फिर, ये बहुत अच्छा किया। ३२ और दो २ पृष्ठ से अधिक मत बढ़ावो। नहीं तो हमारे वेदमाष्य के बनने में हरकत होगी। ये वी नोटिस दे दो वेदमाष्य के टाटल पेज पर' कि हम को एक ऐसा पण्डित चाहता, कि जो पाणि[नीय] व्याकरण अर्थात् अष्टाष्यायी, महाभाष्य, पूर्वमीमांसा, न्याय, निकक्त, निघंदु, पूर्वमीमांसा' न्याय, वेदान्त, उपनिषद, छन्दोग्रंथ आदि वेदांगों का पढ़ा हुआ संस्कृत की भाषा व्याकरण की रीति से सुंदर' बना सकता हो एक वेद अथवा दो वेद भी पढ़ा हो संस्कृत की शुद्धि कर सके। उसको पचास वा साठ क्षेये माहवारी देंगे। परंतु शीघ शुद्ध लिखने वाला हो। यह तुमारे पास काशी में तुम को खबर देदे।

मिती श्रावण वदी २ शु० संवत् १९३७।

[दयानन्द सरस्वती]

[48]

पत्र (१२७)

[२५३]

मुन्शी बखतावरसिंह जी श्रानिदत रहो।

श्राज पत्रे वेदमाध्य अर्थात् ३०६ से ३२० तक यजुर्वेद के और ३०८ से ३२३ तक ऋग्वेद के तुमारे पास पहुंचाते हैं। एक चिट्ठी अलमोढ़ा से वेदमाध्य के प्राहक की हमारे पास आई है। तुमारे पास पहुंचाते हैं। पच्चोस क्पैये मंगा के पीछे पोथी भेजना और उनको उत्तर भी भेज देना कि आपने जो स्वामी जी के पास चिठी मेजी थी उनने हमारे पास मेजी। हम आपको इतलाह देते हैं कि पच्चीस क्पैये पहुंचा देवें। पुस्तक आप के पास पहुंच जायगी। कल जो उर्दू में हमने चिठी मेजी हैं उसी के अनुसार कामक रो।

कु जरावाले का जो हाल था उसका जवाब मेज दिया है। श्रव हाल में कुछ सुनने में नहीं श्राता है। हमारा शरीर श्रानन्दित है। श्राप लोग श्रानन्दित होंगे। हम मेरठ में शायत् दिन पन्द्रह तक ठहरेंगे।

मिती आ० वदी २ श० संवत् १९३७।

[ दयानन्द सरस्वती ]

[8]

पत्र (१९८)

[२५४]

पिंडत भीमसेन जी आनिन्दित रहो। श्रव तुमने ८ दिन पीछे चिट्ठी भेजना बन्द क्यों कर दिया। बराबर आठ दिन पीछे चिट्ठी भेजा करो। और यह तिखा करो कि इस सप्ताह में इतनी पुस्तकें छपीं और यह २ काम हुआ। और

- १. यह नोटिस (विज्ञापन) यजुर्वेदभाष्य ग्रङ्क १५ के टाइटल पेज ३ पर छपा था। यु॰ मी॰।
- २. पूर्वभीमांसा-सुन्द० तक इतना लेख श्री स्वा० जी की ग्रापनी लेखनी से है।
- ३. २३ जुलाई १८८०, शुक्रवार । मूलपत्र हमारे संग्रह में सुरित्तित है। ४. पूर्ण संख्या २५१ की।
- प्. २४ जुलाई सन् १८८० को मेरठ से बनारस मेजा गया। शनिवार को आ०वदी ३ है। ३ चाहिये।
- ६. म॰ मामराज जी ने ता॰ २३ जुलाई सन् १६४५ को ला॰ रामशरण दास जी रईस मेरठ वालों के

पुराने पत्रों में से उनके पौत्र ला॰ परमात्माशरण जी के साथ खोजा। मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्त है।

[मेरठ, सन् १८८०

अब क्या होता है। आगे सप्ताह में कौन २ काम होने वाला है। और जब २ चिट्ठी लिखा करो मुंशी जी से पूछ देखा करो कि इन न दिनों में कितनी पुस्तकें छपीं। श्रीर जब २ छप कर तैयार हुआ करें सब गए कर संख्या लिखा करो । श्रीर मुन्शीजी तो माहवारी श्रामदनी विक्री के रूपयों का हिसाब चिट्टी लिखते ही हैं। तथापि तुम भी वखत २ सब पूंछ लिया करो। और मुन्शीजी से कहना कि तुम को कुछ भी शङ्का न करनी चाहिये। आप इस्तिफा शरकारी नौकरी का दे दीजिए जब तक तुम काम करने वाले हो, जब तक तुम्हारे शरीर में प्राण है और सामध्ये है तब तक आनन्द में काम किया करो श्रीर पश्चात् भी तुम्हारी सलाह से काम हुत्रा करें ने श्रीर वसीयतनामा' की सभा के सभासद सब आर्य्यसमाज के हैं। किसी प्रकार की हानि उनके लिये न करेंगे। और निश्चय है कि मुंशीजी भी ऐसे नहीं हैं कि कभी धर्मविरुद्ध काम करें। श्रौर वसीयतनामे में यह श्रवकाश रखा है कि चाहे जिसको रजष्टरी जितने अधिकार वा धन देने आदि के लिये मैं करा दूंगा। उसका पूरा करना सभा को अवश्य होगा। श्रोर श्रधिक न्यून श्रदल बदल वा दूसरा वसीयतनामा करने का श्रधिकार मैंने अपना पूरा रखा है। चाहे किसी सभासद को निकाल दूँ वा किसी अन्य सभासद को भरती करदूँ। इत्यादि नियम इसी लिये रखे हैं कि जो चाहें हम कर सकते हैं। ये सभासद मुंशीजी के सुहृद् ही हैं। श्रीर सब विद्वान और धार्मिक हैं। किसी के लिये अन्याय की वृत्ति नहीं करते तो क्या मुंशी जी के लिये अन्यथा प्रवृत्ति करने को उद्यत हो सकते हैं। कभी नहीं। क्योंकि धार्मिक लोग सदा धर्म प्रिय और अधर्मद्रेषी ही होते हैं। क्या मैं वा वे सभासद मुंशी जी को परोपकार के लिए प्रवृत्त हुए नहीं जानते हैं। इस से यह पत्र मुंशी बखतावरसिंह जी को एकान्त में सुना देना। और इस पत्र की अपने पास रखा चाहें तो दे देना। तुम को यह पत्र इस लिये लिखा है कि तू भी इस का साची रहै। श्रीर यह लेख मैंने अपने हाथ से इस लिए किया है कि यह बात गुप्त रहे और समय पर काम आवे।

ह० द्यानन्द सरस्वती

[2]

पत्र (१९१)

[248]

ठाकरदास जी योग नमस्ते!

पत्र त्राप का संवत् १९३७ त्राषाढ़ सुदी पञ्चमी विश्वाची का लिखा हुआ स्वामी जी के पास पहुंचा। देख कर अभिप्राय जान लिया। उस के उत्तर लिखने के लिए स्वामी जी ने सुक्त को आज्ञा दी है इस से आप को मैं लिखता हूं।

बड़े आश्चर्य की बात है कि जो लोग विद्वान नहीं होते, वे ही अन्यथा बातों के लिखने में प्रवृत्त हो कर अपनी हानिमात्र कर बैठते हैं क्योंकि उन को अपनी श्रीर पराई बातों की समक्त तो

१. यह वसीयतनामा [ = स्वीकार पत्र ] १६ स्त्रगस्त सन् १८८० को रजिस्ट्री कराया गया था। उसे हम स्त्रागे पूर्ण संख्या २६३ पृष्ठ २१७ पर छाप रहे हैं। यु० मी०।

२. यह पत्र त्रार्थदर्पण मई सन् १८८६ पृ० ११७-११८ पर छपा। हमने इसे वहीं से लेकर यहां धरा है। प्रकरण से जुलाई १८८० में लिखा गया प्रतीत होता है।

३. १२ जुलाई १८८० । यु॰ मी॰ ।

होती ही नहीं। इस से अपने आप गढ़ा खोद उस में आप ही गिर पड़ते हैं। तुम्हारे लेख से हम को यह विदित हुआ कि आप किसी विद्या को न पढ़े और न किसी विद्वान से कभी तमने संग किया है. नहीं तो स्वामी जी के लेख के अभिशय को क्यों न समम लेते ? और अपना लेख अपने अभिप्राय के विरुद्ध क्यों लिखते ? देखिये, जब स्वामी जी ने बारहवें समुक्षास में अनेक ठिकानों में यह चाहे अर्थात जैन लोग चाहे ऐसा कहते हैं लिखा ही था फिर आपने यह क्यों पूछा कि किस शास्त्र प्रन्थ के अनुसार छापा है ? इस लेख से विदित होता है कि आप जिस सम्प्रदाय में हैं जब उसी का हाल ठीक नहीं जानते तो दूसरे जैनियों के सम्प्रदायों की बातों को कैसे जानने में समर्थ हो सकते हैं। श्रौर इस से यह भी विदित होता है कि आप और आपका कोई संगी भी संस्कृत और भाषा को नहीं पढ़े हैं। जब स्वामीजी ने यह लिखा है कि जैन लोग ऐसा कहते हैं फिर क्या तुम्हारा लिखना कि किस शास और प्रन्थ की यह बात है, मिथ्या नहीं है। श्रीर जो तुमने श्लोक लिखे हैं वे ही स्वामीजी के सब लेख में प्रमाणभूत हैं। परन्तु जो तुमने अग्निहोत्र, तीन वेद, त्रिपुरुड्र भस्म धारण आदि बुद्धि और पुरुषार्थ से हीन मनुष्यों की जीविका, स्वभाव से जगत् की व्यवस्था वर्ण और आश्रमों की किया सब निष्फल हैं लिखा क्या ये बातें तुम्हारा सर्वस्व नीलाम होने में थोड़ा अपराध है। मैं आप से सुहृद्ता से लिखता हूं कि इस विषय को आप भूठा कभी मत समभता। इस में सब जैन मत वालों की सम्मति ले लीजिए। जैसे कि हम सब आयों की तुम्हारे सामने अदालत करने में तन मन धन से निश्चित हैं। क्योंकि तुम जैन लोगों ने परम पवित्र सब सत्य विद्यात्रों से युक्त, सब मनुष्यों के लिए अत्यन्त हितकारी ईश्वरोक्त वेदों और वेदानुकूल अन्य सच्छास्रों की निन्दा और इन परोपकारी पुस्तकों के नाश करने से इतनी हानि की और करनी चाहते हो कि जिसमें सब जैनियों का तन मन और धन लग जावे तो भी नालिश की डिगरी पूरी न होगी। इसलिए तुम सब जैनियों को विज्ञापन देदो कि वह भी सब तुम्हारे सहायक हो के इस मामला को हम लोगों से चला सकें। तुम सब इस में तैयार हो जाओ जैसे कि हम लोग सत्य श्रीर श्रसत्य के निश्चय करने में तत्पर हैं। यह श्रपने मन में वड़ा विचार कर लीजिएगा । हम आर्थी को वैष्णुव आदि के समान कभी मत समक लेना कि जैसे उनके रथ आदि निकालने के विषय को श्रदालत से जीत लेते हो वैसे हमारे साथ कभी न कर सकोगे। क्यों कि जैसे पाषाण श्रादिक मूर्तिपजक तुम हो त्रैसे वे भी हैं। श्रीर हम हैं परमेश्वर पूजक श्रीर तुम हो श्रनीश्वर वादी, श्रर्थात् स्वतःसिद्ध अनादि ईश्वर को नहीं मानते । इत्यादि हेतुओं से तुम्हारा पराजय हमारे सामने होना किसी प्रकार असम्भव और कठिन नहीं है। इस लिये तुम को नोटिस देते हैं कि तुम आपस में मिलकर इस मालला को चलाश्रो। श्रीर जब तुम्हारी योग्यता हमारे सामने कम दीखती है तो खामी जी के सामने तुम्हारी क्या योग्यता हो सकती है ? कभी नहीं। देखना तुम्हारे हजारों प्रन्थों से नेदादि सच्छास्नों की मिथ्या निन्दा कचहरी में हम सब हाकिमों आदि के सामने ठीक २ सिद्ध कर देंगे। इस में कुछ भी सन्देह मत जानना। जितना तुम्हारा सामर्थ्य हो उतना खर्च हो जाने पर भी आप लोगों को बचना अति कठिन देख पड़ता है। श्रीर एक यह वात भी करो कि जैसे हमारे बीच में स्वामी जी बहुत से उत्तम विद्वान हैं वैसे जो कोई एक तुम्हारे मध्य में सर्वोत्कृष्ट विद्वान हो उसको स्वामी जी के सामने खड़ा कीजिए कि जिस से तुम और हमको वैदिक और जैन मत के चर्चा में कुछ आनन्द प्राप्त हो और अन्य मनुष्यों को भी लाभ पहुँचे। हमारे इस लेख को निःसन्देह सत्य और मूल मनत्र तथा सूत्र के तुल्य सममना कि इतने ही लिखने से सब कुछ जानियेगा। तुम्हारे सामने इससे अधिक लिखना हमको आवश्यक नहीं किन्तु जब २ जहां २ जैसा प्रकरण आवेगा तब २ वहां वहां वैसा २ ही हम लोग तुम को ठीक २ साम्रात् करा दिया करेंगे। ऐसा निश्चित जानों। जैसे यह पत्र हम लोग वहां गुजरांवाला के आर्यसमाज के द्वारा ही मेजते हैं वैसे आप लोग वहीं के समाज द्वारा ही हमारे पास पत्र मेजा की जिए।

मिति श्रावण वदी ५ सोमवार संवत् १९३७।

[२९]

[२५६]

### ॥ श्रोश्म् ॥

# ।। विशिष्ट विज्ञापन ।।

### ॥ सब सज्जनों को ॥

विदित हो कि आय्यसमाज और थियोसोफीकल सोसायटी का जैसा सम्बन्ध है वैसा प्रकाशित कर देना सुमको अत्यन्त उचित इसिलये हुआ कि इस विषय में सुम वा अन्य से बहुत मनुष्य पूछने लगे और इस का ठीक मतलब न जान उलटा निश्चय कर कहने भी लगे कि आर्य्यसमाज थियोसोफीकल सोसायटी की शाखा है। इत्यादि अम की निवृत्ति कर देनी आवश्यक हुई। जो ऐसी २ बातों के प्रसिद्ध रीति से उत्तर न दिये जायं तो बहुत मनुष्यों को अत्यन्त अम बढ़ कर विपरीत फल होने का संभव हो जाय। इसिलये सब आर्य्य और अनाय्यों को इसका सत्य २ वृत्तान्त विदित करता हूं कि जिससे सत्य [ में ] टढ़ता और अम का उच्छेद हो के सब को आनन्द ही सदा बढ़ता जाय।

बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि जो किसी समय मुम्बई श्राय्यंसमाज के प्रधान थे उनसे न्यूयार्क नगर एमिरिका की थियोसोफिकल सोसायटी के प्रधान एच०एस० करनेल ब्योलकाट साहब बहादुर और एच० पी० मेडम ब्लेवस्टिकी ब्यादि से कुछ दिन ब्यागे पत्र द्वारा एक दूसरी सभा के नियम ब्यादि जानके सम्वत् १९३५ चेत्र में मेरे पास भी पत्र न्यूयार्क से ब्याया था कि हम को भी ब्याय्यांवर्तीय प्राचीन वेदोक्त धर्मोपदेश विद्या दान कीजिये। मैंने उसके उत्तर में ब्रत्यन्त प्रसन्नता से लिखा कि मुभसे जितना उपदेश बन सकेगा यथावत् करूंगा। इसके पश्चात उन्होंने एक डिपलोमा मेरे पास इसलिये भेजा जो थियोसोफिकल सोसायटी ब्यार्थावर्तीय ब्यार्थ्यसमाज की शाखा करने के विचार का निभित्त था। जब वह डिप्लोमा यहां से फिर वहां गया सभा करके सभासदों को सुनाया, तब बहुत से सभासदों ने इस बात में प्रसन्न होकर इस का स्वीकार किया, और बहुतों ने कहा कि हम ठीक २ जान के पश्चात् इस बात का स्वीकार करेंगे।।

जब वहां ऐसा विरुद्ध पत्त हुआ तब फिर मेरे पास वहां से पत्र आया कि अब हम क्या करें ? इस पर मैंने पत्र लिखा कि यहां आर्य्यावर्त्त में अब तक भी बहुत मनुष्य आर्य्यसमाज के

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

१. पं॰ लेखरामकृत ऋषि जीवनचिरत पु॰ ६८५, ६८६ । जीवनचिरत में पत्र के अन्त में ''दयानन्द सरस्वती'' लिखा है। वस्तुतः यह पत्र आनन्दी लाल के हस्ताचरों से गुजरांवाला मेजा गया था। इस के लिखाने वाले, जैसा पत्र के आरम्भ में लिखा है, श्री स्वामी जी ही थे। दयानन्द मुख चपेटिका में इस के आगे कुछ और मी पंक्तियां हैं और अन्त में आनन्दी लाल जी के अंग्रेज़ी में हस्ताचर हैं। २६ जुलाई १८८०।

नियमों को स्वीकार नहीं करते, थोड़े से करते हैं, तो वहां वैसी बात के होने में क्या आश्चर्य है। इसलिये जो मनुष्य अपनी प्रसन्नता से आर्य्यसमाज के नियमों को मानें वे वेदमतानुयायी और जो न मानें वे केवल सोसायटी के सभासद रहें, उनका श्रलग होजाना श्रच्छा नहीं । इत्यादि विषय लिख के मैंने वाव हरिश्चन्द्र चिन्तामिए के पास पत्र भेजा और उनको लिखा कि इस पत्र की अंग्रेजी करके शीघ वहां भेज दीजिये। परन्तु उन्होंने वह पत्र न्युयार्क में न भेजा, जब समय पर पत्र का उत्तर वहां न पहुंचा तब जैसा मैंने उत्तर निखा था वैसा ही वहां किया गया, कि जो वेदों को पवित्र सनातन ईश्वरोक्त मानें वे वैदिकी शाखा में गिने जायं, और वह आर्ध्यसमाज की शाखा रहे: परन्त वह सोसायटी की भी शाखा रही क्योंकि वह सोसायटी की भी एक श्रंगवत् है। श्रर्थात् न श्रार्थ्यसमाज थियोसोफिल सोसायटी की शाखा श्रीर न थियोसोफिकल सोसायटी श्रार्थ्यसमाज की शाखा है, किन्तु जो वैदिकी शाखा थियोसोफिकल में है जिसमें एच्० एस्० करनेल त्र्योलकाट साहव वहादुर श्रौर एच्० पी० मेडन व्लेवस्टकी श्रादि सभासद हैं वह श्राय्येसमाज श्रौर सोसायटी की शाखा है। ऐसा सब सज्जनों को जानना उचित हैं। इससे विपरीत समक्तना किसी को योग्य नहीं। देखिये यह बढ़े आश्चर्य की बात हुई है कि जिस समय मुम्बई में आर्यसमाज का स्थापन हुआ उसी समय न्यूयार्क में थियोसोफिकल सोसायटी का आरम्भ हुआ। जैसे आर्य्यसमाज के [उद्देश्य] नियम लिखके माने गये वैसे ही [चहेश्य] नियम थियोसोफिकल सोसायटी के निश्चित हुए, और जैसा उत्तर मैंने तीसरे पत्र में लिख के वैदिकी शाखा और सोसायटी के लिये भेजा था उसके पहुंचने के पूर्व ही न्यूयार्क में वैसा ही कार्य किया गया। क्या ये सब कार्य्य ईश्वरीय नियम के अनुसार नहीं हैं ? क्या ऐसे कार्य्य श्रहपज्ञ जीव के सामर्थ्य से बाहर नहीं हैं ? कि जैसे कार्य्य पृथिवी के ऊपर जिस समय में हों वैसे ही भूमि के तले [पाताल] अर्थात् एमरिका में उसी समय हो जाय । ये बड़ी अद्भुत वातें जिसकी सत्ता से हुई हैं अर्थात् पांच हजार वर्षों के पश्चात् अर्यावर्त्तीय धार्मिक मनुष्यों और [पातालस्थ] अर्थात् एमरीका के निवासी मनुष्यों का वेदोक्त सनातन सुपरीचित धर्म्य व्यवहारों में वान्धवीय प्रेम प्रकट किया है, उस सर्वशक्तिमान परमात्मा को प्रार्थना पुरस्सर कोटि कोटि घन्यवाद देता हूँ; कि हे सर्वशक्तिमन् ! सर्वव्यापक ! द्यालो ! न्यायकारिन् ! परमात्मन् जैसा आप ने कृपा से यह कृत्य किया है वैसे भूगोलस्थ सब धर्मात्मा विद्वान मनुष्यों को उसी वेदोक्त सत्य मार्ग में सुस्थिर शीघ कीजिये कि जिससे परस्पर विरोध छूट, मित्रता होके सब मनुष्य एक दूसरे की हानि करने से पृथक होके घ्रान्योन्य का उपकार सदा किया करें। वैसे ही हे प्रियवर मनुष्यो घ्राप लोग भी उसी परब्रह्म की प्रार्थना पूर्वक पुरुषार्थ कीजिये, कि जिससे हम सब लोग एक दूसरे को दुःखों से सदा छुड़ाते और त्रानन्द से युक्त रहें, त्रौर दूसरों को भी सर्वमुखों से युक्त करें । हे बन्धुवर्गो जैसा आनन्द मनुष्यों को छः हजार वर्षों के पूर्व था वैसा समय हम लोग कब देखेंगे । धन्य हैं वे मनुष्य कि जो जैसा अपना हित चाहते और अहित नहीं चाहते थे और वैसा ही वर्त्तमान सब के साथ सदा करते थे। क्या यह छोटी बात है। इस लिखने में मेरा श्रमिप्राय यह है कि जो २ बातें सब मनुष्यों के सामने सत्य हैं, जिनके मिध्या होने के लिये कोई भी मनुष्य साची न दे सकता है उन उन बातों को धर्म, उन से विरुद्ध बातों को अधर्म जान मान के भूगोलस्थ मनुष्यों को धर्म की बातों का प्रहुण करना, और अधर्म की बातों का छोड़ देना, क्या कठिन और असम्भव है ? जिस लिये ऐसा ही वर्तमान छः हजार वर्षों से पूर्व था इसी लिये कोई दूसरा मत प्रचित्त नहीं होता था, जैसे अज्ञान से आज कल मनुष्य एक र अपनी र कौम और एक र अपने र मजहव की बढ़ती और अन्य सब की हानि करने में प्रवृत्त हो रहे हैं वैसे वैदिक मत के प्रचार समय में न था; किन्तु सब मनुष्य सब की बढ़ती करने में प्रवर्तमान हो कर किसी की हानि करना कभी न चाहते थे, सब को अपने समान समम दुःखी किसी को न करते, और सब को सुखी किया करते थे, वैसा ही अब भी होना अवश्य चाहिये। क्या जब सब धार्मिक विद्वान मनुष्य पुरुषार्थ से निःशंकित सत्य बातों में एक सम्मित और मिथ्या बातों में एक विमित्त कर एक मत किया चाहें तो असम्भव और किन्त है ? कभी नहीं। किन्तु सम्भव और अति सुगम है। जितना अविद्वानों के विरोध और मेल से मनुष्यों को हानि और लाम नहीं होता, उतने से हजार गुणा हानि और लाम विद्वानों के विरोध और मेल से होता है। इस लिये सब सज्जन विद्वान मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि शीच विरुद्ध मतों को छोड़ एक अविरुद्ध मत का प्रहणा कर परस्पर आनन्दित हों। यही वेदादि शास्त्र प्राचीन सब ऋषि मुनि और मेरा भी सिद्धान्त और निश्चय है।

बुद्धिमानों के सामने श्रधिक लिखना श्रावश्यक नहीं क्योंकि वे थोड़े ही लेख में सब कुछ जान लेते हैं॥ श्रो३म्॥

मिती श्रावण वदी ५, सोमवार सम्वत् १९३७॥

हस्ताचर-स्वामी द्यानन्द सरस्वती

[96]

पत्र (२००)

[२५७]

मुन्शी बखता वर सिंह जी आ निन्दत रहो

तुमने जो पारसल मेजा हमारे पास पहुँचा। जो तुमने लिखा कि पंद्रहमा श्रङ्क एक श्रौर सोहलवां सत्रहवां इकट्ठा निकालेंगे सो बहुत श्रच्छी बात है। चारों वर्षों के पृथक् २ चन्दा का विज्ञापन टाटल पेज पर छाप दो कि जिनने जितना दिया हो उतना छोड़ बाकि सब दाम भेज दें। श्रौर श्रार्थसमाज -थियोसोफीकल सुसायटी का विज्ञापन पत्र लिख कर हम भेजते हैं। सो छपवा कर सब श्रार्थसमाजों में दश दश श्रौर सुसायटीश्रों श्रौर करनेल श्रोलकाट साहेब को दो चार भिजवा दो श्रौर हमारे पास भी दश पांच भेज दो। श्रौर एक कार्ड हमारे पास श्राया है। तुमारे पास भेजते हैं चिट्ठी के साथ। एक नई बात हुई है कि मुनशी इन्द्रमण् जी को मुसलमानों ने बड़ा दिक्क किया है। यह बात किसी से कहने योग्य नहीं है। श्रागे इसका हम कुछ विचार करते हैं। सो श्राप के पास में विदित करेंगे। वेद भाष्य के[पत्रे भी वैयार] हुए हैं। दो चार दिन में भेजेंगे।

१४) रुपैये चौधरी देवीसिंह जी आ .... वाले जिले मेरठ के और—

१२) रुपैये बाबू गर्णेशी लाल वा विहारी लाल जी मेरठ वालों के श्रौर—

१. २६ जुलाई १८८० । यह विज्ञापन श्रार्य दर्पण मई १८८० के टाइल पेज पर तथा यजुर्वेद माध्य श्रङ्क १६, १७ (सम्मिलित) के टाइटल पेज ३,४ पर छपा था। यजुर्वेदमाध्य में 'सोमवार पद नहीं है। यु॰ मी॰।

२. यह विज्ञापन यजुर्वेदभाष्य श्रंक १६, १७ (सिम्मिलित) के टाइटल पेज ४ पर छपा है।

३. देखो ऊपर (पूर्ण संख्या २५७) वाला विशिष्ट विज्ञापन ।

२१ रुपैये ठाकर शेरसिंह जी कर्णवास वाले के हमारे पास आये। इनका नाम वेदभाष्य के टाटल पेज पर छपा देना।

मिति श्रावण वदी ६ मंगलवार संवत् १९३७।

[दयानन्द सरस्वती]

[8]

पत्र (२०१)

[396]

ता० १४ जुलाई र सन् १८५०

श्रीयुत प्रियवर एच एस् करनेल खोलकाट साहेब तथा एच पी ब्लेवस्तिकीजी खानिन्दित रहो। नमस्ते । अब मेरा शरीर नीरोग हो के खस्थानन्द में है । आशा है कि आप लोग भी आनन्द्र में होंगे । सना था कि आप लोग लंका अर्थात सिलौन की यात्रा के लिए गए थे। वहां क्या २ आनन्द की बातें हुई और क़शल चेम आए ही होंगे। मैं इस समय मेरठ में ठहरा हूँ। एक मास भर रहुंगा। जैसा दृढ़ता से वेदों को परम पवित्र सनातन ईश्वरोक्त सब का हितकारी आपने अपने नागरी पत्र में लिख कर काशी को मेरे पास भेजा था उसको देख मैं और समस्त आर्थ्य विद्वान् लोग बहुत प्रसन्न हुए। सत्य है कि (श्रङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति) जो धर्मात्मा विद्वान पुरुष हैं वे जिस धर्म की बात को प्रहरण करते हैं उसको कभी नहीं छोड़ते। अब मैं जो थियोसोफीकल सुसायटी में वैदिकी शाखा है वह आर्य्य समाज और थियोसोफीकल सुसायटी की भी शाखा है। न आर्य्यसयाज थियोसोफीकल सुसायटी की शाखा और न थियोसोफीकल सुसायटी आर्च्यसमाज की शाखा है; किन्तु जो इन दो समाजों के घर्म के सम्बन्धार्थं प्रेम का निमित्त वैदिकी शाखा है. वही परस्पर सम्बन्ध का हेतु है। इत्यादि बातों की प्रसिद्धि जैसी आर्य्यसमाजों में मैं शीघ करूंगा वैसी प्रसिद्धि थियोसोफीकत सुसायटी में भी आप अवस्य करेंगे। इस बात का गुप्त रहना ठीक नहीं। क्योंकि आगे आर्य्यसमाज वैदिकी शाखा और थियोसो-फीकल सुसायटी के सभासदों को, जैसा पूर्वोक्त सम्बन्ध है वैसा ही जानना, मानना, कहना श्रौर प्रसिद्धि करना सर्वदा उचित होगा, श्रन्यथा नहीं। ऐसी प्रसिद्धि हुए पर किसी को कुछ भ्रम न रहकर सुनिश्चय से सब को आनन्द होता जायगा। और जो मैंने सिनट साहेब से कहा था वह ठीक है। क्योंकि मैं इन तमाशे की वातों को देखना दिखलाना उचित नहीं सममता। चाहे वे हाथ की चालाकी से हों चाहे योग की रीति से हों। क्योंकि योग के किए कराये विना किसी को भी योग का महत्त्व वा इसमें सत्य प्रेम कभी नहीं हो सकता, वरण सन्देह श्रौर श्राश्चर्य में पड़कर उसी तमाशे दिखलाने वाले की परीचा श्रीर सब सुधार की वार्तों को छोड़ तमाशे देखने को सब दिन चाहते हैं, श्रीर उसके साधन करना स्वीकार नहीं करते। जैसे सिनट साहेब को मैंने न दिखलाया श्रीर न दिखलाना चाहता हूँ, चाहे वे राजी रहें

३. पायोनियर पत्र इलाहाबाद के सम्पादक। इन के नाम के पत्र की स्चना, पूर्ण सं० २२३ देखें।

१. २७ जुलाई सन् १८८० को मेरठ से बनारस मेजा गया । म० मामराज जी ने मेरठ से जुलाई सन् १६४५ में ला॰ रामशरणदासजी के पुराने पत्रों में से खोजा। मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्चत है।

२. १४ जुलाई को लिखा गया होगा, परन्तु श्रावण वदी ६—२७ जुलाई १८८० को अंग्रेजी में अनुवाद करा के मेजा गया होगा। देखो पत्र के अन्त में श्रावण की तिथि।

चाहे नाराज हों क्योंकि जो मैं इस में प्रवृत्त हो ऊं तो सव मूर्ख और पिएडत मुक्त से यही कहेंने कि हम को भी कुई योग के आध्यर्य काम दिखलाइये, जैसा उसको आपने दिखलाया, ऐसी संसार की तमाशे की लीला मेरे साथ भी लग जाती जैसी मेडम एच पी ब्लेवस्तिकी के पीछे लगी है। श्रव जो इनकी विद्या धर्मात्मता की बातें हैं कि जिन से मनुष्यों के आत्मा पवित्र हो आनन्द को प्राप्त हो सकते हैं उनका पूछना और प्रहरा करने से दूर रहते हैं। किन्तु जो कोई आता है मेडम साहेव आप हमको भी कुछ तमाशा दिखलाइये। इत्यादि कारणों से इन बातों में प्रवृत्त नहीं करता न कराता हूँ। किन्तु कोई चाहे तो उसको योग रीति सिखला सकता हूँ कि जिसी से वह स्वयं योगाभ्यास कर सिद्धियों को देख लेवे। इससे उत्तम बात दूसरी कोई भी नहीं। मैं बहुत प्रसन्नता से आप लोगों को लिखता हूँ कि जो आपने ईसाई आदि आधुनिक मत छोड़, परम पवित्र सनातन ईश्वरोक्त वेदमत का स्वीकार कर, इस के प्रचार में तन मन और धन भी लगाते हो। और उस बात से अति प्रसन्नता मुमको हुई कि जो आपने यह लिखा कि कभी आप भी वेदों को छोड़ दें तो भी हम लोग उन को न छोड़ेगें। क्या यह बात छोटी है ? यह परमात्मा की परम क्रुपा का फल है कि जिसने हम और आप लोगों को अपने वेदोक्त मार्ग में निश्चय पूर्वक प्रवृत्त किए। उसको कोटि कोटि धन्यवाद देना भी थोड़े हैं। जैसी उसने हम और आप लोगों पर करुणा की है, वैसी ही कृपा सव पर शीघ्र करे कि जिससे सब लोग सत्य मत में चलें और फूठ मतों को छोड़ देवें। कि जैसा अपने आत्मा अत्यन्त श्रानन्दित हैं वैसे सब के आत्मा हों। और एक श्रानन्द की बात की सूचना करता हूँ कि जिस को सुन आप लोग बहुत आनिन्दत होंगे। सो यह है कि एक वसीयतनामा १२ अठारह पुरुष अर्थात् जिन में दो अर्थात् एक आए और दूसरी ब्लेवस्तिकी और शोलह पुरुष आर्थ्यावर्तीय आर्थ्यसमाज के प्रतिष्ठित पुरुष हैं। इन आप सब लोगों के नाम पर पत्र और नियम लिख रजिष्टरी कराके आप और सब लोगों के पास शीघ्र पत्र भेजूँगा कि जिससे पश्चात् किसी प्रकार की गड़बड़ न हो कर मेरे सर्वस्व पदार्थ परोपकार में आप लोग लगाया करें और मेरी प्रतिनिध यह सभा सममी जावेगी।

इस लिए उस पत्र को आप लोग बहुत अच्छी प्रकार रखियेगा कि वह पत्र आगे बड़े २ कामों में आवेगा । किमधिलेखेन प्रियवरविद्वद्विचच्च ऐषु । 3

१. इस पत्र का इतना श्रंश इम ने पहले परोपकारी पत्र से छापा था। "जिस" से ग्रागे कुछ शब्द परोपकारी के सम्पादक ने ग्रपनी श्रोर से बना कर घरे थे। महात्मा मुंशीराम जी ने पत्र व्यवहार में "स से वह स्वयं" से लेकर पाठ छापा था। प्रतीत होता है कि परोपकारी में छापने वालों को मूलपत्र का पृष्ठ ३ नहीं मिला होगा। श्रीर म॰ मुंशीराम जी को पहले दो पृष्ठ नहीं मिले। वहीं से हमने भी पहले इस एक पत्र को दो पत्रों के रूप में छापा था। ग्राव संगति मिला कर पढ़ने से ज्ञात हुश्रा कि यह एक ही पत्र है। इसी लिए श्रव यह यथार्थ रूप में छापा गया है।

२. यह वसीयतनामा १६ श्रामस्त सन् १८८० को रिजस्टरी कराया था। इम उसे पूर्ण सं० २६४, पृष्ठ २१७ पर छाप रहे हैं।

३. "यह पत्र पैंसिल से लिखा हुन्ना है त्रीर इस पर पृष्ठ संख्या ३ तीन है । जिससे विदित होता है कि इसके पूर्व दो पृष्ठ न्नीर लिखे गये थे, परन्तु उन दोनों पृष्ठों का पता नहीं है। यद्यपि पत्र के न्नादि, मध्य व न्नान से कर्नल न्नालकट साहब का नाम लिखा हुन्ना नहीं है परन्तु सारे पत्र का न्नाश्य विचारने से यही बोध होता है कि यह पत्र श्री स्वामी जी महाराज की न्नोर से न्नालकट साहब को लिखा गया था।

सं० १९३७ मि० श्रावण वदी ६ मंगलवार । ता० १४ जुलाई सन् १८८०। (दयानन्द सरस्वती)

[2]

पत्र (२०२)

[२५९]

Meerut, 27th juey 1880.\*

My Dear Babu Mulrajji, M. A.

It is a long time since I have heard nothing from you, still I hope you are quite well and wish you to give me, in future, occasional, if not often, intimation of your destination, &c.

I am at Meerut for a fortnight last and intend staying here for about 20 days more.

I have a mind to address our Government on a subject which is unquestionably a matter of public good, now wished for by hundreds of men, who have attended to my lectures, &c. It is that Government may be moved to pass a regulation by which children of widows be entitled to claim and obtain their rights of the property, both movable and immovable, of their parents, and that any one trying to injure the widow in any way be made liable to punishment by Government.

The results which I anticipate from the above are, that lives of thousands of children will be saved, miscarriages shall be minimised or not all, Niyog or remarriage of widows will thus be introduced at last &c. &c. &c. (sic) But this is a work not to be dealt with by men of ordinary abilities. I, therefore, leave the matter to you and ask you to frame regulations worthy of the subject, giving everything requisite in detail. I hope you will agree with me and do the needful. I have given you only the hints, you have to think upon and frame what is called a law, complete in all respects, having sections, clause, &c., for every part of the point in view. This draft regulation may be sent to me as soon as

१. ''इस पंक्ति से बहुत नीचे बाई ख्रोर ''स्वामी जी'' पेंसिल से लिखा हुद्या है जो बतलाता है कि श्री स्वामी जी महाराज की ख्रोर से जो पत्र कर्नल ख्रालकट साहब को लिखा गया उस की यह कापी है ।''

२. २७ जुलाई १८८० । १४ जुलाई के विषय में पृष्ठ २०६ टि० २ देखो ।

३. पृष्ठ २१० की टि० सं० ३ तथा पृष्ठ २११ की टि० सं० १; ये दोनों टिप्पियां "पत्र व्यवहार" में म० मुंशीराम जी की हैं।

४. श्रावण कृष्ण ६ मंगल सं० १६३७ ।

ready in a complete state for submission of Government under my, signature, but the sooner it is done so much the better.

There is a piece of bad news too which requires your advice, and considerable efforts which it may be worthy of. I think you know well Munshi Indra Man of Muradabad. He is now president of the Arya Samaj there, and a personage of unrivalled excellence. No, he is universally known and it is useless to enter into detail as regards him. The Mohammadans are his great enemies and have always been playing tricks to injure him but in vain. They have succeeded this time to mortify him to the very soul, and that injury is not to him alone, but for all the Aryas.

History of the case stands thus that a newspaper, called jam-i-jamshed of Muradabad, published an article on 16th May last stating that Munshi Indra Man, enemy of Islam, had published some books in these days against Mohammadanism which will give rise to a general disturbance in the Mohammadan community, and that he will lose his life by similar acts one day or other. It is not known how the Magistrate and Collector of the city allowed him this liberty. Now I solicit the Government to order destruction of the books he has published and abolition of the press.

The said newspaper was laid before Government (I mean H. E. the Lieutenant-Governor) and enquiry made through District authorities, which unfortunately resulted on 24th instant in the infliction of a fine of Rs. 500 on Munshi Indra Man and the confiscation of all his books without any due enquiry into the matter. As the matter is of great concern not only to Munshi Indra Man, but to our country and to all of us, I, therefore ask your advice in the matter how to proceed. In the meantime, arrangements will be made to prefer an appeal in the case. Early answer with full directions to go in this critical matter is requested.

I have yesterday received a letter from a gentleman of Germany accepting instructions of our countrymen in any act they like. (sic) This is a good chance indeed, and if you like to allow your brother to try his fortune, it is all that I want. Any other Aryan worthy of the task, will also be welcome. Full particulars as to expense, voyage, &c., &c., will be communicated to you at leisure time.

All is well here and hope the same so be with you. Hoping to hear from you soon.

I am,

Yours, & c.

(Sd.) Daya Nand Saraswati.

P. S.—After all, I again ask you to interest yourself in this matter and expedite your advice & c.

[भाषानुवाद]

मेरठ २७ जुलाई १८८०

मेरे 'यारे वावू मूलराज जी एम० ए०

चिर काल से त्राप का कोई पत्र नहीं श्राया, फिर भी मैं श्राशा करता हूँ कि श्राप सर्वथा श्राप्त हैं श्रीर चाहता हूँ कि भविष्य में यदि श्रधिक नहीं तो कभी २ श्रपने स्थानादि की सूचना देंगे।

मैं पिछले पत्त से मेरठ में हूँ और लगभग २० दिन और यहाँ ठहरने की इच्छा है।

मेरा विचार श्रपनी सरकार को एक ऐसे विषय पर लिखने का है जो निस्सन्देह जनता का हितकारी है जिसे श्रव मेरे व्याख्यानों श्रादि के सुनने वाले सैंकड़ों पुरुष चाहते हैं। वह यह है कि सरकार को एक ऐसा नियम पास करने के लिए कहना चाहिये जिस से कि विधवाश्रों की संतान श्रपने पिताश्रों की स्थावर श्रीर जंगम सम्पत्ति के श्रधिकार को प्राप्त करे श्रीर उसे ले सके। श्रीर जो कोई विधवा को किसी प्रकार भी कष्ट दे वह सरकार का दण्ड भागी बने।

पूर्वोक्त बात से मैं इन फलों का विचार करता हूँ कि हजारों बालकों के जीवन बचाये जांयगे गर्भपातन बन्द या कम हो जायगा, इस प्रकार नियोग या विधवाओं का पुनर्विवाह अन्ततः प्रचलित होगा'' । परन्तु इस काम को साधारण योग्यता के पुरुष नहीं कर सकते, इस लिये मैं यह विषय आप पर छोड़ता हूं और चाहता हूं कि आप यथायोग्य नियम बनायें जिन में सब आवश्यक बातें विस्तार से आजायें। मैं आशा करता हूं कि आप मेरे से सहमत होंगे और अवश्य काम करेंगे। मैंने आप को संकेत मात्र दिये हैं, आपने ही विचार कर नियम बनाना है, जो सब प्रकार से पूर्ण हो और जिस में प्रकृत बात के प्रत्येक भाग के लिए दफा आदि बनें। जब यह मसौदा पूर्णतया तथ्यार हो जाये तो मुक्ते भेज दें। मैं इसे अपने हस्ताचर सहित सरकार के पास भेजूंगा, और यह जितना शीघ हो उतना ही अन्छा है।

एक अशुभ समाचार भी है, जिस में आप की सम्मित और यथायोग्य बहुत परिश्रम की आवश्यकता है। मेरा विचार है आप मुन्शी इन्द्रमन मुरादाबादी को भले प्रकार जानते हैं। वह अब वहां की आर्यसमाज के प्रधान हैं, और अद्वितीय योग्यता के पुरुष हैं। नहीं, वह सर्वत्र प्रसिद्ध हैं अतः उन के विषय में अधिक कहना निरर्थक है। मुसलमान उन के बड़े शत्रु हैं और सदा निष्फल ही उन्हें कष्ट देने के उपाय घड़ते रहे हैं, अब वे उन्हें अत्यन्त बांध लेने में सफल हुए हैं, और यह हानि

चन्हीं की नहीं, प्रत्युत सब आय्यों के लिये हैं।

१. श्रावण् कृष्ण् ६ मंगलवार सं० १६३७।

मुकद्में का वृत्तान्त ऐसे हैं कि मुरादाबाद के एक पत्र जामेजमरोद ने गत १६ मई को एक लेख इस विषय का प्रकाशित किया है "कि इसलाम के शत्रु मुनशी इन्द्रमन ने इन दिनों महम्मदी मत के विरुद्ध कुछ प्रन्थ प्रकाशित किये हैं। इन से महम्मदी श्रेणी में एक सामान्य विसव हो जायगा, और वह एक न एक दिन अपने जीवन को खो बैठेगा। यह ज्ञात नहीं होता कि नगर के मजिस्ट्रेट और कलेक्टर ने उन्हें कैसे यह स्वतन्त्रता दे दी। अब मैं सरकार से प्रार्थना करता हूं कि वे उस के प्रकाशित प्रन्थों को नष्ट कर दे और प्रेस को तोड़ दे"।

पूर्वोक्त पत्र सरकार (मेरा श्रमित्राय लाट साहव से है) के सामने रखा गया और जिला श्रम्भरों द्वारा पड़ताल हुई। उस का दुदैंव से २४ तारीख़ को यह फल निकला कि बिना किसी उचित पड़ताल के मुन्त्री इन्द्रमन पर ५०० रूपये दण्ड हुआ और उन के सारे ग्रन्थ जवत हुए। क्योंकि यह बात केवल मुन्शी इन्द्रमन के लिये ही बड़ी नहीं, प्रत्युत हमारे देश और हंम सब के लिये भी है, इसलिये मैं श्राप की सम्मित चाहता हूं कि इस विषय में क्या किया जाय ? इस श्रन्तर में मुकदमे की अपील दायर किये जाने का प्रबन्ध किया जायगा। इस सूक्ष्म विषय में पूर्ण-निर्देशयुक्त उत्तर शीघ चाहिए।

मुक्ते कल जर्मनी से एक महाश्य का पत्र आया है। उस ने स्वीकार किया है कि वह हमारे देशीय लोगों को किसी भी विषय में शिक्ता देगा। यह निश्चय ही अच्छा अवसर है, और यदि आप अपने भाता को दैविक परीचा में डालना चाहते हैं, तो बस मैं यही चाहता हूं। कोई अन्य आर्य सज्जन जो इस काम के योग्य हैं बड़ी प्रसन्नता से लिये जायेंगे। व्यय, यात्रादि का पूर्ण व्योरा अवकाश मिलने पर आप को लिखा जायगा।

यहां सब श्रानन्द है और श्राप का श्रानन्द चाहते हैं। श्राशा है श्राप शीघ उत्तर देंगे।

में हूं श्राप का ह० द्यानन्द सरस्वती

पुन:—श्रन्ततः मैं पुनः कहता हूं कि श्राप इस विषय में ध्यान दें श्रौर श्रपनी सम्मिति श्रादि से सूचित करें।

[9,4]

पत्र (२०३)

[२६०]

मुन्शी बखतावर सिंह जी त्रानिन्दत रही।

पत्र आपके बहुत से आये। वेदमाध्य का पुस्तक भी पहुंचा। हिसाब तुमने नहीं भेजा। सो पिछले महीने [के] आर्यर्र्पण का और अब का भेजो। मेला चांदापुर का जैसा हमने कहा था कि उर्द और नागरी पृथक २ छापो सो क्यों नहीं छापा। तुमारे लेख से हमको कुछ संदेह होता है। क्या तुमने अपने नाम से छापने का विचार किया है। हमारी तो आज्ञा थी नहीं। अभी तो बहुत खर्च

१. प्रो॰जी वाईज एलवर्ट्स् स्ट्रीट वेंडन जर्मनी के साथ श्रो स्वामीजी महाराजका पत्रव्यवहार भारतीयों को कलाकौशल सिखाने के विषय में हुआ था। प्रो॰जी॰ वाईज के ६ पत्र मास्टर लक्ष्मण्जी द्वारा सम्पादित उर्दे जीवन चरित के परिशिष्ट में छपे हैं। सम्भत्र हैं। यहां उन्हीं के किसी पत्र की स्रोर यह संकेत हो। यु॰ मी॰।

है। कुछ ठहर जाओ पीछे छापना। ये दो फरमे [के] पत्रे वेदभाष्य के दो दिन पीछे हम भेजते हैं। श्रीर वर्ष के श्रन्त में यह छाप दिया करो कि जिस २ का जितना २ वाकी हो वे भेज देवें। श्रीर यह भी छाप दो सतरहवें श्रंक के श्रन्त में कि जिसका रूपैया श्राजतक नहीं श्राया है उसके पास श्रठारहवां श्रंक नहीं श्रावेगा। श्रीर लेने के लिये जैसा होगा वैसा उपाय किया जायगा।

मिती श्रावण वदी ३० गुरु० संवत् १९३७।

हम कैई वखत लिख चुके। श्राप सममते क्यों नहीं। शायत् घबरा के देखते होगे। अनाथ के पालन श्रर्थात् लावारस के लिये वे पांच सौ रूपैये वाबू दुर्गाप्रसाद जी ने दिये हैं। १०) रु० हमने। हम ये बात तीन बखत लिख चुके हैं। रे दयानन्द सरस्वती

मेरठ

[9,9]

पत्र (२०४)

[२६१]

मंशी बखतावरसिंहजी आनन्दित रहो!

वेदभाष्य के ग्राहक परिखत पुरुषोत्तमदास निवासी दिल्ली, घासीराम का कूचा, मकान वट्टामल नारिये के में—इनका १२) रूपैये बावत वेदभाष्य के हमारे पास जमा हुए, मिती भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा १, शनिवार को, यहां का नम्बर ६११। भूमिका का पुस्तक उनके पास है। यजुर्वेद, ऋग्वेदों के श्रंक भेज देना। श्रीर उनसे चौथे वर्ष का दाम लिख कर मंगा लेना। शायत् नंबर ६१० ठाकर बलवंत सिंह जिला बुलन्दशहर परगणे शिकारपुर प्राम चांदोख वाले के २५) बावत वेदभाष्य के हमारे पास जमा हुए। इसका हाल पिछले पत्र में लिख चुके हैं। श्रापने श्रपने रजस्टर में जमा कर लिया होगा। १०) रूपैये चौवे गोपीनाथ जी शिमले वाले के बावत धर्मदाय के हमारे पास श्राये हैं। वेदभाष्य के टाटल पेज पर छपा देना। यह भी छपवा देना कि हाल में स्वामी जी मेरठ में हैं। इतना ही श्रीर नहीं। श्रायर्वदर्पण में यह भी छाप देना कि रामावाई के दो व्याख्यान मेरठ में बहुत ही श्रच्छे हुए। स्व लोगों ने सुनके प्रशंसा की। श्राशा है कि छी लोगों में उपदेश करेंगी तो बड़ी उन्नति की बात है। इसका हाल श्रागे लिखा जायगा। हम श्रानन्दित हैं। श्राप लोग श्रानन्दित होंगे।

मिति श्रावण सदी ३ सोमवार संवत् १९३७।

[द्यानन्द सरस्वती]

१. ५ ग्रागस्त सन् १८८० । गुक्वार को श्रावण वदी १४ है।

२. ता॰ २४ जुलाई सन् १६४५ को म॰ मामराज जी ने मेरठ-निवासी ला॰ रामशरणदास तथा उनके पुत्र ला॰ बनारसीदास जी रईस कोर्ट वालों के सहस्रों पत्रों में से खोजा। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिन्ति है।

३. पत्र श्रावण सुदी ३ सोमवार को लिखा गया है, उस में भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा का उल्लेख नहीं हो सकता । स्रतः 'श्रावण शुक्ल प्रतिपद' पाठ चाहिये, उस दिन शनिवार भी था । यु॰ मी॰ ।

४. रमाबाई के सम्बन्ध में श्रावण ग्रु॰ १३ सं॰ १६३७ (= १८ श्रगस्त१८८०), माद्र सुदी ४ सं॰ १८३७ (= ६ सित॰ १८८०) तथा भाद्र सुदी ८ सं॰ १६३७ (= १२ सित॰ १८८०) के श्रगले पत्र भी देखें। ग्रु॰ मी॰।

५. ६ ग्रगस्त सन् १८८० ।

## ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

[90]

पत्र (२०५)

[२६२]

लाला मूलराजजी आनन्दित रही !

मुन्शी इन्द्रमन सम्बन्धी जो पत्र हम ने उद्दे में भेजा है उसका श्रंग्रेजी में श्रनुवाद होना है। जो पत्र जर्मनी से श्राए हैं वह श्राप के देखने के लिए ला० श्रानन्दीलाल द्वारा भेज द्विए हैं। श्रुपथा हमें बताना कि क्या उत्तर दिया जाय ? मेरा विचार है कुछ पुरुष कला कौशल सीखने के लिए जर्मनी भेज दिये जायें। परन्तु यदि यहीं श्राय्यीवर्त में ऐसा सिखाने वाले पुरुष मिल जायें तो बाहर जर्मनी को श्रादमी भेजने की कोई श्रावश्यकता नहीं।

यहां मुंशी इन्द्रमन के लिए ३००) रुपये चन्दा हो गया है। इस विषय में किसी निश्चित परिणाम पर पहुँचने के लिए हमने आप को सब आवश्यक पत्र भेज दिये हैं। कृपया बहुत सोच विचार के पश्चात् अपील के हेतु तथ्यार करें, क्योंकि इसे बहुत बड़े पुरुषों के पास भेजना है। इस अपील के मुकद्दमें सम्बन्धों खर्च के लिये १, ५०० रुपये पंजाब से चन्दा करना है और १,५०० रुपये दूसरे प्रान्तों से। यह अच्छा है कि पंजाब से १,५०० रुपये एकत्र करने का आप प्रबन्ध करें।

जो पत्र हमने आपत्काल के धम्में नियोग सम्बन्धी लिखवाया था, मैं ने शोक से जाना है कि लेखक वह अभिप्राय नहीं प्रकट कर सका जो मैं आप को जताना चाहता था, और इस लिये आप इसे न सममस के।

श्राप का संकेत नियम के सम्बन्ध में कि यह पुनर्विवाह को बताता है श्रीर नियोग को नहीं, इस के लिये मैंने श्रब एक कानूनी मसौदा पक विधवा की दुः खित श्रवस्था को दूर करने के लिये बनाया है। मैं वही एक या दो दिन में श्राप को श्रावश्यक शुद्धियों के लिये भेज दूँगा १. इस का प्रयोजन नियोग होगा। २. विधवा की सन्तान मृत पित की सम्पत्ति की दायभागी होगी। ३. उन्हें हरामी या जाति से बाहर न सममा जाय। ४. विधवा की जाति के लोग उसे किसी प्रकार तंग न करें। ५. कानून भी उसे दुःख न दे। ऐसे नियम के पास होने से गर्भ पातन बन्द हो जायगा, श्रीर सैकड़ों बालकों के जीवन बच जायगे, श्रीर श्राज कल की तरह किसी के दायभाग में श्राई सम्पत्ति या जागीर, श्रथवा कुल की वृद्धि बंद वा नष्ट न होगी, क्योंकि उस श्रवस्था में नियोगज सन्तान विवाह से उत्पन्न होने वालों के समान श्रधिकार रखेगी, उस में कोई भी भेद न होगा। चाहे नियम जनता के सामने किया जाता है या श्रीर रूप से, यह एक ही है। मसौदा पूर्वोक्त नियमानुसार होगा। जब हम श्रा को फिर इसी विषय पर लिखें, तो श्राप को ऐसे ही सममना होगा।

श्रावग् सुदी ४ सं १९३७।3

ह० द्यानन्द सरस्वती

<sup>्</sup>र. देखो पृष्ठ २१४ टिप्पणी १ । यु० मी० । २. यह हम पूर्ण सं० २६ ८ पृष्ठ २२४ पर छाप रहे हैं ।

३. यह त्रौर त्र्याले ४ मूलपत्र हमें नहीं मिल सके । ला॰ मूलराजजी ने कहा था कि उन्हें चूहें काट गये हैं । हम ने त्रांग्रेजी से इनका त्र्यावाद दिया है। त्रांग्रेजी न देने का प्रयोजन यह है कि वस्तुत: ये पत्र त्राय्यभाषा में थे।

१० ग्रगस्त १८८० मेरठ। वैदिक मैगजीन, गुजरांवाला, श्रक्टूबर-दिसम्बर सन् १६०८ पृ० २४६ से श्रन्दित।

स्वीकारपत्र (१)

[2]

### कार्ड (२०६)

[२६३]

[ठाकुर] शेरसिंह जी स्थानन्दित रहो।

[पत्र] आप का आया वर्तमान विदित हुआ। लेखक तो हम को चाहिये। विहारी को यहां भेज दो। जो वह हमारा सब काम कर सकेगा आपने पास रखलेंगे। अथवा समाज के योग्य होगा समाज में रखहेंगे। २१) रूपैये जो तुम दे गये थे उनमें से २०) की रसीद तो तुमारे पास पहुंच गई है। और एक रूपैया लिखने में भूल गये हैं। उसकी यही रसीद सममो। हमने अपने रजस्टर में २१) ही रूपैये जमा किये हैं।

मिती श्रावण सुदी ६ संवत १९३७। ' सु० (मेरठ)

पं० भीमसेन शर्मा-

नमस्ते आपके पास स्वामी जी की रसीद मेजता हूं। बाहर मुद्रा की जगह २१) की रसीद छाप दो। इस को मुक्ते वापिस दो। आगे को ऐसी भूल न करो।

[दयानन्द सरस्वती]

# [प्रथम]स्वीकारपत्र

[8]

[२६४]

#### श्रोश्म

(१) मैं स्वामी द्यानन्द सरस्वती निम्नलिखित नियमानुसार वक्ष्यमाण अष्टादश सज्जन आर्यपुरुषों की सभा को—वन्न, पुस्तक, धन और यंत्रालय आदि अपने सर्वस्व का अधिकार देता हूं। और उस को परोपकार और सत्कार्य में लगाने के लिये अधिष्ठाता करके यह पत्र लिखे देता हूं कि समय पर कार्यकारी हो। जो यह एक सभा जिस का नाम परोपकारिणी सभा है उस के निम्नलिखित अष्टादश सज्जन सभासद हैं। और उन में से इस सभा के प्रधान लाला मूलराज एम० ए० एक्स्ट्रा अस्तिस्टैन्ट किमश्नर—प्रधान आर्यसमाज लाहौर। और मंत्री लाला रामशरणदास उपप्रधान आर्यसमाज मेरठ हैं।

२. कार्ड पर पता इस प्रकार श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से लिखा है—ठाकुर शेरिंह कर्णवास परगणे इ. कार्ड पर पता इस प्रकार श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से लिखा है—ठाकुर शेरिंह कर्णवास परगणे डिमाई (जिले बुलन्दशहर)। मेरठ की मुहर में १३ श्रगस्त है श्रीर बुलन्दशर की मुहर में १४ श्रगस्त छपा है।

३. म॰ मामराज जी ने जुलाई सन् १६४५ में मेरठ निवासी लाला रामशरणदास जी के पत्रों में से खोजा। जो उनके पास वैदिक यंत्रालय बनारस से दूसरे पत्रों के साथ आया था। मूल कार्ड इमारे संग्रह में सुरिक्ति है।

१. १२ अगस्त सन् १८८० । तिथि और इस्ताल्चर के मध्य के रिक्त स्थान पर का लेख उसी कार्ड पर पं भीमसेन के नाम ठा० शेरसिंह ने लिखा है । यहां श्रावण कृष्ण १३ सं ० १६३६ (१३ जुलाई १८८२) का पत्र भी देखें ।

ऋषि दयानस्ट सरस्वती के पत्र श्रीर विकास

| न्ध्रम प्यागम् सरस्या क यत्र आर् विज्ञापन               | ि मरठ, सन् १८८० |                                       |
|---|-----------------|---------------------------------------|
| नाम सभासद   |                 | निवास स्थान                           |
| १ ताला मृतराज एम० ए० एक्स्ट्रा असिस्टैन्ट कमिश्नर       |                 | ं गरात स्थान                          |
| लाहौर   | •••             | लुधियाना                              |
| २—पंडित सुन्दरलाल इन्स्पैक्टर डिपार्टमेंट इलाहाबाद      | <b>表示</b>       | आगरा                                  |
| ३—राजा जैकुष्णदास सी० एस० श्राई० डिप्टी कलक्टर          |                 | मुरादाबाद                             |
| ४-मुन्शी इन्द्रमणि प्रधान श्रार्थसमाज मुराबाद           |                 | भ                                     |
| ५ - बाबू दुर्गाप्रशाद कोषाध्यत्त आर्यसमाज फर्श्खावाद    |                 | फर्रुखाबाद्                           |
| ६लाला जगन्नाथप्रसाद फर्रुखाबाद                          | 7.12            |                                       |
| ७—सेठ निर्भयराम प्रधान आर्थसमाज फर्रुखाबाद              | E DEP           | ,,<br>विसाऊ(राजपू०)                   |
| ५लाला कालीचरण रामचरण मन्त्री आर्यसमाज                   |                 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| फर्रुवाबाद  |                 | फर्रुखाबाद                            |
| ९—लाला रामशरणदास उपप्रधान त्रार्यसमाज मेरठ              | ***             | मेरठ                                  |
| १०वाबू छेदीलाल गुमाश्ता कमसरयट मेरठ                     |                 | कानपुर                                |
| ११—लाला साईदास मन्त्री श्रार्थसमाज लाहीर                |                 | लाहीर                                 |
| १२लाला डाक्टर विहारीलाल असिस्टैंट सिविल सरजन            |                 | ),                                    |
| १३बाबू माधोलाल मन्त्री आर्यसमाज दानापुर                 |                 | ्र<br>दानापुर                         |
| १४लाला पण्डित गोपालराव हरिदेशमुख प्रधान आर्थसमाज        |                 | 31.1137                               |
| बम्बई   |                 | पूना                                  |
| १५ — लाला जज महादेव गोविन्द रानाडे                      |                 |                                       |
| १६—एस० एच० कर्नल आलकाट साहब बहादुर प्रधान               |                 | "                                     |
| थियोसोफीकल सोसायटी श्रमरीका                             |                 | श्रमरीका                              |
| १७-एच० पी० मेडम ब्लेवट्स्की मन्त्री थियोसीफीकल          |                 | 911(1111                              |
| सौसायटी अमरीका  |                 |                                       |
| १८पिंडत श्यामजी कृष्ण वर्मा प्रोफेसर संस्कृत यूनि-      |                 | . 3)                                  |
| वसिटी श्रीक्सफोर्ड लएडन                                 |                 | बंबई                                  |
| (१) उक्त सभा जैसे कि वर्तमानकाल में सभा के नियमानुसार व | आपत्काल         | में मेरी और                           |

(१) उक्त सभा जैसे कि वर्तमानकाल में सभा के नियमानुसार व आपत्काल में मेरी और मेरे समस्त पदार्थों की नियम [से] यथावत् रच्चा करके सर्व हितकारी कार्यों में लगाती है, वैसे मेरे (पश्चात्) अर्थात् मेरी मृत्यु से पीछे भी लगाया करें।

पढ़ने पढ़ाने, सुनने सुनाने, छापने छपवाने आदि में।

द्वितीय — वेदोक्त धर्म के उपदेश और शिक्षा में ऋर्थात् उपदेशक मंडली नियत करके देश देशान्तर वा द्वीप द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के प्रह्मा और ऋसत्य के त्याग कराने आदि में।

तृतीय— आर्ट्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरच्चण पोषण और शिचा में व्यय करे और करावे।

- (२) जैसे मेरी विद्यमानता में यह सभा सब प्रबन्ध करती है वैसे मेरे पश्चात् भी तीसरे वा छठे महीने किसी सभासद् को वैदिक यन्त्रालय का हिसाब किताब समभाने और पड़तालने के लिए भेजा करे। और वह सभासद् जाकर समस्त आय व्यय और संचय आदि की जाँच पड़ताल कर और उन के तले अपने हस्ताचर लिख दे, और उस विषय का एक एक पत्र प्रति सभासद् के पास मेजे। और जो उसके प्रवन्ध में कुछ हानि लाभ देखे उस की सूचना भी अपने परामशें सहित प्रत्येक सभासद् के पास लिख भेजे। पश्चात् प्रत्येक सभासद् को उचित है कि अपनी अपनी सम्मित प्रधान के पास भेजदे और प्रधान सब की सम्मित से यथोचित प्रबन्ध करे और कोई सभासद् इस विषय में आलस्य अथवा अन्यथा व्यवहार न करे।
- (३) इस सभा को उचित है किन्तु आवश्यक है कि जैसा यह परम धर्म और परमार्थ का कार्य है उस को वैसे ही उत्साह पुरुषार्थ गम्भीरता और उदारता से करे।

(४) मेरे पीछे उक्त ख्रष्टादश आर्यजनों की सभा सर्वथा मेरे स्थानापन्न सममी जाय, अर्थात् जो अधिकार मुमे अपने सर्वस्व का है वही अधिकार सभा को है और रहे। यदि उक्त सभासदों में से कोई इन नियमों से विरुद्ध स्वार्थ के वश होकर वा कोई अन्य जन अपना अधिकार जमावे तो वह सर्वथा मिथ्या सममा जाये।

(५) जैसे इस सभा को अपने सामर्थ्य के अनुसार वर्तमान समय में मेरी और मेरे समस्त पदार्थों की रचा और उन्नित का अधिकार है, वैसे ही मेरे मृतक शरीर का भी अधिकार है अर्थात् जब मेरा देह छूटे तो न उस को गाड़े, न जल में बहावें, न जङ्गल में फेंकने दें केवल चन्दन की चिता बनावें। और जो यह सम्भव न हो तो दो मन चन्दन, चार मन घी, पांच सेर कर्पूर, ढाई सेर अगर तगर और दश मन कांछ लेकर वेदानुकूल जैसे कि संस्कारविधि में लिखा है वेदी बनाकर तदुक्त वेद मन्त्रों से होम करके भरम करें। इस से भिन्न तथा कुछ भी वेदिकद्ध किया न करें। और जो समाजन उपस्थित न हों तो जो कोई समय पर उपस्थित हो वही पूर्वोक्त किया करदे। और जितना धन उस में लगे उतना समा से ले लें और सभा उस को दे दे।

(६) अपनी विद्यमानता में मैं और मेरे पश्चात् यह सभा चाहे जिस सभासद को पृथक करके उसका प्रतिनिधि किसी अन्य योग्य सामाजिक आर्थ पुरुष को नियत कर सकती है परन्तु [कोई समासद सभा से तब तक पृथक न किया जाय, जब तक उस के कार्य में अन्यथा व्यवहार] न पाया जाये।

(७) मेरे सहश यह सभा सदैव इस खीकार पत्र की व्याख्या वा उसके नियम और प्रतिज्ञाओं के पालने वा किसी सभासद् के पृथक् और उस के स्थान में अन्य सभासद् के नियत करने वा मेरे विपत् और आपत्काल के निवारण करने के उपाय और यल में वह उद्योग करे, जो समस्त सभासदों की सम्मित से निश्चय और निर्णय पाया वा पावे। और जो सम्मित में परस्पर विरोध हो तो बहु पन्नानुसार प्रवन्ध करे और प्रधान की सम्मित को सदैव द्विगुण जाने।

(८) किसी समय भी यह सभा तीन से अधिक समासदों को अपराघ की परीचा करके

पृथक् न कर सके, जब तक पहिले तीन के प्रतिनिधि नियत न करले।

(९) यदि सभा में से कोई पुरुष मर जाये वा पूर्वोक्त नियमों श्रीर वेदोक्त धर्म को त्याग कर विरुद्ध चलने लगे, तो इस सभा के प्रधान को उचित है कि सब सभासदों की सम्मति से पृथक करके उस के स्थान में किसी अन्य योग्य वेदोक्त धर्मयुक्त आर्थपुरुष को नियत कर दे, परन्तु जब तक नित्य कार्य के अनन्तर नवीन कार्य का आरम्भ न हो।

(१०) इस सभा को सर्वथा प्रवन्ध करने और नवीन युक्ति निकालने का अधिकार है। परन्त जो सभा को अपने परामर्श श्रीर विचार पर पूरा २ निश्चय श्रीर विश्वास न हो तो पत्र द्वारा समय नियत करके सम्पूर्ण आर्यसमाजों से सम्मति ले ले और बहु पद्मानुसार उचित प्रवन्ध कर ले।

(११) प्रबन्ध न्यूनाधिक करना वा स्वीकार वा अस्वीकार करना वा किसी सभासद को पृथक् वा नियत करना वा आय व्यय और संचय का जांच पड़ताल करना आदि लाभ हानि सब सभासदों

को वार्षिक वा षाण्मासिक पत्र द्वारा प्रधान छपत्रा कर विद्ति करदे।

(१२) इस स्वीकार पत्र सम्बन्धी कोई भगड़ा टंटा सामयिक राज्याधिकारियों की कचहड़ी में निवेदन न किया जाय। यह सभा अपने आप न्यायव्यवस्था करले। परन्तु जो अपनी सामर्थ्य से बाहर हो तो राज्यगृह में निवेदन करके अपना कार्य सिद्ध करले।

(१३) यदि मैं अपने जीते जी किसी योग्य आर्यजन को पारितोषिक अर्थात् पेंशन देना चाहुं श्रीर उसकी लिखित पढ़त कराकर रजिस्ट्री करादूँ तो सभा को उचित है कि उसको मानै श्रीर दे।

(१४) विशेष लाभ, उन्नित, परोपकार और सर्वहितकारी कार्य के वश मुक्ते और मेरे पीछे सभा को पूर्वोक्त नियमों के न्यूनाधिक करने का सर्वथा सदैव अधिकार है, वैसे ही किया करे। हस्ताच्चर द्यानन्द्सरस्वती व खत शास्त्री

गवाह—मुम्नालाल खलफ लाला किशनसहाय साकिन मेरट वकलम खुद उद्।

गवाह—मुन्शीसिह वल्द वंशीधर साकिन मेरठ अंगेजी

गवाह—सुजानसिंह वल्द रामसुखदास कौम सरावगी साकिन मेरठ व खत-हिन्दी। यह वसीयत नामा है। १६ अगस्त १८८० ई० द० नागरी वसीयतनाम हाजा, यह कागज

सादा है। Presented for registration in the office of the Sub-Registrar of Meerut on Monday the 16th August 1880 between the hours of 3 and 4 P.M

MUKAND LAL,

ह० दयानन्द सरस्वती Sub-Registrar.

Execution admitted by Swami Dayanand Saraswati who is personally known to the registering officer.

16th August 1880.

(Sd.) MUKAND LAL,

ह० द्याइन्द सरस्वती<sup>3</sup>

Sub-Registrar.

१. इस स्वीकार पत्र (वसीयत नामे) के लिये पूर्ण सं० २५४ (पृष्ठ २०४) तथा २५८ (पृष्ठ २१०) २. मिति श्रावण सुदी ११ सोमवार संवत् १६३७। मेरठ शहर। के पत्र भी देखें । यु॰ मी॰ ।

३. इस स्वीकार पत्र की प्रतिलिपि के लिए ता० १९।५।४५ को १।) का स्टाम्प लेकर बाबू हरवन्श सिंह वकील मन्त्री त्र्यार्थसमाज मेरठ ने दफतर रिजस्ट्री में पेश किया। नकल ता० ७ जून १६४५ को मिली। उसे म॰ मामराजजी ने बाबू श्यामलाल अप्रवाल प्रधान आर्थसमाज से ता॰ २२ जुलाई १९४५ को प्राप्त किया देखो दफतर रजिस्ट्री मेरठ शहर में तितम्मा न० ५ सफे ४० जिल्द्-ग्रालिफ-रजिस्टर न० ३ [सन् १८८०] में ।

मेरठ, सं० १९३७]

पत्र (२०७)

२२१

[9,6]

पत्र (२०७)

[२६५]

मंशी वखतावरसिंह जी आनिन्दत रही !

१६ श्रगस्त का लिखा पत्र तुम्हारा श्राया। वर्त्तमान विदित हुश्रा। जिन तीन के पास सत्यार्थप्रकाश भेजने को लिखा था भेज दिये। श्रीर कल इन दोनों के पास भेजेंगे। एक २ पाकट पर ⊱)॥ श्रद्धाई २ श्राने के टिक[ट] डाक महसूल के लगे हैं।

जो संस्कृतवाक्यप्रबोध पर पुस्तक छपाया है सो बहुत ठिकानों में उनका लेख अशुद्ध है। श्रीर कै एक ठिकानों में संस्कृत में अशुद्ध भी छपा है। इस अशुद्ध के कारण तीन हैं। एक शीघ बनना, मेरा चित्त स्वस्थ न होना। दूसरा भीमसेन के आधीन शोधने का होना और मेरा न देखना न प्रूफ को शोधना। तीसरा छापेखाने में उस समय कोई भी कम्पोजीटर बुद्धिमान न होना, लेंपों की न्यूनता होनी।। इसके उत्तर में जो २ उनकी सची बात है सो २ शोधक और छापा का दोष रहेगा। इसके खंडन पर भीमसेन का नाम मत लिखना किन्तु पंडित ज्वालाद्त्त के नाम से छापना। इस पर आगेके आर्थ्यद्र्पण में छापने के लिये पंज ज्वाव भी लिखेगा। भीमसेन भी लिखो परन्तु उसका नाम उस पर छपवाने से उसके पढ़ने में वहां के लोग बहुत विरोध करेंगे।

मोहनलाल विष्णुलाल आदि का हिसाब वहीं जो मुंशी समर्थदान से वही दी थी उसमें श्रीर भूमिका तथा वेदभाष्य के टायटिल पेज श्रीर प्राहकों के रजष्टर में हैं । देखके भेज दो । इसने सब रजष्टर अन्य सत्यार्थ आदि पुस्तकों के भी वहीं रखे हैं। फिर हम से हिसाब उनका कैसे मांगते हो। देख कर भेज दो। यहां हमारे पास सिवाय एक रजष्ट[र] के दूसरा कागजात कुछ भी नहीं है। नवीन हाल ये हैं। एक मुंशी जी का दूसरा मेरे ठहरने का भी ठिकाना मेरठ का ही नोटिस छापना। तीसरा आजकल रमाबाई यहां कलकत्ते से आके ठहरी है। आज उसका व्याख्यान समाज में स्थियों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य विषय में है, दूसरा आगामी शनि को भी होगा। यह संस्कृत पढ़ी है। बहुत अच्छा संस्कृत भाषण भी करती है। इसका विशेष त्रागे लिखेंगे। चौथा जो मैं कह स्राया था कि जो धन स्रावे वह वहाँ न रखना चाहिये किन्तु जिसका नाम फ़ुरुखावाद से लिख भेजा था उसी की दुकान में जमा रक्खा करो, अपने पास मत रक्खो। पांचवां असरिकयों का हिसाव लिख भेजना। छःठा वसीयत-नामा रजष्ट्रशी करा लिया है। जब तहसील की कचहरी से नकल मिलेगी तब वहां भी एक नकल भेजेंगे छापेखाने रख लेना। सातवां यह जो तुमने लिखा कि दुकान में ४००) रुपैये रह गये कलकत्ते चले गये। इस के लिखने का क्या मतलव है। तुम्हारे पास मासिक खरचे से आमदनी अधिक होती है। उसमें कलकत्ते का भी मावारी हिसाब में खरच आ जाता है। फिर वे दुकान के रुपैये सिवाय २००) के किस लिये उठाये। त्राठवां जो त्रापने लिखा था वह सब समा किया गया। नवमावे द्भाष्य का प्रफ श्रीर छापना संस्कृतवाक्यप्रबोध के तुल्य न हो जाय। दशवां मैं यहां मेरठ में १५ दिनों से कम न रहूंगा। हम लोग सब आनन्द में हैं। आप लोग भी आनन्द होंगे। कल परसों और भी पत्रे दोनों वेदों के भेजेंगे। सब से हमारा नमस्ते कहना। तेली आदि के मासिक बढ़ाने के लिये जब १६वां और

१. यह सारा पत्र ऋषि के ग्रपने हाथ का लिखा हु ग्रा है। मूलपत्र हमारे संग्रह में सुरिवृत है।

२. यही खरडन अगली संख्या [पूर्ण संख्या २६६] पर मुद्रित किया गया है।

१७ वां श्रङ्क छपके आवेंगे। १४वें श्रङ्क से लेके १७ श्रङ्क तक जो काशो में छपे हैं देखके जिसकी जैसी योग्यता होगी वैसा बढ़ाया जायगा। और १४वें श्रङ्क से ले १० वें श्रङ्क तक दोनों वेदों के श्रङ्क भेजके श्रागे बराबर फिरोजपुर आर्थसमाज के नाम प्रति मास भेजा करो। इस समाज में क्यों नहीं पहुँचा। क्या यह आपकी भूल है वा डाक वालों की गड़बड़ है। यह श्रच्छा होगा कि जब २ डाक की गड़बड़ हो तब २ पोष्ट इन्स्पेक्टर को लिख के जवाब लेना। नहीं बहुत गड़बड़ करेंगे। शमस्तु।

मि० श्रा० शु० १३ बुध सं० १९३७।

[द्यानन्द सरस्वती]

[9]

## हेख :

[२६६]

## पुस्तक 'अबोधनिवारण' की अशुद्धियां

१, येन शरीराच्छ्मो न कियते स नैव शरीरमुखमवाझोति । पृ० ६ पं० २० ।।

यहां पिखत अम्बिकाद्त्त जी लिखते हैं कि (शरीरात्) इस पद में पश्चमी विभक्ति अशुद्ध है किन्तु (शरीरेण) ऐसा चाहिये। सो यह सन्देह कारक-व्यवस्था को ठीक २ नहीं विचारने से हुआ है। देखो अम कहते हैं पुरुषार्थ करने को। उसका कत्ती जीवात्मा और शरीर आश्रय रहता है। क्योंकि चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम्। वेष्टा अर्थात किया का जो आश्रय है उस को शरीर कहते हैं। सो यहां पश्चमी विधाने ल्यब्लोपे कर्मण्युपसंख्यानम् । अ० २ । ३ । २८ ॥ इस वार्तिक से (श्राश्रित्य इस ल्यवन्त क्रिया के लोप में पद्धमी विभक्ति हुई है। देखो ऐसा वाक्यार्थ होगा । येन पुरुषेण शरीरमाश्रिस श्रमो न क्रियते—इत्यादि । जो कहो कि ऐसा अर्थ भाषा में क्यों न किया तो संस्कृत के एक वाक्य का व्याख्यान भाषा में कई प्रकार से कर सकते हैं इस में कुछ विवाद नहीं है। परन्तु यहां तो प्रयोजन यही है कि भाषा सुगम श्रीर थोड़ी हो ऐसा उल्था करना चाहिये ! श्रव पिडत जी के कहने से तो प्रासादात्प्रेक्षते इत्यादि महाभाष्यकार के प्रयोगों में भी पञ्चमी विभक्ति नहीं होनी चाहिए। श्रीर भी परिंडन जी क्या लिखते हैं कि विभाषा गुणोऽस्त्रियाम् भला इसका यहां क्या प्रसंग था। सो जब स्वामी जी के मुख्य अभिप्राय को पिएडत जी न सममें तो जो सूत्र सामने आया लिख बैठे। भला शरीर शब्द को कोई थोड़ो विद्या वाला भी गुणवाचक कह सकता है कि जिस से गुणवाची मान के पञ्चमी विभक्ति हो जावे । श्रीर कारक विषय में ऐसा भी नियम है कि-कारकं चेद्रिजानीयाद्यां यां मन्येत् सा भवेत । श्रर्थात् यह शब्द किया के किस श्रंश को सिद्ध करता है ऐसे क्रिया साधक कारक को जान के जिस २ विभक्ति से वह अर्थ प्रतीत हो सके वह २ विभक्ति हो सकती है। इन गृढ़ बातों को सममता सब का काम नहीं है।। १।।

२, चक्रवर्तिशब्दस्य कः पदार्थः । १० ।९ ।

यहां पं जी लिखते हैं कि चक्रवित्तं शब्द का क्या ऋर्य है इसकी संस्कृत यही होगी। इन

४. ग्रष्टा॰ २।३।१४॥

प्. महाभाष्य १।४।५१॥

१, १८ त्र्यास्त १८८०; २. यह पृष्ठ श्रीर पंक्ति संख्या संस्कृतवाक्यप्रबोध प्रथम संस्करण (फाल्गुण सं०१६३६) के त्रानुसार हैं। यु० मी०।

३. न्यायदर्शन १।११।१॥

को भाषा का भी वोध है जैसा विदित हो गया। भला संस्कृत शब्द को स्नीलिंग पण्डित जी ने किस व्याकरण से किया। यह संस्कृत प्राचीन ऋषि मुनियों के अनुकूल है, इसमें कुछ दोष नहीं। देखो महाभाष्य में लिखा है कि अथ सिद्ध्राब्द्स्य कः पदार्थः। आहिक १। इसका क्या यह पर्थ नहीं है कि सिद्ध शब्द का क्या अर्थ है। वड़े आश्चर्य की बात है कि प्राचीन प्रन्थों को बिना देखे दोष देने लगते हैं। अब पं० जी का लगाया दोष कुछ स्वामी जी को ही लगा हो सो नहीं किन्तु इन्हों ने तो सब ऋषि मुनियों को दोष लगा दिया और सापेक्षमसमर्थ भवीति। यह दोष यहां कभी नहीं आता क्योंकि यहाँ एक देश के साथ अन्वय नहीं है। और इसी प्रकार सभाशब्दस्य कः पदार्थः। इसको शुद्ध समक्ष लेना॥ २॥

## ३. अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यं नास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि । १८।८।

यहां षरमास शब्द में परिडत जी को सन्देह हुआ है कि यहां द्विगी: इस सूत्र से डीप् होके षरमासी शुद्ध होता है। इस भ्रम का मूल यही है कि उनको व्याकरण के सब सूत्र विदित नहीं हैं। पं० जी के कथनानुसार यदि स्वामी जी का लेख अशुद्ध भी माना जावे तो फिर पाणिनि मुनि का सूत्र भी अशुद्ध मानना चाहिये। सू० षण्मासाण्यच । अ० ५ । १ । ८३ ॥ यहाँ परिडत जी के मतानुसार षण्मास्योण्यच—इस प्रकार का सूत्र होना चाहिये। अब देखिये इस पाणिनीय सूत्र को यदि पं० जी जानने होते तो स्वामी जी के लेख को मिध्या दोष क्यों लगाते और छोटे २ वालक कि जो अष्टाध्यायी के सूत्र भी घोखते हैं ने भी जानते हैं कि यह सूत्र ऐसा है । इस प्रकार के बहुत से प्रयोग व्याकरण श्रादि शिष्ट जनों के प्रन्थों में आते हैं तो क्या सब अशुद्ध है। अब रहा कि डीप् क्यों नहीं होता तो पात्रादिभ्यः प्रतिशेधः । यह वार्तिक इसीलिये है । पात्रादि आकृतिगण है। इसका परिगणन कहीं नहीं किया कि इतने ही पात्रादिशब्द हैं। महाभाष्यकार ने तो इस वार्तिक पर उदाहरणमात्र दिया है। अब इसी प्रकार 'द्विवर्षानन्तरम्' इसको भी शुद्ध समक्ष लेना चाहिये। पाणिनि जी महाराज ने अपने सूत्र में षरमास शब्द को पढ़ा है। इससे यह भी उनका उपदेश प्रसिद्ध विदित होता है कि षरमास आदि शब्दों में डीप् कदापि नहीं होता और कोई किया चाहे तो अशुद्ध ही है॥ ३॥ "

एक परिडत"

१. महा० २।१।१॥

२ अष्टा० ४।१।२१॥

३. महा० २।४।१७॥

४. त्रार्यदर्पण मई १८८० पृ० १२० पर छपा। यह त्रांक त्रागस्त के श्रन्त या सितंबर के त्रारंम में छपा होगा। देखो श्रावण घु० १३ सं० १.६३७ (१८ त्रागस्त १८८०) का पत्र, पूर्ण संख्या २६५ पृष्ठ २२१। ५. इस उत्तर में श्री स्वामी जी की ही त्रानुमित थी। देखो पूर्ण संख्या २६५ पृष्ठ २२१ का पत्र।

पत्र (२०८) [2]

[२६७]

मुंशी इन्द्रमनजी आनन्दित रहो।

आप के दो तीन पत्र आये हाल मालूम हुआ। पञ्जाब के अढ़ाई सौ या तीन सौ रूपया आप के पास शायद पहुंचे होंगे। आज हम यहां के सभासदों से दर्शापत करेंगे कि रूपया भेजे या नहीं। अगर न भेजे होंगे तो हम भिजवाते हैं। चार दिन हुए कि उसी वक्त हम ने उनसे कह दिया था कि रुपया भेज दी। अढ़ाई सौ रुपया वहां हैं और १००) रुपया लाला श्यामलाल के और पञ्जाब और फरुखाबाद से भी आते हैं सब मिलकर सात सौ रुपया इकट्ठे होंगे। खूब होश्यारी से काम करना। मिति भाद्रपद कृष्ण ६ गुरुवार संवत् १९३७, स्थान मेरठ।

दयानन्द सरस्वती

[9]

# नियोग का मसव्विदा<sup>3</sup>

[२६८]

मैं स्वामी द्यानन्द सरस्वती निहायत अद्व से उस एजाज और ताजीम कानूने शादी के तसलीम करने के बाद कि जिसका तसलीम करना हम सब पर फर्ज है, निस्वत एक्ट नम्बर १५ सन प्६ ई० (कानून दरबारा शादी वेचगान की, कि जिसकी यह मन्शा है कि हिन्दे देवा के विवाह करने के बारे किसी तरह से कानूनन मुमानिश्चत न हो और जो श्रीलाद कि दूसरे विवाह से पैदा हो वह हराभी मुत्सव्वर न होकर तकरीवन मालिक हो सके, श्रीर जो बाज हिन्दू अपने ईमा से इस रसमोरिवाज विवाह सानी को खिलाफ रसमोरिवाज सावक के जारी करना मनजूर करें, उनको अदम तामील कानूनी की पाबन्दी से जिससे वह शाकी है रिहा किया जावे) अपनी आदिल और क़द्रदान गवर्नमेन्ट के हजूर में चन्द बवाइस जरुरी गुजारिश करना चाहता हूं श्रीर चूंकि रिश्राया की फरयादरसी गवर्नमेएट से और गवर्नमेन्ट की दादबख्शी रिआया पर एक ऐसा फर्ज लाजिम मलजूम है कि जैसा मां बाप का बच्चों पर, या बच्चों का ऋपने मां बाप पर । लिहाजा बावजूद मलहूज रखने तमामतर एजाज श्रीर त्रादाव कानून मजकूर इसवजैत इततमास करता हूं, कि श्रगरचे एक्ट मजकूर का असली मनशास रीह इन्साफ और मसलिहत आमा कायिम करना और हिन्दुओं के असली श्रीर इन्साफी कानून को बमुकाबला जायिज रस्मो रिवाज वे बुनियाद के तरजीह देता है श्रीर उस की तासीर से वेवगान हनूद को मूंठे रस्मोरिवाज की पावन्दी से बचा कर आदिल गवनीमैण्ट ने कानूनी इक उन का बहाल फरमाया है। लिहाजा इस हक्र पसन्दी गवर्नमैन्ट आलीजाह का तहे दिल से शुकरिया श्रदा किया जाता है मगर श्रकसोस है, कि उन हिन्दू साहियों ने जो मुहर्रक उसकारे खैर के हुए थे इस मसला के मतालब श्रीर तासीरात श्रीर काइद की तीजीह में मुगालता खाया । इस लिए ऐक्ट मज़कूर के नफ़ाद से रारज मकसूद हासिल न होसकी और न पूरे २ काइद उस की बाबत

१६ पर उद्धृत।

१. ला॰ जगन्नाथदास की पुस्तक मुं॰ इन्द्रमन का इल्तमास श्रीर स्वामी दयानन्द का संन्यास, पृ॰

२. २६ श्रगस्त १८८० ।

३. इस के विषय में मूलराज के नाम लिखे पूर्ण संख्या २५६, २६२ पत्र भी देखो ।

मिन्ज्ञवत हुए। बल्कि एक गलत लक्ष्ण विवाह वेचा ह्नूद के मुस्तअगल होने से कि गालिबन सहीह नाम यानी नियोग से मुराद है। वाज असली मक्कासद और उसकी तमामतर तासीर बिलअक्स हो गये। यह ही वजह है कि ऐक्ट मजकूर के नफाज़ को अरसा वईद २५ साल गुज़र गया, मगर जो कवाईद कि उस के जिरिये से हासिल होने चाहिये वह हनूज़ मुरत्तव नहीं हुए और न आइन्द को किसी ऐसे फाइदा मकसूदा के पैदा होने की उमीद है कि जिसका पैदा होना वक्त नफाज ऐक्ट मजकूर तहरीक कुनन्दा हिन्दू साहिबों के जेहननशीन और गवर्नमैएट को ख्याल दिलाया होगा। पस निहायत अदब से गुज़ारिश है कि ऐक्ट मजकूर की नौज़ीह व एतबार इलकाज़ और उसकी तरमीम बाएतवार अदालत व ऐहकाम ऐसे तौर पर फरमाई जावे कि जिससे उसका मनशा इस बारे में हिन्दुओं के असली कानून के मवाफिक हो जावे।

मरक्की न रहे कि आर्थ लोगों (जिनको उरफन गल्त नाम हिन्दू के लक्ज से बोलते हैं) के अरुली कानून वेद वरौरा में तीन आला फिरकों ब्राह्मण, चित्रय, वैश्य में औरत और नीज मरद के वास्ते दूसरा विवाह करने की कतअई सुमानियत है।

सिरफ एक सूरत है कि जिस में दूसरा विवाह करने की श्रीरत श्रीर मरद दोनों के वास्ते इजाजत है श्रीर वह यह है कि जब कोई श्रीरत ऐसे वक्त वेवा हो जाय कि उसकी हमबिस्तरी की नौबत अपने शौहर के न साथ पहुँची हो, या किसी मरद की जोजह ऐसे वक्त मर गई हो कि वह उस श्रपनी जौजह के साथ हमबिस्तर न हुश्रा हो तो ऐसा मरद या श्रीरत हरसे श्राया फिरक़ों मज़कूरा बाला में दूसरी शादी कर सकता है, मगर ऐसी श्रीरत या ऐसे मरद के साथ (यानी जैसे कि सूरत हो) जो बज़रिया नियोग पैदा हुश्रा या हुई हो।

श्रविषया वे श्रीलादी की कवाहितें एका करने के वास्ते श्रार्थ लोगों की सच्ची किताब वेद बरौरा में नियोग करने की इजाजत मरद श्रीर श्रीरत दोनों के वास्ते पाई जाती है। तािक श्रीलाद मजकूर अपने वालदैन के वास्ते फ्रेंज दुनयावी का जरिया हो श्रीर मालिक मुतरहका होकर खानदान का नामोनिशान काियम रख सके श्रीर जिस रसम नियोग से जो खास र हालात में महदूद किया गया है, मसलन् जब कि कोई मरद वरौर छोड़े किसी श्रीलाद के मर जावे या नामरदी से कोई नाकाबलियत ऐसी लाहक हो कि जिसकी वजह से वह श्रीलाद पैदा करने के लाहक न रहा हो, तो वेवा वा इजाजत विरसाए शोहर या शोहर या खुद अपनी मरजी से ऐसे शख्स के साथ जो उस की शौहरी निसबत की क से भाई के सिलसला कराबत में नियोग कर सकती है श्रीर उस नियोग के जरिया से अपने शौहरी खानदान को फबाइद मजकूरावाला पहुंचाने के लिये दो श्रीर हिलकाियम पैदा कर लेने की मजाज होती है मसलन् चित्रांगद विचित्रविर्ध के मरने पर व्यास जी उन के बड़े भाई ने उनकी श्रीरतों से नियोग करके दो लड़के पैदा किये। एक धृतराष्ट्र , दूसरा पाय्ड । श्रीर एक कनीजक से एक लड़का पैदा किया। जिस का नाम विदुर था। इसी तरह पाय्ड की ह्य्यात में उन की जीजा कुन्ती ने पांच पुत्र उसी रिशता नियोग के जरिया से बवजह नाकाबल होने अपने शौहर के पैदा किये।

इस रिशता नियोग की वजह से मुसम्मात या मर्द या उस श्रीलाद पैदाशुदः का कोई तश्रल्लुक या फर्ज या हकतौरीस या हकनान वा नुफकः खानदाने शौहरी से मुनकतश्र या जायल

श्रीर नियोग करने वाले शब्स के खानदान में पैदा वा कायम नहीं होता है। बल्कि श्रीलाद मजकर का तत्रबलुक मिस्त श्रीलाद सहीह उलनस्व के बेवा श्रीर उस के खानदान शीहरी से या श्रगर मर्द ने अपने वास्ते नियोग किया हो तो श्रीलाद का तत्रक्लुक उस मर्द श्रीर उसके खानदान से इस तरह पर होता है कि गोया वह उस शौहर या मनकूह: जौज: से (व जैसी कि सूरत हो) पैदा हुई।

लेकिन अगर बवजेह मिन उलवजह मुअय्यनः धर्मशास्त्र जौजीन का तश्रल्लुक जनाशवी कतश्च हो जावे खौर वाद कतश्च हो जाने तश्चल्लुक मजकूर के जीज या जीजः श्रपने वास्ते नियोग करे तो उस खौलाद का जो ऐसी हालत में पैदा हो सिर्फ नियोग करने वाले शख्स की जात से उस तेदाद तक कि जो आइन्दः बयान की जावेगी तश्रल्लुक होता है, नियोग करने वाले शख्स को अपने वास्ते दो ख्रौलाद तक जो हिलकायिमः हों ख्रौर जिस के साथ नियाग किया जावे दो ख्रौलाद तक उस के वास्ते भी, श्रगर नाम्बरवः की खाहिश और जरूरत हो, पैदा करने का इखतयार वेद वगैरः श्राय्ये लोगों की मुकहस किताबों में पाया जाता है। श्रीर जो ज्यादः श्रीलाद इस तेदाद से जसी नियोग के जरिया से की जावे, वह हरामी ख्याल की जाती है।

एक औरत या एक मर्द को जब कि वह अपने वास्ते भी दो खोलाद तक पैदा करना चाहता हो, चार नियोग तक करने की इजाजत है। श्रीर श्रगर नाम्बरवः श्रपने वास्ते श्रीलाद पैदा करने की जुरूरत समभे तो पांच नियोग कर सकता है। इस का असली मन्शा बहुत साफ है कि एक खानदान के नाम को कायिम रखने के वास्ते दो खौलाद खौर एक शख्स के जरीय खें से दस खौलाद तक पैदा करना जाइल है। श्रीर जो श्रीलाद जिस खानदान के वास्ते इस रिशता नियोग के जरियश्र से पैदा हो वह उसी खानदान में मिस्ल सही उलनस्व श्रौलाद के दाखल श्रौर शामल समभी जाती है।

चूंकि इस कारेखैर के मुहर्रक हिन्दू साहिशों ने इस मसत्राला के असूल और तासीरात के सममने और सममाने में गलती की थी, बल्कि विवाह वेवा हनूद का गलत लफ्ज इस्तेमाल करके उस कि तासीर को बिल्कुल मुन्कलब कर दिया था । लिहा जा वह तमाम फवायद जो इम के जरीया से हासिल होने चाहिये थे, विल्कुल रुक गये।

श्रव मैं स्वामी द्यानन्द सरस्वती धर्मशास्त्र की सही श्रीर श्रयस्ती मकासद दर-वाब जिस मसञ्चला की बादिल और कदरदान गवर्नमैएट की आखरी राय पर जाहर करके एक मसव्विदा बाबत इजराय रस्म मजकूर गवर्नमैण्ट के हजूर में निहायत अदब से पेश करता हूं और उम्मीद रखता हूं कि मसव्विदा मज़कूर की मनजूरी से इस आर्थावर्त देश की रित्राया को फैज बरुशी और गवर्नमैएट की हक्षपसन्दी बजरिया इमदाद अदालतहाए दीवानी वाकि अ बृटिश इण्डिया वमुस्राम्लात नफाज इक तौरीस वगैर: उन क्वाइद और शराइत के मवाफिक जो मसव्विदा में ऋर्ज की गई हैं जाहिर फरमाई जावे।

चूंकि इस ऐक्ट के जरिया से कोई जदीद मसत्राला कानून का पैदा नहीं होता बल्कि सिर्फ धर्म्भशास्त्र के कदीम मसत्राला की तजदीद होती है, लिहाजा कव्वी उम्मीद है कि जो फव्वाइद ऐक्ट १५ सन् ५६ के नक़ाद से ख्याल किये गए होंगे, मगर पैदा नहीं हुए, वह बल्कि उस से ज्यादः कायम

श्रीर मुकम्मिल हो जावेंगे। मस्तन

- (१) वेवगान का फरक फजूर से बचना और जुरायम शदीद मिरल इस्कात हमल और जना वगैरः का मसदूद हो जाना।
- (२) मसकीन वेवगान के दिल से वेश्रीलादी की हालत में मुफारकते शौहर का राम सहव जाना।
  - (३) वे खौलादी के रख्न और तकालीफ से मसकीन वेवगान का निजात पा जाना।
- (४) किसी त्रार्य्य यानी हिन्दू की मौरूसी या मकसीयः तर्क का बवजः न होने श्रौलाद के तल्फ न होना।
  - (५) किसी फैज दुनयाबी से ववजः वे खोलादी किसी खार्च्य का महरूम न होना।
- (६) इन्सानों की अफ़जायश और उसके आम नतायज नेक का जहूर। व कस अलहजा।
  फैज वर्ष्शी गवर्नमैएट के तरहम श्रंगेज मादलत से दाद खाही की उम्मीद करके दस्तवस्ता
  गुजारिश करता हूं कि मेरे पेश किये हुए मसव्विदा पर गौर फ़रमा कर इसकी मनजूरी से मतला
  फरमाया जावे। अ

[मुं<mark>० वखतावरसिंहः पत्र (२०९)</mark> [88] [२६९] ····· ·· ·· व लिखा श्रौर ऋ ग्वेद के टाइटल पर मुं नशी जी का हाल छपवा दिया सो क्यों। ऐसे छ-[पवाने से ] फसाद होने का संभव होता है। ...... गार नहीं है। आगे ऐसा काम कभी न करना। और जो मैंने कहा था कि ..... से दाम उधार है उन सब का हिसाब छा-[प दो सो तो] कुछ भी न किया किन्तु विज्ञापन ही वि-[ज्ञापन] छपवा डाले । नहीं छापने के योग्य वार्ते छापीं। मुनशी जी का वृथा छापा। अब जिन लो-[गों ने] दाम नहीं दिया है श्रीर एक महीने तक न दें उन के पा [स अगले अं] क न भेजो। और उन को उन के हिसाब [का] नोटिस देख्रो तथा आ-[गेसे] एक वेद के ६४ प्रष्ट अर्थात् दो दो श्रंक एक २ ..... पहले महींने ऋग्वेद श्रीर दूसरे में यजुर्वेद .. ... वा दो मैं ने .....

<sup>, \*</sup> शेष ग्रागे छपेगा।

१. 'भुंशी इन्द्रमणि जी के मुकदमे का वृत्तान्त''—ऋग्वेदमान्य श्रङ्क १६-१७ के टाइटल पर देखें। तथा इस के सम्बन्ध में भाद्र सुदी ६ सं० १६३७ (१०। सितम्बर १८८०) का पत्र भी देखें।

२२५

[ मेरठ, सन् १८८०

मि० भा० क० १४ सं० ''''।'
[चन्द्रा] लोक वा कोई काव्यालंकार सूत्र ग्रंथ हो तो भेज देना।'
[द्यानन्द सरस्वती]

ैसत्यार्थप्रकाश भेजने के लिये तुमने कागद छप-वा कर भेजे थे वे लगाकर हमने पुस्तक स[त्यार्थ-] प्रकाश के भेजवा दिये । श्रव तुम्हीं पूछ[ते हो ] कि क्या नाम थे। बड़े शोक का विषय है [कि तु-] म्हें इस का उत्तर क्या दें। क्या तुम ने नाम [ठिका-] ना श्रादि हिसाब रजस्टर में विना ही लिखे [ भेजे ] थे। ऐसी श्रचेतनता से क्या काम [चलेगा] ।

[3]

पत्र (२१०) कार्ड

[२७०]

स्वामी कुपाराम जी आनिन्द्त रहो।

इस पत्र का उत्तर हम लिख चुके हैं। हम यहां छः सात दिन रहेंगे। जो तुम शनिवार को खाद्योगे तो मिल जांयगे। ख्रीर एक चिट्ठी बलदेवसिंह के विषय में हमने भेजी है। तुम्हारे पास जो पहुँची होगी उसी में। बाकी जब तुम यहां ख्राके मिलो तब सब निश्चय होगा। ख्रीर हम पहिले लिख चुके हैं कि मनुष्यों का ख्रात्मा कपटी। पहले कहते हैं कि हम ऐसा २ करेंगे। पीछे वक्त परे पर कुछ भी नहीं।

मिति भाद्र सुदी ४ मंगलवार संवत् १९३७।

द्यानन्द सरस्वती

[२0]

पत्र (२११)

[508]

मुंशी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो।

दो एक दिन में तुम्हारे पास विसयतनामा की नकल भी भेज देंगे। अब हम पत्र भेजते हैं। इस महीने में ६४ पत्रे ऋग्वेद के श्रंक में भेजो। श्रौर श्रगले महीने में ६४ पत्रे यजुर्वेद के श्रंक में

१. ३ सितम्बर १८८० । शुक्रवार ।

२. यह पत्र बहुत फट चुका है। विषय से मुं० बखतावर सिंह के नाम का ही निश्चित होता है। तिथि

श्रीर हस्ताच्तर का दुकड़ा सर्वथा पृथक है, परन्तु लेख श्रादि से इसी पत्र का श्रंश प्रतीत होता है।

३. उक्त पत्र की पीठ पर ही हस्ताच्चर से नीचे वाला लेख है। पत्र के दुकड़े म॰ मामराज जी जुलाई सन् १९४५ में ला॰ रामशरणदास जी मेरठ वालों के यहां से खोज कर लाये। ये दुकड़े श्रव हमारे संग्रह में सुरिच्चत है।

४. बलदेवसिंह शर्मा के नाम एक चिट्ठी पु० २३ पर छपी है।

प्र ८ सितम्बर १८८० मेरठ। मूल पत्र पं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार की भगिनी के पास है।

भेजना। श्रीर जब पत्रों की दरकार हो तब दो तीन महीना पहिले से कहना कि हम तैयार कर के भेज दिया करें। भीमसेन से कहो वही इस बात की याद रक्खेगा।

मेला चांदापुर का वहां क्या अचार होगा। हमने कहा है जिस २ जगह सौ २ और जितनी २ पुरवक जहां २ जाती हैं वहां २ भेज दो। अभी तक क्यों नहीं भेजी। चिठी के देखते ही १० वेदमाब्य और ५ भूमिका उन्हीं के साथ १०० पुस्तक चांदापुर की मेरठ आर्यसमाज में भेज दो। हमने कहा था कि समर्थदान से सब हिसाब' समक लो और तुमने कहा था कि हमने समक लिया। अब कहते हो कि हमको ठीक २ मालूम नहीं होता है। [य]ह क्या बात है, पहिले से क्यों नहीं समक रक्खा। अब जैसे हो वैसे ठीक ठीक करो। वह समय तो गया अब कहने से क्या होता है कि गड़बड़ है, ठिकाना नहीं लगता है। जो हमने पहिले लिखा है कि आर्यदर्पण में कितने कागज लगे हैं और उस का हिसाब तथा एक रीम में कितने रुपैये लगते हैं कितने उस में कागज़ होते हैं। और यंत्रालय का सब हिसाब एक नकशे में लिखो। जितना रुपैया वहां जमा हो, जितना खर्च भया हो जितना कागज़ लगता हो उस का दाम और भाव संब लिखो। वेदभाव्य के दाम का रुपैया कितना जमा हुआ और कितना बाकी है। और सव पुस्तकों का दाम जमा और बाकी। सब यन्त्रालय की कुरसी आदि जितनी चीज़ें हैं उन सब का ठीक ठीक जांच परवाल कर साफ लिखो। क्योंक इस विस्थतनामें के जो समासद हैं उनके सुपुर हमने अ[पना] सब हिसाब किताब कर दिया है। वे कहते हैं कि हम ठीक २ बिना जाने क्या हिसाब करें। इससे तुमको लिखा जाता है कि सब यन्त्रालय का हिसाब ठीक २ करके भेज दो।

यजुर्वेद का सातवां अध्याय वनता है। हम यहाँ शायत ७ दिन रहेंगे । फि[र] जहाँ जायंगे वहां से खबर दी जायगी। हम आनन्दित हैं। आप लोग आनन्दित होंगे।

मिती भाद्र सुदी ४ बुधवार संवत् १९३०॥

[द्यानन्द् सरस्वती]3

[8]

पत्र (२१२)

[२७२]

बावू दुर्गाप्रसाद जी द्यानिन्दित रहो। हम यहां हद त्राठ दिन रहेंगे। त्रौर करनेल त्र्योलकाट साहिव त्रौर मेडम भी कल यहां से चले गये। रमा भी कल यहां से जावेगी। लेखक को त्राप जल्दी मेरठ में हमारे पास भेज दीजिये जब तक हम यहां हैं। १००) जो श्राप ने मुंशी इन्द्रमणी जी के विषय में इकट्टे किये हैं वे मेरठ

१. मुंशी समर्थदान का लिखा हुन्ना मुम्बई के वेदमाब्य के हिसाब का एक परचा मिति चैत्र बदी ६ सं० १६३६ से मिति ज्येष्ठ सुदी २ सं० १६३६ तक का है जिस में ६२२) रु० की न्नाय, तथा ५७५॥८॥ व्यय न्नीर ४६।०॥ रोकड़ बाकी लिखी है, इस परचे में मोहनलाल विष्णुलाल का हिसाब मी है। देखो पत्र पू० सं० २६५ (पृष्ठ २२१)। पत्रों के साथ ही वह परचा म० मामराज जी को मेरठ से मिला है।

२. ता ० ८ सितम्बर सन् १८८० मेरठ से । मूल पत्र चार स्थान में फटा हुन्ना है ।

३. म॰ मामराज जी जुलाई सन् १९४५ में लाला रामशरणदास जी रईस मेरठ वालों के पुराने कागजों में से खोज कर लाये। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्चत है।

श्रार्घ्यसमाज के उपप्रधान लाला रामशरण दास जी के पास भेज दीजिये उन्हीं के नाम से। क्योंकि सब जगह का यहाँ जमा होता है। श्रीर यहां से खर्च होता है। रमाबाई श्रपने घर को जाने कहती है। यहां समाज से १२५) रुपैये श्रीर एक थान मलमल का देकर सत्कार किया। कल यहां से दिल्ली श्रीर दिल्ली से इलाहाबाद, वहां से घर जायगी। श्रभी किसी समाज में नहीं जाने कहती है। शायत वहां से आवे तो जाय। इस के भाई के मरने से इसकी "कुछ कुचाली हो गई है" ऐसा लोग संशय करते हैं। चित्त भी चक्कल है। शरीर पतला निर्वल श्रीर रोगी है, गुस्सा भी बहुत है। इसकी "कुचाली" में जो लोग 'शंका करते हैं" वह लिखने ''योग्य नहीं हैं"। हमने इस को वैशेषिक और न्याय दर्शन के कुछ सूत्र पढ़ाये हैं। समकाई भी बहुत है। आशा है "कि कुचाली" को छोड़ कर उपदेश मार्ग में प्रवृत्त हो जावेगी। इस के साथ में बंगाली लोग हैं। वे ही इस की क़ुमति का कारण हैं, कहती है कि मैं देश में जाकर वहां से अपने किसी कुदुम्बी एक पुरुष और एक औरत रोटी करने वाली साथ में लेकर त्याऊंगी । इसकी बुद्धि बहुत त्यच्छी त्यौर सुबोध है । कान्यालंकार, कुछ न्याकरण बाल्मीकी रामायण्, महाभारत इतना पढ़ी है। संस्कृत बहुत श्रच्छा बोलती है। व्याख्यान बहुत श्रच्छा देती है। "परसों रविवार को" गोपालराव हरि ने इस के बुलाने के लिये चिठी भेजी थी। सो यह कहती है कि अभी तो हम देश को जायंगे। फिर वहां से आ]वेंगे तब देखी जायगी। जादा क्या लिखना । श्रीर तो सब प्रकार से अच्छी है परन्तु जैसे "चन्द्रमा में प्रह्णा लग जाय" ऐसो हाल है । रमा के इस हाल को प्रसिद्ध हर जगह न होना चाहिये। उन के भाई का शोक तो निवृत्त हो गया है।

मुंशी इन्द्रमणी जी के विषय में २००) क० मेरठ से २००) क० मुरादाबाद से इकट्ठे हुए हैं । श्रीर भी मुरादाबाद श्रीर चंदोसी चन्दा होगा। इन में से ६००) क० बालिष्टर को दिये गये श्रीर बाकी मिती पर फिर काम पड़ेगा तब भेजे जायंगे। ये सब कंपैये यहां ही जमा होते हैं। उन के पास एक ही वखत भेजना श्रच्छा नहीं है, जो ऐसा होता तो इतनी जगह मामला क्यों बढ़ता। उन में वालिष्टर को पहिले पांच सौ कपैये दिये थे। फिर १ सौ क० पीछे से पहुँचाये गये। इस तरह का हाल है। मुकदमा तारीख १ = को जारी होगा। यहाँ से दो एक दिन पहिले लाला रामशरणदास जायंगे। श्रीर वाकी कपैये भी लेते जायंगे। श्राप भी मुंशी जी को लिख भेजिये कि उपर लिखे मुताबिक मेरठ में कपैये भेज दिये। रामनाथ लेखक को ७ दिन के भीतर मेरठ में भेज दीजिये। सब से हमारा नमस्ते कह देना। हम श्रानन्दित हैं। श्राप लोग श्रानन्दित होंगे।

मिती भाद्र सुदी ४ बुध० संवत् १९३७।

[द्यानन्द सरस्वती]

१. स्वामी जी का अनुमान सत्य निकला । रमा ने इस बंगाली विपिनविहारी के साथ ही ता० १३ अक्टूबर सन् १८८० को ईसाई मत स्वीकार करके विवाह कर लिया । देखो पं० उवालादत्त का मिति मार्ग विद ५ सं० १६३७ का पत्र । उलटे कामों में छपा पाठ श्री स्वामी जी ने काटा हुआ है ।

२. ८ सित॰ १८८०, मेरठ, मूलपत्र हमारे संग्रह में सुरित्त है।

[पत्रांश कार्ड] (२१३)

[२७३]

[प्रो० जी० वाईज ऐल् वर्ठ स् स्ट्रीट वैडन जर्मनी]

कमेटी और कई विद्वानों की सम्मति है कि नवजवान आयों को योरूप में कला कौशल सीखने के लिये भेजना श्रावश्यक नहीं है। ९<sup>२</sup> [१८८०]

[9]

पत्र (२१४) श्रोश्म

रि७४

मुन्शी वखतावरसिंह जी आनन्दित रही।

पत्र श्राप का श्राया हाल माल्म हुत्रा । मुंशी इन्द्रमणि जी का विषय जो हमने वेदभाष्य के टाईटिल पेज पर छापने को लिला वह हमारा दोष है । परन्तु आर्यदर्पण श्रीर मेला चांदापुर प्रत्यत्तर एकसा ही छाप दिया है यह दोष तो दुर्निवार्घ्य है। क्योंकि इसमें वृथा ही कागज खराव करना है। इस को कौन लेगा। अब ऐसा न होना चाहिये। सिवाय अच्छे समाचार श्रीर नोटिस श्रादि छापना उचित है। देवीदत्त श्रीर शंकरलाल हम से नहीं मिले। श्रीर वेदभाष्य के पत्रों की व्यवस्था भीमसेन लिखा करेगा उसी से कह दो जिस वेद के जिस पृष्ठ से जिस पृष्ठ तक दरकार हो दो तीन महीने पहिले से लिख भेजेगा। पहिले पत्र में हिसाब के लिये जो नकशा की व्यवस्था लिखी है सब यन्त्रालय का हिसाब सममकर जलदी लिख कर भेज दो। हम अब यहां थोडे ही दिन तक रहेंगे। दो दिन पीछे लिखेंगे जहां जाना होगा। श्रौर १ रीम का कितना रुपया, कितना दस्ता, कितने ताव, कितने पृष्ठ होते हैं, यह भी लिखो । श्रीर हमारे कहं सुने बिना वेदभाष्य के श्रंक का दाम बढाया मत करो । श्रौर वहां यह भी कह देना सब जनों से कि सत्यनामसिंह मथुरा में हैं । हम श्रानिद्त हैं। श्राप लोग श्रानिद्त होंगे।

मिती भाद्र सदी ६ ग्र० संवत् १९३७।

दियानन्द सरस्वती ]

जैन मत के प्रनथ जिस किसी छापेखाने बनारस वा कलकत्ते में संस्कृत वा भाषाके जितने जहां से मिलें भेज दो। श्रीर श्रलंकार के पत्रे जो हमने चंद्रालोप (क) नामक लिखे हैं भीमसेन के पास होंगे। भेज देना जलदी।

महिना अज्ञात है। हमने अधिक से अधिक इसे सितम्बर मास का मानकर यहां जोड़ा है। यू॰ मी॰

४. १० सितम्बर १८८०, मेरठ। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिव्वत है।

१ प्रो॰ जी वाईज ऐल्वर्ट्स् स्ट्रीट वैडन जर्मनी के ६ पत्र मास्टर लक्ष्मण जी सम्पादित उर्द् जी॰ च॰ के परिशिष्ट में छपे हैं। उनके ग्राठवें पत्र में उक्त ग्रंश उद्धृत है। देखो जी० च० परिशिष्ट पष्ट २८६। यु॰मी० २. प्रो जी वाईज ने अपने अक्टूबर १८८० के पत्र में केवल ६ ता का उल्लेख किया है।

३. श्री स्वामी जी ने इन्द्रमिण का समाचार त्रार्यदर्पण में छापने को लिखा था, न कि वेद भाष्य के टाइटल पेज पर । देखो पूर्ण संख्या २४३ का पत्र पष्ठ १६६ । प्रतीत होता है जब स्वामी जी ने पूर्ण संख्या २६६ (पष्ठ २२७) के पत्र में 'वेदभाष्य के टाइटल पर उक्त समाचार छापने के विषय में' बख्तावरसिंह से पूछा तो उसने लिख दिया होगा कि ग्रापने लिखा था ग्रीर स्वामी जी ने उसे सरलता से मान लिया। यु॰मी॰

२३२

[3]

[मेरठ, सन् १८८०

पत्र (२१५) स्रो३म्

[२७३]

भाई ठाकुरदास जी योग्य नमस्ते।

पत्र आप का मिति भाद्र वदी १० सोमवार सिं० १९३७ पंजाबी का लिखा स्वामी जी के पास पहुंचा। स्वामी जी ने हम को दे दिया। उक्त पत्र को देख अभिप्राय जानकर सुम को आश्चर्य होता है कि आप पुनः पुनः पिष्टपेषण्वत् अम क्यों करते हैं। मैंने प्रथम पत्र में सब बातों के प्रत्युचर लिखे फिर भी तुम न सममें तो मेरा क्या दोष है। क्या मैं ने यह बात न लिखी थी कि जो स्वामी जी से मत विषयक शास्त्रार्थ किया चाहो तो अपने मत के सर्वोत्कृष्ट विद्वान को स्वामी जी के सन्मुख करो। अथवा जो ऐसा न कर सको तो जो इस समय गुजरांवाला में आत्माराम जी उपिथत हैं उन्हीं को शास्त्रार्थ के वास्ते नियुक्त करो। जिस में आप लोगों के मत की सत्यता सर्वत्र प्रसिद्ध हो के सब को विचार करने का समय प्राप्त हो और जो आप लोंगो पर ( मत और स्वयन्थों को गुप्त रखने से ) मिध्यात्वरूप क्लंक प्रसिद्ध हो रहा है वह दूर हो कर स्वमत का तत्त्व यथार्थ प्रकाशित हो जाये। लोग ऐसा अपवाद तुम्हारे पर घरते हैं कि जैसे वेदादिक शास्त्रों को आर्य लोग, वायवल आदि को ईसाई लोग श्रीर कुरान श्रादि को मुसलमान लोग व्याख्या श्रीर देश भाषान्तर में तरजुमा कर के प्रचार कर रहे हैं वैसे जैन लोग क्यों नहीं करते। यदि जैनों के मत विषयक पुस्तक ठींक २ सत्य और विद्या पुस्तकों के अनुकूल होते तो वाममागियों के सहश कौल पद्धति के समान अपने पुस्तकों को गुप्त क्यों रखते। इत्यादि बुद्धिमानों के अपवाद का निवारण करना आप लोगों को अत्यन्त उचित है। सो इस के निवारण के उपाय दो ही हैं। एक स्वामी जी के साथ तुम्हारे मत के सर्वोत्तम विद्वान का शास्त्रार्थ होना और द्वितीय अपने सब पुस्तकों को अनेक देश भाषाओं में छपवा के प्रसिद्ध करना। जब तक ऐसा न करोगे तब तक पूर्वोक्त कलंक दूर कभी न होगा। प्रथम यत्न का उपाय जो किया चाहो तो शीघ्र ही हो सकता है। स्वामी जी और आत्माराम जी का संवाद हम और तुम मिल कर करावें। जो स्वामी जी का पच खरिडत होकर आप लोगों का पच सिद्ध रहे तो आत्माराम जी आदि श्राठ जनों का रेल वा खाने पीने का जितना खर्च उठे उतना हम हें श्रीर जो श्रात्माराम जी का [पज्ञ] निराकृत हो के स्वामी जी का पज्ञ सिद्ध रहे तो आठ पुरुषों का पूर्वोक्त व्यवहार में यावत् व्यय हो तावत् आप लोग देवें। कोई उत्तम स्थान मध्यवर्ती हो वहां दोनों महात्मा उपस्थित हो के शास्त्रार्थं करें। हम लोगों ने स्वामी जी से इस विषय में पूछा था। स्वामी जी ने कहा है कि ऐसा हो तो इम को स्वीकार हैं।

श्रव तुम लोग श्रात्माराम जी से पूछो कि वे इस वात में प्रसन्न हैं वा नहीं। जो वे शास्त्रार्थ करने को उद्यत हों तो शीघ्र लिखें क्योंकि स्वामी जी यहां से श्रन्थत्र जाने वाले हैं। इस से यह कार्य ध्रति शीघ्र होना चाहिये श्रर्थात् दोनों महात्माश्रों के समागम से सब सिद्धान्त प्रकाशित हो जा सकेंगे श्रोर दूसरे पत्र का उत्तर इस वास्ते नहीं भेजा कि उस में कुछ विशेष न था। श्रव जो तीसरे उत्तर में तुमने लिखा है सो भी पिष्ट पेषण्वत् है। क्योंकि इनका उत्तर प्रथम पत्र के उत्तर में हम लिख चुके हैं श्रीर इस पत्र में तुमको ऐसा श्रसभ्य लेख करना योग्य न था। तथा स्वामी जी के नाम

पत्र भेजना भी अनुचित था। यह निश्चय जानो कि स्वामी जी श्रीर उन का सर्वस्व हमारा श्रीर हम तथा हमारा सर्वस्व स्वामी जी का है। जैसा तुम ने लिखा वैसा तुम पर भी आ गिरता है कि तुम कौन कहने श्रीर लिखने वाले श्रीर जो हो तो हम क्यों नहीं ? यह सब बातें लिखने से कभी नहीं निपट सकती है, बिना दोनों विद्वानों के समागम के। बार वार विना सममे लिखते हो कि सत्यार्थप्रकाश श्राप ने क्यों छपवाया ? इतना भी बोध तुमको नहीं है कि यह प्रन्थ स्वामी जी ने छपवाया है वा राजा जयकुष्ण्दास सी० ऐस० ऋाई० रईस मुरादाबाद ने छपवाया है। जब ऐसी छोटी २ बार्तों को नहीं समभ सकते हो तो गूढ़ बातों को क्या समभ सकोगे। यह तुम और हमको अत्यन्त योग्य है कि अपने और दूसरे के मत का सत्यासत्य निर्णय के लिये सभ्यता, विद्या, प्रमाण और शास्त्रोक्त व्यवहार के सहित प्रीतिपूर्वक शास्त्रार्थ कर के असत्य का निरोध और सत्य का प्रचार करें। यह शास्त्रार्थं प्रथम प्रकृत विषय जो सत्यार्थं प्रकाश में स्वामी जी ने लिखा है उसी विषय में हो, पश्चात् अन्य विषयों में। जो इस शास्त्रार्थ में तुम्हारा परिडत सत्यार्थप्रकाश के द्वादश समुक्षासोक्त विषय को तुम्हारे मत से विरुद्ध ठहरा देगा तो स्वामी जी उस विषय को दूसरी बार सत्यार्थप्रकाश में छपवाने न देंगे श्रीर माफी भी मांगेंगे श्रीर जो वह विषय स्वामी जी ने तुम्हारे मत के श्रनुसार सिद्ध कर दिया तो जितनी तुमने वेदादि विषयक निन्दा लिखी है इस को छोड़ना और स्वामी जी से माफी मांगना होगा। जो तुम शीघ्र शास्त्रार्थ करना न चाहो तो कब तक करोगे इस का निश्चित समय लिखो । परन्तु जितना बने उतना शीव्रता से करो। स्वामी जी और हमारी श्रोर से कुछ भी विलम्ब नहीं। इसका प्रत्युत्तर पत्र देखते ही दीजिये और इस बात में तुम को विलम्ब करना उचित नहीं, क्योंकि तुम्हीं [ने] यह बात चठाई है। इस वास्ते आप को योग्य है कि कल शास्त्रार्थ करने में प्रवृत्त हुआ चाहो तो आज ही तत्पर हुजिये। देखो हमारे साथ पत्र व्यवहार करने से तुमको कितना लाम हुआ। कि जो प्रथम श्रीर दूसरा पत्र तुम ने हमारे पास भेजे थे वे कैसे श्रशुद्ध थे श्रीर जो तीसरा पत्र तुमने भेजा सी भाषा के कायदे से कुछ अच्छा है। और अभिप्राय अर्थ से तो यह भी शुद्ध नहीं है। अब मैं अपनी लेखनी को अधिक लिखने से रोक कर आप लोगों को जताता हूं कि आप लोग पूर्वोक्त बातों पर ज्यान श्रवश्य देवें। यह बात बहुत उत्तम श्रौर लाभकारी है।

मिती भाद्रपद शुदी प रविवार सं० १९३७।

श्चानन्दीलाल मन्त्री श्चार्यसमाज मेरठ

[2]

पत्र (२१६)

[२७६]

॥ जों ॥

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

लेखक रामनाथ कल सप्तमी शनिवार को हमारे पास पहुंचा। और आज लिखने का भी प्रारम्भ करा दिया है। जैसा होगा वैसा शीछे लिखा जायगा। अब हम यहां से १२ गुरुवार को चार ४ बजे की रेल में मुजपफर नगर जायंगे। मुन्शी इन्द्रमिण जी के विषय में जो आपने १००) रूपैये

१ १२ सितम्बर १८८०। पं० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ६८७, ६८८ पर छुपा।

चन्दा किये हैं वे क्या अपने ही पास रखनी की इछा है। हमने कई वखत लिखा है कि मेरठ आर्थ-समाज के उपप्रधान लाला रामशरणदास के पास मेज दो। क्यों नहीं मेजते हो। मुन्शी इन्द्रमिण जी [के] पास नहीं मेजना। वहां जाने से व्यर्थ ही खर्च कर देंगे। हम ने यह कहा है कि मुकदमें में यथोचित खर्च होकर जो बाकी बचेगा वह इकट्ठा जमा रहेगा कि जब फिर भी कभी इसी तरह समय काम आवे। इस मुकदमें के हुए पीछे जिन्होंने जितना रूपया दिया है छपाकर सब प्रकाश किया जायगा। और सितम्बर की १८वीं तारीख को मु[क]दमा जारी होगा।

मुम्बई में परिडत के विषय में हमने पत्र लिखा। वहां से रूपैये आगये वा नहीं।

मथुरा से दूसरा पिंडत बुलाया है। आशा है कि उसके आने से वेदभाष्य का अच्छी तरह से काम चलेगा। अभी यजुर्वेद के ७वें अध्याय २३वें मन्त्र का भाष्य हो रहा है।

सब से हमारा नमस्ते कह देना। हम आनन्दित हैं। आप लोग आनन्दित होंगे।

मिती भाद्र सुदी प रविवार सम्वत् १९३७।

२०) रूपैये फिरोजपुर से जो विष्णुसहाय मन्त्री आर्य्यसमाज फिरोजपुर ने परिडतों के विषय में भेजे हैं, जमा कर लिये जायं।

[द्यानन्द सरस्वती]

बाबू जी दुर्गाप्रसाद जी से रामनाथ की नमस्ते। बहोत्त राजी खुशी साथ पहोंचा। लाला हर नारायण जी योग्य रामनाथ की नमस्ते।

[33]

पत्र (२१७)

[२७७]

श्रोम्

मुनशी बखतावरसिंह जी आनिन्दत रहो।

कल [पत्र] आप का आया हिसाब देखा गया। परन्तु तु[मने लि]खा कि इस महीने में ४८।।) रुपैये का टि[कट] आ[या] यह तो सम्भव नहीं होता। हमाराः भेजा है कागज आदि का हिसाब क्यों नहीं लि[खा] सेठ निर्भयराम की दुकान पर जो २००) रूपैये भेजे [थे] उनका क्या हुआ। बड़े आश्चर्य की बात है कि पुस्तकों की बिक्री बहुत कम होती है। हम पहिले लिख चुके हैं कि जो र पुस्तकों छपती जायं वे जहां र जितनी र भेजी जाती हैं उसी वखत भेज दिया करो। में जानता हूँ कि मेला चांदापुर अभी तक न भेजा गया होगा और तुमने जो उत्तर लिखा वह अकिंचन है। इस का ठीक उत्तर यही है कि आगे को ऐसा न करना [चा]हिये। और श्याम जी कृष्णवम्मी के पास [जनका] ठीक र पता लिखकर सब अङ्क दोनों वेद[ों के] तथा वर्णोश्वारणशिचा, संस्कृतवाक्यप्रवोध [और] व्यवहारमानु ये पत्र के देखते ही भेज दो। हम मेरठ से १२ गुरुवार को चार बजे की रेल में मुजफ्फरनगर जायंगे। तुम भी अपने मामा को चिठी लिखना हो लिखो, उनको जो शंका हों निवृत्त कर जायं। वहां हम को जाना कुछ आवश्यक तो न था, परन्तु मेरठ से डिप्टी कलक्टर राय बद्री प्रसाद वहां गये हैं। उन्होंने बुलाया है। उनके सबब से वहां के [और] लोगों की भी प्रीति है क्योंकि वे वहां के हाकम [हैं] और रमाबाई का हाल इतना ही है व्याकरण [काव्याल] कार पढ़ी है। संस्कृत

१. १२ सितम्बर १८८० मेरठ । मूल पत्र हमारे मंग्रह में सुरिव्हित है ।

भी श्र[च्छा बोलती है, व्याख्या]न भी श्रच्छा देती है श्रीर बड़ी बुद्धिमती है। [परन्तु कुछ] श्रक्थनीय श्रनुचित दोष है। इससे वहाँ के स[मास]दों की उपेचा हुई है। हमने तो उसको बहुत समकाया है। जो उसका भाग्य होगा श्रीर सुधर जायगी तो इस में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा होगी श्रीर उसके उपदेश से खी उपकार भी बड़ा होगा। यह रमा का हाल कहीं छपवा न देना। नहीं तो उसकी दुर्दशा हो[गी]। हम श्रानन्दित हैं। श्राप लोग श्रानन्दित होंगे।

मिती भाद्र सुदी = रिव संवत् १९३७।

फिरोजपुर के ब्रार्थ्यसमाज में १४ ब्रौर १५ ब्रङ्क दोनों वेदमाध्यों के उनके पास नहीं पहुँचे हैं। जलदी भेज दो। श्रौर फिरोजपुर के कांतचन्द के ८) ६० बाबत वेदमाध्य के हमारे पास ब्रागये। श्रौर ८) ६० फीरोजपुर समाज के भी श्रागये। श्रौर रजस्टर श्रच्छी तरह दरूस्त कर रक्खो। श्रौर माहकों के नम्बर भी हमारे पास लिख भेजो। हम अपने रजस्टर से मिला लेंगे।

[दयानन्द सरस्वती]

[२३]

पत्र (२१८)

[206]

मंशी बखतावरसिंह जी आनन्दित रहो।

आज विसयतनामा रमाना कर दिया। और न) क्पैये पिएडत श्रंबाशंकर के बाबत वेद-भाष्य के नौथे वर्ष के। शौर न) क्पैये लाला रामशरणदास के बाबत वेदभाष्य के नौथे वर्ष के। और १४) क्पैये बाबू खेदीलाल के बाबत वेदभाष्य के नौथे वर्ष के। और १२) क्पैये मुंशी राशरणदास के बाबत वेदभाष्य के तीन वर्ष तक के। इन चारों का एक ही मिती में क्पया जमा हुआ। और एक ही मुकाम मेरठ है। मिती माद्र सुदी १२ बुघ वा० संवत १९३७ जानो इन का नाम भी अगले वेदभाष्य में चाहो तो छपा देना। और ५४॥ १॥। रूपैया आर्थ्यसमाज मेरठ से वर्णोचारणशिचा श्रादि पुस्तकों का मूल्य जमा हुआ मिती माद्र सुदी १२ बुघवार संवत् १९३७ को। हम कल ४ बजे की रेल में बैठ कर मुजफ्फरनगर जायेंगे । चिठी पत्र वहीं भेजना होगा। हमने तुमको कई वखत लिख कर भेजा है कि जो पुस्तक जिस वखत छपकर तैयार हो उसको उसी वखत जहां २ जितनी पुस्तकें जातीं हैं भेज दो। क्यों नहीं भेजते हो। हमको माज्यम होता है कि जिस तरह मेला चांदापुर श्रमी तक यहां नहीं आया निश्चय है कि दूसरी जगह भी न पहुँचा होगा। यह बड़े अन्धेर की बात है। न जाने क्या होता है। हमने कह दिया है कि वेदभाष्य के साथ ही पहुंचा दिया करो। और पांच व छ: वेदमाष्य तो यहां से भेजे गये और व्रजभूषणदास के यहाँ से भी आये थे। उनका दाम चिठी में क्यों नहीं लिखा। क्या तुमने श्रपना ही पास हिसाब लिख कर बैठ रहे। इस से हमको क्या माज्य है कितना

१. १२ सितम्बर १८८० मेरठ से बनारस को।

२. म॰ मामराज जी ने ला॰ श्यामलाल जी श्रग्रवाल प्रधान श्रार्थसमाज के साथ ला॰ रामशरण दास जी रईस मेरठ वालों के सहस्रों पत्रों में से २३ जुलाई सन् १६४५ को खोजा। फटा हुआ मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरित्त्ति है। कोशों में हमने पूर्ति की है।

३. पं लेखरामकृत जीवनचरित में माद्र, सुदी १२ को वहां पहुँचना लिखा है। पहुँचे वस्तुतः १३ को।

बिका और कितना रहा। हम से यहां के पांच सात मनुष्य कह चुके कि हमने श्रमोच्छेदन का पुस्तक मंगाया है। अभी तक हमारे पास नहीं भेजा। हम कहते हैं कि यन्त्रालय की आमदानी और विक्री जितनी हो तिल भर का हिसाब साफ लिखकर भेजा करो। और अगले महीने से हिसाब हमारे पास मत भेजा करो। किन्तु परोपकारिणी सभा के मन्त्री जो लाला रामशरणदास हैं, उन्हीं के पास एक नकरों में सब हिसाब यथावत् लिखकर भेजा करो। अभी से अपना हिसाब ठीक २ कर रक्खों। बहुत बार हम लिख चुके हैं कि जिस[न] ने वेदभाष्य का चन्दा आज तक कुछ भी नहीं आया है उन के पास वेदभाष्य चौथे वर्ष के आरम्भ से मत भेजना। ऐसा ही करना और उनके पास पत्र भी भेजों कि जब तक तुम चार वर्ष कां चन्दा न भेजोंगे तब तक तुम्हारे पास वेदभाष्य न भेजा जायगा। और उनके नाम छांटके हमारे पास मेजों कि जिनकों हम अपने रजष्ट[र] के साथ मिला के ठीक करें और। जितनी सामग्री हमारे सामने और जितनी हमारे पीछे छापेखाने में आई है और जितना दाम लगा है जितना तोल वा गिनती जितने पुस्तकादि पदार्थ जमा वा खर्च तथा घन का भी हिसाब यथावत् लिख कर लाला रामशरण उपप्रधान आर्थ्यसमाज मेरठ के पास भेज दीजिये। क्योंकि परोपकारिणी सभा के मन्त्री उक्त लाला ही हैं। इन ने मुक्त से हिसाब माँगा था। मैंने कहा कि मुंशी जी देंगे। मेरे पास पूरा हिसाब नहीं है। श्यायद वे भी आपको इस वास्ते लिखेंगे और आप उनके पास भेज भी देंगे। ' हम आनन्द में हैं। आप लोग आनन्द में होंगे।

मिती भाद्र सुदी १२ बुधवार संवत् १९३७ मु० (मेरठ)

[दयानन्द सरस्वती]।

[१७]

पत्र (२१९) इयोउम [२७१]

स्वस्ति श्रीश्रोतमार्गम्कतपरिचयस्वान्तसिद्धान्तधर्मा नानातर्कप्रयासैविविधगुणभरश्रान्तिविश्रान्तिश्रान्तिश्रामि । देशे देशे प्रवादोत्पथजनमिथतोत्कर्षसद्धंकम्मी भूयो भूयस्समीयाद्धुधकृतिजनितं सत्फलं कृष्णवर्म्मा ॥ १॥ पत्रमत्र त्वदीयस्योदन्तस्य च मदन्तिकम् । आगतं येन नः स्वान्तेऽत्यन्तं सुखमजायत ॥२॥ वेदभेदपरिध्वंसतर्कसद्ध्यंकृद्धरम् । व्याख्यानमतिसौहिसमाख्यातुस्तव दैशिकम्॥३॥

१. इस विराम के पश्चात् से लेकर श्रन्त की दो पंक्तियों से पहले तक का सारा लेख ऋषि के श्रपने हाथ का लिखा हुआ है।

२. ऋषि का निज लेख यहाँ समाप्त हो जाता है।

३. १५ सितम्बर १८८०। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्त है।

समीरितं पत्रमनेकमञ्जसा कियावरैर्जर्मनदेशजैर्जनैः। समीपमस्माकमवाप्तमत्र तत्तदाश्चयं विद्धि महाशयैर्मुदा ॥४॥ विदेश नैर्देशसुखायं शिल्पक्रियानिदेशाय सदाशयात्किल । नरेभ्य एभ्यो विखितं निरन्तरं करण्डमेतैस्वमतस्समाचर।।५।। गन्तव्यमत्रागमनात्स्वदेशे त्वया च तत्राढ्यपुरे पुरैव व्याख्यानमाख्यानमनस्य देयं श्रुतीरितं श्रौतस्रधान्वितं च ॥६॥ तदीयभाषाविरहास मत्तः प्रयाति पत्रोत्तरमाश्रुतेभ्यः । वक्तव्यमेतल्लिखितं न धीमंस्वया च मोनिर्विलमस्य दृत्तम् । ७।। नमस्त इत्येष मदुक्तशब्दस्तस्में प्रयुक्तोऽथ न वा प्रयुक्तः । श्रस्थातकामो पतिमंश्च देहराद्नं पुरं नूनिमतोऽहमस्मि ॥८॥ गत्वा पारलिमेन्टसज्जनसभां व्याख्यानमाख्यावरमे भारतवर्षपूर्वनियमेपक्षावतस्तान् कुरु पक्ष्येयुर्यत ईंदशं निजदशादुः खं दुतं दुः खिनां म्लेच्छा म्लेच्छत्या च भारतजनान् संपीडयन्तीति यत् ॥९॥ यवनजनमतं हि स्वीयधर्मातुकूलः सकलजनगरिष्ठः श्रेष्ठकर्मेव नान्यः। इति मनिस निधायोत्किण्ठिताः कण्ठतेल श्रुतिपथनिरतानां च्छेदमिच्छन्ति नित्यम् ॥१०॥ (श्रत्रांशे प्रकृतविवादो यथा)

#### मुरादाबादीयश्श्रुतिपथगमुंशीन्द्रमणिकः

५--१. (देशसुखाय) भारतवर्षीयजनसुखाय ।

२. (एम्यः) भारतवर्षनिवासिम्यः।

६-१. (तत्राढ्यपुरे) धनसमृद्धे युरोपाख्ये।

७-१. (तदीयभाषाविरहात्) तेषां युरोपदेशवासिनां भाषाविरहात्।

-- १. मौनिविंलिमाख्याय।

(त्राख्यावरम्) सौजनामियुक्तश्रौतसिद्धान्तानुक्लम्।

२. (भारतवर्षपूर्वनियमप्रेचावतः) भारतवर्षस्य पूर्वेषां जनानां सौजन्यसौहार्द्धाजिलत्वसर्वशास्त्र-सिद्धान्तानुक्लेषु नियमेषु विचारवतः (तान् ) युरोपदेशनिवासिनो महाशयान् पारिलमेण्ट-सभासदः । (दुखिनां) भारतवर्षनिवासिनां दुःखाकुलचेतसाम् ।

ये सब संस्कृत टिप्पणियां स्वामी

जी की हैं

श्रुतः श्रौताचाराद्यवनमतविच्छे[द]नरतः तदक्ती द्वी ग्रन्थी यवनकृतसम्मानवशान् मजस्ट्रेटः सम्प्रसनिशमवदाषीत्तेदपरम् ॥११॥ मुद्रापञ्चश्चतं दण्डं कृतवांञ्छीघ्रमेव सः। तस्य प्रसर्जनं तत्र यातं जजगृहे यदा ॥१२॥ सक्त्वा शतानि चत्वारि जजेनापि स्वयत्नतः। मजस्ट्रेटकृतो न्यायः स्वीकृतोऽनेकधा तदा ॥१३॥ सदालसा राज्यनिबन्धकर्म्मध्र प्रभावतः स्वार्थरता विशेषतः । भवन्ति केचिच परार्थतत्परा जना नियुक्ता इह राज्यकर्मस्र ।।१४।। भवन्ति ये म्लेच्छजनाश्च तेषु तत्कथाप्यलं दुःखतमाय दृश्यते । न यावदेतेषु मनूक्तदण्डक्रुन्नयोऽस्ति तावन्न सुनीतितत्पराः ।।१५॥ भवन्ति ते प्रत्युत धर्मकर्मणि प्रकाशयन्ति स्वमतिभ्रमं यतः । अहो महोपद्रवकर्मकारिणः समत्सराः स्वरूपधियोऽतिलोभिनः ।। १६॥ सर्वमेतत्समाख्याहि पारलिमेण्टसंसदि। आख्यातुस्तव दृष्टान्ते सिद्धान्ते न यथा भवेत ॥१७॥ म्रसायटी सोफिकलमधानः ख्यातश्च यो डाक्टरमासिनाम्ता। न तस्य पत्रोत्तरमाशु मत्तस्तदीयभाषाविरहाद्धि याति ॥१८॥ न च ताबद्धनं च्येतुमवकाशो ममाधुना । रक्षेयं यावंता कञ्चिद् द्विभाषिणिमहान्तिके ॥१९॥ करनेल ओलकाटाख्यं प्रयुक्तं च मयाधुना पत्रमिच्छुस्तदा रक्ष मत्समीपे तथाविधम् ॥२०॥

११-१ (ग्रवदार्षीत्) भिन्नवान् ।

१२--१. (प्रत्यर्जनम् ) प्रतिविवादपत्रमपीलाख्यमिति यावत् ।

१३--त्यक्तवा शतानि चत्वारि इत्यत्र ग्रयं निर्धनी नापरोधे न्यूनत्वमस्येति कथयित्वेति शेष:।

१५—(मनूक्तः) कार्षापणं भवेद्यत्र दगड्योऽन्यप्राकृतो जनः। तत्र राजा भवेद्दगड्यः सहस्रमिति धारणा ॥ इत्यादिवत् । स्रत्र राजशब्देन सामान्यतो राज्यकर्मणि नियुक्ता प्राह्याः॥

१६—( द्विभाषियाम् ) देवभाषागौरगडभाषाविदम्।

२०—( तथाविधम् ) उक्तद्विभाषाविदम् ।

यदि त्वां स मिलेत्तत्र सुसायटिपतिस्तदा। कथ्यतां सर्वमेवैतद्वत्तं मत्पत्रकांक्षिणे।।२१।।

त्वद्भिलिषतानि पुस्तकानि मया तदानीमेव प्रेषितुमाज्ञप्तानि काशीनगरादागमिष्यन्त्यागतानि न वेत्यलं विस्तरेण । श्रत्रैका परोपकारिणीसभा स्थापिता, यत्र भवानिष सभासदस्ति । तस्या व्यवस्था नियमान्वितं राजमुद्राङ्कितं भवत्सनीडे प्रेषयामीदं स्वात्मवत्सदा रक्ष्यमुत्तरस्मिन् समयेऽत्यन्तं कार्यकारि वर्तते । तत्रत्योदन्तः पत्रद्वारा मह्यं निवेदनीय इति ।

नगगुणनवचन्द्रे विक्रमादिसवर्षे

रसतिथिशनिवारे चाश्विने कृष्णपक्षे।

बुधजनसुखदात्रे कृष्णवर्माभिधाय

पथितविबुधवाण्या पेषितं पत्रमेतत् ॥

द्यानन्द सरस्वती

[3]

उर्दू पत्र (२२०) श्रों तत्सत्

[260]

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्द रहो।

पत्र आप का आया। समाचार मालूम हुआ। रामनाथ पहुँच गया। सो विदित हुआ। हम यहां ८ आठ दिन और रहेंगे। और ३ अक्तूबर को मिरठ के वार्षिक उत्सव पर जायेंगे। बाद इसके शायद देहरादून को जायें। मुंशी इन्द्रमन का मुआमला साहब जज ने भी कुछ अच्छा कुछ बुरा किया है। अर्थात् ५०० पांच सौ रुपया जुर्माना में से ४०० रुपया वापिस किये और १०० सौ रुपया रखे। और वाकी साहब मैजिन्ट्रेट की राय बहाल रखी। और उससे अधिक बुरी राय ऐसी दी कि उसने ३ तीन बात फोहरा लिखी है। इस ने यानी जज ने सब किताब को फोहरा बतला दिया। इस में भी कुछ पचपात हुआ। अब यह मुआमला शायद हाई कोर्ट को जायगा। देखा जाय कि वहां से क्या होता है। और भी जज साहब ने लिखा है कि यह मुआमला सब हिन्दुओं का नहीं है खास मुनशी इन्द्रमन का है। उसकी यह बड़ी भूल है। लेकिन हाकिम है जो चाहा सो लिखा दिया। एक पिछत मथुरा से यहां आया था। चार दिन रहकर चला गया। उसको आने जाने का

२१—( सः )सुसायटीप्रधानो डाक्टर भासीति नाम।।

१. २५ सितम्बर १८८०। उस दिन तिथि ७ हो गई थी । संवत् १६३७ आश्विन कृष्ण इ शनिवार।

१. मूल पत्र प्रो॰ धीरेन्द्रवर्मा जी के पास सुरिच्चत है। इसकी जो प्रतिलिपि हमारे पास आई थी, वह अशुद्ध प्राय थी। हम ने बहुत यत्न से उसे शोधा है। िकर भी कई अशुद्धियां रह गई हैं।

२. श्रनुमानतः २५ सितम्बर १८८० को गुजक्फरनगर से लिखा गया । मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्चित है।

खर्च दिया गया है। और असूज के अन्त में फिर आवेगा। फिर खर्च दिया जावेगा। अब आप ही तहरीर फरमाईये कि उस का माहवारी क्या मुकरिर किया जावे। आपके पास माहवारी असल मा सूद कहां तक हो गया है। और आर्यसमाज वाले अलहदा बैठने का खुशी नहीं करते। कहते हैं घूमे विना अच्छा नहीं है। तुम्हारी इस में क्या राय है लेकिन मैं जानता हूं कि बहुत घूमने में हरज होगा। मगर इस में कि जहां जांयें दो दो एक एक महीना ठहरें तो हरज कम होगा। और बड़े पिखत तो अब मिलते नहीं कि जिसको पचास या साठ रुपया दें। लेकिन अब बेहतर है कि छोटे छोटे यानी एक एक विद्या जानने वाला कम तनखवाह वाला रखकर काम निकाला जावे। यानी चार पाँच रखे जायेंगे! और उस से भी वैसा ही काम लिया जावेगा। यानी हर एक के एक एक काम स्पुर्द कर दिया जावेगा। हम आनन्द हैं। सब से नमस्ते कह देना।

द्यानन्द सरस्वती

[99]

पत्र (२२१)

[269]

लाला मूलराज जी आनन्दित रही !

श्राज कल हम मुजफ्फरनगर में हैं। हम ने श्राप को वसीयत भेज दी थी। क्या यह श्राप को पहुँची या नहीं ? हमने श्रभी तक उसके उत्तर में कुछ नहीं जाना, क्या कारण है ? सब से हमारा नमस्ते कह दें। हम सब सर्वथा श्रानन्द में हैं श्रोर श्राप सब का श्रानन्द चाहते हैं।

श्रक्तूबर १८५०

ह० द्यानन्द सरस्वती

[4]

पत्र (२२२)

[262]

पिडत भीमसेन आनं [दित रहो]

"ह रजस्टरी भेजी है पहुंची होगी। यजुर्वेद षष्ठाध्याय के आरम्भ से २० पृष्ठ भेजते हैं
सो ले[ना] । एक श्रद्ध में कितने पृष्ठ लगते हैं सो लिखना। और ऋग्वेद के पृष्ठ के छपने को बाकी
हैं सो भी लिखना। जो आगे के लिये पृष्ठ तैयार कर रक्खें। अलङ्कार विषय में जो चन्द्रालोक के पत्रे
[जो] मेलम में पास थे वे भेज देओ। और सर्वदर्शनसंग्रह पुस्तकों में हम छोड़ आये हैं। जो वह मिले
वही अथवा किसी दूकान से लेकर और भेज देओ। और जैनमत [की] पुस्तक जिस में [वेदादिशास्त्र] ों
का खरडन और " " संपादन कर भेज देखो।

१. वैदिक मैगजीन गुरुकुल गुजरांवाला से श्रनृदित। देखो पत्र पूर्ण संख्या २२२ का टिप्पण २ (पृष्ठ१८३)

२. तारीख का निर्देश छूट गया है। इस पत्र में मुजफ्फरनगर में रहने का उल्लेख है। श्री स्वामी जी मुजफ्फरनगर १६ सितम्बर से रश्चकटूबर (१८८०) रहे थे स्नतः यह पत्र १ या २ स्नक्टूबर (श्राधिन कृष्ण १२, १३ सं० १६३७) को लिखा होगा।

३. यजुर्वेद के २० पृष्ठों की रजिस्टरी इस पत्र के साथ नहीं पहुंची। वह पीछे से पहुंची। उसकी पहुंच

पं भीमसेन ने अपने पत्र आश्विन शुक्ला १२, शुक्र में स्वीकार की है।

#### रजिस्टरी की बातों को यथायोग्य होशिष्ट्यारी से करना'।

हर मिहने में कान्ताप्रसाद का मासिक ... ........... में लिखते आये हैं और अब लिखते हैं [िक का] न्तप्रसाद हमारा नौकर है और अत्यन्त भूठ यह

वा नहीं] ... ा कर शरकारी क ... हिर पंडित[जी को ब्राह्मी] स्त्रोपधी भेजी थी पहुँची वा नहीं । [स्राश्चिन शुक्का १, संवत् १९३७] ब

द्यानन्द सरस्वती

१. यहां तक का पत्र पृष्ठ की एक द्रोर किसी लेखक का लिखा हुद्या है। द्रागला सारा लेख पृष्ठ की दूसरी द्रोर श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से लिखा है।

<sup>2.</sup> पं० भीमसेन अपने आश्विन शुक्ला ७ रिववार के पत्र में लिखता है—

"आश्विन शु० १ का लिखा पत्र आप का आया।" उस पत्र में पं० भीमसेन ने इसी पत्रस्थ बातों का उत्तर

दिया है। अतः उस पत्र के आधार पर श्रीस्वामी जी के इस पत्र की तिथि निश्चित करके लिखी गई है। इस पत्र
की तिथि वाली पंक्तियां तथा और भी कई पंक्तियां या पंक्तियों के अंश फट चुके हैं। कुछ नष्ट शब्दों की पूर्ति

कोशों में की गई है। मूल पत्र के दुकड़े म० मामराज जी ने जुलाई सन् १९४५ में ला० रामशरणदास जी मेरठ
वालों के यहां से खोजे। ये अब इमारे संग्रह में सुरिच्चत हैं।

३. ५ अक्तूबर १८८० मंगलवार।

२४२

[8]

पत्र सूचना (२२३)

[263]

सेवकलाल कृष्णदास मं० आ० स० मुम्बई। ५. ६ अक्तूबर १८८० मेरठ।

[3]

पत्र (२२४)

[268]

पंडित भीमसेन जी आनंदित रहो।

श्राश्वन सुद् अ रविवार के लिखे हुए पत्र तुम्हारे आये। तथा श्रक्टूबर १२ का लिखा पत्र सुन्शी [ बखता ]वर का आया। हाल विदित हुआ। पुस्तकों का हिसाब तुम से वा २।४ हपैये लगकर भी किसी पुरुष की सहायता से जैसे हो सके वैसे करो। और पुस्तक तथा और पदार्थों को श्रच्छी प्रकार गए। कर ताला कुंजी अपने हाथ कर ले। और मुंशी बख्तावरसिंह लिखते हैं कि किसी मनुष्य को शीघ छापेखाने में भेज दो, क्योंकि प्रसमीन श्रादि कारोगर चालाक होते हैं । उन के सब काम के [को] वह अच्छे [प्रकार] समक्ष ले। सो मेरठ वा फर्रुखावाद आदि को हम पत्र भेज चुके हैं। तुम्हारी सहायता के लिये कहीं से कोई मनुष्य आया जाता है। वह भी सब काम समक्षेगा । परन्तु तुम अच्छे होशिआरी के साथ सब काम की जांच रखना । तुम किसी तग्ह हा [ गा ]फिल न होना। आर्थ्यंदर्पण् इस महीने का छप जाने दो। परन्तु आगे को कोई भो और काम वाहरी न रहे। जो रुपैये ३००) जमा किये हैं उन का आठ आने ॥) सैकड़े से व्याज मिला करेगा। हम से और मिरजापुर के भवानीराम जी के बेटे से पहले इस मामले की बात हो गई है। फिर भी उन के मुनीम से कहना कि मिरजापुर से चिट्ठी मंगा लेखो। और फर्रुखाबाद निर्भयराम जी को भी लिख दिया है। वहां से भी उन को चिट्ठी आजायगी।

पुस्तक काव्यप्रकाश सटीक जो छपी है वह भेज देना और सर्वदर्शनसंग्रह तथा जैनप्रभाकर

से वा श्रीर जगह से जो जैन वा बौद्धमत वालों के ग्रन्थ जैसे हम ने लिखे हैं भेज देना।

[ दयानन्द सरस्वती ]

[8]

पत्र (२२५)

[264]

पिडत भीमसेन श्रानिद्त र[हो]
फर्रुखाबाद से तोताराम श्रीर लाला स[न्नू]
लाल गये हैं। बाबू दुर्गाप्रसाद के मक[ान पर]
हम ने रजस्टर[भेज दिये थे उन .....के.... श्र]
नुसार सन्नूलाल से [मिला...कर ..............]
हिसाब करेंगे। मुन्शी जी से भी [कहना कि]
उन को ठीक २ सब हिसाब दें श्री[र मु]

१. इस पत्र का संकेत म० मुन्शीरामऋत पत्रव्यवहार पृ० २४५-२४८ पर देखें।

२. संभवतः १४ त्राक्टूबर १८८० देहरादून से । मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्ति है ।

| न्शी जी को भी चिट्ठी लिखते हैं [कि हिसा-]   |
|---|
| व और सब वस्तु तथा छापर[वाने का]             |
| श्रीर भी जो कुछ व्यवहार हो [वह पांच सात]    |
| रोज के भीतर उन से समभ लें [और तोता]         |
| राम और तुम तथा और हू को[ई मि-]              |
| ले तो कुछ दे कर [ और रख ]                   |
| कर तुम लोग पुस्तकें [गिन कर] स से           |
| ससा   |
| देना क्योंकि तुम्हें चु[श्रीलाल-श्रमय ]     |
| राम के पास का व्यवहा[र] श्रीर [कलक-]        |
| त्ते से जो वस्तु आती हैं तथा और             |
| िनीश्रा का हिसाब बहुत माल्स है। तु[म्हारे]  |
| पढ़ने में दश पांच रोज हानि हो [ सो भी ]     |
| [सह]न करना और उक्त [दोनों]                  |
| पुरुष] जब पहुँचे। तभी से डाकखाने को नोटिस   |
| देश्रो कि डांक सब पंडित भी-                 |
| मसेन के नाम से आवें चिट्ठी पत्रीं [जो]      |
| नागरी में होगीं सो तुम वांचा करना [ श्रौ ]  |
| र घ्रांगरेजी वा फारसी की सन्नू [ लाल वाँ ]  |
| चेंगे। मुन्शी जी की जो हों [ सो उन्हें दे ] |
| दिया करना [हिसाब की जब तक पड़ताल ]          |
| समाप्त न हो लें तब तक सब चिट्टिया           |
| तुम्हारे ही नाम से आया करें।                |
| आर्य्यदर्पण के इस महीने की २४               |
| [ तारीख तक                                  |
|   |
| यह बहुत श्रनुचित है हमा-                    |
| रा काम बन्द होता है अभी तक कितना            |
| च्याकरण छप जाता                             |
| [ ह]ानी सो हुई।                             |
| [श्रीर पुर]तक जो शिरकारी वैदिक              |
| यन्त्रालय में हैं उन का हिसा-               |
|   |
| ब भेजते हैं।                                |
| •••• तुम्हारे पास भी फुटक-                  |

रथ्ध

#### ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन [ देहरादून, सन् १८५०

[र ··· ·· ·· ·· ] से हो-[गा··· ·· ·· ·· ]तेस्रो।

वस्तु सब अच्छी प्रकार सहार
लेना और तोल माप कर लेना ।
पड़त]ाल-कुझी अपने पास रखना।
[जब] कहीं जाओ तब सन्नू लाल
[या] तोताराम को दे जाया करना।
अब यह काम बहुत परिश्रम
औ[र] होशिआरी का है सो अच्छी प्रकार समक्ता।
[कि]मधिकलेखननेत्यलम्।

[द्यानन्द सरस्वती]

[२४]

पत्र सूचना (२२६)

[२८६]

मुंशी बख्तावरसिंह वैदिक यन्त्रालय के सम्बन्ध में ब

[3]

पत्र (२२७)

[२८७]

लाला रामशरण दास जी आनन्दित रहो।

मुन्शी इन्द्रमिण के मामले के खरच में तुम को अखतयार है। जो मुनाशिब जानो सो देश्रो। श्रीर अपील जरूर हाईकोरट में जाय। श्रीर पांच जजों के बीच यह मामला हो। ऐसा वंदोबस्त कर देना। इस के खरच के लिये जहाँ जहाँ चंदा होता है। श्रीर तुम योग्यता जानो उस २ जगह को श्रीर भी चंदा होने के लिये लिखो। मेरठ समाज में पहले बहुत खरच हो चुका है। इस लिये तुम वहां चन्दा न करना। श्रीर मुंशी जी को लिखना कि घबड़ावें नहीं। किन्तु अपने पत्त पर श्रीष्ट प्रमाण राजघर में दें। दूसरों के बहुत दोष दिखाने से भी अच्छी तरह कार्यसिद्धि नहीं होती है, यह विचार प्रा २ रखें।

फर्रुखाबाद से दो सभासद तोताराम और लाला सन्नूलाल काशी वैदिक यन्त्रालय में गये हैं। वे सब हिसाब का बन्दोबस्त यथायत् करेंगे। तुम श्रव किसी श्रादमी का खोज न करना। परन्तु वहां रहने के लिये किसी मुंशी का बन्दोबस्त श्रवश्य करना, जो हमेसा छापेखाने में रहे श्रीर योग्य हो।

१. इस पत्र की तिथि प्रसंग श्रौर श्रन्य पत्रों के श्रनुसार श्रवत्वर १५ से २१ सन् १८८० तक की कोई तिथि है।

२. फटा हुन्रा पत्र म॰ मामराज जी ने जुलाई सन् १६४५ में ला॰ रामशरणदास जी मेरठ वालों के पत्रों में से खोजा। पत्र के नष्ट ग्रांशों की पूर्ति कोष्टों में हमने की है। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरित्त है।

इ. देखो पूर्ण संख्या २८५, पृ० २४३ पं० १ । यु० मी० ।

रथप

तीनों भाषात्रों का यथायोग्य काम करें। श्रीर मातबर हो।
मि० श्रा० १४।

[दयानन्द सरस्वती]

[9.]

पत्रांश (२२८)

[266]

मन्त्री आर्थसमाज गुजरांवाला

परिडत आत्माराम जी से एक पत्र उन सन्देहमात्र बातों का जिनको वह सत्यार्थप्रकाश में जैनों के मतों के विरुद्ध ठहराते हैं उनके हस्ताचर से हमारे पास भिजवा दो कि हम विचार पूर्वक उन का उत्तर लिखकर और अपने हस्ताचर करके उनके पास भेजेंगे।

[8]

पत्र (२२९)

[२८९]

श्रो३म

वावू दुर्गाप्रसाद जी आनिन्दत रहो।

नमस्ते—पत्र आपका ता० २१ अक्टूबर स० ८० को हमारे पास पहुँचा। समाचार सब मालूम किया। मास्टर शादीराम जी कि जो अंग्रेजी और फारसी में खुब हुश्यार और रईस आदमी हैं, उनको मेरठ से बनारस को भेजा गया है। मास्टर मज्कूर काम अंग्रेजी और फारसी का और तोताराम जी नागरी का और भीमसेन जी सोधने वगैरा का काम करेंगे और सन्नूलाल वापिस आवेंगे। मगर माह्वारी खर्च कि जैसे मुंशी और शोधने वाले के ३५ रुपये हैं। जिन में से ३०) बखतावरसिंह लेता था। और ५) भीमसेन को मिलते थे। सो अब दोनों काम यानी शोधना व मुनशी का कुल ३०) रुपये में होना चाहिये। दोनों आदमियों को वह रुपये जैसे मुनासिब मालूम होंगे, हस्ब लियाकत दिये जायेंगे। और मास्टर शादीराम बिल्फेल वास्ते देखने और सममने काम के भेजे गये हैं। अगर वहां का काम उन से चला और समम में आगया तो रहेंगे। वर्ना खेर और कुछ तजवीज मुनासिब की जावेगी।

श्रीर पं० गोपालराव हरी को हम श्रलहरे पत्र लिखेंगे । श्रीर पाठशाला की पुस्तकों की बाबत जो लिखा है। सो ऐसा करना चाहिये। कि जो जो पुस्तक वैयार होती जाए, सो सो ज्यायत बन्दी में शामिल करते रहना यथायोग्य। श्रीर हम को फुर्सत कम रहती है। हम भी कचा बनावेंगे। श्रीर

मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिक्त है। त्राश्विन वदी १४ रिववार ३ त्रावत्वर १८८० को है त्रीर त्राश्विन सुदी १४ रिववार १७ त्रावत्वर को है।

२. यह पत्रांश उस पत्र में है, जो मुं॰ नारायण कृष्ण मन्त्री द्रार्यसमाज गुजरांवाला ने पं॰ स्नात्माराम जी को गुजरांवाला में ही कार्तिक ५ को मेजा। यह पत्र नारायण कृष्ण जी के पास लगभग ४ कार्तिक को पहुंचा होगा। श्री स्वामी जी ने मूल पत्र १ या २ कार्तिक को लिखा होगा। मुंशी ना॰ कृ॰ जी ने स्रपने पत्र के स्नारम्भ में लिखा है—''इस समाज में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का एक पत्र स्नाया है।'' कार्तिक वदी १, १९ स्न स्वत्वर १८८० को पड़ती है।

३. कार्तिक कृष्ण ३ सं० १६३७। यु० मी०।

दूसरा निवेदन जो बाबू शिवप्रसाद ने छापा है उसका उत्तर भी तैयार हो गया है। सो पं० ज्वालाद्त्त के नाम से अब जारी किया जायगा ।

यजुर्वेद का प्रश्याय पूरा होने को श्राया है। ज्वालादत्त के श्राये प्रश्वात् ३ श्रध्याय का भाष्य बन चुका है।

तारीख २१ अक्टूबर सन् १८८० ।

द्यानन्द सरस्वती

[१] पत्र (२३०) [२**९**०]

पूज्यवर त्रात्माराम, पञ्चायत सराविगयां लुधियाना त्रौर ठाकुरदास जी रईस गुजरांवाला । जैन मतानुयायी सज्जनों के प्रश्नों के उत्तर—

प्रश्न — जो सत्यार्थप्रकाश में ऋोक लिखे हैं जैनों के किस शास्त्र या प्रन्थ के हैं ?

उत्तर—यह सब स्रोक बृहस्पितमतानुयायी चारवाक जिसके मत का नामान्तर लोकायत भी है स्रोर यह जैन मतानुयायी है उनके मतस्थ शास्त्र वा प्रन्थों के स्रोक हैं।

स्रोकः-

यावज्जीवं मुखं जीवेनास्ति मृसोरगोचरः। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥१॥
तथा तदन्तर्गतस्राभाणकोऽप्याह—

अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्डनम् । प्रज्ञापौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः ॥२॥ अग्निरुणो जल्लं शीतं, शीतस्पर्शस्त्रथानिलः । केनेदं चित्रितं तस्मात्स्वभावाचद्वचवस्थितिः ॥३॥ न स्वर्गो नापवर्गो वाः नैवात्मा पारलौकिकः । नैव वर्णाश्रमादीनां, क्रियाश्च फल्लदायकाः ॥४॥ अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्डनम् । बुद्धिपौरुषहीनानां, जीविका धातृनिर्मिता ॥६॥ पश्चश्चेन्निहतः स्वर्गं ज्योतिष्ठोमे गमिष्यति । स्विपता यजमानेन, तत्र कस्मान्न हिंस्यते ॥६॥ मृतानामि जन्त्नां, श्राद्धं चेनृप्तिकारणम् । गच्छतामिह जन्त्नां, व्यर्थं पाथ्यकल्पनम् ॥७॥ स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं,गच्छेयुस्तत्र दानतः । प्रासादस्योपरिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते ॥८॥ यावज्ञीवेत्सुखं जीवेदणं कृत्वा घृतं पिवेत् । मस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कृतः ॥९॥ यदि गच्छेत् परं लोकं, देहादेष विनिर्गतः । कस्माद्भयो न चायाति,वन्धुकोकसमाकुलः॥१०॥ ततश्च जीवनोपायो, ब्राह्मणैर्विहितस्त्रिद्ध । मृतानांत्रतकार्याणि, नत्वन्यद्विद्यते कचित् ॥१९॥ अश्वस्यात्र हिश्वक्षंत्र, पत्नीप्राह्मं प्रकीर्तितम् । भण्डेस्तत्परं चैव ग्राह्मजातं प्रकीर्तितम् ॥१२॥ त्रयो वेदस्य कर्तारो धूर्णभाण्डनिशाचराः।जर्फरी तुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः स्मृतम् ॥१३॥ मांसानां स्वादनं तद्विन्नशाचरसमीरितम् ॥

१. यह उत्तर श्रनुभ्रमोच्छेदन के नाम से पं० भीमसेन की श्रोर से छपा है।

२. मूल पत्र त्रार्थसमाज फरुखाबाद में सुरिच्त है।

एतदादि जो जो मैंने सत्यार्थप्रकाश में जैन मत विषयक लिखा है सो सो समस्त यथार्थ है। प्रथम पत्र के उत्तर में ला० ठाकरदास आदि को लिखवा दिया था कि जैन मत की कई एक शाखार्थे हैं। यदि आपने प्रत्येक शाखा के प्रतितन्त्र सिद्धान्त जाने होते तो आप को सत्यार्थप्रकाश के लेख में भ्रम कभी नहीं होता। श्राप लोगों के प्रश्नों के उत्तर में विलम्ब इस लिये हुआ। कि जो कोई सज्जन सभ्य विद्वान् जैसा कि श्रेष्ठ पुरुषों को लेख करना चाहिये वैसा करता तो उसी समय उत्तर भी लिखा दिया जाता, क्योंकि सज्जनता पूर्वक लेख के उत्तर में स्वामी जी विलम्ब कभी नहीं करते, देखिये अब पद्धायत सराविगयां ने योग्य लेख किया तो स्वामी जी ने उत्तर भी शीघ्र लिखवा दिया श्रीर श्रव भी लिख दिया गया था कि जितने श्राप लोगों के सत्यार्थप्रकाश विषयक प्रश्न हों सव लिख के भेज दीजिये जो सब के उत्तर एक संग लिख दिये जावें। जैसा स्वामी जी ने लिखवाया था कि आत्माराम जी को जैन मत वाले शिरोमिए पिंडत गिनते हैं। उन का और स्वामी जी का पत्र लेखानुसार समागम होता तो सब बातें शीघ्र ही पूरी हो जातीं, परन्तु ऐसा न हुआ और यह भी शोक की वात है कि हम ने इस विषयक रिजस्टरी पत्र आप, पद्धायत सराविगयां लुधियाना को भेजी थी श्रीर उस का उत्तर भी श्रव तक नहीं मिला, न प्रश्न भेजे किन्तु जो ठाकरदास ने एक बात लिख भेजी थी कि यह ऋोक जैन मत के किस शास्त्र और किस प्रन्थ के अनुसार हैं और जो बात करने के योग्य आत्माराम जी हैं उन का शास्त्रार्थ करने में निषेध लिख भेजा और ठाकरदास जी का यह हाल है कि प्रथम पत्र में संस्कृत और भाषा के लिखने में अनेक दोष लिखे थे. अब आप लोग धर्म न्याय से से विचार लीजिये कि क्या यह बात ऐसी होनी योग्य है कि जब जब पत्र ठाकरदास ने लिखी तब तब स्वामी जी के पास और उस में जो बात शिष्ट पुरुषों के लिखने योग्य न थी सब लिखी और जो योग्य हैं अर्थात आत्माराम जी उन को बात करने और लिखने वा पत्र पर हस्ताचर करने से प्रथक रखते हैं श्रीर एक ठाक़रदास से स्वामी जी का सामना कराते हैं, क्या ऐसी बात करनी शिष्टों को योग्य है। अब अधिक बात करनी हो तो आप अपने मत के किसी योग्य विद्वान को प्रवृत्त की जिये कि जिस से हम और आप लोगों को सत्यासत्य का निर्णय हो कर सर्वोत्तम ज्ञान हो सके। बुद्धिमानों के सामने अधिक लिखना आवश्यक नहीं, किन्तु अपनी सज्जनता उदारता, अपन्तपातता, बुद्धिमत्ता श्रीर विद्वता से थोड़े लिखने से बहुत जान लेते हैं।

सं० १९३७ मिति कार्त्तिक शुदी ४ शनिवार ।

कृपाराम मन्त्री आर्यसमाज डेरादून ॥

[4]

पत्र (२३१)

[२९१] .

परिंडत भीमसेन जी आनन्दित रही!

नमस्ते—तुम अपने शरीर का हाल लिखो कि अब कैसा है। और बड़े अफसोस की बात है, देखो कि आजकल तुमको वहां पर रहना जरूर्यात से था। क्योंकि काम की कसरत इस वक्त हुई थी। मगर खैर क्या किया जावे। तुम बेमारी की ज्यादती की वजह से चले आये होगे। अब तुम यह लिखो, कि जो जो चीज कपड़ा वा पुस्तक वा और कुछ वस्तु जो सर्कारी हो, या रूपया जहां जहां

१. ६ नवम्बर १८८० । यु॰मी० ।

२. श्रर्थात् स्वामी जी का।

तुम्हारे हाथ से जमा हो या तुम्हारी समक में श्रीर जिस किसी का जमा कराया हुआ हो फौरन अपने हाथ से वा अपने भाई के हाथ से लिखवा कर ठीक र काशी जी पं० ज्वालादत जी के पास भेज दो। ताकि जनको सब हाल माल्म हो जावे। श्रीर ज्वालादत को हमने हमेशा के लिए काशी जी में भेज दिया है। जो हमारे पास था। श्रीर श्रगर तुम्हारी तिबस्रत दुक्त हो गई हो तो तुम लिखों कि हम श्राजकल आप्रे की तरफ श्राने वाले हैं। जो तुम श्राना चाहों तो दूसरा श्रादमी तुम्हारी जगेह न रक्ता जावे। मगर पहिले तुम हमको लिख भेजो। श्रीर जहां र जो चीच रक्ती हो या तुम जो तोताराम के स्पुर्द कर श्राये हो, सब का ज्योरा पूरा पूरा लिखों। श्रीर शीघ ज्वालादत जी को लिख भेजो, कि फलानी र चीच फलाने के स्पुर्द में हैं। तािक ज्वालादत को मिल जावे। श्रीर हम ने तेरे लिखे मुताबिक यह काम हमने किया है। क्योंकि तुम कहते थे, कि हमारा पढ़ना नहीं होता। इसलिए ज्वालादत को हमने वहां भेज दिया है। श्रव तुम श्रपने श्राने को कैफीयत मुफसिल लिखों कि श्रावों था नहीं। मगर जहां तक मुमकिन हो, सब चिजों की फहरिस्त कपड़ा हपया पुश्तको इत्यादि वस्तु छापेखाने की, जो कुछ होवें महाभारत वगैरा की पुश्तक सब चीजों जहां र श्रीर जिस र के पास जमा वा तुम्हारा रक्ता हो—सब की कैफीयत लिखदो। इन सब बातों का जवाव (कि मैं तुम्हारे पास श्राना चाहता हूं, या काशी जी जाऊंगा श्रीर कुल चिजों की फहरिस्त कि मैंने वहां पर जनके पास मेज दई।) हमारे पास भेजना जल्दी। देरी नहीं करनी ।

ता० ७ नवम्बर स० १८८० ई०

[द्यानन्द सरस्वती] मुकाम देहरादून।

[२]

पत्र (२३२)

[355]

पूरुयवर आत्माराम जी नमस्ते ।

पत्र त्राप का ता० ४ नवम्बर १८८० का लिखा हुआ १० नवम्बर १८८० की सायं काल मेरे पास पहुंचा। देखकर आनन्द हुआ। अब आप के प्रश्नों का उत्तर क्रमवार लिखता हूं—

प्रश्न १-सत्यार्थप्रकाश समुङ्गास १२ प्रष्ठ ३९६ पंक्ति १६ में लिखा है कि जब प्रलय होती

है तो पुद्गल पृथक् २ हो जाते हैं ऐसा नहीं है।

उत्तर—मैं ने ठाकुरदास जी के उत्तर में एक पत्र आर्यसमाज गुजरांवाला के द्वारा भेजा था जो आप के पास पहुंचा होगा। उस में यह बतलाया गया है कि जैन और बौद्ध दोनों एक ही हैं चाहे उन को बौद्ध कहो चाहे जैन कहो। कई स्थलों पर महावीर आदि तीर्थक्कारों को बुद्ध और बौद्ध आदि

१. यह पत्र बहुत अशुद्ध लिखा हुआ है। किसी अनाड़ी लेखक का लिखा प्रतीत होता है।

२. रविवार, कार्तिक सु॰ ५, संवत् १६३७। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरित्ति है।

३. त्रार्थसमाचार मेरठ, भाग २, पू॰ ३१८ ३२३, माव, सं० १६३७ । दयानन्ददिग्विजयार्क

शब्दों से कहा गया है खौर कई स्थलों पर जिन, जैन, जिनवर, जिनेन्द्र द्यादि नाम से बोलते हैं (विवेकसार पृष्ठ ६५, पंक्ति १३) बुद्ध, बौद्ध यह एक सिद्ध अनेक सिद्ध भगवान् हैं (पृष्ठ ११३, पंक्ति ७) चार बुद्ध की कथा (पृ० १३८, पं० २१) स्वयं बुद्ध की कथा (पृ० १५२, पं० २१) स्वयं बुद्ध की कथा (पृ० १५२, पं० १४)।

चार बुद्ध समकाल मोत्त को गए। इसी प्रकार और भी आप के प्रन्थों में कथा स्पष्ट

विद्यमान हैं जिनको आप या कोई जैन श्रावक विरुद्ध न कह सकेंगे।

श्रीर ठाकरदास के पहले पत्र में (उन क्षोकों समेत जो मैंने इस से पहले पत्र में लिख कर श्राप के पास भिज वाया है) श्राप लोग कई क्षोक खीकार भी कर चुके हैं। उस पत्र की प्रतिलिपि मेरठ में है श्रीर श्राप के पास भी होगी (कल्प भाष्य भूमिका जिसमें राजा शिवप्रसादजी ने श्रपने जैन मतस्थ पिता श्रादि पूर्वजों का वर्णन किया है उनकी साम्नी भी लिख भेजी श्रीर इतिहासितिमरनाशक खण्ड ३, ए० ८, पं० २१ से लेकर ए०९ की पं० ३२ तक) स्पष्ट लिखा है कि जैन श्रीर बौद्ध एक ही के नाम हैंर।

बहुत स्थलों पर महावीर आदि तीर्थक्करों को बौद्ध कहते हैं। उन्हीं को आप लोग जैन और जिन आदि कहते हैं। अब रहे बौद्ध की शाखाओं के भेद जो चारवाक आमाणक आदि हैं जैसा कि आप के यहां श्वेताम्बर, दिगम्बर, दूण्डिया आदि शाखाओं के भेद हैं कि उन में कोई शून्यवाद, कोई चिणक, कोई जगत् को नित्य मानने वाला, कोई अनित्य मानने वाला, कोई स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति और प्रलय मानते हैं, कोई आत्म को पांच भूतों से बनी हुई मानते हैं और उसका नाश हो जाना भी मानते हैं। (देखो रत्नावली प्रन्थ पू० ३२, पं० १३ से लेके पू० ४३, पं० १० तक) कि उस स्थल पर सब जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय भी लिखा है वा नहीं।

इसी प्रकार चारवाक आदि भी कई शाखा वाले जिसको आप पुद्गल कहते हैं उसको आपु आदि नाम से लिखते और उन के परस्पर मिलने से जगत् की उत्पत्ति और पृथक् होने से प्रलय होना ही मानते हैं और वे जैन और बौद्ध से पृथक् नहीं हैं। किन्तु जैसे पौराणिक मत में रामानुजी आदि वैडणवों की शाखा और पाशुपतादि शैवों की और वाममागियों की दस महाविद्या की शाखायें और ईसाइयों में रोमन कैथलिक आदि और मुसलमानों में शीआ सुन्नी आदि कुछ के कुछ भेद हैं और तब भी वेद, बाईवल और कुरान के मत में वे एक ही समक्षे जाते हैं वैसे ही आपके अर्थात् जैन और बौद्ध मत की शाखाओं के भेद चाहे पृथक् २ लिखे जा सकते हैं, परन्तु जैन और बौद्ध मत में एक ही हैं।

श्चाप ने बौद्ध, जैन मत के प्रत्येक सम्प्रदाय के तन्त्र सिद्धान्त श्चर्थात् भेद कथन करने वाले प्रन्थ देखे होते तो सत्यार्थप्रकाश में जो लेख उत्पत्ति श्चौर प्रलय के सम्बन्ध में है उस पर शङ्का कभी न करते ।

प्रश्न २—सत्यार्थप्रकाश पृ० ३९७ पं० २४ (प्रश्न) मनुष्य द्यादिकों को ज्ञान है, ज्ञान से वे

श्रपराध करते हैं। इस से उन को पीड़ा देना कुछ श्रपराध नहीं। यह बात जैन मत में नहीं। उत्तर—ग्रन्थ विवेकसार में पृ० २२८ पं० १० से लेकर पं० १५ तक देख लीजिये क्या लिखा है अर्थात् गुणाभियोग और स्वजन श्रादि समुदाय की श्राज्ञा जैसे विष्णु कुमार ने कछ की श्राज्ञा से

१. पूर्या संख्या २६०, पृष्ठ २४६ पर । यु॰ मी॰ ।

२. उस समय तक वौद्ध श्रीर जैन एक मत की ही दो शाखार्ये मानी जाती थीं। यु॰ मी॰।

िदेहरादून, सन् १८८०

बौद्ध रूप रचना करके नमुची नाम पुरोहित को कि वह जिन का विरोधी था लात मार के सातवें नरक में भेजा और ऐसी ही और बातें।

प्रश्न ३—सत्यार्थप्रकाश पृ० ३९९ पं० ३ श्रौर उसके ऊपर (श्रर्थात् पद्मशिला पर) बैठ

के चराचर का देखना।

उत्तर — पुस्तक रत्नसार भाग पृ० २३ पं० १३ से लेकर पृ० २४ पंक्ति २४ तक देख लीजिये कि महाबीर और गौतम के परस्पर वार्तालाप में क्या लिखा है।

प्रश्न ४--सत्यार्थप्रकाश पृ० ४०१ पं० २३ और उन के मत में न हो वह श्रेष्ठ भी होय तो भी

इस की सेवा नहीं करते अर्थात् जल तक भी नहीं देते।

उत्तर -पुस्तक विवेकसार पृ० २२१ पं० ३ से लेकर पं० म तक लिखा है, देख लीजिये कि अन्य मत की प्रशंसा वा उन का गुण कीर्तन नमस्कार, सत्कार, वा उन से थोड़ा बोलना वा अधिक बोलना वा उन को बैठने के लिये आसन आदि देना, उन को खाने पीने की वस्तु, सुगन्ध पुष्प देना वा अन्य मत की मूर्ति के लिये चन्दन पुष्प आदि देना यह छः बातें नहीं करनी चाहियें।

प्रश्न ५ — सत्यार्थप्रकाश पृ० ४०१ पं० २७ किन्तु साधु जब आता है तब जैनी लोग उस की

डाढ़ी, मूछ और सिर के बाल सब नोच लेते हैं।

उत्तर—प्रनथ कल्प्रभाष्य पृ० १०८ पं० ४ से कर ९ तक देख लीजिये, और प्रत्येक प्रनथ में दीजा के समय पांच मुट्टी बाल नोचना लिखा है। यह काम अपने हाथ, चाहे चेला वा गुरु के हाथ से होता है और अधिकतर दूखिडयों में है।

प्रश्न ६ — सत्यार्थप्रकाश पृ० ४०२ पं० २० से लेकर जो स्रोक जैनों के बनाए तिखे हैं, वे

जैन मत के नहीं।

उत्तर—मैं इस का उत्तर इस से पहले पत्र में लिख चुका हूं (मिती कार्तिक शुदी ४ शिन बार ) आपके पास पहुंचा होगा देख लीजिये।

प्रश्न ७—सत्यार्थप्रकाश पृ० ४०३ पं० ११ ऋर्थ स्त्रीर काम दोनों पदार्थ मानते हैं।

उत्तर—यह मत जैन मत सम्बन्धी सम्प्रदाय चारवाक नामक का है जिसने ऐसे २ श्लोक कि जब तक जिये सुख से जिये, कोई प्राणी मृत्यु से आगोचर नहीं है, भस्मी भूत [का] देह में पुनः आना नहीं आदि अपने मत के बना लिये हैं; इसी प्रकार से नीति और कामशास्त्र के अनुसार अर्थ और काम दो ही पहार्थ पुरुषार्थ और बुद्धि से माने गये हैं।

यहां संज्ञेप से श्राप के प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, क्योंकि पत्नों द्वारा पूरा स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। जब कभी मेरा श्रीर श्रापका समागम होवे तब श्राप को मैं प्रन्थों के प्रमाणों, युक्तियों के साथ स्पष्ट ठीक र निश्चय करा सकता हूँ। श्राप को श्रीर भी जो कुछ सन्देह सत्यार्थप्रकाश के बारहव समुद्धास में होवें। (मेरठ के श्रार्थसमाज द्वारा) लिख कर भेज दीजिये, सब का ठीक उत्तर दे दिया जायगा। श्रत्र मैं यहां थोड़े दिन तक रहूँगा। यदि श्राप श्रम्बाला तक श्रा सकें तो ता० १७ नवम्बर १८८० तक प्रातः द बजे से पहले पहले डेरादून में उसके पश्चात् श्रागरा मुक्त को तार में सूचना देनी

देहरादून, सं० १९३७]

पत्र (२३३)

२५१

चाहिये कि मैं आप से शास्त्रार्थ अर्थात् परस्पर वार्तालाप के लिये यहां पहुँच सकूं। बुद्धिमान् मनुष्य के लिए इतना पर्याप्त हैं। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।

सं० १९३७ मिति कार्त्तिक शुदी १३ रविवार?।

हस्ताचर-द्यानन्द सरस्वती डेरादून

[६]

पत्र (२३३) ॥ श्रो३म॥ र

[२९३]

तारीख १५ नवम्बर सं० ८० ई०। मिति कार्तिक सुदी १४ सं० १९३७ चन्द्रवार देहरादून से।

परिडत भीमसेन जी आनिन्दत रहो।

नमस्ते। तुम हमारे दोनों बेग कि जिस में हमारे वस्त्र साल जोड़ी आदि और वरतन रसोई श्रादि कहां पर श्रीर किस की सुपुर्द करके श्राये हो। श्रीर जो रूपया कोठी से तुम लाये हो उस का व्योरा, कि किस २ क़र्र और कितना कितना और किस को सोंपा है। और मुंशी जी की निस्वत छापेखाने में गड़बड़ करने के मामले में जान्ता हो या नौकरों चाकरों से सन रक्खा हो, और या जो को ही चीज फींडरी वरौरे लकड़ी श्रादि की बनाते या बनवाते देखा हो, सो सब का एक पत्र पर ठीक २ व्योरा लिख कर काशी जी को भेज दो। श्रीर एक पत्र मुक्त को शीघ्र लिख दो। क्योंकि वह सब बातों में यं कहता है कि मुक्त को कोई चीज मालूम नहीं है। सब बातों का हाल भीमसेन जी जानते हैं। क्यों कि उस का कोई हिसाव किताव तो दुरुख है ही नहीं। श्रीर सब वातों में गड़वड़ाट कर रक्खा है। ठीक २ जवाब दे नहीं सकता है। उलटा लड़ने को दौड़ता है। परन्तु मास्टर शादीराम जी और पिंडत क्वालादत्त जी योग्य आदमी हैं। वे उस के कहने पर बुरा नहीं मानते। अपना काम उनसे निकालते हैं। वह अपनी साथ तुम को भी लपेटना चाहता है। और अपनी बदनामी तुम्हारे . ऊपर रक्ला चाहता है। क्योंकि उसकी कई एक बातें वहां पर पकड़ी गई हैं। श्रीर मास्टर जी ने मालूम कर लई हैं। उन को उस ने यही जवाब दिया है कि मुक्त को कुछ मालूम नहीं। भीमसेन जाने। देखों जैसे कि उसने श्रंग्रेजी कर्मा चढ़ा रक्खा था। श्रीर तुम ने कहा था कि तुम विना श्राज्ञा स्वामी जी ि के ] क्यों चढ़ाया । तब उसने जवाब दिया था, कि श्रव जो मैं यहां से दूसरी जगेह ले जाऊं, तो मेरा चार पांच सौ रुपय का नुकसान होता है। और यह भी कहता है कि कोठी से रुपये लाने या लेजाने की निस्वत मुक्त को कुछ भी मालूम नहीं है। श्रीर यह भी हम को यकीन है कि तुम्हारे पास ऐसी लिखत मिति वार तो नहीं होगी, जैसा कि कब और कितना २ रुपया और किस के देने को श्राया। श्रीर किस को दिया गया है। मिति वार है या नहीं। श्रगर ऐसी क़िसम की हो तो बहुत अच्छी वात है। क्योंकि ऐसी लिखत के मौजूद होने से बहुत मतलब हासिल होगा । अगर तुम्हारे

१. १४ नवम्बर १८८० । पु॰ २४८ टि॰ ३ यहां भी लागू है।

२. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिव्त है।

पास न हो, तो कोठी पर मितिवार सब रूपये की अम्मद रफत मालूम हो सकती हैं। वहां से हो सकता है। श्रीर तुम सब वस्तुत्रों की वैदाद लिख कर जो जो तुम्हारी दानिस्त में हो, बहुत शीघ्र लिख कर एक पत्र काशी को और दूसरा हम को लिख भेजो, ताकि वह तुम्हारा नाम से बरी न होने पावे। श्रीर सब चीकों का पता ठीक ठीक बतला देवे। जो जो हिसाव रुपये जमा कर आने या सोंपने या मन्शी जी के काम में आने की निस्वत तुम को मालूम हो, वह भी, और जो हिसाब चलती वेर बाबत मौजूदगी रुपयों की कि जो मुंशी जी के पास जमा थे, और जो कोठी पर थे, हम तुम को लिखवा आये थे, वह भी सारी वातों का हिसाब लिख पढ़ कर जल्दी हमारे पास भेज दो। और काशी वालों को भी, इतला दे दो, कि जिस्से वह लोग सब हाल जानकर मुन्शी जी की निस्वत अदालत में दावा कर दें। श्रौर मुंशी जी भी तुम्हारी निस्वत कुछ भूट न कह सकें। जिन जिन वातों का सबूत फोंडरी श्रादि लकड़ी की किसी वस्तु का मंशी जी की निस्वत तुम जानते हो या कोई लिखत पढ़त तुम्हारे पास इस किसम की मौजूद हो, कि जिस से स्पूर्व करना किसी वस्तु आदि या रूपये पैसे का मुंशी जी की निस्वत ठीक सबूत हो जावे, फौरन लिख कर हमारे और काशी वालों के पास भेज दो । और अब वहां का काम बसबब मास्टर शादीराम व पिएडत ज्वालादत्त के उम्मद है कि छन्छी तरह से होगा श्रीर मुंशी जी की सारी कलई सब बातों की ख़ुल जावेगी। देखों बड़े शोक की बात है कि वक्त के ऊपर तुम को वेमार हो जाना, श्रीर तुम्हारा वहां से जल्दी चले श्राना। श्रीर मास्टर साहब, ज्वाला दत्त का तुम्हारे सामने न पहुँचना, यह तमाम कारण बखतावरसिंह के करने का छापेखाने में हुआ। वर्ने: तुम्हारे हुये, यानि तुम्हारे साम्हने ऐसा कभी न होता क्योंकि देखो, मुनशी जी ने अकलमंदी से श्रीर चालाकी से आधी वस्तु छापेखाने की अपनी बना लई हैं। श्रीर रूपये का कुछ हिसाब नहीं देता श्रीर जो कोठी का हिसाब सममने के लिये मास्टर वा परिडत कहते हैं, कि चलो, तो बिल्कुल जाना कबूल नहीं करता । श्रीर गाली गुफ्तार बकने लगता है । यह कुल कारण माल के हजम करने का है । हम मिति मार्गशिर विद २ बृहस्पतवार सम्वत् १९३७ को आगरे में पहुंचेंगे। १ इस लिये तुम को उचित है कि सारी बातों का जवाब लिख कर ठीक २ हम को आगरा में खबर दो, और एक पत्र लिख कर सारी बातों का हाल से जो २ तुम जानते हो श्रीर जहां तक मालूम हो सके, जल्द लिख भेजो। श्रीर तुम भी लिखो कि अगर हमारे पास आना समको और तुम्हारा शरीर भी दरुस्त हो गया हो तो हम को लिखो। अगर तुम आवो, तो हम दूसरा परिडत न रक्खें। मुफस्सिल लिखो। शीघ्र जवाब से इतला दोर।

द० [दयानन्द सरस्वती]

[30]

#### विज्ञापन

[368]

सब सज्जनों को विदित हो कि अब १५ नवम्बर सन् १८८० से मुंशी वखतावरसिंह को जो वैदिक यन्त्रालय के मैनेजर थे वे यहां के काम से अपने दोष से अलग कर दिये गये हैं।

१. १८ नवम्बर १८८०।

२. यह लेखक बहुत श्रशुद्ध लिखता है।

३. यह विज्ञापन ऋग्वेदभाष्य के २०, २१ सम्मलित श्रंक (मार्गशीर्ष सं० १६३७) के श्रंक पर छ्रपा है श्रतः यह नवम्बर १८८० के उत्तरार्ध में लिखा गया होगा। य० मी०। CC-0.In Public Domain. Parini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

उन्होंने सर्वथा अपने लाभ और वैदिक प्रेस के हानिकारक अनुचित काम जो उनके करने योग्य न थे किये। हम उन कामों को जान चुके हैं और कुछ दिनों वा महिनों में सब को विदित हो जायेंगे। प्रिय पाठक जनों कुछ चिन्ता नहीं, अच्छे और बुरे कामों का फल कर्ता को ही होता है।।

अब कोई प्राहक वेदभाष्य आदि पुस्तकों के लिए मुंशी बखतावरसिंह के समीप पत्र वा धन

न भेजे श्रौर जो भेजेगा तो हम जिम्मेदार नहीं हैं॥

ता० १६ नवम्बर सन् १८८० से वैदिक यन्त्रालय के मैंनेजर सादीराम जी हैं। इन के नाम से पत्र और इन्हीं के समीप धन (लाला सादीराम मैनेजर वैदिक यन्त्रालय लक्ष्मी कुएड बनारस) इस पते से भेजा करें। यह सब के समीप उत्तर, रसीद और पुस्तक उत्तित समय पर भेजा करेंगे।

जिस प्राहक के हिसाब में ४ वरस के २५॥) क्यों में से जितने २ बाकी दाम हों, लाला सादीराम जी के पास उक्त पते से शीघ्र भेज दे। श्रीर जब से वैदिक यन्त्रालय नियत हुआ है उस समय से लेकर १५ नवम्बर सन् १८८० तक के हिसाब में से मुंशी बखतावरसिंह के पास दाम भेजे हों उनकी रसीद वेदभाष्य के टाइटल पेज पर न छपी हो श्रीर प्राहकों के पास मुंशी बखतावरसिंह की हस्ताचरी वा मनियाडर की हो तो उसकी सूचना यन्त्रालय के मैंनेजर को कर दे कि जिस से सब का हिसाब ठीक ठीक विदित हो। क्योंकि मुं० ब० ने हिसाब जैसा चाहिये वैसा सफाई से नहीं लिखा। इस में प्राहकों की कुछ हानि नहीं, किन्तु छापेखाने के मालिक की हुई है, क्योंकि प्राहक लोग तो छापेखाने के मालिक के विज्ञापन पर दाम भेजते हैं मैनेजर के विश्वास पर नहीं, इसलिये प्राहकों को कपये भेजने में शंका देर श्रीर श्रविश्वास न करना चाहिये।

जो आर्थद्पंग समाचार पत्र छपता है, वह न खामी द्यानन्द सरस्वती जी की श्रोर से श्रीर न किसी आर्थसभासद की श्रोर से है, किन्तु केवल मुंशी बखतावरसिंह की श्रोर से हैं।

[२९५] पत्र सूचना (२३४) [२९५] [मास्टर शादीराम जी काशी] मुन्शी बखतावर सिंह के हिसाब की गड़बड़ी जाचने के विषय में ॥

[१] पत्र (२३५) कार्ड

लाला कालीचरण रामचरण जी आनिन्दत रहो। 2

श्रीर मैं देहरादून से यहां श्राया। चोवं तोताराम की गफलत से पुस्तकों का श्रस्त व्यस्त हो जाना है। श्रीर श्रव मैं यहां से दो चार दिनों में श्रागरे को जाऊंगा। श्रीर वहां मैं १ महीना रहूंगा। श्रीर मास्टर शादी राम जी की जामनी लाला रामशरणदासजी ने कर दीनी है। श्रीर मुन्शो बखतावर

१. इस पत्र का संकेत पं॰ ज्वालाप्रसाद ने श्रपने मार्गशीर्ष वदी ⊏ संवत् १६३७ (२५ नवस्वर १८८०) के पत्र में किया है। देखो म॰ मुंशीरामसम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ ४०८। यु॰ मी०।

२. यह पत्र पं ॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृष्ठ ५१६, ५२० पर छपा है। वहां कुछ शब्द बदले हुए हैं हम ने इसे मूल पत्र से छापा है। मूल पत्र आर्थसमाज फरुखाबाद में सुरिह्तत है। फरुखाबाद का इतिहास पृष्ठ १८५ पर भी मुद्रित है।

सिंह जी की चिट्टियों से माल्म हुआ कि उनके ऊपर कानून से पेश आना चाहिये। सो ठाकुर मुकंद सिंह भूपालसिंह जी मुखतार हैं । सब काम कर लेंगे।

सं० १९३७ मि० मा० व० ४ रविवार रे।

(द्यानन्द सरस्वती)

पत्रांश (२३६) [34]

[ २१७]

[मुन्शी बखतावर्सिह शाहजहांपुर] तुम आगरे में आकर स्वामी को हिसाव समभादो ।3 २२ नवम्बर १८८० श्रालीगढ़ (कोयल) से

तार का अंश [३] [3]

[२९८]

[मुन्शी इन्द्रमणि मुरादाबाद] श्राकर मिलो ।

[3]

पत्र (२३७)

[333]

क्षत्रो३म%

एच्० पी० मेडम ब्लेवस्तकी जी श्रानन्दित रहो।

आपकी चिट्ठी ता० प अक्टूबर सन् १८८० ई० की लिखी हुई वाबू छेदीलाल जी रईस मेरठ के द्वारा मेरे पास देहरादून में पहुंची । इसका क्रमानुसार उत्तर सत्य निश्चय से देता हूँ । आपने जो अमरीका से पत्र और उनके उत्तर में यहां से मैंने वहां पत्र भेजे थे, पुनः आपका और मेरा समागम सहारनपुर, मेरठ, काशी और फिर मेरठ में हुआ था। उन सब के अनुसार अपने निश्चय के अनुकूल सब दिन मैं वर्त्तमान करता रहा हूँ। परन्तु वैसा वर्त्तमान आपका ठीक २ नहीं देखता हूं, क्योंकि प्रथम आप लोगों ने जैसा लिखा था, जैसा समागम में प्रथम विदित किया था, वैसा अब कहां है ? आप अपने श्रात्मा से निश्चय कर लीजिये। प्रथम संस्कृत पढ्ने, शिच्चा लेने, सुसायटी को आर्य्यसमाज की शाला करार देने आदि के लिये लिखा था, और वे चिट्ठियां छप के सर्वत्र प्रसिद्ध भी हैं, और जो मैंने पत्र वहां भेजे थे उनकी नकल भी मेरे पास उपिथत हैं। देखिये कि जब श्रभी मेरठ में उस दिन रात को आर्यसमाज और सुसायटी के नियम विषयक बातें हुई थीं, तब मैंने आप और अन्य सब के सामने

२. २१ नवम्बर १८८०, ग्रालीगढ़। १. देखो मुख्तियारनामा, पूर्णं संख्या १७३ पृष्ठ १४६।

३. इस पत्र का संकेत सेठ कालीचरण रामचरण के नाम लिखे विना तिथि [६ फरवरी १८८१ माघ शुक्ल ११ सं० १६३७] के पत्र में है। यह पत्र यथास्थान आगो छपा है, वहां देखें। यह रजिस्टरी चिछी ठाकुर मुकुन्दसिंह भूपालसिंह त्रापने त्राममुख्तार से श्री स्वामी जी ने स्वयं भिजवाई थी। यु० मी०।

४. इस तार का संकेत सम्पादक देशहितैषी के नाम पौष शुक्ल १ सं०१६३६ (१० जनवरी १८८३) को लिखे पत्र में है। यह पत्र त्रागे यथास्थान छपा है, वहां देखें। तार सम्मत्रतः, नवम्बर २१ या २२ सन् १८८० को मेजा होगा। यु० मी०।

भू. मैडम का यह पत्र श्रीमहयानन्दप्रकाश तथा परोपकारी पत्र में छपा हुन्ना है। CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

क्या यह बात नहीं कही थी कि आर्यसमाज के नियमों से सुसायटी के नियमों में कुछ भी विशेष नहीं? यही बात मैंने चम्चई की चिट्टी में भी आपके पास लिख भेजी थी। उन्हीं के अनुसार मैं अब भी बराबर मानता और कहता है कि आर्थसमाजस्थों को ससायटी में धर्मादि विषयों के लिये मिलना उचित नहीं। और यही बात आप वा एच् एस् करनेल बोलकाट साहिब ने अपने पुस्तक, उपदेश और संवाद में क्या नहीं लिखी और नहीं कही है कि जो सत्यधर्म सत्यविद्या और ठीक र सुधार की और परम योग आदि की बातें सदा से जैसी आर्यावर्तीय मनुष्यों और वेदादि शास्त्रों में थीं और हैं वैसी कहीं न थीं और न हैं। अब विचारिये कि थियोसोफी हों को एतहेशवासी मत में मिलना चाहिये किंवा आर्थ्यावर्त्तियों को थियोसोफीष्ट होना चाहिये। श्रौर देखिये कि आज तक मैंने वा किसी आर्थ समाजस्थ ने किसी थियोसोफीष्ट को आर्यसमाज में मिलने का उपदेश वा प्रयत्न कभी किया है ? और आप अपनी बात को अपने आतमा में विचार लीजिये कि आप ने क्या करी और क्या करते जाते हैं। कितने ही आर्यसमाजस्थों को थियोसोफीष्ट होने के लिए कितना प्रयत्न और कितना उपदेश किया। और कड़यों से १०) दस २ ६० फीस सभासद होने के लिए, लिए हैं। और मेरठ में बात होने के प्रधात बाब छेदीलाल जी से अम्बाले में थियोसोफीष्ट होने के लिये क्या न कहा था, और शिमले से चिटी न भेजी थी ? इसीलिए अवश्य मैंने मेरठ आर्यसमाज में सबके सामने पूर्वीक हेतुओं से यह कहा था कि जो कभी आप वा एच् एस् करनेल खोलकाट साहिब वा और कोई थियोसोफीष्ट अथवा अन्य कोई जन किसी सभा में सभासद होने के लिए कहे तब उसको यही उत्तर देना कि जो आर्यसमाज के नियमों से थियोसोफिकत सुसायटी आदि के नियम और उद्देश एक ही हैं तो हम और वे भी सब एक हैं और जो विरुद्ध हैं तो इमको सुसायटी वा अन्य किसी सभा में मिलना कुछ आवश्यक नहीं। श्रीर तब तक श्रार्यसमाज के नियम श्रखण्डित हैं कि जब तक उनमें कोई बात खण्डनीय विदित न हो। अब कहिए निर्भ्रान्त पोप रूम की बात मेरी हैं वा आपकी ? और जो मैंने, अन्य देशियों के समाज में मित्रता और स्नेह वैसा कभी नहीं हो सकता जैसा कि स्वदेशियों के समाज में, यह बात इस प्रसङ्ग पर कही थी, कहता हूं और कहूंगा कि ( असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे ) अर्थात् जिनका एक देश, एक भाषा, एकत्र जन्म, सहवास श्रीर विवाहादि व्यवहार सम्बन्ध श्रापस में होते हैं उनसे उनको जितना लाभ और उनकी उनमें जितनी शीति होती है उतना अन्य देशवासियों से अन्य देशवासियों को लाभ श्रीर उन्नति नहीं हो सकती। देखिये भाषा ही के केवल भेद होने होने से मुक्त को श्रीर योरपियन को कितनी कठिनता परस्पर उपकार होने में होती है। और जिन के पूर्वोक्त सब भिन्न हैं उन में पूर्वोक्त बातें कम होती ही हैं। श्रौर जिनके वे सब एक हैं उनमें वे बातें सहज से शीघ श्रधिक होती हैं इस में क्या सन्देह है। श्रीर दूसरे दिन भी थोड़ा सा श्रनुवाद श्रवश्य कर दिया था क्योंकि जिस को रोग होता है उसी को निदान और पथ्य आदि करना आवश्यक हैं, निरोगी के लिये नहीं। जब हम लोग थियोसोफिट्टों को भी आर्यसमाज के अवयवभूत शाखास्य आतृगण्वत् मानते आये थे, श्रीर जहां तक बनेगा मानेंगे, ऐसा जानकर उनको श्रार्थसमाज में मिलने श्रीर उन से १०) रुपए फीस लेने आदि के लिये प्रयत्न न किया था और अब नहीं करते, उनसे यथाशिक प्रेम और उनका उपकार ही करते हैं, हां जो कोई आर्यसमाज वा सुसायटी से भिन्न हैं वे उपदेश से समक कर वेदमत में अपनी प्रसन्नता से स्वयं मिलते जाते हैं तो हम लोगों के लिये वह निषेध करना भी श्रोषध नहीं

क्योंकि हम में वह रोग ही नहीं है। अब आप लिखती हो कि सिवाय आपके और बम्बई, लाहौर श्रीर श्रन्यत्रस्थ भी श्रार्थसमाजिक लोग हमारी सुसायटी में हैं, परन्तु हमने उन से सरीख होने को कभी नहीं कहा, यह बात सच नहीं। क्योंकि आपने बम्बई में मुन्शी समर्थदान आदि, प्रयाग में पंडित सुन्दरलाल आदि आर्यसभासदों को सुसायटी में मिलने को अवश्य कहा था। इस का साची मैं ही हूं क्योंकि मेरे विना सुने मुक्त को खबर भी नहीं थी और जैसे मेरा नाम सुसायटी के सभासदों में लिखती हो वैसा अन्यत्र भी आप ने किया होगा, इस में कुछ सन्देह नहीं । और जो बात आप श्रार्थसमाज के नियमों से विरुद्ध प्रत्येक धर्म के लोगों की प्रतिष्ठा श्रौर सब धर्म वाले हमारी सुसायटी में मिलें और उनके धर्म पर हम हाथ नहीं डालते हैं किन्तु एक भाईपन होने के लिये शामिल करते हैं अरेर कोई बात उसकी थियोसोफीष्ट होने में निषेधक नहीं हो सकती। अब मैं इसमें आपसे पूछता हूँ कि आप का धर्म क्या है ? जो आप कहें कि हमारा धर्म सबसे विरुद्ध है तो दूसरे धर्म वाला आपकी सुसायटी मैं कभी नहीं मिल सकता। जैसा रात दिन का विरोध है वैसे विरुद्ध धर्म होते हैं। और जो कहें कि हमारा धर्म किसी से विरुद्ध नहीं तो उसमें मिलना किस लिये हो, क्योंकि वे एक ही हैं। जैसे मुसलमान अपने मजहब से भिन्न को काफिर और उनसे मेल कभी न करना चाहिये कहते हैं, इत्यादि धर्म वाले लोग आप की सुसायटी में कैसे मिल सकते हैं। जो वे आतृभाव से अन्य मत वालों से आतमा और मन करके प्रीति करते हैं तो उनका धर्म जाता है और अपना रक्खें तो आप का नहीं रहता। एक चित्त से एक समय में दो बातें हो ही नहीं सकतीं, इत्यादि बातों का उत्तर लिखियेंगी। श्रीरं विशेष इस विषय में जब सन्मुख बैठ के परस्पर हम श्राप बातें करेंगे तभी निश्चय होगा। क्या यह बात सर्वथा असंभव नहीं है कि स्वामी जी भी अदाई वर्ष से हमारे सब से उत्तम सभासदों में एक हैं। भला आप किह्ये तो कि मैं ने आप की सुसायटी का सभासद् होने के लिये कव दर्खास्त भेजी थी ? श्रीर मैंने कब श्राप से कहूा था कि मैं श्राप की सुसायटी का सभासद् होना चाहता हूं ? क्या मैंने जो बम्बई में चिट्ठी भेजी थी, उस बात को भूल गई कि जो मैं सिवाय वेदोक सनातन आर्य्यावर्तीय धर्म के अन्य सुसायटी समाज वा सभा के नियमों को स्वीकार न करता था, न करता हूं, न करूंगा। क्योंकि यह बात मेरे आतमा की दृढ़तर है; शरीर, प्राण भी जायें तो भी इस धर्म से विरुद्ध कभी नहीं हो सकता। हाँ यह अपराध आप लोगों ही का है कि बिना कहे सुने सुनाये अपनी इच्छा से आपने मेरा नाम कहीं अपने सभासदों में लिख लिया होगा, सो क्योंकर सच हो सकता हैं। श्रीर इस बात को क्या भूल गये कि मेरठ में मूलजी ठाकरसी के सामने जहां श्राप भी सामने बैठी थीं, एच् एस करनेल त्रोलकाट साहब को मैंने कही थी कि त्राप ने बम्बई की कौशलकात्री में मेरा नाम समासदों में क्यों लिखा, ऐसा काम त्र्याप लोग कभी मत कीजियेगा कि जिस में मेरी सम्मति न हो खौर आप अपने मन से कर बैठोगे तो मैं उस बात का म्वीकार कभी न करूंगा। उस पर करनेल त्र्योलकाट साहव ने कहा था कि हम ऐसा काम कभी न करेंगे। त्र्यौर वम्बई में मैंने चिट्ठी भी दी थी कि मेरा नाम आपने अपनी इच्छा से जहां कहीं सभासदों में लिखा हो काट दीजिये। इतने हुये पर फिर भी आपने इस चिट्ठी में जो यह बात लिखी इस को कोई भी सच कर सकता है ? क्या आश्चर्य की बात है ? आये तो विद्यार्थी और शिष्य बनने को, गुरु और आचार्य्य बनना चाहते हो। ऐसी पूर्वाऽपर विरुद्ध बातें करना किसी को योग्य नहीं। जो आप ईश्वर को कर्त्ता, धर्त्ता नहीं

मानती हो। सो बात इसी संवत् १९३७ के भाद्र महीने की है। इस के आगे आप ने मुक्त से कभी न कहा और न किसी से मैंने सुना था कि आप ईश्वर को वैसा नहीं मानती हो, सिवाय काशी के समागम में प्रमोददास मित्र और डाक्टर लाजरस साहब के। क्या आप ने काशी में डाक्टर टीबो साहिच आदि के सामने कोठी के बाहर चौंतरे पर श्याम को बैठे थे जब प्रमोददास मित्र ने मुक्त से कहा था कि मेडम तो अनीश्वरवादिनी, नास्तिकिनी है तब मैंने उन को उत्तर दिया था कि मेडम साहिब की बात को तुम सममे न होगे। श्रीर दामोदर से मैंने कहा था मेडम ईश्वर को मानती हैं वा नहीं तब दामोदर ने आप से पूंछ कर मुक्त से कहा था कि मानती हैं। क्या यह बात भी मूंठ है ? और मेरी बात अद्भुत मेद करने वाली आप की ओर नहीं, किन्तु आप की बातें मेरी ओर भेद करने वाली हैं। मैं श्राप को भृगिनी वा मित्र के समान जानता था, जब तक कोई ऐसा विशेष कारण न होगा तब तक जानंगा भी, क्योंकि मैं और जितने सज्जन आर्थ हैं वे जैसा सदा से मानते त्राये हैं त्रौर मानेंगे भी कि सामान्यतः त्रार्ध्यावत्तीय इङ्गलेख्ड श्रौर त्रमरीका त्रादि भूमण्ड-लस्थ देशनिवासी मनुष्यों को सब दिन से भ्रातृ श्रीर मित्रवत् मानना है परन्तु सत्यधर्म व्यवहारों के साथ, श्रसत्य और श्रधर्म के साथ नहीं। यहां के श्रांगरेज लोग श्राय्यों को चाहे वैसा मानें। क्या वे राज्याधिकारी हों वा व्यवहारिक हों मुमको भी अपनी समम के अनुकूल यथेष्ट मानें। मैं तो सव मनुष्यों के साथ सहद्भाव से सदा वर्तता आया और वर्तना चाहता हूं। और जो उनका यह कहना कि हम इसका कोई दृढ़ हेतु नहीं देखते कि स्वामी जी के अनन्तर और आर्य्यसामाजिकों से भी वैसा ही वर्ते । यह उनका कहना तब तक है कि जब तक वे आर्ट्यावर्त्तस्थ आर्यों का पूर्व इतिहास, आचार, चन्नति, विद्या, पुरुषार्थ, न्यायवृत्ति, त्रादि उत्तम गुणों और वेदादि शास्त्रों के सत्य २ अर्थों को न जानेंगे, परन्तु कालान्तर में उनका यह भ्रम श्रवश्य छूट जायगा। तथापि मैं परमात्मा को धन्यवाद देता हूं कि जो हमने श्रापस के विरोध, फूट, श्रनाचार करने, श्रौर जैन श्रौर मुसल्मान श्रादि की पीड़ा श्रौर भ्रम जाल से कुछ २ अलग स्वास्थ्य श्रीर स्वतन्त्रता प्राप्त की है कि जिस से मैं वा श्रन्य सज्जन लोग श्रपना २ सत्य श्रभिपाय युक्त पुस्तक रचने, उपदेश करने श्रीर धर्म में स्वाधीनपन से श्रानन्द में प्रवृत्त हो रहे हैं क्या जो श्रीयुत भारतेश्वरी महाराणी, पारलीमेन्ट समा श्रीर श्रार्थावर्त देशस्थ राज्याधिकारी धार्मिक विद्वान् श्रीर सुशील न होते तो क्या मेरा वा श्रन्य का मुख प्रफुल्लित हो कर व्याख्यान वेदमत प्रचारक पुस्तकों की व्याख्या करनी भी दुर्लम न होती, श्रीर श्राज तक शरीर भी बचना कठिन न था, इसीलिए पूर्वोक्त महात्मात्रों को हम लोग धन्यवाद देते हैं। त्राप लोगों को श्रवश्य स्मरण होगा कि जो काशी की चिट्ठी के उत्तर में श्राप लोगों ने लिखा था कि जो आप भी वेदों को छोड़ दें तो भी हम लोग कभी न छोड़ेंगे। यह आप लोगों की बात प्रशंसनीय और धन्यवादाई है। ऐसे ही सब योरूपियन इस उत्तम बात में मिलें तो क्या ही कहना है खीर जो कभी न मिलें, हम आयों खीर आर्यसमाजों की कदापि हानि नहीं हो सकती, क्योंकि यह बात नवीन नहीं है। हम लोग जब से सृष्टि श्रीर वेद का प्रकाश हुआ है उसी समय से आज पर्यन्त ऐसी बात को मानते आते हैं। क्या हुआ कि अब थोड़े समय से अपनी अज्ञानता और उत्तम उपदेशकों के विना बहुत से आर्थ्य वेदोक्त मत से कुछ २ विरुद्ध और बहुत से अनुकूल आचरण भी करते हैं। अब जिसको प्रसन्नता हो अपनी और सब की उन्नति के लिए इस श्रार्थसमाज में मिलें वा न मिलें। उनके न मिलने से हमारी कुछ हानि नहीं, किन्तु उन्हीं की हानि है। हम लोगों का तो यही श्रमीष्ट, यही कामना श्रीर यही उत्साह है कि सब की उन्नित में श्रपनी उन्नित सममनी। श्रीर ऐसे तो कोई भी कह सकता है कि फलाने के सी मेरी सी सम्मित वा बड़ा विचार फलाने का नहीं है। फलाना ईश्वर को कर्चा धर्चा मानता है इसिलये उससे हम प्रेम क्यों करें। परन्तु यह बात श्रापकी सुसाइटो का मुख्य उद्देश्य जो सब को बन्धुवत् जानना श्राप कहते हैं उसको काट देती है। सोच कर देखिये कि हानि के कारण किनकी श्रोर हैं। हमारा तो संसार का उपकार करना श्रीर हानि किसी की न करना मुख्य तात्पर्य है, सो है ही है। यहां हम भी कह सकते हैं कि जो श्रियोसोफीष्ट श्रार्थसमाजों से विरोध करेंगे तो हमारी कुछ भी हानि नहीं, किन्तु वे श्राप ही अपने आदमाब मुख्य उद्देश्य को नष्ट कर श्रपनी हानि कर लेंगे। हम तो हमारा स्वभाव जो कि धर्मात्माश्रों से सुहृद्भाव श्रीर श्रधर्मियों को धर्मात्मा करने में प्रयत्न श्रीर बन्धुवत् स्नेह करना है, करते हैं श्रीर करते रहेंगे, जितना कि हम कर सकते हैं ( श्रव श्रपना पूर्वापर व्यवहार को समम कर जैसा हित हो वैसा कीजिये) ऐच् एस करनेल श्रोलकाट साहेव श्रादि को मेरा नमस्ते कह दीजियेगा।

सं० १९३७ मि० मा० ब० ६ मङ्गलवार। १

द्यानन्द् सरस्वती

[१] पत्र सूचना (२३८) [३००] ला० श्यामसुन्दर दास सुरादाबाद अस्तर नहीं, वा सर्फ रिफा आम के लिए है। २४ नवस्बर १८८०

[8]

पत्र सूचना (२३९)

[308]

मुन्शी इन्द्रमिण जी ... ... ... यह चन्दा का रूपया वैदिक फएड (निधि) कहलावेगा। ख्रौर ख्रायों के लिये इस फएड में जमा होता रहेगा।

२९ नवम्बर १८८० व्यागरा

द्यानन्द् सरस्वती

२. मुंशी इन्द्रमणि का इल्तमास स्वा॰ दयानन्द का संन्यास। जगन्नाथदास कृत पृ० १८।

प्. रिसाला मुंशी इन्द्रमणि का इल्तमास स्वा • दयानन्द सरस्वतीका संन्यास(उद् )रचिवता जगन्नाथदास ।

६. मार्गशीर्ष कु०१२सोम१६३७। हमें इस तारीखमें सन्देह है,क्योंकि इस तिथि से पूर्व ही इन्द्रमिण्ने हिसाब देनेमें गड़बड़ी की थी। देखो पौष शु०१ बुधवार सं० १६३६ का सम्पादक देशहितैषी के नाम का पत्र। यु०मी०

१. २३ नवम्बर १८८० ।

३. यह सन्दिग्ध है। जीवनचरित्रों के अनुसार २२ नवम्बर से २७ नवम्बर तक मेरठ रहे थे; इस पत्रव्यवहार से इतना स्पष्ट है कि २१, २२ नवम्बर को स्त्रामी जी महाराज अलीगढ़ में थे। देखो पूर्ण संख्या २६७ (पृष्ठ २५४) तथा पूर्ण सं० ३३४ (६ फरवरी १८८१) का सेठ कालीचरण के नाम और पौष शुक्र १ सं० बुधवार १६३६ (१० जन० १८८३) का सम्पादक देशहितेषी के नाम का पत्र। ये दोनों यथा स्थान आगे ४. मार्गशीर्ष कृष्ण ७, बुध सं० १६३७। यु० मी०।

२५९

[4]

पत्र सुचना (२४०)

[308]

[मुंशी इन्द्रमिण, मुरादाबाद] यदि यह बात सत्य है, तो इस में आप की बड़ी निन्दा होगी। आप शीघ्र आइये?। आगरा

[45]

पत्र (२४१)

[\$0\$]

लाला मूलराज जी आनन्दित रही !

त्राप का २६ नवम्बर का पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुन्ना। श्राजकल हम श्रागरा में हैं, श्रीर व्याख्यान देते हैं श्रीर लगभग एक मास यहां रहने का विचार है।

यह अब स्पष्ट है कि बहुत से पढ़े लिखे लोगों को भी नौकरी नहीं मिलती, या वे जीवननिर्वाह का प्रबन्ध नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था देख कर मैं एक कला कौशल के स्कूल की आवश्यकता
विचारता हूँ। प्रत्येक पुरुष को अपनी आय का १००वाँ भाग प्रस्तावित संस्था को देना चाहिये। उस
धन से चाहे तो विधार्थी कला कौशल सीखने जर्मनी भेजे जावें या वहां से अध्यापक यहां बुलाये जायं।
जो कोई इस फरड के व्यय पर इन धन्दों को सीखे, उसे प्रतिज्ञा करनी होगी कि स्वशिद्धा समाप्त करने
पर सभा या फरड की वह १२ वर्ष तक सेवा करेगा। यह प्रश्न यहाँ विचारा जा रहा है और जब कोई
परिखाम निकलेगा तो हम आप को सूचना देंगे। मैंने एक गुजरांवाला के आत्माराम जैनी के अमों
के उत्तर लिखवाये हैं और वहां के आर्थसमाज द्वारा उसे भिजवाये हैं। सुमे इनके विषयमें सब कुछ
लिखना। कर्नल आल्काट और मेडम ब्लेवस्तकी के पत्र का उत्तर मैंने भेज दिया है । मैं आशा करता
हूं कि आप ने उसे देख लिया है। वह नास्तिकता की ओर भुके हुए दिखाई देते हैं। कदाचित् वह
पहले भी ऐसे ही भुके हुये थे, परन्तु दूसरे के के मन की कोई क्या कह सकता है ?-

मुक्ते अपने भाइयों और उन के अब के पता का हाल लिखो। अब समय है कि आप ला० श्रीराम को कला कौशल सीखने इक्कलैएड भेज दें।

जर्मनी से पत्र आ रहे हैं । हम सब आनन्द में हैं। सब से हमारा नमस्ते कह दें ।

३० नवम्बर १८५०

ह० दयानन्द सरस्वती बाग गिरधारी लाल

श्रागरा।

१. देखो पीष ग्रु॰ १ बुधवार सं० १६३६ सम्पादक देशिहतिषी के नाम का पत्र । सम्भव है यह पिछले [पूर्ण संख्या ३०१] पत्रसूचना वाले पत्र का ही अवयव हो । अथवा उस से दो एक दिन पीछे लिखे गये पत्र का संकेत हो । यु० मी०। २. पूर्ण संख्या २६२, पृष्ठ २४८ । यु० मी०।

३. सम्भवतः पूर्णं संख्या २६६, पृष्ठ २५४। यु॰ मी॰। ४. देखो पृष्ठ २१४ टिप्पणी १।यु॰ मी॰।

प् गुजरांवाला को भेजा गया। वैदिक मेगजीन सन् १६०८ से अनूदित किया गया।

इ. मार्गशीर्षं कृष्ण १३ मंगल सं० १६३७। यु० मी०।

त्रिगारा, सन् १८८०

[8]

पत्र (२४२) कार्ड '

[308]

कृपाराम जी श्रानन्दित रहो !

पत्र तुम्हारा आया हाल विदित हुआ, मुन्शी बखतावर सिंह के हिसाव की जांच पड़ताल हो रही है। जालसाजी निकलती है। पश्चात् जैसा होगा लिखा जावेगा श्रीर श्रव तुम पुस्तकें निःसन्देह मंगा लो, श्रौर पानों की तशतरी वहीं रक्खी रहने दो। जब कभी हम श्रावेंगे देख लिया जावेगा, यहां व्याख्यान होता है छोर हम सब प्रकार से आनन्द में हैं। सब सभासदों को नमस्ते।

श्चागरा १ दि० १८५० २

दयानन्द सरस्वती

[3]

रसीद³

३०५

हमने आज मूल्य वेद्भाष्य =) बाबत चौथे वर्ष कें किशनलाल से वसूल पाए। हस्ताच्चर आगरा

१ दि० १८८०

दयानन्द सरस्वती

[६]

पत्रसंचना [२४३]

[३०६]

मु० इन्द्रमणि ६ दिसम्बर

द्यानन्द सरस्वती

िश नं १०

पत्र (२४४)

[806]

मन्त्री त्रार्य्यसमाज त्रानिन्दत रहो।

प्रकट हो कि पत्र तुम्हारा आया हाल मालूम हुआ। आज गुजरांवाला से अभी लाला मृलराज एम० ए० की चिट्ठी आई है। सो वहां कुछ प्रसिद्ध नहीं। और मित्र विलास तो विरोधी है। वह सदैव इसी प्रकार लिखता रहता है। जो वह कुछ प्रतिष्ठित होता तो लाहौर आर्य्यसमाज ही उस

- १. मूल कार्ड पं० कृपाराम जी के भाई के पोते पं० मित्रानन्द जी फोटोग्राफर च्रोल्ड कैन्टोनमैयट रोड देहरादून के पास है। ता० २७।१२।३२ को म० मामराज जी ने इस की प्रतिलिपि की।
  - २. मार्गशीर्ष कृष्ण १४ बुधवार सं० १६३७ । यु० मी० ।
- ३. मूल रसीद मथुरावासी, श्री किशनलाल नागर के पुत्र श्री काशीलाल ( प्रसिद्ध मोहनलाल ) ४. मार्गशीर्ष कृष्ण १४ बुध सं० १६३७ । यु० मी०। नागर के पास है।
  - ५. मुंशी इन्द्रमिण का इल्तमास स्वा॰ द्यानन्द् का सन्यास पु॰ १८।
  - ६. सन् १८८०। मार्गशीर्ष शु॰ ५ सोम, सं॰ १६३७ । यु॰ मी॰।
- ७. मन्त्री त्रार्यसमाज फरुखाबाद को लिखा गया । मूल पत्र त्रार्थसमाज फरुखाबाद में सुरिद्धत है । फरुखाबाद का इतिहास ग्रन्थ के प्० २८६ पर भी छपा है।

का सहायक होता। सो तुम कुछ शंका न करो। श्रीर ....... तो श्रत्यन्त ही दुष्ट है। जो तुम को कुछ उनके विषय में लिखना हो तो श्रार्थ्यसमाज गुजरांवाले से द्र्यांफ्त करलो श्रीर हम सब प्रकार से श्रानन्द में हैं। सभासदों को नमस्ते।

आगरा द दि० १८८०<sup>9</sup>

हस्ताच्चर (दयानन्द सरस्वती)

[83]

पत्र (२४५)

[306]

लाला मूलराज जी एम० ए० त्रानन्दित रही?!

श्राप का ६ दिसम्बर का पत्र मिला, समाचार विदित हुआ। इस श्राप को मेडम ब्लवत्सकी का पत्र अपने उत्तर सिहत भेजते हैं । उस में जो कुछ परिवर्तन करें, उस की हमें पहले सूचना दे दें।

श्राप उसे मुम्बई श्रार्थ्यसमाज द्वारा पत्र भेज दें। क्रपया देखने के पश्रात् मेडम व्लवस्की का पत्र हमें लौटा दें। श्राजकल श्रात्माराम कहां है ? जैनों के उत्तर में जो पत्र हम ने लिखे थे वे श्रवश्य समाज के कार्यालय में होंगे। श्रव्छा होगा यदि श्राप उन सब को किसी समाचार पत्र में प्रकाशित करवा दें। श्रव हम उस समाज द्वारा जैनों को कुछ प्रश्न करना चाहते हैं । श्राप श्रच्छा हो जो उस समाज से पूछ लें श्रीर हमें सूचना दें। क्या श्राप मुक्ते बता सकते हैं कि कला कौशल सिखाने का स्कृत कहां है ?

यहां नगर के बाहर गोकुलपुर में एक छोटा सा समाज स्थापन किया गया है। सब को नमस्ते।

प्त दिसम्बर १८८० <sup>8</sup>

[ह० द्यानन्द सरस्वती] आगरा।

[२]

उर्दू पत्र (२४६)

[३०९]

ताला शादीराम जी श्रानन्दित रही !

वाजे हो कि खत तुम्हारा आया, हाल मालूम हुआ। जो नोटिस सन्धि विषय पर छपेगा सो आप के पास रवाना करते हैं सो छाप देना। और पिण्डत काशी नारायण साहिब मुनसिफ से आगरे चौथे वर्ष तक के २०॥) हमारे पास आये सो टाइटल पेज वेदमाष्य पर छाप देना। और एक खत लाला रयामसुन्दर कोठी वाले मुरादाबाद का आया। वे लिखते हैं कि उनके पास अब की मरतवा एक ही

१. मार्गशीर्ष शुक्ल ७ बुधवार, सं० १६३७ । यु॰ मी॰ ।

२. गुजरांवाला को लिखा गया । वैदिक मेगजीन गुरुकुल गुजरांवाला श्रक्त्वर-दिसम्बर १६०८, श्रंक

१०, ११, १२ पृ० २५३ से अनुदित । ३. सम्भवतः पूर्ण संख्या २६६, पृष्ठ २४४ का । यु० मी० ।

४. पूर्ण संख्या २६० (पृ० २४५), २६२ (पृ० २४८) यु० मी०।

प् ये इन्छित प्रश्न सम्भवतः पूर्ण संख्या ३२३ के पत्र (पृष्ठ २७१) वाले होंगे । यु॰ मी॰ ।

६. मार्गशीर्ष शुक्ल ७ बुधवार, सं० १६३७ । यु० मी० ।

७. मूल पत्र परोपकारिगी सभा श्रजमेर के पास सुरिच्त है।

श्रागरा, सन् १८८०

वेदमाध्य पहुँचा। और वे पांच अङ्क हर एक वेद के लिया करते हैं और कीमत पेशगी दाखिल कर चुके हैं। सो इसका क्या सबब है। और ५० वेदमाध्य राजा जयिकशनदास तो लेते ही हैं मगर उनका लड़का कुंवर उवालाप्रसाद भी बरपता मुरादाबाद एकर श्रंक दोनों वेदमाध्य का लेते हैं सो लिखो कि उनके नाम भी रवाना कर दिया या नहीं। और भूमिका वगैरा जुमला कुंतुब फरोक्त दस दस यजुर्वेदभाष्य के रवाना करदो और हिसाब व किताब भी जांच पड़ताल करके जल्दी जहां तक मुमिकन हो बखतावरसिंह जी की जाल साजी जाहिर करो श्रीर कीमत सिन्ध विषय की।।) रखो और हमेशा खत को तोलकर टिकट लगाया करो, स्वामी दयानन्द सरस्वती।

द्यानम्द सरस्वती श्रागरा १० दिसम्बर १८८०

[9]

पत्र (२४७)

[340]

**ओ३म्** 

पं गर्गोशप्रसाद जी आनिन्दत रही?!

तुम से जो साथ रहने के विषय में बात चीत हुई थी जिसका उत्तर विचार के देना कहा था सो क्या निश्चय किया। तुम्हारी शीघ और सुप्रचार लेख शैली से भाषा सम्बन्धी कार्य में सुगमता रहेगी। तुम्हारा संस्कृत बोध जो द्यधूरा लघुकौ मुदी मात्र का है मेरे साथ में अच्छा हो जायगा। और व्याख्यान देने की शैली भी आजायगी। योग्यता बढ़ने पर वेदमाष्य के प्रूफ को शोधन भी करना होगा। तब मासिक वेतन में वृद्धि की जायगी। इसका उत्तर मंत्री जी के पत्र में लिख भेजना।

१० दिसम्बर १८८० ई०3 आगरा

हस्ताच्चर

[दयानन्द सरस्वती)

[२]

पत्र (२४८)

[366]

श्रो३म्

पं गगोशप्रसाद जी आनिन्दत रहीं

कल एक पत्र भेजा था, पाया होगा। उसमें इतना और विशेष जानना कि जो तुम हिसाब का काम रुपये पैसे रखना आदि और करोगे तो २०) मुद्रा मासिक मिलेगा। सो तुम्हारे पिता जी

१. मार्ग शीर्ष शुक्त ६ शुक्र, सं० १६३७। यु० मी०।

२. मूल पत्र पं॰ गणेशप्रसाद जी के पास फरुखाबाद में सुरिद्धित था। म॰ मामराज जी ने फरवरी १६२७ में प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पु॰ १८६ पर भी छुपा है।

३. मार्गशीर्ष शुक्क ६ शुक्र सं० १६३७ । यु० मी०

४. मूल पत्र पं॰ गर्णेशप्रसाद के पास फरुखाबाद में सुरित्ति था। म॰ मामराज जी ने फरवरी सन्। १६२७ में प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पृ॰ १८६ पर भी छुपा है। त्रागरा, सं० १९३७]

पत्र (२५०)

. २६३

लाला निर्भयराम की दूकान से प्रति मास ले लिया करेंगे। हम तुम्हारे शील स्वभाव से प्रसन्न हैं। देशी भाषा की परीचा पास कर चुके हो काम ठीक कर लोगे।

११ दिसम्बर ५०१

(दयानन्द सरस्वती)

[2]

पत्र (२४९)

[393]

पिंडित ज्वालाद्त्त जी आनन्दित रही?।

विदित हो कि तुम्हारा पत्र आया, लिखा सो प्रगट हुआ, बड़े शोक की बात है कि तुमको कई बार लिखा कि व्याकरण में नवीन रचना की कुछ आवश्यकता नहीं है किन्तु जैसी सम्मिति देरेदून में ठहर गयी है उसी प्रकार से छपना चाहिये। और अब नामिक जैसा छपता है वैसे ही छपने दो, कुछ जरूरत नवीन रचना की नहीं है ॥ और नामिक के पश्चात् कारकीय छपेगा। हम नहीं जानते थे कि शोधने में तुम्हारी ऐसी कच्ची दृष्टि है, देखो वेदमाध्य की शुद्धि अशुद्धि केवल चार पांच पत्र ही की नमूने के तौर पर लिखकर मेजते हैं उनको देखो और अपने शोधे हुए में सर्वत्र ऐसा ही जान लो।। खैर अब ऐसा हुआ, आगे कभी ऐसा न होने पावे। शोधने में खुब दृष्टि दिया करो कि एक भी अशुद्धि न रहे3।

[3]

**चर्व्** पत्र (२५०)

[\$9\$]

योश्म्

मास्टर शादीराम जी।

आप पंण्डित ज्वालाद्त्त को खूब सममा देवें कि व्याकरण में कुछ जरूरत 'नवीनरचना' की नहीं है। जैसे अब नामिक छपता है वैसे ही छपने दो। और नामिक के बाद कारकीय छपेगा। और पण्डित ज्वालाद्त्त के शोधन में बहुत रालती रहती हैं। उनको ताकीद कर दो कि खूब गोर से शोधे, ताकि गलती न रहे।

त्रागरा २२ दिसम्बर ८१[८०] ईस्वी<sup>४</sup>

दयानन्द सरस्वती !

१. मार्गशीर्ष शुक्त १० शनि सं० १६३७ यु० मी०।

२. मूल पत्र परोपकारिगी सभा श्रजमेर में सुरिन्तित है।

३. इसी पत्र के नीचे त्रगला (पूर्ण सं० ३१३ का) पत्र उर्दू में मास्टर शादीराम के नाम का लिखा हुत्रा है। [बह २२ दिसम्बर ८० = पीत्र कृष्ण ५ सं० १६३७ का है, इसलिए यह मी उसी दिन का है]।

४. पहले यह पत्र आर्थभ्रमें-द्र जीवन संस्करण तृतीय पृ० ३६६ से छापा गया था। अब मूल पत्र की प्रतिलिपि से छापा है। मूल पत्र परोपकारिणी समा में सुरिचत है। हमारे पास आई हुई प्रतिलिपि में कोई तिथि नहीं है। न जाने आर्थभ्रमें-द्रजीवन में तिथि कहां से ली गई है। तिथि में सन् अशुद्ध छपा है। शताब्दी संस्करण, भूमिका पृ० १६ पर ऊपर के पत्र (पूर्ण ३१२) के सम्बन्ध में भी यही अशुद्धि है। सन् ८० चाहिये [क्योंकि स्वामी जी महाराज २२ दिसम्बर १८८० (पीष कृष्ण ५ सं० १६३७) को ही आगरा में थे, २२ दिसम्बर १८८१ में आगरा में नहीं थे, इन्दौर में थे]।

पत्र (२५१) [3]

[398]

मास्टर द्याराम जी आनन्दित रही !

विदित हो कि आपका पत्र आया, हाल मालूम हुआ। आपने जो नकशा मर्दुम शुमारी का लिखा सो उसकी खाना पुरी इस प्रकार करो।

वैदिक मजहब फिरके मजहबी छार्य श्रमल कौम

ब्राह्मण वा चित्रय वैश्य शुद्र जात या फिर्का

जो अपना गोत्र है गोत्र या शाख

श्रीर जिसको अपना गोत्र याद न हो वह अपना काश्यप गोत्र या पाराशर लिखा दे। श्रीर यह सब समाजों में तथा पंजाब भर में इसी प्रकार से लिख भेजें। श्रौर हम यहां सब प्रकार से हस्ताच्र श्रानन्द में हैं।

श्रागरा ३१ दि० स० १८८०२

द्यानन्द सरस्वती

[३१५] पत्र (२५२) [2] द्वारकादास जी श्रानन्दित रहो ! पत्र तुम्हारा आया हाल माल्म हुआ। पुस्तकों का सूचीपत्र लिखते हैं। जो चाहे दाम भेज कर मंगालो॥ Y) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका રાા) सत्यार्थप्रकाश 11=) संस्कारविधि सन्ध्या वेदांतिध्वांतनिवारण सत्यधर्मविचार सत्यासत्यविवेक वर्णोचारणशिचा

२. पौष कृष्ण ३०, शुक्र, सं० १६३७ । यु० मी० ।

१. मूल पत्र की प्रतिलिपि फरुखाबाद में सुरित्त थी। वहीं से म० मामराज जी ने सन् १६२७ में इस की प्रतिलिपि की। यह पत्र फरुलावाद का इतिहास पृ० १८७ पर भी छुपा है उसमें इतना लेख ग्राधिक है—"इस की नकल सब समाजों में स्वामी जी की आजानुसार मेजी जाती है। द्याराम वर्मा मन्त्री आर्यसमाज मुलतान ८ जनवरी सन् ८१ ई०।"

३. यह कार्ड ता० १८ ग्राप्रैल सन् १६२७ को म० मामराज जी ने ला० द्वारकादास जी (ग्रायु ७५ वर्ष) से इटावा जाकर प्राप्त किया था। कार्ड उन्हें वापिस मेज दिया गया था। उक्त ला॰ जी ने ऋषि द॰ स॰ के लगभग ३० व्याख्यान आगरे में सुने थे। उनको यह कार्ड ऋषि ने एतमादपुर भेजा था। ला॰ द्वारकादा जी उस समय वहीं रहते थे।

| श्रागरा, सं० १९३७]                                   | पर्त्र (२५३)         |               |                    | २६५                  |
|--|----------------------|---------------|--------------------|----------------------|
| <b>व्यवहारभा</b> नु                                  |                      | •••           | •••                | 1)                   |
| संस्कृतवाक्यप्रबोध                                   | •••                  | ***           | •••                | 1-)                  |
| श्रायोंहेश्यरत्नमाला<br>तथा ऋ० वेद श्रौर यजुर्वेद का | <br>भाष्य होता है। स | <br>तो उसका म | <br>स्याजीश्रवातकः | ्र)॥<br>इपा श्रीर २९ |

तथा ऋ० वंद श्रीर यजुवंद का भाष्य होता है। सो उसका मूल्य जो श्रब तक छपा श्रीर २९ श्रंक तक छपेगा २०॥) श्रीर श्रागे को दोनों वेदों का ८) साल है।

> श्रागरा ३१ दि० १८८०

हस्ताचर द्यानन्द सरस्वती

4

पत्र (२५३)

[३१६]

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रही?।

तुम्हारे लिखने के अनुसार काशी को पत्र हमने भेज दिया है । श्रीर जो लिखने की योग्यता थी सो सब लिख दिया। वहां के हिसाब के जो पत्र थे, सो जा चुके हैं। श्रीर जो मेरठ में लाला रामशरणदास के पास होंगे सो पहुंच जायंगे। मेरठ को भी पत्र लिख दिया है।

३५) रुपैये माहवारी खर्च में ५) भीमसेन, ३०) रुपैये में मुन्शी का बंदोबस्त हैं। अब हम चाहते हैं कि खजांची कोई अच्छा मातवर रहे। थोड़ा भी पढ़ा हो तो चिन्ता नहीं है। और चिट्ठी लिखने मात्र को कुछ दामों से मुन्शी रख दिया जाय, वह चिट्ठी लिख जाया करे।

अथवा तोताराम वहां का काम चलाने योग्य हो तो वह सब हिसाब और कारीगरों से काम लिया करे। भीमसेन खजांची रहे। भीमसेन निष्कपट है, हम अच्छी तरह जानते हैं। और चिट्ठी किसी से लिखवा दिया करें। नागरी पत्र ये दोनों लिखते ही हैं। अथवा तुम अच्छा विचार कर जो कहो सो किया जाय। परन्तु तोताराम को अच्छा चिताइ देना चाहिये कि जब तक मुंशी न आवे कुछ और विशेष प्रबन्ध न हो ले, तब तक होशआरी के साथ काम सम्हाले। आगे आप लोग जैसा विचार कर बन्दोबस्त करेंगे सो होगा। इस पत्र का जवाब विचार पूर्वक हमारे पास जहाँ तक हो सके जल्दी भेजना चाहिए।

छापाखाना का प्रबन्ध श्रच्छा करना बहुत श्रवश्य हो रहा है। (द्यानन्द सरस्वती)

१. पीप कृष्ण, ३० शुक्र सं० १६३७। यु० मी०।

२. मूल पत्र आयंसमाज फरुलाबाद में था। इस की प्रतिलिपि म॰ मामराज जी ने सन् १६२७ में की। यह पत्र फरुलाबाद का इतिहास नामक प्रन्थ पृ॰ २१४ पर भी छपा है। वहां पाठ की कुछ आधुद्धियां हैं। पत्र में तिथि नहीं है। इसने इसे प्रकरण देख कर यहां रखा है। [हमारे विचार में यह पत्र पूर्ण संख्या २८७ से पूर्व छपना चाहिये था, क्योंकि इस पत्र से पं॰ भीमसेन का काशी रहना ध्वनित होता है, परन्तु पूर्ण संख्या २६१ के आनुसार वह ७ नवम्बर १८८० से पूर्व बीमार हो कर काशी से चला गया था। यु॰ मी॰।]

३. सम्भवतः पूर्ण संख्या २८५ (पृष्ठ २४२) का पत्र । यु० मी०।

[३] पत्र (२५४)

[0,95]

लाला कालीचरण, रामचरण जी आनिन्दत रही ।

विदित हो कि हमने अब यहां सब असिल कागज और रिजस्टर "बखतावरसिंह" के दस्तखती
काशी से मंगा कर देखे, उनमें बहुत कुछ फर्क है। और सब लेख धोखे का है। यह भली प्रकार से
साबित होता है। इसलिए तुम को लिखते हैं कि यहां आकर आप भी देखें और "बखतावरसिंह"
को भी बुला लें। और एक रिजष्टरी चिट्टी बखतावरसिंह के पास भेज दो कि इस चिट्टी के
देखते ही आगरे में स्वामी जी के पास आकर हिसाब समका दो। और हम भी वहीं होंगे। और )
रिजष्टरी में अधिक देवें कि उसके हस्ताचर भी आ जावें।। और आप को यहां अवश्य आना उचित
है। और जिस दिन आप आवें उससे पहिले हमको लिख भेजें कि हम फलाने दिन आवेंगे।।

हमने श्रापको पहिले लिखा था कि १००) पंडितों की बाबत के हमारे पास भेज दो । सो श्रव तक नहीं पहुँचे। इसका क्या कारण है। श्रीर हमने नारायणदास मुखतार से कहा था कि एक मोतबिर खजानची काशी में रखवादो श्रीर उसकी जमानत भी ले लो। इस का भी हाल लिखो ॥ सब समासदों को नमस्ते॥

त्रागरा

बेलनगंज लाला गिरिधरलाल वकील का यागीचा १० जन० १८८१२ । हस्ताचर (द्यानन्द सरस्वती)

[88]

पत्र (२५५)

[396]

लाला मूलराजजी एम० ए० श्रानन्दित रहो<sup>3</sup>!

आप को लिखा जाता है कि जब बाबू शिवदयाल जी यहाँ थे, तो उन्होंने पण्डित बिहारीलाल को हमारे यन्त्रालय में काम करने को भेजने और श्रीराम को विलायत भेजने की हम से प्रतिज्ञा की थी। क्या आप हमें लिखेंगे कि इस विषय में अन्तिम निर्णय क्या हुआ है ? यहां एक गोरिज्ञिणी सभा स्थापन की गई है और इसके नियमोपनियम भी बना दिये गये हैं, जब छपेंगे तो आपको सूचना के लिये भेज देंगे। आज इसी विषय पर एक और सभा की जायगी।

मुन्शी बखतावरसिंह ने यन्त्रालय की बड़ी हानि की है। आज कल हम यन्त्रालय के हिसाब

की जांच कर रहे हैं। जो आगे होगा सो लिखूंगा। सब से मेरा नमस्ते कहना।

१२ जनवरी १८८१४

ह० द्यानन्द सरस्वती

आगरा।

१. मूल पत्र त्रार्थसमाज फरुखाबाद में है। उसकी प्रतिलिपि सन् १६२७ में म० मामराज जी ने की। फरुखाबाद का इतिहास प्०१८८ पर भी छुपा है। वहां कई पाठ त्रुटित हैं।

२. पौत्र शुक्ल १० सं० सोम, १६३७ । यु० मी० ।

३. यह पत्र वैदिक मैगजीन गुरुकुल गुजरांवाला सन् १६०७ स्रांग्रेजी से स्रनृदित है।

४. पौष शक्क १२ बुध सं० १६३७ । यु० मी०

श्रागरा, सं० १९३७]

पत्र (२५६)

२६७

[3]

पत्र (२५६)

[३१९]

पंडित ज्वालादत्त जी आनिन्दत रहो।

विदित हो कि तुम ने जो यजुर्वेद श्रष्टमाध्याय के पत्र मेजे सो पहुंचे। परन्तु वे किसी काम के नहीं। क्यों, उनमें भाषा बहुत काट फाँट रक्खी है। श्रीर तुम्हारे संकेत हैं। यह उत्तर तो सहज है कि अवकाश नहीं मिला। श्रीर नामिक जैसा है वैसा शुद्ध श्रीर दिव्य छपवाश्रो। सन्धिविषय की तरह अशुद्ध न होने पावे । अब हम ने सन्धिविषय का शुद्धिपत्रमात्र देखा तो विदित हम्रा कि जो कम विद्या वाला भी ध्यान देकर शोधे तो भी ऐसी अशुद्धि कभी न रह सके। अब हम यह उपदेश करते हैं। तुम लोगों को इसका गुण मानना उचित है न कि चिड़ जाना। भीमसेन ने जो कि ४० पृष्ठ संधिविषय के शोध कर छपवाए हैं उसमें अशुद्धि कम है। और इन अशुद्धियों में भी संस्कृत की अशुद्धि बहुत ही कम हैं। देखो तुम्हारे शुद्धिपत्र के अनुसार ४० पृष्ठों में ५१ अशुद्धि हैं। और तुम ने शुद्ध का अशुद्ध किया। और तुम्हारे २४ प्रष्ट में ५९ अशुद्धियां हैं। और इन अशुद्धियों में भाषा की कम और संस्कृत की अधिक हैं। और जब हम सन्धिविषय का पाठ करें [गे] वब तुम्हारी और भी० से० की न जाने कितनी निकलेंगी। अब ऐसा हुआ सो हुआ, परन्तु आगे कभी ऐसा न करो। त्रागे से हम सब पुस्तक देखा करेंगे और अपना लिखाया और तुम्हारा शोधा पुस्तक भी मंगा लिया करेंगे। श्रीर श्राज से हम वेदभाष्य भी देखेंगे कि कितनी श्रशुद्धि हैं। बड़े श्राश्चर्य की बात है कि जब लाजरस और मुम्बई से छपता था, कभी ऐसी अशुद्धि न होती थी जैसे कि अब घर के छापेखाने में होती हैं। जो ऐसी अशुद्धि हुआ करेंगी, तो सब पुस्तक में अशुद्धिपत्र ही भरा करेंगे । और छपवाने वालों और प्रेस की भी बदनामी होगी। जो छप गया सो खैर, परन्तु आगे कभी ऐसा न होगा।

> श्चागरा १७ जन० १८८१ र

द्यानन्द सरस्वती

१. दयानन्द ग्रन्थमाला, शताब्दी संस्करण, प्रथमावृत्ति, संवत् १६८१, सन् १६२५, पृ० १६, १७ पर खराडश: मुद्रित । सम्पूर्ण पत्र Works of Maharshi Dayanand by Shri Harbilas Sarda, Ajmer 1942, पृ० १२७ पर मुद्रित । इम ने दोनों की तुलना करके तथा मूल पत्र की एक नई प्रतिलिपि से मिला कर सारा पत्र छापा है ।

२. शताब्दी सं अ में यह शब्द नहीं है।

३. Works of M. Dayanand में "देखेंगे" पाठ है।

४. [माघ कृष्ण २ सोम, सं० १६३७] इस पत्र का उत्तर पं० ज्वालादत्त ने १६ जनवरी सन् १८८१ को दिया। देखो म० मुंशीराम सम्पा० पत्रव्यवहार पू० ४०५-४०८। शताब्दी संस्करण और Works में इसकी तिथि १७ जून दी है। वह बात ठीक नहीं। चाहिए १७ जनवरी। मूल में १७जन० ही होगा। श्री हरिबलासजी के नकल करने वाले ने उसे जून बनाने में भूल की है। मूल पत्र उन्हीं के पास है।

[श्रागरा, सन् १८८१

[8]

पत्र (२५७)

[३२०]

[४] पत्र (२२०) लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रही!

विदित हो कि आपने जो पिंडतों के खर्च में १००) की हुंडी मेजी, सो पहुंची । आप खातिर जमा रक्खें ॥

हम्ताच्चर

श्रागरा १८ जन० १८८१२

द्यानन्द् सरस्वती

[२६]

पत्रांश (२५८)

[329]

[मुन्शी बखतावरसिंह, शाहजहांपुर]

तुम एक सप्ताह के अन्दर यहां आकर हिसाब सममा दो, नहीं तो कार्यवाही जावते की की जावेगी।

१९ जतवरी १८८१।

[१] नं०१०

उर्दू पत्र (२५९)

[३२२]

मुन्शी नारायण किशनजीव श्रानन्द रही"।

वाजे हो कि तुम्हारा खत आया हाल मालूम हुआ। एक चिट्टी व खत नागरी बनाम आत्माराम आपके पास रवाना की जाती है । सो आप उनको दे दीजिये। और जो अब वे वहां न हों तो
जहां वे गये हों पहुँचा दीजिए। और रसीद से मतलका कीजिये। और लाला मूलराज जीव से कह
दीजिये कि मुन्शी बखतावरसिंह के सब कागजात देखे गये। उनसे बखूबी उस का फरेब जाहिर हुआ।
और जाए गौर है कि सिर्फ कागज ही में से उसने १७० का गवन किया। और रकम इलावा रहीं।
और उस के पास ठाकुर मुकन्दसिंह के मेजे दो खत रवाना कराये कि जल्दी आकर हिसाब सममा दो।
मगर वह नहीं आया। क्योंकि उसने काम नहीं किया जो रोबक्त आने के लायक रहा हो। अब हमने
भी एक खत रिजस्टरी उसके पास [रवाना] किया है कि एक हफता के अन्दर आकर हिसाब सममा
दो सो अगर वह आ गया तो ठीक है वरना यह मुआमला बिजरिआ अदालत ही तय होगा। इस
लिये लाला मूलराज जी को भी लाजिम है कि ठाकुर मुकन्दसिंह के (को) जाबिता की काररवाई करने
के लिये एक खत रवाना कर दें। और जो चिट्टी आत्माराम के नाम नत्थी खत हजा है उसकी नकल

२. माघ कृष्ण ३ मंगल सं० १६३७ । यु० मी०

४. माघ कृष्ण ४ बुध, सं० १६३७। यु० मी०।

१. मूल पत्र त्रार्यसमाज फरुखाबाद में था। वहीं से म॰ मामराज जी ने फरवरी सन् १६२७ में इसकी प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पृ॰ १८८ पर भी छुपा है।

३. यह पत्रांश ६ फरवरी १८८१ के पत्र (पूर्ण संख्या ३३४ पृष्ठ २७६) में उद्घृत है, तथा श्रगले पूर्ण संख्या ३२२ के पत्र में भी इसका निर्देश है। उक्त पत्र रजिस्टरी से मेजा गया था। यु॰ मी॰।

५. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्चत है। मुंशी नारायण किशन आर्थसमाज गुजरांवाला के मन्त्रीथे।

६. श्रगली पूर्ण संख्या ३२३ पष्ट २६६ पर मुद्रित । यु॰ मी॰ । CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

रखलो श्रीर छपवा दो। श्रीर वहां लाला शिवदयाल जीव पहुंचे या नहीं। श्रीर श्रापके खत से ठाकुर दास के श्रफशाल मालुम हुए।

श्रागरा २१ जनवरी सन् १८८१

स्वामी दयानन्द सरस्वती

दयानन्द सरस्वती

[3]

पत्र (२६०)

[३२३]

श्रानन्द विजय श्रात्माराम जी (नमस्ते) रे।

श्राप का पत्र माघ का लिखा हुआ मेरे पास पहुंचा। उस में लिखित वृत्त विदित हुआ। मेरे प्रश्नों के उत्तर में जो श्रापने लिखा कि "वौद्ध और जैन को एक ही मत के नाम मानने से हमारी कुछ मानहानि नहीं" इसको पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। यही सज्जनों का काम है कि सत्य को मानें और असत्य को न मानें, परन्तु यह बात जो श्राप ने लिखी है कि "योगाचार आदि चार सम्प्रदाय जैन बौद्ध मत के हैं सो वह बौद्ध मत जैन मत से एक पृथक् शास्त्र का हैं।" इसका उत्तर में आपके पास मेज चुका हूं कि मत में शाखा प्रशाखा का मेद थोड़ी बातें पृथक् होने से होता है, परन्तु मत के कप में शाखायें एक ही मत की होती हैं। देखिये कि उन्हीं नास्तिकों में चारवाक आदि नास्तिक हैं और जो आप उनका इतिहास और जीवन चित्त पूछते हैं सो इस का उत्तर भी मैं दे चुका हूं अर्थात् इतिहासतिमिरनाशक के तीसरे अध्याय में देख लीजिये।

श्रीर श्राप जिन वौद्धों को श्रपने मत से पृथक कहते हैं, वे श्राप के सम्प्रदाय से चाहे पृथक् हों, परन्तु मत के रूप से कदापि पृथक् नहीं हो सकते। जैसे कई जैनी उदाहरणतया स्वेताम्बर दूसरे जैनों उदाहरणतया समवेगी साधुश्रों पर श्राह्मेप करके उन्हें पृथक् श्रीर नया मानते हैं। यह स्पष्ट हुवेक (?) नामक पुस्तक में लिखा है इत्यादि श्राप लोगों ने उन पर बहुत से श्राह्मेप करके उनके मत में सम्यक्त निर्णाय पुस्तक लिखी है, तो भी इस से वे श्रीर श्राप बौद्ध या जैन मत से पृथक् नहीं हो सकते श्रीर न कोई विद्वान उनके मत के सिद्धान्तों के श्राधार पर उन्हें पृथक् मान सकता है, उन के सिद्धान्तों में भेद तो श्रवश्य होगा।

श्राप के इस वचन से कि "इस में क्या श्राश्चर्य है कि महावीर तीर्श दूर के समय में चार-वाक मत था श्रीर उन से पीछे नहीं हुआ" इस से मुक्तको श्राश्चर्य हुआ, क्या जो महावीर तीर्श दूर से पहले २३ तीर्श दूर उन सब से पहले चारवाक मत को श्राप सिद्ध नहीं कर सकते। यदि किसी प्रकार का कथन का स्थान श्राप के लिये हो तो श्राप पर प्रश्न हो सकता है कि ऋषभदेव भी चारवाक मत से चले हैं, फिर श्राप इसके उत्तर में क्या कह सकते हैं। क्या चारवाक १५ प्रकार में से एक प्रकार का भी नहीं है श्रीर उसमें एक सिद्ध श्रीर मुक्त नहीं हुआ श क्या वे श्रापके सिद्धान्तों श्रीर पुस्तकों से पृथक हो सकते हैं ?

इसके अतिरिक्त आपने भी अपने लेख में बुद्ध मत को अपने मत में स्वीकार कर लिया है

१. माच कृष्ण ६ शुक्र, सं० १६३७। यु॰ मी०।

२. दयानन्द दिग्विजयार्क प्रथम खराड पू॰ ५२ से ५४ तक संद्यित रूप से, तथा श्रार्थ समाचार (उर्द् ) मेरठ मिति माघ संवत् १६३७ विक्रमी पृ॰ ३२५ ३३१ तक उद्धृत है। पं॰ लेखरामकृत जीवन च॰ पृष्ठ इ९६८ तक भी छुपा है।

क्यों िक करकरड़ा आदि को आप ने बौद्ध माना है और मैंने भी अपने पहले पत्र में जैन और बौद्ध के एक मत होने का लिखित प्रमाण दे दिया है फिर आप का दूसरी बार पूछना व्यर्थ और निष्प्रयोजन है। जहां स्वयं वादी के साची से मुकदमा सिद्ध हो जाए तो फिर हाकिम को अन्य पुरुषों की साची लेने की आवश्यकता नहीं होती। भला जिसकी कई पीढ़ियां जैन मत में चली आई हों अर्थात् राजा शिवप्रसाद की साची को और आज कल जो यूरोपियन लोग बड़े परिश्रम से इतिहास बनाते हैं उन की साची आप अशुद्ध कह सकते हैं, जिन्होंने अपने इतिहास में बौद्ध और जैन को एक ही लिखा है और यह भी लिखा है कि कुछ बातें आयों की और कुछ बौद्धों की लेकर जैन मत बना है।

% प्रश्न २ के उत्तर में जो आप ने लिखा है वह नमुचि नास्तिक जैनमत का देषी साधुओं को निकालने और कष्ट देने वाला था और उस को मार कर सातवें नरक में भेजा गया। यह लेख आप ने सत्यार्थप्रकाश के लेख के उत्तर में नहीं समका। विचार कीजिये कि वह नमुचि जैन मत का शत्रु था इसलिए मारा गया। तो क्या उसने जान बूक कर पाप नहीं किया था। कितने शोक की बात है कि

श्राप सीधी बात को भी उल्टा समक्त गये।

प्रश्न ३ के उत्तर में जो आपने प्राकृत भाषा का एक फ्रोक लिखा है, परन्तु उसके अर्थ स्वयं नहीं लिखे, केवल मुक्त पर उसका समक्तना छोड़ दिया। इसका यह अभिपाय होगा कि मैं उसके अर्थ और तात्पर्य तक नहीं पहुंच सक्या। हाँ मैं कुछ सब देशों की भाषा नहीं जानता हूं केवल कुछ देशों की भाषा और संस्कृत जानता हूँ, परन्तु मत मतान्तरों की शाखा प्रशाखा और सम्प्रदायों के सिद्धान्तों को अपनी विद्या और बुद्ध और विद्वानों के संग के प्रभाव से जानता हूं। आप और आप लोगों के आचारों ने ऐसी अपभंश भाषा, अपनी भाषा बना ली है, जैसे धर्म के स्थान पर धम्म इत्यादि, जैसे जिन का मत युक्ति और प्रमायों से सिद्ध नहीं हो सकता है वे ऐसे २ अप्रसिद्ध शब्द बना लेते हैं, तािक कोई दूसरा ठीक प्रकार से समक्त न सके। जैसे मद्य का नाम तीर्थ, मांस का नाम पुष्प आदि बना लिया है तािक उनके सिवाय कोई दूसरा न जान ले। जो राजा लोग न्यायप्रिय होते हैं वे तो मार्ग ऐसे सीधे बना लेते हैं कि अन्धा भी प्राप्य स्थान को पहुँच जाए, परन्तु उन के विरोधी मार्गों को इस प्रकार से बिगाइते हैं कि कोई परिश्रम और कष्ट से भी चल न सके। आप रक्तसार भाग नामक पुस्तक को प्रामाणिक नहीं समक्तते तो क्या हुआ, बहुत से श्रावक और जैन लोग उसको सच्चा मानते हैं।

देखिये, आप ऐसे विद्वान हो कर मूर्ख को मूर्ष लिखते हैं और पत्र में लिखे शब्दों को शुद्ध करने में बहुत सी हड़वाल भी लपेटते हैं। कितने शोक की बात है कि संस्कृत तो दूर रही, देसी भाषा भी आप लोग नहीं जानते, परन्तु इस लेख के स्थान में यह लिखना उचित था कि आप की भूल का

कुछ नहीं, क्यों कि मनुष्य प्रायः भूल किया ही करता है।

प्रभ ४ के उत्तर में जो कुछ आपने लिखा है वह बहुत आश्चर्य में डालने वाला है। विद्या की प्राप्ति की इच्छा मनुष्य वहां प्रकट कर सकता है, जहां अपते से अधिक किसी विद्वान को देखता है। मैंने भी उन्हीं विद्वानों और आचार्यों से विद्या प्राप्त की है जो मुमसे अधिक बुद्धिमान और विद्वान थे आप भी शायद इसको स्वीकार करते होंगे। क्या आप लोग दूसरे मत के विद्वानों को गुरु न समक कर शिष्य के विचार से और मुक्ति के फल का ध्यान न रख कर किसी विरुद्ध अभिप्राय की प्राप्ति की

<sup>\*.</sup> इन प्रश्नों का सम्बन्ध पूर्ण संख्या २६२ पष्ठ २४६ — २५१ पर मुद्रित पत्र से है । यु॰ मी॰ । CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

इच्छा से दान करते हो और क्या यह बातें अविद्वानों की नहीं है कि अपने मत और उसके साधुओं की वड़ाई का ध्यान रखना और अन्य मत के विद्वानों के विषय में इसके विरुद्ध । यह अच्छे लोगों की बातें नहीं हैं। वस्तुत: मनुष्य मात्र में से अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा मानना जिज्ञासुओं और धर्मात्माओं और महात्माओं का काम है और उसको ही हम मानते हैं और उचित है कि आप भी उस को स्वीकार करें। मेरे लेख का यथार्थ अभिप्राय आप उस समय समर्मेंगे जब कि मैं और आप सन्मुख होंगे। मेरी पुस्तक सत्यार्थप्रकाश के लेख से कोई मनुष्य यह अभिप्राय नहीं निकाल सकता कि जैन मत के लोगों को चिरकाल तक पीड़ा देना और दान न देना और जैन मत वेईमानी का मूल है, अपितु यह सिद्ध है कि "अच्छे और ईमानदार लोगों और अनाथों की सहायता करना और बुरे लोगों को सममाना।"

परन्तु यह छः निषेघों का कलङ्क आप को ऐसा लिपट गया है कि जब ईश्वर की द्या हो और आप लोग पत्तपात को छोड़ कर यह करें तब धोया जा सकता है अन्यथा सर्वथा नहीं। भला जब यह स्पष्ट लिखा है कि अन्य मत की प्रशंसा न करना और अन्यों को भोजन और जल न देना तो फिर आप इसको अशुद्ध क्योंकर कर सकते हैं। यह बातें आप के सहस्रों प्रन्थों में लिखी हुई हैं और आप लोग इस को समक्त लें कि मुक्ते ऐसा स्वप्न में नहीं आया है, हां जो आप लोग कुछ भी विचार कर देखें तो उन का छोड़ देना ही धर्म है, आगे आप की इच्छा।

पाँचवे प्रश्न का उत्तर, उसके विषय में जो आपने लिखा है उस से मेरे उत्तर का खण्डन नहीं हो सकता, क्योंकि जब बालों के नोचने का प्रमाण आपकी पुस्तकों में लिखा है और मैं ने उस के प्रमाण से सिद्ध कर दिया, फिर भला कहीं युक्ति का आश्रय लेने से उस बात से नकार हो सकता है? सर्वथा नहीं।

छठे प्रश्न के उत्तर में, जब मैं यह सिद्ध कर चुका हूं कि जैन श्रौर बौद्ध जिस मत का नाम है उस की शाखा चारवाक श्रादि हैं, फिर यह कैसे श्रशुद्ध हो सकता है।

जो आप जैन लोगों के प्रन्थों में हमारे मत के विषय में लिखा है और जिस का हमारी धार्मिक पुस्तकों में कहीं उल्लेख नहीं, इस से हमारी धार्मिक मानहानि होती है। इस लिए आप जैन लोगों से पूछा जाता है कि लौटती डाक शीघ उत्तर दें कि वे बातें हमारी किन धार्मिक पुस्तकों में लिखी हैं। ध्यान रहे कि जिस भाष्य [में है उस का नाम] और ठीक २ पता दें, उन के साथ पृष्ठ और पंक्ति आदि के प्रमाण से जैसा मैंने आपके प्रश्नों का उत्तर दिया है उसी प्रकार से आप भी उत्तर दें, नहीं तो आप सज्जनों की बहुत हानि होगी। इस विषय को आप केवल साधारण दृष्टि से न देखें, परन्तु एक प्रकार का पूरा ध्यान रखें, तािक यह लम्बा न हो जाए। उत्तर देने में शीघता करें तो अच्छा है।

जैनों के विवेकसार प्रन्थ के छेख पर कुछ आक्षेप-

श्राद्येप १—विवेकसार पृष्ठ १० पंक्ति १ में लिखा है कि श्रीकृष्ण तीसरे नरक को गया। श्राद्येप २—विवेकसार पृ० ४० पं० द से १० तक लिखा है कि हरिहर, ब्रह्मा, महादेव, राम कृष्ण श्रादि कामी, क्रोधी, श्रज्ञानी, स्त्रियों के दूषी, पाषाण की नौका के समान श्राप दूबते और सब को डुबाने वाले हैं।

त्र्यागरा, सन् १८८१

आदोप ३—विवेकसार पृ० २२४ पं० ९ से पृ० २२५ पं० १५ तक लिखा है कि ब्रह्मा, विद्या, महादेव आदि सब अदेवता और अपूज्य।

आन्तेप ४—विवेकसार पृ० ५५ पं० १२ में लिखा है कि गङ्गा आदि तीथों और काशी

श्रादि चेत्रों से कुछ परमार्थ सिद्ध नहीं होता।

आद्मेप ५—विवेकसार पृ० १३८ पं० ३० में लिखा है कि जैन का साधु भ्रष्ट भी हो तो भी

अन्य मत के साधुत्रों से उत्तम है।

श्राह्मेप ६—विवेकसार पृ०१ पं०१ से ले कर लिखा है कि जैनों में वौद्ध श्राह्मा हैं। इस से सिद्ध हुआ कि जैन के अन्तर्गत बौद्ध आदि सब शाखायें हैं।

मिति साघ वदी ६ शुक्रवार सं० १९३७।

हस्ताचर स्वामी दयानन्द सरस्वती

श्चागरा तारीख २१ जनवरी सन् १८८१

[20]

## पत्र-सारांश (२६१)

[३२४]

[मुंशी बख्तावरसिंह, शाहजहांपुर] हमने तुम्हारे सब कागजात काशी से १० जनवरी ही को मंगा लिये, तुम अवश्य २८ जनवरी को चले आओ<sup>२</sup>।

२४ जनवरी १८८१3

[8]

## उर्दू पत्र (२६२)<sup>8</sup>

[३२५]

शादीराम [प्रवन्धकर्ता वैदिक यंत्रालय बनारस]

रिजस्टर मैंने रवाना किया। जो गलती हैं, ठीक है। श्रव तुम तकाजा करो श्रौर चिट्ठी छपवा लो बिल के तौर पर। श्रौर वेदमाष्य के साथ रवाना करो। श्रौर दो चार दिन में पुस्तकों के रिजस्टर सब रवाना कर देंगे। श्रौर सेठ भवानीराम मारवाड़ी मिरजापुर का जिसका रिशता लाला निर्भयराम फरुखाबाद वालों से है उसको पूछकर पण्डित सुन्दरलाल के हुक्म से उन से रुपया लेलो। पण्डित भागराम लाला प्रसादीलाल वहां श्राते हैं, वे श्राप से मिलेंगे ।

१. माघ कृष्ण ६, शुक्र सं०१६३७। यु० मी०।

३. माघ कृष्ण ६ सोम, सं० १६३७ । यु० मी० ।

२. यह पत्र-साराश ६ फरवरी १८८१ (पूर्ण संख्या ३३४) के पत्र में उद्धृत है । उपर्युक्त पत्र रिजस्टी से मेजा गया था । यु० मी० ।

४. लगभग २४ जनवरी १८८१ [माघ कृष्ण ६ सं० १६३७] को लिखवाया गया । एक पीले मिटियाले बड़े कागज पर इस और अगले तीन पत्रों पूर्ण सं० ३२६ से ३२८ का पूर्वरूप उर्दू में लिखवाया गया है। प्रतीत होता है कि श्री स्वामी जी के पास आगरा में कोई उर्दू पढ़ा पुरुष वैठा था। स्वामी जी का लेखक

श्रागरा, सं० १९३७]

पत्र (२६४)

२७३

[8]

पत्र (२६३)

[३२६]

सेवकलाल कृष्णदास [मंत्री आर्यसमाज मुम्बई]

आपने जो पत्र श्रीर जैनों [के प्रन्थों] की सूची [मेजी] सो देखी। जब तक देखो सो देखों श्रीर जो सूचीपत्र बने बनालो। जब पत्र मेजें, मेज देना। हम को देखने का श्रवकाश कम है। तुम देखो। हम खरडन मरडन श्रीर सिद्धान्त के जानने [को देखेंगे।]

जो आप लोगों की ओर से पिडत गिरजाशंकर दुवे जी, रतनसी श्याम जी हमारे पास आए। उनसे सब हाल मालूम हुआ। मगर मैं उन के साथ जल्दी नहीं आसकता, क्योंकि यहां आर्यसमाज नया हुआ है। और मुन्शी बखतावरसिंह ने प्रेस में गड़बड़ [की है।] रू को मेरे ज्याख्यान होना है आर्यसमाज में है। जो कहीं मैं राजपूताना की ओर चला उदयपुर तक [तो] मैं नहीं आर्जगा तो एक मास पर विदित करूंगा। सब से नमस्ते कह देना। यहां से जिस जिस आने पर ही मालूम [होगा] मुज को छोड़कर बड़ा देश में [जाना है] और यह दोनों आप के पास एक दिन ठहरेंगे। यहां का वर्तमान उन से विदित होगा। और यहां एक गोरज्ञणी [समा] के नियम छपा। और जो मुक्ते जा[नते] हैं उन से नमस्ते कह देना।

[3]

पत्र (२६४)

[330]

राणा जालमसिंह (कच्छ-दरबार)

जो आप ने मेरे बुनाने के लिए दोनों किवि[जी श्रीर श्याम जी मेजे] उस को मैं इस समय आप के अनुकूल न कर सका। इस समय विशेष बात सब उन से विदित होगी। आपित्त में धैर्य से बुद्धिमत्ता के साथ आपित्त का निवारण करना आप्तों का काम है।

जो आप ने विदेश जाने का विचार किया, वह यहीं हो सकता है। वहां कुछ प्रयोजन नहीं।

किसी काम में लगा होगा। उस से ये पत्र शीव्रता में लिखवाए गए। पत्रों में कई शब्द छूटे हुए हैं। उन्हें पत्र लिखते समय लेखक ने पूरा किया होगा। उनकी पूर्ति हमने को हों में की है। मुम्बई के तीनों पत्र पुन: देवनागरी में इसी लेखक ने श्री स्वामी जी के भाषा-लेखक को लिखवाए होंगे। मूल कागज म॰ मामराज जी अक्टूबर सन् १६२६ में ला॰ रामशरणदास जी मेरठ वालों के यहां से लाये थे। अब वह हमारे संग्रह में सरित्तत हैं।

- १. देखो सेवकलाल कृष्णदास का १५ जनवरी १८८१ का पत्र । म० मुन्शीराम संपा० पत्र व्यवहार पृष्ठ २८५ । यु० मीर ।
- २. म॰ मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार, पू॰ २६६-२६७ पर लिखा है कि यह महाशय धन सहित श्री स्त्रामी जी के पास निमन्त्रणार्थ मेजा गया। पत्र १८ जनवरी १८८१ (१८८० श्रशुद्ध है) का लिखा हुआ है।
  - ३. 'विदेश' चाहिये। देखो पूर्ण संख्या ३२७ का पत्र । यु० मो०।
  - ४. गोरक्षीसभा की स्थापना के लिये देखो पत्र पूर्ण सं० ३१८ में।
- पू. ये महाशय कच्छ दरबार के थे। देखों म॰ मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० २६५ पर मुम्बई आर्थसमाज के मन्त्री श्री सेवकलाल कृष्णदास का पत्र। यह पत्र सेवकलाल कृष्णदास के पत्र में ही मेजा गया होगा।

२७४

पत्र (२६५)

[386]

[१२] पत्र राव बहादुर गोपालरावहरि देशमुख<sup>9</sup>

महादेव गोविन्द रानडे

श्राप देश के परम हितैषी हैं। हिन्दी जैसे सब देश पर दृष्टि रखते हैं। विशेष कृपादृष्टि कच्छ भुज देश पर भी कीजिये।

जिसे यथोचित सुशिचा हो, सत्य सत्य करेंगे यह भी आशा है क्योंकि इस समय

राबसाहब ? नाबालग हैं।

जो मैं कहीं इस समय आता तो आप सब मिलते। परन्तु फिर मुक्त को यह विदित न था यहां व्याख्यान [होते हैं] और और भी कुछ काम है। [आत:] कैसे आ सकता हूं। जो मैं राजपूताना की और आया और समय देखा जब आना होगा। आप को सूचना हो जावेगी। मैं जदीद (=नवीन) स्थान पर जाऊं तो ठीक है। उस अहाता का भी याद करोगे।

[26]

पत्रसारांश (२६६)

[३२९]

[मंशी बख्तावरसिंह शाहजहांपुर] जो श्रपना कल्याण चाहते हो तो श्रव भी श्राकर हिसाव समभा दो । [गिरधरलाल वकील श्रागरा]

[4]

उर्दू पत्र (२६७)

[330]

लाला शादीराम जी—ग्रानन्दित रही
वाजे हो कि ज्ञाज तुम्हारे पास ऋग्वेद के वरक १२३० सफे से १५२१ तक यानि न्ह सूक्त के

६ मंत्र से १११ [सूक्त के ""] मंत्र तक रवाने करते हैं, रसीद रवाने कर देना और ज्वालादक्त
ने जो लघुकोमुदी खरीदी है वह हमारे काम की नहीं उसको अखतियार है कि वह चाहे अपने खर्च
में रखे चाहे फरोख्त करे। हमारी सिद्धान्तकौमुदी मौजूद है। त्राज तुम्हारा वेदमाध्य पहुंचा, मालूम
हुआ कि तुम्हारे पास हपया बहुत कम आया है। अब तकाजा करके खरीदारों से हपया वसूल करो और
सब तरह आनन्द है।

श्रागरा ३ फरवरी ८० ।

3-7-50

द्यानन्द सरस्वती

१. यह पत्र सेवक्लाल कृष्णदास के पत्र में ही मुम्बई मेजा गया होगा।

२.इन का नाम खेंगारजी था। इस समय इन की आयु लगभग १३, १४ वर्ष की थी। ये कच्छ के

रांजा स्वर्गीय श्री प्रागमल के उत्तराधिकारी थे। देखो कब्छ कलाधर माग २ पृष्ठ ४६४। यु॰ मी॰

३. यह पत्र स्वामीजी महाराज ने वकील के द्वारा लिखवाया था। देखी ६ फरवरी १८८१ का पूर्ण संख्या ३३४ (पृष्ठ २७७) तथा ३३५ (पृ०२७८) का पत्र। यह पत्र लगभग ३० जनवरी को लिखा गया होगा। यु०मी०। ४. सन् ८० नहीं, १८८१ चाहिए [माघ शुक्ल ५ सं० १६३७]। मूलपत्र परोपकारिणी सभा, श्रजमेर

में सुरिच्ति है।

श्रागरा, सं० १९३७]

पत्र (२६९)

२७५

[3]

पारसल<sup>9</sup>

[338]

[सेठ निर्भयराम जी फरुखाबाद] १३ तोला सुरमा

[२९]

पत्रांश (२६८)

[332]

[मंशी वख्तावरसिंह शांहजहांपुर]

तुम अपने पत्रों को आगरे में लाओ वा आगरे में और किसी को पंच बध दो और स्टाम्प के कागज पर पञ्जायत का इकरार नामा लिख कर जल्दी भेज दो।<sup>२</sup>

[8]

उर्दू पत्र (२६९)

[333]

क्ष योश्म् क्षः

लाला शादीराम जी आनन्दित रही -

. वाजह हो कि खत तुम्हारा श्राया। हाल माल्म हुआ। और तुमने जो टिकट १०॥) के श्रीर तीन कर्में नामिक के मेजे सो पहुंचे खातिरजमा रक्खो। हमने इस माह का श्रावेद का भी अइ देखा। उसमें भी रालती वरशामद होती हैं। मगर हां क्रमें अखीर में वेशक रालतियां कम हैं। अगर इसी तरह ज्वालाद खयाल करेगा श्रीर काम में दिल लगावेगा तो आइन्दह रालती विलक्कल न रहेगी। उसको ताकीद कर दो कि प्रूफ को चार पांच दफे देखा करे, और एक मात्रा की भी रालती न रहा करे, तब छापने का हुक्म दिया करे। प्रूफ हमारे प्रन्थ माफिक दुक्स हो जाना चाहिए। अगर वह जियादह शुद्ध न करे तो अशुद्ध भी न करना चाहिए। उसकी नजर शोधन में बहुत मोटी है। देखो, नामिक के नोट में "छन्दस्युभयथा" ऐसा लिखना चाहिए श्रायत वह कहे और पसंद करे कि मैं भाषा नहीं बना सकता सिर्फ शोधा करूंगा तो हमको कबूल है। हम भाषा का बनाना उस पर से मौकूफ कर देंगे, और सिर्फ शोधने ही पर रख लेंगे। और जो तनख्वाह भीमसेन को देते थे यानी ५) उसको भी, बल्कि दो जियादह यानी ७) माहवारी देवेंगे, क्योंकि हम खूब जानते हैं कि वह बजुज लिखने और श्रोक बनाने के और कुळ नहीं कर सकता। वस अब उसको तुम बखूबी ताकीद करदो कि कोई एक भी गलती न रहने पावे। अगर अबकी मर्तवा एक भी गलती रही तो हम उस पर वेशक व शुवहा दएड करेंगे। और यह भी तहरीर करो कि बनारस में आज कल सब-जज यानी जजमातहत या शुवहा दएड करेंगे। और यह भी तहरीर करो कि बनारस में आज कल सब-जज यानी जजमातहत या शुवहा दएड करेंगे। और यह भी तहरीर करो कि बनारस में आज कल सब-जज यानी जजमातहत या

१. इस की सूचना पत्र सं० ३३४ तथा ३३६ में हैं। पूर्ण सं० ३३६ से जाना जाता है कि यह पारसल ३ फरवरी १८८१ (माघ शु० ५ सं० १६३७) को भेजा था।

२. यह पत्राश पूर्ण संख्या ३३४ (पृष्ठ २७७) में उद्धृत है। लगभग ६ या ७ फरवरी सन् १८८१ [माघ शुक्ल ८ या ६ सं० १६३७] को लिखा गया होगा। यु० मी०

३ श्रार्थधर्मेन्द्रजीवन तीसरा संस्करण पृ० ३६८, ३६९ पर मुद्रित । मूल पत्र परोपकारिणी सभा, श्रजमेर में सुरिच्चित होगा।

श्रागरा, सन् १८८१

सदरश्राला कौन है, जनाब रामकाली चौधरी साहब हैं या और कोई साहब हैं, और हम सब तरह

मुकरिंर यह है कि हम तुम्हारे पास ऋग्वेद व नामिक की शुद्धि अशुद्धि नमूने के तौर पर लिखकर रवाने करते हैं, ज्वालादत्त को देदेना और तुम भी देखना कि किस कदर रालती निकलती हैं। आगरा ७ फरवरी ८१ ई०१ दयानन्द सरस्वती

/[५] नं ६२

पत्र (२७०)

[338]

सेठ कालीचरण रामचरण जी त्रानिदत रही?।

विदित हो कि अब हमने मुंशी बखतावरसिंह के समय से सब काग्रजात काशी से मंगवा कर देखे और हिसाब की जांच पड़ताल की। और कई योग्य पुरुषों, जैसे बाबू पन्नालाल के गुमाशते जमनादास हिसाबदां, लाला गिरिधरलाल वकील जो यहाँ इस समय वकीलों में गणनीय हैं, मास्टर लक्ष्मगाप्रसाद श्रीर लाला हरिप्रसाद श्रादि को भी दिखाकर जांच पड़ताल कराई । जो भली प्रकार प्रत्यच और सिद्ध हो गया कि बखतावरसिंह ने टाइप, काग्जादि प्रेस की वस्तुओं और बाहर की छपाई में से हजारों रुपयों का गबन किया। जो भद्र पुरुष उसके कागजात को देखता है दांतों नीचे श्रॅगुली दबा शोक से कहता है कि उसने यह ऐसा बुरा काम क्यों किया। जिस किसी साहब को इस में सन्देह हो वह उसके कागजात अपनी आंख से देखं लेवे। जब हम पर उस की चोरी सिद्ध हो गई तो हम ने नालिश करने से पहिले चाहा कि उससे हिसाब समम लेना अवश्य उचित है। इस प्रयोजन से हम ने अलीगढ़ पहुंच कर अपने आम मुखतार ठाकुर मुकुन्दसिंह और भूपालसिंह की मार्फत उस के पास २२ नवम्बर १८८० को रिजेष्टरी चिट्टी इस विषय की भिजवाई कि "तम आगरे में आकर स्वामी जी को हिसाब समझादो. कि उसकी रसीद भी हमारे पास मौजूद है। जब वह न त्राया तब बहुत बाट देखने के पश्चात हमने उस के समय के सब रिजस्टरादि कागज यहां काशी से मंगा कर देखे। श्रीर उस को एक रजिस्टरी चिट्टी इस विषय की १९ जन० १८८१ को लिखी कि तुम एक सप्ताह के अन्दर यहां आकर हिसाब समझादो नहीं तो कारवाई जावते की की जावेगी। जिस का उत्तर २१ जन० का लिखा २४ जन० को हमारे पास इस मजमून का आया कि आप मेरे रजिस्टर श्रादि सब कागजात काशी से मंगा लें तो मैं २९ जन० को श्राकर २ दिन में सब हिसाब सममा दूँ। उस का उत्तर हम ने २४ जन० को रजिस्टरी कराकर यह लिख भेजा कि हम ने तुम्हारे सब कागजात काशी से १० जन० ही को मंगा लिये। तुम अवध्य २८ जन० को चले आओ। उस का उत्तर नहीं. भेजा। किन्तु गुम शुम लिखता है कि मुम को छुट्टी नहीं मिलती। शिवरात्री वा मई मास की छुट्टी

१. माघ शुक्ल ६ सं० १६३७ । यु० मी० ।

२. मूल पत्र आर्थसमाज फर्रेखाबाद में था। उसी से १६ दिसम्बर १६२६ को म० मामराज जी ने इस की प्रतिलिपि की। [पत्र पर तिथि या तारीख नहीं है]।

इ. मार्गशीर्ष कृष्ण ५ सोम० सं० १६३७ । यु० मी० ।

४. माघ कृष्ण ४ बुध, सं० १६३७। यु॰ मी०।

५. माघ कृष्ण ६ सोम॰ सं० १६३७ । यु॰ मी० ।

में आकर हिसाब सममा दूँगा। सो वह केवल दिन टला रहा है। उसके आने की आशा नहीं। उस के लिखने का विश्वास और ठीक ठिकाना नहीं है। अब हम ने सब कागजात ला० गिरिधरलाल वकील को सौंप दिये हैं। फिर हमने उन से भी एक रिजछरी चिट्ठी उस के पास भिजवाई कि जो अपना कल्याण चाहते हो तो अब भी आकर हिसाब समझा दो। उसने उत्तर लिखा कि मैं बहुत चाहता हूँ कि स्वामी जी से हिसाब का फैसला हो जावे, परन्तु छुट्टी न मिलने से मजबूर हूँ। जो आप पख्रायत करलें मुमे स्वीकार है। और लाला रामशरणदास मेरठ वाले तथा मुनशी इन्द्रमणि साहव मुरादाबाद वाले मेरे पंच रहे। उसको फिर उत्तर लिखा कि तुम अपने पंचों को आगरे में लाओ वा आगरे में और किसी को पंच बध दो और स्टाम्प के कागज़ पर पंचायत का इकरार नामा लिखकर जल्दी मेज दो। अब देखिये कि क्या उत्तर लिखता है। जो वह यहां आगया और पख्रायत करके हिसाब का फैसला कर दिया तो अच्छा है, नहीं तो यह मामला अदालत में अवश्य जावेगा। आप फिर हम को कोई दोष न देना, क्योंकि हम ने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण अपने समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड़ कर यह कार्य प्रहण किया है। और निम्नलिखित सज्जन पुरुषों ने इस प्रेस के लिये रुपया दिया है कि जिसकी वेवाकी भी अब तक नहीं हुई। जो बखतावर-सिंह ऐसा अनिष्ठ काम न करता तो देश की हानि न होती। जो सत्य पूछते हो तो यह वैदिक प्रेस इन्हीं योग्य पुरुषों की सहाय के वसीले से हुआ है कि जिन का विवेचन यह है।

| श्रार्य्यसमाज फर्रुखाबाद   | C00) |
|----------------------------|------|
|                            | ४२८) |
|                            | ३५०) |
| ,, देहरादून                | २५)  |
| ,, दानापुर                 | 18)  |
| राजा जयकृष्णदास जी         | E00) |
| लाला ईश्वरदास स्यालकोट     | २५)  |
| लाला चूड़ामिए लुधियाना     | 4)   |
| चौधरी जालिमसिंह रूपधनी     | 40)  |
| पं० सुन्दरलाल साहब इत्यादि | 300) |

इन्हीं में से कई मनुष्यों के नाम वसीयत नामा भी है। जो यह केवल हमारा ही धन होता तो कुछ पर्वाह न थी। परन्तु यह सब संसार का धन है। फिर भी चोरी से लेना सो यह कैसे पच सकता है। आप भी इस का उत्तर शीघ्र लिख भेजिये। और सेठ निर्भयराम जी से कह देना कि जब हम जयपुर जावेंगे तब आप को अवश्यमेव लिख भेजेंगे। और हम ने डेढ तोला सुर्मा पारसळ कर के भेजा है। उसकी रसीद भेज दीजिये। हम सब प्रकार से आनन्द में हैं। सब सभासदों को नमस्ते। और हमारा हिसाब भी उन से भिजवा देना।

[९ फरवरी १८८१]

द्यानन्द सरस्वती

१. पत्र पर तिथि नहीं दी गई । अगले [पूर्ण संख्या ३३५] पत्र के अन्तिम भाग से निश्चय होता है
कि यह पत्र ६ फरवरी सन् १८८१ (भाष शुक्क १० सं० १६३७) को लिखा गया था।

२७५

[देहरादून, सन् १८८१

[६] नं० ७०

पत्र (२७१)

[३३५]

लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि आप की चिट्ठी ९ ता० फ० १८८१ की लिखी नम्बरी ४०१ आज हमारे पास पहुँची। समाचार विदित हुआ। पण्डित सुन्दरलालजी प्रयाग वालों ने खजानची होना और अपर की दृष्टि से सब यंत्रालय का प्रबन्ध करना स्वीकार कर लिया है। और अनुमान है कि वे प्रेस को भी प्रयाग ही में अपने पास उठा मंगावेंगे। इस लिये अब वहां किसी ख़ज़ानची की आवश्यकता नहीं है। सब प्रबन्ध वे ही स्वतः एव कर लेवेंगे। इस वात का निश्चय अब हुआ है। इस लिए ख़ज़ानची के विषय में कुछ उत्तर नहीं लिखा था। और पण्डित प्रागदत्त के लिये भी अभी कुछ नहीं लिख सकते। यदि वे ज्वालादत्त की तरह शीघ्र लिखते होते तो हम उन को अपने पास रख लेते। और उन्होंने जो बालविवाहखण्डन बनाया सो बहुत उत्तम बात है।

श्रीर जो पं॰ सुन्दरलाल जी ख़ज़ानची के लिये लिखेंगे तो राधा कृष्ण के लिये लिखा जावेगा श्रीर परसों बख़तावरिसह के विषय में एक पत्र श्रापके पास भेजा गया है, पहुंचा होगा । वह धूर्तता कर रहा है। श्रीर श्रव यह भी सिद्ध हो गया कि उसने चोरी से श्रधिक पुस्तकें छपाकर वेच दीं। श्रव लाला गिरिधरलाल जी वकील ने उसको नोटिस दिया है। देखिये वह श्राता है कि नहीं। श्रीर सब हाल श्रापको परसों की चिट्टी में विस्तार पूर्वक लिख चुके हैं। सब सभासदों को नमस्ते पहुंचे।

[७]नं० ७१

पत्र मुचना (२७२)

[३३६]

लाला कालीचरण रामचरण जी आनिन्दत रहो<sup>४</sup>

श्रार्यसमाज फरुखाबाद में पुराने रजिस्टर सुरिद्धित थे। उन में उक्त समाज के पास श्राने श्रीर उस समाज से मेजे गए सब पत्रों की तिथि-वार सूची है। उन के श्रनुसार समाज की श्रीर से सारे ५७ पत्र श्री स्वामी जी की सेवा में गए। श्रन्तिम पत्र ता० ३ श्रक्टूबर सन् १८८३ को जोघपुर मेजा गया था। उनमें से २६।२।८१ के २३वें पत्र में यह सूचना है। म० मामराज ने सन् १६२७ में प्रतिलिपि की।

१. मूल पत्र आर्थसमाज फरुखाबाद में था। उसी से दिसम्बर सन् १६२६ को म॰ मामराज जी ने इस की प्रतिलिपि की।

२. यहां से आगो का पाठ फरुखाबाद के इतिहास (पू० १८१) में नहीं है।

३. माम शुक्ल १२ शुक्र सं० १६३७ । यु॰ मी०।

४. फरुखाबाद के मन्त्री ने नं० ४१८ का पत्र ता॰ २६।२।८१ को त्रागरा लिखा। उस में पत्र संख्या ७६ क्रीर ८४ का उत्तर है। श्री स्वामी जी का संख्या ८४ का पत्र क्रागली पूर्ण संख्या ३३७ पर छपा है।

ञ्चागरा, सं० १९३७]

पत्र (२७५)

२७९

[30]

पत्र सारांश (२७३)

[330]

[बखतावरसिंह शाहजहांपुर] तुम श्रवश्य २५ फ० को यहां पहुंच जाश्रो<sup>९</sup>।

[८] नं० ८४

पत्र (२७४)

[3 \$ 6]

लाला कालीचरण रामचरण जी श्रानन्दित रही?।

विदित हो कि कल बखतावरसिंह की एक चिट्ठी आई है जिस में उसने लिखा है कि मैं शिवरात्रि की छुट्टी में २४ फरवरी को चलकर २५ फ॰ को आपके पास पहुंचूंगा । और दो दिन में सब हिसाब सममा दूंगा । इस लिये आप को लिखते हैं कि आप ला॰ नारायणदास मुखतार को २५ तारीख तक यहां अवश्य भेज देवें कि उन के सामने सब हिसाब की सफाई हो जावे । हमने भी बखतावरसिंह के पास एक रजिस्टरी चिट्ठी आज भेज दी है कि तुम अवश्य २५ फ॰ को यहां पहुंच जाओ । सब सभासदों को नमस्ते ॥

श्रागरा १७ फ० १८८१<sup>3</sup> हस्ताच्चर द्यानन्द् सरस्वती

[३] नं० ८८

पत्र (२७५)

[३३९]

सेठ निर्भयराम जी आनन्दित रही ।

प्रकट हो कि ३ फ० को तुम्हारे पास एक पारसल श्रञ्जनकी मेजी थी"। सो उसकी रसीद श्रापने श्रश्च तक नहीं मेजी। न जाने पारसल पहुँचा वा नहीं, क्योंकि इतनी देर तो कभी न करते थे। जो वह पारसल पहुँच गया हो रसीद मेज दो। नहीं तो वैसा लिखो कि उसकी तला[श] की जावे। श्रीर हमने लाला कालीचरण रामचरण को भी परसों एक चिट्ठी मेजी हैं। श्रीर श्राज श्रापक[ो] भी लिखते हैं कि बखतावरसिंह शिवरात्रि की। छुट्टी [में] यहां हिसाब सममाने श्रावेगा। सो श्राप

२. मूल पत्र आर्थिमाज फरुलाबाद में था। उसी से म॰ मामराज जी ने दिसम्बर सन् १९२६ में इस की प्रतिलिपि की।

४. मूल पत्र आर्थसमाज फरुखाबाद में था। म॰ मामराज जी ने दिसम्बर सन् २६ में इसकी प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पृ॰ १६० पर भी छुपा है।

५. इस का संकेत पूर्ण संख्या ३३४ के ब्रान्त में भी है। यु० मी०।

६. कालीचरण जी फरुखाबाद को १७ फरवरी को (पूर्ण संख्या ३३७ का) पत्र लिखा गया। इस से विदित होता कि यह पत्र १९ फरवरी को आगरा से लिखा गया था।

१. यह पत्र सारांश त्र्रगले पूर्ण सं० ३३७ के पत्र के ग्रन्त में लिखा है। सम्भवतः यह पत्र भी १७ फरवरी १८८१ (फा॰ कु॰ ५ सं॰ १६३७) को या उस से एक दिन पूर्व लिखा गया होगा । यह पत्र रिजस्ट्री से मेजा गया था। यु॰ मी॰।

नार[1]यण्दास मुखतार [को] २४ फर्बरी तक यहां अवश्य भेज दीजिये। हमारी तो यही सम्मित है कि यह सामला घर ही में निमट जावे। जो वह आ जावेगा तो अच्छा है। नहीं लाचारी से अन्त को अदालत में जाना होगा। लाला कालीचरण जी ने लिखा था कि आप की ओर से नालिश न होनी चाहिये। सो हम भी यही चाहते हैं। सो आप लाला गौरीशंकर वकील से सम्मित लीजिये कि नालिश किस की ओर से हो। जो आप ही की ओर से हो तो अच्छा, क्योंकि वसीयतनामा भी आप के नाम है। और आपका धन भी छापेखाने में लगा है। प्रथम तो पंचायत में निमट जावे तो बहुत ही अच्छा है। दूसरे नहीं तो उस पर हिसाब फहमी की नालिश और जो जब भी न माने तो फोजदारी वा दीवानी में दावा किया जावे।

श्रीर जो तुम इस का प्रबन्ध कुछ न करोगे तो ऐसी लूट मार से हमारे पास के पुस्तकादि भी कोई लूट लेगा—फिर तो हम अपने समीप कुछ न रख सकेंगे । और वेदमाध्य आदि सब काम छोड़ देंगे। केवल एक लंगोटी लगा आनन्द में विचरेंगे। श्रव श्राप लाला नारायणदास को श्रवश्य भेज दीजिये कि बखतावर सिंह २५ फ० को श्रवश्य श्रावेगा । यह पत्र बावू जी श्रीर लाला जगन्नाथप्रसाद जी [को भी] दिखला दीजिये। इस में विलम्ब मत कीजियेगा ।

[१५] नं० १०९

पत्र (२७६)

[380]

श्रीयुत लाला मूलराज जी त्रानन्दित रहो<sup>3</sup>!

प्रकट हो कि पत्र आप कां २० फ० का लिखा पहुँचा । हाल माल्म हुआ । गोकरुणानिधि पहुँचने से खातिर जमा हुई । इस का अंग्रेजी तर्जमा जलदी करके हमारे पास रवाना कर दीजिये। हम भी उसको किसी अच्छे विद्वान् अंग्रेजी वाले से सुन लेवेंगे। और जो आपने वावा च्रयानन्द का हाल लिखा सो बहुत अच्छा है । परन्तु जब तक वे आयोपान्त निरुक्त [न] पढ़ लेवें तब तक अच्छी प्रकार नहीं खुल सकता। और आप जानते हैं कि हम को अवकाश बहुत कम है । और उन को १ घएटे वा २ घएटे अवश्य पढ़ना चाहिये। इसका हम ने यह विचार किया है, कि जो हम को अवकाश मिला तो हम, नहीं तो किसी अच्छे विद्वान् से उसकी सुक्ष्म व्याख्या लिख लेवें तो बहुत अच्छा उपकारहोगा। हम को अवकाश होता तो नहीं दीखता। जब कभी अवकाश मिलेगा तब च्यानन्द हमारे पास आ सकते हैं। अब हम आगरा से ५ वा ९ मार्च को चल कर १० मार्च को जयपुर पहुंचेंगे । जो पत्र आदि वा गोकरुणानिधि मेजें तो वहीं मेजिये। और लाला शिवदयान आज कल कहां हैं। और मुंशी बखतावरसिंह ने प्रेस में बहुत हानि की है। अब उस के मामले में पञ्चायत ठहर के इकरार

१. यहां से त्रागे का लेख स्वयं ऋषि के हाथ का है। पत्र पर इस्ताच् नहीं है। संशोधन भी ऋषि ने किया है। मूल पत्र त्रार्यसमाज फरुखाबाद में था। म० मामराज जी ने सन् १६२६ में उसकी प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास. ५०१८६ से १६० पर भी छुपा है।

२. यह पत्र १६ परवरी १८८१ = फाल्गुया कृष्या ५ सं० १६३७ को लिखा गया । देखो पूर्व पृष्ठ २७६ की टि०६। यु०मी०। ३. मृल पत्र हमारे संग्रह में सरिह्नत है।

४. श्री स्वामी जी जयपुर नहीं गये, परन्तु भरतपुर गए। देखो पत्र पूर्णसंख्या ३४२ (प० २८२)।

श्रागरा, सं० १९३७]

पत्र (२७७)

रदश

नामा कागज स्टाम्प पर लिखा गया है। हमारे पक्क बाबू छेदीलाल गुमारते कमसरियट और उस के पक्क लाला आनन्दलाल मन्त्री आर्यसमाज और स्रपक्क लाला रामशरणदास रईस मेरठ। और लाला गिरिधरलाल वकील आगरा हमारे वकील ठहरेहें। और मई मास में यह मामला निमट जावेगा।

श्रागरा हस्ताच्चर ३ मार्च १८८१ व्यानन्द सरस्वती

[३] नं० ११५

पत्र (२७७)

[\$89]

पिंडत गोपालरावहरि र जी आनिन्दंत रहो।

विदित हो कि आप का पुस्तक इसारे पास पहुँच गया है, और हमने उसके छपवाने का निश्चय पिछत ज्वालाप्रसाद भागव एडिटर सत्यप्रकाश प्रेस आगरा से किया है, और हमने दो कागज़ का नमूना आपके पास फर्श्वावाद भेज दिया है क्योंकि विदूर में आप का पता मालूम नहीं था। एक कागज़ १२) रीम वाला कि जो इस पर छपवाओंगे तो १) के ३५ जुज, और दूसरे ६) रीम वाले पर छपवाओंगे तो १) के ४५ जुज मिलेंगे, और पत्र के उत्तर में देर यों हुई कि ज्वालाप्रसाद के मिलने और कागज़ देखने में समय लगा,। यहां पर लाला नारायण्दास मुखतार आये थे, वे कहते थे कि आप विदूर में हैं। और आपको कागज़ के वास्ते ३०) पिहले देने पड़ेंगे, और इम फा० शु० ९ को जयपुर जावेंगे, और आप का पुस्तक हम लाला गिरिधरलाल वकील वेलनगञ्ज आगरा को सोंप देंगे। उन्हों से इस विषय में पत्र-व्ययवहार रिखये। आप अपने लड़के का यज्ञोपवीत अच्छी प्रकार करें।। मुन्शो बखतावरिसह के मामले की पञ्जायत हो गई है, हमारे पञ्ज बाबू छेदीलाल कमसरियट गुमाश्ते, उस के पञ्ज लाला आनन्दलाल मन्त्री आर्यसमाज और सरपञ्ज लाला रामशरण्दास रईस मेरठ और लाला गिरिधरलाज़ वकील आगरा हमारे वकील ठहरे हैं। मु० इन्द्रमिण जी का मुकदमा नम्बर पर चढ़ गया, अभी मिति नियत नहीं हुई।।

श्चागरा

हस्ताच्चर

७ मा० १८८१<sup>४</sup>

द्यानन्द सरस्वती

१. फाल्गु शुक्ल ३ बृह० सं० १६३७ । यु० मी० ।

४. फाल्गुग् शुक्ल ७ सोम, सं० १६३७। यु० मी०।

२. ये गोपालरावहरि दित्तिणी ब्राह्मण थे। फरुलाबाद में स्कूलों के इन्सपैक्टर थे। यह पत्र पीले रंग के बारीक कागज पर है। म॰ मामराज को यह तथा एक ख्रीर पत्र जो पृष्ठ १६३ पूर्ण संख्या २३६ पर छुपा है, पं॰ गो॰ रा॰ के पुत्र श्री मुकुन्द गोपाल बच्ची इन्दौर से (श्री द्वारकाप्रसाद सेवक द्वारा) नवम्बर सन् ३३ में प्राप्त हुआ था। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्चित है।

३. संभवतः दयानन्ददिग्विजयार्क।

[3]

[]

उर्दू कार्ड (२७८)

[३४२]

लाला रामसरनदास साहिब आनन्दित रहो ।

वाजेह हो कि कल यहां से रवानह होकर भरतपुर पहुँचेंगे । श्रीर हमने श्रार्थसमाज के नियम यहां छपवाये थे । वे ज्यादह नहीं। लिहाजा थोड़े श्राप के पास रवानह होते हैं। रसीद भरत-पुर में हमारे पास रवानह कर देना। सब सभासदों को नमस्ते।

स्वामी द्यानन्द सरस्वती श्रागरा ९ माच सन् ८१४। [३४३]

Latitude States

[७] पत्र (२८०) [३४४] श्रीयुत करनेल एच् एस् आल्कट साहब तथा एच् पी मेडम व्लेवस्तकी जी आनिन्द्त रहों ।

(१) प्रगट हो कि मेडम व्लेवस्तकी का पत्र १७ जनवरी १८८५ का लिखा पहुंचा, वर्तमान

विदित हुआ; उसका उत्तर लिखा जाता है। मैं सब काल में एक सी बात कहता हूं।

(२) जो आपने अपना निश्चय न बदलाया होगा तो गुप्त रक्खा होगा, जब कि मूलजी ठाकरशी के साथ बात हुई थी। मैं जानता हूं उस समय आप ईश्वर को मानते थे, अब कुछ दूसरी बात पहिली बातों से विपरीत देखने में आती है जो कि आपने मेरठ में की है, और इस किसी से संसार भर में विरोध करना नहीं चाहते सिवाय उनके कि जो अधर्म और अन्याययुक्त आचरण करें।

- (३) आर्यसमाज ठीक वैदिक मत पर है। उनके उद्देश में कुछ किसी प्रकार का फर्क नहीं है। और "श्राह्माव" जो कि आपका बड़ा भारी नियम है वह कभी पूरा २ नहीं बर्चा जा सकता, जब तक कि मजहबी तास्मुब और द्वेष बिलकुल दूर न हो जावे। मैं जानता हूं कि आप फिर भी आर्यसमाज के नियम विषय में भूलती हो। पहिले भी कहा गया था कि आर्यसमाज के नियम से दूसरी किसी सभा के जो नियम मिलते हैं वे उसके अनुकूल ही है, उससे विरुद्ध कैसे अनुकूल हो सकते हैं ? यह प्रत्यन्त है कि उन दोंनो में से एक ही सत्य होगी, अर्थात् सत्य के विरुद्ध भूठ, और भूठ के विरुद्ध सत्य सदैव होता है।
- (४) और आप बार २ लिखती हैं कि "पोप" के भी ऐसे ही नियम थे, सो पोप और आर्यसमाज के नियमों में पृथ्वी, आकाश का अन्तर है। आय्यों के नियम विद्यामृत के अनुसार और

- २. ७ मार्च के पूर्ण संख्या ३४१ (पृष्ठ २८१) के पत्र में फा० शु० ६ श्रर्थात् ६ मार्च को जयपुर जाने का विचार लिखा है । षुनः भरतपुर जाने का निश्चय किया होगा ।
- ३. इस पत्र के साथ 'आर्यसमाज में दाखिल होने की दरस्वास्त' और ''आर्यसगाज के आसूल'' का उर्दू में छपा एक कागज है। ४. फाल्गुन शुक्ल ६ बुध, स० १९३७ । यु० मी० ।
  - ५. इस रजिस्टर्ड पत्र की सूचना पूर्ण संख्या ३४४ (पृष्ठ २८६) के ऋन्त में है। यु० मी०।
  - ६. मासिक परोपकारी (श्रजमेर) कार्तिक सुदी १ सं० १६४६ से लिया गया।

१. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिव्त है।

पोप के नियम विद्या से विरुद्ध, स्वार्थ से भरे हुए हैं, और जो ऐसे ही विना विचारे कोई आपके नियमों को भी कह देवेगा तो आप क्या उत्तर दे सकेंगी।

(५) सन् १८७९ में करनेल आल्कट साहब से साहरनपुर में हमने कह दिया था कि हमारे पास कोई अङ्गरेजी का पूरा २ विद्वान नहीं है, इसीलिए हमको अङ्गरेजी चिट्ठी के उत्तर देने में कठिनता होती है। इस कारण अङ्गरेजी पत्रों का उत्तर आप ही दिया करें, और जिसका उत्तर हम से चाहें उसको नागरी कराके हमारे पास भेजा करें, क्योंकि मैं एक ही भाषा का उपदेशक हूं दूसरी भाषा में कठिनता पड़ती है। जब कर्नेल आल्कट साहब जेनेरल कौंसिल में मेरे प्रतिनिधि थे तो फिर मेरा नाम लिखने में क्या आवश्यकता थी, जो चाहते वे करते।

(६) चाहे कोई हो जब तक मैं न्यायाचरण देखता हूं मेल करता हूं श्रीर जब श्रन्यायाचरण

प्रकट होता है फिर उससे मेल नहीं करता, इस में हरिश्चम्द्र हो वा अन्य कोई हो।

(७) और कोई मुख्य बात मुक्तको विस्मरण नहीं हुई। और जब डिस्नोमा आया था, उसका यही प्रयोजन था कि थियोसोफिकल सुसाइटी आर्यसमाज की शाखा होना चाहती है। अब वह बात वैसी नहीं रही जैसी की तब थी, इस लेख का क्या प्रमाण होसकता है, और जब तुम्हारा डिस्नोमा आया तो हम ने उसकी पहुंच लिखी थी, न यह कि हम तुम्हारे सभासद् होगए।

(८) बस, जैसा आप दुष्टजनों को सभासद नहीं करते वैसे ही आर्यसमाज भी नहीं करता, आर्यसमाज के नियमों में देख लो कि "सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिए"

यह नियम पड़ा है वा नहीं ?

(९) श्रौर मैं कोई नवीन मत चलाना नहीं चाहता, किन्तु सनातन वेदमत का प्रकाश करता हूं। जो न मानेगा उसकी हानि होगी, मेरी कुछ हानि नहीं। जैसी मुक्त से श्राप सत्यभाव से प्रीति रखते हैं त्रैसे ही मैं भी रखता हूं। श्रौर श्रापसे क्या सब सज्जन पुरुषों से मेरी वैसी ही प्रीति है।

(१०) श्रौर परस्पर संसार की उन्नति करने में सहायक होना ही बहुत अच्छी बात है। श्रौर मैं श्रपनी सामध्ये के श्रनुसार वेद का उपदेश करता हूं। सिवाय उपदेशक के श्रौर मैं कुछ श्रीकार नहीं चाहता। तुम मुक्तको कहीं समासद् लिख देते हो, कहीं कुछ लिख देते हो; मैं कुछ बड़ाई श्रौर प्रतिष्ठा नहीं चाहता, श्रौर जो मैं चाहता हूं वह बहुत बड़ा काम है, सो श्राशा है कि ईश्वर की द्या, श्रौर सज्जन तथा विद्वानों के सहाय से कुतकृत्य हूंगा।

श्रव जो कर्नेल श्राल्कट साहव ने लिखा था उसका उत्तर यह है कि मुक्त को श्रवकाश श्रव जो कर्नेल श्राल्कट साहव ने लिखा था उसका उत्तर यह है कि मुक्त को श्रवकाश बहुत कम है। जब मैं मुम्बई श्राऊंगा तब श्राप को कुछ श्रवकाश दूँगा, वा जब वेदमान्य पूरा होजायगा तब श्रवकाश मिलेगा। श्रव श्राप श्राप श्रीर कार्य्य सिद्ध न हुश्रा तो क्या लाम होगा। श्रीर दामोदर से कह दीजिये कि सेवकलाल कृष्णदास ने हमारी रजिस्टरी चिट्टी का उत्तर नहीं मेजा सो उससे पूछें कि क्या कारण है। जैसा वह कहे हमको लिख मेजें।

श्रीर सबसे नमस्ते कह दीजिये। श्राज इम भरतपुर से जयपुर जाते हैं। इस्ताचर भरतपुर १९ मा० १८⊏१° २८४

[2]

उर्दू पत्र (२८१)

[386]

चौधरी जालिमसिंह जी स्थानन्दित रही।

वाज्ञेश्व हो कि पं० भीमसेन रुखसत पर गया था। उसने श्रव तक कुछ हाल नहीं लिखा श्रीर न वह श्राया। सो तुम इस खत के देखते ही उसका हाल लिखो कि क्या वात है। क्या उस ने हम को धोका दिया है हम उस को ऐसा नहीं सममते थे, सो तुम जल्दी लिखो। श्रगर उस ने धोका दिया है तो लिखो कि फिर दूसरी चिट्टी श्राप को लिखें। हम श्राज भरतपुर से जयपुर जावेंगे। श्राप भी सैर करना चाहें तो श्राजावें।।

भरतपुर १९ मार्च सन् १८८१२

स्वामी द्यानन्द सरस्वती

[9]

कार्ड (२८२) श्रो३म

[३४६]

रम ता० २२ मार्च ⊏१³

लाला कालीचरण रामचरण जी आनंदित रहीं

हम प्रसन्नता पूर्वक जयपुर में पहुंच के गंगापोल दरवाजे के वाहर वदनपुरा में अचरोल वाले ठाकुरों के बाग में ठहरे हैं। श्रीर श्राज पंडितों के विषय में जो १००) के वहां से श्राये थे, उनका हिसाब सेठ निर्भयराम की दुकान पर भेजते हैं। श्रव मार्च की ता० १ तक हमारे पास २)के वाकी रहे हैं। इस लिये श्राप १००) के की हुंडी करवा के जयपुर में हमारे पास शीघ्र भिजवा दीजिये। हम श्रागरे से चल के भरतपुर में १० दिन रहे। श्रीर वहां से चल के ५० रविवार का यहां पहुंचे। हम सब प्रकार प्रसन्न हैं। श्राप लोग भी होंगे। सब से हमारा नमस्ते कह देना।

द्यानन्द् सरस्वती

[8]

पत्र-सूचना (२८३)

[586]

[सेठ निर्भयराम, फरुखाबाद की दुकान] पिंडतों के १००) रु० के हिसाब के सम्बन्ध में ।

१. मूलपत्र पं० विष्णुलाल जी एम० ए० बरेली निवासी के पास था। उन्हीं के पाम से हमने इस की प्रतिलिपि की थी।
२. चैत्र कृष्ण ४ शनि, सं० १९३७। यु० मी०।

३. चैत्र कृष्णा ७ मंगल, सं० १६३७ । यु० मी० ।

४. सारा कार्ड ऋषि की अपनी लेखनी से लिखा है। जयपुर से लिखा गया है। कार्ड पर जयपुर मार्च २२ की मुहर है। पता भी ऋषि के अपने हाथ का लिखा हुआ है। पं० लेखरामकृत जीवनचरित पू० ५४२ पर योड़ा सा अन्तिम अंश उद्धृत है। मूल कार्ड आर्यसमाज फरुखाबाद में था। सन् १६२७ में मा० मामगज ने इसकी प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास नामक प्रन्थ के प्०१६१ पर भी छुपा है।

प्र. चैत वदी प्र सं० १६३७=२० मार्च सन् १८८१।

इ. इस पत्र की सूचना पूर्ण संख्या ३४६ पृष्ठ (२८४) में हे । यु॰ मी॰।

जयपुर, सं० १९३८]

पत्र (२८४)

रद्ध

[4]

पत्र (२८४)

[386]

ता० ३१ मार्च १०० [१००१]

कुपाराम स्वामी आदि आनन्दित रही?।

पत्र तुम्हारा त्राया समाचार जाना । त्रागरे से भरतपुर त्राये त्रौर वहां से त्राकर यहां जयपुर में ठहरे हैं। ईश्वर विषय में एक व्याख्यान भी यहां हुआ था श्रीर भी श्यायद होगा। कलकत्ते की सभा आदि के साथ इसको लिखने छपवाने का अवकाश नहीं, वेदमाध्य का काम बहुत है। तुम को अवकाश हो लिखो छपवावो । अनुभ्रमोच्छेदन और गोकरुणानिधि छप चुके हैं, वेदमान्य के श्रंक के साथ तुम्हारे पास भी पहुंचेंगे। भागलपुर, जवनपुर, काशी, मिर्जापुर श्रादि में मुसलमानों का उपद्रव हमने सुन लिया । मुंशी इन्द्रमिए का मुकदमा भी इलाहावाद में है अभी कुछ सिद्धान्त नहीं हुआ है।

दांत की ओषधी

माजूफल, मोरेठी, पपरिया कत्था, रूमी मस्तगी, नीला थोथा, ये पांच चीज बराबर अर्थात् आध २ पाव से कम न हों। नीलाथोथा को अग्नि पर फुला के थोड़ा सा जल कड़ाही में रख के बुमा ले और बुमा के शीघ्र निकाल के पांचों चीजें अलग २ पीस ले उन पांचों की बराबर आक के जड़ की छाल अर्थात पृथिवी में से खोद के घो डाले जिस से मिट्टी कंकर न रहे। छाल को छोटी २ काट के जिस जल में नीला थोथा बुफाया है उसमें छः ही चीजें डाल के लोहे की कड़ाही में लोहे की मुसली से कूटे। जब महीन हो तब निर्वातस्थान में पीसे, जब तक श्रांजन के समान न हो जाय पीसता जाये पीछे किसी शीशी में भर रक्खे। दांतोन करके पीछे अंगुली से दांत और मसूरों में लगावे। इससे दांत पृष्ट रहेंगे न हलेंगे न गिरेंगे न पीड़ा होगी। सब से हमारा नमस्ते कह देना ।

सवाई जयपुर

दियानन्द सरस्वती

इस समय यह पत्र श्री पं० श्रमरनाथ जी वैद्य शास्त्री देहरादून के पास है। इस पत्र की प्राप्ति श्री डा॰ केदारनाथ जी को कैसे हुई, उस का वर्णन श्री पं० ग्रमरनाथजी वैद्य ने इस प्रकार किया—''यह पत्र किसी प्रकार एक भारतीय आर्थ ठेकेदार वरमा देश में ले गया, जो कि वहीं रहता था। वह रोगी हो गया, उसकी चिकित्सा करने के लिये डा॰ केदारनाथ (देहरादूनवासी) जो सैनिक विभाग में नियुक्त थे, उसके घर गये। उनकी बैठक में टंगा हुआ यह पत्र देखा पढ़ा, तत्काल उनकी इस पत्र को प्राप्त करने की इच्छा हुई। जब रुग्ण महाशय को देख कर लीटने लगे तो उन्होंने शुल्क (फीस) देनी चाही पर डाक्टर जी ने कहा कि मैं शुल्क न लूंगा, मुक्ते तो मेरे गुरु जी का यह पत्र दे दो, मैं इसको फिर जहां से (देहरादून) आया वहीं ले जाऊंगा । डाक्टर जी के आप्रह को टाल न सके । डाक्टरजी पत्र प्राप्त कर सन्तुष्ट हो गये । जब वे अवसर प्राप्त कर भारत आये तो सुरिव्वितरूप से पत्र साथ ले आये।

श्रनुमान १२ वर्ष हुए मैं डा॰ केदारनाथ जी को मिलने उनके घर गया, उन्होंने कहा मेरा शरीर

१. सन् १८८१ चाहिए। भूल से १८८० लिखा गया है। चैत्र शुक्ल २, बृह० सं० १६३८ ।

२. हाथी छाप के वारीक कागज पर सारा पत्र ऋषि के ही हाथ का लिखा हुआ है।

३. मूल पत्र इस समय डा॰ किदारनाथ जी के पास देहरादून में है। म॰ मामराज ने वहीं से उसकी प्रतिलिपि ता॰ २८ दिसम्बर सन् १६३२ को की थी।

[जयपुर, सन् १८८१

र⊏६

[3]

पत्र (२८५)

[ 386 ]

चौधरी ठाकर जालिमसिंह जी आनिन्दित रही।

मेरा विचार जयपुर में १५ दिनों तक ठहरने का है। पश्चात् अजमेर जाना होगा। यहां के मनुष्यों का सुधार असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। बहुत कालमें सुधरेंगे तो सुधरेंगे, नहीं तो अधिक बिगढ़ जायंगे। अब देखिये कि जैसी भीमसेन की इच्छा थी वैसा ही १५) क्येये मावारी और१)एक क्येये हाथ खर्च और खाने में ३) ६० से कम नहीं लगते। इस ने एक महिना कि जब तक उस का मासिक पूरान हुआ था, तब तक काम भी अच्छा करता था। अब ठीक २ नहीं करता। ये लोग भीतर के मैले और उपर के गुद्ध दिखलाई देते हैं। अच्छा, जब तक बनेगा तब तक रखना होगा। वहुत अपराध करेगा तब निकाल देना पड़ेगा। देखिये मैंने इस से कहा था कि जो तेरा भाई रसोई कर सके तो लाना, नहीं [तो]आपके मार्फत रसोई था लाने का कहा था। परन्तु लोभ का मारा अपने महामूर्ख जड़ बुद्धि को ले आया । आज इसको रसोई बनाते १५ दिन होचुके, कुछ भी न आया और न आगे आने की आशा है। आज भी इसने रसोई जला दी। अब आपको मैं लिखता हुं जो कोई रसोई या चतुर और धर्मात्मा आप की जान में हो तो यहां जयपुर में भेज दीजिये। और जो वहां न मिल सके तो लिखिये। फिर यहां से तजवीज हो जायगा। सब से मेरा नमस्ते कह दीजियेगा।

मि० चै० शु० ८ गुरुवार सं० १९३८, ता० ७ मार्च<sup>3</sup>।

[ दयानन्द सरस्वती ] ( जयपुर )

[ ? ]

पत्र ( २८६ )

[ 340]

श्रोश्म भ

चोबे कन्हैयालाल जी आनिन्दत रही नमस्ते।

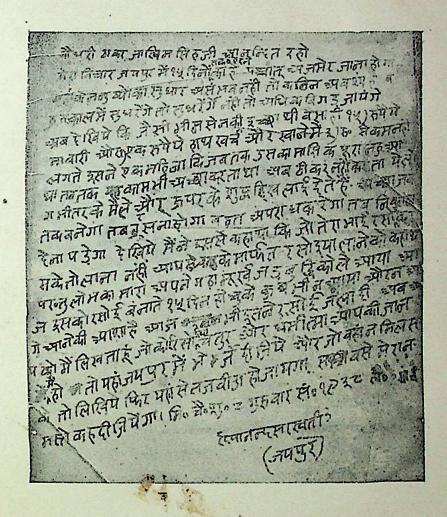
विदित हो कि पत्र आप का आया, समाचार विदित हुए। आप ने प्रश्न किये सो सब हमारे पुस्तकों में उत्तर सहित लिखे हुए हैं। उन में देखने से सब बातें विदित हो सकती हैं। तुम ने प्रथम ही

श्रस्वस्थ्य रहता है स्वामी जी महाराज का मेरे पास एक स्मृति पत्र है जिसको मैंने दूर देश से लाकर बड़े प्रयत्न से सम्भाल रक्खा है, कहीं नष्ट न हो जाने यही चिन्ता है—श्राप ठीक समय पर पहुँचे । ये शब्द उन्होंने श्रद्धा प्रेम भरे हृदय से कहे श्रीर शीशे में जड़ा हुश्रा पत्र मुक्ते सौंप कर निश्चिन्त हो गये।" यु॰ मी॰।

- १. मूल पत्र पं विष्णुलाल जी के पास था। सारा पत्र ऋषि के अपने हाथ का लिखा हुआ है।
- २. ऋर्थात् ऋपने भाई ख्यालीराम को । ख्यालीराम लायलपुर जिला एटा का रहने वाला था ।
- ३. ७ एपिल १८८१ चाहिये।

४. यह पत्र पहले में मुन्शीराम जी के संग्रह में छुपा था। इसकी उन्होंने परोपकारिणी सभा के पास पड़ी हुई मूल पत्र की नकल से ही छापा था। पक्षात् मूल पत्र की चीवे कन्हैयालाल जलालाबाद वालों के भतीजे श्री यज्ञदत्त जी से ६०११) देकर ता० ७ जनवरी सन् २७ को म० मामराज जी ने फरखाबाद में खरीदा था। श्रव उसी से शुद्ध कर के छापा है। म० मामराज ता० ३ से ७ तक जलालाबाद, फतेगढ़ श्रादि में इसी पत्र के प्राप्त करने में लगे रहे थे। मूल पत्र मुंशी समर्थदान का लिखा हुआ है और इस्ताच् श्रमृषि के हैं। लिफाफे पर पता इस प्रकार लिखा हुआ है—

## ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन।



ऋषि द्यानन्द सरस्वती का श्राचन्त स्वहस्तितिस्ति पत्र । पृ० २८६ पर मुद्रित ।

ब.र ये प्रश्न किये हैं इस लिए इस दक्ते तो सब के उत्तर देते हैं। परन्तु आगे हम से प्रश्न करोगे तो हम उत्तर नहीं देंगे, क्योंकि हम को काम बहुत हैं इस कारण से समय बिलकुल नहीं मिलता। उत्तर (१) संध्योपासन और गायण्यादि नित्यकर्म द्विजों आर्थात तीनों वर्णों के लिए एक ही हैं। तीनों वर्ण गुण कर्मों से माने जायेंगे, जन्म से नहीं। शूद्र जो विद्यादि गुणों से हीन है इस कारण से उसे संध्योपासन नहीं आसकता। इसलिए वेद के किसी मन्त्र को याद करके जपा करें।

ड॰ (२) कायस्थ श्रंबष्ठ हैं, शूद्र नहीं। इस विषय में संनेप से लिखा है। विस्तार पूर्वक शास्त्रों के प्रमाण देकर लिखने को समय नहीं है।

ड० (३) मुसलमानादि अन्य मत वाले वैदिक मत में आवें तो वे जिस वर्ण के गुण और कर्म युक्त हों उसी वर्ण में रह सकते हैं। विवाह और खान पानादि व्यवहार भी अपने समान वर्ण के साथ करें। आज कल के आर्थ्य लोग उनके साथ उक्त व्यवहार नहीं करेंगे, इसलिये अपने लोगों में ही करें और मत वैदिक रक्सें। इस में किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती।

तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार संत्रेप से दिये हैं। विस्तार पूर्वक हमारे बनाये प्रन्थों में

देख लो।

ता० १६ अप्रैंत ° सं० १८८१ ई०

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती स्थान जयपुर राजपूताना

[8]

पत्र (२८७)

[३५१]

लाला रामशरणदास जी त्रानन्दित रहो। २ हमने एक कार्ड भेजा था अधापके पास पहुँचा होगा।

श्चापने श्चागरे से कागज मंगवा लिये वा नहीं, क्यों कि उस कागज को श्चापको भी पहिले देखना चाहिये। लाला गिरधरलाल जी ९ ता० मई [१८८१] को तुम्हारे पास श्चाने को लिखते हैं सो श्चाप भी उनसे पत्र द्वारा निश्चय करलें। श्चौर उसी दिन की इतला बखतावरसिंह को भी करदें कि श्चमुक मिति को इस काम का श्चारम्भ होगा कि जिससे वह भी नियत समय पर उपस्थित हो जावे। श्चौर श्चब श्चापाखाना प्रयाग में श्चा गया। सब काम दुक्स्ती से चलने लगा। श्चब श्चाप लाला

चौबे कन्हैयालाल प्राम जलालाबाद परगना कन्नौज जिला फर्व लाबाद ।

मूल पत्र लिफाफे सहित हमारे संग्रह में सुरिच्चत है।

१. वैशाख कृष्ण २ शनि, सं० १६३८। यु० मी०।

र. यह पत्र स्वर्गीय ला॰ रामशरणदास जी रईस मेरठ वालों के पुराने पत्रों में से म॰ मामराज जी तथा लाला जी के पोते बाबू परमात्माशरण तथा श्री पुरुषोत्तमप्रसाद जी ने जुलाई सन् १६८५ में लोजा। मूल पत्र उन्हीं के यहां सरिवत है।

३. सम्भवतः पूर्णं संख्या ३४२ (पृष्ठ २८२) का कार्ड । यु॰ मी॰ ।

४. पत्र में तिथि-संवत् कुछ नहीं है । प्रकरण तथा अनुमान से प्रतीत होता है कि वैशाख शुक्ल ४ संवत् १६३८ मंगलवार ता ३ मई १८८१ को मेरठ मेजा गया होगा । शादीराम को भी वहां से बुला लीजिये। क्योंकि अब पंडित सुन्दरलाल जी वहां का सब प्रबन्ध कर लेंगे। उन बिचारे ने यथाशिक ऐसे समय पर काम दिया। सो बहुत कुछ अच्छा किया। और हम शादी० को लिख भेजेंगे। यहां से हम कुछ दिनों में अजमेर को जावेंगे। सब से हमारा नमस्ते कह दीजिये॥ और यहां जयपुर के लोगों के भाग्य मन्द हैं। कुछ भी धर्म की उन्नति वा कहने सुनने को उद्यत नहीं होते। सन्धिविषय छप गया, अब आप लोग पढ़ने पढ़ाने का आरम्भ क्यों नहीं करते। और नामिक भी अब छपकर आता है।

[30]

पत्र (२८८)

[३५२]

श्रो३म

## प्रसन्नता पत्र १

विदित हो कि मुनशी समर्थदान मंगलदान जी के पुत्र प्राम नेठवे ताल्लुका रामगढ़ रियास्त सीकर राज जयपुर के रहने वाले हैं। इन्होंने मुंबई में हमारे वेदभाष्य कार्यालय का काम एक वर्ष तक बड़े प्रेम परिश्रम और चतुराई से किया। इन के काम देखने और ये हमारे पास भी कई दिन तक रहे, इस से हम ने निश्चय किया है कि यह पुरुष धार्मिक, निष्क्रपटी, सचा, उद्योगी, परिश्रमी, चतुर, सभ्य, सुशील, और चाल चलन का बहुत ही अच्छा और श्रेष्ठ है। इस लिये हम बहुत प्रसन्न होके लिखते हैं कि जो कोई महाशय इनको उन्नति देंगे तो हम बहुत प्रसन्न होंगे। और हमें पूरी २ आशा है कि इनके आधीन जो कार्य होगा उसको यह अच्छे प्रकार पूर्ण क्येंगे। हम ने यह प्रसन्नता पन्न इनको बड़ी प्रसन्नता पूर्वक इस लिये दिया है कि किसी नये स्थान में ये जाय तो अज्ञान लोगों को भी इन के सद्गुण प्रगट हों।

मिती वैशाख शुक्त ६ सं० १९३८। तारीख ४ मई सन् १८८१

हस्ताचर दयानन्द सरस्वती स्थान चयपुर (राजपूताना)

[8]

पत्रांश (२८९)

[३५३]

भाई जवाहरसिंह [मनत्री ऋार्यसमाज, लाहौर]।

मेडम ब्लेवेटस्की के पत्र का उलथा तुम ने भेजा था, सो आ गया। और उस का उत्तर भी हम ने मुम्बई में भेज दिया?।

१२ मई ८१3

१. इसकी छपी हुई प्रति ऋर्यिसमाज फरुखाबाद में है। उसी से म॰ मामराज जी ने सन् १६२७ में इस की प्रतिलिपि की। मूल पत्र मु॰ समर्थदान के घर में होगा।

२. पं० लेखरामकृन जीवनचरित पृ० ८४० पर उद्घृत । श्रजमेर से ।

३. वैशाख गुक्ल १४ वृह०, सं० १६३८।

श्रजमेर, सं० १९३८]

पत्र (२९१)

359

[90]

पत्र (२९०)

[348]

लाला कालीचरण जी रामचरण जी त्रानिद्त रही?।

यदनाथ मित्र को जो तुम ने ४०) ह० मासिक पर नियत किया है सो ठीक है। परन्तु इस पाठशाला में अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रहना चाहिये । श्रीर इस में केवल लड़के ही पढ़ते हैं अथवा हमारे रईस लोगों में से भी कोई पढ़ता है। स्रौर उस पाठशाला में से कोई विद्यार्थी अच्छे निकले वा नहीं, क्योंकि शाला को एक वर्ष हो चुका है। चौवे तोताराम का हाल लिखा सो जाना। उस का मिजाज तेज है सहन शक्ति बहुत कम है। जयपुर में हम डेढ़ मास पर्यन्त रहे। वहां श्रभी राज्य प्रवन्ध में गड़बड़ सा है। श्रीर सब सर्दार लोग तो मिले थे, परन्तु राजा श्रभी नहीं मिला। इस लिये कि उनके बाधक लोग बहुत हैं। वहां पर वेदधर्म के प्रकाश की बडी आवश्यकता है सो हमने कुछ २ वहां संस्कार भी ङाला है। ईश्वर करे कुछ फल लगे। हिसाब के विषय में जो तमने लिखा सो यह बख्तावरसिंह का गड़बड़ था। श्रव प्रयाग में हिसाब ठीक हो रहा है। सो सबको विदित होगा। परन्त सीधा हिसाब तो आप लोग जानते हैं कि प्रति प्राहक दोनों वेदों का चार वर्ष का २५॥) चाहिये। इसी हिसाव से देखकर भेज दो। श्रौर लाला निर्भयराम के पास भी हिसाब होगा। उनसे भी समक सकते हो। आप को भी विदित करते हैं कि आर्य्यसमाज लाहीर से एक अखबार अंगरेजी भाषा में जारी होने वाला है। इस से यह अभिप्राय है कि उसके द्वारा वेदोक्त ब्यार्थ्य धर्मी तथा ब्यार्थ्य समाजों की कार रवाई राज प्रधान श्रंगरेज लोगों को भी विदित होती रहे। वरन विलायत वालों पर भी प्रगट होता रहेगा। इसके प्रवन्ध में आर्य्यसमाज लाहीर और मेरठ की अन्तरङ्ग सभा की ठीक २ अनुमति हो गई है। इसके नफे नुकसान में सहभागी रहेंगे। मेरी अनुमति है कि आप लोग भी इनके शामिल होत्रो क्योंकि इस्से आमदनी और तुम्हारे धर्म तथा आर्य्यसमाजों की कार्यवाई का ठीक २ वृत्तान्त गवर्नमेयट तथा सम्पूर्ण अक्ररेजों को विदित भी होता रहेगा, जिस्से श्रमेक श्रम्छे लाभों की श्राशा हो सकती है। श्रीर श्रनुमान होता है कि यह पत्र विलायत के बढ़े २ ठिकानों में पहुंचेगा, इस से आशा है कि लाभ भी अच्छा होगा। परिडत गोपालरावहरी ने जो एक मुदर्रिस हमारे पास भेजने को कहा था वह अभी तक नहीं आया। जिसको १५ दिन का अर्सा हो गया। सो उन से कहना कि क्या कारण है जो अभी तक नहीं आया। किमिषकम्।

वैशाख शुक्त १४ संवत् १९३८।

[8]

पत्रांश (२९१)

[३५५]

[चुरू के सेठों के सरपश्च]3

एक अच्छी वर्षा होने पर हम अजमेर से कहीं को रवाना हो सकेंगे। क्योंकि उदयपुर मेवाइ की तरफ भी कुछ हमारे बुलाने का विचार हो रहा है।

१. म॰ मामराज ने मार्च सन् १६२७ में आर्यसमाज फरुखाबाद के पुराने पत्रों में से खोजा था। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिक्ति है। २. १२ मई सन् १८८१। यह पत्र आजमेर ने मेजा हुआ है।

३. यह पत्रांश पूर्ण संख्या ३५६ में उद्धृत है।

290

पत्र (२९२)

[३५६]

[3]

भोम्

सेठ निभयराम जी आनिन्दत रहो।

यह पत्र आप को आवश्यक समम कर इसलिए लिखा जाता है कि आप इस को उपसभा में सब लोगों को सुना देवें। मुंशी कालीचरण रामचरण जी के पत्र से विदित हुआ कि आप लोगों की पाठशाला में आर्थ्यभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अङ्गरेजी वा उर्द फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिस्के लिए यह शाला खोली गई है सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन आपका यह हजारहा मुद्रा का व्यय संस्कृत की आर से निष्फल होता भासता है। हम ने कभी परीचा के कागजात वा आज तक की पढ़ाई का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्थ्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन संस्कृतरूपी मातृभाषा की जगह श्रङ्गरेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। श्रङ्गरेजी का प्रचार तो जगह २ सम्राट् की श्रोर से जिनकी यह मातृभाषा है भले प्रकार हो रहा है। अब इस्की वृद्धि में हम तुम को इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। श्रौर न सम्राट् के समान कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी श्रति प्राचीन मानुभाषा संस्कृत जिस्का सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। श्रीर यही व्यवस्था देखकर संस्कृत के प्रचारार्थ श्राप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तौ यह भी उचित कर्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्ट के सिद्धि पर दृष्टि रक्खी जावै । अब इस के साधनार्थ यह होना चाहिये कि कुल पठन पाठन समय के छः घरटों में ३ घरटे संस्कृत, २ घरटे अङ्गरेजी और १ घरटा उद् फारसी पढ़ाई जाया करे। श्रीर प्रति मास संस्कृत की परीचा अन्य पिखतों के द्वारा हुआ करे। श्रीर वे प्रश्नोत्तरों के कागजात इमारे पास भेजे जाया करें। अभी तक कुछ फल संस्कृत में इस शाला से नहीं लगा। सो इस लिये ऊपर जो कुछ लिखा गया उस्को वर्त्ताव में लाखो तो अपने धभीष्ट के सिद्धि होने की आशा कर सक्ते हैं। किमधिकं सङ्गेष ।

श्राजकल हम ऐसे देश में हैं जहां पर इस ऋतु के श्रेष्ठ फल अर्थात् श्राम पके तौदरिकनार कच्चे भी नहीं मिलते। उस श्रोर इस्की फसल कैसी हुई है। यदि वहां श्राम फले हों तो एक बार मुंबई श्राम श्रथवा श्रोर प्रकार के जो तुम्हारी समक्त में श्रच्छे हों दो सौ तीन सौ रेल द्वारा प्रवन्ध करके मेजदो। परन्तु वहां से गहर श्राम रवाने करना जिस्से यहां पर ठीक २ श्रान पहुंचें। यदि डाक गाड़ी में रख दोगे तो शायद ठीक रहेगां। हमारे पास जयपुर के मुकाम पर चुक्र के सेठों के सरपश्च का पत्र श्राया कि श्राप यहां पधारें। श्रोर लिखा है कि सांभर के रेलघर पर रथ, बहल श्रीर ऊंट इत्यादि सवारी मेज देवें। श्रभी तो हमने उनको यही उत्तर लिख दिया है कि एक अच्छी वर्षा होने पर हम अजमेर से कहीं को रवाना हो सकेंगे। क्योंकि उदयपुर मेवाड़ की तरफ भी कुछ हमारे बुछाने का विचार हो रहा है। यदि उदयपुर को गये तो वह भी श्राप लोगों को विदित किया जायगा।

१. फर खाबाद त्रार्थसमाज के पुराने पत्रों में से म॰ मामराज ने सन् १६२७ में खोजा था। मूल पत्र म॰ मामराज जी के पास श्रीराम निवास (बिल्डिंग) खतौली मुजक्फरननर में सुरिच्चित है।

श्रजमेर सं० १९३८]

पत्र (२९४)

298

शायद इन दोनों स्थानों को जाने में आप से सवारी लेने की आवश्यकता नहीं दीखती। जब जरूरत होगी आप को लिखा जायगा। पत्र का उत्तर देना। किमधिकम्।

ज्येष्ठ कृष्ण ११ सं० १९३८ । ता० २३ मई १८८१ ई० ।

हस्ताच्चर

द्यानन्द सरस्वती (अजमेर)

[98]

पत्र (२९३)

[३५७]

श्रो३म्

लाला मूलराज जी एम० ए० त्रानिन्दत रही ।

श्रमी तीन महीने के लगभग न्यतीत हुआ कि हमने आगरे के मुकाम से प्रथम ही गोकरगानिधि की प्रति आपके पास इस अभिप्राय से भेज दी है कि इस्का बहुत अच्छा तर्जुमा अङ्गरेजी
भाषा में कर दीजिये। कि वह जल्द छप कर अङ्गरेज राजपुरुषों वा सामान्यों के अवलोकनार्थ विलायत
तक भी भेजी जावें। जिस्से इस बड़े धर्म कार्य्य में फल प्राप्ति होवे। परन्तु मालूम नहीं अब तक उसके
तर्जुमे में क्यों विलम्ब हुआ। शायद आप भूल गये वा कार्य्य की बहुतायत से यह ढील हुई। ऐसे
कार्य्य में आलस्य वा मुस्ती होना अच्छा नहीं। सो अब शीघ उक्त काम को पूर्ण करके भेज दीजिये।
जयपुर में इम डेढ़ मास तक रहे। यथ[ा] शक्य अच्छा संस्कार वहां पर हमने डाल दिया है। ईश्वर
चाहे बृद्धि होकर सफल होगा। अब ता० ६ मई से हम यहां अजमेर में हैं। सेठ फतेमल जी के बाग
की कोठी में ठहरे हैं। प्रति दिन रात को दो घएटे रोज न्याख्यान हो रहा है। इम सब प्रकार यहाँ
आनन्द में हैं। आप अपनी कुशलता के समाचार भी दीजिए। किमधिकम बहुक्रेष्ठ।

ता० २८ मई सन् १८८१ ई०। मिती ज्येष्ठ सुदी १ सं० १९३८।

द० स०

(अजमेर)

[६]

कार्ड (२९४)

[346]

राजा दर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहीर।

श्चाप के लेखानुसार १०० श्चाम काशी से इमारे पास श्चा गये। इमने तो वम्वे श्चाम फर्कखा-बाद से भेजने को लिखा था। श्चापने काशी से भेजने का परिश्रम किया। श्चाम बहुत श्चच्छे निकले। यहां पर तो श्चामों का बिलकुल श्चभाव है। जहां तक वने पाठशाला के उद्देश पर कि संस्कृत की उन्नित होनी सो इस पर अच्छे प्रकार ध्यान रहे। समाज के कार्य्य प्रेम प्रीती श्चीर उत्साह के साथ करते कराते रहें। इस दिन श्चभी हम यहां रहेंगे। पीछे यहां से चलदे समय इत्तिला दी जायगी। मुंशी इन्द्रमणि के मु० का हाल सुन[ा] होगा।

ता० १० जून ।

१. मूलपत्र हमारे संग्रह में सुरित्त है।

२. यह कार्ड हमारे संग्रह में सुरित्ति है। सन् १६२७ में लाखों पत्रों में से खोजकर म॰ मामराज जी लाये थे। ३. सन् १८८१ (=ज्ये॰ शु॰ १३ सं॰ १६३८) अजमेर से। इस पर इस्तान्तर नहीं हैं।

293

[0]

पत्र (२९५)

[349]

राजा दुर्गाप्रसाद जी त्रानन्दित रहो ।

आपका कार्ड आया। समाचार विदित हुए। जयपुर में कुछ थोड़ा सा संस्कार हो गया है। और अजमेर में छोटा सा आर्यसमाज नियत हुआ है। ईश्वर करें इसकी वृद्धि हो । हम तारीख २३ जून गुरुवार<sup>२</sup> को यहां से मसूदा को जो अजमेर से १२ वा १३ कोस है जायंगे<sup>3</sup>। क्योंकि वहां के राव साहब ने बड़ी प्रीतिपूर्वक निमन्त्रण किया है। वहां श्रधिक से श्रधिक १५ दिन तक रहेंगे। श्राम भेज तो गादर वा कुछ कहा से भेजिये। जिस्से यहां पर पकते रहें। क्यों कि पहिले आम जो काशी से आये थे थोड़े काल में अकसर बिगड़ गये थे। सो अब एक ही वार भेज दीजिये। क्योंकि वार वार तकलीफ होती है। पाठशाला में संस्कृत का काम ठीक २ होना चाहिये। जैसे मिशन स्कूलों में लड़के अपने अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिये वाईविल सुन लेते हैं और कुछ ध्यान नहीं देते, वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा। इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है उस्को ही दृद्धि देना चाहिये। वरन फारसी का होना कुछ अवश्य नहीं। केवल संस्कृत और राजभाषा अंगरेजी दो ही का पठन पाठन होना अवश्य है। सो आधे आधे समय दोनों जारी रहें। श्रीर दोनों की परीचा भी माहवार बड़ी सावधानी और दृढ़ नियम के साथ हुआ करे । और दोनों ही की अपेचा से कचा वा नम्बर की वृद्धि विद्यार्थियों की हुआ करे। और हम को सदैव परीचा पत्र भेजा करो । विशेष कर संस्कृत के विद्यार्थियों के माहवार पाठन का व्यौरा श्रौर किस कचा में कौन २ पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, कितनी २ हुई, यह सब सूचना दिया करो । किमधिकम् विज्ञेषु । विशेष फिर आप को लिखेंगे।

मिति आषाढ वदी ६ सम्वत् १९३८, ता० १७ जून १८८१ ई०।

द्यानन्द् सरस्वती (श्रजमेर)

१. पहले हमने इसे बा॰ देवेन्द्रनाथ के संग्रह से छापा था। पश्चात् ता० २७ मार्च १६२७ को म० मामराज जी ने मूल पत्र से शुद्ध किया। मूल पत्र स्रार्थसमाज फहलाबाद में सुरिच्चित है। फहलाबाद का इतिहास नामक प्रन्थ के पृ० २१६ पर भी छपा है।

२. स्राषाढ वदी १२। यु० मी०।

३. श्राषाढ़ वदी १२ बृहस्पतिवार को ४ बजे दिन के अजमेर स्टेशन से रेल में चढ़ कर नसीराबाद पहुँचे। वहां से रथ पर चढ़ ६ बजे रात्रि को मसूदे जा विराजे। देखो, देशहितैषी, अजमेर, खरड १, अङ्क २, ज्ये४ संवत् १६३६।

मसूदा,सं ० १९३८ ]

पत्र (२९६)

293

[8]

पत्र (२९६) श्रोश्म

380

बाब छेदीलाल जी आनन्दित रही।

जो कागजात हमने आगरे में बहुत पुरुष जो कि हिसाब के जानने वालों की संमित से निश्चित किया है। "वे उड़दू में तो वहां आपके पास है। और जो उनका नक़ल नागरी हमारे पास थी." वह सब श्रापके पास भेजते हैं। देख विचार ठीक कर जितने उस पर बाकी निकलें हुक्स लिखिये। **उस फैसले में जो जो "उसने" ख्यायानत के अपराध किये हैं वे भी लिख दीजिये। १—एक स्वामीजी** से विश्वासघात करना। २ - दूसरा हिसाव जैसा मैनेजर को रखना चाहिये वैसा न रखना। ३-तीसरा छापेखाने के स्वामी की आज्ञा के बिना चोरी से अन्य के पुस्तकादि छाप के उसके लाभ का गमन कर जाना । ४—हिसाब देने में भूठे छल "कर" के "अन्यथा" व्यवहार करना। ५ — हिसाब "न" देने "के लिये" भूठे हीले "किया" करना। ६ — हिसाब देने के विना छापेखाने से चले जाना। ७—छापेखाने से जाते समय अपनी २० गठड़ियों को मास्तर शादीराम को दिखलाये विना "लेकर" चले जाना। इत्यादि जो २ हम ने इन कागजों पर लिखा है उस को विचारिये। ये सब कागजात बखतावर के रजष्टर त्रादि से जांच के लिखे हैं। श्रौर इसकी नकल उड़दू में भी श्रागरे के कागजों में थी। उसको आप लोगों ने क्यों न देखके क्यों न फैसला कर दिया होता। अब न सुक से श्रौर न बखतावरसिंह से पूछने की श्रपेका करनी चाहिये। क्योंकि बख० तो ऐसा ही चाहता है कि यह मामला ऐसे ही घसड़ पचड़ हो के रह जाय। इन बखतावर के कागजातों के देखने से निश्चित होता है कि 5000) रुपयों से कम गमन और हानि वख० ने नहीं की है । आगे जैसा आप लोगों के ध्यान में आवे वैसा की जिये। मैं यह आप लोगों से कहता हूं कि इस मामले में जैसा आप करेंगे वैसा ही समाको स्वीकार होगा। जो यह हिसाब लिखा है उस से कुछ कम डिगरी करनी चाहिये। श्रिधिक नहीं। क्योंकि सत्य व्यवस्था होनी चाहिये। जो बख०सिंह के कम्भी देखे जायं तो जितना उस पर दगड करे उतना ही थोड़ा है। परन्तु मुक्त का आशा है कि आप लोग सत्य ही न्याय करेंगे। "श्रव जो हम ने जांच परताल कर उस के कागजात से बाकी रुपैये उस से लेने जिस २ बाब[त] में जितने २ क० निश्चित किये नीचे लिखते हैं।"

१०६०।) "ये ६० वे हैं कि" जो मासिक हिसाब हमारे पास भेजता था। श्रौर बाद इस के शादीराम ने जो मास २ में खर्च किया उन दोनों के मिलाने से जितने उस ने अधिक खर्च किये हैं। ६९७१॥ ८) ये रुपये "वे हैं कि" जितने फर्मे मास्टर शादीराम ने अर्थात किसी माह में १४ किसी में १५ और किसी में १६ छपवाये और उस बखतावर "सिंह" ने अ फर्मों से अधिक किसी माह में नहीं छपवाये और काम सरकारी आदिमियों से रात दिन लेता था । चोरी से द्सरों के पुस्तक छपवाता था। जैसे कि ला रिपोर्ट, उसके दाम अन्य पुस्तकों के गिने हैं।

३००) ये रुपये "वे हैं जो कि उसने " टैप आदि के जो कि छापेखाने में थे और कम सौंपे । शीशा सर्कारी, फ्रींडरी, टैप, और ढालने वाले भी सर्कारी थे। और कई एक चीजें वह ले गया।

उनका तो पता ही नहीं। तौ भी ऊपर लिखे क० निकलते हैं।

१४७) "ये" रूपये "वे है कि" जो उसे सन्ध्यादि पुस्तकें सौंपी थीं और जितनी उस ने दीं "जितनी का खर्च रजष्टर में उसने लिखा है उस से जो" वाकी "रहे उन के दाम इतने" निकलते हैं। ३५३॥।) "ये" रूपये "वे हैं कि जो" मूमिका के "पुस्तक" उसे सौंपीं थीं उस के जमा खर्च से "वाकी निकलते" हैं।

४४२-) "ये" रुपये "वे हैं कि जो" ऋग्वेद के १२८६ श्रं-"क उस" को दिये "थे उससे कम दिये

अर्थात जितने उसने रज[छ]र में खर्च में लिखे हैं उस से बाकी के हैं।" और

४९३॥ है। 'धे" हपये ''वे हैं जो कि" यजुर्वेद के १४३७ श्रंको के जमा खर्च देखने से उसी पर बाकी

सब मिलाकर-

=९६=।। €) रुपये होते हैं।

ये सब रुपये उसी के हाथ के कागजादों से उसी पर निकलते हैं। वे कागजा आपके पास
"भी" हैं। और जो उसकी नकल हमारे पास नागरी में थी वह हम भेजते हैं। इसको भी आप लोग
देख लीजिये। और इस की जाच पड़ताल उन्हीं रजस्टरादि से जो आपके पास हैं कर लीजिये।
और उस के मासिक का रजस्टर- आगरेजी में है। उसकी नकल भी फारसी में करवा के उस में रखी
थी। और सब महीनों की चिट्टियात भी माहवारी नम्बरवार हमने आगरे में करा के उन्हीं कागजों
में रक्खी हैं। उसमें भी इस ने "जो" जमा नहीं किया है वह हमने नहीं छांटा। "उन चिट्टियों को
आप लोग वहां जाच कर लीजिये। "इस से उसकी बहुत सी चोरियां पकड़ी जायंगी। आगे जो
आपने थियोसोफीष्ट भेजा नोटिस देखने के लिये, सो देखा। क्या किया जाय जिनके लिये उपकार
करते हैं, वे ही उलटे विरोध ही करते जाते हैं। अच्छा जा दुष्ट दुष्टता को नहीं छोड़ते तो अष्ट अष्टता
को क्यों छोड़ें। ये का[ग]जात आप के पास इस लिये भेजे हैं कि लाला रामशरणदास जी नागरी
नहीं पढ़े हैं। इनको आप देख के उन को समभा दीजिये। और सबसे मेरा आशीर्वा[द] कहियेगा।
यहां वर्षा बहुत हुई है। प्रतिदिन यहां राज महल में ज्याख्यान होते हैं। राजा आदि सब लोग अति
प्रीति से सुनते हैं। अब जैसे बने वैसे यह मामला शीघ कर दीजिये। किमधिकेन ज्यवहारज्ञेषु।

मि० आ० व० ९ मंगलवार ।

[द्यानन्द सरस्वती] (मसदा) जिले श्रजमेर।3

इसका उत्तर शीघ्र भेजियेगा।"४

४. इस पत्र से सम्बद्ध हिसान का पूर्ण विवरण त्रागे पष्ट २६५ से २६८ पर देखें।

१. यहां से लेकर अन्त तक श्री स्वामी जी के अपने हाथ का लिखा हुआ है। इस पत्र की अनेक स्थलों पर श्री स्वा॰ जी महाराज ने स्वहस्त से शोधा है। कई स्थानों पर नयी पंक्तियां भी लिखी है। उलटे (इनवर्टिड) कामों के अन्तर्शत सब लेख श्री स्वामी जी के हाथ का लिखा हुआ है।

२. १६ जुलाई १८८१। यद्यपि पत्र पर संवत् नहीं लिखा गया, तथापि प्रकरण से ऋौर मस्दा से तिखे जाने से इसी तिथि [ऋर्थात् सं० ९६३८] का है।

३. यह पत्र उन २ नम्बर वाली चिडियों तथा हिसाब ब्रादि के लम्बे पत्रों सहित मेजा गया था। ब्राक्ट्रबर सन १६२६ में मा॰ मामराज जी मेरठ से लाये थे। मूलपत्रादि हमारे संग्रह में सुरिच्छित है।

मसूदा, सं० १९३८]

हिसाब के कागजात

294

[3]

## [हिसाब के कागजात]

[389]

हिसाव कलकत्ते का जो बखतावरसिंह ने किया।

७५) हवाले जादोनाथ पेशगी वास्ते खरीद करने १ मन डबल ग्रेट । १ मन २८ सेर डबल पीका नागरी । २॥ मन सीसा । १५ सेर काइटेशन । साढ़े वारह सेर काडरेस्त । ता० रसीद ३० दिस० स० ७९ ।

#### ५०) रसीद तारीख ३० दिस० १८७९

८००।≈)।।। रसीद नम्बरी ६०२ पार्कर को० ता० ३ जनवरी १८८० कलकत्ता बाबत खरीद

| रायल प्रेस                | यल प्रेस १ |             | <b>६००</b> ) |  |  |
|---------------------------|------------|-------------|--------------|--|--|
| ,, प्रोच सेंट             | २          | ४॥) दर      | रा)          |  |  |
| <b>डमद[ा]</b> बारीक कम्बत | <b>1</b>   | <b>३</b> 1) |              |  |  |
| कम्बल मोटा                | 8          | કાા)        |              |  |  |
| रायल रूलर फ्रेम           | 8          | ६॥)         |              |  |  |
| <b>जाब</b>                | 8          | रा।)        |              |  |  |
| रव कटर                    | 8          |             |              |  |  |
|                           | १३२        | 99)         |              |  |  |
|                           | ,,         | १८।=)।।।    |              |  |  |
|                           | <b>)</b>   | २३।)        |              |  |  |
| खर्च वंधवाई               |            | २०)         |              |  |  |

७०) ह्वाले बिहारी लाल दत्त पेशगी बाबत खरी[द] ३ मन प्रेट प्राईमर दर ४०) मन। ता० १ जन० १८८०

२९०।)। बाबत कीमत कागज दो गड़े २०×२४ पींड कीमत २९२८), डिलेवरी चार्च १) कुल २९३८) कमीशन २।।।८)।।। बाकी २९०।) ता० ३ जन० १८८०

[ इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा टिप्पण १ ]
"यह भी रसीद कलकत्ते की हैं। इन से भी श्रेस की : चीजों का भाव आगम और खर्च विदित हो जायगा।"

## २९।) वाबत कलर मोल्ड केशसेल जान डि० कं० ता० ५ जन १८८०।

१. लाला छेदीलाल जी को लिखे पूर्वमुद्रित पत्र के साथ इस हिसाब का सम्बन्ध है। इस पर भी स्वामी जी ने स्वहस्त से छ: टिप्पण दिये हैं।

| 4 all =) 8 | रसीद जाव | डि० कं० इ | जन० १८५० |
|------------|----------|-----------|----------|
|------------|----------|-----------|----------|

२ **ब्रास रुत्**र . ६ १ तथा . २॥)॥

१ तथा वार्निश रा।)।।

१० टिन काली स्याही नं० ३ १७॥) दर १॥।)

१० तथा ५) दर ॥)

प्रइङ्गितिश बोर्डर नं० ५० था) ४ दर १।=) बोर्डर नं० ६३ ६।=)।। दर १।।-)४

१ चेक नं० ११६५ १॥≤)॥ बन्धवाई आदि २)

[ इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा टिप्पण २ ]

"यह छेख इस छिये हैं कि प्रेस की हर एक चीज का भाव विदित हो सके । इससे कितनी चीजैं छापेखाने में उस ने सोंपीं और कितनी उड़ा छे गया।"

१४१। ८) रसीद पोस्ट आफिस नं १६८ ता० ९ अक्टूबर १८८० अधरचन्द्र टाइप फौंडर

## १२५) टाइप फौंडर जान डिकिशन से दिलाए १० सि० १८८०

१६३१॥ 😑 ४ मीजान

जो वखतावरसिंह ने कलकत्ते भेजा प्रथम क्रिस्वामी जी से लेकर १५०-० दूसरे तथा १४८

[ इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा टिप्पण ३ ]

"इतने रुपेयों को मुझ से छेके कलकत्ते में खर्च किया बख० ने । इस से अधिक जितने कल कलकत्ते में भेजे वे अभयराम चुन्नोलाल की दूकान से भेजे थे । उसने इन रुपैयों में से बहुत सी सामग्री अपने छापेखाने की है।"

| रुपया जो कि वखतावरसिंह ने कलकत्ते भेजा।  |               |
|--|---------------|
| २९ जनवरी १८८० को स्वामी जी से लेकर       | ३२७)          |
| २ फरवरी १८८० को तथा                      | १५००)         |
| माघ्र ब० ४ सं० १९३६ तथा                  | <b>२९३</b> )  |
|  | <b>२१२०</b> ) |
| अप्रेत मास में उसके रिजस्टर के श्रानुसार | 80)           |
| मई                                       | (00)          |
| জুন                                      | 200)          |

#### १. दो बार लिखा गया है ।

| मसूदा, सं० १६३८ | मसूदा, सं | o 8 | 2\$5 |
|-----------------|-----------|-----|------|
|-----------------|-----------|-----|------|

#### हिसाब के कागजात

290

श्रगस्त सितं०

२५१।) ५४६।–)

११३७।-)

कुल मीजान

३२५७।-)

## [ इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा टिप्पण् ४ ]

यह वह हिसाव है कि उस ने कलकत्ते में कितने रुपैये भेजे । इन से क्या २ चीजें आई। इनमें कि[तनी] वर्तमान हैं। कितनी खर्च हुई। और कितनी उसने छापेखाने सोंपी। जो सोंपी वे कितने दाम की हैं। कौन चीज खर्च हुई। और कितनी उसने गमन की। इसका निश्चय आप छोग करें उस से कि जो उस ने मास्तर शादीराम को उस ने जाती बखत सोंपी। उनका मृत्य का निश्चय रसीदों से कीजिये कि कौन चीज कितने मृत्य की है।"

वहां पर ३२५७॥८) भेजा श्रोर रसीदें १६६१॥।८) ४ की मौजूद हैं। श्रोर ६७७॥।८)॥। के बिल हैं ;

विलों की रसीदें नहीं। रसीदों के बिल नहीं।

[इस पर थ्री स्वामी जी के स्वहस्त का छिखा टिप्पण 4]

"इस से यह ठीक आपको विदि[त] हो जायगा कि उस ने कलकते के हिसाब मैं कितने रुपैये उड़ाये लिये हैं और विल के रुपैयों की पहुंच की रसीद न होने और रसीदों के बिल न होने से जालसाजी उसकी विदित हो जायगी। और उस[की] चिट्ठियों से निश्चित है कि कलकते का हिसाब चूकता कर दिया, तो बिल का होना और रसीदों का न होना सिवाय चोरी के क्या कह सकते हैं।"

बिल जो कि बखतावरसिंह ने किताब में चसपां किया श्रोर उनकी रसीद नहीं है।।
१३२) बिल जान डिकि० कम्पनी तारीख २६ मई १८८०
१ बंडल कागज २० पोंड कीमत १३२॥। ८) डिलेवरी चार्ज ॥) कुल १३३। ८) कमीशन १।८)
बाकी १३२)

१३२) बिल जा० डि० कं० ता० ९ अग० १८८०

१ बंडल कागज कीमती १३२।॥ ) डिलेबरी चार्ज ॥) कुल १३३। ) कमीशन १। ) बाकी १३२)

१२६।।। श्री।। विल जा० डि० कं० २६ जन० १८८०

१ वंडल कागज १० रिम वजनी ४८० पौंड कीमत १२७॥) मिनैहा बाबत डिसकोंट १।)। बाकी १२६≡)॥। जमा किया डिलेवरी चार्ज १॥) कुल १२६॥।≤)॥।

२५३। इंडिल जा० डि० कं० ६ सित० १८८०, २ वंडल २० रिम वजनी ९६० पौंड दर।)। फी पौंड कीमत २५५) डिसकोंट २॥)॥ वाकी २५२। इंडिल चार्ज १) कुल २५३। इंडिल ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

[मसूदा, सन् १८८१

२९५

३।।) बिल बाबू ब्रजभूषणदास कम्पनी २।।) कीमत संहिता यजुः १) कीमत सर्वदर्शनसंप्रह १८ अक्ट० १८८०।

[इस पर श्री स्वामी जी के स्वहस्त का लिखा टिप्पण ६]

"ये रसीदें (दों) का तर्जमा है। इन रसीदों में से कई एक रसीदें फाड़ भी छी है। और कितनी एक रसीदें चिपकाई भी नहीं। हिसाब कोई न कर सके इस छिये यह काम उस ने किया।"

[2]

## पत्रांश (२९७)

[३६२]

माई जवाहरसिंह [ मन्त्री आर्यसमाज, लाहौर ]।

लेडी ब्लेवेटस्की के पत्र का उत्तर हमने दे दिया है। उसमें विशेष बात यही है कि हम उपदेश से तुम्हारी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। श्रीर तुम्हारी सोसायटी के समासद हैं। २२ जुलाई ८१२

[9]

## पत्रांश (२९८)

[\$\$3]

[पं० मुझालाल मन्त्री आ० स० अजमेर] १८ ता० अगस्त³ को रायपुर [ब्यावर के निकट ] जायेंगे४।

[9]

## पत्र (२९९)

[३६४]

मेरठ आर्यसमाज मन्त्री आनन्दीलाल जी आनन्दित रही ।

पत्र तुम्हारा त्राया समाचार विदित हुए। बड़े शोक की बात है कि बखतावरसिंह के मामला के कागजातों की सफाई कब करोगे। जो करना हो तो जैसा तुम लोगों को मालूम हो वैसा शीघ कर डालो। उस कागजात के बिना छापेखाने में भी बहुत हर्कत हैं ।

छः सात महीने तो हो चुके फिर कब इस मागड़े को निपटाश्चोगे। श्रौर जो के रूपसिंह डाक्तर सिमले ने रुपैये भेजे थे वे रिजष्टर में जमा कर लिये हैं वा नहीं। थियोसोफिष्ट में जो नोटिस

- १. पं लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ८४० में उद्धृत ।
- २. श्रावण कृष्ण १२ शुक्र सं० १६३८। यु० मी०।
- ३. भाद्र कृष्ण ६, बृहस्पति सं० १६३८ । यु० मी० ।
- . ४. मुन्नालाल की यह पत्र १७ अगस्त १८८१ को [ भाद्र कु० ८ बुघ ] मिला। संभवतः १५ या १६ [भाद्र कु० ५ या ७ सं० १६३८] को मस्दा से लिखा गया होगा। देशहतैषी के रिकटर से लिया गया।
- पू. म॰ मामराज जी ने २३ जुलाई सन् १६४५ को ला॰ रामशरण्दास रईस मेरठ वालों के पुराने सहस्रों पत्रों में से उनके पौत्र ला॰ परमात्माशरण् तथा ला॰ श्यामलाल जी प्रधान आर्थसमाज के साथ खोजा। मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिद्धित है।
  - ६. कागजात के लिए देखो पूर्ण संख्या ३६१ (पृष्ठ २६५-२६८) देखें। यु॰ मी॰।

ब्यावर, सं० १९३८]

पत्र (३०१)

299

चतुर्भुज का छपा है। सो बुरा है। हम उस का प्रत्युत्तर छपवाना नहीं चाहते, क्योंकि वह अयोग्य श्रोर श्रविद्वान है। परन्तु जो तुम्हारी समक्त में श्रावे सो तुम उसका उत्तर छपवादो। पंडित भीमसेन वहां श्रार्थसमाज में रखने योग्य नहीं है॥ सबसे हमारा नमस्ते कह देना। श्राजकल हम जिला श्रजमेर नयानगर श्रजमेरी दरवाजे तार बङ्गले में निवास करते हैं॥

आश्विन वदी ४ रविवार ।

[दयानन्द सरस्वती]

श्रीर थियोसोफिष्ट में जो हमारे वेदभाष्य का नोटिस छपता है उस के श्रन्त में शादीराम का नाम लिखा जाता है। सो श्रव दयाराम मेनेजर प्रयाग लिखना चाहिये। सो तुम मुम्बई थियोसो-फिष्ट को लिख देना।

[9]

पत्र (३००)

[३६५]

#### प्रशंसा-पत्र

श्रीमन् श्रेष्ठोपमायोग्य श्रार्घ्यसमाजस्य प्रधान श्रीर मन्त्री श्रादि सभासद श्रानन्दित रहो-

विदित हो कि श्रीयुत द्विवेदी श्रीमाली राज मसुदा के मुख मन्त्री श्रीमान् छगनलाल जी को यह पत्र लिखके दिया जाता है इसलिए कि उक्त जन जिस किसी आर्थ्यसमाज में उपस्थित होवें, तो इनका सत्कार स्वात्मवत् श्रिय वंधुवत् करना उचित है, क्योंकि ये भी वेदोक्त धर्म्माचारी और आर्थ्यसमाज अजमेर के सभासद हैं और इन को संवत् १९२३ के वर्ष से जानते हैं। यह सज्जन पुरुष हैं, उस समय अजमेर में एक साहूकार के यहां इनके पिता जी मुनीम थे, तथा अपने घर और अन्यत्र भी प्रतिष्ठित थे। और ये आचार विचार तथा शास्त्र विषयों में भी सममते हैं, चाल चलन भी इनका श्रेष्ठ है, और परोपकारी धार्मिक विश्वासनीय है, हमने बहुत प्रजास्थ पुरुषों से परोच्च में पूछा तो उनने कहा कि ऐसा कामदार हमने आगे कभी न देखा था। सब प्रजा इनसे प्रसन्न है। इस से हमने जाना यह इस समय भी धार्मिक जन है।

मि० त्रा० ग्रु० ११२ सोमवार संवत् १९३८। वयानन्द सरस्वती

मसुदा मुहर-मुहर-मुहर

[2]

पत्रांश (३०१)

[३६६]

## [समाचार पत्र देशहितैषी अर्थात् पं० मुन्नालाल मन्त्री आर्थसमाज अजमेर को]3

१. संवत् १६३८ । ११ सितम्बर १८८१ नयानगर (ब्यावर) से मेरठ को मेजा गया ।

२ श्राषाढ् शु॰ ११ को बृहस्पतिवार है, सोमवार नहीं है। श्राश्विन सु॰ १०, ११ सम्मिलित है उस दिन सोमवार है । ३ श्रक्त्बर १८८१।

३. देशहितैषी के रजिस्टर से । इस के पश्चात् का मुन्नालाल जी का पत्र नं० (२६) दो पैसे वाला लिफाफा 'श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते । श्रापके पास यह थियोसोफिस्ट भेजता हूँ । श्रपने दिवाली का उत्सव श्रव के पत्र द्वारा निवेदन करूंगा।'' उसी रजिस्टर से, मुन्नालाल २४-१०-८१

## ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

बनेड़े के प्राप्त भीलवाड़े में हमारी डाक भेजा करो। १५ अक्टूबर ८१°

[9]

## पत्रांश (३०२)

[ ३६७]

कविराज श्यामलदास ।

हमने चितौड़गढ़ २७ अक्तूबर<sup>3</sup> को पहुंचना है। आप स्थानादि का प्रबन्ध कर रखना, ताकि कष्ट न हो।

[9]

## पत्र (३०३)

[386]

[दयाराम प्रबन्धकर्ता वैदिक यन्त्रालय]

रंजो कोई नोट वा विज्ञापन शास्त्रार्थ खरडन मरडन और धर्माधर्म विषयों का ज्ञापक हो वह हम को दिखलाये विना कभी न छापना चाहिये। यह मेरे पास भेजा सो वहुत अच्छा किया। जो दिखलाये विना छाप देते तो हम को इस के समाधान में बहुत अम करना पड़ता। भीमसेन जो ज्याकरणादि सास्त्रों को पढ़ा है उतना ही उस का पांडित्य है, अन्यत्र यह बालक है। इस को इस बात की खबर भी नहीं है कि इस लेख से क्या २ कहां विरोध होकर क्या २ विपरीत परिणाम होंगे। इस लिये यह नोट जैसा शोध के भेजा है वैसा ही छपवाना। किमधिक लेखेन बुद्धिभद्वर्थेषु ।

१. कार्तिक क्व∘ ८ शनि सं० १६३८ । यु॰ मी० ।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवन चरित पृ॰ ५५२ पर उद्धृत । २०—२५ श्रक्त्वर १८८१ के मध्य किसी दिन यह लिखा गया होगा ।

रे. कार्तिक शु० ५ गुरु सं ११३६ । यु० मी० ।

४. यह लेख स्वामी जी महाराज ने स्त्रैणताद्धित के 'जीविकार्थे चापएये' (५।३।६६) सूत्र की टिप्पणी के पूफ पर लिखा था । देखो मुंशीराम जी सम्पा० ऋ० द० का पत्र व्यवहार पृष्ठ ५३। यु० मी०।

प. 'यह' पद से निर्दिष्ट स्त्रैणताद्धित का वह नोट है जो भीमसेन ने ज़िखा था श्रीर दयाराम मैनेजर वैदिक यन्त्रालय ने स्वामी जी को देखने को मेजा था, उसे हम ने स्वामी जी के शोधे हुए नोट के नीचे छ।पा है। यु॰ मी॰।

६. यह शोधा हुआ नोट आगे पूर्ण संख्या ३६६ पर छापा है। यु० मी०।

७. इस पर कोई तिथि नहीं है। स्त्रैणताद्धित का लेखन मार्गशीर्ष शुक्ल ६ सं० १६३८ (२६ नवम्बर १८८१) को समाप्त हुन्ना था श्रौर मुद्रण ३ दिन बाद ही समाप्त हो गया था (देखो ऋ० द० के प्रन्थों का इतिहास पृष्ठ १६३,१६४) श्रतः यह लेख मार्गशीर्ष के प्रारम्म में लिखा गया होगा। यु० मी०।

(१) [हिप्पणी] [३६९] श्रुजीविका शब्द अर्थ मुख्य करके जीवनोपाय करना है। इस प्रकरण में सिवाय प्रतिकृति और मनुष्य के दूसरे की अनुवृत्ति नहीं आती। यहां प्रयोजन यह है कि जिन की पुत्र आदि सम्बन्धी वा मित्रादिकों के साथ अत्यन्त प्रेम होता है जन के वियोग में जनकी प्रतिकृति देखते और गुण कर्म तथा जपकार आदि का स्मरण करते हुए अपने चित्त में सन्तोष करते हैं। परन्तु इस प्रकरण में यह वात विचारना चाहिये कि संसार में जितने हश्य पदार्थ हैं जन सब की प्रतिकृति होती है वा नहीं। बहुतेरे घोड़े हाथी आदि जीवों की अतिदर्शनीय सन्मयादि की प्रतिकृतियां बना २ कर बेंचते हैं वे जीविकार्थ पण्य होते हैं। और बहुतेरे द्वीप द्वीपान्तर देश देशान्तरों में पित क्यी पुत्रादि की प्रतिकृतियां रखते हैं परन्तु परमार्थ के साथ इस विषय का कुछ सम्बन्ध नहीं। इस सूत्र से बहुतेरे वैयाकरणों का यह अभिप्राय है कि जीविका के लिये जो पदार्थ हो और वह बेंचा न जावे तो उस अर्थ में कन प्रत्यय का जुप् हो जावे। और ( जुम्मनुष्ये ) इस सूत्र से मनुष्य शब्द का भी सम्बन्ध न करके ब्रह्मा आदि देवताओं की मूर्तियां जो कि मन्दिरों में बना २ कर रखते हैं। उन से जीविका (धनका आगमन) तो है परन्तु वे प्रतिमा बेंचने के लिये नहीं हैं, इसलिये उन्हीं का प्रहण्ण होना चाहिये। और इस सूत्र में महाभाष्यकार ने भी लिखा है कि जो धनार्थी लोग शिव आदि की प्रतिमा

\* यह स्त्रेणताब्दित के ''जीनिकार्थे चापएये'' सूत्र का श्री स्त्रामी जी महाराज द्वारा संशोधित नोट (टिप्पणी) है। स्त्रेणताब्दित में यह टिप्पणी कुछ रूपान्तर से छपी है, वह रूपान्तर किस ने किया है यह अज्ञात है। देखो मुंशीराम जी सम्पा॰ ऋ॰ द॰ पत्र व्यवहार पृष्ठ ५४ की टिप्पणी।

पं॰ भीमसेन ने जो टिप्पणी लिखकर छपवानी चाही थी श्रीर जिसे प्रबन्धकर्ता वैदिक यन्त्रालय ने स्वामी जी महाराज के पास देखने को मेजी थी वह इस प्रकार है—

"जीविका शब्द का अर्थ मुख्य करके किसी प्रकार का उपकार होना है । प्रतिकृति । प्रतिब्छाया प्रतिविम्ब । प्रतिरूपक । प्रतिख्य करके प्रतिमा । इत्यादि शब्द पर्थायवाची हैं । और अन्य देशीय भाषाओं में (तथीर) (फोटोप्राफ) भी कहते हैं । प्रयोजन यह है कि जिन स्त्री पुत्र आदि सम्बन्धी वा मित्रादिकों के साथ अत्यन्त प्रेम होता है उन के वियोग में उन के प्रतिविम्ब देखते और गुण्य कर्म तथा उपकार आदि का स्मरण्य करते हुए अपने चित्त में सन्तोप करते हैं और इस प्रकरण में यह बात विचारना चाहिये कि संसार में जितने हश्य पदार्थ हैं उन सब के प्रतिविम्ब होते हैं बहुतेरे घोड़े हाथी आदि जीवों की अतिदर्शनीय मृन्मय आकृति बना २ कर बेंचते हैं वे जीविकार्थ पण्य होते हैं । और बहुतेरे द्वीप द्वीपान्तर देश देशान्तरों तथा स्थान विशेष कि जो अतिदर्शनीय हैं उन के प्रतिविम्ब मकान आदि में यंत्रित करा रखते हैं । उन के यथार्थ स्वरूप देखने में धनादि पदार्थों का अति गौरव होता है इस लिये उन के प्रतिविम्बों को देख समक्त के प्रसन्तता हो जाती है । और उन प्रतिविम्बों में यथार्थ स्वरूपों का सा व्यवहार भी करते हैं । और इस प्रतिविम्ब विद्या से संसार के बहुत कार्य सिद्ध होते हैं परन्तु परमार्थ के साथ इस विषय का कुछ सम्बन्ध नहीं । इस सूत्र से बहुतेरे वैयाकरणों का यह अभिपाय है कि जीविका के लिये जो पदार्थ हो और वह वैचा न जावे तो उस अर्थ में कन प्रत्यय का लुप् हो जावे । और (लुम्मनुष्ये) इस सूत्र से मनुष्य शब्द का भी सम्बन्ध यहां नहीं करते । सो ब्रह्मा आदि देवताओं की प्रतिमा जो कि मन्दिरों में बना २ कर रखते हैं । उन से जीविका (धन का आगमन) तो है परन्तु वे प्रतिमा बेंचने के लिये नहीं हैं, इस लिये उन्हीं का ग्रहण होना चाहिये । और इस सूत्र में महामाष्यकार ने भी

बना कर वेंचते हैं वहां लुप् नहीं पावेगा। क्योंकि सूत्रकार ने अपएय शब्द पढ़ा है कि जो वेंचने के लिये न हो। सो ठीक नहीं, क्योंकि यहां प्रतिकृति और मनुष्य शब्द हीं की अनुवृत्ति है अन्य की नहीं। देवता शब्द भी जहां चेतन व्यक्तियों के साथ सम्बद्ध होता है वहां मनुष्यों ही की संज्ञा होती है और वैदिक शब्द सब यौगिक ही हैं देवता शब्द भी वैदिक है। जो इस सूत्र में मनुष्य शब्द की अनुवृत्ति ज्ञयादित्य आदि लोगों ने नहीं की,यह उनको अम है,क्योंकि वे लोग देवता शब्द को मनुष्यसे व्यतिरिक्तार्थ-वाची समक्तते हैं परन्तु सामान्य प्रह्णा होने से जो र प्रतिकृति जीविका के लिये हो और वैंची न जावें तो उस र सब के अभिधेय में प्रत्यय का लुप् होना चाहिये। और जहाँ कोई मनुष्य प्रतिकृतियों को दिखा वा वेंच के अपनी जीविका करता है वहां लुप् न होना चाहिए। और पूजा का अर्थ भी आदर सत्कार ही होता है सो चेतन के होने चाहिये। फिर महाभाष्यकार ने जो लिखा है कि जो इस समय पूजा के लिये है वहां लुप् होगा इस का भी यही अभिप्राय है कि जो मनुष्य की प्रतिकृति

लिखा है कि जो धनाथीं लोग शिव स्त्रादि की प्रतिमा बना कर बैचते हैं वहां लुप नहीं पावेगा । क्योंकि सूत्रकार ने अपराय शब्द पढा है कि जो बेंचने के लिये न हो। अस्तु वहां लुप्न हो (शिवकः) ऐसा ही प्रयोग रहे। परन्तु जो वर्तमान काल में पूजा के लिये ही हैं वहां तो लप हो ही जावेगा। इस महाभाष्य से भी उन्हीं देवतों की प्रतिमा सिद्ध करते हैं। इस विषय में हम लोगों का भी यह अभिप्राय नहीं है कि ब्रह्मा आदि देवता नहीं हए श्रीर उन की प्रतिमा रखने श्रीर देखने में श्रधम्म होता है। किन्तु उन प्रतिमाश्रों की यथार्थ स्वरूप के समान सत्कार पूजा धूप दीप आदि से करते हैं और पूजा तथा दर्शनादि से परमार्थ सिद्धि और मुक्ति सममते हैं सो ठीक नहीं, क्योंकि श्रुति श्रीर स्मृति दोनों से यह विपरीत है कि जो विचा श्रीर श्रात्मज्ञान के विना मुक्ति हो सके। हां, उन प्रतिमाश्रों को देख के उन लोगों के गुण कमों का स्मरण करके त्राप भी वैसे ही गुण कमों को धारण करें कि जिस से उत्तम कहार्वे । देवता शब्द भी जहां चेतन व्यक्तियों के साथ सम्बद्ध होता है वहाँ मन्त्र्यों की ही संज्ञा होती है स्त्रीर वैदिक शब्द सब यौगिक ही हैं देवता शब्द भी वैदिक है। इस सूत्र में मनुष्य शब्द की श्रनुवृत्ति जयादित्य श्रादि लोगों ने नहीं की । वे लोग देवता शब्द को मनुष्य से व्यतिरिक्त समक्षते हैं परन्त सामान्य ग्रह्ण होने से जो २ प्रतिमा जीविका के लिये हो ब्रीर वैची न जावें तो उस २ सब के ब्रिभिधेय में प्रत्यय का लुप् होना चाहिये। हस्तिकान् दर्शयति । कोई मनुष्य प्रतिविन्बों को दिखाता फिरता अपनी जीविका करता है। बहुतेरे लोग प्रतिबिम्बों को दिखा कर ही जीविका करते हैं। वहां भी लुप् होना चाहिये यह दोष जयादित्य श्रादि लोगों के श्रमिप्राय में मनुष्य शब्द की श्रनुवृत्ति न करने से श्राता है। श्रीर पूजा का श्रर्थ भी श्रादर सत्कार ही होता है सो चेतन के होने चाहिये। फिर महाभाष्यकार ने जो लिखा है कि जो इस समय पूजा के लिये है वहाँ लुप् होगा, इसका भी यही अभिपाय है कि जो मनुष्य की यथार्थ प्रतिकृति पूजा के लिये हैं उनसे प्रत्यय करने में तो लुप हो जावेगा। क्योंकि अच्छे पुरुषों की जो प्रतिकृति हैं उनके वेचने में सजन लोग बुराई सममते हैं। उन प्रिय जनों की प्रतिमात्रों को रखते श्रीर उन को देख कर संतुष्ट होते हैं। राम कृष्ण श्रादि भी इस संसार में एक अपूर्व पुरुष हुये हैं उन की भी यथार्थ स्वरूप की बोधक प्रतिमा कोई पुरुष राखे और उन के गुण कमों का स्मरण करके अपने आचरण सुधारे तो कुछ बुराई नहीं, परन्तु उन प्रतिमाओं से परमार्थ सिद्धि सममाना ही अञ्छा नहीं है। पाणिनि आदि ऋषि लोगों का अभिप्राय भी वेदों से विस्द कभी नहीं हो सकता, इस प्रकरण को पन्तपात छोड़े वेदानुकूल सब लोग विचारे ॥"

यह टिप्पण्णो म॰ मुंशीराम जी द्वारा सम्पादित पत्र ब्यवहार में पृष्ठ ५०-५३ तक छपी है।

पूजा सत्कार केलिये हैं उससे प्रत्यय करने में तो लुप् हो जावेगा। क्योंिक अच्छे पुरुषों की जो प्रतिकृति है उसके बचने में सज्जन लोग बुराई सममते हैं। विश्वे देवा स आगत शृणुतेम १ हवम । यह यजुर्वेद का प्रमाण है। विद्वां १ सि देवाः । यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव, यह तैत्तिरीय आरण्यक का वाक्य है। इत्यादि सब प्रमाण वचनों से विद्वद्व्यक्ति आदि का प्रहण देव शब्द से होता है इस लिये पाणिनि आदि ऋषि लोगों का आमिप्राय भी वेदों से विरुद्ध कभी न होना चाहिये। इस प्रकरण को पच्चपत छोड़ वेदानुकूलता से सब लोग विचारें।

[२]

कार्ड (३०४)

[३७०]

ता० २ नवम्वर सन् १८८१२

[महाशय रूपसिंह जी के नाम<sup>3</sup>]।

महाशय श्रीमत् महाराज स्वामी दयानन्द सरस्वती जी श्रीर स्वामी श्रात्मानन्द सरस्वती जी यहां सुशोभित हैं। श्रीर श्राप का गुजरांवाले का कार्ड पहुंचा। यह श्रापको कुशल समाचार का पत्र भेजता हूं श्रीर श्राप भी श्रपने श्रानन्द मंगल का समाचार सदा भेजते रहना, जिससे श्रानन्द होय। रामानन्द ब्रह्मचारी

[9,9]

पत्र (३०५)

[३७१]

११ नवम्बर सन ८१ ई०

लाला मूलराज जी आनन्दित रहो ।

पत्र श्रापका पहुंचा। समाचार विदित हुआ। परंतु यहां हमारे पास कोई इंगलिश का विद्वान नहीं है। इस वास्ते यहां भाषान्तर होना श्रसम्भव है श्रोर जब श्राप इतना भी पुरुषार्थ नहीं कर

२. कार्तिक शुक्ल ११ बुध, सं० १६३८ । यु० मी०

३. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्चत है। बा॰ रूपसिंह जी ने सन् १६१६-१७ में यह पत्र स्वयं लाहीर में दिया था।

४. रामानन्द ब्रह्मचारी श्री स्वामी जी का लेखक था। उसने उन की ख्रोर से ही यह तथा अगले कई पत्र ग्रपने हस्ताव्यां से लिखे हैं।

प्र. मार्गशीर्ष कृष्या प्र शुक्र सं० १६३८ । यु॰ मी॰ ।

६. मूल पत्र इमारे संग्रह मे सुरित्तत है।

१. यह ऋषि द्वारा संशोधित टिप्पणी म॰ मुन्शीरामजी द्वारा सम्पादित पत्रव्यवहार में पृष्ठ ५४—५६ तक छपी है।

सकते तब आर्य्य समाज की उन्नित किस प्रकार होगी। हम चाहते थे कि किसी प्रकार आप ही इस गोकरुणानिधि पुस्तक को अंग्रेजी में करें तो बहुत ठीक होता और शीघ्र ही हो जाता, परन्तु आभी तक आप को अवकाश नहीं मिला है। किन्तु देश उन्नित के वास्ते थोड़ा अवकाश निकालना चाहिये। जब आप लोग कुछ नहीं करेंगे तब हम अकेले क्या कर सकेंगे। जो किसी प्रकार आप से तरजमा न हो सके तो हमारे पास भेज दो। जब हम मुंबई जावेंगे वहां इंगिलश के विद्वान मिलेंगे तब अंगरेजी में करा लेवेंगे जैसा बना हो यहां भेज दो। "अब हमारा विचार मुंबई में जाने का है, क्योंकि वहां के समाज ने १५०) रुपंये भी रेल के खर्च के लिये जबर्यस्ती भेज दिये है।" यहां से जब गवर्नर जनरल साहिब दबार करके चले जावेंगे तब हम भी मुंबई की तरफ रवाना होवेंगे। "जब वहां आने का समय आवेगा तबी आना होगा। क्योंकि काम बड़ा और काम के करने वाले और समय भी थोड़ा। आप लोगों को चाहिये कि जिस २ देश में आप लोग हैं वहां वहां का काम सम्भाल लेवें, तभी उन्नित का बाग बढ़ेगा।

मि० मार्गे० व० ६ शनि सं० १९३८ ।"

द्यानन्द् सरस्वती

[96]

पत्र (३०६)

[302]

९ डिसम्बर सन् ८१ ई०२ चितोङ्गढ़ राज मेवाङ्।

लाला मूलराज जी आनिन्दत रही ।

श्चापका पत्र श्चाया । समाचार विदित हुश्चा । श्चापने जो गोकक्णानिधि पुस्तक को इंगिलिश में भाषान्तर कर देना स्वीकार किया उससे बहुत श्चानन्द हुश्चा । क्योंकि श्चंगरेजी भाषा होने से श्वन्य देश वालों को भी लाभ पहुँचेगा । यह तो सच है कि स्वकृत से परकृत निर्वल होता है । तथापि विदेशी भी बहुधा ऐसे हैं कि जैसी इंगिलिश भाषा जानते हैं वैसी श्चन्य भाषा नहीं जानते । श्वीर यहां के यूरोपियन श्वस्वीकार करेंगे तो क्या, किन्तु यूरोप देशस्थ जब इस पुस्तक को देखेंगे तो श्वनुमान है कि उन में से भी कई एक सहायक हों । श्वीर श्वाप ने जो स्वजाति विषय में लिखा इस वास्ते श्वपनी स्वजाति का इतिहास जो परम्परा से जला श्वाता है उसकी थोड़ी सी सूचना लिख भेजें । तब हम श्वच्छी प्रकार लिख भेजें । श्वीर पंजाब में जो हमने थोड़ा सा इतिहास सुना था वह भी विस्मरण हो गया है । इस में विलंब न करना चाहिये । पत्र का उत्तर मुकाम इन्दौर राज हिं।

१. १२ नवम्बर सन् १८८१। ११ नवम्बर को पत्र लेखक ने लिखा। उस दिन समाप्त नहीं किया गया। १२ को श्री स्वामी जी ने ऋपने हाथ से ऋन्तिम पंक्तियां लिख कर पत्र समाप्त किया। " " कामों के श्रन्दर का लेख श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से लिखा है।

२. पौष कुब्स ४ सं० १६३८ । यु० मी ।

३. मूल पत्र इमारे संप्रह में सुरिव्तत है।

पत्र (३०७)

३०५

लकर, वाबू वालाप्रसाद सपरडंट रेलवे पोलिस के नाम से अथवा मुंबई नल वाजार शिवलदास लल्लु भाई के मकान के पास सेवकलाल कृष्णदास कि नाम से भेजना । (द्यानन्द सरस्वती)

[3]

पत्र (३०७)

[३७३]

॥ श्रोम्॥

सदीर रूपसिंह जी श्रानन्दित रही?

विदत हो कि पत्र आप का सन १८८१ ई० ६ छ: डिसंबर का लिखा हुआ ता० १२ डिसंबर को यहां पहुंचा। पत्रस्थ समाचार विदित हुए। यहां श्री स्वामी जी महाराज की सत्कारपूर्वक श्रीमान्महाराणा उदयपुर जी ने सेवा की। श्रौर यहां के दरवार में जितने राजा महाराजा श्राये वे सब श्री स्वामी जी महाराज के सत्योपदेश को सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। श्रीर एक दिन महाराणा उदयपुर भी श्राये थे। कोई तीन वा चार घंटे तक स्वामीजी महाराज जी का सत्संग किया श्रीर राजधर्म वा पारमार्थिक विषय में जितनी वार्ते महाराज जी ने उपदेश की वे सब बातें राजा जी के ध्यान में जम गईं। श्रौर यह माड़वाड़ वा मेवा[ड़] देश में व्याख्यान को कोई समसता ही नहीं। जितने लोग पूर्वपत्ती आये उन सब को स्वामी जी ने यथा तथा उत्तर देकर उन्हों को शंका रूपी दुःख सागर से छुड़ा दिया। अब यहां से श्रीश्वामीजी महाराज कल १४ चौदह डिसंबर के मध्याह्नोत्तर के ४ बजे रेल में सवार हो कर १६ डिसम्बर के ८ बजे इन्दौर में उतरेंगे। फिर वहां से मंबई को पधारेंगे॥

(प्रश्न-मांस खाना बुरा वा श्रच्छा है )। (उत्तर) मांस खाना बहुत बुरा है श्रौर वेदादि सत्यशास्त्रों में कहीं विधान नहीं है। जो संस्कारविधि में लिखा है वह दूसरों का एक देशीय मत दिखाने को लिख दिया है । कुछ उस एक देशी मत होने से मांस खाना सिद्ध नहीं हो सकता। विशेष इस वा[त] को गोकरुणानिधि प्रन्थ में देख लीजियेगा उस में इस बात को प्रश्नोत्तरपूर्वक सिद्ध कर दिया है कि मांस खाना बुरा। (प्रश्न दूसरा) मैं श्रङ्गरेजी पढ़ूं वा संस्कृत ( उत्तर ) जो कोई योग्य संस्कृत का पढ़ाने वाला मिले तो संस्कृत पढ़ा अवश्य ही चाहीये। संस्कृत के न पढ़ने का परिणाम तो तुम जानते ही हो कि हजारों ईसाई और मुसलमान होगये। जो योग्य अध्यापक न मिले तो अङ्गरेजी पढ़ते ही चले जात्रो इस में कुछ हर्ज नहीं। प्रथम मेरा नाम राजबल्लम था। श्रव श्री स्वामी जीने मुक्त को नैष्ठिक ब्रह्मचर्याश्रम की दीचा देकर मेरा नाम रामानन्द ब्रह्मचारी रक्खा है। श्रीर श्राप श्रपना कुशल पत्र मुंबई में इस पते पर भेजना कि (मुकाम मुंबई बालकेश्वर पर श्री स्वामी जी के पास)। हम आनन्द में हैं। श्री खामीजी की कृपा से व्याकरण जो कि खामी जी ने बनाई हैं उन में से छः पुस्तक पढ़ली हैं और सातवीं का आरम्भ होगा॥

किमधिकलेखेन बुद्धिमद्वर्य्येषु ॥ सम्वत् १९३८ पौष वदी ७ मंगलवार ( रामानन्द ब्रह्मचारी ) ता० १३ डिसम्बर सन् १८८१ ई० हस्ताचर

१. पत्र पर उर्दू में स्वामी त्रात्मानन्द सरस्वती जी ने भी कुछ लिखा हुन्ना है।

२. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्त है।

३. यह संस्कार विधि के प्र० सं० की आरे संकेत है। सं० १६४० में संशोधित द्वि० सं० में यह ४. देखो पूर्ण संख्या ८३ का विज्ञापन । यु॰ मी॰ । प्रकरण निकाल दिया है। यु॰ मी॰।

३०६

[8]

पत्र-सूचना (३०८)

[808]

सेवकलाल कृष्णदास मन्त्री आ० स० मुम्बई<sup>१</sup>। छापने योग्य पत्र १३ दिसम्बर १८८१<sup>२</sup> चितोड

[4]

पत्र (३०९)

३७५

लाला रामशरणदास जी आनन्दित रही<sup>3</sup>।

विदित हो कि तुम बखतावरसिंह का मामला शीघ्र[तय]कर दो। हमने यहां अच्छे २ पुरुषों से पूछा। उनों ने यही उत्तर दिया कि जब अकरारनामा में वह हस्त[ा ह्य]र कर चुका है तो अब उसका कुछ नहीं जार चल सकता। अर्थात् जैसा पंच लोग फैसला करेंगे वैसा ही कचहरी में स्वीकार होगा। और आप भी विचार कर लीजिये। जैसी आप लोगों की राय हो वैसा शीघ्र करना उचित है परन्तु अब वह एक प्रकार का चिन्न डालता है जिस में कि मामला फैसला न हो। अब उस से कुछ भी न पूछना और जनाना। जो आप लोगों की राय में आवे सो फैसला कर देना। सब से हमारा आशीर्वाद कह देना।

ता० १७ जनवरी सन् १८८२ ई०४

[द० स०]

[9]

पत्र (३१०)

[३७६]

(from PANDIT DAYANANDA SARASWATI

to Mr. JOSEPH COOK)

WALKESHWAR, BOMBAY

January 18, 1882.4

Sir,—In your public lectures you have affirmed—

- (1) That Christianity is of Divine origin.
- (2) That it is destined to overspread the earth:
- (3) That no other religion is of divine origin.

In reply, I maintain that neither of these propositions is true. If you are prepared to make them good, and to ask the people of Aryavarta

- १. इस पत्र के संकेत के लिए देखों म॰ मुंशीरामकृत पत्र व्यवहार पृ॰ २४४।
- २. पौष कु० ७ सं० १६३८। यु० मी०।
- ३. मूल पत्र इमारे सग्रह में सरिच्त है ।
- ४. [माघ कृष्ण १३ मंगल, सं० १६३८] ग्रक्तूवर सन् १६२६ में म० मामराजजी मेरठ से लाये थे।
- ४. माघ कृष्ण १४ बुघ, सं० १६३८। यु॰ मी०।

to accept your statements without proof, I will be happy to meet you for discussion. I name next Sunday evening at 5-30, at which time I am to lecture at Framji Cowasji Institute. Or, if that should not be convenient to you, then you may name your own time and place in Bombay. As neither of us speaks the other's language, I stipulate that our respective arguments shall be translated to the other, and that a short-hand report of the same shall be signed by us both. The discussion must also be held in the presence of respectable witnesses brought by each party, of whom at least three or four shall sign the report with us; and the whole to be placed in a pamphlet form, so that the public may judge for the mselves which religion is most divine.

दयानन्द सरस्वती
i.e., DAYANAND Saraswati.

[भाषानुवाद]

पिंडत दयानन्द सरस्वती की श्रोर से मिस्टर जॉसेफकुक साहब के पास

> वातकेश्वर बम्बई जनवरी १८।१८८२

महाशय!

आपने अपने सर्वसाधारण व्याख्यानों में निश्चय पूर्वक कथन किया है कि

- (१) कुश्चिन धर्मा ईश्वर मूलक है।
- (२) यह पृथिवी भर में अवश्य ही विस्तृत हो जायगा।
- (३) अन्य कोई भी धर्मी ईश्वर मुलक नहीं है।

उत्तर में मेरा कथन है कि उक्त प्रतिज्ञाओं में से एक भी ठीक नहीं है। यदि आप उक्त प्रतिज्ञाओं को यथार्थ सिद्ध करना चाहते हैं और आर्थवर्त निवासियों को अपने कथनों को विना प्रमाण प्रस्तुत किये स्वीकृत कराना नहीं चाहते तो मैं प्रसन्नता पूर्वक आप से शास्त्रार्थ करने के लिए उद्यत रहूँगा। आगामी रविवार सन्ध्या समय साढ़े पाँच बजे जब कि मैं फ्रोमजी कावसजी इंस्टिटिउट में व्याख्यान दूँगा। शास्त्रार्थ के लिये नियत करता हूं। यदि उक्त समय आपको सुविधा का न हो तो आप अपनी इच्छानुसार कोई समय तथा वस्वई का कोई स्थान शास्त्रार्थ के लिये नियत करें। क्योंकि हम दोनों में से कोई भी एक दूसरे की भाषा नहीं बोल सक्ता अतः मैं निर्धारित करता हूं कि

१. यह पत्र म॰ सुन्शीराम जी कृत 'पत्र न्यवहार' पृ॰ ३००, ३०१ पर छपा है। यह वहीं पत्र है जो ऋषि के ऋषिप्रायानुसार कर्नल श्राल्कट ने लिखा था, परन्तु इस में most divine शन्द कर्नल ने अपनी श्रोर से जोड़ दिया। इसका उल्लेख श्रागे ऋषि के एक विज्ञापन पूर्य संख्या ४०० पैरा ६ में श्राएगा।

२. माघ कृष्ण १४ बुध, सं० १६३८ । यु० मी० ।

300

मेरे तर्क आप को आप के तर्क मुक्त को अनुवादित कर सुना दिए जांए और हम दोनों के कथन संचिप्त लेख वद्ध होकर उन पर हम दोनों के हस्ताचर हो जांय। आप की ओर तथा मेरी ओर से प्रतिष्ठित सांचित्रों का भी शास्त्रार्थ में विद्यमान रहना आवश्यक है जिन में से तीन वा चार को उक्त संचिप्त लेख पर हम लोगों के साथ हस्ताचर भी करना पड़ेगा। उक्त शास्त्रार्थ पुस्तकाकार छप कर सर्व साधारण के सन्मुख प्रस्तुत किया जायगा, जिसे देख कर लोग अपने निश्चय कर लेंगे कि कौन सा धमें श्रेष्ठ ईश्वरोक्त है।

[४] पत्र (३११)

[00 ]

## त्रो३म्°

श्रीयुत मित्रवर श्रार्थ्यकुलभूषक महाशय बाबू रूपसिंह जी योग्य इतः श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी जी का श्राशीर्वाद । पश्चात् रामानन्द ब्रह्मचारी का श्रनेकधा शुभाशीर्वाद विदितहो।।

हे मित्रवर आपका कृपा पत्र २७ जनवरी का लिखा हुआ १ पहिली फर्वरी को पहुंचा। श्रीर जो आप ने ५) रुपये का मनियाडर भेजा वह भी उसी दिवस मिला। हे महाशय आपके कुशल-रूपी पत्र के अवलोकन करते ही ऐसा आह्वाद प्राप्त हुआ कि जिस को लिखने को भी अशक्य हूँ।

भो मित्र ! मैं आप से विनय पूर्वक प्रार्थना करता हूं कि आप के निवेदन किये हुए पदार्थ को अति आनन्द पूर्वक स्वीकार किया। परन्तु आप को अप्रिय लगे तो मेरी अयोग्यता समम कर अपराध समा करना। सुनिये जिस समय नयेसहर में आप सुम को चिट्ठी पत्र के खर्च के वास्ते द्रव्य दे गये थे वह आप का परमार्थक्षी भार अभी मेरे पर विराजमान था। फिर बहुत शीक्र आप ने धर्म क्ष्मी मार निवेदन किया। मैं आप के परमार्थक्षी भार से अति लिजित होता हूँ क्योंकि सुम से आप का कुछ भी प्रत्यु[प]कार नहीं हो सकता। अतः मेरी प्रसन्नता तो आप के अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति होने से है। परमात्मा परम दयालु ईश्वर आपकी सदैव धर्मोन्नति विषय में प्रवृत्ति और अधर्म अवनित से निवृत्ति किया करे।।

अब आप के प्रश्नों का उत्तर श्री स्वामी जी की आज्ञानुसार लिखता हूं। आशा है कि

प्रसम्रता पूर्वक आप स्वीकार करेंगे।।

(प्रश्न) दूसरी माता की सेवा करने का अधिकार पुत्र को पहिली माता के सदश है वा नहीं।। (उत्तर) जो विद्याद शुम गुणों से युक्त हो और शिक्षा पूर्वक पुत्र पर प्रेम रखती हो उसका अनिष्ठ चिन्तन कभी न करती हो तो साचात् अपनी माता के समान तन मन धन से सदैव करना योग्य है। जो इस प्रकार वर्चाव न वर्चें, तो इतनी पुत्र को सेवा करना योग्य है कि अस वस्त्राद और अभिवादन से उस को प्रसन्न रखना, अधिक सत्कार करने योग्य नहीं।। (प्रश्न) १२ वा १४ वर्ष की युवर्ता कन्याओं से पुरुष विवाह कर लेते हैं। उनके साथ पुत्र को किस प्रकार वर्चाव वर्चना चाहिये और विद्याद श्रम गुणों की शिक्षा करे वा नहीं।। (उत्तर) यह साधारण मनुष्यों से होना अशक्य है क्योंकि स्त्री और पुरुष की परस्पर ऐसी आकर्षणता शक्ति है कि जैसे चुम्बक पत्थर की लोहे के साथ। जिस समय

१. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्त है।

युवती स्त्री और युवा पुरुष की आमने सामने दृष्टि पड़ती है उसी समय मत विगड़ जाता है। बहुधा इन्द्रियों के वेगाश्रित होके अन्यथा व्यवहार मनुष्य कर बैठते हैं [इसमें] कुछ शंका नहीं। इससे सब से होना असम्भव है। हां, जो पूर्ण विद्वान योगाभ्यासी अर्थात् जिस की इन्द्रिय आत्मा के वस में हो तो वह कर सकता है। स्त्री को शिचा करने का अधिकार उसके पति ही को है।

(प्रश्न) नियोग से उत्पन्न हुए पुत्र उन माता पिताओं के साथ किस प्रकार वर्ते । (उत्तर) जो खी अपने वास्ते नियोग से पुत्र को उत्पन्न करे वह पुत्र उस खी के मृतक पित का होगा और उस के पदार्थों का दायभागी होगा। जो पुरुष अपने वास्ते नियोग से पुत्र को उत्पन्न करेगा तो वह पुत्र उस पुरुष का होगा और उसी के पदार्थों का दायभागी भी होगा। सेवा करना भी जिसका पुत्र कहावेगा उसी की तन मन धन से करना योग्य है। दोनों की नहीं कर सकता। इस प्रकार का निर्णय वेदादि सत्यशाखों में विवेचन किया है। इन प्रश्नों के उत्तर तो सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि में देखने से निवृत्त हो सकते हैं।

मैं बहुत प्रसन्न होता हूँ ज्ञापका बड़ा भारी यश समसता हूँ जो आप प्रश्न भेजते हैं। अब जो मेरे करने योग्य [हो] वह आप कृपा पूर्वक पत्र पर लिख भेजा करें।। किमधिक लेखेन बुद्धिमद्वर्य्येषु ॥ आज कल यहां गोरचा के विषय में व्याख्यान होते हैं। यहां कोई एक मास पर्य्यन्त स्वामी जी का निवास रहेगा। फिर जहां को जाने का विचार होगा, पत्र द्वारा मैं आप को विदित कर दूँगा और जो यहां विशेष वार्ता आप को लिखने योग्य होगी, वह आप को निवेदन किया कहंगा।

शुभम् ता० ३ फरवरी सन् १८८२ ई०9

(हस्ताचर रामानन्द ब्रह्मचारी)

[\$].

## पत्रांश (३१२)

[305]

[समाचार पत्र देशहितैषी श्रजमेर को?]

श्रमृतलाल को श्रपनी समाज का सभासद कर लो। ४ फरवरी १८८२ मुम्बई४

दयानन्द सरस्वती

[9]

पत्र (३१३)

[308]

पण्डित सुन्दरलाल जी श्रानिन्दित रहो<sup>५</sup> ! विदित हो कि पत्र तुम्हारा श्राया । समाचार विदित हुश्रा । जो प्रतिमास में २० फारम

- १. माघ शु० १५ शुक्र, सं० १६३८ । यु० मी० ।
- २. देशहितैथी के रजिस्टर से।
- ३. रजिस्टर में एक टिप्पण है कि "ये जयपुर में रहते थे"।
- ४. फाल्गुन कृष्ण १ शनि, सं० १६३८ । यु० मी० ।
- पू. इस की छपी हुई प्रतिलिपि फरुखाबाद आर्यसमाज में थी। उसी से म॰ मामराज जी ने सन् १६२७ में प्रतिलिपि की।

विम्बई, सन् १८८२

वेदभाष्य के श्रीर १२ फारम वेदांगप्रकाशादि के छपें तो कुछ चिन्ता नहीं। परन्तु इतने से कम न छपना चाहिये। जो ..... के मन्त्री ने छापा खाना .... होने के विषय में लिखा है यह बिलकुल बेसमम की बात है। क्योंकि प्रथम तो जगह २ छापेखाने के होने में व्यर्थ हजारों रुपये खर्च होते हैं। श्रीर छापेखाने की प्रसिद्धि होने में भी बहुत काल लग जाता है। प्रबन्ध भी बिगड़ जाता है। श्रीर भी बहुत प्रकार की हानि हो जाती है। इस से छापाखाना प्रयाग ही में रहेगा। ... में तो इस भाषा के जानने वाले कंपीजीटरों का भी मिलना दुर्लभ है। जो वह हमको लिखेगा तो हम उसको उत्तर दे देंगे। यह उसका लिखना विलक्कल व्यर्थ है।

तुम और बाबू विश्वेश्वरसिंह छापेखाने की तरफ दृष्टि रक्खोगे और भीमसेन को चेतन कर दोगे। मिति फाल्गुन वदी ३ सोमवार संवत् १९३८ । (ह० द्यानन्द सरस्वती)

[33]

पोस्ट कार्ड (३१४) श्रो३म्

18 SIE

[360]

वाजपेई रामाधार जी आनंदित रही? !

विदित हो कि आज हम ने वैदिक यंत्रालय प्रयाय मैनेजर द्याराम को लिख भेजा है सो आप का हिसान सफा हो जायगा, अब आगे को गड़बड़ न होगा। देखिये यह परोपकार का काम है इस में सब बात के प्रबन्धकर्ता आप ही को रहना चाहिये, आप आपनी ओर से चाहे जिस को रक्खें परन्तु प्रधान आप ही सममे जायेंगे। अब आप इस पुराने हिसाब की सफाई करके नया हिसाब का आरंभ की जिये फिर गड़वड़ कभी नहीं हो सकेगी। हम यहां सहर मुंबई बालकेश्वर गोशाला के बगल में ठहरे हैं। यहां गोरचा के विषय में ज्याख्यान होते हैं॥

ता० २० फरवरी सन १८८२ ई० ।

दियानन्द सरस्वती

[8]

पत्र-सूचना (३१५)

[369]

बाबू शिवनारायण जी मेरठ । २४ फरवरी १८८२ मुम्बई

१. ६ फरवरी १८८२ । यु॰ मी॰ ।

२. मूल पत्र आर्यंसमाज लखनऊ के संग्रह में सुरिच्चत है।

३. फाल्गुन शुक्क ३ सोम, सं० १६३८। इस पत्र का उत्तर म० मुंशीराम संपा० पत्रव्यवहार पु॰ ३३८ पर छपा है।

४. म॰ सुशीराम संपा॰ पत्रव्यवंहार पृ॰ ३१७ पर इस पत्र का संकेत है।

प. फाल्गुया शुक्ल ७ शुक्त, सं० १६३८ । यु॰ मी॰ ।

पत्र (३१७)

398

[५]

पत्र (३१६)

श्रीयुत मित्रवर त्रार्थ्यकुल-प्रभाकर महाशय वाबू रूपसिंह जी योग्य इतः रामानन्द [३८२] ब्रह्मचारी का यथायोग्य नमस्ते विदित हो ॥१

हे महाजन त्राप के पत्र के प्रश्नों का उत्तर श्रीयुत स्वामीजी के आज्ञानुसार लिखकर मेज दिया था<sup>२</sup>। त्राशा है कि पहुंचा होगा। श्रव दो पत्र गोरच्चा के विषय के भेजता हूं जिस में एक षत्र तो सही करने 3 का है जिसके ऊपर (श्रोशम् श्रीर नीचे हस्ताचर) ऐसा चिन्ह है श्रीर दूसरा विज्ञापन पत्र र अर्थात् किस प्रकार महाशयों के हस्ताचर और मोहर होनी चाहिये इस विषय का है ॥

श्राशा है कि आप इस महोपकीर्त्ति को प्राप्त हो कर आर्थ्यावर्त्त में सुशोभित होंगे । आप पंजाव हाथे में जहां तक आपका पुरुषार्थ चले वहां तक अपनी और सब महाशयों की सही करा कर शीघ्र स्वामी जी के पास [भेज] देंगे। इस में सही इस प्रकार करानी होगी कि जिस महाशय के मेल में जितने आर्थ पुरुष हों उन सब की ओर से वह एक पुरुष अपने हस्ताचर कर दे कि इतने १०० इतने १००० इतने १००००० वा इतने १००००००० करोड़ पुरुषों की खोर से मैं अमुक नामा पुरुष अपने हस्ताचर करता हूं। इस प्रकार सही करके पश्चात् जितने पुरुषों की स्त्रोर से उसने सही की हो उन सव के हस्ताचर कराके अपने पास रखले। क्यों कि जिस समय मुकइमा सरकार में पहुंचेगा उस समय जब सरकार पृद्धेगी कि इतने मनुष्यों की श्रोर से तुमने हस्ताचर किये परन्तु उनकी सही तुम्हारे पास है कि नहीं, तब दिखलाई जायगीं कि है। इस लिये सही करा कर रखनी अवश्य चाहिये॥

मुम को हुद निश्चय है कि इस कीति के भागी आप होंगे । अब आप अपना पत्र शीघ भेजकर सुम को कृतार्थ करेंगे। जो कुछ मेरे करने का काम हो कृपा पूर्वक विदित करना । आशा है कि आप कुट्मब के सहित आनन्द में होंगे। मैं भी ईश्वर की कृपा से आनन्द में हूं॥

परमात्मा परम दयालु न्यायकारी सर्वान्तर्यामी जगदीश्वर आपको सदैव आनन्द में रक्खे ॥ शुभम सम्वत् १९३८ चैत्र कृष्ण ५ शुक्र' ता० १० मार्च सन् १८८२ ई० ॥

[रामानन्द ब्रह्मचारी]

[२१]

पत्र (३१७)

[363]

मंत्री आर्य्यसमाज दानापुर आनन्दित रही"!

मैं श्राप परोपकारत्रिय धार्मिक जनों को सब जगत् के उपकारार्थ गाय बैल श्रीर मैंस की हत्या के निवारणार्थ दो पत्र एक तो सही करने का और दूसरा जिस के अनुसार सही करनी भ है दो पत्र भेजता हूं। इसको आप प्रीति और उत्साह पूर्वक स्वीकार कीजिये, जिस से आप महाशय लोगों की कीर्त्ति इस संसार में सदा विराजमान रहे। इस काम को सिद्ध करने का विचार

१. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिवत है।

२. पूर्ण संख्या ३७७ का पत्र। यु॰ मी॰।

३. यह पूर्ण संख्या ३८७ पर छपा है। यु॰ मी॰।

४. यह पूर्ण संख्या ३८८ पर छपा है । यु॰ मी॰ ।

५. मल पत्र श्रार्थिसमाज दानापुर में सुरिच्चत है।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

इस प्रकार किया गया है कि २०००००० दो करोड़ से अधिक राजे महाराजे और प्रधान आदि महाराय पुरुषों की सही कराके आर्यावर्त्तीय श्रीमान् गवरनर जनरल साहेब बहादुर से इस विषय की की अर्जी करके उपरी लिखित गाय आदि पशुओं की हत्या को छुड़ वा देना। मुक्त को टढ़ निश्चय है कि प्रसन्नता पूर्वक आप लोग इस महोपकार क कार्य को शीघ करेंगे। अधिक प्रति भेजने का प्रयोजन यह है कि जहां २ उचित सममें वहां २ भेज कर सही करा लीजिये। पुनः नीचे लिखित स्थान में रिजिष्टरी कराके भेज दीजिये। लाला रामशरण रईस मंत्री आर्यसमाज मेरठ।। अलमितविस्तरेण धर्मिवरशिरोमिण्छु।।

ताः १२ मार्च सन् १८८२ ई० १।

(द्यानन्द सरस्वती) सुम्बई

[44]

पत्र (३१८)

[368]

**ब्रो**३म्

लाला रामचरण कालीचरण-मन्त्री त्रार्थसमाज फरुखावाद् श्रानिहित रहो।
.....पूर्ण सं० ३८३ का पत्र।
चैत्र कृष्ण ८ सोम० संवत् १९३८३।
[ह० द्यानन्द सरस्वती]

[२३]

पत्र (३१९)

[364]

श्रार्थ्यसमाज लखनऊ बाबू रामाधार वाजपेयी खजाना रत्नवे श्रानन्दित रही। । ...... पूर्ण सं० ३८३ का पत्र।

मि० चै० व० प सोम० सं० १९३५ ।

द्यानन्द् सरस्वती

[२]

पत्र (३२०)

[३८६]

पण्डित सुन्दर लाल श्रसिसटेण्ट पोस्ट मास्टर जनरल प्रयाग श्रानिन्दत रहो।

......पूर्ण संख्या ३८३ का पत्र । चैत्र कृष्ण ८ चन्द्रवार सं० १९३८³।

ह० द्यानन्द सरस्वती

१. चैत्र कृष्ण ७ रवि सं० १६३८। यु. मी. ।

२. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्चित है। इसे म॰ मामराज ने सन् १६२७ में आर्थसमाज फरुखाबाद के पुराने पत्रों में से खोजा॰था। इस मूल पत्र का फोटो पं॰ घासीराम जी सम्पा॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ६३१ पर लगा है। तथा वेदवाणी काशी, फरवरी १६५३ के पृष्ठ १३ पर पूरा छुपा है।

३. ता० १३ मार्च १८८२।

४. मूल पत्र त्रायंसमाज लखनऊ के संग्रह में सुरित्त है।

४. यही पत्र श्री स्वामी जी ने गोरहार्थ सही करने वाले दूसरे पत्र (पूर्ण संख्या ३८७, ३८८) के साय इस्ताह्यर कराने के लिये मारतवर्ष में सैकड़ों की संख्या में ऋार्यसमाजों तथा ग्रन्यों को मेजा था। बम्बई, सं० १९३८]

पत्र (३२१)

३१३

[8]

# सही करने का पत्र (३२१)

[826]

ऐसा कौन मनुष्य जगत् में है, जो सुख के लाभ होने में प्रसन्न और दु:ख की प्राप्ति में अप्रसन्न न होता हो। जैसे दूसरे के लिये अपने उपकार में स्वयं आनन्दित होता है, वैसे ही परोपकार करने में सुखी अवश्य होना चाहिये। क्या ऐसा कोई भी विद्वान भूगोल में था, है और होगा, जो परोपकाररूप धर्म और परहानिस्वरूप अधन्में के सिवाय धर्म वा अधर्म की सिद्धि कर सके। धन्य वे महाशय जन हैं, जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निन्द-नीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थवश होकर अपने तन, मन और धन से जगत् में पर-हानि करके बड़े लाभ का नाश करते है। स्रष्टिकम से ठीक २ यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो २ वस्तु बनाया है, वह वह पूर्ण उपकार लेने के लिये हैं। श्रल्प लाभ से महाहानि करने के अर्थ नहीं। विश्व में दो ही जीवन के मूल है, एक अस और दूसरा पान । इसी अभिप्राय से आर्थ्यर शिरोमिए राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। श्रव भी इन गाय, बैल, श्रीर भैंस को मारने श्रीर मरवाने देना नहीं चाहते हैं। क्योंकि श्रम और पान की बहताई इन्हीं से होती है। इससे सब का जीवन सुख से हो सकता है। जितना राजा और प्रजा का बड़ा नुकसान इन के मारने श्रीर मरवाने से होता है, उतना श्रन्य किसी कर्म से नहीं । इस का निर्णाय गोकरुणानिधि पुस्तक में अच्छे प्रकार प्रकट कर दिया है अर्थात एक गाय के मारने श्रीर मरवाने से ४,२०,००० चार लाख बीस हजार मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इस लिए हम सब लोग स्वप्रजा की हितैषिणी श्रीमती राजराजेश्वरी किन विक्टोरिया की न्याय प्रणाली में जो यह अन्याय रूप बड़े २ उपकारक गायं आदि पशुओं की हत्या होती है इस को इन के राज्य में से प्रार्थना से छुड़वा के अति प्रसन्न होना चाहते हैं। यह हम को पृरा निश्चय है कि विद्या, धर्मी, प्रजा-हित-ित्रय श्रीमती राजराजेश्वरी किन् महाराणी विक्टोरिया पार्लियामेण्ट सभा श्रीर सर्वोपरि प्रधान श्रार्थ्यवर्त्तस्थ श्रीमान् गवर्नर जनरल साहिब बहादुर सम्प्रति इस बङ्गि हानिकारक गाय बैल, तथा भैंस की हत्या को उत्साह और प्रसन्नता पूर्वक शीघ्र बन्द करके हम रूव को परम आनिन्दित करें। देखिये कि उक्त गाय आदि पशुत्रों के मारने और मरवाने से दूध घी और किसानों की कितनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्य प्रति अधिक २ होती जाती है। पत्तपात छोड़ के जो कोई देखता है तो वह परोपकार ही को धर्म और पर हानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या विद्या का यह फल और सिद्धान्त नहीं है कि जिस २ से अधिक उपकार हो उस २ का पालन, वर्धन करना श्रीर नाश कभी न करना। परम द्यालु न्यायकारी सर्वान्तर्यामी सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस समस्त जगदुपकारक काम करने में ऐकमत्य करे।।

चुन्नीलाल प्रेस

(इस्ताच्चर)

१. गोरल्लावाल पत्रों के साथ यह सही करने वाला छापा हुआ पत्र बहुत स्थानों को मेजा गया था। मूल मुद्रित पत्र म॰ मामराज फरुखाबाद से लाये थे। वह हमारे संग्रह में सुरिल्लित है। फरुखाबाद का इतिहास नामक ग्रन्थ पृ० १६८ पर भी छपा है।
२. इस का पूर्ण विवर्ण 'गो करुणानिधि' में देखें। यु० मी०।

[बम्बई, सन् १८८२

[38]

विज्ञापनपत्रमिद्म (३२२)

[366]

सब आर्थ पुरुषों को विदित किया जाता है कि जिस पत्र के ऊपर (ओम्) और नीचे (हस्ताचर) ऐसा वचन लिखा है, वही सही करने का है उस पर सही इस प्रकार करनी होगी कि जिस के स्वराज्य व देश में ब्राह्मण् आदि मनुष्यों की जितनी संख्या हो उतनी संख्या लिख के अर्थात् इतने सौ, हजार लाख व करोड़ मनुष्यों की ओर से मैं अमुक नामा पुरुष सही करता हूं इस प्रकार एक श्रीयुत महाशय प्रधान पुरुष की सही में सर्व साधारण आर्थ पुरुषों की सही आ जायगी। परन्तु जितने मनुष्यों की ओर से एक मुख्य पुरुष सही करे वह उन से सही लेके अपने पास अवश्य रक्खे। और जो मुसलमान वा ईसाई लोग इस महोपकारक विषय में हद्ता और प्रसन्नता से सही करना चाहें तो कर दें। मुक्त को हद निश्चय है कि आप परम उदार महात्माओं के पुरुषार्थ उत्साह और प्रीति से यह सर्व उपकारक महापुण्य की चित्रदायक कार्य यथावत् सिद्ध हो जायगा।

चैत्र कृष्ण ९ सं० १९३९२ तद्नुसार १४ मार्च १८८२ मुंबई

दयानग्द सरस्वती

[2]

पत्र सूचना (३२३)

[362]

म० कृष्णताल साह श्रल्मोड़ा<sup>3</sup> गोरत्तासम्बन्धी दो पत्र चैत्र वदी ११ बुधवार संवत् १९३८<sup>४</sup> मुम्बई

[8]

पत्रांश (३२४)

[390]

[ समाचार पत्र देशहितैषी अजमेर को ] गोरचा के विषय में पत्र भेजते हैं।" १६ मार्च १८८२ मुम्बई⁵

दयानन्द सरस्वती

१. सही करने वाले पत्रों के साथ यह विज्ञापन भी ऋनेक स्थानों में भेजा गया था। यु॰ मी॰।

२. यहां सं० १६३८ चाहिये, चेत्र शुक्ल १ से नया संवत् चलता है। फरुखाबाद का इतिहास नामक प्रन्थ पृष्ठ २०० पर भी सं० १६३६ ही छपा है। वहां श्रंग्रेजी तारीख २४-३-१८८२ दी है वह भी श्रशुद्ध है। १४ मार्च चाहिये। यु० मी०।

३. म॰ मुंशीराम संपा॰ पत्रव्यवहार पू॰ ३७२ पर म॰ कृष्णलाल जी का पत्र ता॰ २६ मार्च १८८२ का है। उसी में इस पत्र का संकेत है।

५. देशहितैषी के रजिस्टर में से।

६. चैत्र वदी १२ गुरु०, सं० १६३८ । यु॰मी० ।

वम्बईं, सं० १९३८]

पत्र (३२५)

384

हि

पत्र (३२५)

[399]

बाब कपाराम स्वामी श्रानन्दित रही।

जो श्रापने ब्राह्मी श्रोषधी का पारसल भेजा सो पहुंचा। श्रव जब तक हम न लिखें तब तक मत भेजियेगा। यहां सब प्रकार श्रानन्द है। ३ तीन दिन के पश्चात वार्षिक उत्सव श्राय्येसमाज का ७ सातवां होगा। दानापुर से तीन सभासद यहां उत्सव पर आवेंगे, और आर्यसमाज का स्थान भी थोड़े ही दिनों में बन जायगा। सब सभासद भी प्रसन्न हैं। वहां की जो लिखने के तुल्य बातें हों, लिखते रहना । िसव ो से हमारा त्राशीर्वाद कहना । मि० चै० व० १३ शुक्र सं० १९३८ ।

[दयानन्द सरस्वती]

[१२]

पत्र (३२६)

[३९२]

लाला कालीचरण रामचरण जी आनंदित रही?।

विदित हो कि कल रामानन्द के भाई त्रिलोचन ने एक पत्र भेजा है कि जिस में यह समाचार लिखा था। माता, पिता, बहुत बीमार हैं। और मैं भी बीमार हूं। यहां कोई हमको जल देने वाला भी नहीं है। इस कारण तम श्री स्वामी जी से आज्ञा लेकर देखत पत्र के चले आखो। ऐसा शोक का समाचार लिखा था। इस बात की तुम पत्र के पहुंचते ही तलासी करना कि यह बात सच है किस्वा किसी के बहिकाने से उन्होंने लिखी अर्थात केवल भाई के बुलाने के वास्ते। इसका ठीक २ निर्णय करके शीघ्र हमारे पास पत्र भेजो। जो ऐसा ही हो की जैसा लिखा है तो किसी एक योग्य पुरुष का प्रवन्ध करके उनके पास रख देना जो उनकी सेवा अच्छे प्रकार कर सके । स्रौर जो दवा दारू के खर्च में दो चार रुपये लगें तो दे देना। हिसाब हमारे नाम से लिख लेना। अब इसका पिता भी वहां आ गया है। इस कारण "३) हपैये तो मा[ह]वारी इने मिलते ही हैं अब एक ह० अर्थात् ४) रुपैये मा[ह]वारी सेट निर्भयराम जी [की] दुकान दिया करे" किसी प्रकार दुःखी न होने देना जब तक अच्छे न होंवे।।

एक यह गुप्त बात लिखते हैं इसको प्रकट मत करना कि जो किसी का लोकान्तर हो जाय तो जैसा संस्कारविधि में लिखा है उसके अनुसार घृत चन्दनादि से मृतक संस्कार करवा देना । जो कुछ पंद्रह बीस रुपये लगें, लगा देना, परन्तु संस्कार अच्छी प्रकार करवा देना। "सब से हमारा आशीर्वाद कहियेगा। जो गोरचा के विषय में पत्र वहां भेजे हैं उनको दिखला के अपनी जाति किंवा सब की सही बही में लेना। श्रीर सही करने वालों की श्रीर से जितनी संख्या हो उतनी लिख के

पंच लोग सही उस छपे हुए पत्र पर क[र] देवें।"3

चैत्र कृष्ण ३० रविवार सम्वत् १९३५४ ।

(द्यानन्द सरस्वती)

१. १७ मार्च १८८२ मुम्बई ।

२. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरित्त्वत है। मार्च सन् २७ में म० मामराज ने आर्थ्यमाज फरुखाबाद के पत्रों में से खोजा था।

<sup>&</sup>quot; कामों के अन्दर का लेख श्री स्वामी जी ने स्वइस्त से (लाल रंग से) लिखा है और ४. १६ मार्च १८८२ । पत्र को शोधा भी है।

[2]

पत्र-सूचना (३२७)

[३९३]

[श्रीमान् त्र्यार्यकुलिदवाकर महाराणा सज्जनिसह जी उदयपुराधीश] गो रज्ञा संबन्धी एक पत्र श्रीर एक छपी चिट्ठी ।

[3]

पत्र (३२८)

[388]

**ब्रो**३म्<sup>२</sup>

श्रीमन्महाराजाधिराजेभ्यः श्रीयुत शाहपुराख्याधीशेभ्यो द्यानन्द्सरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयामुत्तमां शिमहास्ति भवदीयं च नित्यमाशासे। जब से आप और मेरा वियोग हुआ तब से अवकाश न मिलने से मैं आपको पत्र नहीं लिख सका। अब इस पत्र के पहुंचने के पश्चात् अपने कुशल जेम के समाचार से मुमूषित पत्र भेजियेगा। मैं भी उचित समय पर पत्र भेजा करूंगा, जो आप से और मुक्त से गोरचा के विषय संवाद हुआ था उसके वास्ते जो एक पत्र और एक चिट्ठी छपवाके श्रीमानार्थ्यकुलदिबाकर उद्यपुराधीशादि राजे महाराजों के पास भेजे हैं वे ही श्रीमान महाराजाधिराज आपके पास भी दो पत्र भेजते हैं, इसका प्रवन्ध ऐसा किया है कि अपने राज्य और मित्रों के राज्य में जो जो ब्राह्मणादि मनुष्य हों उनकी सही एक बही में लेके उनकी ओर से राजे महाराजे और प्रधान पुरुष उस छापे के पत्र के नीचे वा बगल में उन सही करने वालों की संख्या लिख के अपनी सही करे। चित्तौड़ में जो कुछ अच्छी बातें हुई वे सब श्रीमद्नवद्य गुणोदार महाराजाधिराजों के पुरुषार्थ ही से हुई और अमे होगी। जो राजकुमार पाठशाला की वात हुई थी सो श्रीमदार्यकुलभास्करों ने भी करना स्वीकार कर लिया है। यहां मुम्बई में भी गोरचा के वास्ते सही हो रही है। सब से मेरा आशीर्वाद कहियेगा। अलंमितिविस्तरेण महाराजाधिराजवर्येषु। मि० चै० शु० २ वार मंगल संवत् १९३९ । इस का उत्तर मुम्बई में शीघ लिख भेजिये। मुंबई बालकेश्वर।

(द्यानन्द सरस्वती)

[6]

पत्र-सारांश (३२९)

[399)

[कर्नल आल्काट तथा मैडम ब्लेवेस्टकी४] 1

मेरठ में आपने एक व्याख्यान दिया था, जिस से ज्ञात हुआ कि आप लोगों को ईश्वर के अस्तित्व में सन्देह है और आप लोगों ने जो चिट्टी अमेरिका से लिखी थी उस में अपने धर्म का नाम

१. यह पत्र १४ से २१ मार्च १८८२ के मध्य मेजा गया होगा। देखो पूर्ण संख्या ३६४। यु॰ मी॰।

२. मूल पत्र राज कार्यालय शाहपुरा में सुरिचत है । इसकी प्रतिलिपि पं∘ भगवान्स्वरूपजी ने स्वहस्त से करके ता॰ ६-६-२८ के अपने पत्र सिहत शाहपुरा से मेजी थी।

३. २१ मार्च १८८२।

४. यह पत्राशय पं॰ घासीराम जी सम्पा॰ जी॰ च॰ परिशिष्ट २ पृष्ठ ७७३ तथा पं॰ लेखराम जी कृत जी॰ च॰ पृष्ठ ८४१ पर उद्धृत है। यु॰ मी॰।

थियोसोफिस्ट लिखा था। इसने थियोसोफिस्ट राज्द के अर्थ अंग्रेजी जानने वालों से पूछे तो उन्होंने कोष को देखकर 'थियोसोफी' राज्द के अर्थ ईश्वर की बुद्धिमत्ता बतलाये थे। उस से इसने आप को आस्तिक सममा था और इस कारण आप से मित्रता करने में मुमे कोई रुकावट नहीं रही थी। अब आप के ज्याख्यान इस के विपरीत देखते हैं। आप से और इस से मित्रता हो चुकी है अतः कल के दिन अथवा जितना शीघ्र हो सके आप मेरे पास चले आओ वा मुमे अपने पास बुला लो, वा कोई अन्य स्थान नियत करो कि जहाँ इस दोनों मिलकर इस विषय में शास्तार्थ करें। यदि आप से हो सके तो इमारे मन से ईश्वर का विचार उठा दो और अपने जैसा बनालों, अन्यथा इस से हो सकेगा तो इस आप को ईश्वर का प्रमाण देंगे और आप को अपने जैसा बनालों।

२१ मार्च सन् १८८२।

[8]

पत्र-सारांश (३३०)

[398]

[मैडम ब्लेवेस्टकी २]

कर्नल ने हमें वचन दिया था कि हम शीघ्र ही इस विषय में शास्त्रार्थ करेंगे, परन्तु वह उसे पूरा किये विना ही अन्यत्र चले गये। सो यदि तीन चार दिवस के भीतर आप अकेली अथवा कर्नल सहित इस बखेड़े को न निवटा लोगी तो मैं २८ मार्च सन् १८८२ मंगलवार को फ्रामजी कावसजी हाल में आप के विरुद्ध वक्तृता दूँगा।

२२ मार्च १८८२ ।४

[3]

पत्र (३३१)

[399]

पंडित सुन्दरलाल जी आनंदित रही ।

विदत हो कि आर्थसमाज लाहौर में प्रति मास अप्रेजी [का] एक आर्थपत्र निकलता है। वहां के एडीटर ने लिखा है कि इस पत्र के बदले में आप प्रतिमास ऋग्यजुर्वेद का भाष्य भेजा करें और इसके बदले वह पत्र भेजेंगे। सो तुम लाला साईदास के मार्फत वेदभाष्य भेज देना और वे जैसा नोटिस लिख भेजें छपने के वास्ते वैसा ही छपवा देना।।

भीमसेन श्रव भाषा बहुत ढीली बनाता है उसकी शिक्षा कर देना कि भाषा के बनाने में ढील न हुआ करे और आख्यातिक श्रव कितना छप चुका है। हमने कई बातें पूछीं हैं उनका उत्तर

१. चैत्र शुक्क २ मंगल, सं० १६३६ । यु० मी०।

२. यह पत्राशाय पं॰ घासीरामजी सम्पादित जी॰ च॰ परिशिष्ट २ पृष्ठ ७७४ तथा पं॰ लेखराम जी कृत जी॰ च॰ पष्ट ८४१, ८४२ पर उद्धृत । यु॰ मी॰ ।

३. चैत्र शु॰ ६ मंगलवार सं॰ १६३६ सायं ६ बजे उक्त व्याख्यान दिया था। देखो ऋ॰ द॰ का जीवनचरित्र। यु॰ मी॰।

४. चैत्र शुक्क ३ बुघ, सं० १६३६ । ५. मूल पत्र परोपकारियी सभा श्रजमेर में मुरिच्चत है।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र स्त्रीर विज्ञापन

हमको खब तक न दिया। उनका शीघ्र प्रत्युत्तर भेजना चाहिये । मेनेजर दयाराम ने अभी त[क] हिसाब का पत्र नहीं भेजा है उससे हिसाब भिजवा देना।

मार्च ता० २३ सन् १८८२ ई०१

स्रोर जिन बातों के पूर्व पत्रों में उत्तर मांगा है भेज देना। इसमें विलम्ब न होना चाहिये। [दयानन्द सरस्वती]

[४] पत्र (३३२) [३९८]

यह बात बहुत उत्तम है क्यों कि अभी कलकत्ते में इस विषय की सभा हो रही है । इस लिये जहां तक बने वहां शीघ संस्कृत और मध्य देश की भाषा के प्रचार के वास्ते, बहुत प्रधान पुरुषों की सही कराके कलकत्ते की सभा में भेज दीजिये और भिजवा दीजिये। और मेरठ और देहरादून से पूर्व २ समाजों में पत्र इस विषय के शीघतर भेज दीजिये।

चै० गु० ५ गुक्र सम्वत् १९३५ ।

द्यानन्द् सरस्वती (मुंबई)

[३२] विज्ञ

विज्ञापनपत्रमिदम् [३९९]

सब सज्जन उदार आर्य लोगों को विदित किया जाता है कि जो फीरोजपुर में अनाथाश्रम कई एक वर्षों से आर्यसमाजों ने स्थापित किया है यह बड़ा प्रशंसित और धर्म का काम है और इस में बड़े सहाय की अपेका है। इस लिये आप सज्जन लोगों को उचित है कि इसका सहाय करना।

१. चैत्र शुक्क ४ बृह० सं० १६३६ । यु॰ मी॰।

२. मूल पत्र मार्च सन् १६२७ में महा० मामराज जी ने फर्रखाबाद आर्यसमाज के पत्रों में से खोजा था। आब इमारे संग्रह में सरिवत है।

- ३. भारतीय स्कूलों में कौनसी भाषा पढ़ाई जावे, इस विषय पर विचारार्थ सन् १८६२ के आरम्भ में कलकत्ता में एक किमशन बैठा था। लाहौर समाज ने उस किमशन के प्रधान को आर्यभाषा पढ़ाई जाने के लिये पत्र लिखा था। मुलतान समाज ने भी ऐसा ही पत्र वहां मेजा था। उन दिनों मुलतान समाज के मन्त्री उत्साहमूर्ति मास्टर द्याराम थे। उन्होंने श्री स्वामी जी को १६ मार्च सन् १८६२ को लिखा कि वे सब समाजों को कलकत्ते को ऐसे पत्र लिखने के लिये प्रेरित करें। श्री स्वामी जी ने उसी पत्र की पीठ पर कपर मुद्रित लेख स्वहस्त से लिखकर फरूखाबाद भेजा ताकि वहां से सब समाजों में यह आन्दोलन किया जावे।
- ४. सही करने योग्य पत्र तथा मास्टर दयाराम जी का पत्र हमारे संग्रह में थे, वे लाहीर देशविभाजन के समय नष्ट हो गये।
  - ५. यहां सं ० १६३६ चाहिये, २४ मार्च १८८२ ।

६. ऋग्वेदमाष्य, श्रंक ३६, ३७, वैदिक यन्त्रालय, प्रयाग के मुखपृष्ठ की पीठ पर छपा। यह श्रंक चैत्र शुक्ल १० संवत् १६३६ तदनुसार २६ मार्च सन् १८८२ को छपा था। क्यों कि इसके होने से आर्यलोग जिन का पालन करने वाला कोई न होने वे ईसाई वा मुसल्मान अथवा अन्य मत में वेदोक्त सनातन धर्म से छूट के मिल जाते थे उनकी रक्ता के लिये यह अनाथ पालनार्थ सभा नियत की है। जिस प्रकार अर्थात् धन के सहाय करने से इसका दीर्घायु हो वैसे यह करने चाहिये॥ ॥ अलमतिविस्तरेखीदार्थादिगुख्युक्तेषु॥

ह० द्यानन्द सरस्वती

[33]

## विज्ञापन<sup>9</sup>

[800]

## थियोसोफ़िस्टों की गोलमाल पोलपाल ।।

श्री स्वामी जी ने श्रौर श्रार्थंसमाज के लोगों ने चन के पूर्व पत्र श्रौर व्यवहारों से यह श्रमान किया था कि चन से श्रार्थावर्त देश का कुछ उपकार होगा । परन्तु वह श्रमुमान व्यर्थ हो गया—

- (१). क्योंकि जो २ जन्होंने प्रथम अपनी चिट्ठियों में प्रसिद्ध लिखा था कि हमारी थियोसो-फिकल सोसाइटी आर्यसमाज की शाखा हुई, उससे यह लोग वदल गये।
- (२) उन्होंने कहा था कि वेदोक्त सनातन धर्म के प्रहरण और विद्यार्थी होकर संस्कृत विद्या पढ़ने को आते हैं, सो तो न किया, किन्तु अब किसी धर्म को नहीं मानते और न कुछ किसी धर्म की जिज्ञासा की, न आज तक संस्कृत विद्या पढ़ने का आरम्भ किया और न करने की आशा है।
- (३) उन्होंने कहा था कि जो इस सोसाइटी के सभासदों से फीस आवेगी वह आर्थसमाज के लिये होगी और बहुत सी पुस्तक मेंट की जावेंगी, वह तो कुछ भी न किया, परन्तु जो हरिश्चन्द्र चिन्तामिए के पास ७००) कपये भेजे थे वह भी निगल कर बैठ रहे, पुस्तकों का दान करना तो दूर किन्तु जिन बाबू छेदीलाल और शिवनारायए आर्थसमाज मेरठ के सभासदों ने उनके सत्कार में स्थान, मान, सवारी और खान पान आदि में सैकड़ों कपये खर्च किये, इतने पर भी एच० पी० मैडम ब्लेवटस्की और एच० एस० करनेल आलकाट साहब ने जो एक पुस्तक उनको दिया था उसके ३०) क० मट ले लिये और लिजित भी न हुए। इसके सिवाय सहारनपुर, अमृतसर और लाहौर आदि के आर्थसमाजों ने बहुत सा सत्कार किया वह भी उन्होंने नहीं सममा और स्वामी जी ने भी जहां तक बना इनका उपकार किया। उसको न मान कर व्यर्थ लिखते हैं कि हमने स्वामी जी का बहुत सहाय
- १ यह विज्ञापन लगभग ३१ मार्च सन् १८८२ को मुम्बई के श्रोरिययटल प्रेस में छपा था । यही विज्ञापन पं॰ लेखरामकृत जीवन चिरत पृष्ट ८४२-८४४ पर छपा है। पिएडत जी ने इस का उर्दू श्रनुवाद नहीं किया। फारसी श्रद्धरों में भाषा मूल समान ही दी गई है। पं॰ लेखराम जी का पाठ श्रिधिक शुद्ध है। श्रार्थ धंमेन्द्र जीवन में दुछ शब्द बदले हुए प्रतीत होते हैं। हमें मूल मुद्रित प्रति प्राप्त नहीं ही सकी।
- २. सं० १६४२ (सन् १८८५) में मोहनलाल निष्णुलाल पायड्या उपमन्त्री परोपकारियी समा द्वारा मुद्रापित "आवेदन पत्र" में ऋषि दयानन्द के पुस्तकसंग्रहान्तर्गत संख्या ११६ पर "थियोसोफिकल सोसाइटी के दोषों का स्वामीजी का उत्तर" पुस्तिका निर्दिष्ट है, वह सम्भवतः यही विज्ञापन है। यु० मी०।
- ३. इन सात सौ रुपयों के सम्बन्ध में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने २४ फरवरी १८७६ को श्री स्वामी जी के नाम के पत्र में लिखा था। वह पत्र लाहौर में नष्ट हो गया।

किया, परन्त स्वामी जी कहते हैं कि कुछ भी नहीं और जो किया हो तो प्रसिद्ध क्यों नहीं करते हैं

सो कुछ भी प्रकट नहीं करते फिर कौन मान सकता है ?

(४) प्रथम इन्होंने अपने पत्रों में और यहां आकर स्वामी जी और सब के सामने ईश्वर को स्वीकार किया, फिर उस के विरुद्ध मेरठ में स्वामी जी और अनेक भद्र पुरुषों के सामने दोनों ने कहा कि इस दोनों ईश्वर को नहीं मानते। क्या यह पूर्वीपर विरोध नहीं है ? तब स्वामी जी ने कहा कि तुम ईश्वर के मानने का खराडन करो और हम मराडन करें जो सच हो उस का मान लीजिये तब इन्होंने इस बात को भी स्वीकार न किया।

(५) जब यह आर्यावर्त देश में आने लगे तब एक समाचार पत्र (Indian Spectator) में तारीख २४ जुलाई सन उद ईस्वी में छपवाया था कि न हम बुधिष्ट, न हम कुश्चियन और न हम ब्राह्मण अर्थात् पुराण मत के मानने वाले हैं, किन्तु हम आर्यसमाजिक हैं। अब इस से विरुद्ध स्पष्ट छपवाया कि हम बहुत वर्षों से बुधिष्ट थे और अब भी हैं। क्या यह कपट और छल की बात नहीं है और जनवरी सन् ८० ई० की चिट्टी से सिद्ध होता है कि वे ईश्वर को मानते थे और आठ महीने पश्चात् उसी सन के अक्टूबर महीने में मेरठ में कहा कि हम दोनों ईश्वर को नहीं मानते। यह उसका

छल नहीं ती क्या है ?

(६) यहां आकर प्रथम थियोसोफिकल सोसाइटी को आर्थसमाज की शाखा स्वीकार करके पश्चात् कहा कि मुख्य सोसाइटी न त्रार्यसमाज की शाखा त्रौर न त्रार्यसमाज मुख्य सोसाइटी की शाखा है। किन्तु जो एक दूसरे वेद की शाखा दोनों के साजे की है. इस से विरुद्ध अब छाप के प्रसिद्ध किया कि हमारी सोसाइटी कभी आर्यसमाज की शाखा नहीं हुई थी और हम आर्थसमाज से बाहर हैं। क्या यह भी उनकी विपरीति लीला नहीं है कि जब उन्हों ने बम्बई में सोसाइटी बनाई थी, उस में स्वामी जी के कहने, सुनने, लिखने बिना उनका नाम अपने मन से सभासदों में लिख लिया था। जब यह प्रथम मेरठ में मूलजी के साथ मिले थे तब स्वामी जी ने कहा था कि बिना हमारे कहे सुने तुमने सोसाइटी में हमारा नाम क्यों लिखा ? जहाँ लिखा हो काट दें। तब करनेल आलकाट साहब ने कहा कि हम इससे आगे ऐसा काम कभी न करेंगे। जहाँ लिखा है वहां से निकाल भी देंगे?।

फिर जब काशी में मिले, तब तक उन्होंने सोसाइटी से स्थामी जी का नाम नहीं निकाला था। तब स्वामी जी ने कड़ा पत्र लिखा कि जहां हमारा नाम लिखा हो वहां से शीघ्र निकाल दो । जब इन्हों तार भेजा कि अब हम क्या तिखें तब खामी जी ने तार में ही उत्तर दिया कि जैसा हमने प्रथम वैदिकधम्मी उपदेशक लिखा था, वैसा लिखो । न मैं तुम्हारी वा अन्य सभा का सभासद् हूँ, किन्तु एक वेदमार्ग को छोड़ के किसी का संगी मैं नहीं हूँ। इस परभी जब वे शिमले में थे, तब ब्लैवस्टकी ने ऐसी असभ्यता की चिट्ठी लिखी कि जिसको कोई सभ्य स्वीकार न करेगा, क्या यह उनको योग्य था। स्वामी जी ने कभी उनको न लिखा था श्रीर न कहा था, उस पर भी इन्होंने स्वयं स्वामी जी का

नाम लिख लिया था। क्या यह लज्जा की बात नहीं है ?

१. इस बात का संकेत पूर्ण संख्या २९९ पृष्ठ२५६ पंक्ति २६-३० में है । यु॰ मी०। २. इस का संकेत भी पूर्ण संख्या २६६ पृष्ठ २५६ पंक्ति ३०, ३१ में है। यु॰ मी॰।

- (७) जो इन्होंने मेरठ में प्रतिज्ञा की थी कि आज से पीछे आर्यसमाज के सभासदों को अपनी सोसाइटी में भरती होने को कभी न कहेंगे, इसी के दो दिन पीछे जब बाबू छेदीलाल जी अम्बाले तक उनके साथ गये, तब मार्ग में बहुत समक्षाते गये कि आप हमारी सोसायटी के साथ हुजिये और पत्र शिमले से बाबू जी के पास भेज दिया आप सोसाइटी के सभासद हुजिये।
- (c) ऐसी २ छल कपट की वातें देखकर स्वामी जी ने श्रार्यसमाज मेरठ के वार्षिक उत्सव में व्याख्यान दिया था कि इनकी सोसायटी में किसी वेदानुयायी को सभासद् होने की कुछ आवश्यकता नहीं, क्योंकि जैसे नियम त्रार्यसमाज के हैं वैसे उनकी सोसाइटी के नहीं। इस पर शिमले से मैडम व्लैवस्टकी ने असम्यता और मूठ की भरी हुई चिट्री लिखी और स्वामी जी ने भी इसका उत्तर यथा-योग्य दिया । इसके पश्चात स्वामी जी ने विचारा था कि जब हम बम्बई में जावेंगे, तब उनसे सब बातों का खुलासा कर लैंगे, ऐसा ही आर्यसमाज बम्बई चाहता था। जब स्वामी जी बम्बई में पहुँचे, तब बहुत से सभासद् और करनैल आलकाट साहब भी स्टेशन पर आये थे। जब स्वामी जी स्थान पर आ पहुंचे, पश्चात् उन से स्वामी जी की बहुत सी बातें हुई और स्वामी जी ने यह भी विदित कर दिया कि आप से और भी बहुत विषयों में बातें करनी हैं। तब उक्त साहब ने स्पष्ट उत्तर न दिया। जब कुक साहवर के विषय में वात चीत करने के लिये स्वामी जी के पास आये तब भी कहा कि आपका और हमारा विचार हो जाना चाहिये था। तब करनैल श्रालकाट साहब ने कहा कि हां करेंगे। इस पर भी स्वामी जी ने पानाचन्द आनन्दजी और राव बहादुर पं० गोपालरावहरि देशमुख द्वारा कहलाया कि त्राप लोग मुक्त से बातचीत करने को त्रावें, नहीं तो हम को प्रसिद्ध भाषण देना होगा । पानाचन्द त्रानन्द जी से इन्होंने पूछ के स्वामी जी से कहा कि २७ मार्च पर को करनैल आलकाट साहव बात चीत करने को ऋविंगे, फिर भी न आये। बम्बई से जयपुर पहुंच कर पत्र लिखा कि मैं नहीं आ सका. परन्तु मैडम ब्लैवस्टकी आप से बातचीत कर लेंगी। वह भी नहीं आईं॥

तव स्वामी जी का भाषण आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसायटी के पूर्वापर-विकद्ध आर्थात् उनकी थियोसोफिकल सोसायटी का पूर्व क्या संवन्ध था अब क्या है, इस विषय पर व्याख्यान कराने के अर्थ आर्यसमाज बम्बई ने एक दिन पूर्व नोटिस छपवा कर प्रसिद्ध कर दिया तो भी मैडम ब्लैवस्टकी ने स्वामी के पास आकर बात चीत न की, तब स्वामी जी ने भाषण दिया ।

इस पर अपने थियोसोफिकल पत्र में लिखने हैं कि हम से विना कहे सुने स्वामी जी ने व्याख्यान दिया। क्या यह बात उनकी भूठ नहीं थी। इसमें उनकी चिट्ठियां पढ़ पढ़ाकर सुनाइ कि जिसमें उनका पूर्वापर विरुद्ध व्यवहार प्रकाश किया और यह कहा कि ये लोग कहते हैं कुछ, और करते हैं। कुछ ऐसा कहते हैं कि हम आर्यावर्त देश की उन्नति करने के लिये आये हैं, परन्तु उन्नति के बदले उनके काम अवनति-कारक विदित होते हैं। देखो स्वामी की ने अनेक बार इस बात के करने

१. देखो पत्र पूर्ण संख्या २६६ । यु॰ मी॰ । २. देखो पत्र पूर्ण संख्या ३७६ ।

३. श्रतः मार्च के श्रन्त में यह विज्ञापन छपा। [पूर्ण संख्या ३६६ का पत्र मी देखें। यु॰ मी॰]।

४. २८ मार्च सन् १८८२=चैत्र शुक्ल ६, संवत् १६३६, मंगलवार, ६ बजे सायं व्याख्यान हुश्रा । यु० मी० ।

से रोका कि तुम थियोसोकिस्ट समाचार में भूत, प्रेत पिशाच आदि का होना लिखते हो, यह विद्या के विरुद्ध व असम्भव है और जो बातें विद्या से विरुद्ध हैं उनको मत लिखो, क्योंकि यह समाचार इस देश और यूरोप में भी जाता है। सब लोग जान जायेंगे कि आर्यावर्त देश में ऐसी ही व्यर्थ बातों के मानने वाले हैं। इस बात को अब तक नहीं माना और पूर्व पत्रों में लिखा था कि जो आप उपदेश करेंगे सो हम मानेंगे, क्या इस बात को भी कोई सच कर सकता है।

(९) जो पत्र कुक साहब को लिखा था वहक रनैल आलकाट साहव ने अपने हाथ से लिखा था और खामी जी ने लिखवाया। इस में (Most divine) अर्थात् कौनसा धर्म अधिक सम्बन्ध ईश्वर से रखता है, यह खामी जी के अभिप्राय से विरुद्ध लिखा था। जब उनके गये पश्चात् खामी जी ने इस पत्र की नकल बचवाई तो अशुद्ध विदित हुआ, फिर इस पर खामी जी के पास करनैल साहब आये और तब वह राज्द कटवा दिया अर्थात् उसके स्थान में ऐसा लिखवाया कि जब आप और मुक्त से संवाद होगा तब विदित हो जायगा कि कौन धर्म ईश्वर प्रणीत है और कौन सा नहीं। इतने पर भी उन्होंने वैसा ही अशुद्ध छपबाया। क्या ऐसी बात उनको कर्त्तव्य थी १ देखो यह उनकी सोसायटो के नियमों में—"थियोसोफिस्ट अर्थात ईश्वर के मानने वाले, इस सोसायटो में फीस नहीं ली जाती, इस धर्म से कोई धर्म उत्तम न कहना न जानना और सदा कृश्चियन धर्म के विरुद्ध रहना चाहिये" जो अजन्मा किसी का बनाया नहीं, जिसने यह सब बनाया है उस ईश्वर को [न] मानना, दस र रूपये फीस लेना और जिस धर्म का व्याख्यान देते हैं, उसी को सब से उत्तम कहने लग जाते हैं, क्या यह खुशामदी और भाटों की लीला से कम है ?

श्रव विशेष लिखना बुद्धिमानों के सामने श्रावश्यक नहीं। इतने नमूने ही से सब कोई समफ लोंगे। परन्तु इस पत्र के लिखने का यही प्रयोजन है कि उन की सोसायटी श्रीर उनके साथ सम्बन्ध रखने से श्रार्थावर्त देश श्रीर श्रार्थसमाजों को सिवाय हानि के कुछ लाभ नहीं, क्योंकि इन लोगों का श्रव्तरीय श्रमिप्राय क्या है ? इस को वे ही जानते होंगे। जो इन का श्रन्तर ही निष्कपटी हाता तो ऐसा पूर्वापर विरुद्ध व्यवहार क्यों करते ? जब ये भयक्कर नास्तिक, वाचाल श्रीर स्वार्थी मनुष्य हैं तो श्रार्थावर्त देश श्रीर श्रार्थसमाजस्य पुरुषों को उचित है कि इन से सम्बन्ध श्रीर देशोन्नति की श्राशा न रक्खें।

देखों श्रीर भी थोड़ा सा उनके प्रपद्ध का नमूना—प्रथम स्वामी जी का नाम लेते थे। जब स्वामी जी उनके जाल में न फंसे ती श्रव कोट हूमीलाल का नाम लेते हैं कि जिसको न किसी ने देखा श्रीर न पूर्व सुना था। जो कभी उसके नाम से स्वार्थ सिद्ध न होगा तो गोत्र कोटहूमीसिंह नाम सायद लेंगे। श्रव कहते हैं कि वह हमारे पास श्रावा, बातें श्रीर चमत्कार दिखलाता है। देखों इनका यह फोटो श्राफ (चित्र) है, चिट्ठियां श्रीर पुष्प ऊपर से गिरते हैं, खोई हुई वस्तु निकलती हैं इत्यादि सब बातें उनकी सूठ हैं। क्योंकि दूसरी को तो जाने दो, परन्तु जब प्रथम करनैल साहव मैडम के साथ वस्वई में श्राये थे, तब कुछ वस्त्र श्रादि की चोरी हुई थी, उसके लिये बहुत सा यल पुलिस श्रादि से कराया था, उनको क्यों नहीं मंगा लिया ? जब श्रपने पदार्थ न मंगवा सके तो शिमले की बात को सची कौन विद्वान मानेगा।

१. इन के नाम का पत्र पूर्ण संख्या ३७६ (पृथु ३०६-३०८) पर देखें।

जब स्वामी जी और मैडम से मेरठ में योग-विषय में बात हुई थी,तब कहा था कि योगशास्त्र और सांख्य की रीति से मैं योग करती हूं; तब स्वामी जी ने उनसे उस शास्त्रोक्त योग की रीति पूछी। तब छुछ भी उत्तर न देसकीं, अर्थात् जैसे बाजीगर तमाशा करते हैं उसी प्रकारकी इनकी भी बाते हैं, जो योग को थोड़ा भी करते हैं वह भीतर और बाहर से सरलता का व्यवहार करते हैं न कि छल और कपटयुक्त व्यवहार। जो योगविद्या को छुछ भी जानते तो ईश्वर को न मान कर भयक्कर नास्तिक क्यों बन जाते। इन के योगविद्या के न जानने में ईश्वर का न मानना ही प्रमाण है। इस लिये यही निश्चय है कि इनकी सोसायटी और उसकी पूर्वापर विरुद्ध वार्ते विश्वास के योग्य नहीं हैं। इसलिये इनसे पृथक् रहना छित उत्तम है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।।

[3]

पत्र (३३३)

[808]

मन्त्री श्रार्थसमाज श्रानन्दित रहीर।

थियोसोफिकल सोसायटी के विषय में हम ने यहां पत्र छपवाया है । तुम को भेजते हैं। तुम उन को छोटी २ समाजों में भेज देना ! और जब यह पत्र पहुंचे तो उस का एक व्याख्यान दे दो कि स्वामी जी ने थियोफिसटों से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया है।

मार्च मुम्बई

[8]

पत्र (३३४)

802

Bombay 8th April [1882]\*

To

Mr. Nand Kishore Singh,4

Dear Sir,

I gladly acknowledge the receipt of your letter of the 4th instant.

- १. यह विज्ञापन त्रार्थधर्मेन्द्र-जीवन प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३४८ से ३५२ से लिया गया।
- २. यह पत्र पं० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ८४२ पर छुपा है। यह पत्र थियोंसोफिसटों की गोलमाल पोलपाल के साथ सब आर्थसमाजों को मेजा गया था। २८ से ३१ मार्च तक किस तिथि को छुपकर प्रकाशित हुआ।
  - ३. ऋर्थात् ऊपर वाला विज्ञापन यु॰मी॰।
  - ४. वैशाख कृष्ण ५ शनि, सं० १६३६ । यु० मी० ।
- प्र. श्री नन्दिकशोरिसंह जी ठाकुर, मोहन मोहल्ला, काशगंज, संयुक्त प्रान्त के निवासी ये। वे जयपुर कौंसल के मन्त्री रहे। ऋषि द्यानन्द सरस्वती से उन का बहुत प्रेम था। पहले उन्होंने महामहोपाध्याय

विम्बई, सन् १८८२

I am very glad to hear that Pandit Kaloo Ram's visit to that place was crowned with success. I am also delighted to hear that arrangements have been made for the prevention of cow slaughter in Jeypor. I very much wished that such a work would well have been done through the interference of a Raja. You have certainly well planned that no kine (or oxen or she buffalces) would be exported from your Raja. The best plan which I would like to recommend in addition to yours, would be the following:—A census so to say, of these animals should be made—that all the cows etc., of the kingdom should be counted. So also every new animal that is born (or every one that is died) should be reported to the officer-in-charge of the business. This counting ceremony should be made after every six months or so. The reason of this is that in the night time or so it is not quite impossible for the cattle to be stolen away.

That you have established an "Arya Dharma Sabha" is certainly a very praisworthy undertaking, you have effected. I hope it will have for its object the welfare of the Aryas and and the *Unnatio* of their divine and true Vedic religion. I anticipate a great benefit to the country from this Sabha of yours.

The cow affair is rapidly proceeding and with utter success. Here in Bombay two thousands of signatures are being taken in favour of the prevention of the slaughter. We mean to banish cow-slaughter not simply from our native states but we mean to apply to the parliament on that act. For this purpose, we mean to collect signatures of two crorers of people. It is also hoped that the Rajas also will be pleased to advise each other in this matter. Pandit Kaloo Ram ji also deserves a great merit in this respect

As for us we are doing quite well. The work of Veda Bhashya is going on uninterrupted and successfully. The Aryasamajists of Bombay स्वर्गीय पिडत शिवदत्त जी की पेऱिया से हमारे पास पत्रों की प्रतिलिपि मेजी थी। पुनः ४ अक्तूबर १६२८ को काशगंज से अपने निम्नलिखित पत्र के साथ सब मूल पत्र मेज दिये।

"स्वामी जी महाराज के जितने पत्र मेरे पास थे, बोह सब इस पत्र के साथ मेजता हूँ, स्वीकार कर बाधित करें छौर मेरे योग्य सेवा सर्वदा लिखते रहै मेरी याद बनी रहै कि मैं ख्रब इस संसार में थोड़े ही दिनों का मेहमान हूं। शुभम् ॥ नन्दिकशोरिमेंह"

[इनके नाम का श्राषाढ़ वदी १० शनि सं० १६४०(=३० जून १८८३) का पत्र श्रीर उस की टिप्पणी भी देखें। यु॰ मी॰।]

have bought a large piece of ground for the Samaj building, (for Rs. 6,500). And the necessary fund of money (about 12,000 or 15.000) required for the building is also ready.

We have, separately sent to you 5 printed forms with respect to the prevention of cow-slaughter which you will soon receive. All the rules and sub-rules of the Arya Samaj should be preserved in the Samaj you have successfully established. In conclusion I mean to bless you all. Be giving me the necessary information in time.

From the 5 papers we have sent you will understand our plan throughly. Kindly take the signatures of as many men in your kingdom as you can and keep them with you, We shall require them before long.

[द्यानन्द सरस्वती]

भाषानुवाद

सेवा में —

बम्बई प अप्रेल [१८५२]

श्री नन्दिकशोर सिंह<sup>3</sup>। प्रिय महोदय!

मुक्ते आपका ४ तारीख का पत्र प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। यह सुन कर प्रसन्नता हुई कि पिएडत कालूराम का उस स्थान पर आगमन सफल रहा। मुक्ते यह जान कर भी प्रसन्नता हुई कि जयपुर में गोवधनिषेध का प्रवन्ध हो गया है। मेरी प्रवल इच्छा थी कि यह कार्य्य किसी राजा द्वारा होता। आपने यह अच्छी योजना वनाई है कि आपके राजा की ओर से गौओं (बैलों या भैंसों) का निर्यात नहीं होगा। आपकी योजना के साथ एक अच्छी सी योजना और जोड़ देना चाहता हूं जो इस प्रकार है—

राज्य की सब गांयों आदि की गणना करा दी जाय। प्रत्येक नया पशु जो पैदा हो (या मरे) जसकी सूचना इस कार्य के लिए नियुक्त कर्मचारी के पास भेज दी जाय। यह गणना प्रति ६ मास ७ मास बाद होनी चाहिए। इस का कारण यह है कि रात्रि आदि में असंभव नहीं कि पशु चुरा लिये जायं। आपने जो 'आर्यधर्मसभा' की स्थापना की है; वह निश्चत ही एक प्रशंसनीय कार्य है। मैं आशा करता हूं कि इस का उद्देश्य आर्यों का कल्याण और उनके ईश्वरीय तथा सत्य वैदिक धर्म की उन्नति होगा। मैं आशा करता हूं कि आपकी इस सभा से देश का बढ़ा भारी लाभ होगा।

१. इस पत्र का उर्दू अनुवाद पं॰ लेखराम कृत जीवन चरित्र पृष्ठ ८७८, ८७६ पर छुपा है । [इस संस्करण में इम इस पत्र का भाषानुवाद भी नीचे दे रहे हैं।] मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्चत है।

२. वैशाख कृष्ण ५ शनि, सं० १६३६ । यु० मी०।

३. पृष्ठ ३२३ की टि॰ ५ मी देखें । यु॰ मी॰ ।

४. श्री पं कालूराम जी के त्रिषय में पृष्ठ ४० टि० २ देखें । यु० मी० ।

गौत्रों का मामला बड़ी तेजी से श्रीर सफलता से श्रागे बढ़ रहा है। यहां बम्बई में दोहजार हस्ताझर गोवध निषेध के विषय में करवाये जा रहे हैं। हम न केवल देशी राज्यों में ही गोवध बन्द कराना चाहते हैं, श्रिपतु इस कार्य के लिए पार्लियामेण्ट से भी निवेदन करना चाहते हैं। इस कार्य के लिए हम दो करोड़ श्रादमियों के हस्ताझर चाहते हैं। मुझे यह भी श्राशा है कि राजा लोग परस्पर एक दूसरे को सम्मति देंगे। इस मामले में पण्डित काल्साम जी भी प्रशंसा के पात्र हैं।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है, ठीक चल रहा है। वेदमाध्य का कार्य निर्विघ्न और सफलता पूर्वक चल रहा है। बम्बई के आर्यसमाजियों ने समाज-मन्दिर के लिए (६५००) में एक भूमि खरीदी

है और मन्दिर के लिए अपेचित आवश्यक धन की राशि (१२००० से १५०००) भी है।

हमने गोवध निषेध के सम्बन्ध में छपे हुए ५ फार्म श्रालग भेजे हैं जो आप को शीघ्र प्राप्त होंगे। आर्यसमाज के साथ नियम और उपनियम उस आर्यसमाज में सुरिचत रहने चाहिए जिसकी आपने सफलता पूर्वक स्थापना की है। अन्त में मैं आप सब लोगों को आशीर्वाद देता हूं। ठीक समय पर आवश्यक सूचना देते रहियेगा।

पाँच फार्मों से, जो हमने भेजे हैं, आप हमारी योजना पूर्ण रूप से समक्त जावेंगे। कृपया अपने राज्य में जितने हस्ताचर आप करा सकें कराये और उन्हें अपने पास रखिए, हमें उन की शीघ्र आवश्यकता होगी।

द्यानन्द सरस्वती

[99]

पत्र (३३५)

[803]

श्रो३म

लाला मूलराज जी एमे आनन्दित रही।

श्चापके दो पत्र श्राये । उत्तर इसीलिये नहीं भेजा कि इस बात का पत्र कोई मसुदा वालों ने हमारे पास नहीं भेजा । श्रव उनका पत्र श्रावेगा तो उस बात का जवाब श्चाप को लिखेंगे । श्रीर श्चाप जो उस बावू ""को रखना चाहते हैं परी चा करली होगी कि कैसा शील स्वभाव का है। क्योंकि प्रायः "" लोगों का स्वभाव तेज श्रीर कठोर मक्ष्यामक्ष्य में श्रनाचरी श्रीर लोभी भी होते हैं । श्रीर राजवाड़ों में इन बातों का बड़ा विरोध है । श्रव हम इस विषय का पत्र मसुदा को भेजेंगे । जो हमारे पत्र का उत्तर न श्राया तो श्रापके पास कुछ उत्तर न भेजेंगे । पश्चात् जव कभी हम मसूदे को जायंगे तब उसका विचार होगा । श्राप जानते हैं कि रजवाड़ों का लखोटिया ज्ञान है श्रर्थात् जब तक श्रिष्ठ के सामने रहैं तब तक पिघले रहते हैं । तथापि हम पत्र भेज कर खबर मंगवावेंगे । बड़े भारी शोक की बात है कि श्वाप ने श्रव तक गोककणानिधि की श्रक्षरेजी नहीं की । हमने हमें?) निरास होकर यहां मम्बई में श्रीर लोगों से श्रक्षरेजी बनवानी पड़ी । श्रव श्वाप उसमें कुछ मत बनाना । माछ्म होता है कि श्वाप के ऊपर बहुत कुछ बोक पड़ गया, इस कारण ढीले हो गये । श्वाप के पास गोरचा

१. गोरत्वा सम्बन्धी दो फार्म पूर्ण संख्या ३८७, ३८८ पर छुपे हैं। शेष ३ फार्म कीन से छुपवाये थे, यह अज्ञात है। यु॰ मी॰। २. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरित्ति है।

श्रौर थियोसोफिष्ठों के पूर्वापर विरुद्धाचर[ण] करने के विषय का भी पत्र पहुंचा होगा। अब इनसे सम्बन्ध तोड़ दिया है।। सबसे हमारा नमस्ते कह दीजियेगा।

पत्र (३३६)

मिति वैशाख शुदी ११ शनि सम्वत् १९३९२।

मम्बई वालकेश्वर [द० स०]

[9]

पत्र (३३६)

[808]

लाला जीवनदास जी आनन्दित रही ।।

पत्र आप का आया समाचार विदित हुआ। यहां पारसी खत पढ़ने वाले बहुत कम हैं इझिलश के पाठक बहुत हैं। इस लिये जब कभी लिखें तब नागरी वा इंगरेजी में लिखें। इस पत्र का मतलब हम ठीक २ नहीं सम मते हैं। जितना सम मा है उतने का उत्तर लिखा जाता है। (सूद) शब्द का अर्थ जो रसोई करने वालों का है। यही अर्थ अन्यत्र सूत्रादि में भी है। पाककर्ता का कोई हड़ निश्चय नहीं हो सकता, क्योंकि पाचक सब वर्णों में होते हैं। अब तो इससे सनातन का व्यवहार ही प्रमाण हो सकता है। जो आप लोगों में यज्ञोपवीत होता और धरावट अर्थात् विधवा को पुनः दूसरे के घर में बैठाना नहीं होता तो शूद्र वर्ण में गणना आप लोगों की नहीं। अब यह विचारना चाहिये कि (सूद) लोग चत्रिय हैं अथवा वैश्य। जो राजधर्म राज्य करना आप के पुरुष शौर्याद गुण्युक्त, युद्ध में कौशल वाले हुए हों तो चत्रिय और वैश्य के व्यापारादि कर्म और गुण्य हों तो वैश्य सममना चाहिये। अब आप लोग ही इस का निश्चय कर लीजिये।

श्रीर जो कभी (सूत) शब्द विगय के सूद हो गया हो तो श्राप श्रवश्य चित्रय वर्ण हैं । हम ने सुना है कि श्राज कल वायू नवीनचन्द्राय लाहौर में हैं श्रीर विधवा विवाह में प्रयन्न कर रहे हैं श्रीर श्रार्थसमाज लाहौर भी इस वात में बायू जी से संमत हो गया है। ये ब्रह्मसमाजी लोग भीतर श्रीर तथा वाहिर = श्रीर वात रखते हैं। इन का यह भी मतलब होता है कि जैसे हम लोग कृश्चिनों के तुल्य श्रपमानित हुए हैं वैसे श्रार्थसमाज भी हो जाय, परन्तु जो श्रचतयोनि श्रर्थात् जिस का पुरुषके साथ कभी संयोग न हुश्चा हो उस कन्या के पुनर्विवाह करने में कुछ दोष नहीं, जिस का पुरुष से संमेल हुश्चा हो उस की नियोग करने में श्रपराध नहीं। इस से विपरीत करने से शास्त्र से विरुद्ध होने से श्रव श्रथवा पश्चात् बहुत कष्ट भोगना पड़ेगा श्रर्थात् वर्ण बाह्य होना होने तो भी कुछ संशय नहीं। सब से मेरा श्राशीर्वाद कहियेगा ।

१. गोरज्ञा सम्बन्धी पूर्ण संख्या ३८७, ३८८ । थियोसोफिस्ट सम्बन्धी पू० सं० ४०० । यु० मी० ।

२. ता॰ २६ एपिल सन् १८८२।

३. यह पत्र महा॰ मुंशीराम सम्पा॰ पत्रव्यवहार पृ॰ ४५८-४५६ पर छपा है। उन्होंने पत्र की प्रतिलिपि से ही छापा था।

४ इमारा श्रनुमान है कि पत्र मुम्बई से भेजा गया था। वहीं "फारसी खत पढ़ने वाले बहुत कम" थे। प्रतिलिपि पर इस्ताच्चर तथा तिथि नहीं थी।

३२८

[9,3]

पत्र (३३७)

[804]

श्रो३म

लाला कालीचरण जी आनिन्दत रहो<sup>9</sup>।

विदित हो कि पत्र तुम्हा[रा] आया। समाचार मालूम हुए। थियोसोफिष्टों की गोलमाल पोलपाल पत्र के अपवान [में] कुछ चिंता नहीं। क्योंकि जो २ उसमें बातें लिखी हैं वे सब सची हैं। अवश्य अपवा दीजिये। जो लाला रामशरणदास ने लिखा है वह ठीक है। अपवाना ही चाहिये। उसमें जो कुछ लिखा गया है वह विचार पूर्वक सची बातें लिखी हैं। जो ऐसा न हो तो हम यहां व्याख्यान क्यों देते । और इसको क्यों अपवाते। अपवाने में कुछ हानि नहीं, किन्तु लाम ही है। जो यह बात गोलमाल रक्खी जाती तो आर्थावर्च में नास्तिक मत फैल जाता। अपने साथ इनने मेल भी इसी प्रयोजन से किया था कि हमारा प्रवेश इस देश में हो जाय। इतना इनमें अच्छा गुण है कि वेद की बड़ाई और ईसाइयों का खरण्डन करते हैं। यह भी जो स्थिर रहे तो। जो यह भी कपट हो तो क्या। जो इनका प्रसिद्धि में व्यवहार हैं वह भीतर का नहीं। इनके सम्बन्ध से जो कोई बुरी बात निकलती तो बहुत घक्का आर्थ्यसमाज को पहुंचता। और इन लोगों ने कई एक मोले भाले आर्थ्यसमाजस्थों को बहका कर अपने सभासद कर लिये। और दश २ कपये फी लिये। अब इनकी कपटक्षी बातों के प्रसिद्ध होने पर उनकी आंख खुली कि ओहो ये ऐसे निकले अर्थात् विचारों को पश्चात्ताप करना पड़ा। ऐसे ही अन्य लोगों को भी जोकि आर्थ्यसमाज में नहीं थे। यही उन लोगों के मुख से बात निकली कि वृथा ही हमारे दश २ कपये फी देने में गये॥ सब से हमारा आशीर्वाद कह देना।

मई ता० १ सन् १८८२ ई०४।

[ द० स० ] (मम्बई वालकेश्वर गोशाला)

रि

पत्र (३३८)

[808]

श्रो३म्

परिडत द्याराम आनिन्दत रहो ।

तुमने यह श्रंग्रेजी चिट्ठी यहां क्यों भेजी, जो कि थियोसोफिष्ट के विषय की थी। श्रौर तुमने लिखा है कि मैं भूल गया इसलिये दूसरा रिजष्टर श्रभी किया। यह क्या बात है ? श्रौर वह रजष्टर श्रभी तक नहीं पहुंचा। श्रौर श्राज तक वेदभाष्य श्रौर मासिक हिसाब नहीं पहुंचा श्रौर यहां मम्बई में सर्वत्र श्रागया, यह क्या कारण है। भीमसेन से कह देना कि भाषा के पत्र जल्दी भेजदे। सीसा

१. मूल पत्र त्रार्थसमाज फरुखाबाद में है। उसकी प्रतिलिपि म० मामराज ने दिसम्बर सन् १६२६ में की। फरूखाबाद का इतिहास पू० १६१ पर भी छुपा है। २. पूर्ण संख्या ४०० का। यु० मी०।

३. देखो पूर्ण संख्या ३६६ (पृष्ठ ३१७) का पत्र । यु० मी० ।

४. वैशाख शु॰ १३ सोम, सं० १९३९। यु॰ मी०।

५. मूल पत्र परोयकारि शी सभा श्रजमेर में सुरिव्तत है।

बम्बई, सं० १९३९]

पत्र (३३९)

३२९

सुर्मी स्याही तुम्हारे पास पहुंची वा नहीं ? पहुंच गये हों तो हर्फ ढालके जल्दी काम चलाक्यो । आर्थ पत्र का नोटिस मेजते हैं टाइटल पेज पर छापदो । जितने पत्रे भीमसेन के पास मेजे थे, उन सब की भाषा बन चुकी वा नहीं।

मिति जेष्ट बदी ६ सम्वत् १९३९ ।

दि० स०

[8]

पत्र (३३९)

[808]

श्रो३म् २

महाशय रूपसिंह जी योग्य इतः ब्रह्मचारी रामानन्द का अनेकविध शुभाशीर्वाद विदित हो। आप का कुशलपत्र आया, समाचार विदित हुए।

श्रापने जो सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि के विषय में लिखा, परन्त यहां मेरे पास न होने से भेजने में अशक्य हं। जो छापेखाने प्रयाग में होतीं तो भी मैनेजर द्याराम को लिख कर भेजवा देती श्रीर जो उस पुरुष को श्रत्यावश्यक हो तो श्राप मेरठ श्रार्थ्यसमाज प्रधान लाला रामशरणदास जा के पास दाम भेज कर पुस्तक मंगवा लीजिये। श्रनुमान है कि वहां से पुस्तक श्राप को श्रवश्य मिल जांयगी। जो त्रापने गोरचार्थ पत्र के वाबत में लिखा सो हम ने जिस समय त्रापके पास पत्र भेजा था, उसी समय लाहोरादि स्थानों में पत्र भेज दिये थे। ऐसा आर्य्यावर्त्त के भीतर कोई देश बचा हो कि जहां दो चार स्थानों में पत्र न भेजे हों। और जहां २ की यादगारी आती जाती है वहां २ अभी भेजते जाते हैं। इस में कारण यह हुआ है कि डांक वालों ने अनर्थ किया है। जैसा इस विषय में आप का पत्र आया ऐसे ही कई एक महाशयों के पत्र आये कि पत्र पहुंचा, परन्तु गोरत्तार्थ का मेमोरियल नहीं मिला। पुनः उन महाशयों के पास भेजना पड़ा । ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करता हूं कि इस महोपकार कार्य करने में आप को अत्यन्त सहायता मिले और जो पत्रों की आपको आवश्यकता पड़े तो लिखना, भेज दूँगा। मैं एक बात श्राप से कहता हूं कि जो श्राप प्रसन्नता से स्वीकार करें तो । क्या जैसे आप पहिले घूमने के वास्ते दो मास की छुट्टी ले कर आये थे ऐसे ही आप पुनः दो एक मास की छुट्टी लेकर पंजाब हाथा, पटियाला श्रौर काश्मीर श्रादि श्रच्छे २ राजस्थानों में गोवध के नुकसान व्याख्यान द्वारा विद्तिकर, वड़े २ प्रधान राज पुरुष तथा राजा महाराजों की सही करावें तो वस आप आय्यीवर्त में सर्वोत्तम प्रतिष्ठा और महापुर्य के भागी होंगे। यह लेख मैंने आपकी योग्यता समम के लिखा। आशा है कि आप अपनी योग्यता को सफल करेंगे।। किमधिकलेखेन बुद्धिमद्रय्येषु।। श्रव १५ वा २० दिन में श्रीयुत स्वामी जी यात्रा करेंगे। विशेष समाचार फिर लिखंगा॥

१. ६ मई १८८२ ।

२. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिवत है।

३. पूर्ण संख्या ३८७, ३८८ । यु॰ मी॰ ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

[बम्बई, सन् १८८२

330

आपका अभिवादन परम गुरु स्वामी जी को विदित कर दि्या। श्री स्वामी का शुभाशीर्वाद आपको विदित हो।। भद्रमस्तु।।

ज्येष्ठ वदी ९ शुक्र सम्वत् १९३८ ॥

ब्रह्मचारी रामानन्द

[8]

पत्र (३४०)

[806]

श्रो३म्

पण्डित सुन्दरलाल जी आनिन्दत रही?!

विदित हो कि सीसा स्याही आदि दो तीन दिन हुए हैं रमाना हो गये। आज बिल्टी भी रमाना हो गई। उनसे जैसे अन्नर आपको चाहियें। वैसे ढलवा कर जल्दी काम चलाइये। श्याही बहुत सी भेजी है, तुम को आठ दश महीने को बहुत होगी। जो तुमने ज्वालाप्रसाद के विषयमें लिखा सो ठीक है। उसको बुलाकर काम सिखलादो और भीमसेन से कहो कि व्याकरण की पुस्तक शीघ लिखकर शुद्ध कर वैयार कर दे। लाहोर प। ३। १८८२ ई० निम्नलिखित पुस्तक लाला बङ्गभदास के पास से वैदिक यन्त्रालय प्रयाग में पहुंची। ता० १९ फरवरी सन् १८८१ को सन्दूक नग ३ में पुस्तक बन्द करके लाहोर से मारफत रेल रवाना किया। महसूल वेरंग था। उसमें इस भांति पुस्तक भेजी गई—

३८ जिल्द आर्याभिविनय

३० ,, वेदविरुद्धमतखंडन

३१ ,, शिचापत्रीध्वान्तनि०

१० ,, वेदान्तश्वान्तिनिवारण

१३११ ,, सन्ध्या भाष्य अर्थात् पंच॰

२५१ ,, पोपलीला 3

१३६ ,, जालन्धर की बहस४

१९ ,, वेद्भाष्यभूमिका इस भांति श्रंक

०२३४५६७५९१०१११३१४ १५-१६

१८५. ,, ऋग्वेद श्रंक १ २ ३ ४ ५ ६

२८ ३० ३२ ३१ ३१ ३३

१८९ ,, यजुर्वेद श्रंक १ २ ३ ४ ५ ६

३१ ३३ २= ३१ ३३ ३३

१. संवत् १६३८ गुजराती है । संवत् १६३६ चाहिये । १२ मई १८८२ । परन्तु उस दिन ज्येष्ठ वदी १० है । इस पत्र का लिफाफा १६ मई को कोहाट पहुंचा । उस पर ऐसी ही मोहर है ।

२. मूल पत्र परोपकारिगी समा में सुरिचत है।

३. इस के लिये इमारा "ऋ॰ द॰ के प्रन्थों का इतिहास" परिशिष्ट ५, प्० ८२-८४ देखें । यु० मी०।

४. देखो ऋ ० द० के प्रन्थों का इतिहास पृ० १८३। यु० मी०।

३४३५ ,, आर्योद्देश्यरत्नमाला

२८ " सत्यार्थप्रकाश

२० , सत्यासत्यविचार

श्रौर वहियां हिसाव की श्रौर हिसाव ता० १३ मई सन् १८८२ ई०२

यजुर्वेद के भाषा के पत्रे, यजुर्वेद श्रंक, गोकहणानिधि श्रौर मासिक हिसाब पहुंचा । [दयानन्द सरस्वती]

[6]

पत्र (३४१)

[808]

**जो३म** 

राजा दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रही ।

पत्र आप का आया, समाचार विदित हुआ। हम बहुत आनंद में हैं। आशा है कि आप लोग भी आनन्द में होंगे। यहां से हमारा विचार ज्येष्ठ श्रुदी पौर्णमासी के पश्चात् और आषाद वदी ३० के पूर्व २ इन्दोर की ओर यात्रा करने का है। क्योंकि महाराजे इन्दोर ने मुक्त को बुलाने इन्दोर से तार भेजा था। इस समय वे पहाड़ को गये। १५ वा २० दिन में इन्दोर में आ जायंगे। तब तक हम भी पहुंचेंगे। वहां से आँव भेजने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यहां मम्बई में आपुस और पारी संज्ञक आंब बहुत उत्तम होते हैं। जो न होते तो वहां से आना अवश्य होता। यहां डेढ महीने से आंब खाया करते हैं। आज आंबरस भी बहुत सा बना।

लाला कालीचरण से कह दीजिगेगा कि अगले महीने में भा० सु० प्र० का नोटिस वेद-

भाष्य पर छप जायगा॥

सब से हमारा आशीर्वाद कह दीजियेगा।।

ज्येष्ठ शुदी ६ मंगल सम्वत् १९३९५।

दि० स० ] (मम्बई)

[2]

पत्र (३४२)

[880]

श्रो३म्

बाबू नन्दिकशोरिसह जी आनिन्दित रहो। — पत्र तुम्हारा आया, समाचार विदित हुए। जो वहां शास्त्रार्थ विषय में लिखा सो आप निश्चय

१. लीलाधर हरिदास उकर बम्बई निवासी कृत । देखो हमारा ऋ ॰ द॰ प्रन्थेतिहास परिशिष्ट ५ पृष्ठ ८४, ८५ । यु॰ मी॰ ।

२. ज्येष्ठ कृष्ण ११ शनि, सं० १६३६ । यु० मी० ।

३. मूल पत्र आर्थसमाज फदलाबाद में है। इस की प्रतिलिपि दिसम्बर सन् २६ में म० मामराज ने की। फदलाबाद का इतिहास पू० २१६ पर भी छपा है।

४. देखो पूर्ण संख्या ४११ (पृष्ठ ३३३) । यु॰ मी॰। ५. २३ मई सन् १८८२ मंगलवार ।

६. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिव्ति है । श्री स्वामी जी ने लाल रंग से कहीं २ शोधा है ।

जानों वे हम से शास्त्रार्थ सन्मुख आके कभी न करेंगे। देखो दो तीन बार हम जयपुर में आये और प्रसिद्धि भी कर दी कि जिस पंडित का जिस २ विषय में शास्त्रार्थ करना हो सो सम्मुख आकर करे। परन्त कोई भी न आया, न किसी ने शास्त्रार्थ किया। अब रहा वहां आने का, उस की यह बात है कि जो श्रीमान महाराजा जी के हस्ताचर का पत्र आवेगा तो आना हो सकता है अथवा वहां जो सब में अधिक विद्वान हो उस का रेल खर्च देकर और दो एक अच्छे उत्तम पुरुष पन्नपात रहित हों सान्ती के वास्ते जहां हम हों वहां लेकर चले आइये अथवा जहां होंगे वहां से ही अच्छे योग्य पुरुषों को साची कर के जो २ शास्त्रार्थ की वार्ते होंगी वे सब लिखी जायंगी। पुनः पत्र द्वारा श्रीमान् महाराजा जी को विदित कर दिई जायंगी और छपवा कर भी प्रसिद्ध भी होंगी। जिससे सब लोगों को सत्यासत्य विदित हो जाय। यह राजाओं का मुख्य धर्म है कि शास्त्रार्थ कर कराके सत्यासत्य का निश्चय करना त्रौरों को कराना। देखो वड़े शोक की वात है कि जयपुर में अनेक गिरजाघर वन गये और पादरी लोग राम कृष्णादि भद्र पुरुषों की निरन्तर निंदा करते हैं और सैकड़हों को बहका कर भ्रष्ट कर रहे हैं। उनके हटाने को पण्डित वा राजा आदि राजपुरुषों ने कुछ भी प्रयत्न न किया। और जो आप लोगों ने सत्य वेद धर्म की उन्नति होने के वास्ते समाज स्थापित किया है उसकी उन्नति होने में पण्डित आदि विझकत्तां होते हैं। इतने ही से तुम समम लो कि ये क्या शास्त्रार्थ करेंगे सिवाय परोक्त में गाल बजाने के। जो कोई तुम से शास्त्रार्थ करने की बात कहे उसको तुम इतना ही उत्तर दो कि लो खर्च आने जाने का हम देते हैं, चलो हमारे साथ स्वामी जी के पास शास्त्रार्थ करने को, अथवा तुम राजा जी से प्रबन्ध कराओं स्वामी जी के बुलाने के वास्ते, हमारे बुलाने से तो आ नहीं सकते। किसी प्रधान पुरुष वा राजा] जी की संमति से बुलाइये श्रीर शास्त्र[थि] कर सत्य का प्रतिपादन और असत्य का खरडन की जिये। हम तो इस में बहुत प्रसन्न हैं, जो कोई स्वामी से शास्त्रार्थ करें तो, क्योंकि हम को भी मालूम हो जायगा कि क्या सत्य है और क्या भूठ ॥

श्राप भद्र पुरुष लोग इस वेदोक्त सत्यधर्म के विषय में उत्साह पूर्वक दृढ़ निश्चित रहेंगे तो इस समाज की उन्न ति करके संसार को फायदा पहुँचा सकोगे, श्रन्यथा वहां उन्न ति को प्राप्त हो कर फल प्राप्ति पर्य्यन्त पहुँचना कठिन है। क्यों कि वहां बड़े २ धूर्त लोग हैं। तथापि जो मूर्ख लोग श्रपनी बुराई को नहीं छोड़ते तो बुद्धिमान धर्मात्मा लोग श्रपनी धर्मात्मता को क्यों छोड़ कर दु:ख सागर में पड़ें। देखिये—

(निंदन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरणमस्तु युगांतरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलंति पदं न धीराः)॥

यह कवि का क्षोक है विचार लीजिये।

मि० ज्यै० शु० १४ बुध सं० १९३९।

[द्यानन्द सरस्वती]

आगरा, सं० १९३९]

पत्र (३४३)

333

[38]

विज्ञापन

[888]

सब सज्जन लोगों को विदित हो कि एक भारतसुदशाप्रवर्षक नाम का पत्र सनातन वेदोक्त धर्म विषयक व्याख्यान नाटक तथा सत्योपदेशों से सुभूषित हो के प्रतिमास निकलता है जिस किसी को उस के प्रह्मा की इच्छा हो वह लाला कालीघरण रामचरण मंत्री आर्य्यसमाज फर्रुखाबाद के पास लिख के मंगवा लेवें उस का वार्षिक मूल्य बहुत कम है अप्रिम १८) डाक व्यय समेत पश्चात् देने से २८) हैं और इतने पर भी विशेष यह है कि जो कुछ बचता है वह संस्कृत और देश की उम्रति में लगाया जाता है।

(ह० दयानन्द सरस्वती)

[3]

गुजराती पत्र (३४३) श्रोश्म<sup>२</sup>

[883]

त्रार्थसमाज मुंबई ता० ५ मी जून १८८२³

मित्रवर ठाकोरदास मूलराज जोग मुंबई

यत आपे जे जेठ सूद १५४ ने दीने श्रीमत् पंडित दयानन्द सरस्वती स्वामी ने पोस्ट काड लख्यो हतो तेना प्रत्युत्तरमां जणाववामां आवेछे के जो कोई आपना मतनो ज्ञाता तथा धर्मोपदेशक विद्वान् प्रतिज्ञा पूर्वक नियम थी शास्त्रार्थ करवाने तत्पर होय तो स्वामी जी ने शास्त्रार्थ करवाने कोई पण प्रकारे अडचण न थी, मात्र व्यवस्था घटती रहेवी जोइये, तेथी आपनी जो सत्यासत्य निर्णय कराववानी इच्छा होय तो आपना मतनो कोई विद्वान माननीय धर्मोपदेशक साथे नक्की करी महने लखी जणावशो तो हमें तूर्त घटती व्यवस्था करी आपने विदित करशुं, परंतु ए बाबत ढील न थवी जोइए केम के स्वामी जी थोड़ा दाहाडामां जनार छेत गयवाद सघलो श्रम व्यर्थ जशे तेथी त्रण दिवसनी अंदर कृपाकरी लखी मोकलशो अने जो ए प्रकारे करवानी आपनी इच्छा न होय तो हमारे आपने दलगिरी साथे लखवुं पडेछे के स्वामी जी जे एने मली खुलासो लेवा आवेछे तेनी सांजना ५ थी ९ वागता सुधो प्रतिदिन मुलाकात लेयछे, त्यां जो आप जवा चाहो तो कृपाकरी महने लखी जणावशो तों हुं पण्ते वखते हाजर रहीश, हालतो श्रेज विनति।

हुं छु श्रापनों सेवक
सेवकलाल करसनदास
मंत्री श्रार्थसमाज मुंबई
जगजीवन कीका स्ट्रीट घर नंबर ६१

१. यह विज्ञापन ऋग्वेदमाष्य श्रंक ३८, ३६ (सिम्मिलित) ज्येष्ठ शुक्क १४ सं० १६३६ ( ३१ मई १८८२) टाइटल पेज ४ पर छपा है। पू० सं० ४०६ के पत्र में भी इसका उल्लेख है। यु० मी०।

२. दयानन्द सरस्वती मुखचपेटिका, प्रथम भाग पृ० ४०-४१।

३. श्राषाद कु० ४ सोम सं० १६३६ । यु० मी० ।

४. १ जून १८८२ । यु॰ मी॰।

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञापन

[बम्बई, सन् १८८२

338

[88]

पत्र (३४४)

[843]

लाला कालीचरण जी आनिन्दत रही ।

फर्रुखाबाद

विद्त हो कि प्रयाग में द्याराम मैनेजर हैं। उसने अकेले से काम बहुत होने के कारण से ठीक नहीं चल सकता। इस लिये पंडत सुन्दरलाल जी लिखते हैं कि द० रा० के पास एक सहायक और रखना चाहिये। इस लिये आपको लिखते हैं कि एक प्रामाणिक पुरुष तीन भाषा जानने वाला कि जिस का आप को बड़ा विश्वास हो वहां भेजें। ऐसा पुरुष तलाश करके आप हमको और पंडित सुन्दरलाल जी को भी [इस] विषय में लिखें। उसका मासिक १५) रु० वा २०) रु० वा जितना आप योग्य सममें करें। परन्तु काम बहुत ठीक होना चाहिये। पंडित सुन्दरलाल जी अन्डमान एक मास तक ब्रह्मा के सुल्क को जाने वाले हैं। इसलिये उनके सामने ही उस पुरुष का वहां पहुंच जाना चाहिये। वह पुरुष सदैव के लिये वहां रहना चाहिए। यह नहीं कि थोड़े दिन के लिये रहे। आपका समाज प्रयाग से निकट है। इस लिये आप लोगों में से कोई २ मा[स द]ो मास से प्रयाग जाकर देख आया करें तो ठीक प्रवन्ध रहे। परन्तु वहां जाना पं० सुन्दरलाल जी न हों तब जाना चाहिये। और जब वे हों तब कुच्छ जरूरत नहीं। सब से हमारा अशीर्वाद कहना। पत्र का उत्तर शीध देना चाहिये।

हस्ताच्चर

ता० ९ जून स० १८८२३।

[द्यानन्द सरस्वती]

मम्बई बालकेश्वर

[4]

पत्र (३४५) स्रो३म्

[888]

पंडित सुन्दरलाल जी आनिन्दत रही ।

प्रयाग

विदित हो कि हम यहां से ता० १४ जून बुधवार दिन सायंकाल यहां से रेल में बैठ कर बृहरपित के दिन अनुमान १० बजे खंडवे पहुंचेंगे। अब पीछे पित्र आदि खंडवे को भेजा करें। दूसरे मैनेजर के लिये हमने फरूखाबाद को लिख दिया है । उत्तर जैसा आवेगा वैसा आप को लिखेंगे। 'अव्यार्थ' को छपे बहुत दिन होगये हैं परन्तु उसका विज्ञापन वेदभाष्य [पर] अभी तक नहीं दिया गया है सो यह दयाराम की कितनी भूल है। अब तत्काल दिलवावो। हमने भीमसेन के शोधे भये

१. मूल पत्र आर्थसमाज फरुखाबाद में है। दिसम्बर सन् १६२६ में म० मामराज ने इस की प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पृष्ठ १६२ पर भी कुछ पाठ मेद के साथ छापा है।

२. पत्र के नीचे कुछ पंक्तियां समर्थदानजी ने भ्रपनी स्रोर से लिख दी हैं।

३. श्रावाद कृष्या ८, श्रुक सं० १६३६।

४. मूल पत्र परोपकारिग्। सभा त्रजमेरमें सुरिच्चत है। इस पत्र का कुछ भाग दयानन्दग्रन्थमाला शताब्दी संस्करग की भूमिका पृष्ठ १८ पर भी छपा है।

प्र. आषाढ़ कृष्ण १४ सं० १६३६। अगते पूर्णं सं० ४१७ पृष्ठ ३३७ की टिप्पणी देखो । यु॰मी०।

६. देखो पूर्ण संख्या ४१३। यु॰ मी०।

पुस्तक देखे तो बहुत मूल निकलती है। इससे ज्ञात होता है कि वह बड़ा गाफिल है। अब पीछे आप उसका मासिक पूरा प्रतिमास न दिया करें कुछ न्यून दिया करें अर्थात् दश वीश रुपये अपने में उसके रखने चाहिये। जिससे कि वह काम अच्छा किया करे। नीचे लिखे नाम के छः रुपयों की रसीद छाप देना गत वर्ष की:—

कवि कृश्नाराम इच्छाराम प्राम "खरसाज" जिला सूरत ६) नीचे लिखे धर्मार्थ छाप दो।

चोधरी जालिमसिंह ग्राम रूपधनी जिला एटा बोहरा अमरचन्द ग्राम रूपधनी जिला एटा

२०) २०)

पत्रादि सब खंडवे को भेजना।

हस्ताच्चर

ता० ११ जून सं० १८८२<sup>9</sup>।

[दयानन्द सरस्वती] मुम्बई बालकेश्वर

श्राज कल वर्षा यहां श्रत्यन्त होती है। जो वक्त तारीख को चलना न हुआ तो दूसरा पत्र बुधवार के दिन श्रापको देंगे?।

[94]

पत्र (३४६)

[884]

श्रो३म्

लाला कालीचरण जी मंत्र[ी] व रईस आनन्दित रहो ।

विदित हो कि एक पत्र [आप] को पहले दिया थां। उसमें प्रयाग में छापैखाने में मैनेजर रखने के लिए आप को लिखा था। परन्तु पीछे से यह नि[अ]य ठहरा कि वहां समर्थदान को मेजना चाहिये। समर्थदान यहां हैं। सो यहां से प्रयाग को चले जांयगे। ये प्रयाग को मास डेढ मास तक जा[चेंगे]। इनका यह काम किया हुआ है। इनको इस काम में तजरबा हो चुका है। ये काम अच्छा चलाचेंगे। इस लिये इनसे पक्काई करली है। सो अ[ब] आप मैनेजर के तलाश करने में परिश्रम न करें। जो इन से पक्काई न होती तो आप को परिश्रम करना पड़ता।

श्रार्थदर्पण में जो जगन्नाथदास ने लिखा है उसका उत्तर श्राप बहुत उत्तम रीति से लिखें। कुछ दबना मत। खूब दुकड़े दुकड़े उड़ादो। ऐसा न हो[गा] तो वे लोग वंध न होंगे। वह लेख केवल जगन्नाथदास का ही नहीं है। उसमें इन्द्रमणी को भी शामिल सममना चाहिये। [मु]सलमानों के

१. श्राषाढ कृष्ण ११ रवि० सं० १६३६ ॥

२. प्रतीत होता है श्री स्वामी जी १४ जून बुधवार को मुम्बई से नहीं खले। ला॰ ठाकुरदास ने ठीक १३ जून को उन्हें नोटिस दिलवाया। उसी का उत्तर १६ को श्री स्वामी जी के वकीलों ने दिया। वह उत्तर पूर्ण संख्या ४१७ (पृष्ठ ३३७-३३८) पर देखें।

३. मूल पत्र आ । स॰ फरुखाबाद में सुरिच्चत है। इसकी प्रतिलिपि १८ दिसम्बर सन् १६२६ में म॰ मामराज जी ने की। फरुखाबाद का इतिहास पृ॰ १६३ पर कुछ पाठमेद के साथ छपा है।

४. सं० ४१३ पू॰ ३३४। यु॰ मी॰।

मुकद्दमें में सहायार्थं रुपया आया था उसमें इन्द्रमिण ने क्या २ लीला की । सो तो आपको [वि]दित ही है। फिर ऐसे का क्या लिहाज रखना। बराबर लिखना चाहिये ।

हस्ताचर ता० १४ जून १८८२ । दयानन्द सरस्वती मुंबई

[88]

पत्र (३४७) श्र**ोम्**ी³ [४१६]

लाला कालीचरण जी आनिन्दत रहो।

लेखनीय यह है कि लाला रामचरण जी के पुत्र के देहान्त होने का हमको समाचार मिला। सो यह गृहस्थ लोगों को वास्तव में शोक का कारण है। परन्तु आप लो[ग] बुद्धिमान हैं सो धैर्याव-लम्बन करें। क्योंकि विद्या ऐसे शोक के समय में धैर्यावलम्बन कराने वाली है। सुख में तो मूर्ख और विद्वान स[मी] आनन्दित रहा करते हैं। परन्तु दुःख में तो विद्वान् ही धैर्यावलम्बन करके शोकाकुल नहीं होते। विद्या का फल सच पूछो तो यही है। अब आप लोग सब घर के धीरजता धारण करके शोक निवृत्त करें। क्योंकि शोकाकुल रहने से अनेक प्रकार की हानियां होती हैं।

जगन्नाथदास की प्रश्नोत्तरी का खरडन बहुत दिन हुए हम आपके पास भेज चुके हैं। उसके मेजे पीछे भा० सु० प्र० के दो श्रंक निकत चुके हैं। परन्तु आप ने उसको छापा नहीं। अब आप उस को शीघ्र ही छाप दें। क्योंकि ऐसे काम में ढील करने से बड़ी हानि होती है। क्योंकि पाखरिड श्रों को तो होसला होता जाता है और आर्थ्य लोगों के चित्तों में भ्रम का संचार होने लगता है। इस लिये आप अब इसके छापने में ढील न करें।

आप को विदित ही है कि देखो इन्द्रमिए ने उपकार का कैसा प्रत्युपकार किया है। अब देखो तो ऐसे २ नामांकित पुरुषों की ही यह दशा है तो अन्य साधारण की क्या कथा है।

१. मूल पत्र के जीर्ण होने के कारण कोष्ठगत पाठ फट चुके थे।

२. श्राषाद् कृष्ण १४ बुध, सं० १६३६ । यु० मी० ।

३. मूल पत्र स्रार्यसमाज फरुखाबाद में सुरिच्चत है। इसकी प्रतिचिपि दिसम्बर सन् १६२६ में म० मामराज जी ने की। फरुखाबाद का इतिहास पृ० १६३ पर भी थोड़े से पाठभेद के साथ छपा है। मूल पत्र के जीएँ होने के कारण कोष्ठगत पाठ फट चुके थे।

४. त्राषाद् शुक्ल १, शुक्रवार सं० १६३६। यु० मी०।

बम्बई, सं० १९३९]

पत्र (३४८)

330

[8]

पत्र (३४८)

[850]

To

Bombay 19th June 1882.

Messrs Smith & Frere,

Attorneys for Lala Thakar Das Moolraj?

Dear Sir,

Your letter of the 13th<sup>3</sup> instant addressed to Pandit Dayanand Suruswatee Swami has been placed in our hands and in reply we are instructed to state that the Slokes referred to by you are believed to be by our client extracts from works published by persons of great reputation among the Jains and to contain the principles of tenets of the Jain religion as propounded by several Jain philosophers.

These philosophers have no doubt differed from one another and our client in these extracts had no other intention than that of giving a general idea of the tenets of the Jain religion as propounded by their several philosophers. Our client emphatically denies that in making these extracts he had any intention of wounding and offending the religious feelings of any portion of the followers of the Jain religion.

Our client is actuated by no other desire than to seek the truth and if your client or any other persen satisfies our client that any portion of the extracts is improperly taken or is opposed to the principles of the Jain religion our client will have no objection whatever to have such portions expunged from the 2nd edition which the publisher Raja Jay-Krishnadas, C.S.I., of Mooradabad intends to publish.

Our client desires yours to refer to the notice published at the commencement of the 'Satyarth Prakash' by the publisher in which he states the objects of the publication and accepts the whole responsibility in respect of the book. The further sale and publication of the book are entirely under the control of the publisher.

Yours truly,

(Signed) PAYNE & GILBERT.

१. त्रापाद शुक्ल ४ सोम, सं० १६३६। यु॰ मी॰ ।

२. दयानन्द सरस्वती मुखचपेटिका, प्रथम माग पृष्ठ ४४-४६ पर मुद्रित ।

३. पूर्व पत्र (पूर्ण संख्या ४१४) के अनुसार स्वामी जी १४ जून को बम्बई से नहीं चले । इसी नोटिस रूपी उत्तर दिलाने के कारण पीछे, चले ।

[ भाषानुवाद ]

बम्बई १९ जून १८⊏२१

सेवा में

श्री स्मिथ और फेयर

लाला ठाकुरदास मूलराज के मुस्तियार

प्रिय महोदय,

पिडित दयानन्द सरस्वती स्वामी के पते से मेजा हुआ १३ जून का पत्र हमें प्राप्त हुआ। हमें उत्तर में यह कहने के लिए आदेश दिया गया है कि मेरे मोश्रिक्कल का विश्वास है कि जिन श्लोकों विषय में आपने पूछा है वे जैनियों में सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा प्रकाशित प्रन्थों में से लिये गये हैं। श्लोर उनमें जैनमत के सिद्धान्त हैं, जैसा कि अनेक जैन दार्शनिकों ने प्रतिपादित किया है।

वे दार्शनिक निःसन्देह परस्पर मतभेद रखते हैं खीर हमारे मोखकित को इन उद्धरणों से खनेक दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित जैन धर्म के सिद्धान्तों के सामान्य परिचय देने के खतिरिक्त खोर कुछ खमीष्ट न था। हमारा मोखिकत हद्ता पूर्वक इस बात से इन्कार कर रहा है कि इन उद्धरणों से उसे जैन धर्म के कुछ खनुयायियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना खभीष्ट था।

हमारा मोश्रिक्कल सत्यान्वेषण से भिन्न किसी अन्य भावना से प्रेरित नहीं है । यदि आप का मोश्रिक्कल या कोई अन्य पुरुष हमारे मोश्रिक्कल को सन्तुष्ट करदे कि उद्धरण का कोई भाग अनुचित रूप से लिया गया है या जैन धर्म के सिद्धान्तों के विरुद्ध है तो हमारे मोश्रिक्कल को उसमें कोई आपत्ति न होगी कि वह दूसरे संस्करण से जिसे प्रकाशक मुरादाबाद निवासी राजा जयकुष्णदास सी० एस० आई० प्रकाशित करना चाहते हैं ऐसे भागों को निकलवा दें।

हमारा मोश्रिक्कल तुम्हारे मोश्रिक्किल का ध्यान इस सूचना की श्रोर श्राकृष्ट करना चाहता है जो प्रकाशक ने सत्यार्थप्रकाश के श्रारम्भ में प्रकाशित कराई है जिस में वह प्रकाशक का उद्देश्य बतलाता है श्रोर पुस्तक के सम्बन्ध में सारा उत्तरदायित्व स्वीकार करता है। पुस्तक का श्रागामी विकय श्रोर प्रकाशन पूर्णक्ष से प्रकाशक के श्रिधकार में हैं।

आपके

( हस्ताचर ) पेन श्रीर गिल्बर्ट

[9.9]

पत्र (३४९)

[896]

लाला<sup>२</sup> काली वरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि हम सुख पूर्वक मम्बई से खंडुआ में आ गये हैं। यहां रा० रा० भाऊ दादा जी के बागीचे में ठहरे हैं?। हमने दश महीने का पंडितों के जमा खर्च का हिसाब लाला मोहनलाल

१. श्राषाद् शुक्ल ४ सोम, सं० १६३७। पृष्ठ ३३७ की टि० २, ३ भी देखें । यु॰ मी॰ ।

२. २-- २ तक का ग्रंश पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ५३८ पर उद्धृत है।

को दे दिया है। श्रौर २००) रुपये उनसे पंडितों के मध्ये लिये हैं। १४) रुपये पिछले वाकी रहे थे। सब मिलके २१४) रुपये हुए। उन में से १६०) रुपये पंडितों के मध्ये खर्च हुए। शेष ५४) रुपये रहे सो वहां लाला निर्भयराम जी के पास जमा खर्च करा देना। श्रनुमान है कि वह कागज भी श्राप के पास पहुँच गया होगा। श्रार्थ्य प्रश्लोत्तरी को शांति के साथ इस महीने में छाप के प्रसिद्ध कर देना। उस ही के साथ श्रार्थ्यदर्पण का उत्तर भी छाप देना।। सब से श्राशीर्वाद कह देना।। श्रुममिति।

ता० २५ जून सन् १८८२ ई०१।

[ द्यानन्द सरस्वती ] (खंडुश्रा<sup>२</sup>)

[१] पत्र-सूचना (३५०)

[898]

३ जुलाई १८८२ खरडुआ ।

[20]

पत्र (३५१)

[820]

श्रो३

मुन्शी समर्थदान आनन्दित रहो<sup>भ</sup>।

विदित हो कि पंडित सुन्दरलाल जी जो अपनी आर से रामनारायण वा तुम्हारे साथ प्रवन्ध कर जायेंगे तो अच्छा होगा अथवा जैसी उनकी इच्छा हो चाहे पत्र द्वारा छापाखाने का प्रवन्ध रखें वा किसी मनुष्य के द्वारा। जब तुम को अपने हाथ से कुंजी सोंप गये तो निश्चय होता है कि तुम्हारा विश्वास उनको है। अच्छा तुम जानों वे जानें। उनकी और से रामनारायण सहायक रहेगा। तुम अपनी ओर से चेतन रहना। और जो कुछ वहाँ विशेष व्यवस्था होगी उसको विशेषरित् जना देगा। जो इस समय भीमसेन वा ज्वालादन को सोंप जाते तो उन से कभी प्रवन्ध होना सम्भव नहीं था। अच्छा हुआ जो तुमको सोंप गए। अनुमान है कि जो द्याराम को लेजायेंगे तो २ वा ३ महीने में द्याराम लौट आवेगा। पंडित जी कहते हैं कि पत्र द्वारा हम यथायोग प्रवन्ध रखेंगे। यह भी ठीक है। जो तुम को प्रधान करना चाहते ठीक है तुम प्रधान हो जाओ। वहां वेद भाष्य के डेढ़ अंक के अध्यवेद के पत्रे वहां हैं क्योंकि हम यहां मन्त्र और पत्रों की संख्या रखते हैं। केवल बैठा रहने के वास्ते जलदी २ छाप कर पत्रों का तकादा किया करता है। और व्याकरण के पुस्तक अभी तक वैयार नहीं किये। अब भीमसैन से कह देना कि १० दिन के पश्चात तुम को स्वामी जी के पास रतलाम में जाना

१. ब्राषाद शुक्ल ६ रविवार सं० १६३६। लिफाफे पर २६ जून की मोहर है।

२. मूल पत्र त्रार्थसमाज फरुखाबाद में सुरिच्चत है। इसकी प्रतिलिपि दिसम्बर सन् १६२६ में म॰ मामराज जी ने की। फरुखाबाद का इतिहास पृ॰ १६५ पर भी छुपा है। हम ने सारा पत्र मूल पत्र से छापा है।

३. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ५३८ पर इतनी ही स्चना है। पूर्ण संख्या ४१५ (जून ९४) के पत्र में लिखा है कि मुंशी समर्थदान को वैदिक प्रेस प्रयाग में मेजने की प्रकाई की। यह पत्र प्रयाग को मेजा गया। [सम्भव है यह पत्र स्चना अगले पूर्ण संख्या ४२० वाले पत्र के विषय में ही हो, वह भी ३ जुलाई का ही है।]

४. मूल पत्र परोपकारिगी सभा अजमेर में सुरिव्त है।

होगा। चाहे घर होकर जान्नो चाहे इघर ही से। क्योंकि जो हमारे पास रतलाम में त्रावेगा तो फिर खदयपुर की त्रोर जाने में खसको सुवीता पढ़ेगा, श्रन्थथा २० कोश पैदल त्राना पढ़ेगा। श्रीर उघर भीलों का भी भय है। श्रव वहां दो पंडित का रहना उचित नहीं। जो वहाँ रहेगा उसको यथेष्ट प्रूफ सोधना श्रीर प मंत्रों से कम भाषा कभी न बनेगी श्रीर जो श्रधिक बनावेगा उसकी योग्यता विदित होगी। श्रव जब तक हमारी दूसरी चिट्ठी न श्रावे तब तक चिट्ठी पत्र न भेजना।

ता० ३ जुलाई सन् १८८२ श्रावस्य कृष्सा २ चन्द्रवार सं० १९३९। [दयानन्द सरस्वती]

[2]

पत्र (३५२) श्रोम<sup>२</sup> [856]

स्वस्ति श्रीमद्नवद्यगुण्गण्याऽलंकृतेभ्यः श्रीयुत्तमहाराजाधिराजभ्यो घीरवीर श्री नाह्ररसिंह-वर्मभ्यो द्यानन्दसरवतीस्वामिन श्राशिषो भृयामुस्तमाम्, शमत्रास्ति तत्र मवदीयं च नित्यमेधमानमाशासे श्रीमान् महाशयों का गोकरुण्युक्त रज्ञष्ट्री पत्र खंडुवा में पहुंचा। देख कर श्रति श्रानन्द शाप्त हुआ। धन्य है महाशयों को कि जिनका तन मन धन सब परोपकारार्थ है। श्राप के सदृश श्राप ही हैं। महाशयों के सामने विशेष लिखना श्रावश्यक नहीं जो कि स्वल्प लेख से बहुत जान लेते हैं। वेदभाष्य के कार्य रहने से श्रीमानों के पास पत्र न भेज सका। जब इधर की श्रोर श्राना होगा तत्र प्रथम ही श्रीमानों को विदित्त कर दिया जायगा। श्रव मैं मुम्बई से चल कर खंडुश्रा । खडुआ से कल श्रीमानं काल इन्दौर में, अब इन्दौर से कल सायंकाल की गाड़ी में वैठ कर रतलाम में पहुंच प्रधात वहां से खद्यपुर जाने का विचार है। उसी लिये कि वेद विद्यालयादि उत्तम कार्यों का प्रबन्ध हो जाय। श्रीमान् महाराजाधिराज जी जो उचित समम्में इस बात पर श्रीमान् श्राम्यकुल दिवाकर महाशयों तो लिखें। जिस से पूर्वोक्त कार्य्य शीघ्र ही सिद्ध हो। जो कुछ चित्तौड़गढ़ में श्रच्छी बात हुई हैं वे सब महाराजाधिराजों के प्रयन्न का फल है। एक पोपलीला॰ का पुस्तक श्राज भेजा है और वेदाङ्गप्रकाशादि पुस्तक मंगवाने का पता यह है (प्रबन्धकर्ता वैदिक यन्त्रालय प्रयाग) ऐसा लिख कर भेज दीजिये श्रवश्य पत्र पहुंच जायगा। जो २ पुस्तक मंगवावेंगे वे २ सब उचित समय में पहुंचते रहेंगे। जब मैं उदयपुर में पहुंच्गा तब श्रीमान महाराजाधिराज जी को समाचार विदित कर दूँगा।

१. दितीया तृतीया सम्मिलित थी। २. मूल पत्र शाहपुरा राज में सुरिच्चत है।

३. खग्डु ग्रा श्राषाढ् शुक्ल ८ सं० १६३६ (२४ जून १८८२) को पहुँचे थे । यु० मी०।

४. पत्र श्रावयावदी ४ मंगलवार (४ डुलाई १८८२) को इन्दौर से लिखा । अतः खण्डुआ से ३ जुलाई की सायं चले । यु० मी० ।

त्रर्थात् ५ जुलाई १८८२ की सायं इन्दौर से चलेंगे । यु॰ मी॰ ।

ह. पूर्ण संख्या ४२२ के पत्र में इन्दौर से रात की दो बजे की गाड़ी से रवाना होने का निर्देश है अतः वे ६ जुलाई की प्रातः रतलाम पहुँचे होंगे। पूर्ण संख्या ४२२ (पृ०३४१) की टि० ४ भी देखो। यु०मी०।

७. इस पुस्तक के लिये देखी हमारा "ऋ॰ द॰ के ग्रन्थों का इतिहास" परिशिष्ट ५पृष्ठ ८२। यु॰मी॰।

इन्दौर, सं० १९३९]

पत्र (३५४)

388

सब सज्जनों से मेरा त्राशीर्वाद कह दीजियेगा । मिति श्रावण वदी ४ मंगलवार सम्वत् १९३९ शुभम् (इन्दौर)

[9.]

कार्ड (३५३)

[822]

श्रीयुत पंडित शालिप्राम बाबू गदाधरप्रसादसिंह बाबू जगन्नाथजी श्रानिन्दत रहो। विदित हो कि मैं ४ जुलाई को यहां स्वामी दयानन्द (सरस्वती) जी महाराज के चरणों में पहुंचा। श्राप का समाचार कहा। श्रवण कर महाराज श्रानिन्दित हुए। श्रीर मैं नागपुर ले जाने के वास्ते श्राया। परन्तु स्वामी जी राजपुताना देश में जावेंगे श्रीर हुलकर महाराज यहां नहीं हैं। सर्व सभासदों से श्रानन्द कहना। दूसरा पत्र विस्ता[र] पूर्वक भेजूँगा। हु० श्रात्मानन्द सरस्वती

> ५ जुलाई सन् ८२<sup>२</sup> इन्दोर छावनी सब से मेरा त्राशीर्वाद कहियेगा।

दयानन्द सरस्वती3

[9]

कार्ड (३५४)

[४२३]

## श्रो३म्४

श्री स्वामी जी का श्राशीर्वाद विदित हो। स्वस्ति श्री मित्रवर बाबू रूपसिंह कलार्क जी योग्य इतः रामानन्द ब्रह्मचारी का नमस्ते। गोरचा की सही पहुंची। श्रापने यह काम धन्यवाद देने योग्य किया। श्रव भी सही कराइये। जो गोरचार्थ [ मे ]मोरियल पत्र न रहे हों तो लिखना, परन्तु हस्ताचर श्रलग श्रचर स्पष्ट रहें, जिस में सुगमता से पढ़ने में श्राचें। यहां हमारे पास श्रीयुत महाराजा-धिराज श्री नाहरसिंह जी साहपुरा मेवाड़ से ४०००[०] चाली [स] हजार मनुष्यों की सही कराके भेजी है। श्री स्वामी जी मुम्बई से चल के खंडुवा, खंडुवा से इन्दोर, श्रव इन्दोर से श्राज दो बजे रात्री की गाड़ी में बैठ के रतल[ा]म को जायेंगे। वहां प्रवा १० दिन रह कर पश्चात् खदयपुर को जायेंगे॥

१. ४ जुलाई ६८८२ । यु॰ मी॰ । २. श्रावर्ण वदी ५, बुधवार सं ० १६३६ । यु॰ मी॰ ।

३. यह इस्ताच्चर ऋषि ने स्वहस्त से बनाया है। शेष पत्र उनके शिष्य स्वामी आत्मानन्द ने लिखा है। हम ने ता॰ २३-४-१६२७ को एक पत्र विलासपुर मेजा था। उसके उत्तर में पत्र संख्या ८०, ता ११-५-१६२७ को नरसिंहपुर से मध्यदेश-विदर्भ आ॰ प्र॰ सभा के मन्त्री श्री शिवलाल जी ने यह मूल कार्ड हमें मेजा था। मूल कार्ड ऋब हमारे संग्रह में सुरिच्ति है। पं० शालिग्राम तथा बाबू जगन्नाथ प्रसाद से थिलासपुर में म० मामराज ता० २ फरवरी सन् १९४४ को मिले थे। अन्य कोई पत्र नहीं मिला।

४. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिव्तत है।

प्र. इस पत्र के अनुसार ५ ता० की रात को बैठ कर ६ ता० की प्रात: स्वामी जी रतलाम पहुंचे। श्री पं॰ महेशप्रसाद जी ने 'महर्षि दयानन्द कब श्रीर कहां' पुस्तक में श्रावण कृष्ण प्र श्रर्थात् प्र जुलाई को रतलाम पहुँचना लिखा है। सो ठीक नहीं है। श्रावण ६ अर्थात् ६ जुलाई की प्रात: वे रतलाम पहुंचे थे। यु॰मी॰।

इन्दौर, सन् १८८२

३४२

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

विशेष समाचार खदयपुर में पहुंचे के पश्चात् मेजूंगा ।। भद्रमिति । कल स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी इन्दोर में हमारे पास आगये ॥ ता० ५ जुलाई सन् १८८२ ई०१।

रामानन्द ब्रह्मचारी (इन्दोर)

[9]

पत्रांश (३५५)

[858]

श्राज हम इन्दौर से दो बजे [रात्री³] की गाड़ी में बैठ कर रतलाम जावेंगे । वहां से खद्यपुर जाने का विचार है। श्रावरा वदी ५, बुद्धवार। इन्दौर ५ जुलाई ८२। दयानन्द सरस्वती

इन्दौर

[32]

पत्र-सूचना (३५६)

[856]

[मुंशी समर्थदान] भीमसेन को हमारे पास भेजों ।

[\$3]

तार-सूचना

४२६

[मुंशी समर्थदान] भीमसेन को हमारे पास भेजो ।

[\$8]

पत्र (३५७)

[820]

श्रो३म्६

मुन्शी समर्थदान आनंदित रहो।

विदित हो कि आज कार्ड पत्र आया, समाचार विदित हुआ। परन्तु जो तुमने प्रथम पत्र में लिखा था कि विशेष यहां का वर्तमान द्वितीय पत्र में लिख्ंगा वह समाचार इस पत्र में नहीं लिखा? क्या यह द्वितीय पत्र न था? अथवा लिखते समय स्मरण न रहा जो कि लिखा विशेष समाचार दूसरे पत्र में लिख्ंगा। अब कब दूसरा पत्र लिखा जायगा? वह समाचार अवश्य लिखना। यंत्रालय में जो दो महीने आगे का छपा हुआ वेदभाष्य है सो अधिक २ वेदभाष्य ही के छपने से क्या लाभ होगा। और जो प्रतिमास में छपने के वास्ते वेदभाष्य ही भेजा जाय तो कई एक दिन तक वेदभाष्य ही के शोधने में ब्यतीत हो जांय। पुनः आगे आगे न बनने से कहां से छपेगा। जो वेदाङ्ग-

१. प्रथम श्रावण कृष्ण ५ बुध, सं॰ १६३६ । यु० मी० ।

२. यह पत्राश पं० लेखरामकृत जीवनचरित प्० ५३८ पर उद्घृत ।

३. पृष्ठ ३४१, टि॰ ५ देखो । यु॰ मी॰। ४. यह शुद्ध श्रावण स्रर्थात् प्रथम श्रावण है।

५. देखो श्रगली पूर्णं संख्या ४२७ तथा ४२८ का पत्र । यु० मी० ।

६. मूल पत्र परोपकारिग्णी सभा अजमेर में सुरिचत है।

प्रकाश के श्रचर नहीं हैं तो ढलवा लो। वहां शीशा रक्खा किस काम में श्रावेगा। श्रोर जब तक श्रचर न वन चुकें तब तक कम्पोजीटरों को छुट्टी देदो। जब श्रचर वनजावें तब बुला लेना। उन्हीं श्रचरों को ढलवाश्रो जिनकी श्रावश्यकता है। क्या फूंडरी में श्रचर नहीं ढलते हैं जो लिखते हो कि श्रचर नहीं हैं। जिस प्रकार काम श्रच्छे प्रकार चले उस प्रकार का प्रवन्ध सर्वदा ध्यान में रखना चाहिये।

पंडित भीमसेन के बुढ़ाने के छिये १ तार और दो एक पत्र भेज चुके हैं । उससे कह देना कि स्वामी जी के पास जावरा नवाब का जिला इन्दोर में चला आवे। और तुम वेदमाध्य और मासिक हिसाब भी यहीं जावरा में भेजदो। सर्वदा वहां का यथेष्ट समाचार लिखा करो। और जो हम लिखें उसमें ध्यान देकर काम चलाया करो।

ताः ११ जुलाई १८८२ श्रावण कृष्ण ११ मंगलवार सं० १९३९।

[ दयानन्द सरस्वती ] (जावरा )

[34]

पत्र (३५८)

[886]

मुन्शी समर्थदान आनिन्दत रही ।

विदित हो कि जो हमने छिखा और तार मेजा था उसको याथातध्य किया होगा। वेदाङ्गप्रकाश के छपने के लिये शीघ ही फुंडरी में अच्चर ढलवालो। और पूर्व पत्रों का उत्तर यथावत् विस्तार पूर्व कि लिखना। विशेष हाल कल के पत्र में जान लेना। अब देखों छापेखाने का प्रबन्ध, करनवास के ठाऊर शेरसिंह ने हमारे पास पत्र मेजा है। उसको तुन्हारे पास भी मेजते हैं। देखकर यथोचित प्रवन्ध करना। इसने २१) रुपये हमको मेरठ में वेदमाध्य के मध्ये दिये थे। वे रुपये टाटल पेज पर छप भी चुके । भला ऐसे २ प्राहकों को वृथा अपनी अज्ञानता से क्लेश देते हैं। इस प्राहक के २५॥) रुपये आ चुके हैं। अब पांचवें वर्ष के ८) रुपये रहे होंगे, मंगवा लेना। जो इनके पास वेदमाध्य न जाता हो तो जहां से बंध हुआ हो वहां से उनसे पूछ कर बराबर मेजा करना। और जो जाता हो तो अच्छा है। और करनवास में ठाऊर गोपलसिंह भी वेदमाध्य लेते हैं। उनसे भी बाकी रुपये उन्हीं के द्वारा और उनके भी रुपये पांच वर्ष के अन्त तक के सब मंगवा लेना। और छापेखाने की व्यवस्था अच्छे प्रकार रखना। इति ता० १३ जुलाई सन् १८८२ ई०।

श्रावण फ्रब्ण १३ बृहस्पतवार सं॰ १९३९।

द्यानन्द सरस्वती नवाब का जावरा ( मालवा )

१. इन में से एक उस पत्र की छोर संकेत है जो ३ जुलाई १८८२ को समर्थदान को लिखा था। देखो पूर्ण संख्या ४२० का पत्र, पृष्ठ ३३६ पं० २६। तार तथा द्वितीय पत्र प्राप्त नहीं हुछा । यु० मी०।

२. मूल पत्र परोपकारिंगी सभा अजमेर में सुरित्त है।

३. पूर्णं संख्या ४२७ पृष्ठ ३४२ का पत्र । यु॰ मी॰ ।

४. इस विषय में पूर्ण संख्या २६३ (पृष्ठ २१७) भी देखें । यु॰ मी॰।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र खौर विज्ञापन

[98]

पत्र (३५९)

[856]

लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रही?!

विदित हो की लाला जगन्नाथदास मुरादाबाद की प्रश्नोत्तरी के विषय में विस्तार से लिख के ७ पृष्ठ भेजते हैं? । पहुंचेंगे । जिस समय पहुंचे उसी समय १००० प्रति छपवा देना । परन्तु छपवाने में विलम्ब किचिन्मात्र भी न करना। पश्चात् तुमं अपने समाचार में छपवाना । छपवाने में इतना ध्यान रखना कि जैसा लेख है वैसा ही छपवाना। कम व अधिक न करना। और इसका मूल्य )।। श्राना रखना । यरन्तु बाहर के मंगवाने वालों से डाक व्यय भी ले लेना । इसको शीघ्र ही छपवा के सर्वत्र प्रसिद्ध कर दो। जिस से लोगों की शंका दूर हो जाय। श्रौर उनकी बुद्धि का भी प्रकाश हो जाय कि ये गुरु श्रौर चेला किस प्रकार के हैं। श्रौर इन्होंने क्या २ विचित्र वर्त्तमान किया है। श्राज कल आत्मानन्द सरस्वती स्वामी जी हमारे पास हैं। इति

ता० १३ जुलाई सन् १८५२ ई०।

दियानन्द सरस्वती मालवा नवाब का जावरा

[4]

मसीक्षा पत्र (३६०)

[830]

श्रीयृत सम्पादक देशिहतेषी महाशय मंत्री श्रार्घ्यसमाज श्रजमेर समीपेषु ।

प्रिय सम्पादकवर ! जो मनुष्य स्वार्थ बुद्धि छोड़ परमार्थ करने में प्रवृत्त नहीं होता उस का हृद्य पूर्ण शुद्ध होना असम्भव है, चाहे वह बहुत युक्ति और गूढता अपनी कपटता को प्रसिद्ध करने में कैसा ही यन्नवान क्यों न हो। उस का कपट कभी न कभी प्रकाशित हो ही जाता है। प्रत्यच्च दृष्टान्त देख लो कि लाला जनमाथदास मुन्शी इन्द्रमणिजी के शिष्य की बनाई हुई [म्रार्घ्य प्रश्नोत्तरी] की समालोचना करने से (बहुत से विषय उसमें सत्य श्रीर परोपकारक दीख पड़ते हैं परन्तु बहुधा विषय बस में ऐसे भी हैं कि जिनके सुनने वा पाठ करने वालों का भ्रमजाल में फंस वेदादि सत्य शास्त्रों से विरुद्ध होना सम्भव है। यह विरुद्ध विषय केवल लाला जगन्नाथदास ही के अभिप्राय से नहीं किन्तु मुनशी इन्द्रमिण भी उन दोषयुक्त विषयों के अनुयायी प्रतीत होते हैं।) अस्तु जो हो मुक्तको सत्य २ परीचा इस प्रन्थ की करके दोषों का प्रकाश करना अवश्यनीय है। कारण सज्जन लोग गुण प्रहण कर दोषों

२. पूर्व पूर्णसंख्या ४१६ (पृष्ठ३३६) में प्रश्नोत्तरी का उत्तर 'बहुत दिन हुए मेज चुके हैं' ऐसा लिखा है। वह उत्तर संद्यित या। यह विस्तृत उत्तर है। यह इसी वाक्य के 'विस्तार से' शब्द से स्पष्ट है। यु०मी०।

स्रपने १६ जुन के पत्र (पूर्ण संख्या ४१६) में श्री स्वामी जी ने ला० कालीचरण को लिखा-

१. मूल पत्र आर्थ समाज फरखाबाद में सुरिच्चत है। इस की प्रतिलिपि दिसम्बर सन् १६२६ में म॰ मामराज ने की। फर्रंखाबाद का इतिहास पृष्ठ १६५ पर भी छुपा है।

३. जब मुंशी इन्द्रमिण ने सहायता में आए हुए धन का पूर्वप्रतिज्ञा के अनुसार पूर्ण व्थोरा न न बताया श्रीर न छापा, तब श्री स्वामी जी ने उन सब से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। तब मुन्शी जी ने श्रार्थ-प्रश्नोत्तरी (संवत् १६३८, ग्रार्यदर्पण प्रेस, शाहजहांपुर) छापी । उसका उत्तर लिखवा कर श्री स्वामी जी ने भारत सु॰ प्रवर्तक में छपने के लिए मेजा। फरुखाबाद समाज वालों ने वह न छापा।

को छोड़ दें। इतना ही नहीं, किन्तु जैसे विषयुक्त उत्तमान्न का बुद्धिमानों को त्याग करना अवश्य होता है, इसी प्रकार आर्थ्य लोगों के लिये यह [आर्थ्य प्रश्नोत्तरी] प्रन्थ गुर्खों के साथ दोषदायक होने से श्रेष्ठ को त्याग के योग्य है। अब इसका कुछ थोड़ा सा नमूना संदेष से दिखलाता हूं।

[आर्य प्रश्नोत्तरी पृष्ठ २ । प्रश्नोत्तर ७] परमात्मा ने सृष्टि की आदि में श्री ब्रह्माजी के हृद्य में वेदों का प्रकाश किया । उन से ऋषि मुनि अस्मदादिकों को प्राप्त हुये ।

[समीचा] यह बात प्रमाण करने योग्य नहीं, क्योंकि (अग्नेवैं ऋग्वेदो जायते [ऽजायत ?] वायोर्थजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः) शतपथ ब्राह्मण वचन ।

> "अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयम्ब्रह्म सनातनम् । दुदोह यज्ञसिद्धचर्थमृग्यज्ञःसामलक्षणम्॥"

मनुस्मृति का वचन । अब देखिये अग्नि आदि महर्षियों से ऋग्वेदादि का प्रकाश हुआ । इत्यादि ब्राह्मण वचनों के अनुसार मनुजी महाराज कहते हैं कि ब्रह्मा जी ने अग्न्यादि महर्षियों के ''प्रश्नोत्तरी का खरडन बहुत दिन हुए हम आप के पास मेज चुके हैं । उस के पीछे मारत सु॰ प्र॰ के दो श्रंक निकल चुके हैं । परन्तु आप ने उस को छापा नहीं।'' अर्थात् श्री स्वामी जी का यह उत्तर एप्रिल १८८२ में लिखा गया होगा ।

पुनः १३ जुलाई पत्र पूर्णसंख्या ४२६ के अनुसार श्री स्वागी जी ने उसी प्रश्नोत्तरी का एक विस्तृत उत्तर छपने को मेजा।

फरुखाबाद वालों ने यह उत्तर भी न छापा। श्रीर मन्त्री श्रा० स० फरुखाबाद ने १४-७-८२ को एक पत्र (संख्या २७) श्री स्वामी जी की सेवा में खएडुश्रा मेजा। उस का विषय "प्रश्नोत्तरी" था। पुनः मन्त्री समाज ने १६-७-८२ को एक श्रीर पत्र (सख्या ५२) श्री स्वामी जी को जावरा मेजा—

'पत्र त्राप का श्रीर ७ पृष्ठ श्रार्थप्रक्षोत्तरी के उत्तर में पहुंचे। छापने के विषय में श्रन्तरङ्ग समा से यह श्रनुमित मिली कि नया प्रेस एक्ट में छपने छापने का विषय है।'' … श्रीर जो १००० प्रति श्रलग छापी जावे वह भो ऊपर के कारणों से (मुक्ते छोड़) श्राप लिखें जिसके नाम से छपवाने का विचार किया जावे।''

िक्तर १४ त्रागस्त १८८२ [पूर्णं संख्यां ४३४] के पत्र में श्री स्वामी जी ला• कालीचरण को लिखते हैं—

''ग्रभी तक ''श्रा प्रश्न॰'' के उत्तर नहीं छपवाये। क्या कारण है। जो प्रेष एक्ट की शंका हो तो देखत पत्र के पिरडत मुन्नालाल मन्त्री ग्रा॰ स॰ ग्रजमेर के पास मेज दीजिए। वे छाप देंगे।"

फिर श्री स्वामी जी ने उदयपुर से श्रावण शुक्ल ३ संवत् १६३६ [१७ श्रगस्त १८८२। पूर्ण संख्या ४३६] को बाबू दुर्गाप्रसाद के नाम एक पत्र लिखा। उस में भी इसी उत्तर के छापने का उछेखहै।

२४ अगस्त १८८२ को [पूर्ण संक्या ४३७] श्री स्वामी जी पुनः लिखते हैं—
"तुमने "ग्रा॰ प्र॰" के उत्तर अजमेर पिखत मुन्नालाल जी के पास मेज दिये । अब्छा किया ।"
२४-८-२ को ही मुन्नालाल सम्पादक देशहितैषी श्री स्वामी जी को अजमेर से लिखता है—
"आर्थ प्रश्नोत्तरी के खरडन को किसकी ओर से प्रकाश करें।"
अन्त में यह उत्तर देशहितैषी अजमेर में "उचित वक्ता" के नाम से छपा।

द्वारा वेदों की प्राप्ति की। अत एव "यो वे ब्रह्माणं विद्धाति पूर्व यो वे वेदांश्च प्रहिणोति तस्में" इस श्वेताश्वतरोपनिषद् के वचनार्थ की संगित शतपथ और मनुजी के वचन से अविकद्ध होनी चाहिये। किन्तु परमात्मा ने चारों महर्षियों के द्वारा श्री ब्रह्मा जी को चार वेदों की प्राप्ति कराई। और अब भी जो कोई चार वेदों का पढ़ता है वही यज्ञ में ब्रह्मासन को प्राप्त और उसी का नाम ब्रह्मा भी होता है। यदि मुन्शी इन्द्रमणिजी जी और उनके शिष्य लाला जगन्नाथदास वेद और तदनुयायी ब्राह्मणादि प्रन्थों को पढ़े होते तो ऐसे भारी भ्रम में पड़ ऐसे २ अन्यथा भाषण वा लेख क्यों करते ? इनको उचित है कि अपना हठ छोड़ सत्य का प्रहण अवश्य करें।

[ प्रष्ठ ३ । प्रश्नोत्तर १६ ] जीव वास्तविक श्चनन्त हैं । इस कारण ईश्वर के ज्ञान में भी अवन्त ही हैं।

[समीचा] जब जीव देश काल वस्तु परिछिन्न अर्थात् भिन्न २ हैं । उनकी अनंत कहना मानों एक अज्ञानी का दृष्टान्त बनना है। अनन्त तो क्या, परन्तु परमेश्वर के ज्ञान में असंख्य भी नहीं हो सकते। परमेश्वर के समीप तो सब जीव वस्तुतः अतीव अल्प हैं। जीधों की तो क्या परन्तु प्रति जीव के अनेक कमों के भी अन्त और संख्या को परमेश्वर यथावत् जानता है। जो ऐसा न होता तो वह परम्रह्म जीव और उनके कमों का जैसा २ जिस २ जीव ने कमें कीया है उन २ का फल न दे सके। जब कोई इनसे प्रश्न करें कि एक २ जीव अनन्त हैं वा सब मिल के ? जो एक २ अनंत हैं तो "य आत्मिन तिष्ठन्" इत्यादि ब्राह्मण्ण वचन अर्थात् जो परमात्मा व्याप्य जीवों में व्यापक हो रहा है और ऐसा ही लाला जगन्नाथदास ने "पृष्ठ ५। प्रश्नोत्तर ३२" के उत्तर में लिखा है कि "जीवेश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बंध और "पृष्ठ ४ प्र० २१" "में जीव को अर्गु माना है।" जीव शरीर को छोड़ दूसरे शरीर में जाता और शरीर के मध्य में रहता है। इस लिये अनंत वा असंख्य ईश्वर के ज्ञान में नहीं। किन्तु जीवों के ज्ञान में जीव असंख्य हैं। जिन लाला जगन्नाथदास वा मुन्शी इन्द्रमण्जिनों को अपने प्रथस्य पूर्वापर विरुद्ध विषयों का ज्ञान भी नहीं है तो आगे क्या आशा होती है। इसी से इनके सब प्रपंचों का उत्तर समम लेना शिष्ठों को योग्य है।

[ पृष्ठ ४ प्र० २४ ] "जीव के गुण वास्तव में विभु है, परन्तु बद्धावस्था में अविद्या से आच्छादित होने से परिछिन्न हैं। मुक्तावस्था में विभु हो जाते हैं।"

[समीजा] विभु गुण बसी के होते हैं जो द्रव्य भी विभु हो। और जिसको अणु मानते हैं क्या बसके गुण विभु कभी हो सकते हैं ? क्योंकि गुणों का आधार द्रव्य होता है। भला कोई कह सकता है कि परिश्चित्र द्रव्य में विभु गुण हों। क्या गुणी एक देशी और गुण विभु हो सकते हैं ? और गुणी को छोड़ केवल गुण पृथक् भी रह सकता है ? नहीं ! नहीं !! और जो (पृष्ठ ४। प्रभोत्तर २१) में जीव को अणु माना है। वह भी ठीक नहीं। क्योंकि एक अणु में भी जीव रह सकता है। अर्थात् एक अणु में अनेक जीव रह सकते हैं। देखो अणु कांच वा पृथिवी आदि के मध्य में से पार नहीं जा सक्ता और जीव जा सकता है। इसीलिये जीव अणु से भी सूक्ष्म है और इसके गुण भी विभु नहीं। हां मुक्तावस्था में जिस और बसका ज्ञान होगा वस दूरस्थ पदार्थ को भी अपने ज्ञान से जान लेता है। नहीं तो "युगपज्ज्ञानानुत्पित्तर्मनसो छिङ्गम" इस न्याय शास्त्र के सूत्र का अर्थ ही नहीं घट सकेगा। जो एक चण् में एक पदार्थ को जाने अनेक को नहीं, बसी को मन कहते हैं। वही मन

मुक्तावस्था में भी रह जाता। पुनः उसी मनरूप साधन से विभु गुण वाला जीव कैसे हो सकता है। [पृष्ठ ४ प्रश्न २५] ''जीव परतन्त्र है।''

[समीचा] जीव किस के आधीन है ? जो कहो कि परमेश्वर के तो जो कुछ जीव कर्म कर्ती है वह स्वतंत्रता से वा ईश्वराधीनता से ? जो ईश्वराधीनता से करता है तो जीव को पाप पुण्य का फल न होना चाहिये, किन्तु ईश्वर को होना चाहिये। जैसे सेनाध्यच्च वा राजा की आज्ञा से कोई किसी को मारे वह अपराधी नहीं होता, अथवा किसी के मारने में लकड़ी तलवारादि शक्क [न] अपराधी और न दंडनीय होते हैं, वैसे ही जीवों को भी दंड न होना चाहिये। किन्तु पाप पुण्य का फल सुख दुःख ईश्वर भोगे। उस लिये जीव अपने कर्म करने में सर्वदा स्वतन्त्र और पाप का फल दुःख भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतंत्र रह जाते हैं। जैसे चोर चोरी करने में स्वतंत्र और राजदंड भोगने में परतंत्र हो जाते हैं इसी प्रकार जीवों को भी जानो।

[पृष्ठ ४ प्रश्नोत्तर २८] "मुक्त जीव कम्भैवश होकर कभी फिर संसार में नहीं आते । ईश्वरे-च्छानुकूल अपनी इच्छा से केवल धर्म रह्या करने को आते हैं।"

[समीचा] पाठक गण ! विचारिये यह अविद्या का प्रताप नहीं है तो और क्या है ? जो कहते हैं कि जीव संसार में कभी नहीं आते और ईश्वरेच्छानुकूल अपनी इच्छा से केवल धर्म रचा करने को आते भी हैं। धन्य ! भला इस पूर्वापर विरुद्धता को गुरू और चेले ने तिनक भी न समभा। विचारणीय है कि जिस का ज्ञान, सामर्थ्य, कर्म अन्त वाले है उस का फल अनन्त कैसे हो सक्ता है ? और जो मुक्ति में से जीव संसार में न आवें तो संसार का उच्छेदन अर्थात् नाश ही हो जाय । और मुक्ति के स्थान में भीड़ मड़का हरद्वार के मेले के समान हो जाय। और ईश्वर भी अंत वाले गुण कर्म का फल अनन्त देवे तो वह न्यायरहित हो जाय। और परिमित गुण कर्म स्वभाव वाले जीव अनन्त आनन्द को भोग भी नहीं सके। फिर यह बात वेद तथा शास्त्र से विरुद्ध भी है । देखों "अर्गनेर्न्नं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम । स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पतरं च इशेयं मातरं च" ऋग्वेद वचन—अर्थ-हम उसी मुन्दर निष्पाप परमात्मा का नाम जानते हैं और स्व-प्रकाश स्वरूप जगदीश्वर प्राप्तमोच्च जीवों को पुनः अविध पर संसार में माता पिता के दर्शन कराता है आर्थात् मुक्ति मुक्त को भुगा के पुनः संसार में जन्म देता है ॥ इसी प्रकार सांख्य शास्त्र में मी लिखा है "नात्यन्तोच्छेदः" इत्यादि वचनों से यही सिद्ध होता है कि अत्यन्त जन्म मरण् का छेदन [न] किसी का हुआ और न होगा, किन्तु समय पर पुनः जन्म लेता है । इत्यादि प्रमाणों और युक्तियों से मुक्त जीव भी पुनरावृत्ति में आते हैं।

[पृष्ठ ४ प्रश्नोत्तर ३०] "एक वृत्त में एक ही जीव होता है न श्रनेक"।
[समीत्ता] जो एक वृत्त में एक जीव होता तो प्रत्येक जीव [वृत्त् ] में पृथक् २ जीव कहां से
आते और किसी वृत्त की डाली काट कर लगाने से जम जाता है उस में जीव कहां से श्राया, इस
लिये एक वृत्त में श्रनेक जीव होते हैं।

[पृष्ठ ५ प्रश्नोत्तर ३५] अनेक पूर्व जन्मों के कर्म जो ईश्वर के ज्ञान में स्थित हैं वे सिक्कत कहलाते हैं। [समीज्ञा] क्या जीव का कर्म जीव के ज्ञान में सिद्धित नहीं होता ? जो ऐसा न हो तो कर्मों के योग से पवित्रता और अपवित्रता जीव में न होवे। इस लिये जो २ अध्ययनादि कर्म जीव करते हैं उनका सम्बय जीव ही में होता है, ईश्वर में नहीं। किन्तु ईश्वर तो केवल उन के कर्मों का ज्ञाता है और फल प्रदाता है।

[पृष्ठ १२-प्रभोत्तर ७७] "केवल देवता श्रौर शिष्ट पुरुषों के नाम पर जन्माष्टम्यादि व्रत है । सो ईश्वरातिरिक्त किसी देवता की उपासना कर्तव्य नहीं "।

[समीचा] क्या शिष्ट पुरुषों से भिन्न भी कोई देवता है ? बिना पृथिव्यादि के तेतीस और वेदमन्त्र तथा माता पिता आचार्य्य अतिथि आदि के जिन का वेदों ने पूजन अर्थात् सम्यक् सत्कार करना कहा है। क्या यह भी मनुष्यों को कर्तव्य नहीं।

[पृष्ठ १३-प्रश्नोत्तर पर] "जो कुछ ईश्वर ने नियत किया है उस में न्यूनाधिक्य करने वाला कोई नहीं। जो बात जिस प्राणी के लिये जिस काल में जिस प्रकार से ईश्वर ने नियत की है उस से विरुद्ध कभी नहीं होती।"

[समी ज्ञा] क्या ब्रह्मचर्य और योगाभ्यासादि उत्तम कमों से आयु का अधिक होना और कुपथ्य से वा व्यभिचारादि से न्यून नहीं होता ? जब ईश्वर का नियत किया हुआ ही होता है तो जीव के कमों की अपेजा कुछ भी नहीं रह सकती। और जो अपेजा है तो केवल ईश्वर ने नियत नहीं किया किन्तु दोनों निमित्तों से होती है। जो हमारा क्रियमाण स्वतन्त्र न हो तो हम उन्नति को प्राप्त कभी नहीं हो सकते। इसीलिये हम कर्म करने में स्वतन्त्र और ईश्वर जीवों के कर्मों को यथायोग्य जानकर कम्मी- तुसार शुभाऽशुभ फल देने में स्वतन्त्र है। ऐसा माने बिना ईश्वर में वे ही दोष आ जावेंगे जो २५ वें प्रश्नोत्तर की समी ज्ञा में लिख आये हैं।

[पृष्ठ १३-प्रश्नोत्तर ८४] "स्वर्ग संसारांतर्गत है वा लोकान्तर ("उत्तर" स्वर्ग लोक्विशेष है वहां छुघा पिपासा बुढ़ापा आदि दुःख नहीं है।"

[समीचा] क्या लोकान्तर का नाम संसार है नहीं। क्या बिना मुक्ति के वा प्रलय अथवा स्थूल शरीर के ज्ञुधाद की निवृत्ति हो सकती है। ऐसे विशेष स्वर्ग लोक को गुरु शिष्य देख आये होंगे। जो पूर्वमीमांसा को देखा होता तो ऐसी अन्यथा बात क्यों लिखते। देखिये "स पव स्वर्गः स्यात सर्वान्प्रत्यविशिष्टत्वात्" पूर्वमीमांसा का वचन। जो सर्वत्र अविशेष अर्थात् सुख विशेष की प्राप्ति का नाम स्वर्ग और दुःख विशेष की प्राप्ति का नाम नरक लिखा है। सब जीवों को सब संसार में प्राप्त होता है किसी विशेष लोकान्तर ही में नहीं। और जहां शरीर धारण श्वास प्रश्वास भोग वृद्धि चय आदि होते हैं वहां जुधा पिपासा और बुद्धापन आदि क्यों नहीं? यह सब अविद्या की बात हैं। ध्यान दीजिये वेद का कोष क्या कहता है (स्वः) साधारण नाम में है निघं शशः "स्वः सुखं गच्छिति यस्मिन स स्वर्गः" जिस में सुख को प्राप्ति हो वह स्वर्ग कहाता है। परन्तु "गौणमुख्ययोर्मध्ये मुख्ये कार्ये सम्प्रयत्यः" यह ज्याकरण महाभाष्यकार का वचन है। इस से यह सिद्ध होता है कि निर्मत धम्माऽनुष्ठानजन्य सत्य विद्यादि साधनों से सिद्ध आत्मीय और शारीरिक सुख विशेष है। उसी प्रधान सुख की प्राप्ति का नाम स्वर्ग है।

[पृष्ठ १४- प्रश्नोत्तर ९१] सम्पूर्ण जीव वास्तव में ईश्वर के दास हैं इस कारण मनुष्यों के नाम में ईश्वर वाच्य शब्द में दास शब्द का प्रयोग करना ऋत्युत्तम है।"

[समीचा] यह शास्त्रीय व्यवहार से सर्वथा बाहर है। किन्तु केवल कपोलकल्पना मात्र ही है क्योंकि—

"शर्मावद् ब्राह्मणस्य स्याद् राज्ञो रक्षासमन्वितम्। वैश्यस्य गुप्तिसंयुक्तं श्रद्धस्य तु जुगुप्सितम्"॥ मनु०

जैसे ब्राह्मण का नाम विष्णु शम्मी, चित्रय का विष्णु वम्मी, वैश्य का विष्णु गुप्त श्रीर शूद्र का विष्णुदास इस प्रकार नाम रखना चाहिये। जो कोई द्विज शूद्र बनना चाहे तो अपना नाम दास शब्दान्त धर ले श्रीर जो शास्त्रोक्त विधि छोड़ मनोमुख चले उस को क्या कहना।

[पृष्ठ १६-प्रश्नोत्तर ९७] "परलोक और धर्मार्थ के फल तथा ईश्वर को न मानने वाले को नास्तिक कहते हैं।

[समीचा] इस में केवल इतनी ही न्यूनता हैं कि "नास्तिको वेदनिन्दकः" जो लाला जगन्नाथदास और मुन्शी इन्द्रमणि जी ने मनुस्मृति पढ़ी वा श्रच्छे प्रकार से देखी भी होती तो वेद निन्दक का नाम नास्तिक क्यों न लिखते, जिस से सब कुछ धर्य श्रा जाता और लच्चण भी दृष्टि पड़ता।

[पृष्ठ १६-प्रश्नोत्तर ९८] "हिन्दू" शब्द संस्कृत माषा का नहीं है, पारसी भाषा में वास्तविक अर्थ "हिन्दुस्तान" के रहने वाले का है और (काला, लुटेरा, गुलाम) "यह सांकेतिकार्थ हैं"।

(समीचा) वह क्या ! जब संस्कृत भाषा का नहीं है तो इसका वास्तविक अर्थ कभी नहीं हो सक्ता, वास्तविक अर्थ [में] इस देश वालों का नाम (आर्थ्य) और इस देश का नाम "आर्थ्यावर्च है"। इस सत्यार्थ को छोड़ असत्यार्थ की कल्पना करनी मुक्त को तो अविद्या और हठ की लीला दृष्टि पढ़ती है। जब "अर्थी" की (लुगात) नामक पुस्तक में लिखा है कि लुटेरे आदि का नाम हिन्दू है तो उस भाषा में वास्तविक नाम क्यों नहीं ? केवल सांकेतिकार्थ क्यों ? अर्थात् जो कोई आर्थ होकर अपने हिन्दू नाम होने में आप्रह करे उन्हीं का नाम काला, लुटेरा, गुलामादि का रहो, आय्य का नहीं।

[पृष्ठ १६-प्रश्नोत्तर १००] पहिले कहने वाला "परमात्मा जयित" कहे श्रीर उत्तर देने वाला "जयित परमात्मा" कहे ।

[समीचा] यह कल्पना वेदादि शास्त्रों से विरुद्ध होने के कारण सर्वथा मिथ्या ही जान पड़ती है क्यों कि "नमस्ते रुद्ध मन्यवे०। नमो ज्येष्ठाय च किनष्ठाय च नमः" इत्यादि यजुर्वेद वचन "परमिष्म्यो नमः" "नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो" इत्यादि उपनिषद् वचन, इनसे निश्चित यही सिद्धौं होता है कि परस्पर सत्कारार्थ (नमस्ते) शब्द से व्यवहार करने में वेदादि सत्य शास्त्रों का प्रमाण है खोर परस्पर खर्थ भी यथावत् घट जाता है जैसे (ते) तुभ्यं वा तव खर्थात् जिस को मान्य देता है उस का वाची है खोर (नमः) शब्द नम्रार्थ वाचक होने से नमस्कार कर्ता का बोधक है मैं तुम कू नमता हूं खर्थात् (ते) ख्राप वा तेरा मान्य वा सत्कार करता हूं। इस में नमस्कर्ण खोर नमस्करणीय दोनों का परस्पर प्रसंग प्रकाशित होता है खौर यही खमित्राय दोनों का है कि दोनों प्रसन्न रहें खोर जो असंबद्ध

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

प्रलाप अर्थात् तीसरे परमेश्वर का प्रसंग लाना है सो व्यर्थ ही है। जैसे "आम्रान्पृष्टः कोविदारानाचष्टे" किसी ने किसी से पूछा कि आम्र के वृत्त कीन से हैं उसने उसे उत्तर दिया कि यह कचनार के वृत्त हैं, क्या ऐसी ही यह बात नहीं है ? किसी ने ईश्वर का प्रश्न पूछा ही नहीं खौर न कोई परस्पर सत्कार के व्यवहार में ईश्वर प्रसंग है श्रीर कह देना कि (परमात्मा सारे उत्कर्षों के साथ विराजमान है) यह वचन हठयुक्त का नहीं है तो और क्या है ? हां जहां परमात्मा की स्तुति प्रार्थना उपासना उपदेश और व्याख्या करने का प्रसंग हो तो वहां परमात्मा के नाम का उचारण करना सब को उचित है। जैसा राम राम. जय गोपाल, जय श्रीकृष्णादि शब्दों से परस्पर व्यवहार करना यह हठ दुराग्रह से सम्प्रदाई लोगों ने वेदादि शास्त्रविरुद्ध मनमानी व्यर्थ कल्पना की है, उसी प्रकार से मुंशी इन्द्रमिए जी वा ला० जगन्नाथ-दास जी की युक्ति और प्रमाण से शून्य यह कल्पना दृष्टि पड़ती है। इन विषयों में मुंशी इन्द्रमणि जी श्रीर स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी का सम्वाद भी पूर्व समय में हो चुका है। परन्तु मुंशी जी कव मानते हैं। विशेष क्या लिखें, शोक है कि लाला जगन्नाथदास की करतूतों को विचार अब समको यह कहना पड़ा कि इन दोनों महात्माओं वे प्रतिज्ञा से विरुद्ध करना आदि अन्यथा व्यवहारों को जो कोई सज्जन पुरुष जानना चाहै वे आर्थ्य समाज मेरठ लाला रामसरनदासादि भद्र पुरुषों से पूछ देखें कि एक अन्य मार्गियों के विवाद विषय की शान्ति कारक व्यवहार प्रसंग में इन्होंने कैसा २ विपरीत व्यवहार किया, जिस को सब जानकार आर्थ्य लोग जानते हैं। सत्य यह बात चली आती है कि "सब पार्पों का पाप लोभ है?" जो कोई उसी तृष्णारू पी नदी प्रवाह में बहे जाते हैं उन में पवित्र वेदोक आर्थ्य धर्मा की स्थिरता होनी कठिन है। अब जो मुन्शी इन्द्रमण् जी और उनके चेले लाला जगन्नाथदास, स्वामी जी और भद्र आय्यों की व्यर्थ निन्दा करें तो इसमें क्या आश्चर्य है ? पाठक गण ! ठीक भी तो है जब जैसे में वैसा मिले फिर क्या न्यूनता रहै। जैसे दावानल अग्नि का सहायक वायु होता है वैसे ही इन के श्री मुन्शी बखतावर सिंह जी सहायकारी बन बैठे। श्रव तो जितनी निन्दा आर्थ लोगों और स्वामीं की करें उतनी ही थोड़ी। चलो भाई यह भी अच्छी मंडली जुड़ी, महाशयो ! जब तक तुम्हारा पेट न भरे तब तक निन्दा करने में कसर न रखना, क्यों कि यह अवसर अच्छा मिला है। जैसे किसी कवि ने यह स्रोक कहा है सो बहुत ठीक है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि चा स्तुवन्तु छक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् । अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलंति पदं न धीराः ॥१॥

चाहें कोई अपने मतलब की नीति में चतुर निन्दा करे वा स्तुति करें, चाहै लक्ष्मी प्राप्त हो वा चली जाओ, चाहे मरण आज ही हो वा वर्षान्तरों में, परन्तु जो धीर पुरुष महाशय महात्मा आप्तजन हैं वे धम्मी मार्ग से एक पाद भी विरुद्ध अर्थात् अधर्म मार्ग में नहीं चलते हैं।।१॥

सभ्य गणो ! यह तो आर्थों की शुभेचा का कारण हैं, परन्तु जो प्रथम उत्तमाचरण करके पश्चात् गड़ बड़ा जायं वे ही तो आर्थावर्त के हानिकारक होते हैं। परन्तु यह सदा ध्यान में रखना चाहिये कि "श्रेयांसि बहुविझानि" जो इस सनातन वेदोक्त सत्य धर्म का आचरण करते हैं उस में अनेक विझ क्यों न होय, तदिप इस सत्य मार्ग से चलायमान न होना चाहिये। सर्वशक्तिमान जगदीश्वर परमात्मा अपनी कृपा दृष्टि से इन विझों को हम से और हम को इन से सर्वदा दूर रख कर

१. श्रर्थात् मुंशी इन्द्रमणि श्रीर लाला जगन्नाथदास ।

हम से आर्यावर्त की उन्नति कराने में सहायक रहै। इस थोड़े से लेख से सज्जन पुरुष बहुत सा जान लेंगे। अलमितिविरतरेण बुद्धिमद्वर्येषु॥

एक उचित वक्ता

[6]

पत्र (३६१) श्रो३म<sup>१</sup>

[8\$8]

श्री स्वस्ति श्री परोपकारित्रय सद्गुण्विभूषित महाशय बाबू रूपसिंहाभिधेयेषु रामानन्द्र ब्रह्मचारिणो शतधाऽऽशिषो भूयासुस्तमां, शमिहास्ति तत्र भवदीयं च नित्यमेधमानमाशासे ।

महाशय ! नमस्ते । आप का शुभ समाचारों से अलंकृत अनुप्रह पत्र (मालवा नवाब का जावरा) में सुशोभित हुआ। अवलोकन कर अतीव हर्षित हुआ। परमात्मा से सर्वदा यही प्रार्थन करता है कि आप महाशय पुरुषों की बुद्धि को परोपकार के करने में निरन्तर नियुक्त किया करे, जिस से पुनः यह आर्यावर्त्त देश अपनी पूर्वद्शा को सम्प्राप्त होकर अपने मनुष्यक्रपी वृत्त में धर्म अर्थ काम श्रीर मोच रूपी चतुष्ट्रंय फलों से संयुक्त होकर परमानन्द भोगे। धन्य है श्राप के पिता जी को जिन महाशय की ऐसी विशाल बुद्धि कि जो इस महोपकारक गोरचार्थ विषय को श्रवण कर अति हर्षित हुए श्रीर श्राप को उत्साही किया। परमात्मा करे ऐसे ही पिता सब के होवें। श्रीर श्राप मेरा मान्य पूर्वक आशीर्वाद भी विदित की जियेगा। मैं नाम से विदित नहीं हूं, परन्तु उनकी ऐसी योग्यता के जानने से मुफ्त को अति आनन्द हुआ और ऐसे परोपकार प्रियों के नाम से विदित होने की भी चेष्टा हुई। आशा है कि आप विदित कर देंगे। दूसरा यह हुई हुआ कि अब आप का उद्घाह होने वाला है श्रीर त्रापकी योग्यता भी हुई श्रत्युत्तम है। श्राप शसन्नता के साथ श्रपना विवाह कीजिये। श्राप बहुत सारी बातें जानते भी हैं। तथापि मेरा मन नहीं मानता, इस कारं ए लिखता हूं। देखिए मूल कारण त्रार्थि । वर्त्त के सुधार होने का उचित समय पर विवाह का होना और सत्योपदेश । गृहाश्रम केवल भोग विलास के अर्थ नहीं, किन्तु संसार की उन्नति के अर्थ है। अर्थात संस्कारविधि के अनुसार विवाहाऽनन्तर उचित समय पर क्रिया करना। इस आश्रम का मुख्य फल यही है कि सुन्दरः धीर, वीर, विद्यादि शुभ गुण युक्त पुत्र रूपी फल की प्राप्ति होना। विना विधि के सांगोपांग कोई भी कार्य्य सिद्ध नहीं होता। इस लिये उचित समय पर जो आप को जिज्ञासा हो पत्र द्वारा विदित करना। में (श्रीयत परम पुज्य गुरु जी) से पूछ कर आप को विदित करूंगा, वैसा ही करना होगा। आप विवाह किये के पश्चात इस महोपकारार्थ पंजाव हाथा और काश्मीर आदि राजधानियों में जा गोरक्षा के विषय में (गोकरुणानिधि) के अनुसार ब्याख्यान देकर सही करावें तो क्या ही अत्यत्तम बात होवे कि जिसकी उपमा भी मैं देने में असमर्थ हूं। परन्तु इतना तो कह सकता हूं कि थोड़े ही श्रम से महापुष्य का संचय कर अपने मनुष्य जन्म को सफल कर लोगे। जो तुम ने सही करा के भेजी थी वह हमारे पास मुम्बई में पहुंचीं। श्रव जिन २ मनुष्यों की सही कराई जाय, वह प्रायः देवनागरी के अचरों में होनी चाहिए। और स्पष्ट अचर जिससे स्पष्टता से नाम बंच जावे, परन्तु जो पुरुष श्रप[ना] नाम किसी विद्या में न लिख सके उसका नाम सही कराने वाला पुरुष उसकी

१. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्त है।

सम्मति से लिख दे और एक बही के समान पत्रों को बना कर उस में सब गोरचाप्रिय मनुष्यों की सही करानी। पश्चात् उस ग्राम वा नगर में जो माननीय प्रतिष्ठित पुरुष हो उससे हस्ता द्वार गवाही के समान सही कराने के पत्र पर इस प्रका[र क]राना कि (हमारे यहां इतने मनुष्यों की सही हुई। पश्चात् अपना नाम लिख दे) यह रीति पीछे से श्री स्वामी जी ने प्रकट की है। इस प्रकार के लेख से किन्ही को राजसम्बन्धी भय न होगा। यह डरपुकर्नों के लिए है। मुख्य तो विज्ञापनपत्र के श्रवसार सही कराना। गोरचार्थ श्राजकल भारतिमत्र कलकत्ता ने पत्र छपवा के सही करा रहा है। मुंबई के लोगों ने भी बहुत सी सही कर ली श्रीर बराबर कराने जाते हैं श्रीर गुजरात श्रादि देशों में भी सही होती है। चौर स्वामी[जी] के पास मेवाड़ महाराजाधिराज नाहरसिंह जी ने ४०००[०] इतने हजार मनुष्यों की श्रोर से सही कर के भेज दी है। श्रीर मध्य देश में भी बहुत सी सही हो गई। प्रति दिवस होती जाती है। इस महोपकारक काम में डाक बालों ने दुष्टता बहुत सी की है?। क्योंकि बहुत से स्थानों को पत्र भेजे, परन्तु उन के पत्र श्राने से यह विदित हुआ कि उनके पास नहीं पहुंचे । देखिए आश्चर्य की बात है [(लाला रामशरणदास मेरठ के पास) ३०० पत्र रजिष्ट्ररी करा के भेजे थे इतने पर भी उनके पास न पहुंचे,पुनः उनके पास ५० पत्र भेजे हैं । परमात्मा कृपा करे कि ऐसे २ विव्रकारी राक्षसों से बचा कर इस महोपकारक कार्य की सिद्धि करने में आर्थ भाइयों को सहायता देकर इस कार्य्य की सिद्धिं करावे। किमधिकलेखेन परोपकारित्रयेषु। आज वा कल गुरु जी उदयपुर पधारेंगे।

रामानन्द ब्रह्मचारी

ता० २४ जुलाई १८८२ ई०४।

मालवा जावरा नवाब का

[33]

पत्र (३६२)

[833]

(अ)३म)

लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो ।

विदित हो कि प्रथम तो तुम लिखते थे कि शीघ्र (श्रार्थ प्रश्नोत्तरी) के विस्तारपूर्वक प्रत्युत्तर लिख के मेज दीजिये। जब मेज दिये तो श्रव कहते हो कि कानून बनकर आवे तो छापें। छपाने में विलम्ब करना अच्छा नहीं। जो उसमें कोई शब्द निकालने योग्य हो निकाल दीजिये। परन्तु जो २ उनके अभिप्राय के शब्द हैं उनमें कुछ न्वूनाधिक न करना॥

- १. पूर्ण संख्या ३८८ पृष्ठ ३१४।
- २. इस बात का संकेत कई पत्रों में है । बुद्धिमान् पाठकों को इस का रहस्य समम्तना चाहिये।
- ३. इतना पाठ पत्र में काट दिया गया है।
- ४. प्रथम श्रावण शुक्ल ६, सोम, सं० १६३६ । यु॰ मी० ।
- प्र. मूल पत्र त्रार्थसमाज फरुखाबाद ने सुरिच्चत है । म॰ मामराज जी ने जनवरी सन् १६२७ में प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पृष्ठ १६६ पर भी छुपा है।

पत्र (३६४)

कल हम ( मालवा नवाब के जावरा से चितोड़गढ़ ) में आ पहुंचे । यहां के हाकिम ठाकर जगन्नाथ जी ने हमारे लिये यथायोग्य प्रबन्ध किया है। अब दो एक दिन में उदयपुर जायंगे।

अनुमान है कि चातुर्मास वहीं होगा ।। ता॰ २६ जुलाई सन १८८२ ई०२।

[द्यानन्द सरस्वती] (चितोड़ गढ़ मेवाड़)

[६]

पत्र-सूचना (३६३)

[833]

[मुम्नालाल जी, मन्त्री त्रा० स० त्रजमेर] त्रार्थ प्रश्नोत्तरी के उत्तर देशिहतैषी में छापने के विषय में उ १४ त्रगस्त १८८२४ ।

[20]

पत्र (३६४)

[8\$8]

श्रो३म्

लाला कालीचरण रामचरण जी श्रानन्दित रहो ।

विदित हो कि आज ४ वा ५ दिन व्यतीत हुए हैं, हम उदयपुर में आके नौलखा वाग के महल में उहरे हैं । यहां सब प्रकार आनंद मंगल है। बहुत दिन हो गये हैं, अभी तक "आर्थ प्रश्नोत्तरी" के उत्तर नहीं छपवाये, क्या कारण है। जो प्रेस एक्ट की शंका हो तो देखत पत्र के पिंडत मुन्नालाल मन्त्री आर्थसमाज अजमेर के पास भेज दीजिये। वे छाप देंगे। इस विषय में पत्र भी आज उन के पास भेज दिया है। जो छप चुकी हो तो शीघ विदित करो।

श्रीर गोरक्षार्थ कितनी सही हो चुकी । इस का भी उत्तर लिखना। इस समय (श्रार्थ भाषा के) राजकार्थ में प्रवृत्त होने के अर्थ जो मोमरियल छपे हैं असे शीघ्र भेजना। श्रीर आप लोग

२. प्रथम श्रावरा शुक्त ११ बुध, सं० १६३६ । यु० मी०।

३. इस पत्र की सुचना अगले पूर्ण संख्या ४३४ के पत्र में है। यु॰ मी॰।

४. द्वितीय श्रावण शुक्ल १ सोम, सं० १९३९ । यु० मी० ।

५. मूल पत्र श्रार्थसमाज फरुखाबाद में सुरह्मित है। जनवरी सन् १६२७ में म॰ मामराज जी ने उसकी प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पृष्ठ १६७ पर भी छुपा है।

६. पत्र १४ ग्रगस्त १८८२ का है, ग्रतः स्वामी जी लगमग १० ग्रगस्त को उदयपुर पहुँचे

होंगे। यु॰ मी॰।
७. ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से आर्य भाषा को राजकार्य में प्रवृत्त कराने के हेतु अनेक स्थानों से ७. ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से आर्य भाषा को राजकार्य में प्रवृत्त कराने के हेतु अनेक स्थानों से मेमोरियल मेजे गये थे। उन में से नमूने के रूप में आर्य समाज मेरठ द्वारा प्रेषित मेमोरियल की प्रतिलिपि हम परिशिष्ट में छाप रहें हैं। यु॰ मी॰।

१. यह ब्रान्तिम पंक्ति पं॰ लेखराम संपा॰ जीवन चरित पृष्ठ ५५६ पर उद्घृत है। हम ने मूल पत्र से इसे छापा है।

भी जहाँ तक हो सके गोरक्षार्थ सही और आर्यभाषा के राजकार्य में प्रवत्त होने के अर्थ शीघ प्रयत की जिये । श्रीर फर्रुखाबाद के श्रार्थसमाज तथा पाठशाला का जैसा वर्तमान हो लिखना । श्रीर हैंम भी जो कुछ विशेष यहां का समाचार लिखने योग्य होगा लिखेंगे। १४ बगस्त सन् १८८२ ई० [दयानन्द सरस्वती] (उदयपुर)

[3]

पत्र (३६५)

[836]

स्वस्ति श्रीमद्वर सद्गुण समूहालंकृतेभ्यो राजराजाऽधि श्रीयुत नाहरसिंहवर्मभ्यो द्यानन्द-सरत्वती-स्वामिन त्राशिषो भूयासुस्तमां शमिहास्ति तत्र भवदीयं च नित्यमेधमानमाशासे । उदन्त नृगिरा वेदितन्यः । विदित हो कि अब हम परमात्मा की कृपा से उदयपुर में पहुंच कर नौलखा बाग के राजमन्दिर में निवाश किया है। श्रीर एक दिन श्रीयुत श्रार्थ्यकुल-दिवाकर भी सुशोभित हुए थे। कोई एक दो कला पर्यन्त अच्छे २ विषयों में चर्चा भी हुई थी। और पश्चात् जो २ लिखने योग्य वर्तमान होगा वह श्रीमान् के निवेदन किया जावेगा

श्रीमान् अपने कुशल समाचारों को विदित किया करें। प्रथम तो श्रीमान महाशयों ने करुणा पूर्वक ४०००० हजार पुरुषों की श्रोर से हस्ताक्षर कर पत्र मम्बापुरी में हमारे पास भेजा था, परन्तु अब इस विषय में श्रीमानों के प्रबन्ध से कितनी सही हुई है। जो भवान सहश महाशय इन महोपकारक माता पिता के समान संसार के रचक करुणापात्र गायादि पशुत्रों के दुःख निवारणार्थ प्रयत्न किया है वा करते जाते हैं, वह अवश्य सफन होकर इस आर्यावत्त की औषधि रूप होकर सब आयों के हृद्य की अग्नि को शान्त करेगा।

किमधिकलेखेन श्रीमद्राजाधिराजबुद्धिमद्विचच्चग्रेषु श्रलमिति ॥ श्रावण<sup>3</sup> शुक्त १ मंगल संवत् १९३९४। (खदयपुर)

nis pir tie linen rie is for est-[9]

पत्र (३६६) श्रो३म्

838

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी त्रानंदित रहो।

विदित हो कि हम मुम्बई से चलकर ठहरते ठहराते श्रव उदयपुर में पहुंच कर नौलखा बागे के राजमहल में निवास किया है। एक दिन श्रीयुत आर्य्यकुलदिवांकर श्री महाराएा जी पद्मीरे

- १. द्वितीय श्रावण् ग्रु० १ सोम, सं० १६३६ । यु० मी० ।
- २. मूल पत्र राजकार्यालय शाहपुरा में सुरिच्त है।
- ३. यह द्वितीय श्रावण है। शुक्ल १ को सोमवार था। क्या प्रतिलिपि करने वाले ने २ को १ तो नहीं पढ़ा। . ..४. १५ ग्रगस्त १८८२।
- ५. पहले हम ने इस पत्र का लगभग आधा उत्तरभाग बंगाली बाबू श्री देवेन्द्रनाथ के संग्रह से श्री पं वासीराम जी की कृपा से मा मामराज द्वारा अक्टूबर १९२६ में प्राप्त किया था। वह पुरानी संख्या १७३

श्रच्छे विषयों में वार्चालाप हुआ। श्रोर राजपुरुष प्रतिदिन श्राया जाया करते हैं। यथायोग्य प्रश्नोत्तर भी होते हैं। जो श्रागे विशेष वर्तमान लिखने योग्य होगा विदित करेंगे। श्राशा है कि श्राप श्रपना कुशल होम का भी समाचार लिखेंगे।

वहें श्राश्चर्य का विषय है कि पुकारते तो हैं हमारी उन्नति हो, परन्तु उन्नतिकारक विषय जब श्रा पड़ता है तब ऐसे निरुत्साही श्रौर भयातुर होकर चुपचाप बैठ रहते हैं। क्या ऐसी ही बातों से उन्नति होने कि श्राशा करते हैं। देखिये लाला कालीचरण जी ने प्रथम चिट्टी पर चिट्टी भेजीं श्रौर बड़ी शीघता के साथ लिखा कि ( मुरादाबाद वाले जगन्नाथ निर्मित प्रश्नोचरी के ) विस्तारपूर्वक उत्तर प्रमाणों के साथ भेजिये। जब हमने वेदभाष्य के काम को छोड़ प्रमाण सिहत उत्तर लिख रजष्टरी कराके भेज दिये श्रौर उसके साथ एक पत्र भी भेजा कि शीघ छपवा कर प्रसिद्ध कर देशों। उस शीघता का फल यह हुआ कि अब दो महीने ज्यतीत हुए एक श्रचर भी नहीं छपवाया। लिखा कि प्रश एकट होने वाला है। उसको देख पश्चात् छपवाचें। यह इनको केवल किसी के बहकाने से श्रम मात्र हुआ है। क्योंकि जो ऐसा होता तो भारतिमत्रादि पत्रों में श्रवश्य छपता। श्रथवा श्रम्य मनुष्यों के हारा भी मुनने में श्राता। सो केवल प्रश एकट के श्रम होने से डर गये हैं। मला ऐसे २ सद्यः कर्षाच्य कमों के करने में श्रम मात्र से डरकर निरुत्साही हो जाना श्रवनित का कारण नहीं तो क्या है। इसलिये—

श्राप उस प्रश्नोत्तरी के उत्तरों को ले के पण्डित मुझालाल मन्त्री आर्प्यसमाज अजमेर के पांस देखत पत्र के मेज दीजिये। अथवा जो अगले भारतसुदशाप्रवर्तक के श्रंक में छपने का प्रारम्भ हो गया हो तो कुछ चिन्ता नहीं। दूसरी श्रातिशोक करने की यह बात है कि श्राज कल सर्वत्र अपनी आर्यभाषा के राजकार्य में प्रवृत्ति होने के अर्थ (भाषा के प्रचारार्थ जो कमीशन हुआ है) उसमें पंजाब हाथा आदि से मेमोरीयल भेजे गये हैं। परन्तु मध्यप्रान्त फर्रुखाबाद, कानपुर, बनारस श्रादि स्थानों से नहीं मेजे गये। ऐसा ज्ञात हुआ है। और गत दिवस नैनीताल की सभा की श्रोर से एक इसी विषय में पत्र श्राया था। उसके श्रवलोकन से निश्चच हुआ कि पश्चिमोत्तर देश से मेमोरियल नहीं गये। और हम को लिखा है कि श्राप इस विषय में प्रयत्न कीजिये। अब कहिये हम अकेले सर्वत्र कैसे घूम सकते हैं। जो यही एक काम हो तो कुछ चिन्ता नहीं। इस लिये आप को श्रात उचित है कि मध्यदेश में सर्वत्र पत्र मेज कर बनारस आदि स्थानों से और जहां २ परिचय हो सब नगर वा ग्रामों से मेमोरियल भिजवाइये। यह काम एक के करने का नहीं। और अवसर चूके वह अवसर आना दुर्छभ है। जो यह कार्थ सिद्ध हुआ तो आशा है कि मुख्य मुखार की एक नीव पड़ जावेगी। श्राप स्वयं चुद्धिमान हैं। इस लिये विशेष

के अन्तर्गत छापा गया था। फिर ला॰ मामराज फरूखाबाद से सन् १६२७ में मूल पत्र की प्रतिलिपि लाये। तब पहला अमुद्रित भाग संख्या २२८ के अन्तर्गत छापा गया। अब सारा पत्र मूल से मिला कर यहां छापा गया है। मूल पत्र फरूखाबाद आर्थसमाज में मुरिक्त है। फरूखाबाद का इतिहास पृ० २१६ से २१८ पर किंचित शब्दमेद के साथ छुपा है।

लिखना आवश्यक नहीं। और गोरक्षार्थ कितनी सही हुई है। इस विषय में ध्यान देना अवश्य है। बड़े हर्ष के ये दोनों विषय प्रकाशित हुए हैं। इस लिये जहां लों हो सके तन मन धन से सब आयों को अति बचित है इन दोनों कार्यों के सिद्ध करने में प्रयत्न करें। वारंवार ऐसा ही निश्चय होता है कि ये दो सौभाग्यकारक श्रंकुर आयों के कल्याणार्थ खगे हैं। अब हाथ पसार न लेवे तो इस से दौर्भाग्य [की] दूसरी क्या बात होगी। अलमितिवस्तरेण बुद्धिमद्वर्थेषु। लाला निभेयराम से हमारा आशीर्वाद कहियेगा।

शुद्ध श्रावण शुक्त ३ बृहस्पति सम्वत् १९३९ ।

[ दयानन्द सरस्वती ] ( उदयपुर )

[28]

पत्र (३६७)

[830]

(श्रो३म्))

लाला कालीचरण रामचरण जी आनिन्दत रहो<sup>२</sup>।

विदित रहो कि पत्र तुम्हारा आया। समाचार माल्म हुआ। तुम ने 'आर्य प्रश्नोत्तरी' के उत्तर अजमेर पण्डित मुनालाल जी के पास भेज दिये। अच्छा किया। अब वे जीव्र छाप डालेंगे। विद्यार्थियों को निम्न लेखानुसार प्रन्थ पढ़ना पढ़ाना चाहिये। कि प्रथम क्रम से वेदाङ्गप्रकाश पढ़वाना। फिर वैदिक निघएड। फिर पिङ्गल सूत्र। पश्चात् काव्य की रीति से मनुस्मित। इत्यादि प्रन्थ जब पढ़ चुकें तब आगे पूछना। और हम यहां आनन्द मंगल में हैं। आशा है कि परमेश्वर की छुपा से तुम भी कुशल युक्त होगे। सब से हमारा आशीर्वाद कह देना। द्वितीय आवण शुदी १० गुक संवत् १९३९ ।

[द्यानन्द सरस्वती] [राज मेवाड़ उद्यपुर]

१. शुद्ध श्रावण शुक्क श्रर्थात् द्वितीय श्रावण का शुक्ल पद्म । उत्तर भारतीय पञ्चाङ्गों की यह रीति है कि जिस वर्ष जो मास श्रिधक होता है उसे शुद्ध मास के कृष्ण पद्म के बाद में गिनते हैं । श्रर्थात् प्रथम शुद्ध मास का कृष्ण पद्म, तदनन्तर श्रिधक मास का शुक्ल पद्म, तदनन्तर श्रिधक मास का शुक्ल पद्म, तदनन्तर श्रिधक मास का शुक्ल पद्म। तदनुसार १७ श्राम्त सं० १८८२ को यह पत्र लिखा गया। यु० मी०।

२. मूल पत्र आर्थ स० फरुखाबाद में सुरिच्चत है। दिसम्बर सन् १६२६ में म० मामराज ने इस की प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पु० २०० पर भी छपा है।

३. ता० २४ श्रगस्त १८८२।

**उदयपुर, सं० १९३९**]

पत्र (३७१)

३५७

[8]

पत्र (३६८) श्रो३म्° [8\$6]

श्रीयुत परिडत गोपालराव जी स्नानन्दित रहो।

विदित हो कि गोरक्षार्थ इस्ताक्षर पत्र के सिहत आप का कुशल पत्र पहुंचा। पत्रस्थ समाचार के अवलोकन करने से अत्यन्त हर्ष हुआ। यहआप ने सर्वोपकारक धन्यवादाई पुरुषार्थ किया। परमात्मा दिन प्रति ऐसे ही कर्मों के सिद्ध करने में उत्साही करे। आशा है कि आर्यभाषा के प्रचारार्थ भी आप स्वपुरुषार्थ की प्रकटता करेंगे। हम उदयपुर पहुंच कर नौलखा बाग के राज महलों में ठहरे हैं। एक वार श्रीयुत आर्यकुल दिवाकर श्री महाराणा साहव पधारे। परस्पर प्रेम प्रीति के साथ समागम हुआ। जैसा उन का नाम है वैसे ही गुण भी देखे। इत्यादि । द्वितीय श्रावण [शुदी] १२ शनि सम्वत् १९३९ ।

(दयानन्द सरस्वती)

[4]

पत्र-सूचना (३६९)

[836]

श्री राव बहादुरसिंह जी मसूदा। दुतीक श्रावण शुदी १२ [जदयपुर<sup>४</sup>]।

[3]

पत्र-सूचना (३७०)

[880]

[छगनलाल मसूदा]।

····· महाराज गजसिंह जी श्रौर उनके माई भी व्याख्यान में श्राये<sup>५</sup>।

[8]

पत्र-सारांश (३७१)

[888]

[ भीमसेन ]

हम अपने पास तुम को २२) नकद और अम्र वस्त्र भी दिया करेंगे । और छुट्टी में भी

खतना ही मासिक दे दिया जावेगा ।

१ दयानन्द दिग्विजयार्कं तृतीय खरड पृष्ठ ७६ से उद्घृत । फरुखाबाद का इतिहास पृष्ठ २०० पर भी छपा है।

२. पत्र पूर्ण संख्या ४३५ के अनुसार १५ अगस्त तक महाराणा जी एक बार ही आए । और पुनः २६ तक नहीं मिले । २६ को मिले, देखो पत्र पूर्ण संख्या ४४२ ।

३. २६ श्रगस्त १८८२। यु॰ मी॰।

४. पत्र के संकेत के लिये पं० चमूपति संपा० पत्रव्यवहार प्० ७७ देखों।

४. राव बहादुरसिंह जी मसूदा ने अपने पत्र में पं॰ छगनलाल मसूदा के नाम आए पत्र में से यह यंक्ति लिखी है। इस पत्र की तिथि पिछले पत्र की तिथि ही अर्थात् द्वितीय आवण सुदी १२ होगी। ६. यह सारांश पूर्ण संख्या ४४२ में निर्दिष्ट है। तिथि अज्ञात है। यु॰ मी॰।

## ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञापन

[३६]

## पत्र (३७२)

[885]

प्रवन्ध-कर्ता मुन्शी समर्थदान जी श्रानन्दित रही? !

विदित हो कि ऋग्वेद के दो पृष्ठ हमने भेज दिये, पहुँचे होंगे। श्रीर यजुर्वेद के भी भेजे हैं। आज सत्यार्थप्रकाश के शुद्ध कर के ५ पृष्ठ भूमिका के और ३२ पृष्ठ प्रथम समुद्धास से भेजे हैं, पहुँचेंगे। भीमसेन के पास हमने पत्र भेज दिया और यह लिख दिया कि हम अपने पास तुमको २२) नगद श्रीर अन्न वस्त्र भी दिया करेंगे। श्रीर छुट्टी में भी उतना ही मासिक दे दिया जायगा। उसका स्वभाव है कि जब तक रुपये पास रहेंगे तब तक ऐसा ही करेगा। तुम भी उस को पत्र लिख देना, शीघ चला श्रावे।

वहां क्या ज्वालादत्त एक फार्म के लिये भी तैयार नहीं कर सकता। वह वड़ा लिखने वाला है। ये दोनों एक से ही हैं। जैसा भूतनाथ वैसा प्रेतनाथ। इन से चतुराई के साथ काम लेना। ये काम-चोर हैं।

| निम्नलिखित | प्रमञ्जे | ਧਵੱਜੀ  |
|------------|----------|--------|
| · imener   | 34014    | पद्धपा |

| 3000     | 1871 |                     |     |
|----------|------|---------------------|-----|
| भूमिका   | 4    | स्त्रैणस्ता         | 2   |
| चांदापुर | २४   | वर्णी               | 2   |
| संध्या   | do   | गोकरू०              | yo  |
| व्यवहा०  | १०   | भूमि०               | રપૂ |
| संस्कृत  | 8    | श्रनु०              | રપૂ |
| संधि     | 8    | श्चार्यो०           | 89  |
| नामि     | 6    | शा <b>स्त्रा</b> ०२ | ર્પ |
| कारकी    | 8    | गोतम०3              | २५  |
| सामासि   | 9    |                     |     |

श्राज श्रीयुत महाराणा जी इस बाग में प्रातःकाल से पधारे हैं। श्रव सायंकल से रात्री के समय में वार्तालाप होगा। जो लिखने योग्य समाचार होगा सो लिखेंगे। यहां हम श्रानन्द मंगल में हैं। तुम वहां सब से श्रच्छी प्रकार काम लेना। श्राशा है तुम श्रच्छे प्रकार प्रवन्ध करोगे। श्रीर यन्त्रालयस्थों से श्राशीर्वाद कह देना।

भाद्र वदी १ मंगल सम्वत् १९३९४।

[दयानन्द सरस्वती] (राज मेत्राङ उदयपुर)

१. मूल पत्र परोपकारिणी सभा आजनेर में सुरिच्चत है। पहली तीन पंक्तियां Works of Maharshi Dayanand, पृ० १२६ पर भी छुपी हैं।

२. संभवतः शास्त्रार्थं जालन्धर । देखो पृष्ठ ३३० पर निर्दिष्ट 'जालन्धर की बहस' । यु० मी० ।

३. गोतम ब्राइल्या की कथा। इसके विषय में हमारा 'ऋ' द० के प्रन्थों का इतिहास' पृष्ठ १२८ देखें। यु॰ मी॰।
४. २६ ब्रागस्त १८८२।

**उद्यपुर**, सं० १९३९]

पत्र (३७३)

३५९

[\$ 9.]

पत्र (३७३)

[888]

श्रो३म्°

मुन्शी समर्थदान जी श्रानन्दित रहो।

विदित हो कि ३ सप्तंवर का लिखा हुआ अति लम्बायमान पत्र तुम्हारा पहुंचा । पत्रस्य समाचार मालूम हुये। टैपके विषय में हमने तुमको प्रथम ही लिखा था कि मंगवालो। परन्तु तुम्हारी इस प्रकार की सम्मति हुई थी कि यहां ढलवा लेंगे। अब तुम्हारी सम्मति यह है कि यहां नहीं बन सकते अस्तु। अब तुम मुम्बई और कलकत्ता से पत्र मेज कर ठीक २ भाव का निश्चय कर लो कि मुम्बई और कलकत्ते से कितना फेर पड़ता है। और जब मंगवाओ तब बहुत विचार से मंगवाना अर्थात् बाबू विशेश्वरसिंह पंडित देवीप्रसाद और कम्पोजीटरों से पूछ और आप स्वयं देख मार कर। फिर जिस २ प्रकार के जो २ अचर वा मात्रा और जिन अचरों का अपने यहां अधिक काम पड़ता है उन २ को मंगवा लेना। और जो कलकत्ते से मंगवाये जायेंगे तो अच्छा होगा। क्योंकि वहां से टैप मंगवाने में फूएडरी के सांचे भी बराबर काम में आवेंगे। और वहीं के सांचे अपने यन्त्रालय में हैं भी। इस विषय में पंडित जी की भी सम्मति कलकत्ते ही से मंगवाने की थी। प्रथम कलकत्ते से टैप मंगवाये थे। सो हम को खबर है कि कोई ४०) हपये और कोई ५०) हपये और कोई २ ६०) हपये के हिसाब से आये थे। सो उन में से अच्छे २ तो बखतावर चुरा ले गया। क्योंकि पीछे तोलने से ५८ मन टैप घटा था।

श्रव सत्यार्थप्रकाश छपेगा । इस लिये माषा के श्रचर श्रधिक मंगवाना चाहिये । सत्यार्थप्रकाश में संस्कृत पाठ के श्रचर माषा से कुछ थोड़े उन्नीस बीस होने चाहिये । श्राजकल जो मूलमन्त्रों वा पदों में श्रचर लगते हैं वे बिलकुल कुढंगे हैं । इस लिये श्रव दो तीन महीने का तो वेदभाष्य छपा रक्खा ही है । तब तक श्राख्यातिक छपवाश्रो । क्योंकि श्रागे वेदभाष्य उत्तम श्रचरों में छपना चाहिये । श्रोर जो तुम ने टैप ढालने वाले के विषय में लिखा, ठीक है । वह दश पांच मन टैप नहीं ढाल सक्ता । किन्तु श्रटके समय उस का सहायक मात्र है कि जिस से काम बंध न रहे । विशेष श्रचर वह तैय्यार नहीं कर सकता । श्रोर कितना सुर्मा पड़ना चाहिये यह भी उस को ठीक २ ज्ञान नहीं है । मुम्बई श्रीर कलकते के श्रचरों में कुछ बहुत भेद तो नहीं है । किन्तु सुम्बई के श्रचरों की ढाल श्रीर प्रकार की है श्रीर कलकत्ते की श्रीर प्रकार की । परन्तु कलकत्ते से मंगवाने में सुम्बई से दूना नहीं तो सवाया वा झ्योडा दाम श्रवश्य लगेगा । श्रागे जैसे तुम्हारी सम्मति हो । श्रीर जहां से मंगवाने में सोविता समको वहां से मंगवाना उचित है । परन्तु इस बात का प्रवन्ध शीघ करो । श्रपने यन्त्रालय के श्रचरों को चलते दो वर्ष हो गये हैं । इस लिये उन में श्रव कुछ फेर पड़ गया है । श्रीर जिन टैपों में श्राख्यातिक के कम्पोज में कम पड़ते हों उन को जल्दी ढलवा लो । श्रायंपत्र लहीर श्रीर देशहितैषी श्रजमेर जिस प्रकार का नोटिस वेदमाच्य के टाटल पेज पर छपने के लिये भेजें, वैसा एक बार छाप देना । श्रागे सब काम बुद्धिसत्ता के साथ करना, श्रोरों से करवाना ।

ता० ८ सिप्तंवर सन् १८८२ ईस्वी

[ द्यानन्द सरस्वती ]

भाद्र कृष्णा ११ शुक्रवार सं० १९३९

(खद्यपुर राज मेवाड़)

१. मूल पत्र परोपकारिग्री सभा अजमेर में सुरिच्त है।

3

## ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

[२२] पत्र (३७४)

[888]

प्रबन्धकर्ता मुन्शी समर्थदान त्रानन्दित रही । विदित हो कि ता० ४ सप्तम्बर लिखा हुआं पत्र तुम्हारा पहुँचा। समाचार ज्ञात हुये। टैप के विषय में एक पत्र आज भेज चुके रे। उसके अनुसार प्रबन्ध करना।

जो कहीं पद छूट जाता है यह भाषा बनाने वाले श्रीर शुद्ध लिखने वाले की भूल है । हम प्रायः इस बात में ध्यान नहीं देते, क्योंकि यह सहज बात है। श्रच्छा जहां कहीं रह जाया करे तुम देख लिया करो कि किस २ मंत्र में क्या २ छूटा। श्रीर यहां लिखके भेज दिया करो<sup>3</sup>।

ज्वालादत्त चाहें रात दिन काम करे, परन्तु तुम देख लिया करो कि कितना काम करता है कितना नहीं। इस को व्याकरण बनाने में देर इस लिये लगती है कि उस को व्याकरण का अभ्यास कम है। तभी बहुत सी पुरतकें रखनी पड़ती हैं— जो इस से आख्यातिक न बन सके तो यहां भेज दो। यहां भीमसेन आ जायगा, तब उससे बनवा कर शुद्ध करके भेज देंगे।

जिन अन्तों में वेदमाध्य की भाषा छपती है उसमें भाषा और जिन अन्तों में पदान्वय छपता है उन में संस्कृत का पाठ छपना चाहिये । और दो हजार कापी छपनी चाहियें । जहां २ उचित समझो वहां २ नोट देदेना । सत्यार्थप्रकाश अच्छे कागज और अच्छे टैप में छपवाना । जो इन अन्तों से पुस्तक न विगड़े तो छापने का छारम्भ करदो । और मुम्बई कलकत्ते के भाव ताउ का शीघ निश्चय करके जहां सोविता पड़े, माल अच्छा मिले और दाम कम लगे, वहां से मंगवा लेना। टैप के विना शीघ काम न चल सकेगा।

यहां कोई पांच सात बात चलाई हैं और स्वीकार भी करली है। परन्तु उनमें से अभी कोई सिद्ध नहीं हुई। इस लिये नहीं लिखा। जब उनमें से कोई भी बात सिद्ध हो जायगी, वह चाहें गुप्त हो वा प्रगट, परन्तु तुम को विदित कर देंगे। अभी तक महाराणा जो का विचार अच्छा है। आगे जैसा होगा विदित कर दिया जायगा।

पांच पत्र गोरहार्थ सही कराने के और पांच विज्ञापनपत्र भेजे हैं, पहुँचेंगे। न रहें तो वहीं छपा लेना। हमारे पास सही तो कई स्थानों से आई है, परन्तु संख्या हमने नहीं की। जब करेंगे तब लिखेंगे। यहां के कार्य सिद्ध हुये पश्चात् सब संख्या पूरी हो जायगी। कार्य सिद्ध चर्थ प्रयत्न कर रहे हैं। आशा है कि परमात्मा की कृपा से पूरे हो जायेंगे।

भाद्र वदी १२ सम्वत् १९३९५।

द्यानन्द सरस्वती उद्यपुर नौलखा बाग

१. मूल पत्र परोपकारिगी समा अजमेर में सुरिवृत है।

२. सम्भव है पूर्ण संख्या ४४३ (८ सितम्बर) वाला पत्र ही ६ सितम्बर को इस पत्र से पूर्व मेजा गया, क्योंकि उस में टाइप के विषय में विस्तार से लिखा है। यु॰ मी॰।

३. यहां तक का पाठ श्रार्यधर्मेन्द्र जीवन तृतीय संस्करण के पृ० ३७० पर छपा है। ४. श्रर्थात् सत्यार्थ प्रकाश का । यु० मी० । ५. ६ सितम्बर १८८२ ।

[88]

पत्र (३७५) श्रो३म<sup>१</sup>

[884]

प्रबन्धकर्ता मुनशी समर्थदान जी आनंदित रहो।

ता० १३ सितम्बर का लिखा हुआ पत्र तुम्हारा पहुँचा। समाचारज्ञात हुए। दो पत्र १ पूर्व तुम्हारे पास टैपादि के विषय में विस्तार पूर्वक लिख भेजे हैं, पहुँचे होगे। उन्हीं के अनुसार टैप आदि के विषय में शीघ्र प्रवन्ध करना।।

इस पत्र का उत्तर यह है कि जो हम प्रतिदिन एक कार्म के लिये शुद्ध करके भेजा करें तो आगे वेदमाध्यादि का काम सब बंध हो जाय। अब आगे बने नहीं तो पुनः छापने के लिये कहां से भेजा जाय। और तुम भी क्या छापो। अब ४ महीने का वेदमाध्य छपा रक्खा है। इसलिये इस टैप में वेदमाध्य आगे न छापना चाहिये। क्योंकि इस के मूल अच्चर बहुत बड़े और बेडोल के हैं। जब नया टैप आ जायगा तब वेदमाध्य को अच्छे अच्चों में छापा जायगा। हमारा विचार यह है कि प्रकाम वेदमाध्य के और प्रअन्य वेदाङ्गप्रकाशादि के १६ फार्म से कम अपने निज्ज पुस्तक न छपने चाहिये। और जो अधिक छापने की आवश्यकता हो शुद्धप्रति छापने के लिये यंत्रालय में उपस्थित हो उस समय एक २ फार्म भी प्रति दिन छप सकता है वा अधिक भी। क्योंकि अपना काम बढ़ाया जाय तो कुछ कम नहीं है। जो पिएडत सुन्दरलाल जी और तुन्हारी भी यही सम्मति है कि जो बाहर का काम यंत्रालय में लिया जाय तो अधिक यन्त्रालय को फाइदा हो सकता है और हानि किसी प्रकार से न होगी, तो मले ही बाहर का काम ले लो। कुछ चिन्ता नहीं। परन्तु जब हम बाहर के काम से निज पुस्तकों के छपने में वा कुछ और प्रकार से हानि होती देखेंगे तो उसी समय बाहर का काम बंध करा देंगे। इस बात में सर्वदा ध्यान रखना। और जो हम को निश्चय यह विदित हो जायगा कि बाहर के काम से यन्त्रालय को फाइदा पहुँचा और निज पुस्तकों के छपने में भी हानि न हुई देखेंगे तो दूसरे प्रेस का भी प्रवन्ध करने में यन्न किया जायगा। परन्तु किसी प्रकार की हानि होने पर नहीं।

तुम्हारे लिखने से निश्चय हुआ कि सातवें दिन आख्यातिक का एक फार्म वैयार होता है। इसका कारण मुख्य तो यह है कि ज्वालादत्त को व्याकरण का वोध कम हैं। और आख्यातिक प्रक्रिया भी कठिन है। इसलिये उससे यथावत न वन सकेगी। इसलिये आख्यातिक के पन्ने उससे लेकर यहां भेज दो। कल भीमसेन भी हमारे पास आ गया है। यहां शीघ उसको बनवा और शुद्ध करके तम्हारे पास भेज देंगे।

थोड़े दिनों के पश्चात् और सत्यार्थप्रकाश के पन्ने शुद्ध करके भेज देंगे । तुम सत्यार्थप्रकाश के छापने का खारम्भ कर दो। काम कभी बंध मत रखो। और दृटे फूटे खन्दरों को फुंडरी में ढलवा लो। काम बंध मत रखो। और सौवर तथा पारिभाषिक के भी पन्ने बनवा कर भेजे जायेंगे। खार्ट्यो० १ चादां० १ इन दो पुस्तकों के कम होने का कारण यह है कि न जाने तुम्हारे बांधने में कसर रही खथवा डाक में कुछ बिगाड़ हुआ। हमारे पास तो वहां खुला और पुस्तक दूटी फूटी होकर पहुंची। उसी समय गिनी तो दो कम हुई। ये किसी ने लेली होगी। और वेदान्तिध्वान्ति तुमने

१. मूल पत्र परोपकारिग्री सभा अजमेर में सुरिचत है।

२. सम्भवतः पूर्ण संख्या ४४३, ४४४ के । यु॰ मी॰ ।

३. श्रर्थात् पारसत्त । यु० म० ।

भेजी कव, जो रसीद भेजें। जो भेजा भी हो तो यहां नहीं पहुंचा। उसने नौकरी क्यों छोड़ी। क्या उसकी इच्छा नौकरी करने की नहीं थी। हम तो यह जानते हैं कि तुम्हारे नीचे एक दूसरा सहायक चाहिये, क्योंकि तुम कहीं विशेष कारण से गये आये तो वह काम कर सके। इसलिये तुम्हारी इच्छा हो तो किसी योग्य पुरुष को रखलो।

यहां श्री महाराणा जी प्रतिदिन मिलते और समागम करते हैं। और एक मौलवी से प्रश्नोत्तर प्रतिदिन होते हैं और वे लिखे भी जाते हैं सो तुम्हारे पास भेजेंगे। अभी महाराणा जी से दो एक बार एकान्त में गोरचार्थ सही आदि कराने के विषय में बातें चीतें हुई हैं। आशा है कि यह कार्य सिद्ध हो जायगा। इसके सिवाय जो और कोई बात होगी सो पीछे से लिखेंगे। इम सब प्रकार से ज्यानन्द मंगल से हैं।

[भाद्र शुदी (६ ?) सम्वत् १९३९२।]

उदयपुर दियानन्द सरस्वती

६

पत्र-सूचना (३७६)

४४६

पिं सुन्द्रलालजी, प्रयागी टाइप मंगाने की सम्मति दे दें । सं० १९३९ आश्विन वदी ६ चन्द्रवार ।

80

पत्र-सूचना (३७७)

880

[म्ंशी समर्थदान, प्रयाग] कुंवर जवाहरसिंह के २२॥) मीमसेन के मार्फत पहुँचने के विषय में ।

[88]

पत्र (३७८) श्रोम<sup>ध</sup>

886

मुन्शी समर्थंदान श्रानन्दित रहो।

विदित हो कि २१ सप्तम्बर का लिखा हुआ पत्र पहुँचा । समाचार ज्ञात हुए । हम तुम को इस विषय में कई बार लिख चुके हैं कि श्रमी वेदभाष्य की प्रति इस लिये नहीं भेजते कि वेदभाष्य के

- १. ये प्रश्नोत्तर स्रात्त्राः पं० लेखरामजी कृत जीवन चरित में छुपे हैं। यु० मी०।
- २. १८ सि॰ १८८२ । तिथि इमने ऋनुमान से लिखी है ।
- ३. इस की सूचना अपाली पूर्ण संख्या ४४८ के पत्र (पृष्ठ ३६३) में है। तथा आश्विन सुदी ३ सं० १६३६ (१५ अक्टूबर १८८२) पूर्ण संख्या ४५४ के पत्र (पृष्ठ ३६६) में भी इस का निर्देश है। यु॰ भी०।
  - ४. २ श्रक्टूबर १८८२। यु० मी०।
- प. इस की सूचना ब्राश्विन सुदी ३(१५ श्रक्टूबर सन् १८८२) पूर्ण संख्या ४५४ के पत्र (पृष्ठ ३६६) में है। यु० मी०। ६. मूल पत्र परोपकारिग्री सभा ब्राजमेर में सुरिच्चत है।

मृत मन्त्र तथा पद के श्रचर बेढंगे हैं। श्रीर भाषा के भी श्रचर घिस गये हैं। इस तिये बाहर के छापने के तिये हमने श्राज्ञा दे दी है। सो लेकर छापो। श्रीर उनसे रूपये तो। जब नये श्रचर श्रा जांय तब वेदभाष्य छापा जायगा।

हमने सीवर भेजा था सो छापते होगे। श्रीर कोई प्वा १० दिन में पारिभाषिक तैयार करा कर भेज देंगे। इस पत्र के साथ दूसरा पत्र भेजा है उस के पास विक्रिय पुस्तकों का सूचीपत्र भेज देना।

पत्र तुम्हारा दूसरा भी २९।९। पर समय का लिखा आया। हाल जाना । इस में दो बातें हैं। एक तो अच्चर मंगाने के लिये तुमने पं० सु० जी० की सम्मित विरुद्ध लिखी। सो आज हम भी एक पत्र उन को मेज देते हैं। वे तुमको सम्मित शीघ देवेंगे। तुम कलकत्ते में यहुनाथ बनर्जी को लिखो कि वे अच्चर भेज देंगे। पहिले ४०) रु० मन उनके यहां से पहिले आये थे। सो अब भी मिलेंगे। भाड़ा पृथक् लगेगा। और जितने मन अच्चरों की आवश्यकता हो और जो २ अच्चर जितने २ कम बढ़ चाहिये सो सब [लिखो।] उनके रुपये हम वहीं कलकत्ते में दिला देंगे। और सेवकलाल निर्भयराम को भी हम कागज के लिये लिख देंगे। और सत्यार्थप्रकाश के खपाने को हमारा तो यही विचार है कि नवीन टैप में छपे। जो आरम्भ न किया होय तो पीछे छापना। और आरम्भ कर भी दिया हो तो उस में संस्कृत के मूल वचन कुछ बड़े अच्चर में और भाषा छोटे में। तथा जो तुमको विचार पूर्वक नोट देना हो सो भी देते जाना।

संवत १९३९ आधिन बदी ६ चं०२।

[द्यानन्द सरस्वती] उद्यपुर

[88]

पत्र (३७१)

[886]

श्रो३मृ3

मुन्शी समर्थदान जी आनन्दित रहो ।

विदित हो कि पत्र तुम्हारा पहुंचा, समाचार झात हुये । परन्तु उसका उत्तर जो तुमने कागजात भेजे हैं उनके पहुंचे के पश्चात् भेजेंगे। सत्यार्थप्रकाशादि किसी पुस्तक में जो नोट लिखों हो उसमें किसी का नाम न लिखना। किन्तु टाइटल पेज के ऊपर तो तुम्हारा नाम रहना ही चाहिये। परन्तु प्रन्थ के नोट पर न रहना चाहिये । सरदार विष्णुसिंह जी मोहतमिम जंगलात उद्यपुर के

१. यह पद भूल से दो बार लिखा गया । यु॰ मी॰ ।

२. २ श्रकत्वर १८८२ सोमवार।

३. मूल पत्र परोपकारिग्री सभा अजमेर में सुरिक्त है। ४: सत्यार्थप्रकाश में नोट लिखने की स्वीकृति स्वामी जी ने पूर्ण संख्या ४४४ (प्०३६०) तथा ४४८ (पृष्ठ ३६३) में दी थी।

५. प्रतीत होता है कि जब सत्यार्थप्रकाश के छुपे फार्म श्री स्वामी जी के पास पहुचे तो उस में नोटों पर 'स॰ दा॰' ऐसा निर्देश देख कर श्री स्वामी जी ने समर्थदान को अपना नाम देने से रोक दिया। [इस लिए जहां जहां 'स॰ दा॰' छुप गया था, वहां वहां ऊपर से सादी चिप्पी चिपकाई गई थी। शताब्दी संस्करण से पुन: समर्थदान का नाम छुप रहा है। यह ऋषि दयानन्द की सम्मति के विरुद्ध है। यु॰मी॰]। ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

ि उदयपुर, सन् १८८२

३६४

पास आज तक का जितना दोनों वेदों का भाष्य आरम्भ से छपा है भेज दो और आगे को भी सदा भेजा करो। परन्तु भूमिका मत भेजना। क्योंकि वह यहां से लेली है और जैसा ऊपर लिखा है.......

[3]

पत्रांश (३८०)

[840]

पं० छगनलाल [मसूदा]

श्रीयुत महाराणा जी दूसरे तीसरे [दिन] समागम करते हैं। श्रीर उपदेश सुन कर बहुत से व्यसन श्रर्थात् दिन का सोना, रात्रि में न सोना, दिन चढ़े उठना इत्यादि बहुत बातें छोड़ दी हैं। श्रीर श्रच्छी २ बातों को प्रहण करते जाते हैं।

श्राधिन सु० ११ सं० १९३६। ७ श्रकतुबर ८२<sup>३</sup>।

**उदयपुर**४

[2]

कार्ड (३८१)

[808]

**छो३म्**५

सम्वत् १९३९ ऋाश्विन वदी १४ ।

महाशय बाबू रूपसिंह जी योग्य रामानन्द ब्रह्मचारी का नमस्ते विदित हो। सहाशय ! कई एक पत्र आप के पास विस्तार पूर्वक समाचार लिख के भेजे परन्तु प्रत्युत्तर एक का भी न मिला। इस में क्या कारण हुआ। अब पत्र देखते ही अपना विस्तार पूर्वक समाचार भेजना। श्रीयुत जगद्गुरु स्वामी जी महाराज उदयपुर में विराजमान हैं। श्रीयुत आर्थ्यकुल-दिवाकर महाराणा जी अत्यन्त प्रेम से आते हैं और उपदेश सुनकर बहुत हिर्षित होते हैं। कई एक बातों को छोड़दीं जो कि हानिकारक हैं। और कई एक बातों को छोड़दीं जो कि हानिकारक हैं। और कई एक बातें जो कि सर्व सुख दायक हैं उनको प्रहण कर ली हैं। आशा है श्री स्वामी जी के प्रताप से यह देश भी पिवत्र हो जायगा। गोरचार्थ यहां भी सही हो गई हैं। आशा है कि यहां के सम्बन्ध से अन्यत्र अर्थात् जोधपुराधीशों आदि राजाओं से हो जायगी। विशेष समाचार तुम्हारे पत्र आये के पश्चात् लिखूंगा।

(रामानन्द ब्रह्मचारी उदयपुर)

१. यहां से आगो का पत्र फटा हुआ है, अतः पूरा नहीं छप सका।

२. पं॰ लेखरामकृत जीवनचरीत पु॰ ५६४ पर इतना ऋंश उद्धृत है।

र सु० ११ लुप्त है। २२ या २३ अप्रकत्वर था। ७ अप्रकत्वर को आश्विन वदी ११ है। [ तथा पूर्ण संख्या ४५१ आश्विन बदी १४ के पत्र में भी इस पत्र की बातों का संकेत होने से] यही तिथि ठीक प्रतीत होती है। जीवनचरित में कुछ भूल हुई है।

४. पं० लेखरामकृत जीवनचरित में भूल से रायपुर छप गया है । रायपुर के स्थान में उदयपुर होना चाहिये। ५. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिच्चत है। ६. १० ग्रावटूबर १८८२।

७. इस से प्रतीत होता है कि पूर्ण संख्या ४३१ (२४ जुलाई) के ब्रानन्तर कुछ पत्र ब्रीर भेजे गये थे, वे प्राप्त नहीं हुए । यु॰ मी॰ ।

[५] पत्र-सूचना (३८२) [४५२] [सेवकलाल, बम्बई]

[संवकतात, बम्बई] कागज भेजने के सम्बन्ध में १।

[१] पत्र-सूचना (३८३) [४५३] [मास्टर प्राण्जीवनलाल कानदास वम्बई] सेवकलाल से पत्रों का उत्तर भिजवाने के विषय में । सं० १९३९ आश्विन सुदी ३ रवि<sup>3</sup>।

[४३] पत्र (३८४) [४५४] क्रोम्<sup>४</sup>

प्रवन्धकर्त्ता मुनशी समर्थदान जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि ७-१०-पर नम्बर १३०५ का पत्र आया। समाचार विदित हुए। हम तुम्हारे पत्र भेजने में कुछ भी विलम्ब नहीं करते। हमने बाहर के काम लेने के लिये तुम को पत्र द्वारा आज्ञा दे दी थी। उस बात को कोई एक मास हुआ होगा । तुमने कुछ भी नहीं लिखा कि अभी तक लिया वा नहीं। इसका उत्तर देना। जो एक फारम के अनुमान नित्यप्रति शोध कर तुम्हारे पास मेजा जाय तो यहां का सब काम अर्थात् वेदभाष्यादि का बनाना छुट जाय। प्रत्युत इस काम के लिये महाराणा आदि जी से कह दिया गया कि सन्ध्या समय आया करें। हम को कुछ भी अवकाश नहीं मिलता। अर्थात् प्रातःकाल से ११ वा १२ वजे तक वेदभाष्य बनाते हैं। पश्चात् अन्य काम शोधने आदि का। और वह काम ऐसा है कि बिना हमारे बन नहीं सकता। जो कहीं भाषा असंबध हो और अभिप्राय वा अच्चर मात्रा आदि से अशुद्ध हो उस को तुम ही शोध लिया करो। बाहर के काम के लिये बिना यहां से तुम्हारे योग्य इस समय छपवाने के लिए नहीं भेज सकते। जैसी तुम जल्दी चाहते हो ऐसा तो तब हो सके कि जब हम स्वयं छापेखाने में आकर तुम को शोध र दिया करें और तुम छापो।

कल तुम्हारे पास ३३ पृष्ठ से ५७ पृष्ठ सत्यार्थप्रकाश के पत्रे श्रीर पारिभाषिक भूमिका सिहत ४३ पृष्ठ तथा जितना यहां वेदाध्यत्न के श्रंक हैं श्रर्थात् २० श्रंक वे सब भेजेंगे। तुम

१. पूर्ण संख्या ४५४ (पृष्ठ ३६६) में ३,४ पत्र मेजने का उल्लेख है। ये पत्र कब कब मेजे गये, यह
अज्ञात है। २. इस का निर्देश अगले पूर्ण संख्या ४५४ के पत्र में है। ३. १५ अवद्वर १८८२।

४. शताब्दी संस्करण, भूमिका पृ० १८ पर खरडशः मुद्रित । Works of Maharshi Dayanand पृ० १२८ पर शताब्दी संस्करण की अपेद्धा कुछ अधिक भाग मुद्रित । मूल पत्र परोपकारिणी सभा अजमेर में सुरिद्धित है । ५. देखो पूर्ण संख्या ४४५ पृष्ठ ३६१ का पत्र । यु० मी० ।

६. २९ अगस्त को ३२ पृष्ठ तक भेजे थे। देखो पत्र पूर्ण संख्या ४२०।

७. सायणकृत त्र्यर्थवेवदमाध्य के सम्पादक पिछत बालकृष्ण शङ्कर पाग्डुरङ्ग इस प्रन्थ वेदार्थयत्न को निकाला करते थे [इस में सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का मराठी श्रीर अंग्रेजी में श्रनुवाद रहता था]।

हम को यह लिखना कि सत्यार्थप्रकाश के कितने पृष्ठ एक फारम में लगते हैं। सो व्यौरे वार से जब लिख भेजोगे तब हम यहां से अनुमान करके लिख देंगे कि सब सत्यार्थप्रकाश के इतने कार्म होंगे। हम ने तुम को कई एक बार लिखा कि वहां जो कुछ हमारी फुटकर चीज व वस्तु पड़ी हैं उस का सूची बना के भेजो। सो अभी तक नहीं भेजा। शीघ्र अब लिखके भेजना।

शोक की बात है कि तीन चार पत्र हम भी सेवकलाल को भेज चुके हैं।
परन्तु एक का भी उत्तर न दिया। इसी प्रकार तृहमारे पत्रों के विषय में कर्ती
होगा। जो तुम इस से काम चलते न देखों तो स्वतन्त्र किसी मातवर आदमी की दुकान से कागज
आदि मंगवाने के लिये प्रबन्ध कर लो। क्योंकि अब तुम्हारे पास वहां कुल १० रीम वाकी हैं। जो
शीघ्र न भेजेगा तो कागज के बिना काम ही बन्ध हो जायगा। जहां से टैप मिले वहां से जितना चाहो
मंगवा लो। इस विषय में पंडित जी को भी हमने लिखा था कि टैप मंगवाने की तुम को आज्ञा
देवें। न जाने तुम को आज्ञा दी वा नहीं। आशा है कि अवश्य वे तुम को आज्ञा देंगे। और तुम
शीघ्र टैप मंगवा लो। परन्तु हम को यह लिखों कि तुम के मन टैप मंगवाना चाहते हो और क्या
खर्च पड़ेगा। इस बात का निश्चय करके लिखो। अब तुम रिजस्ट्री कराके पत्र सेवकलाल के नाम
से भेजों कि जिस में उस की सही तुम्हारे पास आ सके। हम ने भी आज एक पत्र मास्तर
प्राणजीवनलाल कानदास जी के नाम से भेजा है। क्योंकि वे उस को समभा देंगे और जिन बातों
का उत्तर हमने मांगा था सो सो भी सब उसमें लिखवा भेजेंगे। हमारा आशीर्वाद जज कार्ष्टीफन
साहेब को लिख भेजना। कुंबर जवाहरसिंह जी के रुपये अर्थात् २२॥८) भीमसेन के मार्फत
हमारे पास आये, सो तुमको लिखा था, वेदभाष्य में क्यों नहीं छपे। क्या अराले में छापोगे १
और रिजस्टर में जमा कर लेना।

सम्वत् १९३९ त्राश्विन सुदी ३ रवि।

(खद्वपुर) [ द्यानन्द सरस्वती ]

[22]

कार्ड (३८५)

[866]

**ब्रो३म्**२

लाला कालीचरणदास जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि तुम आर्य्समाज के पत्र में नाटक का विषय मत छापो । यह अनुचित बात हैं। यह आर्यसमाज है। महुआ समाज नहीं। जो तुम नाटक का विषय

१. १४ श्रकतूबर २८८४ ।

२. मूल पत्र त्रार्थंसमाज फलखाबाद में सुरिच्चत हैं। फलखाबाद का इतिहास पू॰ २०२ पर भी छपा है। इस की प्रतिलिपि म॰ मामराज ने की।

३. पूर्ण संख्या ४४१ के विज्ञापन में 'नाटक का निर्देश है। सम्भव है उसमें 'नाटक' पद ऋषि दयानन्द की सम्मति के विना मुद्रण काल में बढ़ाया होगा। यु॰ मी॰।

छापते हैं ऐसा करना भड़ुआपन की बात है। इस लिये ऐसा वर्त्तना उचित नहीं। ता० १६ अकटूबर १। [द० स०]

[१] पत्रांश (३८६) [४५६]
[माई भगवतीर प्राप्त को तरे वास्ते लिखें। प्राप्त को तरे वास्ते लिखें। प्राप्त अकत्वर १८८२ वास्ते लिखें। प्राप्त अकत्वर वास्ते लिखें। प्राप्त वास्ते लिखें।

[१०] पत्र (३८७)

[840]

श्रो३म्<sup>४</sup>

महाशय बाबू रूपसिंह जी योग्य रामानन्द ब्रह्मचारी का नमस्ते विदित हो —

पत्र तुम्हारा पहुंचा। कुशल समाचार ज्ञात हुए। परमात्मा की कृपा से यहां श्री परमगुरु जी आदि सथ आनन्द मङ्गलयुत हैं। अनुमान है कि अब थोड़े दिनों के पश्चात् स्वामी जी की खदयपुर से अन्य स्थ[ा]न को य[ा]ना होगी। मेरा निज समाचार आप से मिन्नता होने के कारण विदित करता हूं कि मेरे पिता जी का स्वर्गलों के हो गया है। इस करण से अब मैं घर को जाने वाला हूं। अनुमान हैं कि दश वा बाहर दिन के पश्चात् जाऊंगा। दूसरा प्रजीज[न] यह भी है कि मैं कुछ काल निरन्तर पढ़ना चाहता हूं। क्योंकि ब्रह्मचर्याश्रम केवल मैंने विद्या पढ़कर परोपकार करने के अर्थ लिया है और श्री परम गुरु स्वामी जी की भी पूर्ण कुपादृष्टि है। अब आप को पत्र मैं फरुखाबाद पहुंचने पर दंगा॥

अब जो आप के प्रश्न और जो फरुखाबाद में रुपये दिया करते हो उसका उत्तर श्री गुरु जी

की श्राज्ञा से लिखता हूं। श्राप निश्चय सममना।।

१—हपयों के विषय में स्वामी जी ने यह आज्ञा दी कि रूपये फरुखाबाद में ही भेजना चाहिये। और हमारे पास जितना रूपया पंडितों के मासिक में लगता है वह फरुखाबद ही से लगा करता है। अभी हाल में २००) रूपये मुम्बई में मंगवाये थे। तुम कुछ संरेह मत करो। वहां से जब २ हम चाहते हैं, मंगवा लेते हैं। इस लिये तुम वहीं भेजना॥

प्रश्नों का उत्तर-धर्म कार्य के करने में जो पिता आदि किसी प्रकार का विन्न करें तो उनकी ऐसी बात सर्वथा अमन्तव्य है। हां, पुत्र को उचित है कि माता पिता चाहे कैसे ही दुष्टाचारी क्यों न

१. सन् १८८२ [ग्राश्विन सुदी ४, सोम सं० १६३६]। पत्र की मोहर पर उदयपुर से पत्र का चलना लिखा है।

२ इस ने बम्बई में श्री स्वामी जी के दर्शन किये थे। देखो पं० देवेन्द्रनाथ संक० जी० च० पृष्ठ ३४७। यु० मी०।

३. यह पत्रांश स्रोर इस का संकेत म॰ मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० ४५०-५२ पर है। [स्राश्विन सुदी ४ सं० १६३६।]

४. मूल पत्र इसारे संग्रह में सुरिच्त है।

हों उनकी श्रम वस्न से सेवा अवश्य ही करनी चाहिये। जो वे पुत्र की सेवा न चाहें तो ऐसा करना उचित है कि जिस समय पुत्र अपने माता पिता को दुःखी देखे, उस सम[य] विना पूछे गाछे सेवा करना उस को चाहिये।।

२— चाहे कोई निन्दा वा स्तुति करे वा न करे तो भी धर्म जो कि सत्य भाषणादि है नहीं छोड़ना। क्योंकि लौकिक जि[त]ने मनुष्य हैं उन से मित्रता यहीं काम में आती है परन्तु परलोक में धर्मों के विना दूसरा सहायक मित्र कोई भी नहीं है। देखिये इस विषय में एक क्षोक लिखे देता हूं। आप कएठस्थ कर लेना —

( निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् । अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,

न्याय्यात पथः पविचलन्ति पदं न घीराः ॥)

इसका अभिप्राय यह है कि संसार में चाहे कोई निन्दा करे वा स्तुति, लक्ष्मी अर्थात् धनादि पदार्थों की प्राप्ति हो चाहे अप्राप्ति, और मरण चाहे इसी समय हो वा कालान्तर में, परन्तु धीर पुरुष ऐसी २ विपत पर भी धर्मरूपी मार्ग नहीं छोड़ते। इस का फल यह है कि जो पुरुष ऐसा हदनिश्चय-युक्त धर्म पथ में स्थिर होता है उस के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोच इन चारों की प्राप्ति होती है॥

स्त्री का पढ़ाना श्रत्युत्तम है, यथेष्ट पढ़ात्रो । श्रीर संस्कारविधि के श्रनुसार गर्भाधान संस्कार [कर]के पुत्रोत्पत्ति करना ॥

हे प्रिय ! अब मैं अपनी ओर से इतना विशेष लिखता हूं कि तुम अपनी खी को इस मन्त्र को शुद्ध बतला देना—

(ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परामुव यद्गद्रं तन्न आमुव) यजु० अ० ३० मं० ३ इस का अर्थं भूमिका में देख के मुना देना। इस समय पिता जी के देवलोक हो जाने के कारण विशेष आप को नहीं लिख सका, परन्तु जब २ आप को कुछ प्रष्टव्य हुआ करे, आप अवश्य लिखा करें। मैं उत्तर देने में आलक्ष्य न कहंगा।

कार्त्तिक शुदी १ सम्वत् १९३९२ ॥

(रामानन्द ब्रह्मचारी) उदयपुर

[१] यजुर्वेदभाष्य समाप्ति की सूचना मार्ग कृष्ण १ शनिवार सं० १९३९ में समाप्त किया १।

[846]

१. श्रर्थात् ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका । यु० मी०।

२. ११ नवम्बर १८८२।

३. २५ नवम्बर १८८२। यु॰ मी॰।

४. यह सूचना मुद्रित यजुर्वेद भाष्य के स्रांक ११६, १७७ (सिम्मिलित) के पृष्ठ १२६० के स्रान्त में छुपी है। इस विषय का मुंशी समर्थदान प्रवन्धकर्ता वैदिक यन्त्रालय प्रयाग का निम्न विज्ञापन भी दर्शनीय है—

## [१] महाराणा श्री सज्जनसिंह जी उदयपुर की दिनचर्या के लिये नियम (४५९)

जव न्यायस्थान पर जावे तव सब प्रजास्थ वादी प्रतिवादी सान्ती राजपुरुष सम्प्रेन्नक आदि मनुष्यों को प्रसन्नवदन कुपादृष्टि से आनन्दित करे। दिल्ला हाथ उठा कर सब को स्वास्थ्य अभयदान देकर न्यायासन पर बैठ सर्वव्यापक यथावत् न्यायकारी अन्तर्यामी को मन से नेत्रोन्मीलन करके प्रार्थना करे कि हे परमेश्वर आप की कृपादृष्टि हो जिस से मैं चाहता हूं कि कभी काम, क्रोध, लोम, मोह, भय, शोकादि के वश हो के अन्याय न करूं। ऐसा अनुप्रह आप भी कीजिये। परन्तु इस बात को सदा ध्यान में रक्खे कि सब कामादि और अन्याय में फसाने वाला लोम हैं। उस को अपने से श्रीर श्राप उस से सदा दूर रहे। उस समय न किसी का शत्रु श्रीर न किसी का मित्र तथा उदासीन वने। किन्तु समदृष्टि कि जैसा पद्मपात छोड़ परमेश्वर वा आप्तपुरुष सब के साथ वर्तता है वैसे वर्ते। प्रत्येक सप्ताह में गुरुवार के [दिन] ऋणादानादि में विवाद अर्थात् दिवानी का न्याय करे । और रविवार के दिन साहसिकों का अर्थात् फहोजदारी का न्याय करे। जब अर्थी वा प्रत्यर्थी अथवा साची जो कुछ स्वभाव से बोले उस पर अतीव ध्यान देकर विचार करे। ख्रौर उनको कठिन से कठिन शपथ करावे। सब साज्ञियों को पृथक् २ रक्खे। सीखावट की साज्ञी को न माने। श्रीर यह भी जना देवे कि मिथ्या बोलने, मानने और करने वाले को इस जन्म और परजन्म में सुख व प्रतिष्ठा नहीं होती। श्रौर देखो थोड़े से जीवन में धर्मात्मा श्रर्थात् सत्यवादी सत्यमानी सत्यकारी मनुष्य धर्मार्थं काम मोच्च फ्लों को प्राप्त होता और मिध्यावादी, मिध्यामानी अनृतकारी सर्वदा दुःख को प्राप्त होता है। इस लिये किसी को आत्मा और परमेश्वर के मिध्याभाषणादि से शत्रु न बनना चाहिये । जैसा कुछ तुम्हारे आत्मा में हो वैसा ही जीभ से बोलो । जब वे कुछ भाषण करें वह सब लिपिवध होवे । छौर उन के नेत्र तथा मुखाकृति की छोर देख कर भीतर के आशय को पहिचाने । यदि कोई बड़ा ढीठ अथवा प्राड्विवाक अर्थात् बारिष्टर वा वकील जो कुछ परस्पर प्रश्नोत्तर करें उस पर ध्यान दे कर सुने तथा लिखे। यदि जहां २ पूछ उचित हो पूछे। बीच में अन्य २ सम्बाद करके वक्र वा सरलता से प्रश्न करे। यदि इतने पर भी सत्यासत्य का निर्णय न हो तो उन पर विश्वास न कर के जहां वह विरुद्ध कार्य हुआ हो वहां के सुपरीचित धार्मिक पुरुष श्रीर खियों की साची में खी जनों से पूछ कर

"सब सज्जनों को विदित हो कि श्री स्वामी जी महाराज ने यजुर्वेदमाण्य बना कर पूरा कर लिया है श्रीर ईश्वर की कृपा से ऋग्वेदमाध्य भी इसी प्रकार शीघ्र पूरा होगा ......।"

देखो ऋग्वेदमान्य माघ कृष्ण सं ० १६३६ स्रंक ४६, ४७ (सिमलित) के स्रन्त में।

यजुर्वेदभाष्य का मुद्रग् वैशाख शुक्क ११ शनिवार १६४६ में समाप्त हुआ था। देखो यजुर्वेदभाष्य ग्रङ्क ११६, ११७ (सम्मिलित) पृष्ठ १२६० के अन्त में

इस विषय में जो अधिक देखना चाहें वे हमारे "अपृषि दयानन्द के अन्थों का इतिहास" नामक अन्य

में (पृष्ठ १०४-१०८) देखें। यु० मी०।

१. पूर्ण संख्या ४६० (पृष्ट ३७५) के पत्र में इस दिनचर्या का उल्लेख है। पं॰ चमूपित जी सम्पा॰ पत्रव्यवहार पृष्ठ १४८-१६२ तक छुपी है। उस में दो तीन शब्द श्रशुक्त हैं। इसने स॰ मामराज जी की की हुई प्रतिलिपि से छापा है। मूल लेख ठाकुर किशोरसिंह जी के संग्रह में था।

निश्चय करे परन्तु स्त्रियों से राणी पूंछे। अथवा यदि पड़दे में रक्खे तो बड़े प्रवन्ध से रख के पूछे कि वहां उस के बदले दूसरी स्त्री न वोले। यदि सामने होवे तो न कोई उस पर दृष्टि डाले न हास्य करे श्रीर न डरावे। इतने पर भी सत्यासत्य का निर्णय न हो तो गुप्त में उन को वात करते सुन अथवा धार्मिक आप्तजन दूतों के द्वारा निश्चय करे। पश्चात् जो अपराधी हो उसको यथायोग्य द्रेड दे कर हरावे। और अनपराधी का मान्य कर जितावे। जो हारे उस पर ताना न मारे। किन्तु ऐसा कहे कि देखो भाई मैं तुमसे ऐसे काम करने की आशा नहीं करता था। तुमने ऐसे कुल वा ऐसे के पुत्र हो कर ऐसा अनुचित काम किया। इस पर मुक्त को वड़ा शोक है। हे भद्र यदि तू ऐसा काम न करता तो ऐसे द्रांड को प्राप्त क्यों होता। यदि कोई धूर्त वा त्रातुर बुरां शब्द बोले वा कुचेष्टा करे, सह लेना । परन्तु अपने शरीर की रचा सब प्रकार से करना। श्रीर सब की मानसी वा बाह्य चेष्टा को जानते रहना। चाहे कोई कितनी ही प्रार्थना करे वा क्रोड रुपैये भी दे कर श्रन्याय कराया चाहै तो भी कभी अन्याय न करे। यही राजा के प्रताप, कीर्ति, श्री श्रीर राज्य बढ़ाने वाला कर्म है। यदि भूमि धन धरावट सीमा त्रादि जितने विवाद लेख वचन से हों अथवा साहस मारपीट कुवचन त्रादि से दूसरे को पीडा वा हानि पहुंचावें उनका भी न्याय यथोचित करे । जैसा सनुस्मृति के अष्टम और नवमाध्याय में न्याय व्यवस्था १८ प्रकारों में लिखी है यथायोग्य करे। ये सब काम मध्यान्होत्तरु,चार बजे तक कर के कुछ ४५ पल अर्थात् १५ मिनट तक स्वस्थ होकर जिन के साथ मिलके राज प्रवन्धार्थ विचार करना चाहिये । सवा बजे तक प्रजास्थ जनों से बात करे। पश्चात् यदि प्रातःकाल १० बजे भोजन किया हो श्रीर उष्णकाल हो तो शीच आदि से निवृत्त हो कर ६ छः वजे तक भोजनादि से निवृत्त होकर जहां का शुद्ध वायु शुद्ध देश एकान्त हो पैदल घूमने को जाय। यदि चलने में असमर्थ हो तो सवारी पर बैठ कर घूमे। परन्तुं यदि शीतकाल हो तो परंमेश्वर की उपासना के पश्चात् भोजन करे। अर्थात् उष्णकाल में आठ बजे पर्यन्त भोजन के पश्चात् घूमना उपासना करनी उचित है। और शीतकाल में भी ५ वजे से सात वजे तक भ्रमण उपासना से निवृत्त हो कर साड़े सात वजे तक भोजन कर ले । पश्चात् ४५ पल अर्थात् १५ मिनट पर्यन्त किसी से न बोले । किन्तु हस्त मुख प्रचालन कर लघुशंका से निवृत्त हो ताम्बूल भक्तण कर शतपद घूम के किंचित् उत्तान, दिल्ला और वाम प्रार्श्व से लोट कर उठ बैठे। तत्पश्चात् श्रर्थात् पौने आठ वजे से नी बजे तक दूत द्वारा स्वदेश स्वनगर परदेश पर-राज्य के समाचार जो कि अपने भौर दूसरे के सम्बंध में हो, सुने । और उसे स्वकार्यसिद्धि के लिये आज्ञा भी देवे। नौ से दश बजे तक आय व्यय आदि का वृत्तान्त सुन कर श्रगले दिन के लिये यथोचित प्रबन्ध करे। पश्चात् श्राध घएटे में इष्ट मित्र वा मन्त्री श्रादि से जो कि उस समय उपियत हो प्रसन्नतापूर्वक विदा कर के साढ़े दश बजे शयन करे। यदि उद्याकाल हो तो १० बजे तक इन सब कामों से निवृत्त हो शयन करे। शयन एकान्त में करे। श्रीर उसी समय परमेश्वर को इस लिये घन्यवाद देना कि हे परमेश्वर आपकी कुंपा से गत आहोरात्र जैसा आनन्द पूर्वक बीता वैसे ही अप्रस्थ ऋहोरात्र भी आनन्द पूर्वक व्यतीत होवे। दो दिन र में पूर्वोक्त दो काम

१. तुलना करो सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुलास प्रथम संस्करण । यु॰ मी०।

२. स्रर्थात् गुरुवार, रविवार । देखी पृष्ठ ३६६ । यु० मी०।

करने । मंगल के दिन किसी राजपुरुष ने वा श्रन्य राज्य से प्रजास्य वा राज जन पीड़ित हुए हों जनकी बातें और तीन दिन श्रर्थात् बुध शुक्र और शनैश्वर में सब राज्य की उन्नति और स्वास्थ्य के लिये प्रबन्धार्थ अकेले वा मुख्य धार्मिक स्वराज्य भक्त मंत्रियों के साथ विचार करना चाहिये।

## विशेष नियम ।

- १—जव पति चौर पित्र समन्न हों प्रसन्नता पूर्विक नमस्ते कर जिस २ प्रकार दोनों में प्रेम बढ़े वैसा व्यवहार करें। विरुद्ध कभी नहीं।
- २—ऋतुदान के पश्चात् किंचित् ठहर स्नान कर शालव मिश्री केशर आदि सुगन्धियुक्त परीपक दुग्ध शीतल यथारुचि पी के ताम्बूल भन्नण कर मुख प्रचालन कर के पृथक् २ शयन करें॥

३ - दोनों सदा विद्या धर्म प्रजासुख के लिये तन मन धन से प्रयत्न किया करें॥

- ४—िकसी वेद विद्या युक्ति विरुद्ध मतमतान्तर के भगड़े में दोनों कभी न फंसे। किन्तु पद्मपात रहित न्यायाचरण वेदोक्त धर्मही का आचरण करें और करावें।
- ५ —अपने वा पराये राज्य में जहां तक शक्य हो किसी मत वाले की बहकावट से विद्यायुक्ति विरुद्ध मत में किसी को न फंसने देवें। यदि कोई सममाने पर न माने जो कूप में गिरना ही चाहे तो उसका अभाग्य सममना चाहिये।।

६-जव बुरे बुराई नहीं छोडते तो भले भलाई क्यों छोंड़ें।

- ७—सदा सनातन वेद शास्त्र आर्थ राज राजपुरुषों की नीति पर निश्चित रह कर इनकी उन्नति तन मन धन से सदा किया करें। इनसे विरुद्ध भाषाओं की प्रष्टित वा उन्नति न करे वा करावे। किन्तु जितना दूसरे राज्य के सम्बन्ध में यदि वे इस भाषा को न समझ सकें उतने ही के लिये उन भाषाओं का यत्र रक्खे, जो वह प्रबल्ज राज्य हो।
- कभी बिना विचारे लिखे नियत काल के आज्ञा न देवे। पश्चात् जैसी जितने समय में कार्यसिद्धि करने की आज्ञा दी हो वह यथावत् नियमित समय में पूरी हुई वा नहीं उस पर ध्यान सदा रक्खे।
- ९— जो यथोक्त समय में आज्ञा को यथावत् प्रीति से पूरी करे उस का सत्कार करना पारितोषिक देना और उस की उन्नति करना अति योग्य है। और जो यथोचित न करें उस का अपमान दण्ड और हास किये बिना कभी न छोड़े।
- १०—विना योग्यता वा परीक्षा के किसी को बड़ा वा छोटा श्रिधकार न देवे। किन्तु जो धर्मात्मता से उस कार्य के करने में समर्थ हो उसी के श्राधीन वह कार्य सिद्ध करे वा करे वा करावे। दिर्द्र वा लोभी को प्रारम्भ में बड़ा श्रिधकार भी न देवे। श्रीर कुटुम्ब सम्बन्धी परस्पर मित्रों को भी एक श्रिधकार में न रक्खे।
- ११—सदा वेदोक धर्मावलम्बी अधिकारियों पर अन्य मतावलम्बियों को अधिकार न देवे। किन्तु जिस २ कार्य में न्याय वा (उपदा) अर्थात् रिश्वत खाने का सम्बन्ध हो उन को छोड़ अन्य गौणाधिकारों में वैदिक धर्मावलम्बियों से कार्य सिद्ध न हो सके, रक्खे।

१. सोमवार का निर्देश यहां छूट गया है। यु॰ भी॰

१२—जो प्रीतिपूर्वक धर्मात्मता से ३० वर्ष तक राज कार्य करे उन को आधी नौकरी जब तक वे जीवें देवे। यदि संप्रामादि में जिसका मृत्यु हुआ हो उसकी स्त्री पुत्रों को भी उसी प्रकार देवे। यावत उनके पुत्र समर्थ न हों। जब समर्थ हों तब उनके पुत्रों को यथायोग्य अधिकार देवे। परन्तु उस की स्त्री को योग होमार्थ यथोचित जब तक व[ह] जिये सदा दिया करे। यदि वह पांच रूपये मासिक पाता हो पूरा देवे। पुत्रों के समर्थ हुए पर स्त्री को आधा देवे।

१३-सब के लड़के लड़कियों को ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्या दान दिलावे।

१४—न्यून से न्यून सोलहवें वर्ष कन्या और २५वें वर्ष लड़के का स्वयन्वर विवाह होने देवे, पूर्व नहीं।

१५ — अपनी सत्ता शक्ति को यथासम्भव बढ़ाता जावे, न्यून न होने देवे ।

१६— अपने अंश को न छोड़े और पराये अंश का खीकार कभी न करे।

१७—संग्राम में जो सेनास्थ पुरुष जीत में शत्रुश्चों के पदार्थ पार्वे उन में से १६वां भाग श्राप लेवे। श्रीर समुदाय के जीते हुये पदार्थों में से १६वां भाग चाहे कितने ही कोड़ों रू० क्यों न हों सेना को श्रवस्य देवे। १५वां भाग श्राप रक्खे।

१८—युद्ध में जो शत्रु घायल हो उस की रचा श्रोषधी अवश्य करे । स्त्रीः वालकः वृद्धः,

श्रातुर, भीर, शरणागत पर शस्त्र कभी न चलावे।

१९—हारे हुए शत्रु की अप्रतिष्ठा कभी न करे, किन्तु उस का यथायोग्य मान्य रक्खे । परन्तु उस को छोड़ कर स्वतन्त्रता कदाचित् न देवे ।

२०— सदा प्रयत्न से श्रलब्ध के लाभ की इच्छा, लब्ध की सम्हाल से रचा, रचित की व्य[ाजा]दि से वृद्धि श्रीर बढ़े हुए पदार्थों का व्यय विद्या धर्म राज्य की वृद्धि इन[के] प्रचार श्रीर] श्रमार्थों के पालनादि श्रभ व्यवहारों में करें।

२१-- सर्वदा सन्तानों की शिचा में धन का व्यय करे, किन्तु विवाह, मृत्यु आदि में न करे ।

२२—सदा दासी वेश्यागमन हास्य नृत्य भांड चारण श्रादि के मिध्या स्तुति कराने श्रादि व्यवहार से पृथक रहे। श्रीर श्रन्य को भी ऐसे प्रसंगों से सदा बचाया करे।

२३—सदा पूर्ण युवाऽवस्था में अर्थात् २५ वर्ष के उपरान्त हृद्य स्व[स]हरय एक स्त्री से विवाह करे और उसी से सदा ऋतुगामी रहे। यदि प्रमाद से अनेक स्त्री हों तो भी उन के साथ पद्मपात स्त्रोड़ नियमित समय में एक सा वर्ते।

२४— उन में परस्पर द्वेष उत्पन्न न होने दें। किन्तु सब को तुल्य अन्न बस्नाभूषण सम्भाष-णादि प्रेम व्यवहार तुल्य रक्खे और प्रेम रखवावे।

२५ — उन स्त्रियों को योग्य है कि एक के पुत्र होने में सब अपने को पुत्रवती समर्से । तथा सब भाई भी एक के पुत्र होने में अपने को पुत्रवन्त मानें।

२६—राजा और राज्ञी का जिस २ कर्म से पित पत्नी में श्रीर प्रजा में परस्पर प्रेम बढ़े उस २ का सेवन श्रीर विपरीत का सर्यथा त्याग करे।

२७—सुपरीचित दूत द्वारा राज्य और राजपुरुषों की सुचेष्टा और कुचेष्टा से अपने की अभिज्ञ रक्खे। जिस २ यत्र से उन की कुचेष्टा कूटें और सुचेष्टा बढ़े, वैसा यत्न सदा किया करे।

२८—अपराध में प्रजा से राजपुरुषों पर अधिक दण्ड होना चाहिये। क्योंकि वकरी के प्रमाद रोकने से सिंह का प्रमाद रोकने में अधि[क] प्रयत्न होना उचित है।

२९—जैसे राजा और कृषीवलादि प्रजा सुखी रहे वैसा कर-प्रवन्ध प्रजा में करे । श्रीर

उन्हीं कृषीवलादि को सब राज्य के सुख का मूल कारण समक उन से पितावत् वर्ते।

३०—जहा (साम) मेल (दाम) कुछ दे (भेद) तोड़ फोड़ से शत्रु वशे में न आवें वहीं दर्ख प्रचरित करना चाहिये।

३१ —िकसी धर्मात्मा से विरोध वा लड़ाई करना न चाहे श्रीर दुष्ट से विरोध वा लड़ाई नि:शंक करे।

३२—सब काम धार्मिक सम्यों के वहुपत्तानुसार नियत करे। श्रौर वह श्राज्ञा जो कि प्रजा के साथ सम्बन्ध रखती हो, सब में प्रजा की संमति लेवे श्रौर सर्वत्र [प्र]सिद्ध करके गुण दोष सममे। पश्चात् गुणाढ्य नियमों को नियत श्रौर दोषयुक्तों का त्याग करे।

३३ - अपना वा अपने कुटुम्ब का नित्य नैमित्तिक व्यय भी नियमपूर्वक करे।

३४—जिस किसी को मासिक धन वा भूमि धर्मार्थ अथवा गुणानुसार कुछ भी देवे वह यावत् माननीय जीवे वा अन्यथा न वर्ते तावत् वह दान रहे पश्चात् नहीं।

३५ — यदि पूर्वजों ने इस से विपरीताशय लेखपूर्वक किया हो श्रौर उस के छुलोत्पन्न वैसे न वर्तते हों तो भी वह दिया न दिया हो जावे। क्योंकि वह जिस समय दिया जाता है वह उत्तम काम के लिये होता है।

३६ — परन्तु धर्मार्थादि के लिये जो दिया हो उस के भोक्ता अन्याय से वर्तते हों तो भी उस अंश को राजांश में न मिलावे, किन्तु कुकर्मी से छुड़ा योग्य धर्मात्मा को उस का अधिकारी करे। यदि वह भी प्रमादी हो तो पूर्वोक्त प्रकार उस से भी लेके अन्य योग्य को, यदि उसी के कुल में योग्य न हो तो देवे।

३७-यद उन के सन्तान पितरों से अधिक योग्य हों तो उन को अयोग्य के अंश में से

श्रिधकांश देवे और अधिक प्रतिष्ठा करे।

३८ यदि न्यायाधीश ही प्रमादी होकर अन्याय किया चाहे तो उन को राज्य और प्रजा के धार्मिक प्रधान पुरुष सममावें कि आप अन्याय मत कीजिये। यदि न मानें तो उस को पदच्युत करके जो उसी के कुल में निकट सम्बन्ध से न्यायास्पद के योग्य पुरुष हो उस को न्यायाधिकारी करें। परन्तु यह काम पज्ञपात रहितता से होना उचित है। क्योंकि राज्य और विद्या, तथा धर्म की वृद्धि और अधर्म की हानि के लिये सब प्रतिष्ठाहै प्रमाद के अर्थ नहीं।

३९—सव राज्य के आय में से दशांश धर्मादि के लिये नियत रक्खे। उस से वेदविद्या धर्म

१. संस्कृत का शुद्ध शब्द दान है। राजधर्म प्रकरण में साम दान दण्ड श्रौर मेद इन चार उपायों का उल्लेख है। हिन्दी भाषा में साम के साहचर्य्य से दान का दाम बन गया है। इस पर विशेष टिप्पणी श्रृषि दयानन्द कृत श्रृग्वेद भाष्य के इमारे द्वारा हुए माषानुवाद भाग १ पृष्ठ ७० पर देखें। यह प्रन्थ भी श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित हुश्रा है। सुशिचा की वृद्धि के लिए अध्यापक और उपदेशक प्रचिरित करें। आपत् काल में राज्य और अनाथों की रच्चा भी उसी धन से करे।

४०-श्रीर राज्य से स्राय के नवांशों में से दो भाग स्थिर कोश, दो श्रंश राजकुल, तीन

श्रंश सेना विभाग, एक श्रंश स्थानविशेष श्रीर एक श्रंश शिल्प विद्या की उन्नति में लगावे।

४१-राज का कार्य एक पर निर्भर न रक्खे। किन्तु राजपुरुष और प्रजा पुरुष की अनुमति

के अनुकूल प्रचलित करें।

४२—जो राजासन पर नियत हो उस का किंचित् भी अपमान कोई मन कर्म वचन से न करे। किन्तु जो जिस पर प्रधान हो चाहे उस से अप्रधान किसी गुण में अधिक भी क्यों न हो तथापि परमेश्वर से द्वितीय स्थान में माननीय राजा और स्वामीवत् माननीय अपने २ प्रधान को मानें।

४३—अधिष्ठाता लोग राजाज्ञा को अपने प्राण से भी अधिक मानें, चाहे कोई कैसा ही सम्बन्धी वा मित्र क्यों न हो। परन्तु जब राजाज्ञा भंग वा उस में आलस्य करे तब वह शत्रुवत्

द्रांडनीय हो जावे।

४४—प्रथम सब प्रयत्न से विचारं कर सर्विहत समक्त के आज्ञा देनी चाहिये। पश्चात् उस को पूरी करने में पूरा ध्यान और पुरुषार्थ रक्खे।

४५ — अपने आत्मा वा शरीर को राजा वा अधिकारी न समभें, किन्तु राजनीति ही को

राजा और राज्यधिकारिणी मानें।

४६—इस को निर्दोष श्रीर चलाने के लिये एक राजसमाज, दूसरा विद्यासमाज श्रीर तीसरा धर्मसमाज नियत करे।

४७—इन समाजों में राजपुरुष श्रीर प्रजापुरुष नियत रहें। राजपुरुष राजोन्नति श्रीर प्रजापुरुष प्रजा की वृद्धि में प्रयत्न किया करें। श्रीर तीनों समाजों के विचारानुकूल नये नियम प्रचरित किये जावें।

४८—जो २ आज्ञा इन समाजों से निश्चित हो कर प्रचरित की जायें उनका उलंघन कोई

भी न करे। यदि करे तो वह सब का श्रमाननीय और दण्डनीय [हो]।

४९—सदा वेदादिशास्त्र मनुस्मृति के सप्तम, श्रष्टम श्रीर नवम श्रध्याय, महाभारत के राजधर्म, श्रापत्धर्म श्रीर विदुरप्रजागर विदुर नीति के शब्दार्थ सम्बन्ध श्रीर कर्त्तव्य को सब राजपुरुष जान के तद्नुकूल वर्तें। श्रीर इनके प्रचार में सदा प्रयत्न किया करें।

५० - जो २ सामयिक नियम और उपनियम नियत करना होने तो पूर्वोक्त समाज और

वेदादिशास्त्रों के अनुसार निश्चित करें और करावें।

पश-यह निश्चय है कि जैसा शील आचरण उत्साह और पुरुषार्थ प्रधान पुरुष करता है वैसा ही इतरजन वर्तते हैं। इसलिये प्रधान पुरुषों को अत्यावश्यक है कि सदा अधर्मयुक्त कर्मों को छोड़ कर न्याय रूप धर्मकृत्यों में वर्त्ता करें। क्यों कि जो २ धर्म वा अधर्म प्रधानपुरुष दृष्टान्त से इतर जमों में प्रवर्तमान होता है उस का मुख्यनिमित्त प्रधान हो कर फल भागी होता है। इस लिये मुख्य पुरुषों को बहुत विचार से वर्तना चाहिये।

**बद्यपुर, सं० १९३९**]

पत्र (३८९)

उज्य

[0]

कार्ड (३८८) श्रो३म°

[880]

वाबू कृपाराम जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि पत्र तुम्हारा पहुंचा। समाचार ज्ञात हुए। और जो तुमने ५०००[०] पचास हजार की सही कराके मेरठ भेज दी, सो अच्छा किया। और ब्राह्मी औषधी सेर भर का पारसल कर के उदयपुर में भेज दो। यहां उदयपुर का समाचार अतीव प्रशंसनीय है। और सुनकर सब को आनन्द भी होगा। श्रीमान आर्थ्यकुल-दिवाकर महाराणा जी बहुत योग्य हैं। उन्होंने हमारे उपदेशा-नुसार अपनी दिनचर्या, राजकार्य और धर्मकुत्य भी करना आरम्भ कर दिया है। प्रातः सायं काल सात बजे मेरे पास नित्य प्रति आया करते हैं। कभी २ रात्रि को मैं शम्भु-विलास महिल में जाया कर्ती हूं। पातः काल कुछ योग वा राजनीति की शिक्षा होती है। और सायंकाल दर्शन शास्त्रों के उपयोगी विषय पढ़ते हैं। उनके साथ बहुत से भाई बेटे तथा अमात्यवर्ग भी पढ़ते हैं। और सब अच्छी बातें हैं। आगे जो २ उत्तम बात होने वाली हैं, होंगी, तो सबको प्रसिद्ध कर दी जायंगी।

सं० १९३९ मार्गशीर्ष वदि ५, ता० २९ नवम्बर [१८८२]।

द्यानन्द सरस्वती

[9,0]

पत्र (३८९)

[888]

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी श्रानन्दित रहो<sup>३</sup>।

विदित हो कि बहुत दिनों से अवकाश नहीं होने के कारण पत्र नहीं लिखा। अब कुछ प्रसंग से लिखते हैं। यहां का वर्त्तमान वहुत अच्छा है। जो लिखने लगे तो एक पुस्तक वन जाने। सो पीछे सूक्ष्मता से आप को विदित कर देंगे। परन्तु यही समम लेना कि समाचार बहुत ही अच्छा है। जब आप सुनेंगे प्रसन्न तो अवश्य हो जावेंगे। और हर साल आप शीत काल में घूमने को जाते थे। यदि आप की इच्छा हो तो यहां हम कम से कम १५ दिन रहेंगे। आप आवें तो यहां का वर्त्तमान भी सब विदित हो जावेगा। और श्री महा[रा] णा जी तथा अन्य राजपुरुषों से भी आप का मेल मिलाप हो जावेगा। सो यदि आप आवें तो १५ दिन के भीतर ही विचार करना चाहिये। सो जो आप के आने का पत्र यहां आवेगा, तब चितौड़गढ़ रेल से यहां तक आने के लिये सवारी का प्रबन्ध भी हम कर देंगे। और लाला कालीचरण जी से कह दीजिये कि

१. मूल पत्र पं ० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की भगिनी के पास गुरुकुल कांगड़ी में है। उस से सन् ३३ में म० मानराज ने शुद्ध किया। पहले मेरठ से ब्राई प्रतिलिपि से छापा गया था।

२. पूर्ण संख्या ४५६ पर छपी दिनचर्थानुसार । यु॰ मी॰ ।

३. मूल पत्र त्रार्यसमाज फरुखाबाद में सुरिच्त है। म० मामराज ने इस की प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास प० २१६-२० पर भी कुछ पाठ मेद के साथ छुपा है।

जनका पत्र हमारे पास त्राया। हमारा त्र्यभिप्राय यह नहीं था कि ६००) वा ३००) तुमको देने पड़ेंगे। किन्तु लिखने वाले की भूल है। हमारा अभिप्राय यह है कि २००) रु० कम से कम देना चाहिये कि जिस से ३ फारम का नवीन टाईप मंगा लिया जा[वे]। श्रीर ६००) रुपये के विषय में यह श्रिभिप्राय है कि जो समाजों के समाचारपत्रादि सब पुस्तक छपने लगेंगे, तो दूसरा प्रेस मंगवाने के लिये जिन २ के पुस्तक छुपेंगे सब से रु० लिये जायेंगे। श्रीर निकाल भी दिये जायेंगे। श्रव भारतसुद्शाप्रवर्तक [में] पं० लक्ष्मीदत्त जी से लिखाना चाहिये। वे संस्कृतयुक्त अच्छा विषय लिखेंगे। और नाटक का विषय तो नाम मात्र भी नहीं आना चाहिये। जो श्रच्छा विषय भी लिखना हो वह प्रश्नोत्तर वा अन्य प्रकार से लिखा जावे। नाटक [नाम] तमाशे का है। क्योंकि तुम्हारे नाटक को [लिखा] देख के लखनऊ के समाज में नाटक का व्याख्यान ही होने लगा। जब हमने मने किया तो कहने लगे कि अपने फरूखाबाद समाज कि] पत्र में नाटक क्यों छपता है । यह नाटक से विगाड़ का उदाहरण है। और पाठशाला में संस्कृत पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए। अथवा अंगरेजी फारसी में ही व्यथ धन जाता है, सो लिखो। जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रक्खी जाय। सब से हमारा आशीर्वाद कह देना।

मि० मार्ग वदी १४ शनिवार सं० १९३९<sup>२</sup>।

यह रुका सेठ निर्भयराम जी को देके १२) रु० मंगवा कर हर्जु कहार के लड़के रामदीन को दिला देना। श्रौर वहां के मुनीम से कहना कि रु० देने में देर न करे ।

दियानन्द सरस्वती

[88]

४६२

[मुंशी समर्थदान जी ... .....] गत महिने कितने फार्म छपे। आख्यातिक और पारिभाषिक भेजो ।

[2]

पत्र (३९१)

४६३

श्रीयत लाला श्यामसुन्दर जी श्रनन्दित रही -

कुछ दिन हुये कि एक रजिष्टरी पत्र आर्थसमाज मुरादाबाद की स्रोर से आया था। उस में यह विषय था कि जो देशहितैषी में प्रश्नोत्तरी के विषय में छपा है सो किस की ओर से है।

१. १० सितम्त्रर सन् १८८२ को लखनऊ आर्यसमाज के मन्त्री श्री हरनामप्रसाद जी ने एक पत्र श्री स्वामीजी को लिखा। उस में नाटक का उल्लेख है। देखो म॰ मुंशीराम संपादित पत्रव्यवहार पू॰ ३५०। २. ६ दिसम्बर १८८२ । पष्ठ ३६६ पूर्ण संख्या ४५५ का पत्र तथा टि॰ ३ भी देखें।]

३. यह सारा पत्र ऋषि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ऋपनी लेखनी का लिखा हुआ है।

४. इस पत्र की सूचना मार्गशीर्ष शु॰ १० मंगल १६३६ ( = १६ दिसम्बर १८८२ ) के पत्र में है। यु॰ मी॰।

प. मूल पत्र ब्रार्थसमाज मुरादाबाद में सुरिच्चत है ।

आप की सम्मात से हैं वा नहीं। उस का यही उत्तर है कि वह किसी की ओर से छपा हो, अच्छा है। क्योंकि प्रश्नोत्तरी में जितने विरुद्ध विषय छिखे गये थे उनके सत्यासत्य निर्णय के छिए उन का उत्तर छपना योग्य था। और में भी उस प्रश्नोत्तरी के विरुद्ध विषय के उत्तर में सम्मत हूं, क्योंकि जो ऐसा न हो तो जिसके मन में जैसा आवे वैसी ही बात छिख कर चछा देवे। सव मनुष्यों को यही उचित है कि सत्यासत्य का निर्णय कर करा के सत्य को मानना, मिथ्या को छोड़ देना। अब इस का उत्तर दीजिये कि जो १००) रुपये वैदिक यन्त्रालय के सहाय में आर्यसमाज मुरादाबाद से आये थे, उस के देने की प्रतिज्ञा तीसरे वर्ष की पूर्ति तक थी। सो आगामी वैशाख की पूर्ति में तीसरा वर्ष पूरा होगा। सो वैशाख तक जहां २ से जितने २ रुपये आये हैं, दिये जांयगे। अब उस में यह प्रतिज्ञा थी कि ज्याज के बदले १०) रु० के पुस्तक और मूल रुपये भी दिये जांयगे। सो किस प्रकार किस के पास भेजा जाय। समाज से सस्मिति ले कर लिखिये। और १०) रु० के कौन पुस्तक लेना है सो भी लिखना। यहां का समाचार बहुत अच्छा है, पीछे लिखेंगे। और हमारा आशीर्वाद सब से कह दीजिये।

सं० १९३९ मार्ग शु० ७ रविवार ।

(द्यानन्द सरस्वती)

[2]

पत्र-सूचना (३९२)

[888]

[माई भगवती .....हिरयाना पंजाबर] हमारा उत्तर लिखने का अवकाश नहीं। सत्यार्थप्रकाश और भूमिका में लिखा है। १७ दिसम्बर १८८२४।

[84]

पत्र (३९३)

[844]

मुन्शी समर्थदान जी आनन्दित रहो-

पत्र तुम्हारा आया समाचार विदित हुआ। अब तुम बहुत शीघ नया टैप मंगाओ, नहीं तो सत्यार्थप्रकाशादि सब पुस्तक विगड़ जार्येगे। चाहे दोनों ओर से मंगाओ, पर शीघ मंगाओ । हम लिख चुके हैं कि गत महीने में कितने फर्में छपे और आख्यातिक तथा पारिमाषिक आदि पुस्तक मंगाये हैं, क्यों नहीं भेजे वा उत्तर दिया १ अब शीघ भेजो। और कोश के विषय में जो तुमने लिखा सो हम ऐसा कोश नहीं बनाते हैं कि सब कोशों से सब शब्दों का संग्रह करते हों। किन्तु उणादि के उत्तर अनुकूछ सुगम संस्कृत में वृत्ति बनाई है। उसके प्रत्ययों के प्रसंग में जो अन्य

१. १७ दिसम्बर १८८२।

२. इस पत्र का संकेत म॰ मुंशीराम सम्पा॰ पत्रव्यवहार पृ० ४५३-४५७ पर है।

३. त्र्रार्थात् ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका । यु॰ मी॰।

४. मार्गशीर्ष शुक्त ७ रविवार, सं० १६३६। यु॰ मी॰।

५. त्रार्यधर्मेन्द्र जीवन तृतीय संस्करण पृ० ३७० पर मुद्रित । मूल पत्र परोपकारिणी सभा श्रजमेर में होगा।

शब्द आये हैं वे भी लिख दिये हैं। सो बन के तो तैयार हो गया है। सूचीपत्र बाकी है। निघण्टु सूचीपत्र के सिहत तुम्हारे पास भेज दिया है। और निरुक्त तथा ब्राह्मणों के प्रसिद्ध शब्दों की संक्षिप्त सूची भी बनाकर भेजेंगे। सो निघण्टु की सूची के अन्त में छपवाना। और ज्वालादत्त के पास भाषा बनाने के लिये अब भेजें वा ऐसा ही रक्खोगे। ५ भूमिका और सत्यार्थप्रकाश के फारम भेजे थे सो पहुंच गये। परन्तु सत्यार्थप्रकाश अवारों के घिस जाने से अच्छा नहीं छपता।

मि० मार्ग शुदी १० मंगल १९३९ ।

द्यानन्द सरस्वती।

[३] पत्र (३९४)

[३६६]

श्रीयुत लाला श्यामसुन्दर जी श्रानन्दित रहो<sup>२</sup>।

पत्र आप का आया समाचार विदित हुआ। ऐसे जो आर्थसमाज के नियमों से विरुद्ध क्यास्थान होते हैं तो उन को रोक दीजिये। यदि रोकने से न माने तो दूसरे स्थान में करें। और मेरी निन्दा करते हों उस पर कुछ ध्यान न देना चाहिये, क्योंकि निन्दक निन्दा ही किया करते हैं और क्षमावान क्षमा ही करते हैं। ऐसों की निन्दा से क्या हो सकता है। इन मुन्शी इन्द्रमण् तथा जगन्नाथदास का हाल मुक्त से भी अधिक आप जानते ही हैं, क्योंकि सहवासी विजानीयात चित्रं सहवासिनाम्। सो जैसे इन में गुण कर्म हैं वैसा करते हैं, करो। अब एक नई बात की है कि विज्ञापन के तौर पर लिख के छपवा के जहां तहां भेजा है कि जो धन मेरे मुक्दमा के लिये आया था उस के मालिक खामी जी तथा लाला रामशरण्दास की बन बैठे। देखों कैसी मिथ्या वात है। ऐसी २ बातों के प्रसिद्ध करने से इन की ही फिजियत होगी। और जगनाथदास आदि को समाज का सभासद नहीं, किन्तु कलंक समझना चाहिये। ऐसे लोगों से कुछ मुधार की आशा नहीं होती कि जो पहिले अच्छे जान पड़ें और पीछे से विगड़ जांय। अब इन की सब बातें खुलेंगी तब कोई भी इन का विश्वास न करेगा। सब से हमारा आशिवाद कह देना। सं० १९३९ पौष वदी १२ शनिवार ।

( द्यानन्द सरस्वती )

[3,3,]

पत्र (३९५)

[820]

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रही ।

विदित हो कि इस पत्र के भेजने का मुख्य प्रयोजन यही है कि जो यात्रा करने का प्रथम विचार किया था कि १५ दिन के पश्चात् यहां से अन्यत्र की यात्रा करेंगे, उस में श्रीयुत आर्य्यकुल

१. १६ दिसम्बर १८८२ ।

२. मूल पत्र आर्थसमाज मुरादाबाद में सुरिव्तत है।

३. ६ जनवरी १८८३।

४. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरित्तित है।

५. इस का संकेत दुर्गाप्रसाद जी को लिखे गये पूर्ण संख्या ४६१ के पत्र पृष्ठ ३७५ में है । यु॰ मी॰ ।

दिवाकर उदयपुराधीशों के अत्यामह से अब माघ शुक्त १५ पर्यन्त रहना होगा । छः शास्त्रों का विषय तो पढ़ा दिया है । अब मुख्य जो राजनीति का विषय है उस के छिये मनुस्मृति के अं अध्याय से ९वें तक पढ़ावेंगे । यदि अब आप आना चाहें तो हम को पत्र लिखो । जब हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुंच जावे कि अब चलो, सवारी भेज दी है तब वहां से चलना चाहिये । और यदि अब न आया चाहो तो जब रेल पर पहुंचेंगे तब आपको खबर देंगे । उस समय मिलना हो जायगा । पंडित लक्ष्मीदच आदि समासदों से हमारा आशीर्वाद कहियेगा । शुमम् ।

पौष वदी १४ सं० १९३९२।

[ द्यानन्द सरस्वती ]

[6]

पत्र (३९६)

[886]

श्रीयुत देशहितैषी सम्पादक समीपेषु । मान्यवर नमस्ते ।

विद्त होय कि एक पत्र मुन्शी इन्द्रमणि जी के विज्ञापनरूप मेरे पास आया। इसका उत्तर बहुत लम्बा है। परन्तु इस समय इस पत्र के थोड़े से उत्तर को आप अपने पत्र में स्थान देकर मुक्त को कुतार्थ की जिये। यदि मुन्शी इन्द्रमणि जी अपने लेखानुसार सच हों तो उस व्यवहार में अन्यत्र से जितना आय व्यय हुआ हो आपके पत्र (दे० हि०) में अपवा के प्रसिद्ध करें। और इसी प्रकार लाला रामशरनदास जी भी। जिस के देखने से सज्जन लोगों को स्वयं सत्यासत्य का विचार हो जायगा, अर्थात् समक्त लेंगे। और उसी हिसाब के नींचे यह भी लिखा हो कि जिस २ मद्र आर्यजन ने मुन्शी जी और मुसलमान मुरादाबाद के कगड़े में जितने रुपये जिस २ के पास मेजे होयं और जिस २ को रसीद भी उन के पास हो नाम लेख पूर्वक वह २ देशहितैषी पत्र सम्पादक के पास भेजें। और उसत्य सब साम्हने प्रकाशित हो जाय। इस में सत्य तो यह है कि मुन्शी जी जो सूठा अपराध स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और लाला रामशरणदास रहीस मेरठ के ऊपर आरोपित करते हैं, वह सब अपराध मुन्शी जी का है। क्योंकि जब मुन्शी जी पर मैजिस्टरेट मुरादाबाद ने ५००) रु० दण्ड किये थे उसके पश्चात् मुन्शी जी मेरठ में आये (जहां उस समय स्वामी जी भी उपस्थित थे) और कहा कि यह विवाद सब वेदमतानुयाइयों के अपर समक्तना चाहिये, न केवल मुक्तपर रं। इस पर स्वामी जी और अन्य सब सज्जों ने कहा कि यह ठीक है। क्योंकि मुन्शी जी ने वेदमत की रच्ना

१. ग्रर्थात् ऐसे स्थान पर जहां रेल है । यु॰ मी॰ । २. ८ जनवरी सन् १८८३ सोम ।

३. मासिक पत्र देशिहतैषी अजमेर मास माघ सं० १६३६ के अंक १० खरड १ के पृष्ठ २८-३६ से लिया गया। रिजिस्टर देशिहतैषी अजमेर में इस का संकेत हैं। श्री मुझालाल ने ३-१-१८८३ को श्री स्वामी जी को ''मुंशी इन्द्रमिंग के विज्ञापन का खरडन'' लिखने के लिये पत्र लिखा। उसी के उत्तर में यह खरडन श्री स्वामी जी ने लिख कर मेजा। [पूर्ण संख्या ४६६ के पत्र के 'अब इन की सब बातें खुलेंगी' शब्दों का संकेत सम्भवत: इसी उत्तर की ओर है।]

४. बाबू दुर्गाप्रसाद, फरुखाबाद को २५ अगस्त सन् १८८० के पत्र में मुं॰ इन्द्रमन जी लिखते हैं— ''चूंकि वह काम धर्म का है, इस में सब आयों को कोशिश करनी चाहिए।''

के लिये इतना बड़ा परिश्रम किया है। इसलिये इस समय इस मामले में सब वैदिकों को सहाय करना डचिंत है। इस पर सब की यही सम्मति हुई कि इस बात के लिये एक सभा नियत हो और चन्दा इकट्ठा करे। जिस से उस के आय व्यय का हिसाब वह सभा रक्खे। और मुन्शी जी को उस में से इतना धन दिया जाय कि जितना खरच होना उचित होय। अन्त को यह सभा मेरठ में नियत हुई। श्रीर मुन्शी जी से कहा कि जो कोई श्राप के पास रुपये भेजे उन को श्राप भी इस सभा के कोषाध्यत्त लाला रामशर गुदास जी के पास भेज दिया करें । श्रीर उस के श्राय व्यय की परताल (जांच) यह सभा किया करे और हिसाब भी लेवे। इन सब बातों को मुनशी जी ने भी स्वीकार स्वामी जी आदि के सन्मुख किया था। और यह भी उसी समय निश्चय हुआ था कि सिवाय उस सभा के सभासद के दूसरे से उस धन का आय व्यय वा संख्या प्रसिद्ध तब तक न करनी चाहिये कि जब तक यह कार्य पूरा न हो जाय। यदि चंदे का धन कम आवे और खर्च अधिक करना होय तो किसी योग्य धनाट्य पुरुष से सभा उधार लेकर कार्य्य करे। इसी लिये लाला रामशरणदास जी ने जमा धन की संख्या मुन्शी जी को नहीं बतलाई थी। क्योंकि सभाकी त्राज्ञा बतलाने की नहीं थी। इस गुण को मुंशी जी ने दोष समका। धन्य है मुंशी जी की बुद्धिमत्ता को। इससे सव सज्जन लोग समम सक्ते हैं कि यह मुंशी जी को संख्या न वतलाने में लाला रामशरणदास जी का दोष है इस पर क्रोधित होकर यथा तथा कुवाच्य कहने लिखने में मुंशी इन्द्रमणि जी का । इस विपरीत व्यवहार का कारण यह विदित होता है कि जब इधर उधर से बहुत धन मुन्शी जी के पास आने लगा तव लोभ के वंश में होकर जो पूर्वकृत नियम अर्थात् जितना धन मुंशी जी के पास आवे वह मेरठ सभा के कोषाध्यत्त लाला रामशरणदास जी के पास तो भेजना दूर रहा, किन्तु जब लाला रामशरणदास जी ने कई बार पत्र भेज कर हिसाब मांगा तो मुन्शी जी ने मौन साध के हिसाब नहीं दिया। तब लाला रामशरणदास जी को निश्चय हुआ कि मुन्शी जी के मन में कुछ अन्य आशय है। इस बात के निश्चयार्थ लाला श्यामसुन्दर रहीस मुरादाबाद के पास लाला रामशरणदास जी ने पत्र भेजा कि मुन्शी जी से हिसाब पूछ कर मेरे पास भेजो । उनको भी मुन्शी जी ने हिसाब नहीं दिया, किन्तु इस सर्ववैदिक मत के रचार्थ धन को अपना निज धन ही समम लिया। जब से लाला रामशरणदास जी ने मुंशी जी को धन देना बन्द किया और स्वामी जी को पत्र द्वारा विदित किया तब खामी जी ने उत्तर दिया कि इस समय इस बात के होने से कार्य्य में विझ होगा, कार्य होने दीजिये। और ६००) रु० जो मांगते हैं दे दीजिये। तब उन्होंने दे दिये। और इस से अधिक धन मुंशी जी को कितना दियां और कितना लाला रामशरणदास जी के पास जमा रहा यह बात हिसाब छपने से सब को प्रसिद्ध हो जायगी। श्रौर स्वामी जी ने उक्त लाला श्यामसुन्दर कोठी वाछे रहीस मुरादाबाद के पास पत्र भेजा कि मुन्शी जी से हिसाब छेकर छाछा रामशरण-दास जी के पास भिजवा दीजिये। उन्होंने उत्तर दिया कि मुंशी जी हिसाव तो नहीं बतलाते, किन्तु इस विषय में पूछा जाता है तो कुछ भी नहीं कहते। धन्य रे धन, तेरे में वड़ी आकर्षण राक्ति है, कि तू बड़ों २ को भी धर्म से डिगा कर नीचे गिरा देता है। जब देहरेदून से आते समय मेरठ के

१. श्रपने ६ सितम्बर १८८० के पत्र में मुन्शी जी बाबू दुर्गाप्रसाद को पुनः लिखते हैं—''चंदा सब जगह का स्वामी जी के पास जमा हो रहा है। बवक्त जरूरत श्राजावेगा।''

स्टेशन पर लाला रामशरणदासादि से मेल हुआ तब मुन्शी जी के विषय की बात सुन बड़ा आश्चर्य मान के उन से (स्वामी जी ने) कहा कि मैं कोयल इसी लिये ठहरके वहां मुन्शी जी को बुला कर समका दूंगा। स्वामी जी ने कोयल में आकर मुन्शी जी को बुलाने के लिये तार दिया । उस के उत्तर में मुन्शी जी ने तार में खबर दी कि मैं बीमार हूँ। नारायणदास प्रयाग को गया है। अर्थात् मैं नहीं या सकता। पश्चात स्वामी जी ने आगरे में आकर मुन्शी जी के पास पत्र मेजा कि यदि यह बात सत्य है तो इस में आप की बड़ी निन्दा होगी। आप यहां शीघ्र आइये। मुन्शी जी ने बहुत क्रोधित होकर श्रसभ्यवा की बातें जो कि उनके लिखने के योग्य न थीं लाला रामशरणदास जी की निन्दापूर्वक बहुत सी लिखी। श्रीर यह भी उस पत्र में लिखा कि श्राप लाला रामशरणदास जी से हिसाव मंगवाइये। स्वामी जी ने तब लाला रामशरणदास जी को लिखा कि आप हिसाव लिख कर मेरे पास यहां भेज दीजिये। जब मैं आप के हिसाब को मुन्शीजी को दिखला दूंगा तब वे भी अपना हिसाब देंगे। इस के थोड़े ही दिनों के पश्चात् मुनशी जी तथा लाला जगन्नाथदास जी आदि मथुरा होते हुए आगरे में स्वामी जी के पास आए। जब स्वामी जी ने उन से कहा कि हिसाब लाए हो या नहीं, तब मुनशी जी ने कहा कि हां लाये हैं। परन्तु पहले लाला रामशरणदास जी का हिसाब मंगा लो तब हम भी दिखा देंगे। तब स्वामी जी ने कहा कि जब आप के पास हिसाब है तो क्यों नहीं दिखलाते। तब पुनः मुनशी जी श्रीर लाला जगन्नाथदास जी ने कहा कि उन का हिसाब श्राने दीजिये तब दिखलावेंगे। पाठकगणों ! परमेश्वर की कृपा श्रौर लाला रामशरणदास जी सचाई से दूसरे ही दिन मेरठ से हिसाब आ गया। खामी जी ने मुनशी जी तथा लाला जगन्नाथदास जी को दिखला दिया। पश्चात स्वामी जी ने कहा कि श्रव तुम दिखलाश्चो। तब मन्शी जी के कहने से लाला जगसाथदास जी ने वैग को हाथ लगाया। इधर उधर हाथ फेर कर कहा कि वह हिसाब का कागज तो मैं मुरादाबाद ही में भूल आया। सभ्यगणों ! देखो। क्या मिली हुई गुरु चेले की भक्ति है । तब स्वामी जी ने कहा कि जितना आप को स्मरण होय उतना ही कएठ से लिखवाइये। तब मुन्शी जी लिखवाने लगे। अनुमान है कि २०००) दो हजार तक का हिसाब तो लिखवाया। और कहने लगे कि अब मुक्ते याद नहीं है। हम मुरादाबाद पहुंच कर शीघ्र हिसाब भेज देंगे। सी आज तक नहीं भेजा। अब त्राप लोग इन वार्तों से विचार लेंय कि मुन्शी जी सच्चे हैं वा लाला रामशरणदासजी।

तब मुन्शी जी श्रौर लाला जगन्नाथ जी व्यर्थ वितंडावाद करने लगे। श्रौर कहा कि जो २५०) ६० लाला बल्लभदास जी ने भेजे थे सो इस हिसाब में जमा क्यों नहीं। तब स्वामी जी ने कहा कि वे ६पये तो गुरदासपुर में मेरे नाम श्राये थे। मैंने लाला रामसरणदास जी को दिये थे। न जाने उन्होंने जमा क्यों नहीं किये। इस का समाचार मैं लिख कर मंगवा दूँगा। स्वामी जी ने उसी दिन छाछा रामसरनदास जी को पत्र छिख उत्तर मंगवाया। तब उन्हों ने लिखा कि यह मेरे मुन्शी की भूल से लाहौर के ६पयों के साथ गुरदासपुर के भी २५०) ६० जमा लिखे गये हैं। श्र्यांत जिस दिन १५०) ६० लाहौर समाज से श्राये थे। उसी दिन २५०) के नोट श्रापने भी दिये

१. कोयल—ग्रालीगढ़ का नाम है। कोयल ग्रायांत् ग्रालीगढ़ जाने का वृत्त पं० लेखराम, पं० घासी-राम, स्वामी सत्यानन्द ग्रादि किसी ने नहीं लिखा। इस लेख से निश्चत हो जाता है कि श्री स्वामी जी कुछ, दिन कोयल में रहे।

थे। भूल से ४००) रु० लाहौर समाज के नाम माज किये गये हैं। श्रव मुन्शी जी इस का निश्चय करें वा करावें। अर्थात् इन २५०) रु० के सिवाय किसी ने स्वामी जी के पास रुपया नहीं भेजा । यदि भेजा ही तो जिस के पास स्वामीजी के हस्ताचर रसीद होगी, भले ही प्रसिद्ध से छपवा देवे । किन्तु स्वामी जी की कुछ इस में विपरीत बात हो तो स्वामी जी प्रतिज्ञा पूर्वक कहते हैं कि सिवाय २५०) रुपयों के मेरे पास एक कौड़ी किसी की नहीं आई। क्योंकि जो कोई स्वामी जी से पूछता वा पत्र भेजता था तो स्वामी जी यही उत्तर देते थे कि जो भेजना हो सो लाला रामशरणदास जी के पास मेरठ सभा को भेजो। क्योंकि उसी सभा के आधीन यह सब प्रबन्ध है। इस उत्तम प्रबन्ध को तोड़ने वाले मुन्शीजी हैं, कि जिन्होंने भारतिमत्रादि समाचारों में अपना मतलब सिद्ध करने के लिए श्रंड बंड छपवा कर स्वप्रयोजन सिद्ध किया। श्रीर श्रपनी प्रशंसा पर बट्टा लगाया। शोक है कि यह धन बुरी वला है, जो बड़े २ चतुरों को भी फंसा लेती है। उसी दिन स्वामी जी ने मुनशी जी से कहा कि हिसाव ठीक २ मेरठ सभा में भेज दीजिये। जो एक नियम हुआ है उसका तोड़ना अच्छा नहीं। श्राप पूर्वकृत नियमानुसार वर्तिये, जिस से प्रीतिपूर्वक सब सहायक रहें। इसी में श्रच्छा है। विरोध होना अच्छा नहीं। तब तो मुन्शी जी और लाला जगन्नाथदास जी दोनों क्रोधाविष्ट होकर कहने लगे कि हम से हिसाब लेने वाला कीन है। इस के मालिक हम हैं। हमारे पर यह सब मामला चला है। हमारे नाम चन्दा आता है। जो आता है हमारा ही है। और लाला जगन्नाथदास जी बोले कि यदि आप से कोई वैदिक यन्त्रालय का हिसाब पूछे, क्या आप देंगे ? स्वामी जी ने कहा कल लेने श्राज ही लो। यहां कोई बात गुप्त नहीं। किन्तु जब कोई आर्य्य समाज का प्रतिष्ठित सभासद् हिसाब लेना चाहे उसको कोई घटकाव नहीं है। तब स्वामी जी ने मुन्शी जी को एकांत में ले जाके समसाया कि ऐसी बात करना आप को उचित नहीं हैं। एक तो वह बात थी जो मेरठ में आपने कही थी कि यह सब वैदिक धर्म वालों का मामला है। मेरा श्रकेले का नहीं और इस से विरुद्ध श्राज की बात है कि मेरे ही अकेले का मामला आदि है। सुनिये मुनशी जी यदि मैं आप को पहले से ऐसा जानता तो श्रापके साथ एक चएए मात्र भी न ठहरता और श्राप का कुछ भी समर्थ नहीं था कि अकेले इस प्रकार का सहाय प्राप्त कर सकते। अस्तु मैं तो उसी बात को समभता हूं कि यह सब वैदिकमतानुयायियों के साथ की बात है। तब तो मुन्शी जी कुछ शान्त हुए। तब स्वामी जी ने कहा कि अब शेष कार्य्य श्राप सिद्ध कीजिये। श्रीर प्रयाग में एक दो पुरुषों का नाम लिखवाया कि उन की सम्मति से सब काम की जियेगा। श्रीर मुरादाबाद पहुंच के हिसाब मेरठ में शीघ्र भेज दी जियेगा । मुन्शी जी ने कहा कि जाते ही भेज दूँगा। सो भी न किया और न हिसाब भेजा। करते और भेजते तब, जब उन के मन में शुद्ध भाव होता। किंतु वहां प्रयाग में भी गुप्त व्यय कर कराके जैसा कि मुरादाबाद जजी में व्यय व्यवस्था हुई थी वैसे ही प्रयाग से करा अपनी नीयत का फल पा कर चले आये। फिर भी न जाने किस २ सज्जन पुरुष के पुरुषार्थ से श्रीमान् गवर्नर जनरल साहब बहादुर से प्रार्थना करके १००) ह० का दरा भी माफ करायां गया। यदि अब भी मुनशी जी अपनी बात को सचा करना चाहें तो उस मुसलमानों के साथ के मामले में जहां २ से जितना २ धन जिस २ ने भेजा उनका नाम ठिका-नादि सहित लिख श्रौर जितना २ जिस २ कार्य में व्यय हुआ हो प्रसिद्ध सब समाचारों में छपवादें। श्रीर जितना धन उस मामले के विषय में व्यय से शेष रहा ही उसको मेरठ सभा में भेज देवें।

क्यों कि जो मेरठ सभा का वह निश्चित हुआ था कि यदि मुंशी जी के मामले से चन्दे का धन बचे तो उसका क्या किया जाय। इस पर सब की यही सम्मित हुई थी कि उस धन को ॥) आने व्याज में किसी धनाट्य के पास रक्खा जाय और जब २ अन्य मतावलिबयों के साथ वैदिक आयों का विवाद राजन्याय घर में चले तब उसी में इसका व्यय किया जाय अन्यत्र नहीं। क्योंकि यह धन इसी बात के लिए इकट्ठा किया जाता है। और जैसा आज मुंशी जी पर कष्ट पड़ा है सम्भव है कि अन्य पर भी कभी न कभी आ पड़े। इस लिए इस धन की स्थिरता और उन्नति सदा करते जाना चाहिये। परन्तु पाठकगणो इस महोपकारक कार्य को मुंशीजी के लोभ ने बढ़ने न दिया। अब बुद्धिमान लोग विचार कर लेवें कि कि इस में स्वामी जी और लाला रामशरणदास जी का अन्यथा व्यवहार है वा मुन्शी इन्द्रमणि जी का। अधिक लिखना बुद्धिमानों के साम्हने आवश्यक नहीं। क्योंकि प्राज्ञ जन थोड़े ही लेख से बहुत समक लेते हैं। अलमितविदस्तरेण बुद्धिमहर्वेषु।

निधिरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे पौषंमासे सिते दले। प्रतिपत् सौम्यवारे हि पत्रमेतदलेखिषम् ॥१॥

सम्वत् १९३९ पौष शुक्ले १ बुधवासरे ।।

वही आप का परम मित्र उचित वका<sup>२</sup>

[६]

पत्र-सूचना (३९७)

[४६९]

[सेवकलाल कृष्णदास मन्त्री आर्यसमाज मुन्बई<sup>3</sup>] घड़ी भेजो। गोरचा की सही के कागज भेजो। समाजस्थान का सब हिसाब भेजो। विट्ठल का लेना देना चुका दो।

१७ जनवरी १८८३ ।

[१२]

पत्र-सारांश (३९८)

[008]

[श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी, फरुखाबाद] कहार खोर रसोइया तथा शोधक खौर कोषाध्यत्त के लिए ।

१. १० जनवरी सन् १८८३।

२. देखो पु॰ ३७६ की टिप्पणी ३। यु॰ मी॰।

३. इस पत्र का संकेत श्रीर श्रमिप्राय म० मुन्शीरामकृत पत्र व्यवहार प्० २६८ पर है।

४. पौष शुक्ल ६, सं० १६३६, बुधवार । यु० मी० ।

प्. इस पत्र का संकेत ४ मार्च १८८३ (=फा० व० १० सं० १६३६) के पत्र में (पृष्ठ ३६१) है। यु॰मीo

३८४

[88]

[४७१] ्त्रोरम्<sup>9</sup>ं कि सम्बन्धि सम्बन्धि

मुंशी समर्थदान जी आनन्दित रहो—

विदित हो कि कई एक पत्र भेज चुके हैं?। एक का भी प्रत्युत्तर नहीं मिला, क्या कारण है ? तुम्हारा शरीर तो स्वस्थ है ? जैसा हो वैसा शीघ्र लिखो । श्रौर भेजे हुए पत्रों का भी उत्तर भेजना । आज अत्यन्त अयोग्यता के कारण भीमसेन को सब दिन के लिए निकाल दिया है। डसको मुख न लगाना । लिखे लिखावे तो कुछ ध्यान न देना ॥

पाना मार्ग वदी। ५ रवि<sup>3</sup>। पाना का काल मह की विवास . जद्यपुर । व्यान विकास के वि

[2]

पत्र-सूचना (४००)

ि४७२

[ब्रानन्दीलाल जी (?) मन्त्री ब्रा० स० मेरठ] गुरुदासपुर के १५०) रु० के सम्बन्ध में ।

[3]

पत्रांश (४०१)

[803]

[भाई जवाहरसिंह मन्त्री आर्यसमाज लाहौर 4] हम मद्रास्थों को भूल रहे हैं। उधर जाना उत्तम होगा। १७ फरवरी १८८३ से पहले।

[8]

पत्रांश (४०२)

SOR

[माई जवाहरसिंह मन्त्री आर्थसमाज लाहौर4]।

एक अन्तरङ्ग मन्त्री शाहपुरा राज्य के लिए चाहिये। एक अोवरसियर भी चाहिए। "यह देश के हित का काम है। ... ... जिन के भाग्य होंगे वह आयेंगे।"

१७ फरवरी से पहले।

१. त्रार्यंघर्मेन्द्रजीवन तृतीय संस्करण, पृ० ३७६ पर मुद्रित । मूल पत्र परोपकारिणी सभा त्राजमेर में सरिवत होगा।

२. इस से पूर्व का मार्ग शु॰ १० सं० १६३६ (=१६ दिस॰ १८८२) का पत्र पृष्ठ ३७७, ३७८ पर

छप चुका है। उस के बाद के पत्रों की स्त्रोर यह संकेत है। ये पत्र प्राप्त नहीं हुए। यु० मी०।

३. २८ जनवरी १८८२ । त्रार्थधर्मेन्द्र में भूल से 'मार्ग' लिखा है, [मार्ग वदी ५ को बुधवार था । मार्ग शु॰ ५ को शुक्रवार । श्रत यहां नाघ चाहिये।

४. श्रार्यसमाज मेरठ के रिजस्टर (जो लाहीर में नष्ट हो गया) में श्रन्तरङ्ग सभा १५ फरवरी १८८३

के विषय में लिखा है।

''श्री स्वामी जी महाराज का खत पेश होकर तजवीज हुई कि गुरदासपुर समाज के १५०) रूपये की बाबत खबर मंगानी चाहिये"। यह पत्र जनवरी १८८३ के स्नन्त में उदयपुर से मेजा गया होगा। यु॰ मी॰।

प. इस पत्र का संकेत म० मुन्शीराम सम्पा० पत्र व्यवहार प० ११६ पर है।

चदयपुर, सं० १९३९]

पत्र (४०५)

३=५

[33]

कार्ड (४०३) श्रो३म

[804]

श्रार्थवर श्री बाबू रूपसिंह जी योग्य रामानन्द ब्रह्मचारी का श्राशीर्वाद विदित हो। जगदीश की कृपा से यहां सब प्रकार श्रानंद मंगल है। श्राशा है कि तुम्हारे यहां भी सब प्रकार से कुशलता होगी। श्रव श्रीयुत जगद्गुरु श्री स्वामी जी यहां उदयपुर से फाल्गुन शुदी अ गुरु सम्वत् १९३९ को यात्रा श्रजमेर की श्रोर करेंगे, सो जानना। श्रागे जहां जाके निवास करेंगे सो तुम को लिखंगा। बहुत दिनों से तुम ने श्रपना कुशल पत्र नहीं दिया। इस में क्या कारण हुश्रा। श्रव श्राप इस पत्र के पहुंचते ही श्रपना कुशल पत्र भेजना। क्या मैंने एक वार तुम को लिखा था कि मैं श्री गुरु जी के पास से जाने वाला हूं, इस बात से न भेजा हो। परन्तु जिस वात के न होने से मैं जाना चाहता था श्रर्थात् पठन [न] होने से भे सो दयानिधि गुरु जी ने मेरे पढ़ने के लिये श्राधा दिन दे दिया है। सो बड़ा पढ़ना होता है। श्रव श्रष्टाध्यायी के ५ श्रध्याय कंठ हो गये हैं। ६ श्रध्याय पढ़ता हुं। श्री गुरु जी का श्राशीर्वाद विदित हो॥

मिति माघ शुदी १२ रवि० सं० १९३९३।

रामानन्द ब्रह्मचारी खदयपुर।

[8]

पत्रांश (४०४)

[808]

[डी० रे० ए० राजा पाकसा कापनिया वालनवा मालापित मदुरा-लङ्का ] मुक्ते यह जनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्राप लंका के एक प्रतिष्ठित परिवार के हैं । २७ फरवरी [सन् १८८३]।

[93]

पत्र-सारांश (४०५)

[SOB]

[श्री बाबू दुर्गाप्रसाद जी फरुखाबाद]

रामनाथ कौन है, क्या पढ़ा है और नागरी लिखना जानता है वा नहीं। श्रीर हमारे साथ कब रहा है। कौन वर्ण है। कहां का रहने वाला है श्रीर मुरादाबाद वाले के लिये लिखा था कि जब तक बड़ा हानिकारक श्रपराध न करे न निकाला जायगा। सो भी श्राप के श्राधीन निकालना वा रखना होगा ।

१. "बदी" चाहिये। १ मार्च १८८३ को चले। देखो पत्र पूर्ण संख्या ४८० (पृष्ठ ३६०)।

२. इसका संकेत पूर्ण संख्या ४४७ के पत्र में 'दूसरा प्रयोजन' के अन्तर्गत है। यु॰मी॰।

३. १८ फरवरी सन् १८८३ । मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरित्ति है।

४. देखो मास्टर लक्ष्मण जी सम्पादित उर्दू जी॰ चरित परिशिष्ट पृष्ठ २७६ ( यहां पृष्ठ संख्या अशुद्ध छपी है २६३ चाहिये )। यु॰ मी॰।

प्र, यह सारांश ४ मार्च १८८३ (=फा० व० १० सं० १६३६) पूर्ण संख्या ४८२ के पत्र में निर्दिष्ट है।

[3]

स्वीकार-पत्र' ॥ श्रीरामजी ॥ 806

परमहंसपरिवाजकाचर्य श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृत स्वीकारपत्र की प्रति॥

**पाजकीय** 

आज्ञा ( राज्ये श्रीमहद्राजसभा ) संख्या २९०

श्राज यह स्वीकारपत्र श्रीमान श्री १०८ श्रीजी घीरवीर चिरप्रतापी विराजमानराज्ये श्रीमहद्राजसभा के सम्मुख खामीजी श्री द्यानन्द्सरस्वतीजी ने सर्वरीत्या श्रङ्गीकार किया श्रत एवः—

### आज्ञा हुई--

कि प्रथम प्रति तो इस स्वीकारपत्र की स्वामीजी श्री द्यानन्द्सरस्वतीजी को राज्ये श्री महद्राजसभा के हस्ताचरी और मुद्राङ्कित दी जावे और दूसरी प्रति उक्त सभा के पत्रालय में रहे और एक एक प्रति इसकी राज यन्त्रालय में मुद्रित होकर इस स्वीकारपत्र में लिखे सब सभासदों के पास खन के ज्ञातार्थ ख्रीर इसके नियमानुसार वर्तने के लिये भेजी जाये, संवत् १९३९ फाल्गुन शुक्का<sup>२</sup> प मङ्गलवार तद्नुसार ता० २७ फेब्रुएरी सन् १८८३ ई०।

हस्ताक्षर महाराणा सज्जनसिंहस्य (श्रीमेद्पाटेश्वर और राज्ये श्रीमहद्राजसभापति)

राज्ये श्रीमहद्राजसभा के सभासदों के हस्ताचर-

१ राव तस्त्रसिंह वेदले

२ राव रत्नसिंह पारसोली

. ३ द० महाराज गजसिंह का

४ द० महाराज रायसिंह का

५ हस्ताच्र मामा बख्तावरसिंहस्य

६ द० राणावत उदयसिंह

७ इस्ताचर ठाकुर मनोहरसिंह

- ८ हस्ताचर कविराज श्यामलदासस्य
- ९ हस्ताचर सहीवाला अन्जूनसिंह का

१० दा० रा॰ पन्नालाल

११ ह० पुरेहित पद्मनाथस्य

१२ जा० मुकुन्दलाल

१३ ह० मोहनलाल परङ्या

- १. प्रथम स्वीकार पत्र की रजिस्ट्री १० अगस्त १८८० (=आवण शु०४ मङ्गलवार सं०१६३७) के दिन मेरठ में हुई थी। वह पूर्ण संख्या २६४ पृष्ठ २१७-२२० पर छुपा है। यह दूसरा तथा अन्तिम स्वीकार पत्र है। मूल राजयन्त्रालय उदयपुर में मुद्रित स्वीकार पत्र हमारे संग्रह में स्रिच्ति है।
- २. यहां भूल से "कृष्णा" के स्थान में 'शुक्ला' छपा है। कृष्णा ५ चाहिये। क्योंकि २७ फरवरी को फाल्गुन कृष्णा ५ मङ्गलवार था। फाल्गुन शुक्ला ५ को भी मङ्गलवार था, परन्तु उस दिन तारीख १३ मार्च थी। अगले फाल्गुन वदी १० (पूर्ण संख्या ४८०, पृष्ठ ३६०) के पत्र से भी इस भूल पर प्रका्श पड़ता है उस में लिखा है-"इम उदयपुर से फाल्गुन वदी ७ गुरुवार के दिन ""चले । गत पञ्चमी मङ्गलवार के दिन सायंकाल ७ वजे .....स्वीकारपत्र ......शीमानों के हस्ताच् श्रीर राजकीय मोहर लगा कर ..... यु०मी०।

स्वीकारपत्र ॥

मैं स्वामी द्यानन्द्सरस्वती निम्नलिखित नियमानुसार त्रयोविंशति सज्जन आर्थ्यपुरुषों की सभा को वस्न, पुरतक, धन और यन्त्रालय आदि अपने सर्वस्व का अधिकार देता हूं और उस को परोपकार सुकार्य में लगाने के लिये अधिष्ठाता करके यह पत्र लिखे देता हूं कि समय पर कार्यकारी हो। जो यह एक सभा कि जिसका नाम परोपकारिणीसभा है उस के निम्नलिखित त्रयोविंशति सज्जन पुरुष सभासद् हैं उन में से इस सभा के सभापतिः—

१ श्रीमन्महाराजाधिराज महीमहेन्द्र यावदार्थ्यकुलिद्वाकर महाराणा जी श्री १०८ श्रीसज्जन-सिंहजी वम्मी धीरवीर जी० सी० एस० आई० उदयपुराधीश हैं, उदयपुर राज मेवाड़ ।

२ जपसभापित लाला मूलराज एम० ए० एक्स्ट्रा एसिस्टेग्ट किमश्रर प्रधान आर्य्यसमाज लाहौर जन्मस्थान लुधियाना ।

३ मन्त्री श्रीयुत कविराज श्यामलदासजी खद्यपुर राज मेवाङ ।

४ मन्त्री लाला रामशरणदास रईस उपप्रधान श्रार्यसमाज मेरठ।

प् उपमन्त्री पण्ड्या मोहनलाल विष्णुलालजी निवास उदयपुर जन्मभूमि मथुरा।

#### सभासद्।

नाम

स्थान

- १ श्रीमन्महाराजाधिराज श्री नाहरसिंहजी वर्मा शाहपुरा राज मेवाड़
- २ श्रीमत् राव तख्नसिंहजी वन्मी बेदला राज मेवाड
- ३ श्रीमत् राज्य राणा श्रीफतहसिंहजी वम्मी देलवाड़ा राज मेवाड़
- ४ श्रीमत् रावत अर्जुनसिंहजी वर्मा आसींद राज मेवाड़
- प् श्रीमत् महाराज श्रीगजसिंहजी वस्मी उदयपुर मेवाइ
- ६ श्रीमत्राव श्री बहादुरसिंहजी वम्मी मसूदा जिले अजमेर
- ७ राववहादुर पं० सुन्दरलाल सुपरेंटेंडेंट वर्कशोप श्रीर प्रेस श्रलीगढ़ श्रागरा
- ८ राजा जयकृष्ण्दास सी० एस० आई० डिपुटी-कलक्टर विजनौर मुरादाबाद
- ९ बाबू दुर्गाप्रसाद कोशाध्यच आर्य्यसमाज व रईस फर्रुखाबाद
- १० लाला जगन्नाथप्रसाद रईस फर्रुखाबाद
- ११ सेठ निर्भयराम प्रधान आर्थ्यसमाज फर्रुखाबाद विसाऊ राजपृताना
- १२ लाला कालीचरण रामचरण मन्त्री आर्यसमाज फर्रुखावाद
- १३ बाबू छेदीलाल गुमाश्ते कमसर्यट छावनी मुरार कानपुर
- १४ लाला साईदास मन्त्री श्रार्थ्यसमाज लाहौर
- १५ बाबू माधवदास मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर
- १६ रावबहादुर रा० रा० पण्डित गोपालराव हरि देशमुख मेम्वर कौन्सिल गवर्नर बम्बई श्रीर प्रधान श्रार्घ्यसमाज बम्बई पूना
- १७ राव बहादुर रा० रा० महादेव गोविन्द रान्डे जज्ज पूना
- १८ एं.० श्यामजीकृष्ण वर्मा प्रोफेसर संस्कृत यूनीवरसिटी आक्सफोर्ड लंडन बम्बई

## ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञापन

#### नियम ।

१ उक्त सभा जैसे कि वर्त्तमानकाल वा आपत्काल में नियमानुसार मेरी और मेरे समस्त पदार्थों की रज्ञा करके सर्वहितकारी कार्य में लगाती है, वैसे मेरे पश्चात् अर्थात् मेरे मृत्यु के पीछे भी लगाया करे:—

प्रथम-वेद और वेदाङ्गादि शास्त्रों के प्रचार श्रर्थात् उनकी व्याख्या करने कराने पढ़ने पढ़ाने

सुनने सुनाने छापने छपवाने आदि में ॥

द्वितीय-वेदोक्त धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशकमंडली नियत करके देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में भेज कर सत्य के प्रह्ण और असत्य के त्याग कराने आदि में।। तृतीय-आर्यावर्त्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण पोषण और सुशिक्षा में व्यय करे और करावे।।

- २ जैसे मेरी विद्यमानता में यह सभा सब प्रबन्ध करती है वैसे मेरे पश्चात् भी तीसरे वा छठे महीने किसी सभासद् को वैदिक यन्त्रालय का हिसाब किताब समभने छौर पड़तालने के लिये मेजा करे और वह सभासद् जाकर समस्त आय व्यय और संचय आदि की जांच पड़ताल करे और उनके तले अपने हस्ताच्चर लिखदे और उस विषय का एक २ पत्र प्रति सभासद् के पास भेजे और उसके प्रबन्ध में कुछ हानि लाभ देखे उस की सूचना अपने भी परामर्श सहित प्रत्येक सभासद् के पास लिख कर मेजदे और सभापित सब की सम्मित से यथोचित प्रतन्ध करे और कोई समासद् अस्त विषय में आलस्य अथवा अन्यथा व्यवहार न करे।
- ३ इस सभा को उचित है किन्तु अत्यावश्यक है कि जैसा यह परमधर्भ और परमार्थ का कार्य है उसको वैसा ही उत्साह, पुरुषार्थ, गम्भीरता और उदारता से करे।
- ४ मेरे पीछे उक्त त्रयोविशति आर्यवनों की सभा सर्वधा मेरे स्थानापन्न सममी जाय आर्थात् जो अधिकार मुमे अपने सर्वस्व का है वही अधिकार सभा को है और रहे। यदि उक्त सभासदों में से कोई इन नियमों से विरुद्ध स्वार्थ के वश होकर वा कोई अन्य जन अपना अधिकार जताने तो वह सर्वधा मिथ्या सममा जाय।
- प् जैसे इस सभा को अपने सामध्ये के अनुसार वर्त्तमान समय में मेरी और मेरे समस्त पदार्थों की रच्चा और उन्नित करने का अधिकार है वैसे ही मेरे मृतक शरीर के संस्कार करने कराने का भी अधिकार है अर्थात् जब मेरा देह छूटे तो न उस को गाड़ने, न जल में बहाने, न जङ्गल में फेंकने दे, केवल चन्दन की चिता बनावे और जो यह सम्भव न हो तो दो मन चन्दन, चार मन घी, पांच सेर कपूर, ढाई सेर अगर तगर और दश मन काष्ठ लेकर वेदानुकूल जैसे कि संस्कारविधि में लिखा है वेदी बनाकर तदुक्त वेदमन्त्रों से होम करके भस्म करे इस से भिन्न कुछ भी वेदविरुद्ध किया न करे और जो सभाजन उपस्थित न हों तो जो कोई समय पर उपस्थित हो, वही पूर्वोक्त किया कर दें और जितना धन उसमें लगे उतना सभा से ले ले और सभा उसको दे दे।।
  - ६ अपनी विद्यमानता में और मेरे पश्चात् यह सभा चाहे जिस सभासद् को पृथक् कर के उसका प्रतिनिधि किसी अन्य योग्य सामाजिक आर्य प्रकृष को नियत कर सकती है, परन्तु कोई सभासद्

सभा से तव तक पृथक् न किया जाय, जव तक उसके कार्य में अन्यथा व्यवहार न पाया जाय ॥

७ मेरे सहरा यह सभा सदैव स्वीकारपत्र की व्याख्या वा उस के नियम छौर प्रतिज्ञाओं के पालन वा किसी सभासद् के पृथक् छौर उस के स्थान में छन्य सभासद् के नियत करने वा मेरे विपत् छौर छापत्काल के निवारण करने के उपाय छौर यह में वह उद्योग करें, जो समस्त सभासदों की सम्मति से निश्चय छौर निर्णय पाया वा पावे छौर जो सम्मति में परस्पर विरोध हो तो बहुपत्ता- नुसार प्रबन्ध करे छौर सभापति की सम्मति को सदैव द्विगुण जाने।।

द किसी समय भी यह सभा तीन से अधिक सभासदों को अपराध की परी हा कर पृथक्

न कर सके, जब तक पहिले तीन के प्रतिनिधि नियत न करले।।

९ यदि समा में से कोई पुरुष मर जाय वा पूर्वोक्त नियमों श्रीर वेदोक्त धर्मों को त्याग कर विरुद्ध चलने लगे तो इस समा के समापित को उचित है कि सब समासदों की संमित से पृथक् करके उसके स्थान में किसी श्रन्य योग्य वेदोक्त धर्मयुक्त श्रार्थ पुरुष को नियत करदे, परन्तु जब तक नित्यकार्य के श्रनन्तर नवीनकार्य का श्रारम्भ न हो।

१० इस सभा को सर्वथा प्रवन्ध करने और नवीनयुक्ति निकालने का अधिकार है, परन्तु जो सभा को अपने परामर्श और विचार पर पूरा २ निश्चय और विश्वास न हो, पत्र द्वारा समय

नियत करके संपूर्ण आर्यसमाजों से सम्मित ले ले और बहुपचानुसार उचित प्रबन्ध करे।।

११ प्रवन्ध न्यूनाधिक करना वा स्वीकार वा अस्वीकार करना वा किसी सभासद् को पृथक् वा नियत करना वा आय व्यय और संचय का जांच पड़ताल करना आदि लाभ हानि सव सभासदों को वार्षिक वा षायमासिक पत्र द्वारा सभापति छपवा कर विदित करै।

१२ इस स्वीकार पत्र सम्बन्धी कोई मागड़ा टंटा सामयिक राज्याधिकारियों की कचहरी में निवेदन न किया जाय। यह सभा अपने आप न्यायव्यवस्था करले, परन्तु जो अपनी सामर्थ्य से वाहर हो तो राज्यगृह में निवेदन करके अपना कार्य सिद्ध करले।

१३ यदि मैं अपने जीते जी किसी योग्य आर्य्यजन को पारितोषिक अर्थात् पेनशन देना चाहूं और उसकी लिखित पढ़त कराके रजिस्टरी करा दूँ तो सभा को उचित है कि उसको माने औरदे।

१४ किसी विशेष लाभ उन्नति परोपकार और सर्वहितकारी कार्य के वश मुक्ते और मेरे पीछे सभा को पूर्वोक्त नियमों के न्यूनाधिक करने का सर्वथा सदैव अधिकार है।।

ह० द्यानन्द्सरस्वती

[4]

पत्र-सूचना (४०६)

[४७२]

[ भाई जवाहरसिंह मन्त्री आर्थसमाज लाहौर ] वैदिक यन्त्रालय के सहाय में लाहौर समाज से कितना रुपया गया था?। लगभग ४ मार्च १८८३। [चितौड़गढ़]

१. इस पत्र का संकेत म॰ मुन्शीरामकृत पत्रव्यवहार पृ॰ १२६ पर है। वह पत्र १६ मार्च को लिखा गया। उक्त पत्रानुसार ⊏ दिन पहले श्री स्त्रामी जी का पत्र ऋा चुका था।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रौर विज्ञापन

[88]

पत्र (४०७) खोश्म<sup>9</sup>

[860]

मुन्शी समर्थदानजी आनन्दित रहो-

हम उदयपुर से फाल्गुन बदी ७ गुरुवार के दिन घड़ी रात से राज की चार घोड़े की डाक बग्गी में चल के शाम के ५ बजे नीमाहेड़े पहुंकर ९ बजे रात के चित्तीड़ में पहुंच गये, रेल मैं बैठकर। यहां तीन दिन ठहरेंगे। पश्चात् जहां जायेंगे तुम को खबर देंगे। अब उदयपुर का वर्त्तमान लिखते हैं। जब से हम उदयपुर में पहुंचे उस दिन से बहुत आनिन्दत रहे। और नित्य प्रीति श्रीमान महाशयों की बढ़ती ही गई। मनुस्मृति के सप्तम, ऋष्टम, नवम पर्यन्त राजधर्म सब याथातथ्य पढ़ लिये। अन्य बहुत से महाभारतस्थ विदुरप्रजागर तथा ६ शास्त्रों के मुख्य २ विषय और चलते वक्त थोड़ा सा व्याकरण का विषय और अन्वय की रीति भी पढ़ ली। जैसा कि राजाओं को सत्यप्रतिज्ञ श्रीर पुरुषपरीत्तक श्रीर गुण्ज तथा स्वगुण स्वदोष के मानने वाले होने चाहियें, वैसे श्रीमान महारायार्घ्यकुलदिवाकरों को मैंने देखा। बहुत से राजा मुक्त से मिले, परन्तु जैसी प्रसन्नता मेरी श्रीर **उदयपुराधीश की परस्पर रही और आगे के लिये भी दृढ़ रहेगी, वैसी अन्य से बहुत न्यून सम्भावना** है। अब जिस समाचार को तुम पूछा करते थे वह निम्नलिखित जानो । संस्कृत के अपने जो कि वेदाङ्गप्रकाशादि हैं उन का प्रचार राजकीय पाठशाला तथा चारणों की पाठशाला में कर दिया है।

वों जो प्रसिद्ध वा रहस्य में राजधर्म, ईश्वर तथा वैदिकधर्म प्रचार, श्रीर शरीर, राजनीति आदि विषयों में उपदेश मैंने किया है उस का आचरण बहुत सा कर लिया और करने की प्रतिज्ञा भी की है।

गत पश्चमी मङ्गळवार के दिन³ सायंकाळ ७ बजे बड़े २ सर्दार तथा कामदारों की सभा बुला के स्वीकारपत्र जो कि मेरठ में हम ने रिजस्टर कराया था, उस में से एच० एच० कर्नल आलकाट साहब, तथा एच० पी० ब्लैवस्टकी, मुन्शी इन्द्रमणी को पृथक् कर दिये, और डाक्टर विहारीलाल जी का शरीर छूट गया, इन के ठिकाने में अन्य [चार तथा ] पांच सभासद् और बढ़ा दिये अर्थात् प्रथम अठारह थे, अब तेईस हो गये। उन में से सभापति श्रीमान् आर्थ्यकुलदिवाकर श्रीयुत महाराणा जी श्रीर उपसभापति लाला मूलराज एम० ए०, मन्त्री कविराज श्यामलदास जी आदि नियत हुए हैं। उस की एक प्रति श्रीमानों के हस्ताचर और राजकीय मोहर लगा कर सब ने माननीय प्रतिष्ठित माना है। यह बात महा लाभदायक और बहुत बड़ा काम देगी। श्रव सरकारी राज में भी इस की रजिस्टरी करालें, सो रजवाड़ों में और अंगरेजी राज में भी बड़ा माननीय होगा।

१. श्रार्वधर्मेन्द्रजीवन तृतीय संस्करण. पृष्ठ ३७१, ३७२ से लिया गया । मूल पत्र परोपकारिणी सभा श्रजमेर में होगा।

२. क्या रहस्य शब्द से अभिप्राय पूर्ण संख्या ४५६ पृष्ठ३६६ - २७५ पर मुद्रित दिनचर्या से है ? यु॰मी॰ ३. यह पत्र फाल्गुन वदी, १० का है, अतः यहां गत पञ्चमी मङ्गलवार से अभिप्राय फाल्गुन वदी ५ (२७ फरवरी १८८३) से है। पूर्ण संख्या ४७८ (पृष्ठ ३८६-३८६) पर जो स्वीकारपत्र छुपा है, उसमें फाल्गुन शुक्ला ५ मङ्गलवार (२७ फरवरी) लिखा है, वह अशुद्ध है। यह इस पत्र से भी व्यक्त है। यहां पष्ठ ३८६ की टि॰ २ भी देखें । यु॰मी॰ ।

श्रीर राजकीय यन्त्रालय उद्यपुर में छपकर समासदों के पास एक २ प्रति पहुंचेगी । श्रीर जियादह छपेंगी तो श्रन्य योग्य पुरुषों के पास भेज दी जायंगी। यह तुम्हारे पास इस लिये भेजते हैं कि श्रपने परामर्श, श्रनुमित श्रीर महाराणा जी को धन्यवाद लेखपूर्वक-पत्र श्रन्त में, श्रीर श्रादि में, यह स्वीकारपत्र श्रच्छे काराज पर श्रीर श्रच्छे टैंप में छपवा कर योग्य २ वेदमाध्य के प्राहक श्रीर भारतिमित्रादि समाचारपत्र श्रीर मुख्य २ पुस्तकालय में भेजदो । श्रीर जब छप चुकेगा तब हम भी लिखेंगे कि फलाने २ के पास भेजदो ।

श्रीर एक पत्र हमारे पास श्राने वाला है कि उस को एक श्राच्छे कागज पर छाप कर तुम को सब श्राच्येसमाजों के पास भेजना होगा। श्रीर वे श्रीमान महाराणा जी के पास भेज देंगे। श्रीर कुछ २ श्रपने श्रानन्द प्रदर्शक वार्ते लिख कर भेजेंगे तो श्रच्छा होगा।

वारह सौ रुपये कलदार धर्मार्थ वेदभाष्य के सहाय में, एक दुशाला मुक्तको, तथा पांच सौ रुपये कलदार आर्घ्यसमाज फीरोजपुर के अनाथाश्रम के लिये, और सौ रुपये कलदार वहां जो लड़िक्यां कसीदा का काम करती हैं उनको पारितोषिक के लिये, और सौ रुपये कलदार और साधारण दुशाला रामानन्द ब्रह्मचारी को दिया। अर्थात् उन्नीस सौ कलदार रुपये और दो वस्त्र प्रदान किये।

इन बारह सो रूपयों को उन्हीं के पास रक्खे हैं। इस प्रयोजन के लिये कि इस मुख्यस्थान से प्रधान वैदिकधर्म प्रचार होवे और उस को पूर्ण सहाय मिले। इस का नाम वैदिकिनिध रक्खा है। और मेरे नाम से स्थापित हुआ, ऐसा खाता राजकोष में और महद्राज सभा में लिखित हो गया। इत्यादि सब उत्तम बातें वहां की यात्रा से हुई जिस को तुम सुन कर बड़े आनिन्दित होगे। इस लिए प्रथम तुम को लिखा। इस के आगे जो २ वर्त्तमान होगा तुम को लिखा जायगा। और गोरचा में भी पूरा सहाय निश्चत मिलेगा।

चितौड्गढ्

मि० फाल्गुन वदी १० रविवार सं० १९३९ तद्नुसार ता० ४ मार्च सन् १८८३

(द्यानन्द् सरस्वती)

[3]

पत्र-सूचना (४०८)

[868]

[मन्त्री श्रार्थममाज लाहौर] लाहौर समाचार भेजने के विषय में १।

[88]

पत्र (४०९) स्रो३म्<sup>२</sup>

[४८२]

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी श्रानिन्दित रहो। विदित हो कि कहार रसोइया तथा शोधक और कोषाध्यक्ष के छिये आप को छिखा था।

१. इस का संकेत अगले पूर्ण संख्या ४८२ के पत्र में है। यु॰ मी॰।

२. मृल पत्र श्रार्थसमाज फरुखाबाद में सुरिच्चित है। म० मामराज जी ने सन् १६२७ में मूल पत्र से शुद्ध किया। इस से पहले हमने बा० देवेन्द्रनाथ वाली प्रतिलिपि से छापा था। फरुखाबाद का इतिहास पृष्ठ २२०-२२१ पर कुछ पाठ मेद के साथ छपा है।

खस का उत्तर आपने लिखा कि ४ दिन के पश्चात् इसका निश्चित उत्तर मेजेंगे। सो वह आज तक नहीं आया। बीच में पिएडत लक्ष्मीदत्त जी ने उत्तर दिया था कि आप बरेली को गये हैं। हम ने आप के पत्र का उत्तर लिखा था कि वह रामनाथ कौन है क्या पढ़ा है। और नागरी लिख[ना] जानता है वा नहीं। और हमारे साथ कव रहा था। कौन वर्ण है। कहां का रहने वाला है]। और मुरादाबाद वाले के लिये लिखा था कि जब तक बड़ा हानिकारक अपराध न करें, न निकाला जायगा। सो भी आप के आधीन निकालना वा रखना होगा। सो आज पर्यन्त उस [का] उत्तर नहीं आया। सो शीघ्र मेज दीजिये। और दोनों पुरुषों [को] वैदिक यन्त्रालय में मेजने के लिए पूर्ण यह कीजिये। क्योंकि अकेले समर्थदान से वहां का काम नहीं चल सकता। आप के लिखे प्रमाण आर्यसमाज लाहौर [के] मन्त्री के पास सब समाचार मेज दिया।

श्रीर हम श्राज चित्तौड़गढ़ में हैं । श्रागामी फाल्गुन वदी चतुर्दशी गुरुवार के दिन

राजस्थान शाहपुर मेवाड़ को जाकर यथारुचि वहां ठहरेंगे।

श्रव खद्यपुर का वृत्तान्त सुनो । हम वहां वहुत श्रानन्द में रहे । नित्य प्रति श्रीमान् महाराणा जी की स्रोर से सेवा उत्तम रीति से होती रही। किसी दिन को छोड़ सब दिन तीन चार वा पांच घंटे तक मुक्त से मिल कर प्रेम पूर्वक सत्संग किया करते थे। केवल सुनने मात्र नहीं, किन्तु उसका धारण और आचरण भी करते और कराते हैं। छः शास्त्रों का मुख्य २ विषय, मनुस्मृति के राजध्ममी विषयक तीनों अध्याय, विदुरप्रजागर आदि के उपदेश के योग्य ऋोक, थोड़ा सा व्याकरण का विषय त्रौर थोड़ी सी अन्वय की रीति श्रीमानों ने मुक्त से पढ़ी। और राजधम्में में तत्पर थे। श्रौर विशेष कर अब पूर्ण रीति से हुये। वेश्या आदि का नृत्य दर्शनादि नहीं सा निर्मुल कर दिया । स्वीकारपत्र जिसको वसीयतनामा कहते हैं वह उदयपुर में श्रीमानों ने स्वीकृत स्वमुद्रांकित स्वह्स्ताच्चर स्वभूषित कर के उस[में] लिख़ी हुई सभा के उदयपुराधीश सभापति हुये हैं। उस का विशेष समाचार तुम को छपने पर विद्ति होगा। एक मान्य पत्र र मुक्तको दिया है। श्रीर ६० १२००) कल्दार वेदभाष्य के सहायार्थ श्रीर एक दुशाला और एक साधारण दुशाला और रु० १००) कल्दार रामानन्द ब्रह्मचारी को । तथा ५००) रु० कल्दार फीरोजपुर आर्घ्यसमाज के अनाथालय को। और रु० १००) कल्दार उस में कसीदा करने वाली लड़कियों को पारितोषिक प्रदान किये। वैदिकधम्मी पर प्रथम ही रुचि थी। अब विशेष कर हुई। जैसे श्रीमान् त्रार्यकुलदिवाकर सुशीलता सत्यता कृतज्ञता सुसभ्यता पुरुषज्ञानतादि शुभगुण कर्म स्वभावयुक्त मैंने देखें वैसे बहुत विरले होंगे । श्रब हम इस वक्त चित्तौड़ में हैं । फाल्गुन वदी चतुर्दशी गुरुवार के दिन राजधानी शाहपुरा राज्य मेवाड़ जाकर ठहरेंगे । जो कुछ पत्रादि भेजो तो इसी पते से भेजना, फक्त ।

ता० ४।३।८३ ई०। मि० फा० व० १० सं० १९३९।

[दयानन्द सरस्वती]

१. यहां तक का ग्रंश पं॰ लेखरामकृत जीवन चरित पृष्ठ ५६७ पर उद्धृत है।

२. [यह मान्य पत्र यजुवंदभाष्य के ४८वें श्रङ्क के टाइटल पेज पर छपा है । इसे इस परिशिष्ट में दे रहें हैं।] यह मूल मान्यपत्र कविराजा श्यामलदास के संग्रह में था। श्रत्र ठाकुर किशोरसिंह जी के संग्रह में सुरित्ति है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# त्रापि दयानन्द् सरस्त्रती क्राध्महासामा अञ्चलसिंह (उद्यप्तर) को पड़ाना

. षापुन नेपरीनातम सिंहनी भानेरितर है। वादनहो क्रिर्म उर्यपुर से फाजा न बरिश्म म मी हेरिन शचती उमें भान पहुंचे भीर अवपृष्ट मेफानान बरीनियोर शी हे रिन शामद्रीरेत में बेहबर चनुर्दशीहोट्न् ज्ञाहपुरा धुरान मेगर जिल्हा भारति में जी प्रबर्धिकी से-ब्रोशहैं जांयरे जीर जो बाग जरोतो इसी पनेसे देना - अपागे हाल यह ब्रिएइ स्वीबारपत्र राज उर्प प्रमें मुद्दा द्वित सीकृत हुन्मानमोर उक्तहे क्राधीपती स्त्री मान्दिगृहर इ ए हैं बाड़ी सवस्वाभामर जंब छ पहु गावि-दतहोग और एषु मान्य पुन्त नी दिया है औ र छः शा म्त्रों हा मुख्य २ निषय भी र मनुस्र तिकासन्य मा तथा विदुर्य नागरा दिवे को इ बुछ बादरए भीरभन्वयद्वी री निंप्ती मानोने मुफले पढ़ी-स्मीरफ ०१२०० इत्स जीर एयु हुआला बेर्भाष्य है महाया छ जी र एक मधारन हु शाना भीरफ०९००/ ब्रज्सर रामानंद् ब्रम् -वारीको और ४०० फ - ब्रत्ररार दीरोज पुरहे अमनाषा समझे लिये और फ़ (९००) ब्रब्सरं उमीने व्यक्तिवरनेवा जीनइ--जिमोंको पारी नो पित्र महान चिया मिनी फा.मुन बदी ९२ संबद्ध १६३९ तर्नुसार ना शिख द मार्च मन् १८०३ई

( स्तासर)

CC-0.In Public Domain Wanni Kallya Maha Vidyalaya Collection. (इस मूल पत्र को म० मामराज जी ने ता० १४-४-२७ को प्राप्त किया) चित्तौड़, सं० १९३९ ]

पत्र (४११)

३९३

[2]

पत्र (४१०)

[828]

सर्वे श्राय्येसमाजस्य प्रधानादि श्रानंदित रहो?।

विदित हो कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती उपदेशक, इसने संन्यासाश्रम धारण भी मुक्त से किया है, श्राता है। इसको जब तक वहां रहे श्रश्न स्थानादि, श्रोर जब एक समाज से दूसरे समाज को जाय तब रेल के भाड़े श्रादि से सत्कार किया करना। जिस समाज से दूसरे समाज को जाना चाहे उस समाज का मन्त्री दूसरे समाज के मन्त्री के पास पत्र भेज देवे कि वह स्टेशन पर श्राके निवास स्थान को ले जावे।

मिती फाल्गुन बदी १२ मंगल सम्वत् १९३९२।

ह० दयानन्द सरस्वती चित्तौड़-मेवाड़।

[3]

पत्र (४११)

[828]

श्रो३म्

श्रीयुत चौधरी जालमसिंह जी श्रानंदित रही<sup>3</sup>।

विदित हो कि हम उदयपुर से फाल्गुन विद ७ सप्तमी के दिन चित्तीड़ में आन पहुंचे। और अब यहां से फाल्गुन विद त्रयोदशी के दिन शाम की रेल में बैठकर चतुर्दशी के दिन शाहपुरा राज मेवाड़ जिला अजमेर को जो कि बड़ी रूपाहेली से ८ कोश है, जांयगे। और जो कागज दो तो इसी पते से देना। आगे हाल यह कि एक स्वीकारपत्र राज उदयपुर में मुद्राङ्कित स्वीकृत हुआ। और उसके अधिपति श्रीमान दिवाकर हुए हैं। बाकी सब सभासद। जब छपेगा विदित होगा। और एक मान्यपत्र भी दिया है। और छः शास्त्रों का मुख्य २ विषय जौर मनुस्मृतिका राजधम्में तथा विदुर-प्रजागरादि के ऋगेक कुछ व्याकरण और अन्वय की रीति भी श्रीमानों ने मुक्क से पढ़ी। और कुठ १२००) कल्दार और एक दुशाला वेदमाध्य के सहायार्थ और एक साधारण दुशाला और ६० १००) कलदार रामानन्द ब्रह्मचारी को और ५००) क० कलदार प्रीनेजपुर के अनाथाश्रम के लिये और ६०० १००) कल्दार उसी में कसीदा करने वाली लड़कियों को पारितोषिक प्रदान किया।

मिती फाल्गुन वदि १२ सम्वत् १९३९ । तदनुसार तारीख ६ मार्च सन् १८८३ ई०

( हस्ताच्चर ) [ द्यानन्द सरस्वती ]

१. भारतसुद्शाप्रवर्तक फरवरी १८८४ पृ० १८ से लिया गया । फरुखाबाद का इतिहास पृ० २०१ पर भी छपा है ।

२. ता॰ ६ मार्च सन् १८८३।

३. इस मूल पत्र को रूपधनी वाले चौ॰ जालिमसिंह के माई के पौत्र चौ॰ गजराजसिंह से मास्टर बद्रीपसाद जी ले गये थे। उसे ऋहीर च्रत्री स्कूल शिकोहाबाद के उक्त मास्टर से म॰ मामराज जी ता॰ १५ अप्रैल सन् १६२७ को लाये थे। मूल पत्र म॰ मामराज जी के पास श्रीराम निवास (बिल्डिक्स) खतौली में सुरिच्चत है। [३] पत्रांश (४१२) [४८५]

श्रीयुत पिर्डत कालुराम शर्मादिभ्यो दयानन्दसरस्वती-स्वामिन श्राशिषो भूयासुस्तमां, शिमहास्ति तत्र भवदीयक्च नित्यमाशास्महे । श्रापने धर्म जिज्ञासा की, उसका उत्तर यह है कि इस विषय में जो सत्यार्थप्रकाशादि मद्रचित ग्रन्थ हैं उन में मन्तव्यामन्तव्यादि सर्व धर्म विषय तिखा हुआ है उसी रीति से कार्य्य करो॰ इत्यादि ..... [लगभग १७ मार्च सन् १८८३ ।]

[४८] सूचना (१)

[मुं० समर्थदान वैदिक यन्त्रालय, प्रयाग]

जैसा इस को शोध के भेजते हैं। वैसा पुनः कम्पोज करके छपवादो और जो कहीं शोधने में भूल रह गई हो तो तुम वहाँ शोध लेना, जिससे मांसमच्या का श्रमित्राय कुछ भी न रहे। बाकी सब पत्रों के उत्तर कल भेजों और अगले श्रंक के पत्रे तथा थोड़े से सत्यार्थप्रकाश के पत्रे भी भेजेंगे ।

[मिति फाल्गुन शु० ९ शनि सं० १९३९]

[४९] पत्र (४१३) [४८७] स्रो३म

मुन्शी समर्थदान जी चानन्दित रहो।

तुम्हारी तारीख बारा मार्च की लिखी हुई चिट्ठी आई। समाचार विदित हुआ।

(१) शुद्धि पत्र श्रीर टाटल पेज भले ही बना छाप कर प्राहकों के पास भेज देना श्रीर छापे खाने में भी जिल्दें बंधवाने का लिखा सो श्रच्छा। परन्तु थोड़ी, जियादह नहीं।

(२) तुम को इस बात का ज्ञान नहीं। तुम इस बात को नहीं जानते कि हम को कितना काम करना पड़ता है कि एक ज्ञाण मात्र भी व्यवकाश नहीं मिलता। देखो इसका दृष्टान्त कि तुम्हारे पत्र का उत्तर रात्री के ९ बजे लिखते हैं।

श्रीर इसके पद की गणना रामानन्द तथा दूसरे पंडित के हाथ गिणवाये थे। कोई पद रह गया होगा। श्रव हम अपने सामने पद गिन गिनवा लेंगे श्रीर श्रगले श्रंक के पत्रे श्रीर कुछ सत्यार्थप्रकाशं के पत्रे उस के साथ भेजे जायेंगे।

- (३) हिसाब हमारे पास आने से सब बात का प्रबन्ध हम भी आगे २ करते हैं । इसलिये जो तुमने डिचत समय पर मासिक हिसाब भेजना लिखा सो बहुत अच्छी बात है । और द्रव्य के
  - स्वामी कालूराम जी शर्मा स्वर्गवासी के जीवन चरित पृ० २६ पर इतना श्रंश उद्घृत है।
  - २. तिथि सर्वथा द्यानुमानित है। ३. देखो पूर्ण संख्या ४८७ का पत्र। यु० मी०।
- ४. यह लेख श्री स्वामी जी ने यजुर्वेदमाध्य के १३ वें श्रध्याय की प्रेस कापी के पृष्ठ ४५६ के दूसरी श्रोर (पीठ पर) श्रपने हाथ से लिखा है। यह लेख १७ मार्च १८६३ (=फा० शु० ९ सं० १६३६) को लिख कर मेजा था। देखो अगला पूर्ण संख्या ४८७ के पत्र का ८ वां श्रांश (श्रान्तिम पैरा प्राफ पृष्ठ ३६६)। इस का संबन्ध उक्त पत्र के श्रान्तिम श्रंश से भी है। उसके साथ मिला कर पढ़े। यु० मी०।

विषय में जो तुम को लिखा है सो तुम्हारे अविश्वास कारक नहीं है। एक उपदेश रूप है। देखो तुम हम श्रीर श्रन्य भद्र लोग मुनशी इन्द्रमिए जी को कैसा श्रच्छा समक्षते थे। परन्तु वह तभी तक रहा जव तक कि उनके सामने धन न आया। और तुम्हारे विषय में अविश्वास का हेतु प्रत्यच कोई नहीं हुआ है। इस से तुम जल्टा मत समको। इसका यह मर्भ और अर्थापत्ति नहीं है कि तुमने अप्रत्यच वरा काम किया है। वह लेख इस अभिशय से है कि जिसका उत्तरकाल में भी कभी ठोकर खाना न पड़े। देख २ कर पग जमा कर चलना चाहिये। क्या वालक वा विद्यार्थी अथवा शिष्य को मिध्या भाषणादि के अप्रत्यन्त में भी तू मिथ्या भाषण चोरी जारी विश्वासघात आदि दुष्ट कर्म मत करना, उपदेश नहीं होता। इसका प्रयोजन यह है कि जैसा आचरण भूत वा वर्तमान में शुद्ध था, वा है, वैसा ही रहना उचित है। भला हरिश्चन्द्र और बखतावरसिंह का दृष्टान्त तुम में घटता वा संभावना होती तो मैं और सेवकलाल कृष्ण्दास आदि वैदिक यंत्रालय के प्रबन्ध करने की तुम को कभी न कहते। क्या तुमने हमारे और सेवकलाल कृष्णदास जी के कहने ही से इस काम को स्वीकार किया है परोपकार की दृष्टि से नहीं। शोक हैं कि सूधी बात को तुम उल्टी समक्त गये। यदि तुम्हारे काम की पवित्रता की परीचा मुमको व सेवकलाल को न होती तो पुनः इस काम में तुमको नियुक्त ही क्यों करते । यदि तुम इस काम के योग्य न होते तौ इतना बड़ा काम श्रीर जिस में विशेष माल का काम है, स्वाधीन क्यों करते। तुम को इम वा सेवकलालादि इरिश्चन्द्र बख्तावरसिंह वा मुन्शी इन्द्रमिण सरीखा नहीं समकते। तुम को उत्तम पुरुष समकते हैं परन्तु-

## सम्भावितस्य चाकीतिर्मरणादतिरिच्यते ?

क्या हमारे पास बुरे ही मनुष्यों का निर्वाह है। ऐसी तुम्हारी बातों का जो कि कभी २ लड़कपन की कर बैठते और समक्त लेते हो इन बातों पर ध्यान करूं वा करूंगा तो क्या इस परोपकार के काम से संशयापन्न हो पृथक हो जा नहीं सकता। मुक्त को इतना बड़ा परिश्रम निन्दा अपमान उठा कर कौन सा स्वप्रयोजन सिद्ध करना चाहता हूं। यदि तुम लोग जैसा कि अब उदासीनता की बातें लिखी हैं लिखोगे वा करोगे तो सब संसार की हानि का अपराध तुम्हारे पर होगा और मैंने जो उपकार करना निश्चित किया है जहां तक बन सकेगा आमरण तक करूंहीगा पुनर्जन्मान्तर में भी। जब तक इस पत्र को देख कर तुम्हारा पत्र परोपकार अर्थात् स्वदेशोपकार करने में हदता पूर्वक पत्र हमारे पास न आवेगा तब तक हमारे उपदेश कर लेख को अपनी अल्प बुद्धि से उल्टा समक्त गये हो, जाना जायगा। इस लिये पत्र देखते ही उसों लेख का यह तात्पर्य समक्त कर प्रत्युत्तर शोध भेजना।

(४) मान्यपत्र उन के साथ भेजने में रामानंद भूल गया था। पीछे से भेजा है, पहुंचा होगा। श्रीर ऋग्वेद तथा सत्यार्थप्रकाश वो(के) भी पत्रे परसों भेजे जायंगे। क्योंकि कल रिववार है रिजस्ट्री नहीं हो सकती। जब २ मासिक हिसाब भेजो तब २ इतने फार्म निज के खौर इतने बाहर के इस महीने में छपे यह भी साथ ही [लिख कर] भेजा करो।

(५) यहां शाहपुरे में श्रीयुत महाराजाधिराज व्याकरण का विषय पढ़ कर कल मनुस्पृति के

१. गीता ग्र० २ श्लोक ३४ । यु० मी०।

सप्तमाष्याय राजधर्म के पढ़ने का आरम्भ करेंगे। और बड़े बुद्धिमान तथा राजनीति प्रजा पालन में तत्पर साहसी उत्साही और बड़े बुद्धिमान हैं। सेवा भी बहुत प्रीति और अच्छी प्रकार से करते हैं।

- (६) भीमसेन को तुमने जैसा [बक]वृत्ति समभा है, वैसा ही हम वकवृत्ति और भारजार-लिगी समभते हैं। वैसा ही उस से विलक्षण दंभी क्रोधी हठी और स्वार्थसाधनतत्पर ज्वालादत्त भी है। श्रव उसको निकाल देना वा न निकाल देना, तुमने क्या निश्चय किया है। मेरी समभ में भीमसेन का छोटा भाई ज्वालादत्त है। यदि उसको निकाल दोगे तो भी कुछ बडी हानि न होगी। क्योंकि यह कभी मन लगा कर काम न करेगा और उसकी ऐसी दृष्टि कच्ची है कि शोधने में श्रगुद्ध श्रवश्य कर देगा।
- (७) श्रीर जो कुछ श्रीयुत श्रार्यकुलिदवाकर महाराणा जी के विषय में धन्यवाद का लेख लिखों सो श्रव्छा ही लिखोंगे। मोहनलाल विष्णुलाल जी ने चलते समय कहा था कि धन्यवाद विषय का पत्र लिखकर भेजने को कहा था। यिद दो चार दिन में श्राया तो तुम्हारे पास भेज देंगे। तुम जानते हो राजकृत्य की शीतलता को कि जैसा मेरे वहां रहने में शीघता होती थी वैसी कव हो सकती है। जो कुछ होगा सो धीरे २ श्रीर श्रव्छा होगा। श्रीर तुमने कमीशन का क्या नियम किया है। क्या जैसा सुचिपत्र में छपवाया है वही है वा श्रन्य कोई। जो तुमने छपवाये हैं वेही ठीक है। वैसा ही हम भी लोगों से उपदेश करेंगे। श्रीर उस भीमसेन की हुई हानि कुछ भी नहीं हो सकती उसका उत्तर तुम लिख भेजों कि जब तक खामी जी की श्राज्ञा वा इच्छा तुमको कहीं रखने वा वा भाषा बनवाने की नहीं होती, तब तक कुछ भी नहीं हो सकता। श्रव उस ने उदयपुर में जो भाषा बनाई है, सोधी गई तो कई एक के अर्थ में पदार्थ छोड़ दिया। कई एक पद अन्वय के छोड़ दिये। और कई एक पद आगो पीछे भी कर दिये गये हैं। श्रीर उस का कार्ड बुक पोस्ट के साथ तुम्हारे पास भेजेंगे।
- (५) हमने आज ४७ मंत्र से लेकर ५२ मन्त्र तक के पत्रे शोध कर आज आये और आज ही रिजिस्ट्री करा के मेज दिये हैं। उन में से जहां २ मांस खाने का विषय [था] काट दिया और उचित अर्थ कर दिया है। परन्तु राजा और राजपुषों को हानिकारक सिंहादि जांगल पशुओं को मारना तो रहने ही दिया है, क्योंकि उन मन्त्रों में अनुदिशामि। आरण्यम्। तेन। तन्वम्। पुष्यस्व। आदि पदों के अर्थ के अनुरोध से राजपुष्ठषों को उनका मरना तो अवश्य ही सिद्ध होता है। तथा युक्ति से भी सिद्ध है, क्योंकि यदि डाकू चोर आदिकों को भी राजधर्म में मारना उचित है तो वैसे प्रजा के हानिकारक पशुओं को मारने में राजाओं को कुछ भी अपराध नहीं हो सकता। यदि ये न मारे जांय तो प्रजा के खेती आदि के नाश से बड़ी ही हानि होवे इत्यादि। यदि शीघता से शोधने में मांस खाने में कोई रह गया हो तो उसको तुम कटवा देना और उचित धरवा देना । और

हिस निषय में पूर्ण संख्या ४८६ पर छपी ऋषि के हाथ की यजुर्नेद भाष्य द्रा० १३ की प्रेस कापी के पृष्ठ ४५६ पर लिखी स्चना भी पढ़ें। यु० मी० ]

१. यजुर्वेद १३ विषय का संकेत समर्थदान ने अपने १३-७ १८८३ के पत्र में किया।

शाहपुरा, सं० १९३९]

पत्र (४१६)

390

उन्हीं पत्रों को शोधा है कि जिस से तुम्हारा कंपोज सब व्यर्थ न जाय किन्तु उसके बराबर सही करवा कर प्राहकों के पास भेजदो। श्रव श्रागे वेदभाष्य के पत्रे उचित समय पर सदा भेजे जायेंगे। श्रीर मुम्बई से टैप श्राने का क्या समाचार है। तीन महीने तो हो गये होंगे। उनसे तकादा करो कि शीघ टैप भेज देवें।

मिति फा० ञु० ९ शनिचर सं०१।

[द्यानन्द सरस्वती]

[8]

पत्र-सूचना (४१४)

[866]

[पं० मोहनताल विष्णुलाल पिडिया—उपमंत्री परोपकारिणी सभार ।] रूपयों का फरक क्यों पड़ रहा है। १९००) रू० थे, श्रथवा २०००) रू०। यहां राजाधिराज ने मनुम्मृति का पढ़ना श्रारम्भ कर दिया है।

फा० ग्रु० १०, १९३५ ।

द्यानन्द सरस्वती

[६]

पत्रांश (४१५)

[886]

[ भाई जवाहरसिंह मंत्री श्रार्थसमाज लाहौर ] ..... ''जो तुमने इतनी बड़ी चिट्ठी श्रार्थभाषा में लिखी, यही हमने तुम्हारी शुद्धी जानी'।" लगभग २३ मार्च १८=३।

[9.]

पत्र (४१६)

[820]

(श्रो३म्)

श्रीयुत बिहारीलाल जी श्रानन्दित रहो ।

धम्मेजीवन और मित्रविलास आदि पत्रों का सूठ बकना ही रात दिन काम है। और जैपुर गजट वाला भी उनके सदश ही बुद्धि रखता होगा। आगे जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो। जैसी सम्मित लाहौर और मेरठ वालें दें, वैसी करो। तुम जानते थे कि स्वामी जी जोधपुर में गये ही नहीं, फिर तुम को शोक कैसे हुआ। और हमारे लिये ऐसे सैकडों मनुष्य बका करते हैं, कि

१. १७ मार्च १८८३।

२. इस का संकेत पं व चमूपितकृत ऋषि दयानन्द का पत्रव्यवहार द्वितीय भाग प् ६ पर है।

३. संवत् १६३६ चाहिए । १८ मार्च रवि० १८८३ ।

४. ऋषि के पत्र से इतना लेख — भाई जवाहरसिंह ने ऋपने पत्र ता० १८ ऋषेल १८८३ बुधवार, में उद्धृत किया है। देखो म० मुन्शीराम सम्पा० पत्रव्यवहार पृ० १२५। श्री स्वामी जी का पत्र भाई जवाहरसिंह के १६ मार्च १८८३ के पत्र के उत्तर में लिखा गया होगा। उस पत्र में भाई जवाहरसिंह जी ने लिखा है—

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

जैसे मित्रविलास और धर्मजीवन त्रादि पत्रों के मांसहारी काश्मीरी त्राह्मण त्रादि लाहोर में बका करते हैं। सब से हमारा त्राशीर्वीद कह दीजीयेगा।

मिती चै० व० ५ बुधवार सं७ १९३९ ।

(शाहपुरा)

(हस्ताचर) [दयानन्द सरस्वती]

[8]

पत्र (४१७)

[855]

श्रो३म

श्रीयुत चौधरी जालिमसिंह जी स्रानन्दित रहोर।

जब वह स्वीकार पत्र छुपेगा तब एक कापी तुम्हारे पास भेज देंगे। शीमसेन को न हम अपने पास बा न अन्यत्र कुछ काम देना चाहते हैं। वह काम करने में अयोग्य और घह स्वभाव का भी बहुत बुरा आदमी है। हम उस के विषय में पहले भी लिख चुके हैं। और वह न किसी आर्य्यसमाज में रहने के योग्य है। यदि कहीं जायगा बुरे हवाल निकाला जायगा। अन्यत्र जहां उस की इच्छा हो जाये, चाहे न जाये, उसकी खुशी। परन्तु हम उसको कहीं नौकर वा काम कराना नहीं चाहते। यह सब एक जात बद्री ब्राह्मण सिकन्दरपुर के सहश हैं। चाहे इनके ऊपर कितनी दया करो वे छुतब्र [ता]ही करते जाते हैं। जब से वह गया है तब से जो पुठष हमारे पास हैं, आनन्द में रहते हैं। यदि बह होता तो न जाने अब तक कौन जाता, कौन रहता केवछ वह दम्भी और मिथ्याचारी है। यदि बद्री ब्राह्मण का विष देने का कर्म प्रसिद्ध हो गया है तो उस को जैलखाने में भेज दिया वा नहीं। ठीक साबूती हो तो उस को अवश्य जैलखाने में भिजवा देना चाहिये। जिस से दूसरा भी कोई ब्राह्मण ऐसे काम करने की इच्छा न करे। बड़ा शोक है उस बद्री दुष्ट पर कि जिसकी आप लोगों ने हजारह रुपये की सेवा की और उसका फल उस कुपात्र ने प्राण्य लेना चाहा था। हम यहां राजधानी शाहपुरा राज मेवाड़ जिले अजमेर में ठहरे हैं। कुछ एक आध महीना यहां रहेंगे। सब से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मि० चै० व० ५ बुधवार सं० १९३९३।

(शाहपुरा) (इस्ताचर) [दयानन्द सरस्वती]

[3]

पत्र सुचना (४१८)

[४९२]

[लीलाधर हरिदास मुम्बई<sup>४</sup>]

१. सेवक लाख ने घड़ी क्यों नहीं भेजी।

१. २८ माचं सन् १८८३ ।

२. मूल पत्र पं ० विष्णुलाल जी एम० ए० बरेली के पास था । उस की प्रतिलिपि इमने वहाँ से की थी।

४. इस पत्र का संकेत म० मुंशीरामकृत पत्र व्यवहार पृ० २६७, पर है।

- २. समर्थदान ने जो टाईप मंगवाया। उसका क्या उत्तर है।
- ३. आर्थसमाज मन्दिर का काम कैसा हो रहा है। चैत्र वदी १०१।

द्यानन्द सरस्वती शाहपुरा

[१]

पत्र (४१९)

[893]

॥ श्रोश्म् ॥

वारट श्रीकृशन जी श्रानिन्दत रहोर !

विदित होकि पत्र आपका आया समाचार विदित हुए। संस्कृतवाक्यमबोध के विषय में जो तुमने लिखा सो छ।पेवालों की भूल से छप गया है। वहां—(एकत्रैकाङ्क्षप्ठ एकत्र चतुरंगुलयः) ऐसा चाहिये, सो सुधार लीजिये<sup>3</sup>।।

यदि श्रीमान्महाशयों से निवेदन करके कियाज जी के पास जोधपुर से उक्त कार्य्य कराने के लिए जयपुर जाने के आने की आज्ञा पहुंच जाय तो अत्युचम है। और यह भी निवेदन करना कि पत्र हारा श्रीमानों की दिनचर्या और शरीर कुशलता की सत्य २ सूचना मुक्तको हुआ करे तो अच्छी बात है। क्योंकि उसको सुनना मैं अवश्य चाहता हूं। और फतहकरण उदयपुर में है वा कियाज जी के साथ जोधपुर गये हैं। फतहकरण का नाम (विजयकरण) हो सकता है वा नहीं। क्योंकि (फतह) शब्द फारसी का है और उसका अर्थ विजय है इसिटिए (विजयकरण) नाम होना उचित है।

श्रीर जो तुमने महाराजाधिराज की चिट्ठी के साथ एक चिट्ठी भेजी थी कि जिस में लिखा था १००) सौ रुपये खामी जी के नौकरों को श्रापित किये लिखा था श्रीर उस समय यही मैं ने श्रीर श्राप लोगों ने भी सुना होगा कि ५००) रुपये श्रनाथाश्रम श्रीर कसीदा करने वाली कन्याश्रों के पारितोषिक देते हैं । ज[ब] पण्ड्या जी की चिट्ठी श्राई, उस पर हमने पूंछा कि ६००) रुपये भेजने चाहिये,

१. संवत् १६३६ । २ एपिल, १८८३ सोमवार ।

२. मूल पत्र श्री कृष्ण जी के पुत्र ठाकुर किशोरसिंह वारहट के संग्रह में सुरित्त्त है । पं॰ चमूपित संपा॰ पत्रव्यवहार पृष्ठ १६५ से लिया।

३. प्रथम संस्करण में 'मुष्टिवन्धने एकत्राङ्गृष्ठः, एकत्र पञ्चङ्गुलयो भवन्ति' ऐसा छुपा था। भाषा में भी यही अशुद्धि थी। यह अशुद्ध पाठ वैदिकयन्त्रालय के छपे संस्कृतवाक्यप्रवोधं के १०वें संस्करण तक छपता रहा। ११वें संस्करण में हम लोगों ने शुद्ध किया। संस्कृतवाक्यप्रवोध के छपने में इस प्रकार की कुछ भूलें और भी हो गई थी। उन के विषय में पूर्ण संख्या २६५ (पृष्ठ २२१) का पत्र भी देखें। काशी के पिएडतों ने इस पर अपने अज्ञान से कुछ अन्ते आचेप किये थे। उन में से कुछ आक्षेपों का समाधान पूर्ण संख्या २६६ (पृष्ठ २२२) पर छपे लेख में किया है। यु० मी०।

सातसे कहां से भेजे। उस पर उन्होंने उत्तर दिया कि हमारे पास राजसे ७००) रूपये आये, सो ६९२) रूपये भेजे और ट) रूपये मनियाडर और रजिष्टरी कराई दिये। यह क्या बात है। हम तो ६००) रूपये सब मिल कर फिरोजपुर के लिये श्रीमानों ने दिये हैं, ऐसा सर्वत्र लिख चुके हैं यदि इस में १००) भूल से चले गये हों वा सातसे ही प्रदान किये गये हों, जैसा हुआ हो वैसी निश्चित बात लिखो। जिस से हम पुनः जैसा हो वैसा सर्वत्र लिखदें।

श्रीर श्रीमानों की दिनचर्या का विषय ठीकर लिखा करो। गोलमाल मत किया करो। श्रीर

यहां सब प्रकार से आनन्द मंगल है। और सब महाशय भद्र जनों से मेरा आशीर्वाद कहियेगा।

चैत्र कृष्ण १० सोम संवत् १९३९ ।

[द्यानन्द् सरस्वती] शाहपुरा राज मेवाड़

[9]

### पत्र-सूचना (४२०)

[828]

[भाई जवाहरसिंह मन्त्री त्रार्थसमाज लाहौर<sup>२</sup>] हमारे पत्रस्थ दो वातों का उत्तर तुम ने नहीं दिया। एक तो लाला मूलराज के भाई ... ...। चैत्र शुक्ल ३ मंगल<sup>3</sup>

[8]

## पत्र-सूचना (४२१)

[886]

[ठाकुर रघुनाथसिंह जी४]

[2]

पत्र (४२२)

[४२६]

श्रो३म

श्रीयुत विहारीलाल जी आनन्दित रही ।

पत्र तुम्हारा आज आया समाचार विदित हुआ। आप लोग धर्म में दृढ़ रहिये कि जिस का फल आनन्द ही होगा। जो बात श्रीयुत ठाकुर रघुनाथसिंह जी तथा श्रीयुत गोविन्दसिंह जी ने सत्य धर्म रहार्थ की है यदि यह ऐसी ही है तो उन को अनेक धन्यवाद देना चाहिये। तुम्हारे लिखे अनुसर ठाकुर रघुनाथसिंह जी के पास हमने पत्र भेज दिया है। और उस के साथ जो श्रीमान आर्थकुल-दिवाकर महाराणा जी ने हम को मान्यपत्र दिया है और जो हमने स्वीकारपत्र उदयपुर में रजिष्टर

१. २ एप्रिल १८८३।

२. इस पत्र का संकेत म० मुंशीरामसम्पा० पत्रव्यवहार पू० १३० पर है। वहां श्री स्वामी जी के इतने शब्द उद्घृत किए गए हैं।

३. सं० १६४० । १० ग्रामैल १८८३ ।

४. इस की सूचना श्रगते पूर्ण संख्या ४६६ के पत्र (पृष्ठ ४००) में है।

५. मूल पत्र ठाकुर नन्दिकशोरसिंह ने मेजा था। श्रत्र हमारे समह में सुरिवत है।

कराया है उन की एक २ नकल श्राज तुम्हारे पास भेजते हैं। कुछ चिन्ता मत करो। जिन का सहाय धर्म है उसी का सहाय परमेश्वर है। जब बुरे बुराई न छोड़ें, तो भले भलाई क्यों छोड़ें। श्रीर सब से मेरा श्राशीर्वाद कह दीजियेगा।

मि० चै० ग्रु० ९ रविवार संवत् १९४० ।

(शाहपुरा)

(हरताचर) [दयानन्द सरस्वती]

[34]

॥ विज्ञापन ॥

[830]

विदित हो कि जो विक्रम संवत् १९३७ तदनुसार सन् १८८० में मुं० इन्द्रमणि जी रहीस मुरादाबाद का मुसल्मानों से विवाद हो कर मुन्शी जी पर ५००) क० मेजिस्ट्रेट मुरादाबाद ने जुर्माना किया। तब उस पर आर्थ्यजनों ने उस मामले को अपना समक सहाय की थी। वह मामला तभी हो चुका था। परन्तु मेरठ में उस समय इस के लिये यह नियम नियत किया गया था कि मुन्शी जी के मुकदमे में से जितना धन बचे वह अच्छे प्रतिष्ठित सहूकार के यहां।।) व्याज पर रक्खा जाय । जव कभी ऐसा ही किसी अन्य वैदिक धम्मीवलम्बी आर्य्य का अन्य मतवादियों से धर्म विषय का विवाद हो के कचहरी में मुकदमा जाय और वह असमर्थ होय तो इन्हीं रुपयों से उस की सहाय की जाय। इस नियम को मुनशी जी ने भी स्वामी द्यानन्दसरस्वती जी आदि के सम्मुख मेरठ में स्वीकार कर लिया था। परन्तु शोक का विषय है कि उक्त मुनशी जी ने ऐसे उत्तम नियम को तोड़ अब हिसाब नहीं देते । और जलटा चोर कोतवाल को दागडे इस के सहश लाला रामशरणदास रईस मेरठ और स्वामी द्यानन्दसरस्वती जी पर मिध्या दोषारोपण करते हैं। इस कारण मेरठ आर्यसमाज के आय व्यय का हिसाव प्रकाश करना पड़ा। जिस्से मिथ्या भ्रम जैसा मुनशी जी को हुत्रा वैसा किसी भ्रन्य सज्जन आयर्थ पुरुष को न होय। और मुं० इन्द्रमणि जी का सत्यासत्य इस हिसाब और मुनशी जी के विज्ञापन को देख कर सब पर प्रगट हो जायगा। मुनशी जी लिखते हैं कि बहुत आर्य्यजनों ने मेरे मुकदमे की सहाय में मेरठ समाज और स्वामी द्यानन्दसरस्वती जी के पास धन भेजा था। "उसमें केवल ६००) क० मेरे पास पहुंचे । वाकी उनके पास रहे ।" परन्तु इस मेरठ के मिती वार क्रमानुसार हिसाब देखने से निश्चय होता है कि मुनशी जी के पास उन्हीं के मामले में ९६३॥। मेरठ समाज से पहुंचे हैं। न जाने मुनशी जी ने ६००) रु० क्यों अपने विज्ञापन द्वारा प्रकाश किये। इस बात से तो मुनशीजी की श्रसत्यता प्रगट होती है। यदि मुनशीजी का कथन सत्य है तो इन रुपयों के सिवाय लाला रामशरणदास वा स्वामी जी के पास किसी ने श्रीर रुपये भेजे होंय, श्रीर उन के पास उन की हस्तात्तरी सहित रसीद होय, शीघ्र प्रकाश करें अथवा करवावें, क्योंकि सांच को आंच कहां। और जो मंशी जी ने हिसाव के छपवाने में ढच पच की वा और ही कुछ राग गाने लगे तो यह उन के लिये पूरा कलङ्क है। इस के निवारणार्थ उनको अवश्य चाहिये कि जब २ जितना २ खर्च हुआ है

१: १५ एप्रिल १८८३।

२. मासिक पत्र देशहितेषी, त्राजमेर, ज्येष्ठ १६४०, पृ० १-५ पर मुद्रित ।

३. यह हिसाब मुन्शी जी ने अन्त तक न दिया।

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन शाहपुरा, सन् १८८३

यथावत् मिती वार छपवा देवें। श्रीर शेष धन श्रार्थ्यसमाज मेरठ में सर्वोपकारार्थ भेज दें। पूर्व स्वीकृत नियम को भी सत्य करें तो बहुत अच्छी बात है। नहीं तो रुपये गये हुये आ भी जाते हैं, परन्तु धर्म्मयुक्त कीर्ति गई हुई कभी नहीं आती।

॥ संभावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणाद्तिरिच्यते । [ गीता २। ] ॥

सत्पुरुष को मरण से अपकीर्त्ति बहुत बुरी सममनी चाहिये। यदि हमारे आर्थ्यजनों, विशेष जपदेशकों का आरम्भ से मृत्यु तक एकसा सत्याचरण रहे तो देश की बड़ी उन्नति हो । सर्वशक्तिमान् परमात्मा आर्थ्यावर्त्त देश पर कृपा करे जिस से हमारे आर्थ्यावर्त्तीय उपदेशक अपने किये हुये उत्तम उपदेश को लोमादि दोषों से कलंकित न करके आद्योपान्त पर्य्यन्त शुभाचरण से देश की सदशा बढ़ाया करें। (अलमति विस्तरेण बुद्धिमद्वर्थेषु।)

॥ एति जीवन्तमानन्दः । [महाभाष्य १ । ३ ।१२]॥

विक्रमी संवत् १९३७ तदनुसार सन् १८८० ई। नकल हिसाब जो कि मेरठ के समाज श्रौर मुनशी इन्द्रमिण जी के विषय का है। (खर्च) (आमदनी)

३५०) मार्फत श्रार्घ्यसमाज लहौर यह तफसील लाहौर के • रुपयों की है कि

३०) श्रार्थ्यसमाज मुलतान

१००) ग्रांप्यसमाज मेलम

११५) श्रार्घ्यसमाज लाहीर

१०५) मेम्बरान वियास

५०) श्रार्यसमाज श्रमृतसर

१०० ) आर्यसमाज रहकी

१००) घार्यसमाज फरूखाबाद २३३॥≤) त्रार्यसमाज फीरोजपुर

१६०॥) आर्यसमाज गुर्दासपुर २४५॥) श्रार्यसमाज मेरठ। इस रकम में मेरठ शहर के

। )॥ रजब्द्री मुनशी इन्द्रमिण साहब के पास भेजी ता० अ अगस्त सन् १८८०

३०० ) हवालय मु० इन्द्रमि

मार्फत \*

ला० श्यामसुन्दर रईस सुरादाबाद ता० ७ अगस्त सन् १८८०

११। ) किराया रेलगाड़ी मेरठ से मरादाबाद तक ४ श्रादमियों का तारीख १४ अगस्त १८८०।

६) किराया रेल बरेली से मेरठ और बरेली मुरादावाद तक।

1) ला० शादीराम के खत का महसूल जो इलाहाबाद से श्राया।

श्रीर मेरठ के जिला तीन चार महापुरुषों का जो समाज के मेम्बर नहीं हैं चन्दा शामिल है दीया हुआ।

- ११) लाला केवलकृष्ण
- १३</a>|) लाला रक्कनराय व लाला मुरलीधर श्रोरंगा-बाद सें।

१३६॥।) पांडे रामदीन सेकिंड मास्टर दारजिलिंग।

१५१६) संख्या सम्पूर्ण एक हजार पांच सौ सोलह रूपये।

११) त्रार्थसमाज मुलतान

३६। 🗷 ) त्रार्थसमाज जेलम

४१॥ = ) श्रार्यसमाज लाहौर ३८। ) मेम्ब्रान वियास

१८।) श्रार्यसमाज श्रमृतसर

 (1) किराया गाड़ी जो हुल साहेब बैरिस्टर के पास मेरठ में जाते समय दिया गया १४ । पा पा पा

२३) मुकद्मे पहिले में खर्च हुन्ना मुकाम मुरादाबाद इस का हाल मु० जी को मालुम है।

१८ंड)। खर्च रवानगी मेरठ से इलाहाबाद तक ता० ६ सितम्बर सन् १८८०।

३००) वजरिये नोट के मुंशी जी के पास भेगे गए।

। ) खत रजिस्टरी महसूल डाक सहित।

३००) वजरिये हुंडी के मुन्सी जी के पास भेजे गये।

१॥) हुंडियावन दिये गये ता० ३०।१०। ८०।

३॥) किराया रेल मंहू नोकर मेरठ से श्रलीगढ़ तक मय वापिस श्रीर खुराक के ।

一) मु० इन्द्रमिण सा० के खत का महसूल

प्रशामि)।।। संख्या सम्पूर्ण ।

उक्त बाकी ५५२८) । इ० का व्योरा इस प्राकार से हैं ।

श्रार्थसमाज मुलतान के लिखने श्रनुसार

उपदेशक मंडली के धन में जमा किया

गया।

३६। ≋) श्रा० स० जेलम के लेखानुसार वापिस किये गए।

४१॥ = ) द्या० स० लाहौर तथा ३८। ) तथा तथा तथा। रदा ) त्रमृतसर त्या० स० के लेखानुसार ३६।= ) त्रार्यसमाज रुड़की

३६। ) त्रार्थसमाज फल्खावाद

८५-)। आर्यसमाज फीरोजपुर

५४॥८) त्रार्थसमाज गुरदासपुर ८९॥) त्रार्थसमाज मेरठ

४-) लाला केवलकृष्ण

५०%) लाला रकुनराय वा ः ला० मुर्लीधर

४९॥= ) पांडे रामदीन मास्टर

श्रार्यसमाज जेहलम को भेजे गये।

३६। ≥ ) त्रा० सा० रुड्की के लेखानुसार उपदेशक मंडली धनमें जमा किये गये।

३६। ≤ ) आ० सा० फरूखाबाद के लेखानुसार किसी उचित कार्य में खर्च करने के लिये यहां जमा हैं।

प्प )। आ० सा० फीरोजपुर के लेखानुसार वापिस भेजे गये।

प्रशा ) आ० सा० गुरदासपुर के तथा तथा। ५९॥) आ० सा० मेरठ के विचार अनुसार स्रंतरंग सभा के वापिस लिये गये।

४ ) लाला केवलकृष्ण के जवाय न श्राने से मेरठ समाज में जमा हैं।

प्र् ) ला० रकुनराय वा ला० मुर्लीघर के पास रिजिष्ट्री खत भेजा था परंतु खत पता न लगने से लौट आया इस लिये इन के रूपये यहां जमा हैं।

४९॥ ) पं रामदीन मा के लेखानुसार इस रूपये की उनके पास पुस्तकें भेज गईं॥

५५२- )। संपूर्ण संख्या

पाठक गण ! श्रव देखिये यह श्रपराध भी मुं० इन्द्रमणि जी पर हुआ, कि यदि मुन्शी जी पूर्व स्वीकृत नियमानुसार वर्तते तो उक्त ५५२८)। ये रूपये भी सर्वोपकार श्राय्येधमें रचा में लगते। श्रीर श्राय्येसमाज मेरठ मुन्शी जी के श्रन्यथा व्यवहार पर शोक करके हिस्सेवार वैदिकधमें रच्णार्थ धन को पुनः दाताश्रों के पास क्यों फेर देते। जैसे थोड़े से उदार श्रायों ने वैदिक धर्मोपदेशक मंडली के लिये श्रपना २ भाग दे दिया वैसे सब धन श्राय्यीवर्त देशोश्रति में लगता तो कितनी श्रच्छी बात होती। परन्तु ऐसी २ तुच्छ बातों से देशहितैषी महाशय जन देशोश्रति करने में उदासीन न हों, किन्तु जब बुरे बुराई नहीं छोड़ते तो भले मलाई क्यों छोड़ें।

द० द्यानन्द सरस्वती

१. पं॰ लेखरामकृत जीवन चरित पृ॰ ⊏१६ से ⊏२२ तक छपा। पं॰ जी ने भारतिमत्र कलकत्ता २६-४-१⊏८३ से लिया। भारतिमत्र के लेखानुसार "शाहपुरा" से मेजा गया।

शाहपुरा, सं० १९४०]

पत्र (४२५)

Sch

[40]

पत्र-सारांश (४२३)

[866]

[मुंशी समर्थदान वै० य० प्रयाग] जब तक ईश्वरानन्द् पढ़ता रहे उसे ५) रु० मासिक मिलता रहे<sup>९</sup>।

[₹₹]

पत्र (४२४) स्रोउम<sup>२</sup> [886]

श्रीयुत लाला कालीचरण रामचरण जी त्रानिन्दत रहो।

पत्र तुम्हारा महादेव पंडित के पत्र के साथ आया। समाचार विदित हुआ। समाज का उत्सव अच्छी प्रकार हो गया, यह बहुत सौमाग्य की वात हुई। जो महादेव पिडित के विषय में जो तुमने कुछ अनुमान किया सो हमको नहीं दीखता। यह पिडित धनाथों है धर्मामी नहीं। क्योंकि इसका पत्र इस बात की सिद्धी करता है। जैसा कि कानपुर में एक पंडित को रक्खा था और प्रधात खराव निकला। इन लोगों का विश्वास हमारे हृदय में तभी होगा कि जब उनका वर्तमान प्रत्यच्च वा परोच्च में एक सा देखा जाय। इस पत्र के साथ मान्यपत्र की नकल मेजते हैं। मेरठ से आया हुआ मुंशी इन्द्रमिण का हिसाव इस लिये नहीं मेजते कि तुम को प्रेस एक्ट के मिध्या अम ने आन्त कर रक्खा है। अथवा मुंशी इन्द्रमिण से किसी प्रकार का सम्बन्ध होगा। अस्तु जो हो। तुम्हारा प्रवन्ध भी पाठशाला विषयक अच्छा नहीं है। अब कई बार हमने लिखा कि पंडित लक्ष्मीदत्त जी के आने के पश्चात् वा पहले संस्कृत में कौन २ ग्रंथ का किस २ ने वा कितनों ने पढ़ा वा पढ़ते हैं। उसका समाचार कुछ भी नहीं लिखा। इस से विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला में अलिफ वे और किट वेट का धर्मार है जो कि आर्यसमाजों को विशेष कर्तव्य नहीं है। और इसके साथ पंडितों का हिसाब भेजते हैं देखलो। तुम अपने हिसाब से मिला लो। और आगे क० शाहपुरा राज मेवाड़ के पते से मेरे पास भेज दो। और सब से बाबू जी आदि से हमारा आशीर्वाद कह देना।

मि० बै० व० ३ सं० १९४०४।

हस्ताचर ५)

[49]

पत्र-सूचना (४२५)

[400]

[मुंशी समर्थदान वै० य० प्रयाग<sup>8</sup>] पत्रों का उत्तर.....। [ वै० कु० ३ सं० १९४० (२५ अप्रेल १८८३) ]

१. यह स्रंश पं वेवेन्द्रनाथ संकलित जीवन चिरत पृष्ट ६८८ में निर्दिष्ट है। यु० मी०।

२. मूल पत्र आर्थसमाज फरुखाबाद में सुरित्तत है। में मामराज जी ने जनवरी सन् १६२७ में प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पू॰ २०२-२०३ पर कुछ पाठ मेद के साथ छुपा है। इस पत्र का उत्तर देखों में मुंशीरामसम्पा॰ पत्रव्यवहार पू॰ ३२५।

३. पिछली पूर्ण संख्या ४६७ पर सुद्रित । यु॰ मी॰ । ४. २५ एप्रिल, बुध, सन् १८८३ ।

प्. इस पत्र पर ऋषि के इस्ताब्र नहीं हैं। सारा पत्र लेखक के ही हाथ का है। ऋषि का एक भी अब्दर नहीं है। इस लेखक के लिखे और भी कई पत्र हैं।

६. इस की सूचना अगते पूर्ण संख्या ५०१ में है। यु० मी०।

[५२]

पत्र (४२६)

[408]

श्रो३म्°

मंशी समर्थदान जी आनिद्त रही !

तुम्हारे सब पत्रों का उत्तर और पुस्तक के बंडल के विषय का पत्र कल तक भेज चुके हैं। ब्राज एक विशेष समाचार के लिये लिखते हैं। जो तुम को पंड्या जी ने उदयपुर का वर्तमान न लापने के विषय में लिखा था उस को सुनकर हमने उदयपुर को लिखा था कि इस को लिखा वा नहीं। वहां से उत्तर श्राया कि निसंक लिया दीजिये। सो इन के लियाने में विलम्ब न कीजिये। इस लिये श्रव स्वीकारपत्र, मान्यपत्र और धन्यवादपत्र उत्तम कागज पर लिया कर सब समाजों में श्रीर जहां उचित सममो भेज दो। श्रर्थात् जहां २ लाइब्रेरी वा उत्तम समाचार पत्रों में भी भेज दो। श्रीर हमारे पास भी उसकी १०० नकल भेज दो। और टाइटल पेज पर भी उदयपुर का वर्तमान लिया दो।

श्रीर गनेशदास श्रीर कम्पनी तारघर के नीचे चांदनी चौक के उत्तर नई सड़क बनारस के पास से हम पुस्तक श्रनेक वार मंगवाते हैं। श्रीर उनका व्यवहार वैदिक यन्त्रालय के साथ है। श्रीर कुछ कमीशन तुम भी उनको देते होगे श्रीर वो भी तुम को देता होगा। तुम उस को एक चिट्टी श्रेज दो कि स्वामी जी जो र पुस्तक मंगवावें भेज दिया करो श्रीर हमारे हिसाब में लिख लो क्योंकि उसका कमीशन वैदिक यन्त्रालय में रहा करे। श्रमी हम २१॥। श्रीन के पुस्तक मंगवा चुके हैं जिस का हाल तुमको लिख दिया। श्रीर दो एक दिन में ५०) क० या ६०) क० के पुस्तक श्रीयुत महाराजा- घिराज हमारे द्वारा मंगवावेंगे। श्रीर गनेशदास का व्यवहार शुद्ध है क्योंकि हमने उसकी दुकान से हजारों रुपये की पुस्तकें छी हैं। श्रीर कमीशन भी कुछ देता था, हमको ठीक याद नहीं। तुम ने तो उस से कमीशन का खुलासा कर लिया होगा। यदि न करा हो तो श्रव कर लेना। पूर्व पत्रों का उत्तर श्रीर इस का उत्तर शीघ लिखना।

आज तुम्हारा २३-३° का पत्र पहुंचा समाचार विदित हुये। ईश्वरानन्द वहां पहुँच गया, अच्छा हुआ। और रामनाथ को तुम ने लौटा दिया होगा, अच्छा किया। जैसा तुम ने उस का सूची पत्र बनवाया है उसको बहुत जल्दी छपवाओ। यजुर्वेद के पत्रे भेज दिये हैं पहुंचे होंगे। ऋग्वेद के भी अब भेजने वाले हैं। परन्तु यह समभो कि यजुर्वेद भेजा है मई महीने का। और जो यह ऋग्वेद का भेजेंगे जून का है। अब हम आगे यजुर्वेद के पत्रे जुलाई की पूची तारीख तक पहुँचेंगे। बीच में भले ही तुम जब आधा जून हो हमको स्मरण देना। वैसे ही आगे को भी भेजा करेंगे।

सुम्बई से श्राज लीलाधर हरिदास<sup>3</sup> का पत्र श्राया है। उस में लिखा है कि टैप ढल रहे हैं। बहुत श्रच्क्री वात है।

१. मूल पत्र परोपकारिग्री सभा में सुरिच्चत है।

२. २३-४ चाहिये। यह पत्र २६ ऋप्रेल को लिखा गया। यु० मी०।

रे. लीलाघर इरिदास रचित 'सत्यासत्यविचार' नामक पुस्तिका का उल्लेख पूर्व ३३१ पृष्ट पर आया है। विशेष हमारे 'ऋषि दयानन्द के प्रन्थों का इतिहास' प्रन्थ के परिशिष्ट पृष्ठ ८४, ८५ पर देखें। यु॰ मी०।

अव जो तुम ने ज्वालाद्त्त के लिये भाषा बनाने के विषय में लिखा उसके ये नियम हैं। यदि स्वीकार करेगा तो रक्खेंगे, नहीं तो नहीं।

- (१) यदि वह १७) रुपये ही अपना मासिक रखना चाहे तो १६ मन्त्र की भाषा प्रतिदिन बनानी पड़ेगी, चाहे वह गायत्री छन्द हो चाहे उत्कृति अर्थात् छोटे बड़े मन्त्र सब गिनती में आवेंगे ।
  - (२) श्रज्ञर स्पष्ट श्रीर चित्त लगाकर सुन्दर भाषा बनानी होगी।
- (३) जो तुमने प्रयाग में नौकर रखा है, वह हमारी पुस्तक सहर्ष प्रूफ सोधे देवे। श्रौर जहां उस को संदेह पड़े ज्वालादत्त से पूंछ ले। श्रौर शिवदयाल को ईश्वरानन्द भी कुछ सहाय दिया करेगा। श्रम्त का प्रूफ जिस पर छापने की श्राज्ञा दी जाती है वह एक बार ज्वालादत्त श्रौर शिवदयाल देख लिया करें। उसके सिवाय ज्वालादत्त को कुछ न करना होगा, किन्तु भाषा ही बनाना होगा।
- (४) यदि उस पर उसकी प्रसन्नता न हो तो घरको चला जाय। यदि घर में रह कर भाषा वनाना चाहे तो उसको ८) रु० माहवारी देवें और १२ मन्त्र की भाषा प्रतिदिन बना दिया करे। बाकी अपना घर का काम किया करे। डाक और कागज का खर्च हमारा होगा। और यंत्रालय में अच्छी। भाषा और कुळ अधिक करेगा तो उसका मासिक यथायोग्य वढ़ा दिया जायगा।
- (५) यदि वह कहे कि इतनी भाषा मुक्त से नहीं वनाई जाती तो उसका कहना न्यर्थ है। क्योंकि जब हम दो घंटे वा अहाई घंटे अथवा तीन धंटे में २४ गायत्री मंत्र, १२ तिष्टुप् और १० जगती छंद का भाष्य मुखपूर्वक बना छेते हैं तो उस से अधिक समय और परिश्रम कभी नहीं लग सकता। इन दोनों बातों पर उसकी प्रसन्नता नहीं तो हम को भी उस पर कुछ प्रसन्नता नहीं। यदि वह घमएड करके चला जायगा तो ऐसी जीविका कहीं नहीं मिलेगी और दुःख पावेगा। और हमारी कुछ भी हानि नहीं, क्योंकि हम तो दूसरे को रखके भाषा बनवा लेंगे। और उसके सिवाय पश्चात्ताप के कुछ भी हाथ न लगेगा। घर पै जाके दशगात्रादि मृतक कभी कराके मुद्दीवधान खाया करेगा। यह सब बातें तुम उसको समका दो। पश्चात् जैसा हो वैसा हमको १० दिन [के] भीतर शीच उत्तर लिखा भेजो। पीछे हम भाषा बनाने के लिये पत्र भेजोंगे, पूर्व नहीं।

ईश्वरानन्द को हम ने जैपुर भेजा था। उस ने उस का वर्तमान कुछ नहीं लिखा। सो क्या बात है। सो उस से पूछ कर लिख देना।

मि॰ वै॰ कृष्णा ४ सं० १९४०२।

हस्तात्तर [ दयानन्द सरस्कती ]

[2]

पत्र (४२७) श्रो३मृ³

[५०२]

स्वामी ईश्वरानन्दजी आनन्दित रहो।

१—सब यन्त्रालय के पदार्थ श्रीर नौकरों पर दृष्टि रखना कि नियमानुसार सब काम होते हैं वा नहीं।

- १. गायत्री छन्द २४ ब्रच्सों का होता है ब्रीर उत्कृति १०४ का । यु॰ मी॰ ।
- २. २६ एप्रिल, १८८३। ३. म० मुन्शीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ १७-१८ पर मुद्रित।

२-जब कभी जिस किसी का व्यतिक्रम देखे तो जो शिचा करने से सुधर सक्ता हो तो वहीं सुधार देना, न माने तो हम को लिखना।

३-प्रति अष्टवारे वहां का वर्त्तमान पत्र द्वारा हम को भेजा करना और यथाशक्ति जो कोई

पुस्तक छपे उसको दूसरे के साथ मिलकर वा स्वयं शोधा करना।

. ४-- ग्रीर जब कभी तुज को व्यतिक्रम विदित हो, तब, वा जब हम लिखें तब अपने सामने डाक खुलवाना और पुस्तकालय तथा धन, कोश और अन्य पदार्थों की सम्हाल से यथावत् रचा करना।

 प्यावत् प्रवन्धकर्ता का व्यतिक्रम कोई विदित न हो तब तक उसके साथ मिलकर उसको सहायता देना और प्रीति प्रेम से यन्त्रालय की उन्नति करते रहना । ५) रुपये मासिक प्रतिमास यन्त्रालय से मिला करेंगे। उन से खान पानादि उचित व्यवहार करना। और जब कभी श्रधिक व्यय की इच्छा हो तब हम को लिखना।

६—सदा व्याकरण पढ़ने में परिश्रम किया करना और नियंत समय पर यन्त्रालय का भी काम किया करना।

७-शरीर का संरच्या, प्रातः व्यायाम, भ्रमण, सदा शास्त्रों का चिन्तन करना श्रीर जब तक तेरे स्थान में दूसरा निज पुरुष न आवे तब तक कहीं न जाना। धर्म से घर के समान काम किया करना । वैदिकयन्त्रालय से वेदाङ्गप्रकाश के पुस्तक लेकर पढ़ा करना ।

(हस्ताच्चर) दयानन्द सरस्वती २ शाहपुरा राज मेवाड़ राजपूताना।

[8]

पत्र (४२८)

[403]

श्रो३म

श्रीयुत श्रीमान् महाशय श्रानन्दित रहो !

यहां जो नहर त्रापके खुदाई जाती है वह ३ फुट ऊपर ३ फुट नीचे और ३ फुट चौड़ी खुदायी जाती है सो मेरी समक्त में ३ फुट चौड़ी ४ फुट ऊपर ख्रीर दो फुट नीचे रहना बहुत अच्छा है। इस का विशेष गुण श्रापको श्याम को समभा दुँगा। इत्यलम्।

वैशाख कृष्ण ४ गुरु सं० १९३९ ।

हस्ताच्र [द्यानन्द सरस्वती४]

१. इस में तिथि नहीं है त्रानुमान से यहां घरा है। बै॰ शु० ३ सं० १९४० (=९ मई २८८३) के पत्र में ईश्वरानन्द का श्रन्यत्र चला जाना लिखा है। त्रात: यह पत्र उस से पूर्व का है। यु० मी०।

२. म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ १८ पर हस्ताव्य नहीं है । यु॰ मी॰ ।

३ सम्बत् १६४० चाहिए। २६ एपिल १८८३।

४. जिस समय स्वामी जी शाहपुरा में विराजते थे, उस समय वहां नहर की खुदाई हो रही थी । उसे

शाहपुरा, सं० १९४०]

पत्र (४३१)

४०९

[6]

पत्रांश (४२९)

[५०४]

[माई जवाहरसिंह मन्त्री आर्यसमाज लाहौर]

मुम को निश्चय है कि आप के आने से यहां वड़ा आनन्द और उन्नति होगी । " "

[8]

[५०५]

पत्रांश (४३०) [पं छगनलाल द्विवेदी मसूदा]

श्रव जब कभी हम मसूदे में श्रावें[गे] तब श्री दरबार को श्रीर तुम को छ: शास्त्र के मुख्य मुख्य विषय और मनुस्मृति के तीन अध्याय पढ़ाना चाहते हैं। उस समय वहीं रहना हो और निरन्तर पढ़ाना हो तो एक आध महीने में सब हो जावेंगे। इसका उत्तर लिखना। और यहां के श्री महाराजा-धिराज ने मनुस्पृति का सप्तमाध्याय पढ़ लिया है। दो दिन योगशास्त्र अभ्यास करने के लिए पढ़ कर कल अष्टमाध्याय का आरम्भ करेंगे।"

शाहपुरां

[वैशाख वदी ७ संवत् १९३९ से कुछ दिन पहले लिखा गयार ।]

[3]

पत्र (४३१)

[५०६]

बायू नन्दिकशोर जी आनन्दित रही!

श्राज जैपुर समाज से पत्र श्राया। उसके पहले भी श्राया था श्रीर श्रापने जिस परिडत के लिए विज्ञापन दिया है इत्यादि से आप के समाज का समाचार हम जान कर यह पत्र लिखते हैं कि

देखकर अपने रहने के स्थान से ही स्वामी जी ने श्री दर्बार के पास यह पत्र मेजा था । मूल पत्र राजकार्यालय शाहपुरा में सुरिद्धत हैं।

१. भाई जवाहरसिंह ने ऊपर मुद्रित ग्रंश रहे बुतलान पृ० ६८ पर छापा है। दयानन्द चरित दर्पण ए० २७२ पर इतना लेख श्रधिक है-

भाई जवाहरसिंह जी ग्रानन्दित रहो ।

श्राप का पत्र पाया विशेष श्रानन्द हुआ। श्राप रियासत जोधपुर में श्रवश्य श्राश्रो मुक्त को निश्चय •••••। नहीं कह सकते कि इतना ग्रंश मुंशी जीयालाल जैनी ने कहां से लिया। इन पंक्तियों वाला पत्र जोधपुर बुलाने के लिए नहीं था। माई जवाहरसिंह का ऋभिपाय है कि शाहपुरा बुलाने के लिए था।

२. पं॰ चमूपति जी सम्पादित ऋषि दयानन्द का पत्रव्यवहार, द्वितीय भाग, संवत् १६६२, पृ॰ ५३ पर पं॰ छुगनलाल के उत्तर में उद्धृत । पं॰ छुगनलाल का उत्तरपत्र वै॰ व॰ ७ श्रर्थात् २९ एपिल रैदद सोम का लिखा हुन्न्या है। संवत् १६३६ भूल से लिखा गया है। चाहिये संवत् १६४०.।

३. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुर्रात्त है।

उस पिंडत का क्या नाम है। यदि वह जैसा तुम ने विज्ञापन दिया है वैसा ही है तो उन पिंडत जी को यहां शाहपुरा में हमारे पास भेज दीजिये। हम उन की परीचा करके तुम्हारे लिखे प्रमाणे २०) ६० से कम माहवारी न करके किसी योग्य स्थान पै रख देंगे, वा उतने ही माहवारी पर हम अपने ही पास रख लेंगे। एक वार यहां हमारे पास भेज दो।

द्वितीय यह बात है कि कल तुम्हारे पास जो स्वीकारपत्र उदयपुर राज यन्त्रालय में छपा है और जो एक मान्य पत्र श्रीमान् आर्थेकुलदिवाकरों ने मुक्ते दिया है उन दोनों की दो २ नकल तुम्हारे पास मेजते हैं। उन में से एक २ नकल तो तुम अपनी लाय होरी में रखना और एक २ नकल आर्थिधर्म सभा जयपुर के समाज में देना। इन दोनों बातों का उत्तर नागरी में लिखकर भेजना। इस बात से मुक्ते बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपकी सभा निर्विन्नता से सदा बढ़ती है। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर सब मनुष्यों पर कृपा करे कि सब की आत्मा असत्य अधर्म व्यवहार से छूट कर सत्य धर्म व्यवहार में प्रवृत्त रहे। सब आर्थसमाज में मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा—

मि वै० कृ० ७ सं० १९४० । तद्नुसार ता० २९ अपरेल सन् १८८३ ई० । इस्ताचर [द्यानन्द सरस्वती]

[१]

पत्र (४३२) श्रो३म°

[409]

श्रीयुत रावराजा श्रीमान् तेजसिंह जी श्रानन्दित रहो—

श्रीमान् का पत्र संवत् १९४० वैशाख वदी ३ रिववार का लिखा मेरे पास वैशाख वदी द सोमवार को पहुंचा। जिस के साथ मुंशी दामोदरदास जी का भी पत्र था। वांच कर बड़ा ही आनंद हुआ। मैं आनन्द पूर्वक जोधपुर आने का निमन्त्रण स्वीकार करता हूं। और श्रीमान महाशय महोदय जोधपुराधीशों, श्रीमान् महाराजे श्री प्रतापसिंह जी तथा आपको अनेक धन्यवाद देता हूं कि जिन आप लोगों ने मेरे वहां जोधपुर में आने के लिए प्रीति प्रकाश की। अब मुक्त को हद निश्चय इस वात से हुआ कि अब आर्यावर्त की उन्नति होने का समय आया है। जब श्रीमान् जोधपुराधीश आदि की वैदिक सत्य धर्म और सनातन राजनीति पर प्रीति हुई है। पुनः हम लोगों के सौभाग्य के उदय होने में कुछ सन्देह नहीं। और इस बात से परम आनन्द हुआ कि जो मुंशी दामोदरदास जी ने आप की उन्नति होने का विषय लिखा। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर से मैं प्रार्थना करता हूं कि आप लोगों की उन्नति कुपा कटान्न से सदा किया करें। और स्वदेशोन्नति में आप सब लोगों को हढोत्साही कर के आप लोगों के द्वारा सब आर्यावर्त देश की बढ़ती कराके इस महापुण्य कीर्ति के भागी आप लोगों को करे।

(१) मैं आज से १० दश वा १५ पन्द्रह दिन में दूसरी चिट्ठी आप को लिखूंगा कि जिस में पाली के स्टेशन से जोधपुर आने में जितनी वा जैसी सवारी भेजनी, व जो २ उचित प्रवन्ध होना थोग्य होगा लिखूंगा। उसी के अनुसार प्रवन्ध आप कर देवेंगे।

१. रावराजा तेजसिंह जी के पास था।

- (२) यहां श्रीमान् महारा[जा]धिराज मनुस्मृति का राजधर्म पढ़ रहे हैं। सात आठ दिन में पूरा हो जायगा। श्रीर ५ पांच सात दिन, एक राज में श्रीर दूसरा पुरुडरीक जी के यहां श्रमिहोम का प्रारम्भ होगा उस में उचित उपदेश वा विधि बतलाने में लगेंगे।
- (३) मैं अनुमान करता हूं कि गत दिन आप का पत्र शहापुराधीशों को दिखलाया । उस से अनुमान होता है कि जोशपुर में शीघ आने में सम्मित कठिनता से देंगे । सम्मित शीघ्र होने के लिये यह उपाय है कि जब मेरा दूसरा पत्र आपके पास आवे तभी आप किसी दूसरे पुरुष को यहां भेज देवें । वे कहेंगे और पश्चात् मैं भी विशेष कहूंगा तो आशा है कि मान जावेंगे, क्योंकि शहापुराधीश बड़े बुद्धिमान हैं । इस में आप २० दिन के भीतर समय का विलम्ब है कि इसी समय में मेरा पत्र वहां आता और वहां से योग्यपुरुष का यहां आना मेरी सम्मित है । अधिक विलम्ब होना मैं भी छचित नहीं समभता ।
- (४) मैं जैसा सत्यधर्म की उन्नति और स्वदेश का उपकार होने में प्रसन्न होता हूं वैसा किसी अन्य वात पर नहीं। क्यों कि यही मनुष्य जन्म, विद्वान, राजा वा धनाट्य पुरुष होने का मुख्य फल है, जिस को कि आप लोग तन मन धन और पुरुषार्थ से करना चाहते हैं। और यह आप लोगों ही का कर्तव्य कर्म है। अब परमेश्वर ने चाहा तो थोड़े ही समय में मैं और आप लोग समज्ञ होकर जोधपुर में आनन्दोन्नति करने में प्रवर्तमान होंगे। मेरी ओर से महाराजे श्री प्रतापसिंह आदि से आशीर्वाद कह दिजियेगा। अलमतिविस्तरेण।

वैशाख वदी ९ भीम संवत् १९४० ।

द्यानन्द सरस्वती शापुरा राज मेवाड़

[2]

पत्र (४३३)

[406]

श्रो३म्र

श्रीयुत कविराज श्यामलदास जी श्रानन्दित रहो।

विदित हो कि बहुत दिन हुए वहां के समाचार विदित होने में। अब आप श्रीमानों और आप के लिखने योग्य वर्तमान लिख भेजिये जिस्से विदित हो कि उन डाक्तरों के कृत्य से क्या गुण हुआ। और क्या क्या हो रहा है। आगे कैसा अनुमान होता है। इसमें डाक्तर लोग भी यही पथ्य कहेंगे कि ब्रह्मचारी रहना, घोड़े पर न चढ़ना तथा मांसाहारादि [का] एक वर्ष वा ६ छः महीने अथवा ४ चार महीने तक पथ्य भी यथावत् रखना होगा।

(२) श्रापके लेखानुसार उदयपुर का वर्तमान छापने के लिये वैदिक यन्त्रालय प्रयागादि में श्राज्ञा दे दी है। थोड़े ही दिन में छप के प्रसिद्ध हो जायगा।

१. १ मई १८८३ ।

२. मूल पत्र ठाकुर किशोर सिंह जी के संग्रह में है। पं॰ चमूपति सम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ १८१-- १८२ पर भी छुपा है।

(३) एक नूतन वर्तमान यह है कि श्रीमान जोधपुराधीशोंकी आज्ञा से श्रीयुत महाराजे प्रतापसिंह जी तथा श्रीयुत रावराजा तेजसिंह जी और वाहारट अमरदान जी आदि ने मुक्को शीघ जोधपुर में बुलाने के लिये पत्र भेजा है। सो गत दिन मेरे पास यहां शाहपुरा में पहुंचा है। इसमें आप सर्वाधीशों से पूछ कर अनुमति लिख भेजिये कि यहां क्या होना उचित है। मैंने उसको इस प्रकार का पत्र भेजा है कि जब मेरा द्वितीय पत्र आप लोगों के पास पहुंच जाय तभी पाली के स्टेशन से जोधपुर तक सवारी आदि का प्रबन्ध कर दीजियेगा। मैंने यह विचारा कि जब उदयपुर से प्रत्युत्तर आजायगा तभी जोधपुर में जाने के लिये नियत समय की सूचना तुम को लिख दी जायगी।

श्रीयुत महाराज राजाधिराज जी का पढ़ना रह जायगा। मनुस्मृति के तो ३ अध्याय हो जावेंगे किन्तु शास्त्रों का विषय रह जायगा। तथापि श्रीमानों की अनुमित से जाना होगा। पांच छः दिनों में मनु का ९ वां अध्याय पूरा हो जायगा। और ८ दिनों में अग्निहोत्र का विधि भी हो जायगा। यहां सदा के लिये दो अग्निहोत्र हुआ करेंगे। एक राज में और द्वितीय पुंडरीक जी के यहां। आप जोधपुर में अभी होकर आये हैं। इस लिये आप भी मुक्त को लिखिये। और जो उचित हो तो जिस किसी को जोधपुर में लिखना। अखिलेशों की संमित हो सो भी यहां लिख भेजिये। जो ५१ नियम राजनीति के लिखकर श्रीमानों को दिये थे उसकी १ नकल हमारे पास अवश्य भेज दीजियेगा और सब मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मि० वै० कु० ९ सोमवार सम्वत् १९४० र।

[दयानन्द सरस्वती] (शाहपुरा)

[4]

पत्र (४३४)

[409]

पिंडत गोपालरावहरि जी आनंदित रही।

श्राज एक साधू का पत्र मेरे पास श्राया<sup>3</sup>। वह श्राप के पास भेजता हूं। साधु का लेख सत्य है। परन्तु श्रापने चित्तौड़ सम्बन्धी इतिहास में न जाने कहां से क्या सुन सुना कर लिख दिया। उस काल उस स्थान में मेरा उद्यपुराधीश से केवल तीन ही बार समागम हुआ। श्राप ने प्रतिदिन दो बार होता रहा, लिखा है। श्राप जानते हैं कि मुक्ते ऐसे कामों के परिशोधन का श्रवकाश नहीं। यद्यपि श्राप सत्यप्रिय श्रोर शुद्ध-भाव भावित ही हैं श्रोर इसी हित-चित्त से उपकारक काम कर रहे हैं, परन्तु जब श्रापको मेरा इतिहास ठीक २ विदित नहीं, तो उसके लिखने में कभी साहस मत करो।

१. ये ५१ नियम पूर्ण सं० ४५६ (पृष्ठ ३६६-३७४) पर छपे हैं।

२. ३ मई सन् १८८३ ।

३. साधु जी का पत्र तथा पं० गोपालरावहरि का २७-४-८३ का उत्तर दोनों म० मुन्शीरामसम्पा० पत्रव्यवहार पृ० ३३३-३३७ पर छपे हैं।

शाहपुरा, सं० १९४०]

पत्र (४३५)

४१३

क्योंकि थोड़ा सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोषकृत्य विगड़ जाता है । ऐसा निश्चय रक्खो। श्रीर इस पत्र का उत्तर शीघ्र भेजो।

वैशाख शुक्त २ सम्वत् १९३९ । स्थान शाहपुरा ।

( द्यानन्द सरस्वती )

[43]

पत्र (४३५) ( ओ३म् ) [480]

मुन्शी समर्थदान जी श्रानिन्दित रहो—<sup>3</sup> १—पत्र तुम्हारा श्राया वर्त्तमान विदित हुत्रा । जैनियों की पुस्तक का बंडल प्राप्त होने से

निश्चय हुआ।

२-ईश्वरानन्द कहीं अन्यत्र चला गया है। वह बड़ा चंचल है। बहुत लोगों के कहने से

हमने दीचा दी श्रीर तुम लोग भी प्रसन्न हुए, परन्तु प्रसन्नता का काम करे जब ठीक है।

३—कम्पोजीटर के निकालने से बहुत हानि हुई। परन्तु जैसे बने उन सब को जो कि पूर्व थे रख लो। किसी का ॥) आना किसी का १) रुपया अधिक बढ़ाकर रखलो। क्योंकि वेदाङ्गपकाश और सत्यार्थपकाश बहुत जल्द छपना चाहिये।

8—तुमको हम निश्चित कहते हैं कि बाहर का काम किसी का मत छापो । सत्यार्थप्रकाश श्रीर वेदाङ्गप्रकाश के छपने में देर होने का कारण बाहर का काम है । श्रीर देशहितैषी श्रीर भारत मुद्दशाप्रवर्त्तक श्रीर प्रयाग-समाचार सब का छापना बन्द कर दो । श्रीर उनको लिख दो कि तुम्हारी इच्छा हो जहां छपवाश्रो । क्योंकि हमने पहिले ही लिखा था कि जब हमारे निज काम में हर्कत होगी उसी वक्त हम बन्द कर देंगे । सो हर्कत बहुत होती है। क्योंकि यह यन्त्रालय रोजगार के वास्ते नहीं है, केवल सत्यशास्त्रों को छापकर प्रसिद्ध करने के लिये हैं, न कि व्यापार के लिये । यहां छापने को बहुत है जितना चाहो उतना छापो । इन समाचार श्रादि के छापने में समय खोना कुछ उचित नहीं । हम को श्राशा है कि तुम भी इस बात को प्रसन्न कर लोगे क्योंकि तुम को प्रसन्न करना श्रवश्य है । श्रीर पण्डित जी की यही प्रसन्नता है ।

५ — तुम्हारे कल के पत्र में पुस्तकों का बंडल लिखा हुआ नहीं आया है। आवेगा तब देख करके मान्यपत्र पर यदि तुम्हारा लेख मानने योग्य होगा तो रहने देंगे, नहीं तो नहीं। और वैदिकनिधि

१. संवत् १६४० चाहिये। ८ मई १८८३। तिथि की भी भूल हो सकती है। ६ एप्रिल भी सम्भव है।

२. दयानन्ददिग्वि॰ तृतीय खण्ड से लिया गया । फरुखाबाद का इतिहास पू॰ २०१ से २०२ पर भी छपा है ।

३. मूल पत्र परोपकारिग्। सभा श्रजमेर में सुरिह्नत होगा । इमने श्रायंधर्मेन्द्र जीवन चरित पृ० ३७३ से लिया है।

४. ऋषि द्यानन्द 'पसन्द' शब्द के स्थान में सर्वत्र संस्कृत 'प्रसन्न' शब्द का व्यवहार करते हैं । यु भी । के विषय में तुमने लिखा सो ठीक है। क्योंकि उन्हीं लोगों के दस्तखत से छपना ठीक है। श्रीर धन्यवाद्पत्र तथा मान्यपत्र पर प्रयागसमाज के प्रधान श्रीर मन्त्री के दस्तखत होना चाहिये।

६—ऋग्वेद के पत्रे १५७८ से लेके १६९७ तक पिडित ज्वालाइत्त को भाषा बनाने के लिये देदेना। श्रीर जसने १६ मन्त्र की भाषा प्रतिदिन बनाना स्वीकार किया है सो वरावर बनाया करे। मि० वै० हा० ३ सं० १९४० ।

ह० दयानन्द सरस्वती

[2]

पत्र (४३६)

[५११]

श्रीयुत मान्यवर रावराजा तेजसिंह जी श्रानन्दित रहो<sup>र</sup>।

याज पूर्वप्रेषित पत्रस्थ पूर्वकृत प्रतिज्ञानुसार याज से दसवें दिन पत्र लिख कर त्रापके पास मेजा था3—मुक्तको निश्चय है कि व्यापने श्रीमान प्रतापसिंह जी तथा श्रीयुत केसरीसिंह जी की सम्मित मेरे बुलाने में अवश्य ले ली होगी। और इन महाशयों के द्वारा श्रीयुत महोदय महाशय जोधपुराधीशों की भी अनुमित स्वीकृत करके लिखी होगी। अब आप के पूर्वलिखित पत्रस्थ प्रीति, उत्साह और परोपकार दृष्टि के अनुरोध से आपको मैं लिखता हूं कि यदि आप लोगों की ऐसी ही इच्छा है कि मुक्तको शीघ्र जोधपुर में बुलाना अंगीकृत है तो मैं भी आप महाशयों की इच्छानुकृत लिखता हूं कि इस पत्र के पहुंचने की मिती से आगे पांच दिन के भीतर पाली में सवारी के लिए दो रथ और एक सैंज गाड़ी, दो ऊंठ और एक हाथी और पुस्तकादि भार के लिए एक सवारी और दो सवार और आठ सिपाहियों का एक पहरा, पहरे के लिए भिजवा दीजिए। हमारे पास १० तथा १२ आदमियों से अधिक नहीं।

श्रीर सवारी के साथ एक बुद्धिमान् पुरुष श्राना चाहिए कि जो पाली में सवारी रख, रेल में बैठ के मेरे पास शाहपुर में श्रा जाय। परन्तु वह रूपाहेली के स्टेशन पर उतरे। श्रीर दो दिन पहले शाहपुर में पत्र द्वारा खबर भेजदे कि जिस से शाहपुर से सवारी उन के लिए स्टेशन पर उपस्थित रहे कि वे रेल से उतर, सवारी में बैठ, शाहपुरा में श्रानन्दपूर्वक चला श्रावे। श्राप का भेजा हुश्रा माननीय पुरुष शाहपुरे में जिस दिन श्रावेगा उस से दो तीन दिन में यहां से यात्रा कर उचित समय पाली में पहुंचेंगे। जोगपुर में श्राके श्रत्थानन्दपूर्वक मैं श्राप लोगों से मिल्लंगा। श्रागे मेरे ठहरने के लिए जहां तक हो सके बगीचे में स्थान होना चाहिये। न वह नगर से श्रात दूर, न श्रात निकट। जल वायु जहां का शुद्ध श्रीर एक मील से श्रिक दूर श्रीर श्राध मील से कम दूर न हो। श्रीर पूर्वोक्त इंटों में एक सवारी का सांडिया श्रोर दूसरा साधारण। जब हम पाली में पहुंचेंगे तब उस को एक चिट्ठी इस बात की कि जिस स्थान में मेरा ठहरना हो, क्या २ सामग्री उपस्थित करनी होगी, पत्र

१. ६ मई १८८३

२. मूल पत्र जोधपुर में रावराजा जो के पास सुरिच्चत थे, हमें वहीं से प्रतिलिपियां आई थीं।

३. पूर्ण संख्या ५०७ का पत्र।

शाहपुरा, सं० १९४०]

पत्र (४३८)

४१५

लिख कर उस सांडिये सवार के हाथ आप के पास भेजी जाय, एक दिन पूर्व ही। जिस के आनुसार आप उस स्थान में विछीना आदि का यथावत् प्रबन्ध कर दीजियेगा। इस का उत्तर शीघ्र भेजिये और सब से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मिती वैशाख शु० ४ गुरुवार १।

[दयानम्द सरस्वती]

[8]

पत्र-सूचना (४३७)

[५१२]

[पं सुन्दरताल जी, प्रयाग] वैदिक यन्त्रालय के हिसाब की व्यवस्था के लिए ।

[88]

पत्र (४३८)

[493]

श्रो३म्³

श्रीयुत कालीचरण रामचरण जी श्रानन्दित रहो।

पत्र तुम्हारा २-५-६३ का लिखा हमारे पास सहित ३००) की हुँडी के आया। मैं भी जानता हूं वैदिक यन्त्रालय का हिसाब गड़बड़ है। परन्तु अब पिडत सुन्दरलाल जी का आदमी गया है। वह हिसाब किताव लिखा करेगा। इस से आशा है कि सुधर जायगा। यदि न सुधरेगा तो जैसी आप लोगों की सम्मति—यही कि एक सराफी पढ़ा हुआ अच्छा प्रामाणिक आदमी आप लोगों की सम्मति से लिया जायगा। इस के विये आज मैंने पण्डित सुन्दरलाल जी को लिखा है। उन की सम्मति आने पर मैं लिखांगा। अथवा परवारा पण्डित सुन्दरलाल जी तुम को लिखोंग। लाला सेवाराम जी तथा बाबू जी आदि को मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। और एक यह फोटोब्राफ तथा छोटा सा पत्र पामानन्द को दे दीजियेगा। और पाठशाला के कन्ना विषय में अवकाश पाकर लिखूंगा और यहां का समान्नार भी।

शाहपुरा मि० वै० ज्ञु० ४ सं० १९४० ।

( दयानन्द सरस्वती )

१. १० मई १८८३।

२. इस का संकेत अगले पूर्ण संख्या ५१३ के पत्र में है। यु॰ मी॰।

३. मूल पत्र त्रार्यसमाज फर्रखाबाद में सुरिचत है। इस की प्रतिलिपि जनवरी सन् २७ में म० मामराज जी ने की। फरुखाबाद का इतिहास ृष्ठ २०३-४ पर भी छुपा है।

४. यह फोटो श्री स्वामी जी तथा रामानन्द का एक साथ खिंचा हुआ है।

५. यह अगली पूर्ण संख्या ५१४ पर छपा है। यु॰ मी॰।

६. १० मई वृहस्पति सन् १८८३।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन [शाहपुरा, सन् १८५३

[8]

388

पत्र (४३९)

[488]

श्रो३म्°

रामानन्द आनन्दित रहो।

तरे लिखे प्रमाणे प्रतिकृति भेजी जाती हैं? । कोई कहार अच्छा मिले तो लेते आना । तेरे ३०) ६० के लिए १०) १५) २०) तक देंगे । १०) जमा रहेंगे । दुकान को लिख दिया । जब आवश्यक होगा तब दे देंगे । सब से हमारा आशीर्वाद कह देना ।

मि० वै० ग्रु० ४ सं० [१९४० । १० मई] १८५३

[ दयानन्द सरस्वती ] शाहपुरा

[3]

पत्र (४४०)

[५१५]

श्रो३म्3

बाबू विश्वेश्वरसिंह जी आनिन्दित रहो।

निम्नलिखित वर्तमान पंडित बाल मुकुन्द तथा देवीप्रसाद को भी सुना कर कार्य्य कीजिये । इस को मुन्शी समर्थदान ने लिखा था कि बाहर का काम भी छपना चाहिये। उस पर हम ने ऐसी अनुमति दी कि हमारे काम में हर्ज होगी तो हम उसी वक्त बाहर का काम बन्द कर देंगे। अब देखों कि एक सप्ताह में तो प्रयागसमाचार छपता है। और मासिक ये दो ले लिये। और आठ फारम वेदभाष्य का छपता है। और यह सब मिल कर महीने में १० फारम तथा १२ यह हो जाते होंगे। इस हिसाब से २० तो हो गये। अब कहो सत्यार्थप्रकाशादि कैसे छपे। इस लिये हम चाहते हैं कि बाहर का काम जब तक दूसरा प्रेस न लिया जाय तब तक न छपाया जाय। क्योंकि यह छापाखाना केवल सत्यशास्त्र के प्रचार के लिए किया गया, रोजगार के लिये नहीं। यद्यपि समर्थदान की मनसा छापेखाने की उन्नति करने पर हो कि बाहर के काम से कुछ सहाय होगा तथापि अपने निज पुस्तकों के छपने में हानिकारक को हम नहीं छपवा सकते। इस लिये मुन्शी समर्थदान को हमने लिखा है और तुम भी उन को समभा दो कि नोटिस देदें। पंडित सुन्दरलाल जी की भी यही सम्मति होगी

१. मूल पत्र म॰ मामराज जी के पास श्रीराम निवास (विलिड क्षं) खातौली (जिला मुजपफरनगर, यू॰ पी॰) में सुरिच्ति है।

२. यह पत्र तथा प्रतिकृति श्रर्थात् रामानन्द के साथ खिंचा हुश्रा श्रपना फोटो मन्त्री श्रार्थसमाज फरुखाबाद के द्वारा भेजा गया था। म॰ मामराज जी ने सन् १६२७ में वहां से प्रतिकृति तथा पत्र प्राप्त किया। इस पर रामानन्द का नोट इस प्रकार है—

<sup>&</sup>quot;इंस पत्र को जब कभी काम पड़े प्रवर्तक में छाप दीजिये कृपा होगी। रा॰ न॰। ३. मूल पत्र श्री नारायण स्वामी जी के संग्रह में सुरित्त है।

# ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन।



ऋषि द्यानन्द सरस्वती और उनका लेखक ब्रह्मचारी रामानन्द। इस चित्र का संकेत पृ० ४१६ पर मुद्रित रामानन्द को लिखे गए पत्र में है। श्रर्थात् बाहर का काम बिलकुल बन्द किया जाय। कारण कि समाचार चाहे जहां छपेगा, उनकी कुछ हानि नहीं होगी। श्रीर श्रपने पुस्तक श्रान्यत्र नहीं छप सकते। श्रीर हम ने इस से कहा था जब इस प्रतिज्ञा पर कहा था। चाहे चिट्ठी भी हमारी इसी के पास होगी, भले ही देख लो। यदि तुम प्रयागसमाचार लो तो रात में वा श्रनध्याय में तथा सत्य शास्त्रों के छपने का समय बचा कर श्रान्य समय में कि जिस में इन शास्त्रों के छपने में विघ्न न हो, लिखा था। सो श्रव समर्थदान को कह दो कि १५ दिन पहिले नोटिस दे दो प्रयागसमाचार वाले को श्रीर महीने पहले देशहितेषी श्रादि को। श्रीर वाहर की छपवाई किसी की मत लो। जब बाहर की छपवाई लेने का समय श्रावेगा तब हमहीं कह देंगे, श्रव वाहर का काम जो कुछ श्रावे तो ले लो। एक तो प्रेस है, उस में श्रपना छपना बहुत है। इस से बाहर की छपवाई लेनी श्रवश्य नहीं। श्रीर सब से हमारा श्राशीर्वाद कह देना।

श्रीर तुम तीन श्रीर समर्थदान मिल कर एक सभा करो कि जिस से कोई व्यवस्था नई करनी वा पुरानी हटानी हो तो विचार करके हम को श्रीर पंडित जी को लिखा करो। श्रीर जो सुन्शी समर्थदान ने मान्यपत्र के साथ छापा है, सो श्रच्छा है। क्योंकि इतने लेख के विना मान्यपत्र का श्र्ये लोगों के समक्ष में नहीं श्राता। इतना लेख श्रवश्य होना था।

मि० वै० ग्रु० ४ सं० १९४०२।

हस्ताचर [दयानन्द सरस्वती] शाहपुरा

[3]

पत्र (४४१)

[५१६]

श्रीयुत कविराज श्यामलदास जी श्रानन्दित रही ।

मेरे पत्र का उत्तर वारहट किश जी के हस्ते शाहपुराधीशों के द्वारा पहुँचा। बांच कर आनन्द हुआ। और इस वात से परम आनन्द हुआ कि श्रीमानों का शरीर आरोग्य होता आता है। निश्चय है कि परमेश्वर की कृपा से अब आरोग्य हो जायगा। और इसी द्वारा देस मेदपाट और त[द्]द्वारा आर्थवर्त देशकी उन्नति की भी आशा है।

(१) जो जोधपुर से पत्र आया था वह रावराजा तेजसिंह का था। और उस में यह लिखा था कि तेजसिंह जी ने प्रतापसिंह जी से कहा और प्रतापसिंह जी ने श्रीमान जोधपुराधीशों से और जोधपुराधीशों ने प्रत्युत्तर दिया कि स्वामी जी को शीघ बुलवाओ। और मुक्त से पूछा कि किस स्टेशन से और कितनी सवारी और कितने आदमी आप के साथ हैं, कितनी सवारी भेज इत्यादि। और असल पत्र रावराज। तेजसिंह जी का आप के पास मेजता हूं। बांच कर लौटा दीजिये। और

र. मान्यपत्र यञ्जर्वेद भाष्य श्रांक ४८, ४६ (सिमिलित) के टाइट पेज ३ पर छपा है । उस के ऊपर मुन्शी समर्थदान ने तीन पंक्तियाँ स्पष्टीकरण के लिये लिखी हैं। सम्भवतः उसी की श्रोर यह संकेत है। इस उसे परिशिष्ट में दे रहे हैं। यु० मी०। २. १० मई १८८३।

३. मूल पत्र ठाकुर किशोरिंह जी के संग्रह में सुरिक्त है। पं॰ चमूपित सम्पा॰ पत्रव्यवहार पृष्ठ १८२-१८४ पर छपा है।

मैंने पहले पत्र में लिखा था कि दस दिन पीछे हम एक पत्र जोधपुर को आप के पास भेज देंगे । सो आज भेजा है । उस में यह लिखा हैं कि हमारे साथ अधिक से अधिक १० तथा १२ आदमी होंगे। और उनके लिए २ रथ एक सिकरम और मेरे लिए एक सिकरम अच्छी इत्यादि लिख दिया है। अब उन का और आप का प्रत्युत्तर आने पर जैसा होगा वैसा विचार किया जायगा। और अब श्रीमानों की सम्मति लेकर वहां का वर्तमान लिखा की जिये। और आप अपने नेत्रों की ओषधी शीघ्र की जिये।

मिती वैशाख शुक्त ४ सं० १०४० ।

[ द्यानन्द सरस्वती ]

[8]

पत्र (४४२)

[480]

श्रीयुत लाला श्यामसुन्दर जी त्यानिन्दत रहो।

मुन्शी इन्द्रमणी जी और लाला जगन्नाथदास समाज में रहने के योग्य नहीं हैं। क्योंकि केवल मेरी निन्दा करने से मेरा वह कुछ नहीं त्रिगाड़ सकते, परन्तु जो देश की उन्नति श्रीर उन्नत्यर्थ समाज के उद्देश हैं, उन से इन का श्राचरण विरुद्ध है। श्रव देखिए इन का सच श्रीर भूठ मुसलमानों के साथ मामले में प्रसिद्ध हो गया है। अब वे कितना ही उद्योग करें, परन्त वह उन के लिये सफल न होगा। इस लिये मंशी इन्द्रमिण जी का सभापति और लाला जगन्नाथदास का पुस्तकाध्यज्ञ रहना श्रयोग्य है। क्योंकि मैंने प्रथम इन दोनों के पास प्रयाग से परिडत सुन्दरलाल जी की सारफत बहुत से पुस्तक रहा और विकायार्थ भेजे थे। उन का हिसाब आज तक उन्होंने नहीं दिया है। सिवाय अपने मतलब सिद्ध करने के लिये, देशोश्रित का नाममात्र कह के, स्वश्रोजन[सिद्ध] करने के अन्य कुछ भी नहीं दीख पड़ता। हां प्रथम यत्किंचित था, सो लोभादि दोष ने अब नष्ट कर दिया। इसिलये जो उन का संगी हो उन के साथ जाने दो। श्रीर बाकी समाज उन से श्रलग कर लीजिये। श्रीर रिजष्टर तथा समाज का धन उन को कभी मत दीजिये। यदि कोई दूसरा समाज होता तो लाला जगन्नाथदास को 'इस समाज पर धिकार है' कहते समय पर ही हाथ पकड़ धका देकर बाहर निकाल दिया जाता। श्रीर उसी वक्त उस का नाम कट जाता। ऐसे दुष्ट भाषण करने वाले पुरुषों का समाज में रहना परम दूषण है। देखो मुम्बई समाज ने ऐसी बातों से बाबू हरिश्चन्द्र चिंतामणि को प्रधान पद से शीघ्र च्युत कर दिया। ऐसा ही अनेक समाजों में हुआ है। इसी से समाज की चन्नति है।

बस आप अपने स्थान पर समाज किया कीजिये और समाज के नियमों पर दृढ रहिये। और उन से अलग आप और जो समाज के हितैषी आर्यावर्त देश की उन्नति चाहें वे भी आपके साथी हों। और जो उनके संगी होवें उनके साथ जावें। और अन्य समाज के सभासद के आने की वहाँ अवश्यकता क्यों सममते हैं। क्या आप समाज के सभासद नहीं हैं। आप ही जो कि लिखने में बातें नहीं आतीं

१. यह पत्र पूर्ण संख्या ५१९ पर छपा है । यु॰मी॰ ।

२. १० मई १८८३।

समाज की श्रोर से श्रन्तरंग सभा में प्रसिद्ध कर दीजिये । श्रीर ४७) ६० समाज के जमा श्रीर रजिष्टर पुस्तक उन को न देने में जो कुछ वे छाप की निन्दा करेंगे उस से छाप को कुछ भी हानि नहीं हो सकती। और आप निश्शंक कह दीजिये कि हम मुन्शी इन्द्रमणी जी और लाला जगन्नाथ दास को सभा के अधिकारी वा सभासद रखना नहीं चाहते। न इनके साथ हम, वा हमारे साथ वे रहें। श्रौर न इनके संग देश की उन्नति हो सकती है। इसलिये हम आज से समाज का कार्य स्वतन्त्र होकर इन दोनों महात्मात्रों से पृथक् करते हैं। श्रीर उसी समय से पृथक् हो जाइये। बहुत से मुरादाबाद [के] रइसों ने प्रथम ही मुक्त से कहा था कि जैसा मुन्शी इन्द्रमणीजी को आप जानते हैं वैसे नहीं हैं, सो ऐसा ही हुआ। श्रीर इसी लिये मैंने स्वीकारपत्र श्रर्थात् वसीयतनामा में से मुनशीजी को प्रथक् कर दिया । उन का सच और भूठ इतने ही नमूने से समक लो कि जो उन्हों ने विज्ञापन दिया था कि हमारे पास मेरठ समाज से मामले के सहाय में केवल ६००) ह० ही आये और मेरठ समाज के हिसाब से ९३३॥।=)॥। पहुंचे हैं। यह महा भूठ नहीं तो क्या है ? इस लिये सज्जनों को विदित कराता हूं कि यदि आर्यावर्त्त देश की उन्नति चाहो तो मुन्शी इन्द्रमणी जी और लाला जगन्नाथदास के अन्यथा आचरण से पृथक हो के देशोन्नति किया करो । इनके समाज में मेल से सिवाय हानि के दूसरा कुछ भी नहीं है। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर अपनी कुपा कटाच से देशोन्नति हदोतसाही कटिबद्ध करें कि जिस से मुनशी इन्द्रमणीजी तथा लाला जगन्नाथदास के किये हुए विन्न श्चाप लोगों को निरुत्साही न करें श्रीर तन मन धन से देशोन्नति में तत्पर रक्खे। ( श्रलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु )।

मि० वै० ग्रु० ६ सं० १९४० । शाहपुरा राज्य मेवाङ्

[ द्यानन्द सरस्वती ]

[2]

कार्ड (४४३)

[496]

श्रो३म्४

ठाकुर शेरसिंह जी आनन्दित रहो।

कार्ड तुम्हारा आया, समाचार विदित हुआ। आजकल गर्मी बहुत होती है। तुमको यात्रा में कष्ट उठाना पड़ेगा। यदि ऐसी ही इच्छा हो तो रात्रि २ में रेल में बैठ दिन में ठहर २ के अजमेर पहुंच रूपाहेली के स्टेशन उतर के हमारे पास चले आओ। रूपाहेली से शाहपुरा = कोश है । यदि

१. प्रथम स्वीकार पत्र में मुं॰ इन्द्रमणि का नाम रखा था। देखो पूर्ण संख्या २६४ पृष्ठ २१८। द्वितीय स्वीकार पत्र (पूर्ण संख्या ४७८) में इटा दिया। यु॰ मी॰।

२. इस पत्र की जो नकल हमें प्राप्त हुई थी, उस में ६३॥। >)॥ लिखे थे, परन्तु समस्त पुरातन लेखों में ६६३॥। >)॥ देख कर हम ने वैसा ही कर दिया है। यह स्पष्ट ही नकल करने वाले का दोष है। पुनः म॰ मामराज जी के मूल पत्र से मिलाने पर मूल पत्र में ६३६॥। >)॥ है। [पूर्ण संख्या ४६७ पर जो हिसाब छपा है उस में (पृष्ठ ४०३ पर) योग ६३६॥। =)॥। ही है। ]

४. मूल पत्र आर्थसमाज फरुखाबाद में सुरिह्तत है। जनवरी सन् १६२७ में म॰ मामराज जी ने इसकी प्रतिलिपी की। फरुखाबाद का इतिहास पु॰ २०४ पर भी छुपा है।

तुम तीन दिन पहले हमारे पास पंत्र वा तार भेज दोगे तो सवारी तुम्हारे वास्ते यहां से आ जायगी तिस से तुम सुखपूर्वक यहाँ पहुंच जाओं। परन्तु थोड़े दिन के लिये हमारे पास न आना चाहिये। कम से कम २० तथा ३० दिन तक जरूर रहना चाहिए। ठाकुर गोपालसिंह जी आदि को मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। परमात्मा की कृपा से हम आनन्द में हैं। आशा है कि तुम भी आनन्द में होंगे।

वै० ग्रु० ७ सं० १९४० रविवार ।

[द्यानन्द सरस्वतीर]

[३]

पत्र (४४४) ब्रो३म् [486]

श्रीयुत रावराजा तेजसिंह जी त्रानिन्दत रहो<sup>3</sup>—

मुन्शी दामोद्रदास जी का ता० २० [१० १ ] मई का लिखा पत्र हमारे पास पहुंचा,समाचार विदित हुआ । उन के पास इस लिये नहीं भेजा कि वह भागासे होगा । आपने पाली में सवारी आदी मुन्शी दामोद्रदास अरेर वारहट अमर्दान जी को भेजा और पाली में सवारी छोड़ कर शाहपुरा में आने की आज्ञा दी । एक डेरा भिजवाया और मेरे रहने के लिये वाग में बंगला नियत किया । बहुत अच्छी बाती की । यह पुरुषार्थ सब आप ही लोगों का है । इसिलये श्रीमान योधपुराधीश महाराजा, श्रीमान प्रतापसिंह जी, श्रीयुत महाराजा भतीजा फतेसिंह जी और आप आदि को अति प्रीति से आशीर्वाद और बहुत धन्यवाद देता हूं । इस को स्वीकार कीजिये । और यहां श्रीयुत महाराजाधिराज शाहपुराधीशों ने रुपाहेली स्टेशन पर ता० २६ मई के दिन आप के भेजे हुए पुरुषों के लिए सवारी उपायक भेजे पुरुष यहाँ पहुंचोंगें तत्पश्चात् में भी यहां से चल कर उचित समय पर जोधपुर पहुंच के आप लोगों से अत्यानन्दपूर्वक मिल्गा । और में इसी बात से प्रसन्न हूं कि जो मुक्त से आप लोगों का यत्किचित उपकार हो और आप लोग मुक्त से आनन्दपूर्वक उपकार प्रहण करें । क्योंकि जो कुछ अपने आर्थावर्त देश की उन्नति है सो सब आप ही लोगों के द्वारा अवश्य हो रही है और होगी । अन्य किसी के द्वारा नहीं। क्योंकि यथा राजा तथा प्रजा—

यदाचरति श्रेष्ठसत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तद्नुवर्तते ॥१॥

[गीता ३। २१]

राजा और राजपुरुषों के सत्य धर्मयुक्त उत्तम पुरुषार्थ ही से सब को सब प्रकार के ज्यानन्द

१. १३ मई १८८३ ।

२. इस पर पता ऋषि के हाथ का लिखा हुआ इस प्रकार है—रामानन्द ब्रह्मचारी के हस्ते लाला कालीचरण रामचरण मन्त्री आर्थ्यसमाज फर्रंखाबाद की मार्फत पहुँचे"। [इस कार्ड पर शाहपुरा डाक घर की मोहर १३ मई १८८३ की है]।

३. मूल पत्र रावराजा तेजसिंह के पास था।

४. १६ ता० का पत्र है ग्रतः १७ ता० चाहिये । यु० मी०।

५. पृष्ठ ४२१ की टि० ४ भी देखें । यु० मी०।

शाहपुरा, सं० १९४०]

पत्र (४४६)

828

प्राप्त होते हैं। अलमित विस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु ॥ अन्य सब सक्कनों से मेरा आशीर्वाद कहियेगा । और पाली में हाकिम के नाम ऐसा तार भेक दिया है कि ता० २६ मई को रूपाहेली के स्टेशन पर सवारी उपस्थित होगी।

मि० वै० सु० १३ सोमवार सम्वत् १९४० ।

[द्यानन्द सरस्वती] शाहपुरा

[8]

ओषधि-पत्र (४४५)

[५२०]

[ श्रीयुत कविराज श्यामलदास जी ] श्रोषधि संवन्धीर।

[4]

पत्र (४४६)

[५२१]

श्रो३म्³

श्रीयुत कविराज श्यामलदास जी श्रानन्दित रही।

श्राप के नेत्र निरोग होगये कि नहीं। किश्र जी वारहट के हस्ताचर श्रापकी चिट्ठी युक्त श्रीमानार्यकुलदिवाकरों के शरीर की श्ररोग्यता सुन बड़ा श्रानन्द हुआ। श्राप लोगों ने श्रपने शरीरों को श्रपने हाथ से ऐसा घास फूस सा बना रक्खा है कि किसी न किसी रोग को छोड़ कर थोड़े ही समय श्रहगण रहते हैं। शरीर की श्रारोग्यता से धर्मार्थ काम मोच यथावत सिद्ध कर सकते हैं।

एक यह समाचार विदित होने कि आज ३ दिन हुये मुम को लेने के लिये जोधपुर से आदमी आगये हैं । और मैं भी परसूं अर्थात् जेष्ट विद ४ शिनवार के दिन यहां से जोधपुर की ओर चलूंगा। और उचित समय वहां पहुंच कर आप को वहां का सब समाचार लिखूंगा। यह समाचार श्रीमानों से भी कह दीजियेगा। और श्रीयुत किवराज मुरारिदान जी तथा उदयपुरस्थ मद्र लोगों से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा और पूर्व मत्येरित पत्रस्थीवधी थोड़े दिन सेवन कर देख

१. १६ मई १८८३ ।

२. इस पत्र का संकेत अगले पूर्ण संख्या ४२१ के पत्र में है। यु॰ मी॰।

३. पं वमूपति सम्पा वित्र व्यवहारं पृष्ठ १८५-१८६ पर मुद्रित ।

४. मुन्शी दामोदरदास रायजादा सिंगी नारनौली, बाबू दुर्गाप्रसाद जी फरुखाबाद निवासी को

लिखते हैं—

" इस्बुलहुक्म जुनाव मौसूफ [श्री म्वामी जी] के माय सब सवारियों के कमतरीन माय मित्र श्रमरदान जी जोधपुर से रवाना होकर स्वामी साहब को शाहपुरा से लेकर जोधपुर में श्राए । जुनाचे जब से श्रकसर
वक्त व्याख्यान हुन्ना है। वरना ५ बजे से १० बजे रात तक सवाल व जवाब होते रहते है।"

५. २६ मई १८८३ । यु॰ मी॰ ।

लीजिये। यदि गुण दीखे तो अधिक सेवन कीजिये। निश्चय है कि आप ओषधी का सेवन न्यून न करते रहेंगे।

मि० जे० कु० २ सं० १९४० ।

हस्ताच्चर शाहपुरा [दयानन्द सरस्वती]

[4]

पत्र (४४७)

[५२२]

श्रीयुत मान्यवरेष्विदन् निवेदनं ?।

विदित हो कि हमारा श्रमबाब श्रीर श्रादमी प्रातःकाल दो घड़ी वा तीन घड़ी दिन चढ़े यहां से चल देवें।

एक पुस्तकादि भार के लिये गाड़ी, कि जिस के वैल १ घर्ग्ट कोश चलने वाले होवें श्रीर सिंघी साई। जैसा कि पहिले सिगी जी ने मुद्दीर बैल भेजे थे वैसा न होना चाहिये। मैं इन वैलों को यहां चलाकर देख लूंगा।

एक सर्कारी रथ और एक सर्कारी तांगा, यदि पुस्तकों के लिये सैज गाड़ी कि जिससे मेह आदि जल पानी का बचाव होवै। ऐसा हो तो बहुत श्रच्छा है। और दग्गी की खुक आपने बैठा ही दी होगी। और एक पहरा यहां का साथ चला जायगा। और पुस्तकों की गाड़ी के साथ एक वा दो मोम जामे भी चाहिये कि जिस से मेह पानी का बचाव हो सके 3।

[दयानन्द सरस्वती]

[६]

पत्र (४४८)

[५२३]

४श्रीयुताय्याऽनवद्य-शुभगुणगणाऽलंकृतेभ्यः श्रीमन्महाराजराजाधिराजेभ्यो द्यानन्द्सरस्वती-स्वामिन श्राशिषो भूयासुस्तमां, शमिहास्ति, तत्र भवदीयं च नित्यमेधमानमाशासे ।

विदित हो कि हम कुरालता पूर्वक कल संध्या के समय में अजमेर में पहुच गये । श्रौर पुस्तकादि के सिहत श्राज सब श्रादमी प्रातःकाल पहुंच गये हैं। विशेष विदित किया जाता है कि शाहपुरा से चल कर जहां घोड़ा बदलता है, उससे श्रागे दो प्राम छोड़ के जो रूपाहेली का भोजरांस प्राम है वह एक कोश रह गया। तब बड़े वेग से श्रांघी श्रौर पानी श्राया। वहां एक घंटा तक भीगते रहे। जब श्रांघी श्रौर पानी बन्द हुश्रा तब भोजरांस प्राम

१. २४ मई १८८३ ।

२. मूल पत्र शाहपुरा राज में सुरिच्त है।

३. संभवतः ज्येष्ठ वदी ३ सं० १६४० श्रर्थात् २५ मई सन् १८८३ ।

४. मूल पत्र शाहपुरा राज में सुरिव्तत है।

जो कि रूपाहेली का है उस में पहुंचे । वहां प्रथम ही मुक्त को लेने के लिये रूपाहेली के ठाकुर उस प्राम में आ ठहरे थे । उन के रात्रि में वहां रहने से मेरे ठहरने और घोड़े आदि के रहने के लिये सब प्रवन्ध उन्होंने कर दिया । और दूसरे दिन मध्याह्न में भोजन कर मध्याह्न समय में आर्थात् गाड़ी के छूटते ही समय पहुंचा । वहां से बरल के स्टेशन पर पहुंचा । देखा तो वहां न कोई सिपाई और न कोई गाड़ीमान उपस्थित था । इस लिये अजमेर को तार देकर सुधा अजमेर में पहुंचा । आज यहां से आधी रात के समय पाछी का टिकट छेकर पाछी को जावेंगे ।

राज के मुख्य दो श्रंग हैं कि श्रच्छे काम करने वालों को पारितोषिक श्रौर बुरे काम के करने वाले को द्रख्ड देना। जो दूसरी चौकी श्रर्थात् घरटे में घोड़ों के साथ सवार भेजा था, वह घोड़ों को छोड़ श्रपने घर का रास्ता लेकर चला श्राया। श्रौर एक मशालची गाड़ियों के साथ भेजा था सोन जाने कहाँ शाहपुरा में छिप रहा। उस का मुख भी नहीं देखा। यदि दोनों बग्घी के साथ सवार होते तो इतना कष्ट न उठाना पड़ता। इस लिये उन को शक्त द्रख्ड हो तो सब चेतन हो जावेंगे। नहीं राजाज्ञा को छुद्य भी नहीं समर्भेंगे। श्रागे जैसी श्राप की इच्छा हो वैसा की जिये। सब से मेरा श्राशीर्वाद कहियेगा व

ज्ये० व० ६ सोम १९४०<sup>8</sup>।

[दयानन्द सरस्वती] अजमेर

मैं शीव्रता के कारण मेरे साथ ४ सिपाई थे। उन को ४) ग्यार [उपहार ?] संध्या और २) जो वहां सिपाई रहे थे उनको देना चाहता था [न दे सका]।

[2]

पत्रांश (४४९)

[५२४]

[राव बहादुरसिंह जी मसूदा]

प्राचित्र को स्टेशन से धीरली का ही टिकट लिया था । इसीलिये कि मस्दा को अवश्य ही जाना होगा। परन्तु वहां सवारी मौजूद नहीं पाई। तब अजमेर को आना हो गया। अब फिर इधर आना होगा, तब मस्दे आना होगा।

[२८ मई ५ १८८३ को अजमेर से लिखा गया।]

दयानन्द सरस्वती

१. श्रर्थात् वीरली स्टेशन । यहीं उतर कर मसूदा जाना था। देखो पूर्ण संख्या ५२४ का पत्र । यु०मी०।

२. इस पत्र का उत्तर पं॰ चमूपतिसम्पा॰ पत्रव्यवहार पु॰ १६, २० पर छुपा है।

३. २८ मई १८८३ ।

४. इतना ग्रंश राव बहादुरसिंह जी के पत्र में उद्धृत है। इस ने उस की थोड़ी सी भाषा बदली है। राजस्थानी प्रयोग के स्थान में भाषा प्रयोग किया है। राव जी का पत्र सं० १६३६ ज्येष्ठाब्द क्र का है। यहां संवत् १६४० चाहिए। ज्येष्ठ वदी क्र को २६ मई थी। राव जी का पत्र पं० चमूपति सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० ७५ पर छपा है। बीरली तथा बरल का एक ही स्टेशन होगा।

प्र पूर्ण संख्या ५२३ के पत्रानुसार २७ मई की संध्या को ब्राजमेर पहुँचे ब्रौर उसी पत्रानुसार तथा श्री पं॰ लेखराम जी के जीवन चिरत पृष्ठ ५७२ के श्रनुसार २८ की रात में पाली के लिये खाना हुए, ब्रात: यह पत्र २८ मई (=ज्येष्ठ कृष्ण ६) को ही लिखा गया। यु॰ मी॰।

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र श्रौर विज्ञापन

[48]

पत्र (४५०)

[५२५]

मुन्शी समर्थदान जी श्रानन्दित रही?।

हम ज्येष्ठ विद ४ शनिवार के दिन शाहपुरे से चलकर ज्येष्ठ विद १० गुरुवार के दिन जोधपुर पहुंचकर फ्रेजुल्लाखांजी के बाग में ठहरे हैं । वेदभाष्य के टाइटलपेज पर जोधपुर का नोटिस छाप देना। और देशहितैषो को भी हमने कह दिया है कि वैदिकयन्त्रालय को मत भेजो और प्रयागसमाचार भी बन्द करदो। यदि बन्द न करोगे तो हम दंड कर देंगे, क्योंकि वहुत वक्त हम लिख चुके हैं। सभा में जो बाहर के काम के छपने की अनुमित हो तो स्वीकार न किया जाने। ये निम्नलिखित समाचार वेदभाष्य के टाइटलपेज पर छाप देना । श्रीयत महाराज राजाधिराज श्रीमान नाहरसिंह जी वर्मा ने ३०) रू० माहवारी सदा के लिये ज्येष्ठ वदी ४ शनिवार के दिन से वैदिकधर्म उपदेशकों के लिये देना स्वीकार कर लिया है। श्रीर २००) रूपये चित्तौड़ी कि जिसके १५०) कलदार होते हैं वेदभाष्य के सहाय में प्रदान किए। श्रीर मनुस्मृति के सप्तम तथा श्रष्टम, नवमाध्याय जो कि राजधर्मविधायक है पढ़कर योगशास्त्र, वैशेषिक श्रीर न्यायशास्त्र के मुख्य विषय भी पढ़ चुके । परन्तु न्यायशास्त्र, कुछ कम रह गया, जोधपुर को शीघ आने से। और हम लिख चुके हैं कि वेदभाष्य के प्राहकों का रजिस्टर जो कि तुम्हारे पास वर्त्तमान है नक़ल करके भेजदो श्रीर टाइप शीध मंगवाश्रो। श्रीर यदि १५०) कु सेवकलाल कृष्णदास ने नहीं दिये हों तो तुम्हारे पास से भेजदो श्रीर टाइप शीघ मंगवात्रो। इसके लिये हम परिडत जी को लिख देंगे। वह इस बात में तुमको कुछ नहीं कहेंगे। श्रीर तुम भी लिख देना कि स्वामी जी की आज्ञा से हमने भेजे हैं। और रामानन्द के कहने से विदित हुआ कि लखनऊ का कम्पोजीटर दुष्ट है। ऐसे आदिमयों को यन्त्रालय में नहीं रहने देना चाहिये। श्रीर यह पत्र बाबू विश्वेश्वर सिंह जी को भी सुना देना। श्रीर जो छापने को सत्यार्थप्रकाश हैं उस को १ मास पहिले हमको लिख भेजोगे, तब ठीक समय पर तुम्हारे पास पत्र पहुंचेंगे । श्रीर यहां का विशेष समाचार आगे लिखा जायगा।

> मि० ज्येष्ठ विद् १० सं० १९४० । जोधपुर।

ह० (दयानन्द सरस्वती)

१. मूल पत्र परोपकारिग्णी सभा अजमेर में होगा।

२. २६ मई १८८३।

३. ३१ मई १८६३ ।

४. पं० लेखरामकृत जीवनचरित्र पृ० ८६० पर लिखा है कि २७ मई को पाली पहुंचे ग्रौर २६ मई को जोधपुर पहुंचे [यह भूल है। इस पत्रानुसार ३१ मई की प्रातः जोधपुर पहुंचे]। उसी जीवनचरित में पृ० ५७२ पर लिखा है कि २८ मई को [रात्रि के ] १२ बजे ग्रजमेर स्टेशन से चले। यह पूर्वापर-विरोध पं० लेखराम जी के ग्रन्थ के सम्पादक की ग्रसावधानी से हुन्ना है। पं० घासीराम जी [पृ० ६६३] २६ मई को ग्रजमेर से चलना लिखते हैं [वह भी पूर्व पत्र पूर्ण संख्या ५२३ के ग्रनुसार ग्रामुद्ध है।]

जोधपुर, सं० १९४०]

पत्र (४५३)

४२५

[2]

पत्रांश (४५१)

[५२६]

[ भाई जवाहरसिंह ... ... ... शाहपुरा ]।

निश्चय है कि त्राप त्रपने काम पर तत्पर रहेंगे। श्रौर श्रीमान् महाराजाधिराज को श्रति श्रानिद्त करेंगे। श्रौर त्रपने पुरुषार्थ स्वामाविक सद्गुणों श्रौर उत्तम कामों से श्रपनी कीर्ति को बढ़ावेंगे भा भा मिति ज्येष्ठ कृष्ण १० [सं० १९४०। ३१ मई] सन् १८८३ जोधपुर।

[9]

पत्र (४५२)

[५२७]

**ओ**३म्२

श्रीयुत महाराज राजाधिराज श्रीनाहरसिंह जी श्रानंदित रहो।

विदित हो कि जेष्ठ वदी ४ शनिवार के दिन शाहपुरा से चल कर जेष्ठ वदी १० गुरुवार के प्रातःकाल योधपुर में आनन्दपूर्वक पहुंच गये। और पहुंच के कुछ देर से श्रीयुत महाराजा प्रतापसिंह जी और श्रीयुत रावराजा तेजसिंह जो आदि मद्रजन प्रीतिपूर्वक मिले। और हम यहां फैजुझाखां जी के वाग में ठहरे हैं। और जो आप पत्रादि लिखें सो इसी वाग के पते से लिखना । यह वाग और इसमें मकान तथा जलवायु भी अच्छा है, सो जानना। और जो आपने २००) ह० चित्तौड़ी कोंचमान के हस्ते भेजे, सो पहुंचे। यहां का जो विशेष समाचार होगा, सो लिखा जायगा। और आप भी वहां का जो विशेष समाचार हो सो लिखां या। वृंदी से पत्र का प्रत्युत्तर आया वा नहीं ।

[ दयानन्द सरस्वती ] (राज मारवाड़ योधपुर )

[6]

पत्रांश (४५३)

[५२८]

[पं० मुझालाल सं० देशहि० अजमेर] ... इम जोधपुर बहुत उत्तम प्रकार से पहुंच गये थे। ... २ जून ⊏३ वे। जोधपुर

द्यानन्द सरस्वती

१. यह पत्र भाई जवाहरसिंह के नाम लिखा गया था। भाई जवाहरसिंह जी ने ऊपर मुद्रित श्रंश "रहे बुतलान" पू०६८ पर छापा है।

२. मूल पत्र राजकार्यालय शहापुरा में सुरिचत है।

३. सं० १६४० । २६ मई १८८३ । यु॰ मी० । ४. सं० १६४० । ३१ मई १८८३ । यु॰ मी०।

५. संभवतः गोरचार्थं लिखे गये पत्र का । यु॰ मी॰ ।

६, संभवतः ३१ मई अथवा १ जून १८८३।

७. देशहितैषी के रजिस्टर से।

इ. ज्येष्ठ कृष्ण १२ सं० १९४० । यु० मी० ।

## ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

[३६]

४२६

### विज्ञापन

[५२९]

श्रों३ नमः सचिदानन्दादिलच्चणाय परमेश्वराय

सब सज्जन लोगों को विदित हो कि श्रीयुत परमहंस परित्राजकाचार्य श्री स्वामी दयानन्द्र सरस्वती जी ज्येष्ठ वदी १० गुरुवार के प्रातः समय योधपुर में त्राके फैजुलाखां जी के बाग में ठहरे हैं। जो कोई उन से मिलना चाहै, वह सायंकाल के ५ बजे से रात्रि के १० बजे तक त्रानन्दपूर्वक मिल के सभ्यता के साथ बात चीत करे वा सुने। उक्त स्वामी जी सन्ध्या के बजे से ६ बजे से ८ बजे तक फैजुल्लाखां जी के बाग में सनातन वेदादि सत्यशास्त्रोक्त विषयों में ज्येष्ठ वदी १३ रविवार सन्वत् १९४० के दिन से वक्त करेंगे। जिन महाशयों को श्रवण करने की इच्छा हो वे पूर्वोक्त स्थान त्रीर समय पर उपस्थित हो कर सभा को सुशोभित करें। सब विषयों के सुनने के पश्चात् यदि किसी विषय में सन्देह रह जाय तो वह उस में त्रानन्दपूर्वक प्रश्नोत्तर कर लेवे। सुनने जौर प्रश्नोत्तर होने के पश्चात् सज्जनों को यही योग्य है कि सत्य का प्रहण त्रीर त्रासरय का परित्याग करके स्वयं सदा त्रानंदित होकर सब को त्रानन्दित किया करें।

मिति ज्येष्ठ वदी १२ शनि सम्वत् १९४० ।

[५५]

## पत्र-सारांश (४५४)

[430]

[मुंशी समर्थदान, वै० य० प्रयाग] यदि बाहर का काम बन्द न करोगे तो हम तुम पर द्र्षेड कर देंगे । [क्येष्ठ कृष्ण ३० मंगल १९४० (=५ जून १८८३)]

[4]

### पत्र (४५५) ब्रो३म्<sup>५</sup>

[438]

श्रीयुत प्रधान दुर्गाचर्णादि तथा श्रीयुत साहू श्यामसुन्दर जी श्रानिन्दित रहो।
कार्ड श्राप का श्राया, समाचार विदित हुआ। जो प्रधान और पुस्तकाध्यत्त जो कि श्राय्येसमाजों के उद्देशों के विघ्न थे, पृथक् कर दिये गये। बहुत अच्छी बात हुई। अब श्राप का समाज
उन्नितशील होगा। और यही बात देशहितैषी और भारतसुद्शाप्रवर्त्तक तथा मेरठ और लाहौर के

१. यह विज्ञापन जोधपुर में दिया गया था। पीले चिकने देशी कागज पर लिथो में काली स्याही से छपा हुआ है। इस की मुद्रित प्रति श्री॰ महावीरसिंह जी गहलीत एम॰ ए॰ रिसर्चस्कालर मेड़ती दरवाजा जोधपुर के संग्रह में सुरिक्त है। उस की प्रतिलिपि प्रो॰ महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फाजिल हिन्दू युनिवर्सिटी बनारस द्वारा ता॰ ३ मई १९४५ को हमें प्राप्त हुई।

२. ३१ मई १८८३। पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित में २६ मई को जोधपुर पहुंचना लिखा है। यह भूल है। ३. २ जून १८८३।

४. इस सारांश की सूचना ऋगले पूर्ण संख्या ५३२ के पत्र में है। यु॰ मी॰ ।

प्र. मूल पत्र आर्थसमाज मुरादाबाद में मुरिच्ति था । यह पत्र पं० लेखरामकृत जीवनचरित पृ० ⊏२३ पर भी छुपा है। समाज के पत्रों में छपवा दीजिये। श्रीर श्रागे को कोई समाज के उद्देशों से विरुद्ध श्राचरण, भाषण करे, उस को एक दो वार सममा दीजिये। श्रीर न सममे तो इसी प्रकार प्रथक् करते रिहये। श्रीर श्रव वैदिक यन्त्रालय में श्राप के समाज के १००) रु० लगे हैं। श्रीर १०) के पुस्तक वैदिक यन्त्रालय से मंगवा लीजिये। श्रीर सब सभासदों से मेरा श्राशीवीद कह दीजियेगा।

मि० ब्ये० शु० १ सं० १९४० बुद्धवार जोधपुर १।

इस्ताच्चर [दयानन्द सरस्वती]

[3]

पत्र (४५६)

[५३२]

वाबू विश्वेश्वरसिंह जी श्रानन्दित रहोर।

विदित हो कि हम कई बार मुन्शी समर्थदान को लिख चुके हैं कि बाहर का छापना विलकुल वन्द करदो। परन्तु उस ने अब तक वन्द नहीं किया। इस लिये तुम उस को समका दो कि वाहर का काम कभी न छापे। यदि बन्द न करेगा तो हम उस पर दर्ख कर देंगे। इस प्रकार की चिट्ठी परसों हम ने उस को छिख दी। श्रौर उस को दरड भरना पड़ेगा। इस को बाहर का काम छापने का उस को क्या प्रयोजन है। श्रीर तुम समर्थदान को सहायता देते हो, इसमें हमारी बड़ी प्रसन्नता है। श्रीर तुम पिन्शिन कव लोगे। जब तुम पिन्शिन लोगे तब तुम्हारी नौकरी शीघ्र वैदिक यन्त्रालय में हो जायगी । श्रीर सब यन्त्रालय की भी रक्खा करो । श्रीर लिखने के योग्य समाचार हम को तत्काल लिखा करो । श्रीर कितनी हानि निघंदु च्यादिगया और घातुपाठ सत्यार्थप्रकाश के छपने से बन्द हो रहा है । अब शीघ तुम पिन्शिन लो और शीघ यन्त्रालय में आ जाओ। जब तुम यन्त्रालय में आकर काम करोगे तभी काम ठीक वनेगा। और देख लो कि मुम्बई (से टाइप) मंगवाने में समर्थदान का हठ था। नहीं तो पंडित जी ने कहा था कि इम कलकत्ते से लेते त्रावेंगे। इसने कहा कि नहीं, मुंबई का मंगावेंगे। अब न ही मंबई का आया, न कलकत्ते का। बहुत हानि हो रही है। और मुंबई से मंगाना भी नहीं है। २५०) कि ऐसे आदमी के पास मेजा है कि जिस का ठोर न ठिकाना। इन सब बातों का उत्तर शीघ भेज दो। यहां बहुत आनन्द हो रहा है। विशेष समाचार आगे लिखा जायगा। और तुम वहां का समाचार सदा लिखा करो। श्रौर यह समर्थदान श्रपनी चिट्ठी में कभी तुम्हारा नमस्ते भी नहीं लिखता। यह क्या बात है। श्रीर सब से हमारा श्राशीर्वाद कह देना।

मि० ज्ये० सु० २ सं १९४० गुरुवार जोधपुर राज मारवाइ।

्ह्स्ताच्चर [दयानन्द सरस्वती]

१. ६ जून १८८३। २. मूल पत्र श्री नारांयण स्वामी जी के संग्रह में सुरिच्छित है।

३. पूर्ण संख्या ५२५ के पत्र में १५०) ६० मेजने का उल्लेख है। यु० मी०।

४. ७ जून १८८३।

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र श्रौर विज्ञापन

[6]

पत्र (४५७)

[433]

श्रो३म°

श्रीमदनवद्यगुणगणालंकृत मान्यवरमहाशय शाहपुराधीश स्थानन्दित रहो।

निश्रय है कि जवाहिरसिंह जी शाहपुरा में पहुंच गये होंगे। श्रीर श्राज रुड़की से एक पत्र श्राया है सो श्राप के पास भेजा जाता है। सबश्रोवरसीश्रर भी थोड़े ही समय में श्राप के पास पहुंचेगा। आप के लिखे अनुसार उदयपुर को लिख दिया जायगा। आपने जो पत्र भेजा था सो पहुंचवाय दिया गया है । यहां का वर्तमान यह है कि आज कल विशेष कर प्रजाजनों की भीड़ भाड़ सायं समय उपदेश सुनने श्रीर प्रश्नोत्तर करने के लिये होती है। श्रागे विशेष समाचार जो कुछ होगा तिखा जायगा। बूंदी से कुछ पत्रोत्तर आया वा नहीं। अग्निहोत्र की शाला और कुंडादि वन गये होंगे। क्षात्रशाला का आरम्भ हो गया होगा। और विशेष समाचार हो सो लिखियेगा। श्रीर यह रुड़की का पत्र वांच कर जवाहरसिंह जी को दे दीजियेगा।

मि० जेष्ट ग्रु० ५ सं० १९४० रविवार ।

जोधपुर राज मारवाङ् द्यानन्द सर्स्वती

५३४

[ लालजी बैजनाथ मुम्बई .... ]

चालीस रुपये मनीत्रार्डर द्वारा भेजते हैं। विठल भागा ब्राह्मण को देकर रसीद ले कर भेज दो। .....समाज मन्दिर का काम फैसा चल रहा है"।

ज्येष्ठ शुद्ध ७ संवत् १९४०<sup>5</sup> ।

द्यानन्द् सरस्वती जोधपुर

१. मूल पत्र राजकार्यालय शहापुरा में सुरिच्चत है।

२. यह पत्र राजाधिराज ने ऋपनी भूऋा ऋजवजी के नाम का ता० ५ जून १८८३ के पत्र के साथ श्री स्वामी जी को जोधपुर में मेजा था। इसका संकेत पं वसूपतिसंपा वित्रव्यवहार प् १६ पर है।

३ देखो पूर्ण संख्या ५२७ पृष्ठ ४२५ तथा इसी पृष्ठ की टि० ५ । यु॰मी॰ ।

४. १० जून सन् ८३।

४. यह पत्रांश लालजी वैजनाथ के एक पत्र के स्त्राधार पर हम ने बनाया है। तिथि उसी पत्र में है श्रीर संवत् उस से पहले पत्र के श्राधार से लिखा है। संभवतः विठल ब्राह्मण् कुछ काल तक श्री स्वामीजी के पास नौकरी करता रहा। लालजी के ये दोनों पत्र म॰ मुन्शीरामसंपा॰ पत्रव्यवहार पृ० २८१-२८३ पर देखो।

६. १२ जुन १८८३ मंगलवार।

जोधपुर, सं० १९४० ]

पत्र (४६०)

833

[२५]

पत्र (४५९) छो३म्

[५३५]

मंत्री आर्य्यसमाज फरकाबाद लाला रामचरण कालीचरण जी आनंदित रहो।

विदित हो कि रामानन्द ब्रह्मचारी की माता मुहल्ला नुनिहाई साह विहारीलाल जी की हवेली के पिछ्रवाड़े जो कि लाला वलदेवदास ने मकान मोल लेकर इसके पिता शंकरानन्द जी को धर्मार्थ दिया, उस में रहती है। यदि जब कभी उस का शरीर छूट जाय तो उसके अन्त्येष्टि कमें के लिये ५०) पचाश रूपये लाला निर्भयराम जी की कोठी से लेलेना और हमारे हिसाब में लिखा देना। और उन रूपयों से घृत और सुगंध्यादि पदार्थों को लेकर जैसा विधान घोडश संस्कारविधि के पुस्तक में लिखा है उसके अनुसार मृतक कमें करा देना। और इस काम के कराने में किसी प्रकार आलस्य न करना। और इस बात को प्रत्येक सभासद को विदित कर देना, जिससे समय पर सहायक होवें।

ज्येष्ठ शुक्त ९ बृहस्पति संवत् १९४०२।

राज मारवाड़ योधपुर।

[द्यानन्द् सरस्वती]

निम्नलेखानुसार मृतकसंस्कार करने के लिये घृतादि पदार्थ लिये जावेंगे।

२५) पश्चीस रुपये का अच्छा घृत।

- १०) दश रुपये का सफेर सुगंधि वाला चंदन।
  - ५) अगर तगर और कपूर आदि सुगन्धित वस्तु ।

५) वस्त्रादि लिये जावेंगे।

प्) और पांच रुपये की पलास अर्थात् ढाख की लकड़ी अथवा आंव की, और संस्कारविधि के लेखानुसार वेदी बनानी होगी।

उक्त लेखानुसार ५०) रुपये केवल दाहकर्म में खर्च होने चाहियें।

[2]

पत्रांश (४६०)

[५३६]

[पं० मुझालाल सं० देशहि० तथा मन्त्री आर्थस॰ आजमेर³] ... ... पं० सुखदेव, पं० दामोदर और शालिगराम कहां हैं<sup>४</sup>। ... ... ... ... ... ... ... ... दयानन्द सरस्वती

१. मूल पत्र त्रार्थसमाज फरुखाबाद में सुरिच्चत है। सन् १६२७ में म० मामराज जी ने इस की प्रतिलिपि की। फरुखाबाद का इतिहास पृ० २०५ पर मी छपा है।

इसी पत्र की दूसरी प्रतिलिपि रामानन्द ब्रह्मचारी की पुस्तकों ग्रादि में (ग्रतरोली स्टेशन के निकट रायपुर ग्राम) से ता॰ १८ सितम्बर सन् १६२८ की रात्रि के तीन बजे तक खोजने पर मिली थी। उन के भ्राता त्रिलोचनदेव की ग्राज्ञा से मा॰ मामराज जी ले ग्राये। वह उन के पास श्रीरामनिवास (बिल्डिङ्ग) खातौली में सुरिब्ति है। २. १४ जून १८८३। ३. देश हि॰ के रजिस्टर से।

४. यह श्रिमिप्रायमात्र हैं। इस का उत्तर १७-६-८३ का महात्मा मुंशीराम संकलित पत्र व्यवहार प्. ज्येष्ठ शुक्ल १० शुक्क, सं० १६४०। यु० मी०।

## ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र श्रीर विज्ञापन

[8]

पत्र (४६१)

[430]

[बाबू विश्वेश्वरसिंह १ .....]

मि० ज्ये० शु० १२ सं० १९४० र।

जोधपुर राजमारवाड़

(दयानन्द सरस्वती)

[2]

पत्र (४६२) श्रोश्म

[436]

श्रीयुत माननीयवर शूरवीर महाराजे श्रीप्रतापसिंह जी त्र्यानिन्दित रही<sup>3</sup> ! यह पत्र बाबा साहब को भी दृष्टिगोचर करा दीजियेगा।

- (१) मुक्त को इस बात का बहुत शोक होता है कि श्रीमान योधपुराधीश आलस्य आदि में वर्तमान, आप और बाबा साहब दोनों रोगयुक्त शरीर वाले हैं। अब कहिये इस राज का कि जिस में १६००००० सोलह लाख से कुछ उपर मनुष्य बसते हैं। उन की रच्चा और कल्याण का बड़ा भार-आप लोग उठा रहे हैं। सुधार और विगाड़ भी आप ही तीनों महाशयों पर निर्भर है। तथापि आप लोग अपने शरीर का अरोग्य, संरच्चण और आयु बढ़ाने का काम पर बहुत कम ध्यान देते हैं। यह कितनी बड़ी शोचनीय बात है। मैं चाहता हूं कि आप लोग अपनी दिनचर्थ्या मुक्त से सुन के सुधार लेवें। जिस से मारवाड़ तो क्या अपने आर्थावर्त देश भर का कल्याण करने में आप लोग प्रसिद्ध होवें। आप जैसे योग्य पुरुष जगत् में बहुत कम जन्मते हैं और जन्म के भी बहुत कम चिरंजीवी शतायु होते हैं। इस के हुए बिना देश का सुधार कभी नहीं होता। उत्तम पुरुष जितना अधिक जीवे उतनी ही देश की उन्नति होती है। इस पर ध्यान आप लोगों को अवश्य देना चाहिये। आगे जैसी आप लोगों की इच्छा हो वैसे कीजिये।
- (२) आगे जो यह सुना जाता है कि आगामी सोमवार के दिन यहां के लालजी आदि की मेरे साथ बात चीत होने वाली हैं । उस में आप की सम्मित है वा नहीं। यदि सम्मित है तो सायं-

३. मूल पत्र राव राजा तेजसिंह जी के पास था।

४. स्त्राषाढ़ वदी ५, संवत् १६३६ (४०१ सोमवार) को रायजादा सांगी (स्त्रप्रवाल वैश्य) नारनौली दामोदरदास जयपुर से राजा दुर्गाप्रसाद, फरुलाबाद को लिखता है— "पुराण पढ़ने वालों ने मुन्नाहिसा का स्त्राज का रोज मुकरर किया था। मगर हस्त्र कथास वकू में स्त्राया। यानी जुनाब महाराजा श्रीप्रतापसिंह साहब बहादुर प्राइम मिनिस्टर स्त्राज तशरीफ लाकर फरमाया कि स्त्रभी तो मुन्नाहिसा नहीं किया चाहते।"

१. यह पत्र बात्रू विश्वेश्वरसिंह जी के पास प्रयाग को मेजा गया था। पत्र के पहले ४ पृष्ठ लुप्त हैं। मूल पत्र श्री नारायणस्वामी जी के संग्रह में सुरिच्चत है। २ १७ जून १८८३।

काल के सात बजे से साढ़े आठ बजे तक सभा में बराबर उपस्थित होंगे वा नहीं। जो आप और बाबा साहब उचित समय सभा में उपस्थित न रहेंगे तो मैं भी इन स्वार्थी, देश के बिगाड़ने वाले पुरुषों के साथ वाद करने के लिए उपस्थित न होऊंगा। कारण यह कि उन में सभ्यता की रीति बहुत कम देखने में आती है। और पत्तपात भी अधिकतर है। एक आप को छोड़ कर अन्य पुरुष भी समय पर सभा में निष्पत्तपाती होकर सत्य बोलने वाला अब तक मेरी दृष्टि में नहीं आया है। इस से आप का उस सभा में उपस्थित रहना अत्यन्त उचित सममता हूं।

- (5) यदि सोमवार को शास्त्रार्थ कराने की इच्छा हो तो कल सायंकाल ७ बजे से साढ़े आठ बजे तक उस के नियम एक दिन पहले बन जाने श्रवश्य चाहियें कि जिस से दूसरे दिन बराबर शास्त्रार्थ चले। इस लिये लालजी को कल सायंकाल बुलवा लेना चाहिये। श्रीर श्राप भी सभा में उपिश्यत हों कि सब के सामने पच्चपात रहित नियम नियत लिखित हो जावें।
- (४) इस पोप लीला की निवृत्ति करके यहां से अन्यत्र यात्रा करने का मेरा विचार है। अनुमान है कि बाबा साहब ने आप से कह भी दिया होगा।

इन उपरि लिखित सब बातों का उत्तर लेखपूर्वक आज सार्यकाल तक मेरे पास भिजवा देवें। अलमित विस्तरेण महामान्यवय्येषु।

मि० आ० व० ३ शनि सं० १९४०<sup>9</sup>।

द्यानन्द सरस्वती

[90]

पत्रांश (४६३)

[५३९]

[कमलनयन मन्त्री आर्यसमाज अजमेर<sup>२</sup>]
.....दामोदर शास्त्री<sup>3</sup> को भेजदो।
२४ जून १८८३। जोधपुर<sup>४</sup>

द्यानन्द सरस्वती

२. देशहि॰ के रजिस्टर से। इस का उत्तर ३-७-८३ का म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्रब्यवहार पू॰

१६६-१७२ पर छपा है।

१. २३ जून १८८३। पं॰ लेखरामकृत जीवनचरित पृ॰ ८३४ पर इसी पत्र का (१) का ग्रंश छुपा है। वहां ग्राश्विन वदी ३ शनिवार ग्रथवा २२ सितम्बर १८८३ छुपा है। यह मूल है। ग्राश्विन वदी ३ को शनिवार नहीं था, बुधवार था। ग्रीर २२ सितम्बर को वदी ६ है। वस्तुतः 'ग्रा' से यहां ग्राघाद ग्रामिप्रेत है।

३. दामोदर शास्त्री इरिश्चन्द्र मोहनचन्द्रिका के सम्पादक थे। देखो देशहितैषी वैशाख १६४०।

४. ग्रापाढ् कृष्या ४ रवि, सं० १८४० । यु॰ मी० ।

[23]

कार्ड (४६४)

[480]

श्रीयुत महाशय श्री रूपिसह जी योग्य रामानन्द ब्रह्मचारी का नमस्ते विज्ञात हो । आगे परमात्मा की कृपा से श्री जगत्गुरु जी के सिहत सब लोग आनन्द में हैं। आशा है कि आप भी सकुटुम्ब आनन्द मंगल में होंगे। यह आप का पत्र कई महीनों के पश्चात् आया। मैं तो निरास हो गया था कि अब रूपिसह जी मुक्त को भूल गये हैं। परन्तु अब इस तुम्हारे पत्र से पूर्ण निश्चय हो गया कि किसी कार्य विशेष से अपना कुशल पत्र आप न भेज सके। वर्त्तमान समय में श्री खामी जी राज देश मारवाड़ योधपुर में फैजुझाखां जी के बाग में ठहरे हैं। यहां के प्रजापुरुष प्रतिदिन आते हैं। दो एक बार व्याख्यान भी हुए। बहुत से श्री खामी जी के अनुकूल हैं और यहां के योधपुराधीश भी दो चार दिन के पश्चात् श्री खामी जी से मिलने को आने वाले हैं। और महाराजा जी के भाई महाराजा राजाधिराज श्री प्रतापसिंह जी आते जाते हैं। उपदेश सुन कर बहुत प्रसन्न हुए हैं। विशेष समाचार पश्चात् लिखूंगा। तुम पत्र के देखते ही अपना विस्तारपूर्वक कुशल समाचार का पत्र शीघ लिख भेजना।

आषाढ़ वदी ५ सोम संवत् १९४[०] २

रामानन्द ब्रह्मचारी राजमारवाङ् योधपुर

[५६]

पत्र (४६५)

[485]

मुन्शी समर्थदान जी आनदित रही अ

पत्र तुम्हारा श्राया, समाचार विदित हुश्रा। हमारे श्राशय को तुम नहीं सममते हो। इस लिये एक बात को बहुत बार लिखनी पड़ती। यह सममो कि वेदमान्य माहवारी ही निकले ऐसा विशेष नेम कभी न रहा है। किन्तु १२ बारह श्रंक पहुंचने से वर्ष पूरा माना जाता है। इस लिए जब तक टेप न श्रावे वेदमान्य का छापना ठीक नहीं। किन्तु आवश्यक सत्यार्थप्रकाश और धातुपाठ का छापना है, उसको तुमने रोक रखा। यह बड़ी हानि का काम है। इस लिए चाहे वेदमान्य एक श्राध महीना बन्द रहे, पर उनका छपजाना श्रत्यावश्यक है। श्रीर श्रन्य पत्र भेजे हैं। उनका उत्तर श्रीघ भेजो। श्रीर जो तुमने पुस्तकें भेजीं, सो वेदमान्य के सहित पहुंच गई। श्रीर यह पत्र बावू विशेष्यरसिंह जी को भी सुना देना। श्रीर उनको मेरा श्राशीर्वाद भी कह देना। पंज्जवालादत्त ने दिन में ५० मन्त्र की भाषा बनाई। कुछ भी नहीं बनाई। काम न करने के लिए चाहे १० श्राजियां दो। हम जानते हैं कि ये सब काम न करने की बातें हैं। हम निश्चय कर कहते हैं कि तुम इसका काम यथातथ्या निकालो। ज्वालादत्त जो भाषा बनाता है, ऐसा नहीं हो कि कहीं पोपलीला घुसेड़ डाले।

१. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरित्त है।

२. २५ जून १८८३।

३. शताब्दी संस्करण पृष्ठ १७ पर इसका थोड़ा सा अंश छुपा है । मूल पत्र परोपकारिणी सभा अजमेर में सुरिचत है।

जैसी हमारी संस्कृत है उस के अनुकूल [करे] और कुछ न करे। परिडत शिवद्याल को काम हो ती रहने में कुछ हर्कत नहीं।

पुंडरीक शिवशर्मा छीतरदत्त जी से दाम नहीं लिए गये हैं। सर्दार मेहरसिंह जी के पास 
) आने के पुस्तक और भेजदो। उन्होंने पा।) रु० जिल्द सिंहत के दिये थे। वेद के मन्त्रों का क्रम तो अच्छा है, परन्तु लागत बढ़ जायगा और कागज भी बहुत खर्च होगा। और अपने कोई समाज होगा तो उसको १०) रु० सेकड़े से अधिक कमीशन नहीं मिलेगा। सत्यार्थप्रकाश शोध कर भेजदें[गे] और जोधपुर का हाल आगे लिखेंगे। निर्णयसागर से १५०) की रसीद आ गई। अच्छा हुआ। अब टेप शीघ मंगवालो। जो पहले ही रुपये निर्णयसागर में भेज देते तो इतने दिन क्यों रहते। संस्कार-विधि बना सोधकर भेज देंगे।

मिति अ० व० ६ सं० १९४० मंगलवार र।

हस्ताचर [दयानन्द सरस्वती] जोधपुर राज मारवाङ् मरुस्थल

[9,4]

उर्दू पत्र (४६६)

[482]

बाबू दुर्गाप्रसाद जी

हस्व-जल-ईमाए [आज्ञा] जुनाव स्वामी दयानन्द सरस्वती साहव आप को यहां की कैफियत से इत्तिला देता हूं। जुनाचे २६ जून सन् हज़ा को महाराजा महाराजाधिराज राजराजेश्वर वालिए मुल्क मारवाड़ जुनाव स्वामी साहव मौसूफ के दर्शन करने को मैथ्या फैजउल्लाखां साहव के वाग में तशरीफ लाएँ और २५ ६० और पांच अशरफी नजर गुजरानी। और चन्द लमहा तक महाराजा मौसूफ बख्याल अदब स्वामी साहव कुर्सी नशीनी से वसद अजक्र इनकार फरमाते रहे। मगर जुनाव स्वामी साहव ने जब दूसरी तीसरी मर्तवा फरमाया, तव मजबूरन जनाब मौसूफ के रोवरू कुर्सी नशीन होकर गुफतगू आगाज की और नौह बनौह की गुफतगू अनकरीव दो घएटे के ६ बजे शाम से ८ बजे शाम के करते रहे। और वसद बशाशत यानी खुशदिली तशरीफ लेगए। और नीज वाएदा फरमा गए कि अब आप की खिदमत में हाजिर होता रहूंगा। जुनाचे महाराजा

<sup>.</sup>१. पृष्ठ ४२७ की टि॰ ३ भी देखें। यु॰ मी॰।

२. २६ जून १८८३।

३. यह पत्र राजा दुर्गाप्रसाद के पत्रों में से म॰ मामराज जी सन् १६२७ में लाए थे। मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिक्ति है।

४. पं० लेखरामकृत जीवनचिरत पृ० २६० श्रीर इस श्रंश में उन के श्रनुवादक स्वामी सत्यानन्द ( दूसरा संस्करण पृ० ५०२ ) श्रीर पं० घासीराम (पृ० ६६४ ) लिखते हैं कि २६ मई सन् १८८३ को श्री स्वामी जी जोधपुर पहुंचे । उसके टीक सतारहवें दिन [१५ जून] महाराज यशवन्तसिंहजी उन से मिलते श्राए । ये दोनों बातें श्रशुद्ध हैं । इस पत्र से ज्ञात होता है कि महाराज जोधपुर २६ जून को श्री स्वामी जी से मिले । यही बात श्री स्वामी जी के राजाधिराज शाहपुरा नरेश को लिखे गए एक श्रगले पत्र (पूर्णसंख्या ५४५ ) से भी ज्ञात होती है । उस पत्र में श्री स्वामी जी लिखते हैं कि "मिति श्राघाढ़ वदि ७ मंगलवार के दिन सर्वाचीश महाराजा जोधपुराधीश पधारे थे ।" मंगलवार

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

मौसूफ की ऐन खवाहिश दिली है कि स्वामी साहिब की हदायत यहां वखूबी ले ली जावे। मुकाम जोधपुर।

तारीख २७ जून सन ५३ ।

कमतरीन रायजादा सिंगी नारनौली दामोद्रदास<sup>२</sup> बर मकान जनाब जयकिशनदास श्रज जानिब जुनाब स्वामी साहब श्रानन्दित रहो पहुंचे।

[4]

पत्र (४६७) श्रो३म

[483]

बाबू विश्वेश्वरसिंह जी आनिन्दत रहो<sup>ड</sup>।

मुन्शी समर्थदान को कह देना कि ५० मन्त्र की भाषा का बरखल भेजा, सो पहुंच गया। अब देखो ज्वालाद्त्त की वेसमक्त का नमूना। हमने यह लिखा था कि जो भाषा बनाने का कागज दूसरे पृष्ठ पर हो और मन्त्र पदार्थ अन्वय भावार्थ दूसरे पर हो। जब ऐसा हो तो आषा बनाने में विलम्ब होता है। क्योंकि हर वार पत्र उलटाने में देर होती है। श्रीर विना पदार्थ अन्वय देखे भाषा नहीं बन सकती। इस लिये लिखा था कि उसी के सामने कि जिधर की खोर मन्त्र है उसी के सामने नीचे की खोर कागज चेप कर भाषा बनाने से शीघ्र बन सकती है। सो ज्वालादत्त ने उलटा समम कर सोलह मन्त्र की भाषा दो दो वार लिख दी। यदि ऐसा न करता तो ८ दिन में ७० मन्त्र की भाषा आती। अब देखा जायगा कि अब के अठवाड़े में कितने मन्त्र की भाषा भेजता है। और समर्थदान ने लिखा है कि कुछ ज्वालाद्त्त नई भाषा बनाता है। यदि वह हमारे संस्कृत और अभिप्राय के अनुकूल हो, तो ठीक है। नहीं तो जो पोपलीला की भाषा बना कर वहां ही छपवा दे श्रीर हम को माल्म न हो, पश्चात् प्रसिद्ध होने से कोलाहल होगा, तो क्या होगा। हां, श्रव तक तो इसने कुछ नहीं किया है। परन्तु सम्भव है कि कुछ गड़ बड़ करे, तो हो सकता है। इस लिये जो कुछ वो बनावे उसको समर्थदान देखले। जैसा कि अब की भाषा में एक गोल माल शब्द (देवता) लिख दिया था। सो यह हमारे दृष्टिगोचर होने से शुद्ध होगई। यदि वहां ऐसी छप गई तो बड़ी हानि का काम है। इस लिये ऐसा न होना चाहिये। श्रौर हमने कई वार समर्थदान को लिखा है कि घातुपाठ, गर्णपाठ, षर्णादिगर्ण, निघरटु का सूचीपत्र छपना बाकी है । सो तो नहीं छापते श्रौर वेदभाष्य २ करते हैं। छापना वेदभाष्य का महीनों पर नहीं है, किन्तु बारह श्रंक प्राहकों

को ही २६ जून पड़ती है। इस् पच्च में आषाढ़ बदी १० लुप्त है। विज्ञापन पूर्ण संख्या ५२६ और पत्रपूर्ण संख्या ५२५, ५२७ के अनुसार ३१ मई प्रातःकाल को श्री स्वामी जी जोघपुर पहुंचे और पूर्ण संख्या ५४२, ५४४, के अनुसार २६ जून को प्रथम वार महाराज उन से मिले।

१. त्रापाढ् कृष्ण ७ बुघ, सं० ११४० । यु० मी० ।

२. इसी मुन्शी दामोदरदास के पत्र का संकेत पूर्ण संव ५०७ में देखें।

३. मूल पत्र श्री । नारायण स्वामी जी के संग्रह में सुरिच्चत है।

के पास पहुंचने पर वर्ष माना जाता है। इस लिये इस में थोड़ा बहुत विलम्ब हो तो कुछ चिन्ता नहीं। किंतु धातुपाठ आदि और सत्याध्यप्रकाश छपने में विलम्ब होना नहीं चाहिये। सो जब लिखा है तब अब तो वेदमाध्य छपता है, यह उत्तर देता है। तुम भी ऐसी सम्मति उनको दो कि जिस में यह ४ पुस्तक शीघ्र छप जायें। अब वेदमाध्य के टाइटल पेज पर किसी ग्राहक का रूपया नहीं लिखा। सो क्या रूपया नहीं आया है वा अन्य कुछ है। इन सब बातों का उत्तर समर्थदान से पूछ कर शीघ्र भेजों।

मि० आ० व० ९ शुक्रवार सम्वत् १९४० र।

दयानन्द सरस्वती जोधपुर मारवाड़

[8]

पत्र (४६८)

[488]

आरेम्

बाबू नन्दिकशोरसिंह जी आनिन्दित रही3—

विदित हो कि तुझारे तीन चार पत्र हमारे पास आये। उनका उत्तर समय पर इस लिये नहीं लिख सके [कि]इस समय वेदभाष्य का अधिक काम कर रहे हैं। तुम ने उदयपुर से ले कर शाहपुरा तक कई पत्र इस विषय में भेजे कि जब आप की यात्रा करने में दश पन्द्रह दिन शेष रहें, तब हम को विदित करना। इस बात का अभिप्राय जो होगा वह तुम जानते ही होगे और कुछ लिखा भी था।

यहां के श्रीयुत महाराजे योधपुराधीश श्रीर महाराजे प्रतापसिंह जी तथा रावराजा तेजसिंह जी श्रादि ने प्रीति के साथ पाली में सवारी भेज कर मुक्त को बुलाया। श्रव यहां श्री योधपुराधीश तथा म[हा]राजे प्रतापसिंह जी श्रादि प्रेम प्रीति के साथ समागम करते हैं। श्रीर दो एक व्याख्यान भी दिये। श्रीर प्रतिदिन राजपुरुष तथा प्रजापुरुष श्राते जाते हैं। यथाबुद्धि पृष्ठते हैं। हम यहां फैजुल्लाखां जी के बाग में ठहरे हैं। श्रीर जो विशेष लिखने योग्य होगी सो पश्चात् तुम को लिख के विदित करेंगे। और जो अं[ग]रेजी में बायबिल का पूर्वापर विरुद्ध आयतें लिखी हैं। उस की देवनागरी ठीक २ कराके शीघ योधपुर में हमारे पास भेज देना । सब से हमारा श्राशिष कह देना।

१. इस पत्र को कई स्थानों पर श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से शोधा है।

२ ३० जून १८८३।

<sup>.</sup>३. मूल पत्र हमारे संग्रह में सुरिवत है।

४. इन्हीं दिनों अमेरिका से "सेल्फ कर्यू डिक्शनस् आफ दी बाइ बिल" नामक अंग्रेजी पुस्तक प्रकाशित हुई थी। उसी के देवनागरी अनुवाद की श्रोर यह संकेत है। बाबू नन्दिकशोरसिंह ने ७ तथा २४ जुलाई के पत्रों में इस के भाषानुवाद के विषय में लिखा है। देखों म॰ मुंशीराम सम्पा॰ पत्रव्यवहार पृष्ठ ६८-१००। बाबू नन्दिकशोरसिंह द्वारा अनुदित तथा छपी हुई उक्त पुस्तक का प्र०सं॰ वैदिक पुस्तकालय (सं० ३१५।२००) अजनेर में तथा द्वि॰ सं० आर्थसाहित्य मण्डल अजमेर में है। इस विषय में विशेष हमारे "आहु॰ द० के प्रन्थों का इतिहास" पृष्ठ ४१, ४२ में देखें। यु॰ मी०।

श्चाषाद वदी १० शनि । संवत्१९४०

तिखने योग्य वहां का जो समाचार हो सो भी तिखना<sup>२</sup>।

[द्यानन्द सरस्वती]राज मारवाड् योधपुर

[9]

पत्र (४६९) श्रो३म्

[५४५]

श्रीयुत मान्यवर श्रीमहाराजाधिराज शाहपुरेश श्रानन्दित रही ।

मैंने दो पत्र आप के पास भेजें। उस का उत्तर भी आज तक नहीं आया। एक ५०) क० का मनी आई र भेजा था, जो कि शाहपुरे के डाकखाने का था, रिजस्ट्री कराकर थहां मेरे नाम सेज दीजिये। और रसीद भी और जो छीतरदत्त जी भी वेदभाष्य के कपये दें, तो इसी के साथ भेज देवें, क्योंकि वेदभाष्य उन के पास पहुंच गया है। और छा(ज्ञा)त्रशाला का आरम्भ हुआ कि नहीं। अपिहोत्र का आरम्भ हो गया, यह बहुत अच्छी बात हुई। मिति आषाढ बढ़ी ७ मंगलबार के दिन सर्वाधीश महाराजा जोधपुराधीश पधारे थें । दो घंटे तक बात चीत कर और उपदेश सुन कर और प्रसन्न होकर पीछे पधार गये, और महाराजा प्रतापसिंह जी तथा रावराजा तेजिसह जी नित्य आया करते हैं। जैसा चाहिये वैसा तो बन्दोबस्त नहीं है, परन्तु ठीक २ है। और ज्वाहरसिंह जी का वर्तमान आपने कुछ नहीं लिखा। और जो बात आपके पूर्व प्रतिज्ञात पत्र से कुछ विकद्धाचरण हो सो भी मुक्त को लिखिये। और सब को मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मि० त्रा० व० १ सं० १९४० । जोधपुर राज मारवाङ ।

[दयानन्द सरस्वती]

[9]

पत्रांश (४७०)

[५४६]

[कमलनयन मन्त्री आर्थसमाज अजमेर<sup>°</sup>]
.....काशीस्थ पं० से पत्रव्यवहार से पूछो कि मासिककितने तक आ सकता है।
४ जुलाई १८८३ । जोधपुर
द्यानन्द सरस्वती

८. देशहितैषी के रजिस्टर से।

१. बदी ११ लिखकर १० की गई है। [बरतुत: ११ चाहिये। १० लुप्त है] ३० जून १८८३।

२. इस पत्र का उत्तर ठा॰ नन्दिकशोरसिंह ने मिती आषाढ़ शुक्ल ३ शनि सं॰ १६४० को दिया । देखो म॰ मुन्शीरामसम्पा॰ पत्रव्यवहार पृष्ठ ६७ । ३. मूल पत्र शाहपुरा राज्य में सुरित्तित है ।

४ यह संकेत पूर्ण संख्या ४ २७, ४३३ के पत्रों की छोर है। यु॰ मी॰।

प्र. सम्भवतः 'पोस्टल ब्रार्डर' । क्योंकि ब्रगला लेख उसी के सम्बन्ध में सम्भव है; मनियार्डर के सम्बन्ध में नहीं । यु॰ मी॰ ।

६. २६ जून १८८३ । देखो पत्र पूर्णं संख्या ५४२ । [वस्तुत यहां श्राषाढ़ वदी ६ चाहिये ।]

७. ३० जून शनिवार १८८३।

१. त्राषाढ कृष्ण ३०, वुध सं० २६४० । यु० मी०।

जोधपुर, सं० १९४० ]

पत्र (४७४)

४३७

[50]

पत्र (४७१)

[480]

श्रीयुत माननीयवर शुभगुणगणालंकृत श्रीमहाराजाराजाधिराज श्री शाहपुराधीश स्थानन्दित रहो ।

विदित हो कि हम ने ५०) रुप्या का मनियाडर भेज्या था । सी रुपया ५०) काका साव सवलसिंह जी के हाथ आ पहुंचा । और अभिहोच्च का आरम्भ हो गया, सुन के अत्यन्त आनन्द हुआ। और चात्रशाला का आरम्भ होगा सुनेंगे जब अत्यन्त आनन्द होगा।

सम्वत् १९४० मि० असाढ शुक्त ४ रवि<sup>3</sup>।

[दयानन्द सरस्वती]

[१]

पत्रांश (४७२)

[486]

[ठाकुर सबलसिंह जी]

अव कुछ दिन यहां ठहरेंगे। तुम्हारे साथ नहीं चलेंगे ।

[२]

पत्रांश (४७३)

[488]

[श्रीयुत बारट किशनसिंह जी] पुरोहित उदयलाल को पूछ के लिखो। तुम्हारे पास घड़ी श्राई की नहीं ।

[२]

पारसल

[५५0]

ईसाई मुसलमान मत के खण्डन विषयक दो पुस्तक । आषाढ़ शुक्त १४ सं० १९४० (१९ जुलाई १८८३)।

[३]

पत्र (४७४)

[५५१]

श्रीयुत वार्ट किसनसिंह जी त्यानन्दित रहो ।

पत्र आप का आया समाचार विदित हुआ। श्रीमान् महाशयों के शरीर की अरोग्यता की

- १. पं॰ चमूपतिजी सम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ ३८ पर छुपा है । वहीं से लिया गया है।
- २. देखो पूर्व पष्ठ ४३६ की टि॰ ४। यु॰ मी॰।

३. ८ जुलाई १८८३।

- ४. इस का संकेत पूर्ण संख्या ५५१ के पत्र (पृष्ठ ४३६) में है। यु॰ मी॰
- भू. इस पत्रांश का संकेत पूर्ण संख्या ४५१ के पत्र (पृष्ठ ४३८) में है । यु० मी० ।
- ६. इस पारसल का उल्लेख पूर्ण संख्या ५५१ के पत्र (पृष्ठ ४३८) तथा पूर्ण संख्या ५६० (पृष्ठ ४४६ में है। यु० मी०।
  - ७. पूर्ण संख्या ४४१ पृष्ठ ४३८ के आधार पर । यु॰ मी॰।
  - द्म. पं विमूपित सम्पा विषयित पृष्ठ १७५-१७७ पर छपा। मूल पत्र ठा किशोरसिंह जी के पास है।

बात सुन कर श्रत्यानन्द हुआ। श्रीर जो सर्वाधीशों की श्रनुमित से लिखा है सो ठीक है। श्रव मैं ने इस का सद्यः उपाय यह निश्चय किया है कि ईसाई वा मुसलमानों के मत का खण्डन थोड़ा सा कल की डाक में तुम्हारे पास रिजप्टरी कराके रवाना किया है। उसको वहां यन्त्रालय में १००० वा १००० छपवा कर ५०० वा १००० उदयपुर में बांट देंनी चाहियें। श्रीर वाकी देश में ठिकाने २ पर वा श्रच्छे चतुर स्कूल के माष्टर श्रीर तालबिलमों को देनी उचित हैं। श्रीर वहां राज में दो चार पांच सात पण्डित निकमे बैठे रहते हैं।

उन को यह खराउन देकर बाजार में जहां कि वे खड़े हों वहां जाकर इन्हीं प्रश्नों में से प्रश्नोत्तर करें। श्रीर पण्डित श्रर्थात्—उपदेशक जिन नियमों पर चाहा है वैसा मिलना श्रीर उस का इन बातों को स्वीकार करना कठिन पड़ेगा। क्योंकि ईसाई वा मुसलमान लोग तीर्थ मूर्ति मन्दिर इन तीनों बातों पर खरडन चलाते हैं । यदि जो इन तीनों को स्वीकार करेगा, वह उनके सामने कुछ न कर सकेगा। क्योंकि वे ईसाई मुसलमान लोग इन्हीं के दृष्टान्त दिया करते हैं। श्रीर ये बातें वेद शास्त्र से सिद्ध तो क्या, परन्तु युक्तिसिद्ध भी नहीं हो सकती। इस से चाहे वह भीतर मानता भी हो तो परन्तु उनके सामने तीर्थ मूर्ति मन्दिर और चौथा पुराण, पांचवां माहात्म्य, छवां व्रत, सातवां करठी तिलक, आठवां कोई संप्रदायानकल और नवां अवतार आदि सिवाय वैदिक मत के जब तक नहीं . मानेगा तब तक उनका खण्डन न कर सकेगा। इस लिये यह बात अशक्य होगी। इस कारण उस उपदेशक को सममा दिया जाय कि जब उन के सामने चर्चा की जाय तब जो इन ९ बातों पर शंका अर्थात् वर्क ईसाई लोग करें तब उस समय वह कह दें कि इन बातों को हम नहीं सानते । हम तो केवल एक सिचदानन्द परमात्मा को मानते हैं। तभी उन का विजय कर सकेगा । और जो कोई श्रार्थसमाज से विद्वान श्रावेगा, वह इन प्रतिज्ञाश्रों को स्वीकार नहीं करेगा। क्यों कि जब तक श्राप निर्दोष मत को नहीं मानता, ख्यं दोषी होता है। तब तक दूसरे दोषयुक्त मतों को कभी नहीं काट सकेगा। इस लिए उपदेशक तो शुद्ध ही होना चाहिये। श्रीर जैसा श्रीमानों का देशकालानुकूल श्रभिप्राय है उस श्रमित्राय कीत से जो उपाय पूर्व मैंने लिखा है, सो ठीक है। यदि जो मैंने लिखा है कि इन नौं बातों का जो खरडन करेगा तो उन के सामने मानेगा भी नहीं। तभी यह बात पार पड़ेगी। श्रौर श्रीमानों का अभिप्राय भी इसी प्रकार सिद्ध होगा। यदि किसी को बुलाने ही की इच्छा हो तो वह नौ वातों को स्वीकार न करे। श्रौर श्रंगरेज ईसाइयों को २५०००० ढाई लाख रुपये देते हैं तो हम लोगों में सहायक क्यों न हो ? और मिथ्या मत का खएडन और सत्य मत का प्रचार होना, इस से उत्तम धर्म और क्या होगा।

मिति श्रा० सु० १५ संवत् १९४०'।

मेरा यहां से किस स्थान में जाना होगा, जु अब तक निश्चय नहीं किया। श्रीर यहां रहने का भी कोई निश्चय समय नहीं है। श्रनुमान है कुछ यहां रहना होगा। यहां का सुधार कुछ थोड़ा सा हुआ है श्रीर बहुत सा बाकी है। संपूर्ण परमात्मा की कृपा से हो सक्ता है। क्योंकि कई प्रकार के रोग लगे हैं। श्रीषधी सेवन श्रीर पथ्य बहुत कम हैं। इस का विस्तार पश्चात् लिखा जायगा। ठाकर

सबल सिंह जी को यही जवाब दिया है कि अब कुछ दिन यहां ठहरेंगे। परचात तुम्हारे साथ नहीं (कहीं?) चलेंगे। और हमने एक कार्ड में तुम को लिखा था। पुरोहित उदयलाल को पूछ के लिखो तुम्हारे पास घड़ी? आई कि नहीं। इसका उत्तर हमारे पास खब तक नहीं आया है। और घड़ी तुम्हारे पास एक आई वा दो। जो एक आई तो कुछ चिन्ता नहीं। और जो दो आई हों तो एक हमारे पास भेज दो।

[दयानन्द सरस्वती]

[१]

पत्र (४७५) श्रो३म

[५५२]

श्रीयुत भारतिमत्र सम्पादक महाशय निकटे निवेदनम् ।

महाशय, आप के संवत् १९४० आषाढ़ शुदी प गुरवार के छपे हुए पत्र में किसी ने वेद पर आद्मेपपत्र छपवाया है। उस लेखक का अभिप्राय यही विदित होता है कि वेद ईश्वर की वाणी श्रीर श्रभ्रांत नहीं है। परन्तु इस प्रश्न के करने वाले ने प्रश्नमात्र ही किया है। श्रपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने के लिये कोई विशेष हेतु नहीं लिखा। अर्थात् उत्तर उस वात का होता है जो किसी वेदवचन मूल पर श्रांतपन दिखलाता तो उस का उत्तर उसी समय दिया जाता। जैसे कोई कहे कि यह १०००) एक हजार रूपयों की थेली सची नहीं। दूसरे ने उस से पूछा क्या मैं तुम्हारे कहने मात्र ही से थेली को भूठी मान सकता हूं। जब तक तुम भूठा रुपया इस में से एक भी निकाल के सिद्ध नहीं कर देते, तव तक मैं थेली को भूठा नहीं मानुंगा। वैसा ही मिष्टर ए० छो० ह्यूम साहेब और जिस ने आप के पत्र में छपाया है इन दोनों महाशयों का लेख है। यहां उनको योग्य था और है कि किसी एक वा अनेक मन्त्रों को अपने अभिप्राय के अर्थ सहित वेद, अध्याय, मन्त्र, संख्यापूर्वक लिख कर पश्चात कहते कि वेद ईश्वर की वाणी और अभ्रांत नहीं हैं, तो प्रत्युत्तर के योग्य प्रश्न होता । अब भी यदि उत्तर जानने की इच्छा हो तो इसी प्रकार करें, नहीं तो कुछ भी नहीं है। किन्तु इस में इतनी बात तो समाधान देने के किसी प्रकार योग्य है कि वेदों में मतमेद क्यों हैं। अब देखिये यह भी इनकी गोलमाल बात है। क्यों कि वेदों में किस ठिकाने और किन मन्त्रों में किस प्रकार के मतभेद हैं, हां, विद्याभेद से कथन का भेद होना तो उचित ही है। जैसे व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, वैद्यक, राजविद्या, गान, शिल्प और पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त की अनेक विद्याओं की मूल विद्या वेदों में हैं। इन के संकेत शब्दार्थ छौर सम्बन्ध भिन्न २ हैं। जैसे व्याकरण विद्या से ज्योतिष विद्यादि के संकेत, परिभाषा और पदार्थ विज्ञान पृथक् २ होते हैं, वैसे इन सब विद्याओं के वाचक अर्थात् प्रकाशक

१. इस घड़ी का संकेत पूर्यों संख्या ४६२ (पू॰ ३६८) की पत्र-सूचना में है। यु॰ मी॰।

२. मूल पत्र म॰ मामराज जी ने फरवरी १६२७ में फरुखाबाद के पत्रों में से खोजा । अब इमारे संग्रह में सुरिक्तित है । इस पत्र पर "भारतिमत्र" काटकर "भारतसुदशाप्रवर्तक" बनाया हुआ है ।

३. १२ जुलाई १८८३ । यह ग्रंक कमलनयन शर्मा ने स्वामी जी के पास उत्तर लिखने के लिये मेजा था । देखो म॰ मुंशीराम सम्पादित पत्रन्यवहार पृष्ट १७३ । यु॰ मी॰ ।

मन्त्र भी पृथक् २ अर्थ के प्रतिपादक हैं। यदि इन्हीं को मतभेद कहते हैं तो प्रश्नकर्ता का कथन असंगत है। और जो दूसरे प्रकार के मतभेद मानते हैं तो उन का कथन सर्वथा अशुद्ध है। इसलिये प्रश्नकर्ताओं को उचित है कि पूर्वोक्त प्रकार से चारों वेदों में से जो कोई एक मन्त्र भी आंत प्रतीत होवे, वह आप के पत्र में मिष्टर ए० ओ० ह्यूम साहेब छपवावें। उन का उत्तर भी आप ही के पत्र में उचित समय पर छपवा दिया जायगा। ऋौर उन को वेद के निर्भान्त होने के जानने की पक्की जिज्ञासा हो तो मेरी बनाई ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका को देख लेवें। यदि उन के पास न हो तो वैदिकयन्त्रालय प्रयाग से मंगा कर देखें। श्रीर जो उन को श्रार्थभाषा का पूरा ज्ञान न हो तो किसी सत्यवक्ता दुभाषिये पुरुष से सुनें। इस पर जो उन को शंका रह जाय तो सुक्त से समच मिल के जितनी शंका हों उन सब का यथावत् समाधान लेवें। क्योंकि पत्रों से शंका समाधान होने में विलम्ब होता और अधिक अवकाश की भी अपेद्या है। अौर मुक्त को वेदभाष्य बनाने के काम से अवकाश न मिलने के कारण विशेष प्रश्नोत्तर करने का समय नहीं है। श्रीर जो उन्हों ने यह लिखा कि स्वामी जी ईश्वर वा ईश्वर की प्रेरणायुक्त हों तो उनका भाष्य निर्भ्रम हो सके। मैं ईश्वर नहीं, किन्तु ईश्वर का उपासक हूँ । परन्त वेद मनुष्यों के हितार्थ परमात्मा ने प्रकाशित किये हैं। इस अभिप्राय से कि यहां तक मनुष्यों की विद्या और बुद्धि पहुंच सकेगी और इतने तक कार्य मनुष्य कर सकेंगे। इस लिये यावत मेरी बुद्धि र्थीर विद्या है तावत् निष्पन्तपात होकर वेदों का अर्थ प्रकाशित करता हूं। और वह अर्थ सब सज्जनों ं के दृष्टिगोचर हुआ है, होता है और होगा भी । यदि कहीं आंति हो तो उक्त सहेब प्रकाशित करें। बड़े शोक की बात है कि आज पर्यन्त एक भी दोष वेदभाष्य में से कोई भी नहीं निकाल सका है फिर भी इन का भ्रम दूर नहीं हुआ। ऐसी निर्मुल शंका कोई भी किया करे, इस से कुछ भी हानि नहीं हो सकती। श्रोर सत्यार्थ होने ही से वेदों का निर्श्वान्तत्व यथावत् सिद्ध है । यदि इस मेरे बनाए भाष्य में मिस्टर ए० श्रो० ह्यम साहेब को भ्रम हो तो इस में से श्रांतिमत्त्व किसी मन्त्र के भाष्य द्वारा आप के पत्र में छपा देवें। मैं उत्तर भी आप ही के पत्र द्वारा देऊंगा । और जो थियोसीफिष्ट के अध्यक्त ऐसी बातें करें, इस में क्या आधार्य है ? क्यों कि वे अनीश्वरवादी बौद्धमतातलंबी हो कर भूत, प्रेत श्रीर चुटकलों के मानने वाले हैं। बड़े शोक की बात है। कि सर्वथा विद्यासिद्ध परमात्मा को न मान कर भूत, प्रेत, मृतकों में फस कर श्रीर भोले मनुष्यों को फसा अपने को सुधारने वाले मानना यह कितनी बड़ी अनुचित बात है। इन को तो नास्तिकमत जो कि ईश्वर को न मानना है वही शिय लगता है। परन्तु इस में इतनी ही न्यूनता है कि भूत प्रेतों ने इन को घेर लिया। सच है जो सत्य ईश्वर को छोड़ेंगे वे मिथ्या भ्रम जाल भृत प्रेतों और वन्ध्यापुत्रवत्कुतु हूंबीलालसिंह (?) आदि में क्यों न फर्सेंगे। बहुत से समाचारों में छपवाते हैं कि इतने हजार मनुष्यों को मिष्टर एच० ए० करनेल श्रोलकाट साहब ने रोग रहित किया। यदि यह बात सच हो तो मुम को क्यों नहीं दिखलाते और मनवाते। श्रीर मेरे सामने कि जिसको मैं कहूँ उस एक को भी नीरोग कर दें तो मैं थियोसोफिट्टों के अध्यक्त को धन्यवाद देऊं। इस में मुक्त को निश्चय है कि जैसे एक थियोसोफीष्ट दंभ के मारे लाहौर में ष्यपनी श्रंगुली कटवा के श्रंग भंग हो गया, कहीं ऐसी गति मेरे सामने इनकी न हो जाने। श्रीर करामात कुछ भी काम न आवेगी। प्रसिद्धी से कहता हूं कि यदि उन में कुछ भी आलौकिक शक्ति वा योगविद्या

१, इस से अगला लेख सम्पादक भारतिमत्र ने नहीं छापा। देलो पत्र पूर्ण संख्या ४३३ का आरम्भ।

हो तो मुक्त को दिखलावें। मैंने जहां तक इन की लीला सिद्धि और योगविषयक देखी है वह मानने के योग नहीं थी। अब क्या नई विद्या कहीं से सीख आए ? मुक्त को तो यह विषय निकम्मा आडम्बर रूप दीखता है। अलमितविस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु।

मिति श्रावण वदी ४ संवत् १९४०। तदनुसार २३ जुलाई सन् १८८३।

द्यानन्द् सरस्वती<sup>9</sup> जोधपुर।

[3]

पत्र (४७६)

[५५३]

श्रीयुत भारतसुद्शाप्रवर्तक सम्पादक महाशय निकटे निवेदनम् । [ पूर्ण संख्या ५५२ का पत्र ]

[१२]

पत्र (४७७)

[५५४]

श्रीमान् देशहितैषी सम्पादक महाशय निकटे निवेदनम् । [पूर्ण संख्या ५५२ का पत्र ]

[8,3]

पत्रांश (४७८)

[444]

[कमलनयन मन्त्री आर्यसमाज अजमेर] ....पत्र छापने को भेजते हैं<sup>भ</sup>। ..... २५ जुलाई १८८३ जोधपुर।

द्यानन्द सरस्वती

[१५]

कार्ड (४७२)

[५५६]

श्रोम्

जोधपुर श्रावण वदी १० रवि सं० १९४० ।

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी श्रानिन्दित रहो। श्रापने १२५ श्राम भेजे सो पहुंचे। उन में से ५०) श्राम श्रच्छे रहे श्रीर वाकी विगड़ गये।

- १. यह भारतिमत्रसम्पादक के नाम का पत्र मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ ६८-७३ पर छपा है। इस में हस्ताच् श्रीर तिथि नहीं है। श्रगले भारतसुदशाप्रवर्तक श्रीर देशिहतैषी वाले में है।
  - २. देखो पूर्व पृष्ठ ४३६ की टिप्पणी १ तथा पूर्ण संख्या ५५६ के पत्र का ग्रन्त । यु॰ मी॰।
- ३. देशिहतियी के सम्पादक ग्रीर त्रार्यसमाज ग्रज़मेर के मन्त्री कमलनयन शर्मा को यह पत्र २५-७-८३
   को मेजा गया । देखो कमलनयन शर्मा का २१-७-८३ का पत्र, म० मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवृहार पृष्ठ १७४ पर ।
   इस विषय में ग्रगला पूर्णसंख्या ५५५ का पत्र श्रीर उस का नोट भी देखें । यु० मी० ।

४. देशहि॰ के रजिस्टर से । पूर्णसंख्या ५५२ वाला पत्र ।

इस का उत्तर २८-७-८३ को लिखा गया । वह म॰ मुन्शीरामकृत पत्रव्यवहार पृ॰ १७४ पर छपा है। उस में लिखा है—"मिष्टर ए॰ यू॰ होम (ह्यू म) साहब के कथन का खरडन जो आपने देशहि॰ में छपने को मेजा है सो पहुँचा । ""कमलनयन" ५. आवर्ण कृष्ण ६ बुध सं॰ १६४० । यु॰ मी॰ ।

६. २६ जुलाई १८८३।

परन्नतु आम बहुत अच्छे थे। और उदयपुर और साहपुरें की रसीद के लिये लिख भेजेंगे, पहुंच जायंगी। आप अपने २००) रुपये लेके बाकी रुपये लाला निर्भेराम की दूकान पर जमा करा दीजिए। क्यों कि आज कल वैदिक यन्त्रालय की दशा जब से समर्थदान आया है तब से अच्छी है। और पिछत सुन्दरलाल प्रबन्ध भी अच्छा करते हैं। यहां का समाचार अच्छा है, पश्चात् लिखेंगे।

लाला कालीचरण जी के पास मिष्टर ऐ० त्रो ह्यूम साहब के प्रश्नोत्तर का पत्र छापने के लिए भेजा है, पहुंचा होगा ।

सब से हमारा आशीर्वाद कह देनार।

[दयानन्द सरस्वती]

[8]

पत्र (४८०)

[५५७]

श्रीयुत बहारट किसन जी श्रानन्दित रही 3—

कार्ड तुमारा आया, समाचार विदित हुआ। हमने मुसलमान और ईसाई के सतविषयक दो पुस्तक रजष्टरी कराके भेजे थे, अवश्य पहुंचे होंगे। उसका उत्तर अब तक क्यों नहीं भेजा। पहुंचे वा नहीं। और उस के साथ एक पत्र भेजा था । वह पहुंचा होगा। सर्वाधीशों के दृष्टिगोचर भी कराया होगा। अब मेरी चिट्ठि और वे दोनों पुस्तक पहुँचने के पश्चात् क्या निश्चय किया गया। क्या जो मैंने लिखा वही ठीक माना गया वा कुछ विचारांतर किया। इन सब बातों का उत्तर शीख भेजना। यहां का समाचार पश्चात् लिखेंगे।

श्रीर जो एक पत्र लाहौर का श्रीमानों के श्रवलोकन श्रीर संमत्यर्थ भेजा था, उस का क्या विचार ठहरा। जो कि लाला साईदास प्रधान श्रार्थसमाज लाहौर ने भेजा था। उस का भी उत्तर श्रीमानों से पूछ के मेजो। तथा श्रीमान् महारायों के श्रारोग्यता का वर्तमान श्रीर वर्षा का भी वर्तमान लिखो।

श्रीर जैकर्ण जी से कहना कि तुमारे पिता जी की मित्रता श्रीमान योधपुराधीश प्रतापसिंह जी श्रीर रावराजा तेजसिंह जी से श्रच्छी प्रकार करा दी हैं। श्रीर पूर्व जो उन के हृद्य में श्रांति थी वह भी निकाल दी। श्रीर श्रीमानों से मेरा श्राशीर्वाद कह दीजियेगा।

संवत् १९४० मिति श्रावण वदी ११5।

[दयानन्द सरस्वती] जोधपुर राज मारवाङ्

१. देखो पूर्ण संख्या ५५३ का पत्र तथा पृष्ठ ४४१ की टि०२। यु० मी०।

. ४. पूर्णं संख्या ४५१ का पृष्ठ ४३७ पर छपा ।

२. मूल कार्ड हमारे संग्रह में सुरिच्त है। म० मामराज जी ने आर्यसमाज फरुखाबाद के पत्रों में फरवरी सन् १६२७ में खोजा।

३. मूल पत्र ठाकुर किशोरसिंह के संग्रह में सुरिच्त था।

प्र. इस बात का उल्लेख श्री जयकर्ण जी के पत्र में है । देखो म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्र व्यवहार पृ० १०७ । ६. ३० जुलाई १८८३ ।

जोधपुर, सं० १९४०]

पत्र (४८१)

४४३

[3]

पत्र (४८१)

[446]

श्रो३म् १

स्वस्ति श्रीमद्राजराजेश्वर महाराजाऽधिराजवर्येभ्यः श्रीमद्योधपुराऽधिपतिभ्यो मत्त्रेरिता श्राशिषः सन्तु ।

(गुप्तसमाचार)

पुरुषाः सुलभा राजन् सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्छुमः॥ १॥३

हे घृतराष्ट्र इस जगह में बहुत पुरुष सुलभ अर्थात् सुख से प्राप्त होते हैं जो सदा दूसरे की खुशामद की वार्ते करके अपना मत(ल)ब सिद्ध करते। परन्तु सुनने में अप्रिय और परिणाम में कल्याणकारी वचन का उपदेष्टा-और सुनने वाला ये दोनों पुरुष अति दुर्लभ हैं। १।

यथा योधृषु वर्त्तमानो जयः पराजयश्च राजनि व्यपदिच्यते । महाभाष्य -

जैसे सेना की हार वा जीत राजा की ही हार और जीत मानी जाती है वैसा ही श्रीमानों को अवश्य चाहिये।

विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तद्रप्रेऽसृतोपमम्।

परिणामे विषमिव तद्राजसमुदाहृतम् ॥ गीता [१८।३८]

जो विषय और इन्द्रियों के संयोग से आदि में अमृतक्रप सुख प्रतीत होता है, वही परिणाम अर्थीत पश्चात् विष के तुल्य होकर महादुःखदायक हो जाता है।

आप स्वयं वुद्धिमान हैं। इतने ही से बहुत समम लेंगे। सौमाग्य की बात है कि आप में अनेक प्रशंसनीय शुभगुण आरोग्य और राज्येश्वर्य्य सम्पन्नता वर्तमान है। परन्तु शोक की बात है कि बात है कि ऐसे आप बुद्धिमान होके नीचे लिखी हुई थोड़ी सी वातों में न जाने क्योंकर प्रवर्त्तमान रहते हैं। वे ये हैं—यदि आप मधपान, वेश्यासंग, पतंग चड़ाना, घुड़दौड़ आदि धूत नहीं छोड़ते और राज्यपालन कर्म में कम से कम छ: घंटा परिश्रम और महालक्ष्मीरूप राजकन्या स्वपित्रयों से अधिक प्रेम नहीं करते हैं इत्यादि शोचनीय बातें आप में हैं। आप निश्चय समित्रये कि जितने आप के आधीन-पुरुष कीर्ति वा निन्दा का काम करेंगे, वह सब आप की ही पर गिने जायेंगे। यदि आप स्वयं मद्यपानादि में प्रवृत्त न हों तो क्या कोई भी इन में आपको प्रवृत्त कर सकता है। जो स्वार्थ खुशामदी हैं वे तो सदा यही चाहते हैं कि राजा प्रमाद में लगें तो हमारे सब प्रयोजन सिद्ध हो जायें। परन्तु संसार में इन का नाम कोई भी न लेगा, किन्तु—

१. पं चमूपित सम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ ६८ पर छपा है। मूल लेख कई स्थानों पर श्री स्वामी जी का शोधा हु ग्रा है। मूल पत्र ठाकुर किशोरसिंह जी के संग्रह में सुरिव्ति है। प्रतीत होता है कि इसी की शोधित प्रतिलिपि महाराज योधपुर को मेजी गई होगी।

२. महाभारत उद्योगपर्व अ॰ ३६, श्लोक १५, विदुर का उपदेश । वहां 'सुलभाः पुरुषा राजन्' पाठ है ।

३. महामाष्य में यह पाठ नहीं है। योग व्यासभाष्य ११२४ में इस प्रकार पाठहै—"यथा जयः पराजयो वा योधूखुवर्तमान स्वामिनि व्यपदिश्ते"। यु॰ मी॰।

<sup>.</sup> ४. गीता में 'तत्सुखं राजसं स्मृतम्' पाठ है। यु॰ मी॰।

( प्रधानाप्रधानयोः प्रधानं कार्य्यं संप्रत्ययः ) महाभाष्य — मलाई श्रीर बुराई प्रधान पुरुष के साथ लगती है, गौण श्रर्थात् श्रप्रधान के साथ नहीं। यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कुरुते छोकस्तद्नुवर्तते ॥ गीता [३। २१]॥

जैसा अच्छा वा बुरा आचरण श्रेष्ठ पुरुष कर्चा है वैसा ही इतरजन करने लग जाते हैं। और जिसका प्रमाण उत्तम पुरुष कर्चा है उसी का प्रमाण सब लोग करने लगते हैं। अर्थात् (यथा राजा तथा प्रजाः) जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा भी होती है। इस लिये प्रधान पुरुष बहुत विचार से उत्तम आचरण करे कि जिससे उसको संसार के विगड़ने का अपराध न लगे। बुद्धिमानों के सामने विशेष लेख करना उचित नहीं होता।

अब मुमको यह वड़ा सन्देह है कि जो आप जैसे दीर्घजीवी न्यायकारी राजा बने रहें तो सब प्रजा का कल्याण होने। और जो मद्यपानादि कर्म हैं वे अवश्य आयु, बुद्धि, बल, पराक्रम, आरोग्यता, कीर्ति, धर्म, अर्थ, काम और मोच तथा प्रजा के पुत्रवत्पालना करने में परम विश्वकारी हैं। इस लिये मुमको निश्चय है कि आप मद्यपानादि दुष्कर्मों से पृथक होके अपने समीपस्थों का भी यथावत कल्याण करेंगे। (इसका उत्तर आप जैसी इच्छा हो वैसे दीजिये। में कड़ी उत्तर दूंगा तो स्वामी जी अप्रसन्न हो जायेंगे ऐसा ध्यान मत कीजिये। मुमको निश्चय है कि आप निष्कपट और सत्यवादी हैं। इस पर जैसा विचार होगा उत्तर यथावत् शीघ्र लिखेंगे। यद्यपि यह प्रथम ही पत्र आपके समीप मेजा जाता है तदिप यदि आगे आवश्यकता होगी तो मैं और आप जब समस्न न हो सकेंगे, तब पत्रों ही से यथोचित बात होंगी। जैसा मैं आवश्यक कार्य करने वाक्षक के उत्तर देने में स्वण मात्र विलंब नहीं कर्ता, वैसे श्रीमान भी करेंगे)। यदि आप ही पूर्वोक्त निषद्धकर्म करने और विद्वित न करने में प्रवृत्त रहेंगे तो अन्य पुरुष सब आपके दृशन्त से वर्तों। जब तक मनुष्य के हाथ में सर्वाधिकार, आरोग्यता, उत्तम संग, शुभगुण कर्म स्वभाव होता है तब तक कोई भी विद्र सुखनाशक नहीं खड़ा होता। विद्रों का निवारण बुद्धिमान प्रथम ही करते हैं कि जब तक वे प्राप्त नहीं। नहीं तो बुद्धिमान और निर्वुद्ध में दूसरा क्या मेद है। निर्वुद्ध लोग विद्र के पूर्व कुछ भी ध्यान नहीं देते और विद्र आये प्रथात गमरा भी जाते हैं। विद्वान लोग वैसे नहीं होते।

यत्तद्ये विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्।

तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसाद्जम् ॥ गीता [१८।३७]—

जो ब्रह्मचर्यादि कर्मों का आचरण आदि में विषतुल्य दुःख प्रतीत होता है वही पश्चात् असत के सदृश विदित होता है। वही आत्मा और बुद्धि को प्रसन्न करने वाला सुख है कि जो विद्या सुविचार सत्संग और योगाभ्यासादि उत्तम कर्मों से प्राप्त होता है।

ूजामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।

तानि ऋत्याहतानीव विनद्यन्ति समन्ततः ॥१॥ मनुस्मृतौ [ ३।५८]।

जो विवाहित श्रियां पित माता पिता बन्धु और देवर आदि से दुःखित होके जिन घर वालों को शाप देती हैं वे जैसे किसी कुटुम्ब भर को विष देके मारने से एक बार सब के सब मर जाते

१, महामाष्य में 'प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययात्' (२।१।१) इतना ही पाठ है। यहां शुद्ध पाठ 'प्राधनाप्रधानयोः प्रधाने कार्यसंप्रत्ययः' चाहिये। पारिभाषिक (परि०८५) में यही पाठ है। यु० मी०।

हैं वैसे उनके पित आदि सब ओर से नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं। और

संतुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।

यस्मिन्नेव कुळे नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥१॥ मनुस्मृतौ [ ३।६० ]

अर्थ० - जिस कुल में स्त्री से पित और पित से स्त्री अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है उस कुल

में निश्चय कल्याण अर्थात् आनन्द बढ़ता है ॥१॥

देखिये जैसे किसी की खी उपपित अर्थात् दूसरे पुरुष से प्रसिद्ध वा अप्रसिद्ध प्रीति करे तो उस के पित को कितना बड़ा क्लेश होता है। इसी प्रकार पित के परस्त्री वा वेश्या-गमन से पत्नी को महा दु:ख होता है। और वह उनका क्लेश कुटंच भर का नाशक और उनकी प्रसन्नता सब कुटंच को आनन्द देने वाली है। इस लिए आप अपने अमूल्य समय मद्य वेश्या-संग आदि में न लगा के न्याय धर्म से प्रजापालनादि शुभ कर्मों में व्यय करके धन्यवादार्थ सर्वत्र सत्कीर्ति हुजिये।

किमधिकलेखेन महामान्यवर्यतमेषु ।

[2]

पत्र (४८२)

[ ४४९]

श्रो३म

श्रीयुत मनोहरदास खत्री सम्पादक भारतिमत्र श्रानिन्दत रहो।

श्राप ने मेरे भेजे पत्र को प्रसन्नतापूर्व के छाप दिया, उसका उपकार मानता हूं। परन्तु शेष विषय भी छापने योग्य जानकर मैंने लिखा था, क्योंकि इस पूर्वपत्त के सम्बन्धी थियोसोफिकल सुसायटी के प्रधान हैं। इस लिए यह विषय लिखा था। श्रोर मैं श्राप को सुहृद्भाव से लिखता हूं कि यदि श्राप श्रपने भारतिमत्र समाचार की विद्वानों में प्रतिष्ठा चाहें तो करनल श्रोलकाट श्रादि के करामात वा मिसमिरेजम से श्रनेकों रोग निवारण श्रादि नितान्त मिथ्या विषय कभी न छापें। नहीं तो समाचार की प्रतिष्ठा नष्ट हो जायगी। श्रव थोड़े समय में करनेल श्रोलकाट लाहोर गये थे। उन का रोगनिवारणादि सामर्थ्य श्रत्यन्त भूठ वड़े बड़े बुद्धिमान लाहोर निवासियों ने निश्चित करके लिखा कि इन का यह सब अपर का ढोंग है। श्रोर जितना व्यवहार बाहर वा भीतर का थियासोफिस्टों का मैं जानता हूं, इतना श्रार्थात्रतीय लोगों में बहुत थोड़े लोग जानते हैं। जब इन लोगों ने भूठ दांभिक मिथ्या छल व्यवहारों में मेरी सम्मति लेनी चाही, मैंने नहीं दी, तभी से वे श्रपना प्रपंच प्रथक करने लगे। श्रीर मैं उन से प्रथक हो गया। श्रस्तु, थोड़े ही लेख से श्राप बहुत समम लेंगे।

एक [पत्र] श्रीकृष्ण खत्री ने ता० २८ वीं जुलाई सन् १८८३ को लिखकर हमारे पास भेजा है। श्रीर उन्हों ने बहुत से सनातन श्रार्यधर्म के प्रयोजनादि विषयों में श्रार्य पंचांग बनाने के लिये मुक्त से सहायता चाहते हैं तथा श्रार्यसमाजों से भी। जिस पत्र पर लेख किया है वह पत्र भारतिमत्र कार्यालय का है। इस लिए मैं श्राप से पूछता हूं कि उक्त महाशय किस प्रकार के गुण, कर्म, स्वभाव वाले हैं। श्रीर जैसा उन ने लिखा है कि इस में भारतिमत्र सम्पादक की भी विशेष सहानुभूति है श्राप इन को योग्य समक्तते हैं। यदि इस कार्य के योग्य समक्तते हों तो इस पत्र को देखते ही सुक्त

१. त्रमुमानतः जुलाई सन् १८८३ का त्रन्त ।

२. देखो पत्र पूर्ण संख्या ४४२ पृ० ४४० पर टि॰ १।

को प्रत्युत्तर लिखिये। तत्पश्चात् आर्यसमाजों को उचित होगा, लिखा जायगा। और जो एक पत्र बहुत दिन हुये मैंने लिखा था, जिस में गोरक्षार्थ अर्जी देने का मसोदा वहां के वकील वारिस्टरों से पूंछ के आप लिखें, उस का क्या हुआ, अब उस में अधिक विलम्ब करना जिनत में नहीं समझता । यहां जोधपुर का समाचार पश्चात् लिखा जायगा<sup>२</sup>।

[4]

पत्र (४८३) श्रोम

[४६०]

श्रीयुत बहारट किसन जी आनिन्दत रही 3।

पत्र आप का आया, समाचार विदित हुआ। यह पत्र सर्वाधीशों के दृष्टिगोचर करा देना। १—मेरी भी यह मनसा नहीं है न थी कि पाद्रियों के सामने शास्त्रार्थ ही किया जाय। किन्त जिस से कोई अपनी प्रजा का पुरुष उन के मभाव में न फसे वैसा उपदेश किया जाय । इस लिये वे छोटे २ खंडन जो कि मैं ने भेजे हैं वे छपवा के योग्य २ पुरुषों को चाहे वे पंडित हों वा बुद्धिमान हों, बांट कर प्रचार करने से उन के फन्दे में कोई भी न फसेगा। आप से आप बहुत से , उपदेशक उसी राज्य के पुरुष हो जांयगे। इस का बांटना विशेष कर सरदार, हाकम, भूमिये, थाने वा अच्छे २ गामों में अथवा जहां कहीं कोई बुद्धिमान् हो इस को देखकर उन ईसाइयों को हटा दे सकेंगे। श्रीर यदि श्रीमानों के नियमानुसार उपदेश कहीं करना हो तो वहां राज के नौकर बहुत से परिडत हैं जिस को योग्य सममें उस को यह दोनों पुस्तक दे के उपदेशक कर देवें।

२-जैसा श्रीमान महारायों ने लिखा है, वैसा उपदेशक आर्यसमाज से आने में असक्य नहीं है। किन्तु जो उस पत्र में नियम लिखे हैं उन के अनुसार और ईसाई आदि का खंडन होना असंक्य है। क्योंकि जब तक उपदेशक भूठ मत को मानेगा और दूसरे भूठ मत के खंडन में प्रवृत्त होगा, कुछ भी न कर सकेगा। जब तक मनुष्य स्वयं भूठी बातों का त्याग करके सत्य बातों में निश्चित प्रवृत्त नहीं होता, तब तक वह अलौकिक शक्ति परमात्मा की श्रोर से नहीं मिलती । श्रीर न दहो-त्साही वह हो सकता है। यावत् इन ईसाई आदि के सामने वैदिक मतानुसार ईश्वर धर्म आदि को नहीं मानता और मूर्तिपूजा आदि को मानता है, तब तक वह जायगा खंडन करने को, आप ही खंडित हो रहेगा। जैसे कोई किसी को दुर्व्यसन छुड़ाने का उपदेश करता और आप उसी दुर्व्यसन में फंसा है उस का उपदेश कोई भी न मानेगा। इस लिए श्रसक्यता लिखी थी। नहीं तो पण्डित तो क्या किन्तु एक कोई साधारण उपदेशक भी आर्यसमाज का आवे तो इन का कुछ भी बल न चले। इस लिए जो उपाय मैंने उन के निवारण के लिये लिखा है वह अच्छा है। परन्तु ईसाई आदि के सामने

१. यह पत्र प्राप्त नहीं हुत्रा । यु॰ मी॰ ।

२. अगस्त के त्रारम्भ में लिखा गया। म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० ७८ पर छुपा है।

३. मूल पत्र ठा० किशोरसिंह जी के संग्रह में है।

४. देखो पूर्ण संख्या ५५१ का पत्र (पृष्ठ ४३८ पर )। यु॰ मी॰।

जोधपुर, सं० १९४० ]

पत्र (४८४)

880

जब कभी बात चीत हो, तब उस को श्रित उचित है कि उस समय मूर्ति और पुराण श्रादि का पन्न छोड़ ही के बोले, तभी कृतकारी होगा।

३—यहां जयकरण के पिता नाशूराम जी का श्रीमान जोधपुराधीश महाराजे प्रतापसिंह जी श्रीर बाबा साहब से कहकर मैंने मिलाप करा, इनकी श्रोर से जो शंका थी सो दूर करा दी है। श्रव तीनों महाशय उनसे प्रसन्न हैं। श्रीर श्रव श्रीमान योधपुराधीश भी कुछ २ मेरे उपदेश सुनने में प्रवृत्त हुए हैं। श्रवुमान है कि कुछ सुधार हो। परन्तु श्रव तक मद्यपानित दुष्कमों से कुछ कम हटे हैं। श्राज तक लोगों ने बहुत सी बहकावट की थी, परन्तु (सत्यमेव जयित नानृतम्। सत्येन पन्या विततो देवयानः। नास्ति सत्यात्परो धर्मों नानृतात्पातकं परम् ॥ सत्ये नास्ति भयं कवित् ।) सत्य के सामने भूठ कभी नहीं ठहर सकता। महाराज का स्वभाव श्रत्युत्तम है, परन्तु संगदोष ने कुछ का कुछ स्वभाव को कर रक्खा है। श्रव तक मद्यपान वेश्यासंग सेल हांसी ठट्ठा छुकरपन संपूर्ण नहीं छूटे हैं। परमेश्वर श्रंतर्यामी पूर्ण कृपा करें, जिससे ये महाशय श्रपने राजधर्म में प्रवृत्त हो प्रजा को पुत्रवत् व्याय से पालन कर कीर्तिमान् होवें। महाराजे प्रतापसिंह जी श्रीर बाबा साहब भी श्रित प्रसन्न हैं। जो यह यहां मेरा श्राना, इन लोगों का मेरी श्रोर इतना प्रेम होना, सब श्रार्यकुलिदवाकरों के प्रताप से हुश्रा है, ऐसा मैं समक्तता हूं। जैपुर का छत्य शीघ करा लेना चाहिये। श्रीमानों के शरीर की श्रारोग्यता सुनकर वड़ा श्रानन्द हुश्रा। सबसे मेरा श्राशीर्वाद कह दीजियेगा। श्रीर इस पन्न का उत्तर शीघ देना।

मि॰ श्रावण शुक्त ३ रविवार सम्वत् १९४०४। ठाक[र] सबलसिंह जी श्रब यहीं हैं।

[ द्यानन्द सरस्वती ] । जोधपुर मारवाड़ ।

[३]

पत्र (४८४) श्रो३म् [५६१]

श्रीयुत भारतिमत्र संपादक समीपेषु।

महाशय, त्राप के संवत् १९४० मिति श्रावण शुदी ६ गुरुवार के दिन के छपे हुए पत्र में जो विविध समाचार के दूसरे कोष्ठ में यह छपा है कि मुसलमानों के ममन का मूल अथर्ववेद है, सो बात [ श्रांसत्य ] है। क्योंकि उस के नाम निशान का एक श्राचर श्रायवेद में नहीं है। जो शब्द

१. इस विषय में पूर्ण संख्या ५५७ का पत्र (पृष्ठ ४४२) भी देखें। यु० मी०।

२. ये ही वचन सत्यार्थप्रकाश के ऋन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य के ऋारम्भ में दिये गए हैं। प्रतीत होता है कि उन्हीं दोनों सत्यार्थप्रकाश का वह ऋन्तिम प्रकरण भी शोधा गया था।

३. सम्भवतः गोरज्ञा सम्बन्धी । यु० मी० ।

४. ५ ग्रगस्त १८८३ रविवार । परन्तु उस दिन शुक्ल २ है ।

५. म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्र न्यवहार पृ० ७३-७४ से लिया।

६. ६ त्रागस्त बृहस्पति, १८८३ । यु॰ मी॰।

कर्नुम इक्षोपिनवद् नामक जो कि मुसलमानों की पादशाही के समय किसी थोड़ा सा संस्कृत और अपनी कारसी के पढ़ने वाले ने छोटा सा प्रन्थ बनाया है वह वेद, ज्याकरण, निकक्त के नियमानुसार शब्द अर्थ और संबंध के अनुकूल नहीं है। और अक्षा, रसूल, अकबर आदि शब्द चारों वेदों में नहीं है। किन्तु जो अथवंवेद का गोपथ ब्राह्मण है, उस में भी यह उपनिवद् तो क्या किन्तु पूर्विक शब्दमात्र भी नहीं है। पुनः जो कोई इस बात का दावा करता है, वह अथवंवेद की संहिता जो कि बीस कावडों से पूर्ण है, अथवा उसके गोपथ ब्राह्मण में एक शब्द भी दिखला देवे, वह कभी नहीं दिखला सकेगा । यदि ऐसा होता तो उस पुरुष का कहना भी सत्य होता। अन्यथाकथन सच क्योंकर हो सकता है ? कहां राजा भोज कहां गांगा तेली ? वेदों के आगे यह प्रन्थ ऐसा है कि जैसे अमूल्य रक्ष के सामने भूड़ा। यही एक बात नई नहीं है। किन्तु स्वार्थी लोगों ने वेदों के नाम पर ऐसे २ निकम्मे बहुत से प्रन्थ बनाये हैं जिन का मिध्यात्व वेद के देखने से यथावत् विदित होता है। यदि बालादत्त शर्मा हेडमास्टर रियास्त टिहरी गढवाल की इच्छा हो तो इस बात के लिये यहां सब दिशाओं के दरवाजे खुले हैं। अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्ययेयु ।

[४४]

पत्रांश (४८५)

[५६२]

[कमलनयन मन्त्री आर्थ स० अजमेर³] बालकराम वाजपई कौन हैं! १० अगस्त १८८३° जोधपुर।

द्यानन्द् सर्ख्वती

१. अज्ञानी लोगों की इस मूर्खता को देख कर ही, श्री स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुख्यास के अन्त में इस अख्रियानिषद की कड़ी समीचा की । प्रतीत होता है कि वर्तमान सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुख्यास की प्रेस कापी भी उसी समय संशोधित हो रही थी। उसी के अन्त में इस के मिश्यात्य का भी खरडन कर दिया गया।

<sup>[</sup>इस विषय में इमारा 'ऋषि दयानन्द के प्रन्थों का इतिहास' प्रन्थ भी पृष्ठ ३२,३३ देखें। यु॰ मी॰ ]

२. त्रागस्त १८८३ के उत्तरार्ध में लिखा गया प्रतीत होता है। [इस पर म॰ मुन्शीराम जी का नोट इस प्रकार है-"इस पत्र के ब्रन्त में महर्षि दयानन्द का इस्ताज्ञर नहीं है ब्रीर न इस से पूर्व पृ॰ ५३२-५३३ पर मुद्रित पत्र पर उन का इस्ताज्ञर है। परन्तु इन दोनों पत्रों के साथ एक ब्रीर सादा कागज नत्थी है, जिस पर लिखा हुब्रा है "भारतिमत्र कलकत्ते वाले के नाम जो पत्रादि स्वामी जी की ब्रीर से लिखे गये उनकी प्रती" ]

३. देशाहि॰ के रिजस्टर से । इस सम्बन्ध का पत्र म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० १७५,१७७ पर छपा है।

४. यह श्रमित्रायं मात्र है।

जोधपुर, सं० १९४०]

पत्र(४८६)

888

[2]

पत्र (४८६)

[५६३]

श्रीयुत महिमहेन्द्र महामान्यार्थकुलदिवाकर आनिन्दत रही।

श्रीमानों को विदित हो कि मैं जोधपुर में भाद्र पौर्णमासी' तक रहना चाहता हूँ। प्रश्चात् कहां जाना होगा, इस का निश्चय अब तक नहीं किया है। जब निश्चय हो जायगा तब श्रीमानों को विदित कर दिया जायगा।

महाराजे प्रतापसिंह जी और रावराजा तेजसिंह जी उदयपुर में श्रीमन्महोदयों को मिलने के लिए आने को कहते थे। अनुमान है कि पूने से वहीं आवेंगे। यदि आवें तो अच्छे प्रकार आप शिक्षा करेंगे। इस में कहना वा लिखना क्या है। किन्तु आर्यराजोत्कर्ष, वैदिकधर्म की उस्रति करने आदि का उपदेश यथायोग्य कीजियेगा। कुछ ओषि लिखके भेजी जाती हैं । इन को यथायोग्य उपयोग में लावें।

## ॥ उपदेश ॥

- १—कभी साहित्य जो नायका आदि भ्रष्ट रीति है उस का स्मरण श्रवण और वैसे गणेश-पुरी से मनुष्यों का संग भी कभी मत कीजियेगा। और न मद्यपान, न वेश्या का दर्शन, नृत्यगान आदि प्रसंग करना।
- २—जैसी दिनचर्या<sup>3</sup> मैं लिख आया हूं उस से विपरीत आचरण न कभी करना । किन्तु वही रात्रिके प्रातः ४ चार बजे उठना। दिन और रात में १० बजे भोजन करना, दिन में निद्रा न लेनी और रात्रि में १०, १०॥ साड़े दश वा ११ बजे तक शयन सदा कीजियेगा।
- ३—सदा छ: घरटे तक समय राजकार्य में लगाया कीजियेगा। श्रीर जब कभी राजकार्य से अवकाश मिले, तभी व्याकरणादि शास्त्र श्रीर मनुस्मृति के ३ अध्यार्यों का अभ्यास कीजियेगा। श्रीर व्यर्थ समय एक च्रणमात्र भी मत गमाइयेगा। जैसा कि सतरंज, हास्य श्रीर विनोद श्रादि में मूर्ख लोग अपना अमूल्य समय खोते हैं—वैसा करना सर्वथा अनुचित है।

४—प्रातः समय योगाभ्यास की रीति से ध्यान करना । श्रीर नाम लेना श्रादि पुरोहित के श्राधीन कर दीजियेगा, जिस से ध्यान करने श्रीर राज्यपालन में समय यथोचित श्रीमानों को मिले । बुद्धि, बल, पराक्रम, श्रायु, प्रताप बढ़ता रहे ।

१. १६ सितम्बर १८७३। २. इन ग्रोपधां का संकेत बारहट कृष्णसिंह जी के पत्र में है—
"ग्रीर येक पत्र ग्राप का श्रीमान् के पास ग्राया था जिस में सर्प, बिच्छू, उत्तर, विसम उत्तर, मन्दाग्नि
बुद्धिवर्धक ग्रादि परीन्ति ग्रोपिं लिखी थीं । ... ... ... ... ... ... सम्बत् १६४० ग्राधिन कृष्ण १० तारीख २६ सितम्बर"। देखो प० चमूपित सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० ११७।

एक श्रौषिपत्र का निर्देश श्राश्विन वदी ११ वृहस्पतिवार सं०१६४० (२७ सितम्बर १८८३) के पत्र के श्रादि श्रौर श्रन्त में भी है। उसे इम उक्त पत्र के श्रागे ही छापेंगे। इमारा विचार है कि यहां भी उसी श्रोषिपत्र से श्रामित्राय है, क्योंकि उस में भी बारहट किशनसिंह जी द्वारा लिखित सर्प, बिच्छू, ज्वर, विषम ज्वर श्रादि सभी की श्रौषियां हैं। यु० मी०। ३. दिनचर्या के ५१ नियम, देखो पूर्ण संख्या ४५६।

४. यहां पाठ श्रशुद्ध है। 'दिन में १० श्रीर रात में ६ बजे' ऐसा चाहिये। देखो पृष्ठ ३७०। यु॰मी॰।

- 4—निरामय महोत्सव में निम्नलिखित कार्य अवश्य कीजियेगा। एक वेदमन्त्रों से होम। दूसरा १२५०००) सवा लाख रुपये चात्रशाला और २५०००) पचीस हजार रुपये खराज्य में अनाथ, युद्ध, विधवा और रोगियों के पालन के लिये। और १००००) मेवाड़ में वैदिकधर्म-प्रचार और पाचीन आर्षप्रन्थों के छपवाने [तथा] प्रदान करने के लिये। और २०००००) दो लाख वहां के चित्रय सरदारों से लेकर चात्रशाला स्थापन शीघ कीजियेगा। इस में ऐसा समिक्षये कि जानो एक गवर्नर जनरल साहेब और आये थे।
- ६ सदा बलवान और राजपुरुषों से सताए हुओं की पुकार यदि मोजन पर भी बैठे हो तो भोजन को भी छोड़ के उनकी बात सुननी और यथोचित उन का न्याय करना । ऐसा न होने कि निर्वल अनाथ लोग बलवान और राजपुरुषों से पीड़ित होके रुदन करें और उन का अश्रुपात भूमी पर गिरे कि जिस से सर्वनाश हो जाने । और इन की रच्चा से सब प्रकार की उन्नति अर्थात् शरीरारोग्य आयुष्टिद्ध धनष्टिद्ध राजष्टिद्ध धमेष्टिद्ध और प्रतापष्टिद्ध को सदा करते रहिये।
- अब परमात्मा की कृपा से महाशयों का शरीर निरामय हुआ है । अब इस को वीर्यरचणादि से सदा रोग रहित रिखयेगा कि जिस से ऐहिक और पारमार्थिक छुख की सिद्धि करना सुगम होने । और श्रीमानों के दीर्घायु होने से स्वराज्य और समस्त आर्यावर्त देश का सीभाग्य बढ़े ।
- प- कभी सत्य बात के करने और क्रूठ बात के छोड़ने में भय न करें, किन्तु युक्तिपूर्वक इस बात को पूरी करें। और अपने राज्य में २५ वर्ष का पुरुष और १६ सोलह वर्ष की कन्या का विवाह करने के लिये दृढ़तापूर्वक आज्ञा दीजिए । कुमार और कुमारी का यह समय सनातन आर्ष प्रत्थक्थ विद्याओं के प्रहण करने में व्यतीत होवे, जिस से सब मनुष्यजाति की सत्य उन्नति होवे।
- ९—एक विवाह से श्रधिक दूसरा भी विवाह कोई न करते पावे। परन्तु यह विवाह दोनों की प्रसन्नतापूर्वक होवे। जिस से श्रत्युत्तम सन्तान उत्पन्न हों।
- १०—स्वराज्य और प[र]राज्य का जो चिकीर्षित और अच्छे बुरे काम होते हैं उन को दूत द्वारा यथावत जान कर दुष्ट कार्यकर्ताओं को दण्ड और उत्तम कार्य करने हारों का सत्कार यथायोग्य कीजिये, जिस से उत्तम कार्य बहुँ और दुष्ट कर्म घट जार्थे।
- ११—जो जितना अपराध करे, उसी को उतना दण्ड और जो जितना अच्छा काम करे, उस को उतना ही पारितोषिक देना, अधिक वा न्यून नहीं, चाहे माता पिता भी क्यों न हों।
- १२—जैसा कुत्तों पर अन्याय अर्थात् एक के हड़के होने और अपराध करने में सब जाति को दग्ड देना अन्याय है, इस के लिये जितना धन व्यय इस प्रबन्ध में होता है उतने धन से जितनों से
- १. बाईट कृष्णसिंह जी अपने आवण शुक्ल २ सम्वत् १६४० (५ अगस्त १८८३) के पत्र में इस महोत्सव के होने की सूचना श्री स्वामी जी को दे रहें हैं। देखो प० चमूपित सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० ११५ । प्रतीत होता है कि श्री स्वामी जी का ऊपर मुद्रित पत्र महाराणा उदयपुर को १० से १५ अगस्त तक किसी तिथि को लिखा गया होगा ।
- २. श्री स्वामी जी का लगभग यही श्रिभिप्राय चिरकाल के पश्चात् भारत की सरकार ने परोपकारिणी सभा के मन्त्री महोदय श्री इरविलास सारदा जी द्वारा प्रस्तावित-सारदा एक्ट के नाम से प्रचिलत किया।

प्रवन्ध हो सके उतने पुरुष हड़के कुत्ते को मारने के लिए नौकर रखिये। वे रात दिन इसी कार्य करने में तत्पर रहें। और विना % पराधियों को दण्ड मत दिलाइये।

१३—श्रव दशहरा निकट श्राया। उस में श्रनपराधी मैंसे वकरों का प्राण न लेकर उस के स्थान में सिरनी मिठाई मोहनभोग लपसी श्रादी [की] बिल प्रदान की जिए। और चित्रयों को जो कि शक्ष चलाना जानते हैं उन के उत्साह शौर्य धैर्य बल श्रीर पराक्रम की परीचा करने के लिये जंगली सुश्ररों को वा सिह को प्रथम पकड़ा रख के उस दिन मैदान में छोड़ शक्षप्रहार करने की श्राज्ञा दी जिये। इन को विदित तो होवे कि शक्ष चलाना ऐसा होता है।

१४—आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिए एक वर्ष में १००००) दश हजार रुपये के घृतादि का जिस रीति से होम हुवा था उसी रीति से प्रति वर्ष होम कराइये। परन्तु उन में से ५०००) पांच हजार रुपयों के सुगन्धित घृत मोहनभोग का होम वर्षा ही में कि जिस दिन वर्षा का आरद्रा नचन्न लगे उस दिन से लेके विजयदशमी तक चारों वेदों के ब्राह्मणों का वरण करा एक सुपरीचित धार्मिक पुरुष उन पर रख के होम कराइयेगा।

सव से मेरा श्राशीर्वाद कहियेगा। श्रीर इस लेख को यथावत् सफल कीजियेगा। श्रीर इस का प्रत्युत्तर शीघ्र भिजवा दीजिए। किमधिकलेखेन महामान्यवर्यतमेषु।

१५—अव कविराज जी आ गए होंगे । गोरचा के अर्थ अर्जी शीघ देनी चाहिए । जितनी आशा लार्ड रिपन साहेव के ही समय में इस कार्य की सिद्धी होने की है उतनी दूसरे गवर्नर के समय में अनुमित नहीं हैं। इस कार्य कि सिद्धी करने का यह शीघ होना चाहिए, ऐसी सब आर्यवरों की सम्मिति है तथा मेरी भी यही सम्मिति है कि यह कार्य अब शीघ होना चाहिए, क्योंकि शुभ कार्य करने में विलम्ब होना उचित नहीं। जितनी शीघता हो उतना ही अच्छा है।

रहस्य नियम

?— स्वयंवर विवाह के पश्चात् कम से कम एक महीने और अधिक से अधिक ३ महीने तक ऋतुदान से पूर्व ब्रह्मचर्य सेवन पूर्वक पत्नी और पित भोजन का प्रवन्ध रक्खें। अर्थात् अति शीत, अत्युष्ण, अतिक्च, मादक द्रव्यों का भोजन पान छोड़ तरोष्ण मध्यस्थ गुण युक्त दुग्ध मिष्ट सुगन्ध तण्डुल गोधूम मूंग उड़द दिध सद्योष्ट्रत सुसंस्कृत सुगन्धियुक्त बुद्धिवर्धक हृद्य पदार्थों का भोजन पान किया करें कि जब तक ऋतुदान समय न आवे।

२—ऋतुकाल प्रतिमास षोड़श रात्रि पर्यन्त होता है। उन में से रजोदर्शन दिन को लेके चतुर्थ दिन पर्यन्त स्पर्श दर्शन भी परस्पर न करें। जब पांचवें दिन शुद्ध हो जावे तब यदि पुत्रेच्छा हो तो समाङ्क अर्थात् छठीं आठवीं दशवी द्वादशी चतुर्दशी और सोलहवीं रात्रि ऋतुदान के लिए उत्तम हैं। और जो कन्योत्पत्ति की इच्छा हो तो पांचवी सातवीं नवमी एकादशी त्रयोदशी और पंचदशी

१. संख्या १५ का लेख मांसिक पत्र आर्थ, माग १३ श्रक ६ जनवरी १६३२ पृ० ३८६ पर छपा था। पीछे से यह श्रंश खोया गया। पं० चमूपति जी के आर्थ पत्रस्य लेखानुसार इतना श्रंश ऋषि ने स्वइस्त से एक कागज के दुकड़े पर लिखा हुआ था। पत्रव्यवहार में यह श्रंश नहीं छपा। म० मामराज जी ने सम्वत् १६६० में ठा० किशोरसिंह जी के संग्रह की प्रतिलिपि की थी। अतः हमारे पास और आर्थ में यह लेख सुरिल्ति रहा।

ऋषि द्यानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन

विथि प्रशस्त हैं। परन्तु इन्हीं शोलह रात्रियों में दोनों पन्न की श्रष्टमी चतुर्दशी पौर्णमासी श्रौर श्रमा-वास्या विथि श्रावे तो उस रात्रि में भी ऋतुदान न.देना चाहिये।

३—जिस रात्रि में शरीर चित्त आत्मा प्रसन्न हो उसी में १० बजे के उपरान्त २ बजे से पूर्व ऋतु दान देके पश्चात् किंचित ठहर स्नान कर शालम मिश्री और केशर आदि सुगन्धियुक्त परिपक दूध शीतल यथावि पी के तांबूल भच्चण कर मुख प्रचाल[न] करके पृथक् २ शयन करें।

४—यदि पत्नी विदुषी चतुर हो तो उसी समय गर्भत्थित हुआ वा न हुआ जान लेवेगी।
नहीं तो जब पुनः द्वितीय मास में रजस्वला न हो तब जानना कि गर्भ रहा। उस समय से आगे यावत्
बालक के जन्म होने के पश्चात् दो महीने अर्थात् वर्ष व्यतीत न हो तब तक दोनों सिवाय सुआषणादि
व्यवहार के मध्य में समागम (न) करें किन्तु पति पत्नी पूर्वोक्त प्रकार युक्ताहारविहार करते हुए
ब्रह्मचारी रहें, जिस से अप्रिम सन्तान भी उत्तम होवें।

प्—दोनों मन कर्म वचन से व्यभिचार अर्थात् अन्य स्त्री अन्य पुरुष से समागम ब्रोड़ पातिव्रत्य और स्त्रीव्रत रह के धर्मार्थकाममोत्तों को सिद्ध करके आनन्दित और दीर्घायु होवें।

यदि इतने पर भी गर्भ स्थित न हो तो पत्नी एक यति वा बाल चान्द्रायण धर्थात् सध्यान्हिदि नि में नित्य प्रति तीन २ तोले या ३६ मासे का एक प्रास एकान्न के आठ प्रास खाने । एक प्रहीने अर्थात् पौर्णमासी से द्वितीय पौर्णमासी, अमावस्था से २[री] अमावस्था और संक्रान्ति से २[री] संक्रान्ति तक बतकरे।नित्य होम और भूमि शयन करें और पित ब्रह्मचारी होकर वीर्य को रहा वृद्धि करें। पुनः, पूर्वोक्त समय और रीति से वीर्य स्थापन करें तो संभव है कि सन्तानोत्पत्ति होने रही

[५७]

पत्र (४८७)

[५६४]

मुन्शी समर्थदान जी आनन्दित रही !

कल ऋग्वेद के पृष्ठ १७६८ से पृष्ठ १८०९ तक का पाकट रजस्टरी कराके भेजा है, पहुंचेगा।
यदि उनमें से पांच ५ वा १० दश मन्त्र शिवद्याल को भाषा बनाने के लिए दे देना और पत्र में लिख
देना कि फलाने मन्त्र से फलाने मंत्र तक शिवद्याल की बनाई भाषा है। परन्तु उन्हीं मंत्रों की भाषा
की जिन की शिवद्याल बनावे ज्वालादत्त से भी बनवा के भेजना। अच्छी भाषा बनावेगा तो उनके
पास भी भाषा बनवाया करेंगे। अब तक किसी का सूची छपकर तैयार हुआ वा नहीं। और आज
कल क्या छपता है। सत्यार्थप्रकाश छपता है वा और छुछ। प्रयाग समाचार का छपना दो सप्ताह के
लिए था, पश्चात् बन्द हो ही गया होगा। अब टेप आने में कितनी देर है। जहां तक जल्दी आवे तो
अच्छा है। बीच २ में उनको चिट्टी भेजकर तकादा किया करो। और कलकत्ते में जो छोटे टेप हैं
जिन में भाषा छपती है वे बहुत अच्छे छपते हैं। यदि उनमें से भी दो चार फर्म[ो] के टेप आ जाय

१. तिथि से अभिप्राय रजोदर्शन काल से गिनी गई रात्रि से है। जैसा पूर्व वाक्य में लिखा है। यु॰ मी

२. यह पत्र १०-१५ अगस्त के मध्य में लिखा गया। देखो पष्ठ ४५० टि० १ । यु० मी० ।

जोधपुर, सं० १९४० ]

पत्र (४८८)

843

वो अच्छा है। जो हमने तुम्हारे निजपत्र के उत्तर में पत्र भेजा है उसके सकारण हेतु लिख कर शीव्र भेजो।

मिति श्रावण सुदि १२ सं० १९४० ।

0

[दयानन्द सरस्वती<sup>४</sup>] जोधपुर राज मारवाड़

[६]

पत्र (४८८)

' [५६५]

श्रोम

वावृ विश्वेश्वरसिंह जी आनन्दित रहो ।

उस बात का स्मरण होगा कि जो तुम ने काशो में मुक्त से कहा था कि आप यंत्रालय कीजिये, दो एक वर्ष में पेंशन लेलुंगा,पश्चात् वैदिक यंत्रालय का ही काम करूंगा। क्योंकि यह आर्यावर्त देश भर का उपकार है। अब भी वही निश्चय है वा कोई दूसरा हो गया है। प्रयाग समाचार छपना बंद हो गया वा नहीं। क्योंकि दो सप्ताह की प्रतिज्ञा थी। कभी की हो चुकी है। बन्द कर ही दिया होगा। देप आने की अवधी हो चुकी वा नहीं। अब कह तक आवेगा।

श्रीर हमें श्राज मुन्शी समर्थदान जी को भी लिखा है कि जिन श्राहरों में भाषा छपती है वे कलकत्ते के टेप बहुत श्रन्छ हैं। यदि वे भी छुछ मंगवाये जांय तो ठीक है वा नहीं ? श्रीर वहां किसी वकील से पूछ निश्चय कर लिखना कि मुन्शी बख्तावरसिंह पर नालिश की जाय [तो] प्रयाग में हो सकती है वा नहीं। क्योंकि दो ही ठिकाने हो सकती है। एक जहां बात हुई हो वहां श्रीर दूसरे जहां मुद्द (इलेह) होवे। जब वह बात हुई थी तब यंत्रालय काशी में था, श्रव प्रयाग में है। सो किसी श्रन्छ वकील से पूछ के लिखो। श्रीर यह भी पूछ के लिखो कि नालिश फौजदारी में करना चाहिये वा दीवानी में। मेरी समक्त में श्रीर श्रन्य वकीलों की भी सम्मित है कि दीवानी में करना श्रन्छ। है। सब से मेरा श्राशीर्वाद कह देना।

इन सब बातों का प्रत्युत्तर लिखो। श्राव० सु० १२ सं० १९४०°।

( द्यानन्द सरस्वती ) जोधपुर राज मारवाड़

१. समर्थदान का निजपत्र १३-७-८३ को श्री स्वामी जी को मेजा गया । उस में अनार्य नौकरों का विषय है। २. यह पत्र प्राप्त नहीं हुआ । यु॰ मी॰।

३. १५ द्यगस्त १८८३। ४. इस पत्र का मुन्शी समर्थदान का २०८८ का लिखा उत्तर म॰ मुन्शीराम सम्पादित पत्रव्यवदार पृ० ४६३ पर छुपा है।

प्. मूल पत्र श्री नारायण स्वामी जी के संग्रह में सुरिव्तत है।

६. सम्मवतः यहां ६ के स्थान में 'छोटे' चाहिये। देखो पूर्व पृष्ठ ४५२ की अन्तिम दो पंक्तियां। यु० मी०।

७. १५ ग्रगस्त १८८३।

4

पत्र (४८९)

५६६

ठाकुर नन्दिकशोर जी श्रानन्दित रहो-

पत्र तुम्हारा श्रावण सुदी १० का लिखा श्राया, समाचार विदित हुश्रा। सुन्शी गंगाप्रसाद बुद्धिमान हढोत्साही निर्भय धार्मिक निःशंक था। ऐसे पुरुष का मृत्यु सुन कर जो कि उन को जानते थे, शोक किस को न होगा-

( एति जीवन्तमानन्दः ) यह महाभाष्यकार [ २।३।१२ ] का वचन है, कि जीते हुए पुरुष को आनन्द प्राप्त होता है। इस लिये अशोचनीच वात पर शोक करना किसी को उचित नहीं। जो एक अशक्य बात है उस के शोक में वर्तमान और भविष्यत् में हानि के सिवाय दूसरा कुछ भी फल नहीं होता। अस्तु जो हुआ सो हुआ। रहे को सम्भालो। और वड़े प्रयत प्रीति और हढ़ोत्साह से ष्पार्यावर्त देश के परम हितकारक सभा के उद्देशों को अपने तन मन धन से पूरे करने के लिये सर्वदा चयत रहो। सर्वशक्तिमान जगदीश्वर सब बातें श्रच्छी करेगा। ( सत्यमेव जयित नानृतस्।) सत्य ही सर्वदा विजयी होता है, मूठ कभी नहीं। इस लिये सर्वदा सत्य की उन्नति में सब जने उचत रहें। सब से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मिती श्रावण शुक्ता १४ शुक्रे संवत् १९४०<sup>२</sup>।

दियानन्द सरखती ] जोधपुर राज मारवाड़

पत्र-सूचना (४९०)

(६७)

श्रीमद्राजराजेश्वर महाराजाधिराज जोधपुरेश श्रानिद्त रही<sup>3</sup>]

पत्र (४९१) **बो३म्** <sup>४</sup>

५६८

भादवा बदी १-४०

मुन्शी समर्थदान जी आनन्दित रहो।

धातुपाठ का सुचि जैसा हम ने भेजा है वैसा ही छाप दो। उस से बड़ा लाभ है। श्रीर गोवध का उपाय हो रहा है। निश्चय है कि लार्ड रिपन साहिब के समय ही में यह काम किया जायगा। श्रीर इसके फार्म नये छापने की कुछ श्रावश्यकता नहीं, क्योंकि हमारे पास बहुत पड़े हैं। तुम को चाहियें तो मंगवा लो। श्रीर तुम प्राहकों का रजधर क्यों नहीं भेजते। क्या श्रव तक मिलान नहीं हुआ। शीघ्र भेज दो। मुन्शी इन्द्रमंगी जी [ने] जो बी दिया है वह टाइटल पेज पर छप गया है। उस में देख लो। यदि अधिक निकले तो ले लो। न दे तो उस के नाम पर धूल डालो। यह वर्तमान महीने की १५ तारीख के पत्र का उत्तर हुआ।

१. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिव्त है।

२. १७ ग्रगस्त १८८३।

३. इस के लिये पूर्ण संख्या ५६६ का पत्र ख्रीर पृष्ठ ४६३ की टि॰ ३ देखें । यु॰ मी० ।

४. मूल पत्र परोपकारियी सभा श्रजमेर में सुरिच्त है।

श्रीर अपर लिखा ज्वालादत्त हमारे पास पन्द्रह दिन पहले पत्र क्यों नहीं मेजता, जो कि पत्र हम बराबर भेज दें। श्रीर श्रव यह भाषा भी श्रव्छी नहीं बनाता, जैसी कि पहले बनाता था। जैसी कि प्रति दिन जनति करनी चाहिये, यह प्रति [दिन ] गिरता जाता है। अब के माषा में कई पद छोड़ दिये हैं। कहीं अपनी ग्रामणी भाषा छिख देता है। और (च) का अर्थ भी, और करना चाहिये। यह (भी) कर देता है?।

अब १४ अगष्ट के पत्र का उत्तर । श्रीमान महाराणा जी ने धन्यवाद पत्र के प्रत्युत्तर में लिखा सो वहुत अच्छी बात हुई । जो २ छपता जाय सो २ बराबर हमारे [पास ] भेजते जाओ। सत्यार्थप्रकाश में जो कोई ऐसा अनुचित राब्द हो निकाल कर जो हमारे आशय से विरुद्ध न हो वह शब्द उस के स्थान में धरना और हम को लिख कर धुचित करना कि यह २ शब्द धरे हैं। साहपुरे का जो वर्तमान हुआ था सो तुम्हारे पास लिख भेजा था। और मान्यपत्र की नकल भेज देंगे। और संस्कृत में जो पत्र आया है उस साधु को हम नहीं जानते कि वह कैसा है । और पहले तुन्हारे निज पत्र के विषय में लिखा था उस का उत्तर भेजो। और प्राहकों का रजष्टर भेजो तथा जो २ प्रतक छपे सो २ शीघ भेजो। और प्रयागसमाचार बन्द हो गया वा नहीं । और भूपालसिंह का भी जो छुछ आया है वह सब टाइटल पेज पर छपवा दिया गया है।

मिति भाद्रपद् वदी १ सं० १९४० ।

दयानन्द सरस्वती । जोधपुर राज मारवाड़

| [9]             | पोस्ट कार्ड (४९२)          | [५६९  |
|-----------------|----------------------------|---|
| [ बालकराम वा    | जपेई अजमेर ]               | THROUGH THE STATE OF THE STATE |
| क्या २          | पढ़े हो श्रौर लेख कैसा है। | S by the Ste Dated to   |
| भारपर कहता ५ सं | م ۱۹۷۵ و ۱                 |   |

- १. यहां 'पत्र' पाठ चाहिये । श्रभिपाय वेदमाध्य के भाषा बनाने वाले पत्रों से है । यु० मी० ।
- २. इन वातों का उत्तर ज्वालादत्त ने भाद्र कृष्ण ६ सं० १६४० के पत्र में दिया है। देखो म० मुन्शीराम सम्पा० पत्रव्यवहार पृष्ठ ४९६ से ४२२ । यु॰ मी० ।
- - ५. १६ ग्रगस्त १८८३।
  - ६. इस पत्र का थोड़ा भाग दयानन्द प्रन्थमाला भूमिका-पृ० १७ पर भी छपा।
  - ७. २३ ग्रगस्त १८८३, गुरुवार । इस पत्र का संकेत म० मुन्शीरामसम्पा॰ पत्रव्यवहार पृ० २२०

पर है।

[५१]

पत्र (४९३)

[900]

आ३म्

मुन्शी समर्थदान जी आनन्दित रही।।

इसके पूर्व तुम्हारे दोनों पत्रों का उत्तर भेज चुके हैं? । और जो गणपाठ के १० पुस्तक और उसके साथ भाषा भेजी सो पहुँचेगी। तुम थोड़ी सी भाषा देख लिया करो। यह ज्वालादत्त तो विक्षिप्त पुरुष है। इस का ध्यान सदा मासिक बढ़ाने पर रहता है, काम बढ़ाने पर नहीं। यदिप मैंने सब पुस्तक गण्पाठ का नहीं देखा, परन्तु भुमिका के पहले पृष्ठ में दृष्टी पड़ी तो दूर २ के स्थान में (दर २) अशुद्ध छुपा है। ऐसी भाषा को तुम भी देख सकते हो। और अब यह भाषा भी अच्छी नहीं बनाता, किन्तु घास सी काटता है। इस के नमूने के लिये एक पत्र भेजते हैं जिस की उसने भाषा बनाई है। श्रीर बड़ी भूल करी है कि जिस का पदार्थ है कुछ, और भाषा कुछ बनाई है। और भावार्थ संस्कृत के अनुसार और पूरी भाषा भी नहीं बनाई है। तुम प्रत्यच देख लो और उसके सामने दिखला दो। श्रीर छ: मनत्र की भाषा भी रोज नहीं बनाता । श्रीर उस पर भी यह हाल है। यदि यह प्रीति श्रीर परिश्रम से काम करता तो इस की उन्नती श्रीर हमारी प्रीति क्यों न होती। और अब भी जो अच्छा काम करेगा तो उसके लिये अच्छा होगा। यह तो एक नमूना भेजते हैं। थोड़े दिन के पश्चात् पुराणे बहुत से पत्र इसके भाषा बनाये भेजेंगे। उस में इस के दोष सैंकड़ों दीख पड़ेंगे। बाबू विशेश्वरसिंह ने भी इस के लिये लिखा था कि इस के तीन रुपये मासिक बढ़ा दिया जाय, परन्तु यह काम भी करे। ऐसे पुरुष हमारे सामने ही काम दे सकते हैं। और यह भी है कि ऐसे पुरुष हमारे पास रह नहीं सकते। यह पत्र बाबू विशेश्वरसिंह जी को भी दिखला देना। श्रीर इस विषय में तुम दोनों जने सम्मिति करके लिखी, वैसा किया जाय। इस से जो एक साधारण पुरुष जिस की दृष्टी सची हो वह भी इस से अच्छा छपवा सकता है। और एक तुम को यह लिखते हैं कि जैसा कागज गणपाठ में लगाया है वैसा ही सब साधारण पुस्तकों में लगाया करोगे तो आगे जाकर खर्च की तंगी पड़ जायगी। इस से जैसा प्रथम लगता था, उसी प्रकार का लगाना चाहिये। न श्रति उत्तम और न अति उत्कृष्ट [ निकृष्ट ? ]। और धातुपाठ तथा निघण्टु उत्पादिगग् की सुचि भी बराबर उस के साथ छूपे। श्रीर जो तुम पत्र लिखते हो उस में एक महीने में इतने फार्म फलाने २ पुस्तक के छपे, अवश्य लिखा करो। और आज कल वेदभाष्य भी नहीं छपता । सत्यार्थप्रकाश के पत्रे भी शीघ २ नहीं मंगाते हो, जितना कि हम अनुमान करते हैं। इस लिये हर महीनों के फर्मों का हिसाय लिखा करो। बाहर का काम कुछ भी मत लो। हमारे पास छपने को बहुत सी पुस्तकें हैं तुम छापते २ थक जात्रोगे, तो भी न चुकेगा।

ऋग्वेद का चौथा अष्टक भी पूरा हो गया। पांचवे अष्टक का एक अध्याय कल पूरा होगा और छटा मंडल आज पूरा हो गया। परमेश्वर की कृपा से १वर्ष में सब

१. मूल पत्र परोपकारिगी सभा में सुरिच्त है।

२. १४ श्रीर १५ श्रगस्त के पत्रों का उत्तर पूर्ण संख्या ५६७ के पत्र में दिया है। यु॰ मी॰।

जोधपुर, सं० १९४०]

पत्र (४९४)

840

ऋग्वेदभाष्य पूरा हो जायगा । और एक वा डेढ़ वर्ष साम, और अथर्व में छगेगा । और अब के संस्कारविधि बहुत अच्छी बनाई गई है। और अमावस्या तक वन चुकेगी ।

श्रीर हम ने कब कहा था कि निघएटु व्याकरण के पुस्तकों में गिना जाय। वह वेदाङ्गप्रकाश में गिना जायगा। क्योंकि निघएटु मूल श्रीर निरुक्त व्याख्यान [वेदाङ्ग] है। इसलिये वेदाङ्गप्रकाश में श्रवश्य गिणना होगा। श्रीर पठन पाठन की व्यवस्था में जो इस का संख्यांक हो वही टाइटल पेज श्रीर भूमिका के एक पृष्ठ में घरना।

मिती भाद्र बदी ५ सं० ४० ।

[ दयानन्द सरस्वती ] जोधपुर राज मारवाड़।

[60]

पत्र सूचना (४९४)

[402]

श्रो३म

मुन्शी समर्थदान जी आनन्दित रहो ।

पत्र तुम्हारा २९ त्राम्त का लिखा आया, समाचार विदित हुआ। और जो तुमने रिजष्टर और दोनों की भाषा और समा का कृत्य भेजा सो पहुंचा। इस भाषा को देखकर जैसा होगा वैसा लिखा जायगा। बाबू विशेधरिसह सुख से यन्त्रालय में रहें, उनका घर है। आज यहां से २४८ से छेके २७८५ तक सत्यार्थप्रकाश और १८१० से लेके १८९५ तक ऋग्वेद के पत्रे भाषा बनाने के

१. यह पत्र माद्र बदी ५ सं० १६४० (२१ अगस्त १८८३) को लिखा गया था। इस के २ मास ६ दिन पश्चात् (कार्तिक बदी ३० सं० १६४०=३० अक्तूबर १८८३) श्री स्वामी जी महाराज ने मौतिक शरीर छोड़ा। मृत्यु से पूर्व वे ऋग्वेद अष्टक ५ अ० ५ वर्ग ४ मंत्र २ (मं० ७ स्० ६२ मं० २) तक माज्य कर पाये थे। देखो हमारा "ऋग्० द० के प्रत्थों का इतिहास" परिशिष्ट १ पृ० ४-६ पर रामानन्द ब्रह्मचारी का पत्र। यह पत्र इस प्रन्थ के अन्त में भी परिशिष्ट में दे रहें। यु० मी०

२. संस्कारविधि का संशोधन आषाढ़ वदी १३ रिववार संवत् १६४० को प्रारम्भ हुआ और लगभग दो मास में समाप्त हुआ। [इस विषय में ऋ ०द० के प्रन्थों का इतिहास पृष्ठ ८४-८६ तक देखें। यु०मी०]

३. २३ श्रगस्त १८८३ | दयानन्द प्रन्थमाला शताब्दी संस्करण भूमिका पृ० १७, १८ पर इस पत्र का किंचित् ग्रंश मुद्रित हुत्रा है । वहां भाद्र बदी ६ छपा है । यह श्रशुद्ध है । सु० समर्थदान के उत्तर में इस पत्र की तिथि भाद्र बदी ५ ही लिखी है । इस का उत्तर मुन्शी समर्थदान जी ने ता० २७-८-८३ पत्र नं० ६४६ द्वारा दिया । सत्यार्थप्रकाश के ३२० पृ० तक छपने की सूचना इसी पत्र में है । देखो म० मुन्शीरामसम्पा० पत्रव्यवहार प० ४६६-७२ । ४. मूल पत्र परोपकारिणी सभा श्रजमेर में सुरिह्तत है ।

५. अग्राते आश्विन वदी १ सं॰ १६४० (=१७ सितम्बर १८८३) के पत्र में पृष्ठ २७२ से ३१६ तक

मेजना लिखा है। यु॰ मी॰।

लिये भेजे हैं। पहुँचने पर ज्वालादत्त को दे देना छौर रसीद भेज देना। प्रथम सत्यार्थप्रकाश के पत्रे रें । पत्र विकार प्रकार पास भेजे थे छौर तीन पृष्ट रामसनेही के विषय के पश्चात घरे हैं। सो ४८-४९-५० छंक घटे हैं। तुमको भ्रम न हो। परन्तु इतना अवश्य करना कि जो वहां २५० प्रष्ट हैं उसके छंत छौर २४८ पृष्ट के छादि की संगित तुम मिला देना। छौर २५१ के पृष्ट के छादि छौर जो छव २५० वा भेजा है उस की सभी संगित मिला लेना। छौर ग्यारह समुझस की समाप्ति तक सब पत्रे भेज दिये हैं। और इसके अन्त में महाराजे युधिष्ठिर से छेके यशपाल तक आर्य राजाओं की वंशावली पीछे से लिखी है। छौर उसके पृष्ठों के छंक ठीक २ हैं। वैसे ही छाप देना।

श्रीर प्रथम तुम जो काम श्रकेले करते थे उसके लिए श्रव तीन हो, सो उगाही श्रीर तकाजे में श्रालस्य नहीं करना, परन्तु स्मरणार्थ लिखा है। श्रीर जो ठाकुर भूपालसिंह ६ श्रंक विना मूल्य ले गये हैं श्रीर तुम्हारे नोटिस के पहुँचने पर तुमको इतना भी नहीं की १ फिर उनका मूल्य न देना वा तुम न लो तो नियम दूटता है। श्रीर उन्होंने जो २ रुपये जब २ दिये हैं, टाटल पेज पर बराबर छप गये हैं। उस से श्रिक न दिये न छपे हैं। श्रीर श्रगष्ट महीने में कितने फार्म छपे सो लिख भेजो। यहां वर्षा हो रही है श्रीर दो तीन दिन से यहां वर्षा श्रच्छी होती है। श्रनुमान है कि यह प्रयाग श्रादि में भी हुई होगी। सब से हमारा श्राशीर्वाद कह देना।

भाद्र वदी ३० सम्वत् १९४०३।

[दयानन्द सर्द्वती] जोधपुर (सारवाड़)

मैनेजर भारतिमत्र श्रीकृष्ण खत्री ने एक आर्थ पंचांग नामक ग्रन्थ बनाना चाहा है। उस में आर्थधर्म के प्रयोजन, जिस २ स्थान पर समाज है, जिस दिन आरंभ हुआ, और जिस दिन वार्षिक उत्सव होता है, और मंत्री का नाम उसमें लिखाना चाहते हैं। सो हमने तुम्हारा नाम लिख दिया है। यदि वह तुम्हारे पास पत्र भेजे तो जहां तक तुम जानते हो पूर्वोक्त विषयों में सहाय देना । और जो उन्होंने समाजस्थ पुरुषों की संख्या और हमारा इतिहास भी निखना चाहा है, सो तो अब इस समय उनको नहीं मिल सकता। और समाजस्थ पुरुषों की संख्या बतलाने में कुछ लाभ नहीं। इसिलये पूर्वोक्त विषयों में जो सहाय मांगे तो दे देना, क्योंकि वह प्रसिद्ध समाचार का सम्पादक है और उसकी श्रीति भी अधिक दीखती है, चाहें स्वार्थ वा परमार्थ से ।

१. यहां तक का भाग Works of Maharshi Dayanand प् १२६ पर छपा है।

२. यहां कुछ पाठ खिएडत प्रतीत होता है । यु॰ मी॰ ।

३. १ सितम्बर १८८३।

४. इस पत्र का इस्ताच् के पश्चात् का भाग हमारे सम्पादित प्रथम भाग में संख्या ४६ पर छपा था। त्रत्र परोपकारिणी सभा से सारा पत्र प्राप्त हुत्रा है।

जोघपुर, सं० १९४०]

पत्र (४९६)

846

[3]

पत्र (४९५) श्रो३म् [५७२]

श्रीयुत बिहारीलाल जी त्रानन्दित रही?।

विदित हो कि भाद्र कृष्ण १२ द्वादशी बुधवार के दिन का लिखा तुमारा पत आया, समाचार विदित हुआ।

इस विषय के नियम

१—वहां पं० गौरीशंकर जी का १ प्रथम माहवारी मासिक क्या था—श्रौर जब राज में नौकरी थी तब क्या मासिक था। जब श्रंगरेज में नौकरी थी तब क्या मासिक नियत था।

२— और अब कितना मासिक उन को देना चाहिये और कितने मासिक में उन का निर्वाह हो सकेगा।

३—श्रीर जितना मासिक उन को देना होगा, जिस में तुम कितना दोगे और कितने महीने

वे अन्यत्र घूमेंगे और कितने महीने वहां रखना चाहते हो।

४—श्रीर जब वे बाहर घूमेंगे, वह रेल का भाड़ा श्रीर खाने पीने का खरच समाज से मिलेगा। श्रीर जैपुर में रहेंगे तो श्रपना मासिक में से खावेंगे। जब बाहर घूमेंगे तब समाज से रेल का भाड़ा खाने पीने का खरच मिलेगा।

प्र—इस में हमारा विचार यह है कि ⊏ आठ महीने बाहर घूमें और ४ चार महीने जैपुर में रहा करें। इस में तुमारी क्या सम्मित हैं। इन सब का प्रत्युत्तर शीघ मेजो। जब भेजोगे उस के पश्चात् हम उसका प्रवन्ध ठीक २ करेंगे। और हम अपनी सम्मित भी लिखेंगे। पश्चात् और इस प्रवन्ध के समय के प्रथम पं० गौरीशंकर जी को २०१९ दिन हम अपने पास बुलावेंगे, जब कि जोधपुर से अजमेर को आवेंगे। इस लिये इस पत्न का उत्तर पं० गौरीशंकर से और सभासतों से सम्मित लेकर शीघ भेजों। और सब से मेरा आशीर्वाद कह देना।

यहां का समाचार पश्चात् लिखेंगे। श्रीर यहां वर्षा बहुत श्रच्छी हो गई श्रीर हो रही है। संवत् १९४[०] मि० भा॰ शु० १<sup>९</sup>। [दयानन्द सरस्वती]

जोधपुर राज मारवाड़

[9]

पत्र (४२६)

[५७३]

ब्रो३म्

बाबू विश्वेश्वरसिंह जी आनिन्दित रही — बख्तावरसिंह के समय के रजिस्टर सब प्रयाग में हैं। श्रीर चिट्ठी पत्र तथा हिसाब किताब

१. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्त है।

२, इस पत्र का उत्तर श्यामसुन्दरलाल जी मंत्री वैदिकधर्म सवाई जयपुर ने दिया—देखो म॰ संशी-राम सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० १०२—१०६।

३. २ सितम्बर १८८३ ।

४. मूल पत्र श्री नारायण स्वामी जी के संग्रह में सुरिव्हत है।

कुछ मेरठ में भी है। यदि अब तक न आया हो तो मंत्री आर्थ समाज मेरठ वावू आनन्दीलाल से मंगा कर वकीलों को दिखला देखो। और प्रवन्ध शीघ्र करो। कलकत्ते के टेप कितने मंगाना चाहते हो। और उसके कितने रुपये मन लगेंगे। जब कि प्रथम आये थे तब ४०) रूपये मन के दाम लगे थे। विषय का सब हाल लिखो। यदि मुंबई के टेपों से कार्य निकत सके तो फिर मंगाना कुछ आवश्यक नहीं।

श्रीर यह जो सभा का प्रबन्ध हुआ हैं सो बहुत अच्छा है। एक को अधिकार देने में खराबी होती है। और एक को अधिकार न देना। इस सभा में तुम लोग तथा सुन्दरलाल जी और हमारी भी पूर्ण सम्मित है। इस लिए जो प्रबन्ध इसका तुम विचारते हो वही हमने विचारा है। क्योंकि स्वतन्त्र अधिकार देने में हानि ही हानि होती है। श्रीर लाभ कुछ भी नहीं होता। श्रीर तुमने लिखा कि धन के कार्य में किसी को स्वतन्त्रता न देनी चाहिये, वह सच है। क्योंकि धन के काम में स्वतन्त्रता से लाखों आदिमयों में से कोई ही रह सकता है। श्रीर यहां धन का ही केवल काम नहीं, किन्तु पुस्तकों का ही बड़ा भारी माल है। जैसे हरिश्चन्द्र ने और बख्तावरसिंह ने चोरी से वेदआब्य के शाहक कर लिये थे। श्रीर छापेखाने में भी हम को प्रसिद्धि करता था १००० हजार और छपवाता था २००० तथा १५०० ढेढ़ हजार। श्रीर बाहर का चोरी से छपवा लेना। उस का हिसाब कुछ न देना। यदि दिया तो हिसाब में लिया १०० सी श्रीर लिखा २० वीस। इत्यादि बहुत प्रकार के छापेखाने में काम रहते हैं। दो मनुष्यों को जो तुम सभा में बढ़ाना चाहो, हमारी श्रीर से बढ़ा हो। श्रीर एंडित जी की भी सम्मित लेलो। श्रीर तुम प्रसन्नता से यन्त्रालय में रहो, तुमारा घर है। श्रीर मुनशी समर्थदान ने भी हम को लिख भेजा है, वह भी तुमारे रहने से राजी है।

जो पिछला रुपया बाकी है उसका तगादा करना विचारा है, सो अच्छी बात है। परन्तु मैं शोक करता हूँ कि जिस काम में मुंशी समर्थदान अकेले रहते थे, तब वसूल और तगादा भी होता था। और जब से पं० शिवदयाल और रामचन्द्र रक्खे हैं, तो भी तगादा और वसूल अच्छा नहीं होता। यह अपने देश का अभाग्य है, क्योंकि जितने अधिक होंगे, उतना विरोध करेंगे। और काम ठीक २ नहीं करते। इस लिये इन तीनों को सममा दो कि अपना २ काम प्रीति और उत्साह से करें। विशेष कर पं० शिवदयाल और रामचन्द्र को सममाना। समर्थदान तो सममा ही हुआ है। इस कमेटी के विषय में कोई निन्दा लिखे, हम कभी नहीं सुनेंगे। हां, जो कुछ हमको लिखितव्य होगा, सो पं० सुन्दर-लाल जी को लिखा करेंगे। ऐसा विचार मत रक्खों कि इस प्रेस से मैं कुछ न लूं। क्या घर के माल में से घर के आदमी यथोचित नहीं लेते। जो काम धार्मिक उत्तम मनुष्य से बनता है, वह धन से कभी नहीं होता। जो तुम से यन्त्रालय की उन्नति होगी, वह निश्चय है कि लाखों रुपये खर्च करने से भी न होगी। क्योंकि सब पदार्थ संसार में सुलम हैं, परन्तु शुद्ध मनुष्य का मिलना दुर्लभ है। क्या तुम इस द्रव्य को बुरा और अधर्म का सममते हो, जो नहीं लेखो। यह सब उत्तर लिखो। बड़ों २ और छोटों २ का कुछ नियम नहीं है। यह तो अपने आत्मा के साथ है। क्योंकि बड़े २ तो बिगड़ कर तेल के बड़े हो जायं और छोटे २ सुधर कर बड़े हो जाते हैं।

श्रव बाकी का तगादा कर जहां तक हो सके धन इकट्ठा करो। श्रीर पश्चात् २०००) का सामग्री मंगवाश्रो। यदि उस में कुछ न्यूनता होगी, तो हम दे देंगे। यदि यह सब प्रवन्ध हो जाय तो पेन्शन ले कर यहीं तुम रहना। श्रीर जो मासिक पाते हो वही यहां मिले। श्रीर १०) रूपये वे भी

जोधपुर, सं० १९४० ]

पत्र (४९७)

858-

तिये जायं तो उस में से प्रति मास बचाते २ वहुत सा धन हो जायगा। और यह निश्चय है कि जहां २ जिस २ की उन्नति हुई है वह सब सभा ही से हुई है। इस तिए इस की भी उन्नति सभा ही से होगी— इस से यह बहुत अच्छा प्रबन्ध है। और सबसे हमारा आशीर्वाद कह देना। यहां वर्षा बहुत हुई और हो रही है। निश्चय है कि वहां भी हुई होगी।

मिति भाद्र सुदी २ संवत् १९४० ।

दयानन्द सरस्वती जोधपुर राज मारवाङ्

[4]

पत्र (४९७)

[408]

चौधरी जालिमसिंह जी आनन्दित रही?।

भीमसेन के दो पत्र आजकल हमारे पास यहां आये हैं। विदित होता है कि धक्का खाने पर इस को कुछ बुद्धि आई है। अब आप लिखिये कि जब से यह वहां आया, तब से उसका वर्त्तमान पोपलीला का हुआ वा अच्छा। इस लिखने का प्रयोजन यह है कि फिर भी वह हमारे पास नौकरी करना चाहता है। और हम को उस के पूर्व चिर्त्रों से पूरा विधास नहीं होता कि यह जैसा लिखता है कि अब मैं सब बात समम गया। आप से विरोध कभी नहीं करूंगा। आप की सब बातों में मेरा हद विधास हो गया, अब मैं आप की आज्ञानुसार सदा चलूंगा इत्यादि। परन्तु वह छोकरबुद्धि है। यदि उस को रखलें पुनः अनुचित काम करे, निकालना हो तो अच्छी बात नहीं। अब आप लिखिये इस में आप की क्या सम्मित है। क्योंकि मैंने उस के बहुत से उलटे चरित्र देखे हैं। और इस में अच्छे भी गुण हैं परन्तु बुरे गुण ऐसे प्रवल हैं कि अच्छे गुणों को मात कर देते हैं। यदि परमेश्वर की छपा से उस का स्वभाव सुधर गया हो तो बहुत अच्छी बात है। परन्तु जब तक इस पत्र का उत्तर आप भेजेंगे तिस पश्चात् मेरी जैसी सम्मित होगी, वैसी आप को और भीमसेन को लिख दूँगा। देखिये कि बदरी आप को और गुम को कैसा सहसा मिलना असम्भव नहीं तो दुर्ल म अवश्य है। बढ़े भाग्य और परमेश्वर की छपा से उत्तम पुरुष को उत्तम पुरुष की उत्तम पुरुष की छपा से उत्तम पुरुष को उत्तम पुरुष मिलता है। सब से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। गुम को निश्चय है कि आप पच्चात रहित यथार्थ लिखेंगे।

मिति भाद्र शुरी ४ संवत् १९४० ।

दयानन्दं सरस्वती<sup>५</sup> जोधपुर राज मारवाङ्

१. ३ सितम्बर १८८३।

२. मूल पत्र श्री विष्णुलाल एम० ए० के पास बरेली में था। वहीं से इम ने इस की प्रतिलिपि ली।

३. बदरी के विषय में पूर्ण लंख्या ४६१ पृष्ठ ३६८ देखें। यु॰ मी॰।

४. ५ सितम्बर १८८३ ।

प्. इस पत्र का उत्तर देखो म॰ मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार प॰ ६४, ६५ पर।

[१५]

पत्रांश (४९८)

५७५

किमलनयन मन्त्री आर्थसमाज अजमेर<sup>9</sup>ी -ईसाई स्त्री के विषय में लिख रहे हैं<sup>2</sup>। सितम्बर १८८३। जोधपुर

द्यानन्द् सरस्वती

[28]

पत्रांश (४९९)

[५७६]

पं मुझालाल जी, अजमेर • अवाप ने मन्त्री का पद क्यों त्याग किया। क्या फिर इसे प्रहण नहीं कर सकते।... ७ सितम्बर १८८३ से पूर्व<sup>3</sup>।

द्यानन्द सरस्वती

[3,5]

पत्र (५००) श्रो३म्४

[600]

श्रीमन्माननीयवर् श्रीयत महाराज राजाधिराज शाहपुरेश आनन्दित रही।

रजिस्ट्री पत्र आप का गत दिन आया, समाचार विदित हुआ। सरदार जवाहरसिंह जी के विषय में आपकी जैसी इल्ला हो वैसा कीजिये। मैंने भी उनको कई बार मासिक के गड़ बड़ न करने के विषय में लिखा था कि ऐसा न करना चाहिये, परन्तु श्रीसा ही हुआ। इस में [१] पक बात विचाणीय है कि सरदार जवाहरसिंह जी मेरे सम्बन्ध से बुलाये आए हैं। यह प्रथम कार्य हुआ है। यह [आगे] श्राप लोगों श्रीर जिसको [मैं] बुलाना चाहूंगा उन दोनों को श्रविश्वास का कारण होगा। श्रस्तु जैसा हुआ वैसा ही हो। और चात्रशाला का उद्योग निष्फल हुआ, यह शोक की वात है। यहां [७] सात द्नि से वर्षा होती है सब मारवाड़ में। फिर भी होने का संभव हैं। श्रौर श्रकाल का नाम उड़ गया। यहां सब प्रकार से प्रसन्नता है। यहां का समाचार पश्चात् लिखेंगे।

छीतरदत्त जी त्यादि त्यौर स० जवाहरसिंह जी को भी मेरा त्याशीर्वाद कहियेगा । वहां

वर्षी हुई वा नहीं। सो समाचार लिखियेगा।

[दयानन्द सरस्वती]

सं० १९४० मि० भादवा शु० ५ गुरु दिन<sup>5</sup>।

१. देशहि० के रजिस्टर से।

२. यह स्त्री सीताबाई थी। पहले ईसाई थी, फिर अजमेर समाज ने शुद्ध की। इस के विषय के पत्र म॰ मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार में पू॰ १८६-१८६, तथा १६३-१६५ तक है।

३. यह पंक्ति पं अनुजालाल जो के लम्बे पत्र से हम ने बनाई हैं। देखों म अमुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार प्॰ १८०-१८८। ४. मूल पत्र राजकार्यालय शाहपुरा में सुरिच्त है।

४. शाहपुरा से इमारे पास आई मूल पत्र की प्रतिलिपि में यह अंक नहीं है।

६. यह तिथ्रि पं॰ चमूपति सम्पादित पत्रन्यवहार पु॰ ३६ में नहीं है। वह उस प्रतिलिपिमात्र से छापा गया है, जो ठाकुर किशोरसिंह जी के संप्रह में थी। ६ सितम्बर १८८३।

जोधपुर, सं० १९४०]

पत्र (५०२)

843

[23]

पत्रांश (५०१)

[406]

[श्रीयुत महाराजाधिराज शाहपुरेश .....]

सब बातें संसार में मिल जाती हैं, परन्तु ऐसे मनुष्य का मिलना असम्भव नहीं तो अति कठिन तो अवश्य है।

मिति भाद्रपद सुदी ६ ष्ट्रहरपतिवार संवत् १९४०२।

[3]

पत्र (५०२) श्रोम

[५७१]

## ॥ प्रसिद्ध समाचार ॥

श्रीमद्राजराजेश्वर महाराजाधिराज श्री जोधपुरेश श्रानन्दित रही।

श्रव मैं यहां बीस पचीस दिन रहना चाहता हूं, यदि कोई नैमित्तिक प्रतिबन्ध न होगा। मैंने यह सममा है कि यहां श्राकर श्रापका धन व्यय व्यर्थ कराया, क्योंकि मुम से श्राप का उपकार कुछ भी नहीं हुआ। श्रीर श्राप की श्रोर से मेरी सेवा यंथोचित होती रही। जब श्रीमान् गुण-ज्ञाता हैं इसी लिये जब र मुम को श्रवकाश मिलता है तब र पत्र द्वारा कुछ निवेदन कर देता हूं। उस मेरे निवेदन को देख सुन कर श्राप प्रसन्न होते हैं, इसी लिये तीसरी बार छेख करने के छिये मुझ को समय मिछा ।

१—जैसा राजकार्य आजकल आप कर रहे हैं वैसा ही यावत् शरीर रहे तावत् करते रहियेगा। इस को जहां तक हो सके वहां तक अधिक २ करते जावें, कभी न छोड़े। क्योंकि न्याय से राज्य का पालन करना ही आप लोगों का परम धर्म है।

२—श्राप श्रापने पुत्र जो कि महाराजकुमार हैं, उन को खाने पीने श्रादि से संकोचित मत रिखयेगा। सदा पाव भर गाय के दूध में मासा भर सोंठ को मिला छान थोड़ा सा गरम कर ठंढा करके ब्राह्मी श्रोषधी के साथ पिलवाते रिहये, जिस से महाराजकुमार के बुद्धि बल पराक्रम श्रायु श्रोर विद्या बढ़ती रहे।

३—जो एक रत्न आप के बन्धु महाराजे प्रतापसिंह जी हैं, उन को कभी राज्कार्य से पृथक् मत कीजियेगा। क्योंकि ऐसा पुरुष आप और राज का हितैषी दूसरा कोई नहीं दीखता।

- १. यह पत्र राजाधिराज श्री शाहपुराधीश को लिखा गया होगा। माई जवाहरसिंह उन दिनों श्री शाहपुराधीश के प्राईवेट सैक्रेटरी थे। प्रतीत होता है, नौकरी छोड़ते समय वह इस पत्र की नकल अपने साथ ले श्राए। ऊपर मुद्रित श्रंश माई जवाहरसिंह ने "रहे बुतलान" के पृ० ६८, ६९ पर छापा है।
- २. ६ सितम्बर १८८३ । शाहपुराधीश ही के नाम का इसी तिथि का पत्र पूर्ण सं ० ४७७ पर छपा है। उसमें यह ब्रांश नहीं है। कदाचित् यह दूसरा पत्र होगा। श्रथवा क्या भाई जवाहरसिंह ने इसे स्वयं बना लिया १ यु०मी ० ३. पहला पत्र पूर्ण संख्या ४५८ पर छपा है। यह तीसरा पत्र है। दूसरा पत्र प्राप्त नहीं हो सका।

8—इस देश में वर्षा प्रायः न्यून होती है। इस के लिये यदि मेरे कहे अनुसार एक २ वर्ष में १००००) दश हजार रुपयों का घृतादि का नित्यप्रति और वर्षा काल में चार महीने तक अधिक होम करावेंगे वैसे प्रति वर्ष होता रहै तो सम्भव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करे।

प्—आप में श्रीदार्थादि प्रशंसनीय बहुत गुण हैं। इन को यदि राजनीति में प्रवर्त रक्खें तो

देश का सौभाग्य और श्रीमन्महाशयों की पृथिवी भर में उत्तम कीर्ति फैल जावे।

## ॥ गुप्त समाचार ॥

१—जो २ श्रीमानों के प्रशंसनीय गुण कमें स्वमात्र हैं उन के कलंक नीचे लिखे हुए काम हैं।

२—एक वेक्या से जो कि नन्नी कहाती हैं। उस से प्रेम । उसका अधिक संग और अनेक पत्नियों से न्यून पेम रखना आप जैसे महाराजों को सर्वथा अयोग्य हैं।

३—जैसे हड़के कुत्ते के दांत वा लाल लगने से उस का दोष छूटना अति कठिन है। वैसे ही वेश्या मद्यपान चौपड़ कनकौवे आदि में व्यर्थ काल खोना और खुशामदी लोगों का संग राजाओं के लिये महा विष्नकारक, धन आयु कीर्ति और राज्य के नाश करने वाले होते हैं। सुफ को बड़ा आधर्य है कि आप बड़े बुद्धिमान और शौर्यादि गुए। युक्त होकर इन से पृथक क्यों नहीं होते।

8—जैसे आप नश्री रंडी के घर को जाते, उस की माता आदि रोगिणी को देखते हैं और जैसे एक किसी अपने नौकर मुसलमान के लड़के के निवाह में घोड़ की लगाम पकड़ के पैदल मले थे, वैसा निन्दाकारक काम करना आपको शोभा कभी नहीं देता। किन्तु इन के बदले जैसे महता विजयसिंह जी विमार थे, जाकर देखते और जो अपने मारवाड़ के सरदार और वेटे हैं जो कि राजा और राज्य की उन्नती चाहने वाले हों उन के पुत्रों के विवाह में पैदल चलना आदि करते रहें तो सर्वदा प्रशंसा लाम और उन्नती होती रहे।

५—जब २ मैं किसी के मुख से अथवा समाचार पत्रों में आप लोगों की निन्दा सुनता या देखता हूं तब २ मुम्म को बड़ा शोक होता है। यदि आप लोग ऐसे निन्दा के काम न करें तो क्यों निन्दा होने। हम छोगों को अंगरेज आदि के सामने शरिमन्दा क्यों होना पड़े। वड़े महाराज जो कि श्रीमानों के पिता जी थे, यदि वे बहुविवाह पासवान और वेश्या आदि को न रखते तो आप लोग भी कभी ऐसा काम न करते। ऐसे ही जैसे आप लोगों का व्यवहार महाराजकुमार आदि देखेंगे इनहीं में कुकेंगे। क्योंकि मनुष्य को दूसरे का गुण लेना कठन और दोष लेना सहज है।

इ—आप महाराजकुमार की शिक्षा के लिये किसी मुसलमान वा ईसाई को मत रिखियेगा। नहीं तो महाराजकुमार भी इन के दोष सीख लेंगे। श्रीर श्राप के सनातन राजनीति को न सीखेंगे। न नेदोक्त धर्म की श्रोर उनकी निष्ठा होगी। क्योंकि बाल्यावस्था में जैसा उपदेश होता है बही दृढ़ हो जाता है। उस का खूटना दुई है।

प्यम देवनगरी भाषा और पुनः संस्कृत विद्या जो कि सनातन आर्ष ग्रन्थ हैं

जिनके पढ़ने में परिश्रम त्यार समय कम होवे और महालाभ प्राप्त हो, इन दोनों को पढ़े। पश्चात् यदि समय हो तो श्रंग्रेरेजी भी, जो कि प्रामर और फिलासफी के प्रन्थ हैं पढ़ाने चाहियें।

८—जैसे आपने गणेशपुरी आदि जो कि केवल बुरी चाल चलन सिखलाने हारे हैं जनका दुराचार देखके जन का सदा त्याग रक्खा है, वैसे वेश्या आदि मीठे ठगों से भी पृथक आप क्यों नहीं रहते। जैसे मुसलमान और ईसाई आदि के टोपी पैजामा मुंडे जूते कोट पतल्व टोपी आदि के धारण से आप अपने जत्म विचार से पृथक रहे हैं, वैसे ही हजारह गुणों में वेश्यासंग आदि में आप अपने अमूल्य समय को मत खोवें। आप का शरीर ऐसे जुद्र काम और विषयासिक और आरांम के लिये नहीं है, किन्तु बड़े परिश्रम न्याय पुरुषार्थ से लाखह मनुष्यों के हितार्थ आप लोंगों का शरीर है। देखिये आप मनुस्मृति के सप्तम अष्टम और नवम अध्यायों में कि राजाओं के लिये क्या २ कर्तव्य और अकर्तव्य लिखा है। मुक्त को निश्चय है कि आप इन करड़ी और कल्याणकारक बातों को सुन कर प्रसन्न होंगे। अलमितविश्तरेण महामान्यवर्येषु ।

[६]

पत्र (५०३)

[460]

श्रोम्

श्रीयुत वहारट कृष्ण जी श्रानन्दित रही<sup>3</sup>।

जयकर्ण जोधपुर में आये। उन से वहां का सब वर्तमान सुन के अत्यानन्द हुआ। परन्तु थोड़ी सी बातें लिखता हूं। अब निम्नलिखित बातें श्रीमान महाशयों के दृष्टिगोचर करा देना। अन्य किसी को नहीं।

१-प्रातः काल का भ्रमण करना सदैव हुआ करे। उसमें विच्छेद कभी न किया जाय।

२—भोजन का जो समय दिनचर्या में १० दश बजे से लेके ११ ग्यारह बजे के पूर्व २ करना लिखा है, वैसा ही सदा रखना चाहिये।

३—सभा में बैठ कर जैसे दिनचर्या में लिखा है वैसे वराबर न्याय करना चाहिये। उस में आलस्य कुछ भी न हो।

१. गणेशपुरी शाक्त मतानुयायी तथा नन्ही रंडी का गुरु था, श्रीर विष सम्बन्धी पड्यन्त्र में भी सम्मिलित था।

२. ब्रानुमान से ८ सितम्बर १८८३ को यह पत्र भेजा गया होगा । मूल पत्र की प्रतिलिपि ठाकुर किशोरसिंह जी के संग्रह में थी। उसे ऋषि ने स्वहस्त से शोधा हुन्ना है । उसी से म॰ मामराज जी ने ३० दिसम्बर १६३२ को गुरुकुल काङ्गड़ी में जाकर प्रतिलिपि की। पं॰ चमूपित जी सम्पादित पत्रव्यवहार के पू॰ हर-१७ तक भी छपा है।

३. मूल पत्र ठाकुर किशोसिंह जी के संग्रह में था। इस की लिपि को ऋषि ने स्वहस्त से शोधा है। उस को प्रतिलिपि म॰ मामराज जी ने ५ जनवरी १६३३ को की। पं॰ चमूपति सम्पादित पत्रव्यवहार पू॰ १२२-१२३ तथा १७३ पर भी छपा है।

४. दिनचर्या पूर्ण संख्या ४५६ पृष्ठ ३६६-३७४ पर छपी है। यु॰ मी॰।

8—जो उस रोग को निःशेष होने में श्रीमानों को फुछ भी सन्देह रहा हो तो जो इन्दोर के डाकतर साहब का विचार किया है वह उत्तम है। वह डाकतर श्रनुमान से विदित होता है कि अच्छा है। परन्तु श्रोवधी करते समय जो उन के नीचे डाकतर गण्पतराव जी श्रोर डाकतर अवानीसिंह जी भी दोनों साथ रहें।

4—मुम को निश्चय है कि यदि सर्वाधीश वाल्टर साहब से इस बात की संमित के लिये पूछेंगे तो वे संमित खबश्य दे देंगे। पूछने की रीति यह है—( अब खोषध हो गया छौर रोग भी निवृत्त हो गया, परन्तु इस की परीचा के लिये अर्थात् अब यह रोग निशेष हो गया वा नहीं, इन्दोर के डाकतर को बुलाकर परीचा कराना मैं चाहता हूं। इस में खाप की क्या खनुमित है)। पूछते ही वे संमित दे देंगे। जब उन की संमित हो जाय तब उसी समय उस डाकतर साहिब गण्यतराव और किवराज जी को उदयपुर में शीघ बुला लेना चाहिये।

६—यदि अब तक किंचित् उस रोग के निःशेष होने में शंका है तो उस का पथ्य थोड़ा समय पूर्ण रीति से रखना चाहिये, विशेष कर ब्रह्मचर्य। और आगे के लिये भी सदा ऋतुगामी रहें कि जिस से न कोई रोग आवै। और निरन्तर धर्मार्थ काम मोच्च राजकार्य की उन्नति होकर आर्यावर्त देश की उन्न[ति] होकर सदा आनन्द बढ़ता रहे। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की छुपा से ऐसा ही होवे।

भाद्रपद् शुक्ता प संवत् १९४० ।

[20]

# पत्रांश (५०४)

[469]

[कमलनयन मन्त्री श्रायंसमाज श्रजमेर<sup>२</sup>] ……एक कहार ५५०) का श्रसवाव लेकर भाग गया<sup>3</sup>। १३ सितम्बर ८३<sup>४</sup>। जोधपुर

द्यानन्द सरस्वती

[2,6]

# पत्राभिषाय (५०५)

[462]

[ कमलनयन मन्त्री आ० स० अजमेर ] सीता स्त्री के विषय में लिखते हैं । १५ सितम्बर १८८३ । जोधपुर

दयानन्द सरस्वती

१. १० सितम्बर १८८३ । जोधपुर से उदयपुर मेजा गया ।

२. देशहितैषी के रजिस्टर से।

रे. यह श्रमिप्राय मात्र है । इस पत्र का कमलनयन जी का २५-६-८३ का उत्तर म० मुन्शीराम सम्पा० पत्रव्यवहार पृष्ठ १६१-१६३ तक छुपा है ।

४. भाद्र शुक्क ११ सं० १६४० । यु॰ मी० । ५. देशहि० के रजिस्टर से ।

६. देखो म॰ मुन्शीराम सम्पा॰ पत्रव्यवहार पृ॰ १६३, १६५। इस स्त्री के शुद्ध होने पर आजमेर के ईसाइयों में बहुत विभव हुआ था। पूर्ण सं॰ ५७५ की स्वना भी देखें। ७. भाद्र शु० १३ सं॰ १६४० । यु॰मी॰।

जोधपुर, सं० १६४०]

पत्र (५०७)

४६७

[6]

' पत्र (५०६) ॥ श्रो३म्॥

[463]

बाबू विश्वेश्वरसिंह जी आनंदित रही ?!

तुमने लिखा सो ठीक है। इस में चार समाज जो कि प्रयाग के निकट हैं उन से इस बात का नियम कराना चाहिये। हां, मेरठ समाज कुछ उन तीन समाजों से दूर है। तथापि रेल से कुछ दूर नहीं। एक फरकाबाद, दूसरा मेरठ, तीसरा दानापुर श्रीर चौथा लखनऊ । इन चार समाजों के मन्त्रियों को इस हमारे पत्र की नकल के साथ लिख भेजो । दो वर्ष में एक वार पारी आवेगी। क्योंकि छ: २ महीने के पश्चात् किसी चार समाजों में से जिसकी पारी हो, वहां से धार्मिक उत्तम पुरुष आया करें। वह अन्तरङ्ग सभा की सम्मित से आवे । और वह हिसाव में भी ? ] अच्छी तरह से समभता हो। तथापि धार्मिक और देशोन्नति में प्रीति रखने वाला हो। चाहे समाज धर्मार्थ वैदिक यन्त्रालय का कितना ही सहाय करे श्रीर वास्तव में समाजों ही के प्रताप से वैदिक यन्त्रालय बना है तथापि समाज से जो कोई पुरुष आवे उसके आने जाने और जब तक वहां रहे तबतक खाने पीने का खरच भी वैदिक यन्त्रालय से दिया जाय। श्रीर वर्ष २ में वैदिक यन्त्रालय का श्राय व्यय थौर पुस्तकों का जमा खर्च भी एक छोटे से पुस्तकाकार में छप के स्वीकार पत्र के [साथ] सब सभासदों और सब आर्थसमाजों में भी भेजा जावे। इस से बहुत अच्छी बात रहेगी। और जो कुछ हिसाब में गलती दीखे, वह वैदिक यन्त्रालय की प्रबन्धकर्नु प्रयाग सभा को तद्द्वारा सुमको और पंडित सुन्दरलाल जी को श्रौर उन चार समाजों को विदित किया जाय। उसका उचित प्रवन्ध करने के लिये प्रयाग की सभा को अपनी सम्मित पूर्वक मैं वा अन्य सब लिख भेजें। और वह सभा यथावत् प्रबन्ध किया करे। इससे निश्चय है कि प्रबन्ध अच्छे प्रकार चलेगा। और मुन्शी समर्थदान के २७ सत्ताईस तारीख अगष्ठ का उत्तर यही है कि उन्होंने कापी मांगी है और भीमसेन के पत्र की नकल भेजी थी और कापी आज ही भेजते। आज रविवार है रिजर्छरी नहीं होती। इसलिये कल भेजेंगे।

> मिति भाद्र सुदी १५ रविवार सम्वत् १९४०२। जोधपुर राज मारवाड़।

द्यानन्द् सरस्वती

[89]

पत्र (५०७) **अो३म्** 

[५८४]

मंशी समर्थदान जी आनिन्दत रहो ! श्रार्थराज वंशावली के पत्र तुमने भेजे सो पहुंचे । उसी समय हम सत्याथपकाक १२

१. यह पत्र फर्रखाबाद का इतिहास नामक ग्रन्थ के पृ० २०४ पर भी छुपी हुई प्रतिलिपि से छापा गया है। मूल पत्र श्री॰ नारायण स्वामी जी के संग्रह में सुरिव्ति है।

२. १६ सितम्बर १८८३ ।

३. मूल पत्र परोपकारिणी सभा अजमेर में होगा । इमने यह पत्र आर्यधर्मेन्द्र जीवन से लेकर छापा है।

समुद्धास को मेजना चाहते थे। इस लिये हम शोध नहीं सके। और तुम इसका जोड़मात्र शोध लेना। जो राजाओं के आयु के वर्ष, मास, दिन हैं उन को वैसे ही रखना। क्यों कि अन्य पुस्तक से भी हमने इसको मिलाया है जो कि यहां जोधपुर में एक मुन्शी के पास था। और इसके साथ मोहन-चित्रका १९-२० किरण भेजते हैं। परन्तु यह भी अशुद्ध छपा है। इसलिए नीचे और ऊपर के जो जोड़ हैं वही शुद्ध कर लेना, आयु के वर्ष, मास, दिन नहीं। दिन वैसे ही रहने देना, जैसे कि हैं। २७२१ से छे के ३१९ तक १२ समुद्धास सत्यार्थप्रकाश का छापने के छिये भेजते हैं। जो जोधपुर के मुन्शी की पुस्तक से मिलाई है वह भी भेजते हैं।

मिती आ० वदी १ सं० १९४०२।

जोधपुर राज मारवाड़

[द्यानन्द् सरस्वती]

[६]

पत्र (५०८)

[५८५]

श्रो३म्

चौधरी जालिम सिंह जी आनन्दित रही ।

पत्र आपका आया, समाचार विदित हुआ। आप के लिखने अनुसार उस का अपराध जमा करके बुला लेंगे वा कहीं अन्यत्र भेज देंगें। परन्तु उस को आप भी सममा देना। और एक कहार की हम को जरूरी है। यदि मिल सके तो लिखिये। और आज भीमसेन के पास भी पत्र भेज दिया है। और अब हम यहां से शीघ्र अन्यत्र जावेंगे। और जब निश्चित जाने का दिन होगा तब आप के पास पत्र भेज देंगें।

सम्वत् १९४० मि० आधिन कु० ४ गुरुवार 8—।

[दयानन्द सरस्वती] जोधपुर राजा मारवाङ् ।

[१७]

पत्र (५०९)

[५८६]

श्रो३म

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी ब्यानन्दित रहो।

विदित हो कि आप को मैंने बहुत बहुत बार कहार के लिये लिखा था। तुम ने कुछ ध्यान

१. पूर्ण संख्या ४७१ (पृष्ठ ४४७) के पत्र में २७८ तक पृष्ठ भेजने का उछेख है । तदनुसार यहां २७३ चाहिये। यु॰ मी॰। २. १७ सितम्बर १८८३, सोमवार।

३. इस पत्र की प्रतिलिपि हम ने बरेली से ली। ४. भीमसेन को।

प्. ये पत्र इस पर्ते पर मेजे गये थे । चौधरी जालिमसिंह जी ग्राम रूपधनी, जिले एटा थाने धूमरी एटा । इन पत्रों के उत्तर देखिये, म॰ मुंशीराम सग्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ ६२-६४ ।

६. २० सितम्बर १८८३।

७. मूल पत्र लिफाफे सहित हमारे संग्रह में सुरिच्त है। सन् १६२७ में म॰ मामराज फरुखाबाद से खोज कर लाग्ने थे।

नहीं दिया। उस का फल यह हुआ कि एक जाट जिले भरतपुर से दो कोश पूर्व की ओर प्राम विरोना साहबराम पोजदार का बेटा और कुन्दन का छोटा भाई कल्लू नाम वाला शाहपुरे में ऐसे ही रख लिया था। वह चोरी कर के भाग गया है । यदि भरतपुर में आप का विशेष संबन्ध हो तो उस के द्वारा उस चोर का निश्चय करवायिये! और फिर भी लिखते हैं कि कोई कहार तलाश करके भेजोगे तो अच्छा होगा।

१— आवश्यक वात जिस पर आप को अवश्य ध्यान देना है सो यह कि जो कुछ नगद रूपये मेरे पास वा वैदिक यंत्रालय में वर्तमान खर्च से अधिक रहे। वह आप लोग निम्नलिखित छः महाशयों की सभा के प्रवन्ध में रहें। और जब २ उस में से खर्च करने का आवश्यक होवे तब २ में वा वैदिक यन्त्रालय के लिये वहीं से खर्च के लिए जाया करे। और इस धन को ॥) सैकड़े व्याज पर जहां कि आप लोगों की सभा की और मेरी सम्मति हो, वहीं रखा जावे। यदि आप लोग निम्नलिखित सब सभासद उचित सममें तो सेठ निर्मेराम जी के दुकान में जमा रहे। और वे॥) आना सैकड़े व्याज भी देते हैं। परन्तु इस की सम्भाल [करने वाला] सभा की ओर से एक मन्त्री और एक प्रधान होवे। और सभा उस धन की रचा और उन्नती में सदा ध्यान रक्खे। क्योंकि मैं अपने पास शिवाय एक महीना भर के खर्च के अधिक नहीं रखना चाहता। जो अधिक हो वह सभा की सम्मति से लाला निर्मयराम जी के यहां जमा हुवा करे और खरच भी वहां ही से उठा करे। जब तक तो मेरा श्रीर है तब तक तो कुछ चिन्ता नहीं, परन्तु पश्चात् आप छोगों को अर्थात् सभा को परमार्थ के छिये वड़ा पुरुषार्थ करना होगा। कि जिस से आर्यावर्त की उन्नति में ये सब पदार्थ लगा करें। और पश्चात् जो स्वीकार पत्र के नियम के अनुसार व्यय भी किया जायगा।

॥ सभा का नाम ॥

आर्यहिवैषिणी—

इस के सभासद

१-एक आप

२--दूसरा लाला जगन्नाथप्रसाद

३ — लाला निर्भयराम

४-लाला कालीचरण

**प्—राव बहादुर पं० सुन्द्रलाल** 

६-बाबू ज्ञानन्दीलाल मंत्री ज्ञार्यसमाज मेरठ

७—सातवां मैं।

इस सभा का दूसरा काम यह भी रहे कि छटे २ महीने कोई प्रतिष्ठित सभासद वा कोई योग्य पुरुष सभा की सम्मित से मेजा जावे। वह वैदिक यंत्रालय के धन पुस्तक आदि की जांच पड़ताल करे। उस का सब हिसाब छोटे पुस्तकाकार में छपवा के स्वीकारपत्र के सभापित आदि और मुख्य २ समाज के पास भेज दिया जावे। और मध्य में भी वैदिक यन्त्रालय की सभा से जो कि सात

१. देखो पूर्ण संख्या ५८० का पत्र। यु॰ मी०।

पुरुषों की वहां नियत हुई है पत्र द्वारा भी पूछ सके। इसके विंना देखिये श्रमी च० ४००—५००) कपयों की हानि हुई है। श्रीर कुछ इघर उघर से ११५) श्रीर ३००) मैंने अपने हाथ से लाला राम-सरणदास मेरठ में जमा किये थे, वे गड़बड़ में रहे। इसी प्रकार ऐसे बहुत से व्यवहार हैं कि जिन के लिये यह सभा का प्रबन्ध होना आवश्यक है। श्रीर शरीर सब के श्रानित्य हैं। इस से यह काम शीघ्र होना चाहिये। पत्र पहुंचते ही इस का प्रत्युत्तर लिखें, क्यों कि मैं यहां से श्रब शीघ्र जाने वाला हूं। परन्तु पांच ५ दिन पहले एक पत्र श्रीर भेजूंगा। यदि इतने में उत्तर यहां श्रा जाय तो श्रच्छा है। श्रीर सब से मेरा श्राशीर्वाद कह दीजियेगा।

मिति श्राधिन कृष्ण ४ सं० १९४० ।

[दयानन्द सरस्वती] जोधपुर राज मारवाङ्

[99]

पत्र (५१०)

[469]

[कमलनयन मन्त्री द्या० स० द्यजमेर] कहार की चोरी के विषय में रे। २१ सितम्बर १८८३। जोधपुर

ह० द्यानन्द सरस्वती

[8]

पत्र-सूचना (५११)

[966]

[श्रीमान् महाराजा जोधपुराधीश<sup>४</sup>] स्राश्विन वदी ७ रविवारः सं० १९४० ।

[2]

पत्र-सूचना (५१२)

[469]

[श्री महाराज प्रतापसिंह जी र] श्राश्विन वदी ७ रविवार, सं० १९४० ।

[8] .

पत्र-सूचना (५१३)

[990]

[रावराजा तेजसिंह जी<sup>\*</sup>] श्राधिन वदी ७ रविवार, सं० १९४० ।

१. २० सितम्बर १८८३। २. देशहि० के रजिस्टर से। [इस विषय की एक पत्र-सूचना पूर्ण संख्या ५८० पर छपी है, उसी विषय में यह दूसरी पत्र-सूचना है।]

३. श्राश्विन कृष्ण ५ शुक्र, सं० १६४० । यु० मी० ।

४. इस पत्र की सूचना आश्विन वदी १३ शिन सं० १६४० (२२ सित० १८८३) को रावराज तेजसिंह के नाम लिखे पूर्ण संख्या ५६६ के पत्र में है। यु० मी०। ५. २३ सितम्बर १८८३ । यु० मी०।

जोधपुर, सं० १९४०]

पत्र (५१५)

४७१

[६२]

पत्र (५१४)

[466]

योश्म्

मुंशी समर्थदान जी आनन्दित रही।।

आज संस्कारिविधि के पृष्ठ १ से छे के ४७ तक मेजते हैं। सम्भाल के छपवाना। और एक तीन पत्र का एक पत्र है। वह जिस प्रकार जोड़ा है उसी प्रकार छपेगा। वह गड़बड़ न हो, इस लिए जोड़ा है। इसीलिए तीनों का एक छांक रक्या। और हम ने भीतर प्रतीक के छांक पृष्ठांक द्यार्थात फलाना मंत्र वा फलाने क्षमें फलाने पृष्ठ में करना, अपने लिखे पृष्ठों के अनुसार छांक लिखे हैं। परन्तु लिखे और छपे एक से पृष्ठांक नहीं होंगे। इसलिये छपे पृष्ठों के अनुसार वे पृष्ठांक बना लेने। और विषय सूचीपत्र भी छपे पीछे बनेगा। और एक सामग्री सूचीपत्र अर्थात फलाने संस्कार में फलानी फलानी सामग्री संग्रह की जायगी, जैसा कि इस संस्कारिविधि में लिखा है। और अवकाश मिला तो सामग्री सूचीपत्र तो हम ही यहां से लिख मेजेंगे। अब हम यहां से अमावस्था के दिन रवाना हो के आधिन सुदी ४ चौथ को मसूदे में पहुंच जायंगे, यदि वर्षा का प्रतिबन्ध नहीं हुआ। और जो प्रतिबन्ध हुआ तो तुमको चिट्ठी लिख देंगे। और सत्यार्थप्रकाश जो कि १३ समुङ्गास ईसाइयों के विषय में है वह यहां से चले पूर्व अथवा मसूदे पहुंचते समय मेज देंगे। और मुम्बई से टैप आया वा नहीं। और यदि नहीं आया तो प्रसुत्तर भी आया वा नहीं।

मिति आश्विन बदी द सोमवार सम्वत् १९४० ।

दयानन्द सरस्वती जोधपुर राज मारवाड ।

[8]

पत्र (५१५)

[५९२]

श्रो३म

ठाकुर नन्दिकशोरसिंह जी स्नानन्दित रहो ।

पत्र आपका सभा की आर से पंडित नंदिकशोर जी के विषय का मिति मां सुं ९ लिखा आया, समाचार विदित हुआ। पत्र के उत्तर में विलंब इस लिये हुआ कि कुछ समाजों का अभिप्राय विचारणीय विशेष था, इस लिये शीघोत्तर नहीं दिया गया। इतने में आर्थ सं अजमेर की जैसी संमित आई है कि उक्त पंडित जी को सब समाजों के उपदेशक नियत करना चाहिये, वैसी ही सब समाजों की संमिति निश्चय जानों। मेरी भी संमित यही है कि किसी एक समाज पर इनके मासिक का भार नहीं दिया जायगा। और यदि तुमारी सभा में उनके सहाय करने का समय (सामध्यी) न हो तो कुछ चिता

१ मूल पत्र परोपकारिगी सभा में होगा।

२. १ श्रक्टूबर १८८३ । यु॰ भी॰ ।

३ ५ अक्टूबर १८८३ । यु॰ मी॰ ।

४. २४ सितम्बर १८८३।

४. मूल पत्र इमारे संग्रह में सुरिच्त है।

६, भाद्र सुदी ६ के जिस पत्र की श्रोर संकेत है उसमें पिखत का नाम गौरीशंकर लिखा है। इस पत्र के अन्त में भी गौरीशंकर नाम है। अतः यहां 'पिएडत गौरीशंकर जी' पाठ चाहिये। यु॰ मी॰।

नहीं। तुमारे समाज को इतना ही भार रहेगा कि जिस समय जैपुर से अन्य समाज को पंडित जी जायेंगे तब रेल का खरच दूसरे समा[ज] तक का देना होगा। श्रीर जिस २ समाज में जायेंगे और जितने दिन रहना होगा, ज्याख्यान देंगे और सभासदों को उचित समय में पढावेंगे भी, और मासिक इनका २०) रुपये रहेगा। क्योंकि २ महीने तक अपने घर का खरच खायेंगे। दश महीने घूमने में उन का खरच खाने पीने में समाज की श्रोर का लगेगा। इनके मासिक में से कुछ खरच न होगा किन्त २२०) रुपये उन के घर के खर्च के लिये सममाना चाहिये। और एक वर्ष में दो महीने की छुट्टी अर्थात तुम्हारे समाज में श्रौर श्रपने घर में रह के उपदेश वा पढ़ाया करें । छुट्टी चाहे तो दो महीने की इकट्री ले ले अथवा छः २ महीने में एक २ महीने की । और इनके मासिक के लिये ऐसा प्रबन्ध किया जायगा कि प्रति मास उनके घर पे २०) रूपये पहुंचा करेंगे। चाहे किसी समाज की श्रोर से जाय वा हमारे पास से। इस का प्रवन्ध हम कर देंगे, जैसा उचित समर्कों । फिर इसमें कुछ शंका न रहेगी। जिस समाज से जिस समाज तक जाना होगा, वह समाज रेल का व्यय और मार्ग में खाने पीने का भी वही समाज दे दिया करेगा। इतना खरच उठाने में समाज कोई भी निर्वल नहीं है, प्रत्युत सैंकड़ों रुपयों का खरच यदि ऐसे २ दश पंडित भी हों तो भी समाज प्रवन्ध कर सकते हैं, परन्तु जब समाज स्वयं समक्त लेवेंगे कि पंडित जी एक वर्ष में सब समाजों में एक फेरा लगा श्रावेंगे। पश्चात् चाहे छोटे से छोटा समाज क्यों न हो, इन का सत्य उत्साह और वक्तृत्व ऐसा है कि वड़े प्रसम्नता के साथ इनका खरच उठा लेंगे। श्रीर यदि ऐसे २ पंडित श्रीर जैसे स्वामी सहजानन्द तथा घात्मानन्द सरस्वती जहां जाते हैं वहां प्राचीन समाज को आनन्द और नूतन समाज नित्य होते जाते हैं। उपदेशक मंडली के लिये मेरठ समाज तथा लाहीर समाज ने भी कुछ धन संचय किया है श्रीर महाराज राजाधिराज शाहपुरेश ने भी ३०) माहवारी नियत किये हैं, परन्तु उस से यह नियम किया गया है कि दो उपदेशक हमारी श्रोर से रक्ले जायं। चाहे १५) १५) के दो चाहे एक २०) का वा १ एक १०) का रक्खा जावे। यह नियम भी पालन करना आवश्यक है। इस लिये इस पत्र को देखते ही इन सब बातों का स्वीकार हो तो प्रत्युत्तर शीघ्र भेजो । श्रव हम जहां से संवत् १९४० आश्विन बदी ३० श्रमावश्या<sup>१</sup> के दिन चलके आश्विन सुदी ४ चौथ को श्रर्थात् ५ श्रकतूबर सन् १८८३ को मसूदे पहुंच जायंगे। यदि पंडित जी को स्वीकार होगा तो मसूदे में उन को बुला लेंगे। और सब समाजों में विदित कर दिया जायगा कि पं० गौरीशंकर जी को वैदिक मत का उपदेशक नियत किया है। उस के सब नियमपूर्वक हो जायगा श्रीर दो महीने जैपुर के समाज में रहेंगे। उन दो महीनों के दश १०) रुपये जैपुर का समाज दिया करे अर्थात् उन का २५) पश्चीस रुपये महावारी बना रहेगा। सब से हमारा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

संवत् १९४० मिति आ० बदी पर ।

[ दयानन्द सरस्वती जोधपुर राज मारवाड़।

१. १ ऋक्तूबर १८८३ । यु॰ मी॰ ।

२. २४ सितम्बर १८८३।

जोधपुर, सं० १९४०]

पत्र (५१७)

४७३

[\$]

पत्रं सूचना (५१६)

[५९३]

[श्री बहादुरसिंह जी रावसाहब मसूदा ] मसृदा पहुंचने कि सूचना तथा प्रवन्ध विषय में १। स्राधिन बदी प सोमवार सं १९४०२

[4]

पत्र (५१७) स्रो३म्³

[४९४]

श्रीयुत शास्त्री छगनलाल जी तथा वृ[द्धिचन्द जी ] श्रानन्दित रहो।

आज एक रजिस्ट्री पत्र श्री [ राव साहव के ] पास भी भेजा है । निश्चय है कि समय पर दोनों पहुंच जायेगा। आप को विदित किया जाता है कि हम यहां से संवत् १९४० आधिन वदी ३० अम्मावस्या सोमवार के दिन अर्थात् अक्टूबर तारीख १ को इहां जोधपुर से चंलकर बुद्ध अर्थात् आश्विन सुदी २ तद्तुसार अक्टूबर तारीख ३ को मुम्बई से नयेनगर को रात्री में मेल आती है उसी में श्रार्थेंगे। नयेनगर के स्टेशन पर उतरेंगे। इस लिये आप लोग नयेनगर को प्रतिपदा के दिन एक रथ, एक एका और एक असवाव की गाड़ी और जो हाथी अच्छा चलता हो तो हाथी भी भेज देना। श्रौर यदि हाथी मेजो तो एका मत भेजना । श्रौर घाटी के नीचे कि जहां तक बग्गी श्राती है वहां बग्गी भेंज देना। [पहले ] का सा प्रवन्ध न हों । किन्तु रेल आने के स[मय से] घंटा दो घंटा पहले से सवारी आके रतु ... आरे साथ दो सवार और दो चार आदमी पहरे वाले मेज देना। हम नयेनगर से सीधे मसुदे चले जावेंगे। श्रीर जिस मकान में हमारा ठहरना हो वह भी शुद्ध कर श्रीर सब सामग्री कर रखना। श्रीर दो चतुर पुरुष सवारी के साथ नयेनगर में भेजना । उन में से एक सवारी के पास रहे कि जो उक्त मिति को मुम्बई से आने वाली रेल के समय स्टेशन पर सवारी ले के खड़ा रहे। श्रीर एक ... ... मंगु की तत की रिल में नयेनगर से रात्री की रेल में वैठा श्रीर प्रातः काल खार्ची रेशन पर आके स्टेशन मास्टर जो जोधपुर के सरदारमल मास्टर का भाई है उनसे कहदे कि आज स्वामी जी आवेंगे। और उन को लेने के लिये [हम आये हैं।] इतना कहते ही खनको प्रीति में रख लेगा। · · · · · · · · · · · · · · वाके दिन खपस्थित रखो। दियानन्द सरस्वती

मिति त्राधिन वदी ९ सोमवार संवत् १९४०८।

जोधपुर राज मारवाड़ ९

१. इस पत्र की सूचना अगले पूर्ण सख्या ५६४ के पत्र में है। यु॰ मी॰।

२. २४ सितम्बर १८८३। यह पत्र रजिस्ट्री से मेजा गया था। यु॰ मी॰।

३. मूल पत्र श्रथवा उसकी प्रतिलिपि परोपकारियो सभा श्रतमेर में सुरिव्त है।

४. नयेनगर ऋर्थात् ब्यावर । यु॰ मी॰ ।

प्र. शाहपुरा से लौटते समय मसूदा जाने का निश्चय था । परन्तु प्रवन्ध की श्रव्यवस्था के कारण बरल (बीरल) स्टेशन पर कोई सवारी नहीं पहुँची (देखो पूर्ण सं॰ प्र२३, प्२४) उसी की श्रोर यह संकेत है।

६. संभवतः 'मुंबई की तरफ की' । यु॰ मी॰ । ७. खार्ची श्रर्थात् मारवाइ जंक्शन । यु॰ मी॰ ।

द. २४ सितम्बर १८८३ । वदी ८ चाहिये वदी ६ को मंगलवार श्रीर २५ सि॰ है।

कोधों श्रीर विन्दुश्रों वाला स्थान फट चुका है । इस पत्र का उत्तर पं॰ छगनलाल ने श्राश्विन
 कृष्णा ११ संवत् १६४० को दिया । देखो पं॰ चमूपित सम्पादित पत्रव्यवहार पृ॰ ६७ ।

[8]

पत्र (५१८) ै

[४९५]

श्रजमेर

मास्तर

भालावाड़ के राजराणा जी?

मालावाड़ के अतालीक जो भाग गये उसका हाल संचेप से मालावाड़ से समाचार मंगवाया था सो हाल यह है कि लफटंट लोंगर साहेब ३॥ साड़े तीन वर्ष तक अतालीक रहें । जीती खर्च वा अजमेर खर्च श्री राजराणा साहेब बहादुर का अताली[क] के सपुर्द रहता था किन्तु नित्यप्रति के व्यय के लिए नगद रुपैये १७०००) राज की उसके पास था और रुपये १२०००) सेठ मूलचन्द्रजी वा गणे[श]दास आदि साहुकारों का पहिले से लेना था। और रुपये २०००) हजार का जेवर श्री राजराणा साहेब का जो उसी रात धावाई हरलाल की मार्फत वास्ते देखने के मंगाया, यह सब लेकर अकेला रात की रेल में अजमेर से चला गया। साहव लोगों का कहना है कि उसका पता नहीं है कि कहां गया और अब वह कहां है।

# **उपदेश**³

१—सदा पश्चपात छोड़ के श्रभ ......के साम्ने उपदान लेने की चेष्टा कभी न

२—सेना में सुरिच्चत अधिष्ठाता आर्य जनो को रखना।

३--चात्रशाला।

४—हास्य और वेश्यानृत्य पासवान आदि से समागम कभी न करना।

५—आबू एजंट और सीमा के व्यवहार में को गोल पासवान स्वार्थी राजद्रोही मूर्ख को न रखना, किन्तु बड़े विद्वान् धार्मिकों को रक्खे।

६—सर्वदा उद्युक्त आलस्य रहित [रहो] दीर्घसूत्री कभी न हो।

७—कभी अर्थी प्रत्यर्थी से लोभादि में फंस कर अन्याय न करे न करावे। यदि जिसका सत्य न्याय हो वह बिना प्रसंग भेंट करे तो भी उन से कहे कि न्याय करना हमारा निज काम है, इतने [पर] भी प्रसन्नता से देवें तो लेवे।

चेदिवरोधी की जाल से प्रजा को बचावे।

९ - सदा ऋतुगामी स्वदाररत हो, इस से भिन्नों को मा बहिन और कन्या के सहश माने।

१. मूल लेख ठाकुर किशोरसिंह जी के संग्रह में था, उसमें तिथि ग्रादि नहीं लिखी है। पं॰ चमूपित जी सम्पादित पत्रव्यवहार पु॰ १४४ पर छुपां है।

२. लौंग साह्य क्रा कुछ वृत्तान्त पं० कमलनयन शर्मा मन्त्री त्रार्थसमाज श्रजमेर ने श्रपने पत्र ता० १७ जून १८८३ में श्री स्वामी जी को लिखा है। म० मुन्शीराम सम्पादित पत्रव्य० पृ० १६६ पर देखें।

३. यह उपदेश श्री स्वामी जी ने पेन्सिल से सिखा है। प्रतीत होता है कि यह पहले पत्र (भाला-वाड़ वाले) के साथ सम्बद्ध है। मूल लेख ठाकुर किशोरसिंह जी के संग्रह में था। म॰ मामराज जी ने ता॰ ३ जनवरी सन् १६३३ में प्रतिलिपि की। हमने उसी से शुद्ध छापा है। पं॰ चमूपित जी सम्पादित पत्रन्यवहार पु॰ १४५-१४७ पर कुछ श्रशुद्ध छपा है।

प्रज्य

१०- शरीर राज्य ऐश्वर्य विद्या धर्म को सर्वदा बढ़ा[या करे]

११—वेश्यागामी दुर्व्यसनी, दुष्ट-व्यसनों का संग कभी न करे। सदा भ्रमण के लिए एक पुरुष और दूत

१२-धर्मार्थोपरि

१३-गोविषय

१४-छापाखानादि

१५ —िकसी को अपना भेद, कोई अपना छिद्र न जाने।

१६ - जो धर्मदाय वा पारितोषिक दिया हो, जिस लिये उसका उसी के अर्थ नियुक्त रखना

१७—िकसी की अर्जी सुन कर निष्फल न करनी, किन्तु उसका यथावत् विचार करके जीत हार तय करना ही चाहिये।

१८—सरदार श्रीर पिंडत व्रजनाथ वा श्रन्य कोई योग्य पुरुषों को सीमा प्रबंध[क] करना चाहिये।

१९—जितनी पृथ्वी स्वराज्य की दूसरे राज्य में दबी है, उस के लिए अपील शीघ्र अवस्य होनी चाहिये।

[७]

पत्र (४१९)

[४९६]

श्रो३म्

श्रीयुत बहारट किसन जी आनन्दित रहो ?।

श्रव हम यहां जोधपुर से सम्वत् १९४० मिति श्राधिन वदी ३० श्रमावस्था सोमवार को श्रथीत् सन् १८८३ तारीख १ श्रकतूवर को रवाना होके जिले श्रजमेर राज मसूदा—में तारीख ४ श्रकतूवर श्राधिन श्रुदि ३ तृतीया बृहस्पतिवार को पहुंचेंगे। और यही समाचार कविराज श्र्यामळदास जी को भी ळिख मेजा है ३। श्रीर यहां का समाचार बहुत सा श्राप को पहुंच भी गया होगा। श्रीर पश्चात् मसूदे से लिखेंगे। श्रीर इस पत्र का उत्तर ठिकाना मसूदा जिले श्रजमेर राजपूताने में भेजियेगा।

मि[ति] आधिन वदि १० बुध सम्वत् १९४०3।

[दयानन्द सरस्वती] जोधपुर राज मारवाङ

[६]

पत्र (५२०)

[५९७]

॥ श्रो३म् ॥

श्रीयुत कविराज स्थामलदास जी त्रानिन्दित रहो । — , त्रानिक क्षेत्र यहां जोधपुर से संवत् १९४० मिति त्राश्विन वदी ३० श्रमावस्था सोमवार को

१. मूल पत्र ठाकुर किशोरसिंह जी के संप्रहर्ग या। पं॰ चमूपति सम्पादित पत्रज्यवहार पू॰ १७८२ से लिया गया। २. देखो पूर्ण संख्या ५६७ का पत्र। यु॰मी॰। ३. ता॰ २६ सितम्बर १८८३। ४. मूल पत्र टाकुर किशोरसिंह के संप्रह में था। पं॰ चमूपति सम्पादित पत्रज्यवहार प॰ ४६ पर छुपा है। अर्थात् सन १८८३ तारीख १ अक्तूबर को रवाना होके जिले अजमेर राज मसूदा में तारीख ४ अक्तूबर आधिन सुदि ३ तृतीया बृहस्पतिवार को पहुँचेंगे। और यही समाचार श्रीमानों के पास भी बाहरट किसन जी के द्वारा मेज दिया है १। और यहां का समाचार आप को भी बहुत सा पहुँच गया होगा। और पश्चात् मसूदे से लिखेंगे। और (जयपत्तनस्य कार्यसमर्ण वर्तते न वास्मिन्कार्यसिद्धिकर्णे विलंबो नैव कर्तव्य इति।) और नेत्र अकग्ण हो गये वा नंही १ क्या श्रीमान् भी चित्तौड्गढ़ में पधारेंगे वा नहीं। और इस पत्र का उत्तर ठिकाना मसूदा जिले अजमेर राजपूलाने में भेजियेगा—

मिति आश्विन वदी १० सम्वत् १९४० ।

जोधपुर राज मारवाड़

[२0]

पत्रांश (५२१)

[496]

[कमलनयन मन्त्री आर्यसमाज अजमेर3]

पहली अकटूबर को जोधपुर से मंसूदे जावेंगे। २७ सितम्बर १८८३ । जोधपुर

द्यानन्द सरस्वती

[4]

पत्र (५२२)

[५९९]

श्रो३म् "

श्रीयुत रावराजा तेजसिंह जी श्रानन्दित रहो !

(१) यहां त्रोषधी का एक पत्र जिस में चोंतिस त्रोषधियां हैं, किस में से कई परीिचत हैं, सो भेजते हैं। त्राप सम्भात लीजिये त्रोर जो किसी में शंका रहे तो पूछ लीजिये।

(२) आज सन्ध्या को उसी पूर्वीक्त काम के लिए मुन्शी जी को भेज दीजिए।

(३) एक चमड़े की बेग जो कि उस चोर ने दो ठिकाने से काट दी है, यदि किसी कारीगर से एक दिन में सुधरवा दें तो आप के पास भेज देवें। परन्तु विलम्ब एक दिन के सिवाय न हो तो, अर्थात् शनिवार को अवश्य मिल जाय। यदि ऐसा न हो सके तो आगे बनवा लेंगे।

(४) यहां से पाली तक सवारी का प्रबन्ध जैसा आप ने किया हो वैसा किसी पुरुष द्वारा वा पत्र लेख से मुक्त को आज विदित कर दें। सवारी का प्रबन्ध ऐसा होना चाहिये कि जैसे पहिले और तो सब सवारी ठीक थी, परन्तु असबाब की गाड़ी के बैल विगार के थे, बहुत पीछे रह जाती थी।

३. देशहि० के रजिस्टर से।

१. देखो पूर्ण संख्या ५६६ का पत्र । यु॰ मी॰ ।

२. २६ सितम्बर सीन् १८८३।

४. श्राश्विन वदी ११ बृहस्पतिवार सं० १६४०।

५. मूल पत्र रावराजा जी के पास था। वहीं से इस की प्रतिलिपि प्राप्त हुई।

६. यह त्रोबिषपत्र हम त्रानी पूर्ण संख्या ६०० पर छाप रहे हैं। इस विषय में पृष्ठ ४७७ की टि॰ २, ३ भी देखें। यु॰मी॰।

श्रव के ऐसा न होना चाहिये, किन्तु सवारी और श्रसवाब की गाड़ी बरावर चलें श्रौर वैल श्रच्छे जुतवाने चाहियें कि सवारी के बराबर चले जायें।

- (५) श्रमरदान जी के मुख से सुना कि महाराजे प्रतापसिंह जी ने श्रमरदान जी से कहा कि हम बारह घएटों में पाली को पहुंचा देंगे सो श्राप पूछ के उत्तर लिखिये कि वह क्या सवारी होगी।
- (६) जो मेरे साथ के मनुष्य और पुस्तकादि असवाब जावेंगे, उस के साथ आप के सुपरी-ज्ञित दो सवार और एक वा दो मेरे साथ। तथा असवाव के साथ पहरा अच्छा भेजना चाहिये। जैसा कि आप के पूना जाने के पश्चात् सुरदावली और एक दो अच्छे सिपाही का पहरा यहां बिना आठ दिन की बदली के रक्खा था, उस का प्रतिफल चोरी हुआ, इसलिए पहरा और सवार [ऐसा] भेजना चाहिए, जो की होशियारी से पाली तक अच्छे प्रकार पहुंचाए। यह मैंने आपको स्मरण दिलाने के लिए लिखा है। निश्चय है कि आप स्वयं अच्छा प्रवन्ध करेंगे। इन सब बातों का प्रत्युत्तर आज ही मेरे पास भेज दीजिए।
- (७) श्रीर जो सन्ध्या का अनुवाद श्रंग्रेजी का गुटका श्राप ले गए थे, वह मिजवा ही दीजिए। श्रलमितिवस्तरेण बुद्धिमद्वर्थेषु।

मिति आश्विन वदी ११ बृहस्पतिवार सम्वत् १९४० ।

दयानन्द सरस्वती जोधपुर राजमारवाड़

यह श्रोषियों का खरड़ा श्रीमान योधपुराधीश श्रौर महाराजे प्रवापसिंह जी को भी दिखला देना।

[9]

### [ओषधि-पत्रै]

[600]

१ सप्पोंषधी—जमालगोटे की गिरि को नींबू के रस में एक दिन रात भिगोय, पुनः एक दिन रात सुखावे। इस रीति २१ इक्कीस पुट अर्थात् बयालीस दिन रात में करके रख ले, जब किसी को सांप

१. २७ सितम्बर १८८३।

२. इस पत्र की प्रतिलिपि ठाकुर किशोरसिंह के संग्रह में थी। उसी से पं० चमूपित जी ने पृ० १०३-४ तक यह पत्र छापा है। उस में तेतीस श्रोषियों का ही उल्लेख हैं। हस्ताच् से नीचे का लेख तथा तिथि उस में नहीं है। [परन्तु रात्रराजा तेजसिंह जी से हमें प्राप्त हुई प्रतिलिपि में ३४ श्रोषियों का निर्देश है। ये ३४ श्रोषियां हम श्रगली पूर्ण संख्या ६०० में छाप रहे हैं। यु० मी०]।

३. इन ३४ श्रोपियों के पत्र का उल्लेख पिछले पूर्ण संख्या ५६६ के पत्र के श्रादि श्रीर श्रन्त में है। एक श्रोपिय पत्र का निर्देश पूर्ण संख्या ५६३ (पृ० ४४६) में भी है। उस के विषय में पृष्ठ ४४६ की टिप्पणी संख्या २ भी देखें। पं० मोहनलाल विष्णुलाल पापड्या उपमन्त्री परोपकारिणी समा द्वारा संवत् १६४२ (सन् १८८५) में मुद्रापित 'आवेदन पत्र' में श्री स्वामी जी महाराज की संग्रहीत पुस्तक सूची की संख्या ८१ पर भी "औषधियों का यादि पत्र स्वामी जी के लिखे हुये" निर्देष्ट है, सम्भव है वह इसी की प्रतिलिपि हो। यु० मी०।

काटै तब पत्थर पर घिस के जिस जगह काटा हो लगाये, यदि मूर्छित हो गया हो तो सलाई से थोड़ा सा आंख के ऊपर लगादे और त्रिफला के जल को उपस्थित रक्खे, मूर्झा उतर जाने पर त्रिफला के जल से आंखें धोवे, वैसे कई दिन धोवे, त्रिफला को रात्रि के समय मट्टी के पात्र में भिगोवे और कएठ तक ठएडा जल पिला कै दो चार बार कय करावै, तो सर्प के विष से वच जाय।।१॥

२ द्वितीय औषधी-जिस किसी को सांप काटे, उस को तुरन्त ही एक रीठा कुछ पानी में घिस कर

पिलाना चाहिये, तुरन्त ही विष जाता रहैगा ॥२॥

तथा तृतीय-नीविगलीय को वांट के पीये, यदि मूर्छी आगइ हो तो जहां तक हो सकै वहां तक पिचकारी से नीविणलीय को पेट में पहुंचावै, तो वह बच जाय, ॥३॥

४ ओषध गोहरे के विष की-दोनामरवा पैसे भर पानीं में पीस कर मिला दे, यदि मूर्छित होय

ं गया हो तो पिचकारी से पेट में पहुँचावे, तो श्रच्छा हो जाय ॥४॥

बाला की ओषधी-छः मासे आक का दूध और बारह मासे गुड़, दोनों को मिलाकर टिकड़ी कर के एक दो अथवा तीन बार बाले पर लगा दे तो बाला जाय ॥५॥

हड़ के कुत्ते की औषधी—सपेद तिल का तेल श्रीर श्राकरा दूध बराबर मिला के कुता के काटे हुए घाव में लगादे, इस से अच्छा हो जायगा ॥६॥

तथा द्वितीय ओषधी—पुराना घृत धतूरे के बीज श्रीर श्राक का दूध श्रथवा घृत श्राक का दूध श्रीर गुड इनको जल में पीसकर घाव में लगा देने से श्रच्छा हो जाता है।।।।।

 वीर्य पुष्ट होने का साधन—सुखे त्रांवलों को कूट छान उसके बराबर मिश्रि मिला कर गौ के दूध के साथ प्रातः सायं १) तोले भर की फकी लेवे तो प्रमेह त्रादि के रोग जायं ॥=॥

९ पेटपीडा की औषधी—सोंठ, सुहागा, हींग इनको बराबर लेकर सहजने की छाल श्रक में घोट कर गोली बांध लेवे, एक गोली गर्म जल के साथ खिला देवें तो पेट पीडा जाय ॥९॥

- १० रुधिर शोधक की औषधी—फिटकड़ी के फूले कर पीस कैं उस को १ मासे वा जितनी पचे अथवा जो रुचि होवै तो पाव भर छास । अथवा जितनी छास की रुचि हो उतनी में मिलाय कर पीवै, तो सब प्रकार की रुधिर विकार व्याधी छूट जावै तथा खांसी बवासीर आदि में भी गुण करे ॥१०॥
- ११ मुत्रकुछ् और पथरी की औषधी-अपरिचितः—एक लाल मिरच मीठा छास में आठ पहर भिजी कर निकाल लेवे फिर उस छास को फेंक और दूसरी छास में पीस कर जितनी छास पीवे की इच्छा हो उतनी में छान कर पीवै, इसी प्रकार दूसरे दिन दो मिरची और तीसरे दिन तीन, ऐसे ही सात दिन तक चढ़ता उतरता जाय। इस समय खट्टा, गुड़, तेल और नोंन की न खाय तो मुत्रकुळ और पथरी रोग छुट जाय ॥११॥

१२ गर्मस्राव की सम्मावित औषधी — जड़ सहित दूब एक पैसे भर ११ काली मिरचीं को पीस छान के ७ सात दिन गर्माधान के पूर्व और सात दिन गर्भाधान के पश्चात् तथा चौथे महीने में

भी ७ दिन पीवै तो गर्भस्रवित न हो ॥१२॥

१३ काली फुनसी का औषध—काली फुनसी पर सोने की शलाका का चारों श्रोर दाह देवें तो वह अच्छा होय ॥१३॥

- १४ गर्भस्थिरीवधी—शंखावली को दूध में पका के जब दूध ठंडा हो जावै, तब स्त्री पीव खौर गर्भ-स्थापन समय स्त्री को शंखावली पीस के सुंगावै तो गर्भस्थित होवे खौर बडवा पीपल की जटा को पांच दिन तक पीस के पिलावै तो भी गर्भस्थिति हो जाय ॥१४॥
- १५ जो सुजाक से सुजाक हो जाता है उसकी परिचित्तव्यौषधी—सुदर्शन के पत्तों का अर्क निकाल उस की पिचकारी भर लगावें और पत्तों को पीस कर घाव पर लगा देवे तो सात रोज में ब्रग्ण सूख जावे और उसी के पत्ते को ६ छः मासे भिश्री के साथ जो षा[खा]वे तो इकीस दिन के परंत सुजाक वें फिर कभी नहीं होवें ॥१५॥

१६ तथा द्वितीय—नीबु को लेकर दो फांक बना उन में चावल [भर] फिटकडी पीस कै भर रात की श्रीस में रख दे श्रीर सात दिन तक चूसने में सुजाक जाता रहै ॥१६॥

१० प्रमेह का औषध—वंवूल की फली पत्ती गोंद छाल और गूरा सब चीज बराबर ले पीस कर पूर्व रख ले फिर बराबर की मिश्री के साथ मिलाकर तोले १) तोले भर खा ऊपर से ऽ॥ आध सेर दूध में ऽ॥ आध सेर जल और सकर मिला पीवें तो अठारह प्रकार का प्रमेह जाय ॥१७॥

१८ पुनस्तथा—गुलखैर के फूल को पीस सहत मिलाय पानी में छान ठंडाई बना ४१ दिन तक पीनै तो नीर्य पृष्ठ हो जाय ॥१८॥

- १९ रक्तविकार की औषधी—दो पैसे भर महंदी श्रौर मधु मिला पीस के खावे श्रौर यह से भोजन ऐसी चीजों [का] न करे कि जिनसे रुधिर न वधे, तथा चने की रोटी श्ररहर की दाल चावल श्रादि खावे श्रौर......सेवन करे तो रक्त विकार जाय ॥१९॥
- २० उन्माद की औषधी—दो वैसे भर मुलहटी को सहत में मिला के ७ दिन खाय श्रीर दाल चावल कढी श्रादि खावै तो चन्माद जाता रहै ॥२०॥
- २१ उपदंश की औषधी—श्रांवले दूध वा सहत के साथ १) तोले भर खाने तो उपदंश जाय ॥२१॥
- २२ जीर्ण ज्वर की औषधी—खूबकला १) तोला भर रात को पानी में भिगो दे प्रातः काल मिश्री के साथ सर्वत बना कर पीवें और घी न खाय श्रोर घी की जगह बादाम का रोगन खावें तो २१ दिन में जीर्ण ज्वर जाय, परन्तु बासा पानी में न्हाता रहै।।२२॥
- २३ पुष्टिकार औषध—ऽ१ सेर भर पियाज के छिलके उतार छोटे २ दुकड़े कर कोरे वर्तन में सहत के साथ भिगोदे फिर १५ दिन तक भूमि में गाड़ दे, निकाल कर पश्चात् तोले १) भर नित्य खावै तो पुष्टि प्राप्त हो जाय॥२३॥
- २४ जमींकन्इ के बनाने की रीती—सेर भर जमींकन्द को शुद्ध करके S=श्राध पाव श्रद्धरत के साथ ख्वाल मसाले डाल शाक बना ले।।२४॥
- २५ पेट की श्रूल की श्रीवधी—एकर २ तोले १) भर पीयाज का रस श्रधरख का रस श्रीर सहत इन तीनों को मिला कर दिन में तीन समय पीवे तो शूल रोग जाय ।।२५॥
- २६ पसली के दरद की औषध—पुराना महुवा ऽ। पाव भर ले कूट कपड़े में बांघ दो घड़ी के पश्चात् पुनः उसी की रोटी बना कें ४ प्रहर बंधा रहने दे तो पसली की पीड़ा जाय ॥२६॥
- २७ [तथा]—सांभर का सींग घिस कर पसली पर लगा के कंडे से सेक करै तो पसली का दर्द जाता रहै।।२७।।
- २८ आंखों का सुरमा—सुरमे की डली को नीव के वृत्त में २१ दिन तक रखदे, पुनः निकाल

भंगरे के रस में छोटी इलाईची डाल खूब पीस के रख लें, उस को नेत्रों में लगाने से वर्षों तक की दखती आँखें शुद्ध हो जाय ॥२⊏॥

२९ दांतों का मंजन—मौलसिरी की छाल पीसकर प्रातःकाल दंतधावन करे और रोज अपामार्ग

का भी दन्तघाव करे वो दांत न हिलै ॥२९॥

- ३० तथा—माँजूफल मुहलेटी सफेद कत्था कमी मंस्तगी नीला थोथा पांचों चीजां बरावर ले और नीले थोथे को अंगारों पर खील कर लोहे की कड़ाही में थोड़ा सा जल डाल के बुमा लेवे, पुनः पांचों को पीस और इनके बराबर आक की जड़ की छाल लेकर छवों चीज लोहे की कढाई में लोहे के मूसल से पीसे, जब अंजन के बराबर [महीन] हो जाय तब सीसी में ले रखे। जब दातन करै तब अंगुली से मसोढ़ पर लगा कर थोड़ी देर ठहरैकर पश्चात् कुरला कपै, दांत पीड़ा हिलने आदि छूट कर दांत हढ हो जायें ॥३०॥
- ३१ इयाम केशकारक तेल पलाश के वृत्त के नीचे जो बीच की जड़ हो उस को मूसला कहते हैं उसके नीचे खाँडा खुदवाकर आधीजड काट नीचे खाली जगह में एक वर्तन कली कराया हुआ रख दे उत्तर से ढकना लगा इस प्रमाण छेद बीच में रहने दे कि जिस से मुसले की जड़ ठीक बैठ जाय, पुनः उस के चारों और मट्टी चुन कर और उत्तर से मट्टी डाल फिर वृत्तों के चारों और कंडों की आच लगादे। जितना अर्क उस पात्र में निकल आवे, उतना ही सरसों का कड़ुआ तेल मिला के कढ़ाई में ओटावें जब तेल आधा रह जाय तब कढ़ाई को उतार कर उस में माजूफल एक १ मासे भर, १) तोले भर लोहे का रेतन और १ मासे भर नीला थीथा, ये सब चीजें पीसकर तेल में मिलाय सीसे में भर के रख दे फिर उस को रात के समय वालों के लगा उत्तर से पान लपेट के सो जावें तो प्रातः काल तक श्याम केश हो जांय ।३१।।

३२ तृतीय[क] ज्वर की औषधी—६ मासे भर फटकड़ी गर्म जल में जब दो (दूसरी ?) पारी का समय आवै तब पीसकर पी जाय और पारीतक भोजन न करै तो तृतीय[क] ज्वर जाय ॥३२॥

२२ दाद की औषधी—गंधक राई राल कथा तेलीया सुहागा ये चारों चीज बराबर लेकर पृथक् पृथक् पीसकर चारों को मिला खरल में प्रहर १२ खरल ककें जब एकजी हो जांय तब बेर के समान गोली करके सुखा ले। फिर गोली को चिकने पत्थर पर पानी में घिस के दाद को खुजला कर लगादे तो दाद बिलकुल जाता रहै।।३३।।

28 बीछू की ओषधी—जब किसी को बीछू काटै तब लून को पीस १ पात्र में रख दें और दूसरे पात्र में जल रखे। ग्रंगुली के श्रम भाग से जल रपर्श करके उस से पीसा हुआ लून लगा के जहां बीछू काटा हो उस पर फोरे फोरे हाथ से मले। पुनः इसी प्रकार वार धार करने से थोड़ी ही देर में बीछू मट उतर जाता है। जब डंक पर कुछ जलता रहता है उस पर दो पैसे भर लून को थोड़े से जल में घोल के उस में रूई मिजो के डंक पर बांध देवे तो नीद आ जायेगी?। श्रीर डंक पर से भी पीड़ा मिट जायेगी। 13811

१. इस दन्त मझन का निर्देश पूर्ण संख्या ३४८ (पृष्ठ २८५) के पत्र में भी है वहां 'पपिरया' कत्था जिखा है। २. यहां से आगे का लेख श्री स्वामी जी ने स्वहस्त से लिखा है और ३४वीं श्रोषि के पाठ को स्वहस्त से शोधा है। यह श्रोषधी पत्र म॰ मामराजजी से प्राप्त हुआ। मूल पत्र उन के संग्रह में सुरिव्तत है। यु॰ मी॰।

जोधपुर, सं० १९४०]

8=8

[88]

पत्र (५२३)

६०१

श्रो३म

मन्शी समर्थदान जी आनन्दित रही ।

एक भूमिका का पृष्ठ और ३२० से छेके ३४४ तक तौरेत और जबूर का विषय सत्यार्थप्रकाश का भेजते हैं। सम्भाल लेना। आश्विन षदी ८ सोमवार सम्वत १९४० को संस्कार विधि के पृष्ठ ? से लेके ४७ तक भेजे हैं पहुंचे होंगे और पहुंचने पर रसीद भेज देना। बाकी तुम्हारे पत्रों के उत्तर वा समाचार पश्चात् लिखेंगे।

मिति श्राधिनं (वदी) १३ शनि सम्वत् १९४० ।

द्यानन्द सरस्वती जोधपुर राज मारवाङ्

[4]

पत्र (५२४)

६०२

श्रोश्म

श्रीयुत रावराजा तेजसिंह जी श्रानिन्दत रही

श्रव तक सवारी का श्रापने क्या प्रवन्ध किया ? इसका हाल श्रव तक मैंने कुछ भी नहीं पाया। यदि आप से डाक का बन्दोबस्त न हो सके तो चार सवारी और बढ़ा देनी होंगी। २ साढ़ियें , एक बढ़ा रथ कि जिसमें मैं अच्छी तरह बैठ के जासकूं और एक रथ, अथवा हाथी, अथवा जितनी सवारी श्राती समय थीं उतनी ही होंगी, तब निर्वाह होगा; क्योंकि श्राज हारद्वार के पास के दो श्रादमी श्रोर श्रागए हैं। सव की गिनती यह है।

श्रर्थात् सब सवारी इस प्रकार से करेंगे तो श्रन्छा होगा । तीन रथ, एक सेजगाड़ी १ दो ऊंट २, और एक हाथी १, अथवा ४ चौथा रथ, एक पहरा जिस में छ: जवान और सतवां हवलदार. श्रीर दो सवार। इसी प्रकार का पत्र मैंने श्राप के पास भेजा था । और तीन पत्र गत रविवार के दिन जिन को आज सात दिन हए कमरदान के हाथ भेजे थे वे भी पहुंचे होंगे, जिन में से एक श्रीमान् जोधपुराधीश, दुसरा महाराजे प्रतापसिंह जी श्रीर तीसरा श्राप के पास । यह इस लिए श्राप को चिताया था कि आप सहज में प्रवन्ध करलें। और जब मुन्शी दामोदरदास आवे तब इन का प्रबन्ध सब करा दीजिये। श्रीर कल ४ बजे सन्ध्या के मेरे पास उपरिलिखित सवारी श्रादि श्राजायें कि जिन को मैं देख लूं, पश्चात् विदित किया जाय। क्योंकि परसों यहां से यात्रा अवश्य होगी।

३. २६ सितम्बर १८८३।

१. श्रार्यधर्मेन्द्रजीवन से लिया। मूल पत्र परोपकारिगी सभा श्रजमेर में होगा।

२. देखो पूर्ण संख्या ५६० का पत्र यु० मी०।

४. मूस पत्र रावराजा तेजसिंह के पास जोधपुर में था। ५. अर्थात् सवारी का ऊंट।

६, देखो पूर्ण संख्या ५६८ का पत्र।

श्रीर यह पत्र महाराजे प्रतापसिंह जी को भी सुना दीजिए। श्र्लमतिविस्तरेण माननीयवरेषु॥ मिती चाश्चिन वदी १३ शनी सं० १९४०।

[६]

पत्रांश (५२५)

[६०३]

पुं छ गुनलाल द्विवेदी मसूदा

आधिन वदी १३ को<sup>२</sup> वर्षा बहुत [हुई]। इस<sup>-</sup>कारण अभी ५-७ दिन नहीं आना होगा। और आने के पहले सूचना की जायगी।

[ संभवतः ३० सितम्बर = श्राश्विन वदी १४ ]

पत्रांश (५२६)

िकमलनयन मन्त्री श्रार्थस० श्रजनेर ]<sup>४</sup> रजिस्ट्री चिट्टी के विषय में। १ अक्तूबर १८८३ जोधपुर

१, २६ सितम्बर १८८३।

२. २६ सितम्बर १८८३ ।

३. ५० छगनलाल के ब्राक्षिन सुदी ४, संवत् १६४० ब्रार्थात् ५ व्याकत्वर सन् १८८३ के पत्र में निर्दिष्ट । [यह पत्र पं वमूपति जी सम्पादित पत्रव्यवहार पृष्ठ ६८ पर छुपा है ।]

, ४. देशहि॰ के रजिस्टर से।

४. त्राक्षिन वदी ३० सोम सं० १६४०।

जोधपुर, सं० १९४० ]

पत्र (४६३)

853

[2]

### °मनिआर्डर फार्मीशे

[६०५]

### ऋषि द्यानन्द सरस्वती के अन्तिम हस्ताचर

### Acknowledgment.

No. 307

Date

9/10/

1883.

For Rs. 13

As. 6

SIGNATURE OF THE PAYEE

दयानन्द सरस्वती

Date of delivery

ता० ११ अक्तूबर

188 [3]

THIS ACKNOWLEDGMETT WILL BE SIGNED EIGTHER BY THE PAYEE OR F THE OFFICE
OF DELIVERY, AND WILL BE RETURNED TO THE
RECFIPT FOR MONEQ PAID BUT AN . OWLEDGMET
ONEY ORDER OBTAINED THE

इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्य-वैदिकधर्मपुनःसंस्थापक-वेदोद्धारकश्चार्षप्रन्थप्रचारक-नवभार्वनिर्मातॄणां परमराजनीतिज्ञ-सहिष्णुप्रवरश्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिनां प्रशिष्येण

श्रीयोगि—त्तक्ष्मणानन्दस्वामिनां शिष्येण ष्यमृतसरवास्तव्यश्रीचन्द्रनलालात्मजेन इतिहासविद्भगवहत्त्वेन

खतौलीनिवासिस्वीयशिष्यमामराजसहायेन संगृध

सम्पादितः

[ युधिष्ठिरमीमांसकेन परिनृहितस्र ] ऋषिदयानन्दसरस्वतीपत्रविज्ञापनादिसंग्रहः

#### समाप्तः

१. मिनश्रार्डर फार्म का यह दुकहा महाशय मामराज जी ने रायबहादुर पं॰ सुन्दरलाल जी (पोस्ट मास्टर जनरल) प्रवन्धकर्ता वैदिक यन्त्रालय के पुत्र पं॰ देवीप्रसाद जी दीिल्त आगरे वालों से ता॰ २५ अप्रैल सन् १६२७ को बड़े यत्न से प्राप्त किया था। इस दुकड़े का ब्लाक चित्र पं॰ घासीराम एम. ए. सम्पादित ऋषि के जीवनचरित में लगवा दिया गया था।

२. ऋषि के उपरोक्त इस्ताद्धर मिन आर्डर फार्म के दुकड़े पर हैं। यह मिन आर्डर उनके शिष्य स्वामी ईश्वरानन्द सरस्वती ने नगर पानीपत से पुस्तकों के लिए जोधपुर मेजा था। देखो म० मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार पृ० २६ । Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# \* परिशिष्ट (१) \*

# [मूल ग्रन्थ मुद्रण के अनन्तर संगृहीत पत्र-विज्ञापन-पारसल सूचना आदि]

# [संग्रहीता-युधिष्ठिर मीमांसक]

[3]

आ कृष्णेन (यजु० ३३।४३) का अर्थ

[६०६]

(श्राकृष्णेन) श्राकर्षणात्मना (रजसा) रजोरूपेण रजतस्वरूपेण वा (रथेन) रमणीयेन (देवः) द्योतनात्मकः (सविता) प्रसवकर्त्ता वृष्ट्यादेः (मर्त्यम्) मर्त्यलोकम् (श्रमृतम्) श्रोषध्यादिरसं ( निवेशयन् ) प्रवेशयन (भुवनानि पश्यन्) दर्शयन् (याति) रूपादिकं विभक्तं प्रापयतीत्यर्थः (हिरण्ययेन) ज्योतिर्मयेन ।

(सविता) सर्वस्य जगत उत्पादकः (देवः) सर्वस्य प्रकाशकः (मर्त्यम्) मर्त्यलोकस्थान मनुष्यान् (अमृतम्) सत्योपदेशरूपं (निवेशयन्) प्रवेशयन् सर्वाणि (भुवनानि) सर्वज्ञतया (परयन्) सन् (आकृष्णेन) सर्वस्याकर्षणस्वरूपेण परमाण्यनां धारणेन वा (रथेन) रमणीयेनानन्दस्वरूपेण वर्तमानः सन् (याति) धर्मात्मनः स्वान् भक्तान् सकामान् प्रापयतीत्यर्थः।

सं० १९३१ पौष वदी षष्ठी बुधवार, ७ काल (घरटा) ४० मिनट सही सम्मतिरत्र दयानन्द-सरस्वतीस्वामिन:४।

[8]

आक्षेप खण्डन सूचना

[809]

विष्णु शास्त्री के स्त्राद्मेप का खरडन।

१. यह मन्त्रव्याख्या पं • देवेन्द्रनाथजी संकलित जीवनचरित्र १० ३२३ पर छपी है।

२. यह गुजराती पंचांगानुसार है । उत्तरभारतीय पंचाङ्गानुसार माघ वदी ६, तदनुसार २७ जनवरी १८७५।

३. यह समय सायंकाल का है।

४. इस मन्त्रार्थं का संकेत पूर्ण संख्या १४ के पत्र (पृष्ठ २६ पं०२) में इस प्रकार है—'श्राकृणेनेति, मन्त्र के श्रर्थं हमारा उन के पर निश्चय के श्रर्थं पत्र मेजा होगा।'' इसे पूर्ण संख्या १३ के आगे जोड़ें।

प्र. इस का निर्देश पूर्ण संख्या १४ के पत्र (पृष्ठ २६ पं॰ १३) में है—इस का 'खरडन समा में इमने सब को सुना दिया तथा लिख भी दिया'', तथा पूर्ण संख्या १५ के पत्र (पृष्ठ २७ पं॰ ३) में भी—''उस का

पत्र-सूचना (५२७) [१] ६०८ [पञ्जाब गवर्नमेन्ट-लाहौर ]° सरकार धन से [ मेरे वेदभाष्य की ] सहायता करे और वह सरकारी कालेजों में पढ़ाया जावे। १२ मई १८७७ [ब्येष्ठ कृष्ण १४ सं १९३४] पारसल-सूचना<sup>२</sup>(३) [६८९] [१३] [ पं० गोपालराव हरि देशमुख ] वेद्भाष्य का नमूना3 २८ नवम्बर १८७७ [मार्गशीर्ष कृष्ण ८ सं० १९३४] [88] पत्र-सूचना (५२८) [880] [ पं० गोपालराव हरि देशमुख ]४ १२ दिसम्बर १८७७ [मार्ग० ग्रु० ७ बुधवार १९३४] [33] 866 पारसल-सूचना (४) [बाबू माधोलाल जी दानापुर] आर्थसमाज के दस नियमों की दो प्रतियां। ५ ३१ मार्च १८७८ [ चैत्र कुष्ण १३ सं० १९३४ ]

[२३] पारसल-सूचना (५)

[बाबू माधोलाल जी दानापुर ] श्रार्यसमाज के उपनियमों की एक प्रति।<sup>६</sup> १ श्रप्रैल १८७८ [चैत्र कृष्ण १४ सं० १९३४ ]

प्रत्युत्तर करके उसके पास मेजा था, परन्तु उसने नहीं छापा", मिलता है। यतः इसका उल्लेख पूर्ण संख्या १४ में है, अतः इसे पूर्ण संख्या १३ से आगे जोड़े गये पूर्ण संख्या ६०६ से आगे जोड़ें।

- १. इसकी सूचना श्री पं॰ देवेन्द्रनाथ संकलित जीवन चरित्र पृष्ठ ४१४ में तथा इसी ग्रन्थ के पृष्ठ ५४ की टिप्पणी की पंक्ति १, २ में है। इसे पूर्ण संख्या ३९ से आगे जोड़ें।
  - २. यहां पारसल शब्द से पारसल पैकेट बुक पोस्ट आदि सब का सामान्य प्रहण समझना चाहिये।
  - ं ३. इस का उल्लेख पूर्ण संख्या ५४ के प्रारम्भ में है। इसे पूर्ण संख्या ५४ के आगे जोड़ें।
    - ४. इस पत्र की सूचना पूर्ण संख्या ५६ में है। इसे पूर्ण संख्या ५५ से आगे जोड़ें।
    - ५. इस की सूचना पूर्ण संख्या ७७ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ७६ के आगे जोड़ें।
    - ६. इस की सूचना पूर्ण संख्या ७७ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ७७ के आगे जोड़ें।

[8,3]

पन्न-सारांश (५२९)

[६१३]

पं० श्यामजी कृष्ण वर्मा ]

[विदेश जाने से पूर्व] जो हमारे पास रह कर वेद और शास्त्र के मुख्य मुख्य विषय देख लेते ती अच्छा होता।

पत्र-सूचना (५३०, ५३१)

दो पत्र इङ्गलैएड भेजे गये। र

[२०]

पत्रांश (५३२)

िला० मूलराज जी एम० ए० ] अमरीका वाले बराबर वेद को मानते हैं और उसकी शिचा के इच्छक हैं। २७ जुलाई १८७५ [ श्रा० व० १३ सं० १९३५ ]

[38]

पारसल-सूचना (६)

[ लाला मूलराज जी एम० ए० ] श्रमरीका की चिद्रियां भेजी गईँ। ४ अगस्त १८७५<sup>४</sup> [ आ० ग्रु॰ ६ सं०१९३५ ]

[१]

पत्र-सारांश (५३३)

जो रुपया तुम्हारे पास है, वह हमारे पास भेज दो। ठाकुर मुकुन्द्सिंह जी

२. इन की सूचना इसी ग्रन्थ के पृष्ठ १०१ पंक्ति ३० में है। ये दोनों पत्र किस को लिखे गये; यह श्रज्ञात है। इन्हें पूर्ण संख्या ८५ के आगे जोड़ें।

इ.. यह पत्रांश श्रीर तारील श्री पं० घांसीराम जी संपां० जीवन चरित पृष्ठ ७६६ में उद्घृत है। इसे पूर्ण सख्या ⊏६ के आगे जोड़ें ।

४. इस की सूचना और तारीख का निदंश पूर्ण संख्या ८८ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ८७ के आगे जोड़ें।

प्. यह त्राशय पूर्ण संख्या ८६ के पत्र में उल्लिखित है। वहां 'कई बार लिख चुके' ऐसा निर्देश है। उन में से एक पत्र की सूचना यहां बना कर दी है। तिथि का यत्किचित संकेत नहीं है। पुनरिप इमारे विचार में इसे पूर्ण संख्या ८८ के आगे जोइना उचित होगा।

१. इस का निर्देश पूर्ण संख्या ८२ के पूत्र में है इसे पूर्ण संख्या ७९ के आगे जोड़ें। इस विषय का उल्लेख ऋषि दयानन्द ने पूर्ण संख्या ३६ के पंत्र गोपालराव हरि देशमुख के पत्र में भी किया है।

[२४] रसीद (३)

[६१९]

[ बाबू माधोलाल जी, दानापुर ] १०।=)।। दस रुपये साढ़े छ द्यांने प्राप्त हुए।

[8]

पत्र-सारांश (५३४)

[६२०]

[बा॰ हरिश्चन्द्र चिन्तामिं बम्बई ] दो वेदभाष्यभूमिका बाबू माधोलाल दानापुर के पास भेज दो।<sup>२</sup> १३ सितम्बर १८७८ [श्राधिन कु० २ सं० १९३५ ]

[७]

पत्र-सारांश (५३५)

[६२१]

[ प्रवन्धक वेदभाष्य कार्यालय बम्बई ] ७ ऋग्वेद श्रौर ६ यजुर्वेद रामाधार वाजपेयी लखनऊ को भेज दो।

[6,9]

पत्र-सारांश (५३६, ५३७)

[६२२, ६२३]

[ बा॰ हरिश्चन्द्र चिन्तामिण बम्बई ] पं॰ रयाम जी कृष्ण वर्मा को वेदभाष्य का काम सौंप दो।

[९]

पत्र-सारांश (५३८)

ेल्य [६२४]

श्री कर्नेल बालकाट साहब ]

यहां श्रायिवर्त में भी बहुत से मनुष्य श्रायिसमाज के नियमों को स्वीकार नहीं करते, थोड़े से करते हैं, तो वहां [ श्रमरीका में ] वैसी बात होने में क्या श्राश्चर्य है। इसलिये जो मनुष्य श्रपनी प्रसन्नता से श्रायिसमाज के नियमों को मानें वे वेद मतानुयायी श्रीर जो न मानें वे केवल सोसाइटी के समासद रहें। उन का श्रलग हो जाना श्रच्छा नहीं।

१. इस की सूचना पूर्ण संख्या १०२ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या १०१ के आगे जोड़ें।

२. यह आशय हम ने पूर्ण संख्या १०२ के अनुसार बनाया है। तारील का निर्देश भी इसी पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या १०१ के आगे जोड़ी गई रसीद (पूर्ण संख्या ६१६) से आगे जोड़ें।

३. यह संतिश पूर्ण संख्या ११६ तथा १२१ के श्राधार पर बनाया है। इसे पूर्ण संख्या ११५ के आगे जोड़ें।

४. पूर्ण संख्या १२५ के पत्र में २७ श्रक्त्वर १८७८ से पूर्व पं॰ श्यामजी को वेदभाष्य का काम सौंपने के लिये ३ चिडियां लिखने का निर्देश हैं। उन में से १ चिडी ता॰ २२ श्रक्त्वर को लिखी गईं। देखी पूर्ण संख्या ११८, ११६ पृष्ठ ११५ टि॰ १। शोष दो पत्रों की तिथियां श्रज्ञात हैं। उन्हें पूर्ण संख्या ११८ से पूर्व ही कहीं जोड़ना युवत होगां।

४. यह साराश पूर्ण संख्या २५६ के विज्ञापन (पृष्ठ २०६ पं० २८ से पृष्ठ २०७ पं० ३ तक ) में

859

[94]

### पत्र-सारांश (५३९)

[६२५]

[ पं० गोपालराव हरि देशमुख ]

बम्बई जाकर अपने सामने हरिश्चन्द्र चिन्तामिए से वेद्भाष्य का सब काम पं० श्याम जी कृष्णवर्मा को सौंपवा दो।

२० नवम्बर ( या उस से पूर्व ) १८७८।

[२०]

# पारसल-सूचना (७)

६२६

[ पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा वम्यई ] जिन प्राहकों ने चन्दा नहीं दिया उनका सूचीपत्र। र २० नवम्बर ७⊏

129

### पत्र-सारांश (५४०)

[६२७]

[ पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा वम्बई ] वेद्माष्य का चौथा श्रंक क्यों नहीं निकला।

[3]

### पत्र-सूचना (५४१)

[६२८]

[ पीटर डैविड्सन स्काटलैएड ]

निर्िष्ट है। बाबू इरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने यह पत्र कर्नेल आलकार को न्यूयार्क नहीं मेजा, यह भी पृष्ठ २०७ ए० ४, ५ से व्यक्त है। यह पत्र सम्भवतः अक्टूबर १८७८ के अन्त में मेजा गया था। इसे पूर्ण संख्या १२८ के मे जोड़ें।

१. वह ग्राशय हमने पूर्ण संख्या १३४ के ग्राधार पर बनाया है । इसे पूर्ण संख्या १३३ के अनन्तर जोड़ें।

२. इस स्वीपत्र के भेजने का निर्देश पूर्ण संख्या १३४ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या १३४ के आगे जोड़ें।

३, इस ग्राशय के पत्र की सूचना पूर्ण संख्या १३८ के पत्र में है। इस से पूर्व का जो पत्र उपलब्ध है, वह ११ सितम्बर १८७८ का है (पू॰ सं॰ १३५)। यह इस के ग्रानन्तर लिखा गया था। इसे पूर्ण संख्या १३७ के आगे जोड़ें।

४. इस पत्र की सूचना पूर्ण संख्या १७६ के पत्र में है। यह पत्र अंग्रेजी में लिखा गया था। इसे पूर्ण संख्या १७९ के आगे जोड़ें।

[४] पत्र-सारांश (५४२) [६२९]
[केशवलाल निर्भयराम सूरत]
संस्कारविधि का हिसाब ठीक नहीं। 9
[१] जन्मचरित्र
[६३०]
मैनेजर वेदुभाष्य बम्बई को भेजा। २

मैनेजर वेदभाष्य बम्बई को भेजा। र २७ द्यगस्त १८७९

[२५] पत्र-सारांश (५४३)

[६३१]

[ वाबू माधोलाल जी दानापुर ] हम हरिहर चेत्र के मेले में जावेंगे, डेरे श्रादि का प्रवन्ध करना ।<sup>3</sup> शाहजहांपुर ।

[३७] विज्ञापन-सूचना [दानापुर में पहुंचने श्रौर व्याख्यान देने के सम्बन्ध में ]\*

[६३२]

[36]

विज्ञापन-स्चना

[६३३]

[बंगाली टोला (काशी ) स्कूल में २० दिसम्बर १८७९ को व्याख्यान देने के सम्बन्ध में।]

[0,0]

पत्र-सारांश (५४४)

[६३४]

[ करनैल आलकाट, मैडम ब्लेवेस्तकी ]

मैं सिवाय वेदोक्त सनातन त्रार्यावर्तीय धर्म के श्रन्य सुसाइटी समाज वा सभा के नियमों को न स्वीकार करता था, न करता हूँ, न करूंगा। क्योंकि यह बात मेरे श्रातमा की दृदतर है, शरीर प्राण्मी जायें तो भी इस धर्म से विरुद्ध कभी नहीं हो सकता।

१. इस आशय के पत्र की सूचना १६ मार्च १८८० के पत्र (मुंशी॰ सम्पा० पत्रव्य॰ पृष्ठ २८७) में है। वहां इसे ८ मास पूर्व का कहा है। अगले ५ अप्रेल के पत्र (वही, पृष्ठ २८७) में १० मास पीछे पत्र आना लिखा है। अतः सम्भव है यह अगस्त १८७६ में लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या १८१ के आगे जोड़ें।

२. इस का उछिल पूर्ण संख्या १८३ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या १८३ के आगे जोड़ें।

३. इस पत्र का संकेत मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ४२७ पर छपे विना तिथि के पत्र में है। उक्त पत्रानुसार यह पत्र शाहजहांपुर से मेजा गया था। श्रातः इसे पूर्ण संख्या १८९ के आगे जोड़ें।

४. इस की सूचना पूर्ण संख्या १६३ के पत्र में है। उस में लिखा है—"विज्ञापन तुमने छपवा लेना, नमूना मेजते है।" इसे पूर्ण संख्या १९३ के आगे जोड़ें।

थ्र. इस विज्ञापन की सूचना पं॰ घासीराम जी सम्पादित जीवन चरित पृष्ठ ५१४ में उपलब्ध होती है। इसे पूर्ण संख्या २०६ के आगे जोड़ें।

### परिशिष्ट (१)

मेरा नाम त्राप ने त्रपनी इच्छा से जहां कहीं [ थियोसोफिकल सोसाइटी के ] सभासदों में लिखा हो काट दीजिये।

[११] तार आश्चय (४) [६३८] करनैल आलकाट] जैसा हमने प्रथम वैदिक धर्म उपदेशक लिखा था वैसा लिखो।

[३९] विज्ञापन-सूचना [६३६] [६३६]

[४०] विज्ञापन-सूचना [६३७] [काशी से वैशाख कृष्ण ११ सं० १९३७ को चले जाने के सम्बन्ध में ]

- १. ये दोनों भाग पूर्ण संख्या २६६ के पत्र में (पृष्ठ २५६ पर) पृथक् पृथक् स्थानों में उद्घृत हैं। ये दोनों ग्रंश एक ही पत्र के हैं या भिन्न भिन्न के, यह ग्रज्ञात हैं। हमारे विचार में ये ग्रंश एक ही पत्र के हैं। यह पत्र काशी से बम्बई को लिखा गया था। पूर्ण संख्या ४०० के विज्ञापन (पृष्ठ ३२०) में भी इस पत्र का संकेत है। इसे पूर्ण संख्या २१६ के आगे जोड़ें।
- २. करनेल आलकाट आदि ने श्री स्वामी जी महाराज का नाम विना स्वीकृति के ही यियोसोफिकल सोसाइटी के सभासदों में लिख लिया था। जब श्री स्वामी जी महाराज ने इस के विरोध में कहा पत्र लिखा 'जहां हमारा नाम लिखा हो वहां से शीघ्र निकाल दो' (इस का संकेत पूर्ण संख्या ६३४ के पत्र की छोर है) । तब करनेल आलकाट ने तार द्वारा पूछा कि हम आप के लिये क्या जिखें। उस के उत्तर में ऊपर वाला तार दिया गया। देखो पूर्ण संख्या ४०० का विज्ञापन, पृष्ठ ३२०। इसे पूर्ण संख्या २२१ के आगे जोड़ें।
- ३. इसकी सूचना पूर्णसंख्या २२२ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २२१ के आगे जोड़े गये तार (पूर्ण संख्या ६३५) के आगे जोड़ें। वेदमान्य और वैदिक यन्त्रालय नाम बदलाने के सम्बन्ध में एक विज्ञापन यजुर्वेदमान्य ग्रंक १३ के श्रन्त में छुपा है, वह इस प्रकार है—
- ''(१) सब सजनों को विदित हो कि मुंबई में १३ श्रंक तक छुपने का था सो छुप चुका, श्रब पीछे सब काम काशी श्रार्थात् बनारस में रहेगा। १२वें श्रंक में काशी के यन्त्रालय का नाम ''श्रार्थ प्रकाश'' छुपा था उस के बदले ''वैदिक'' यन्त्रालय नाम रक्खा गया है। इस्र हिये श्रब पीछे, वेद सम्बन्धी पत्रव्यवहार मुम्बई श्रीर बाहर के सब लोगों को मुनशी बख्तावरिंग्ह जी प्रबन्धकर्ता ''वैदिक'' यन्त्रालय काशी से करना चाहिये। मुम्बई से इस का कुछ काम नहीं।''

पूर्ण संख्या २२२ में निर्दिष्ट विज्ञापन यहीं है या अन्य, यह अज्ञात है। इस विज्ञापन से यह स्पष्ट है कि अपृषि ने जो प्रेस चालू किया था उस का नाम "वैदिक " इतना ही था (दो बार वैदिक पद को विशिष्ट निर्देशक चिह्नों "" के मध्य में छापा है)। यन्त्रालय पद तो प्रेस का पर्यायवाची है।

४. ता० ५ मई सन् १८८०।

५. इस विज्ञापन की सूचना श्री पं॰ घासीराम जी सम्पा॰ जीवन चरित पृष्ठ ६०६ में है। इसे पूर्ण संख्या २३० के आगे जोड़ें। [४,५] पत्र-सूचना (५४५,५४६) [६३८,६३९] [६३८,६३९] [७वालादत्त को बुलाने के विषय में दो पत्र]

[३१] पत्र-सूचना (५४७) [ मंशी बख्तावरसिंह काशी ]२

[ मुंशी बख्तावरसिंह काशी ]<sup>२</sup> वैशाख कृष्ण १४ सं० १९३७ [८ मई १८८०]।

[३२] पत्र-सारांश (५४८)

[888]

[880]

[मुंशी बख्तावरासह काशी] पं रामाधार वाजपेयी (लखनऊ) के पास जो जो पुस्तकों वे लिखें, भेज दिया करो।

[३३] पारसल-सूचना (८)
[मुंशी बख्तावरसिंह काशी]
राजा शिवपसाद का उत्तर = भ्रमोच्छेदन पुस्तक भेजा।४
श्राषाद कु० २ सं० १७३७।

[८] पत्र-सारांश (५४९) [६४३

[पं० सुन्दरलाल जी, प्रयाग] २५०) रु॰ छपने की भूल अगले अंक में ठीक कर दी जायेगी।

१. श्रार्यसमाज फर्रखाबाद के १७-५-१८८० के पत्र में ज्वालादत्त को बुलाने के लिए ३ तीन पत्र पहुँचने का उल्लेख हैं (मुंशी० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ ३६५, ३६६) तीन में से एक सूचना हम पूर्ण संख्या २३८ पर छाप चुके हैं । उसी के श्रास पास दो पत्रों की सूचना श्रीर जोड़नी चाहिये।

२. इस पत्र ब्रीर तिथि की सूचना पूर्ण संख्या २३२ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २३२ के आगे जोड़ें।

रे. इस ब्राशय की सूचना पूर्ण संख्या २३६ के पत्र में है। लखनऊ से मेजा हुब्रा जो पत्र पूर्ण संख्या २३३ पर छपा है, उस में यह उल्लेख नहीं है। संख्या २३३ के पत्र में वैशाख कृष्ण १४ को एक पत्र मेजने का उल्लेख है। सम्मद है उस में यह उल्लेख हो, या यह पत्र वै० कृ० १४ से पूर्व किसी दिन लिखा गया हो। इसे पूर्ण संख्या २३२ के बागे जोड़ें गये (पूर्ण संख्या ६४०) पत्र से आगे जोड़ें।

४. इस रजिस्टर्ड पारसल के भेजने का तथा तिथि का उल्लेख पूर्ण संख्या २३७ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २३७ के आगे जोड़ें।

प्र. इस त्राशय के पत्र की सूचना पूर्ण संख्या २४७ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २४७ के आगे जोड़ें।

| [३४]<br>[ मुंशी बख्तावरसिंह, का<br>ऋग्वेद खौर यजुर्वेद भाष्य<br>खाषाढ़ सुदी १२, सोमवा | य के पत्रों का पारसल।               | [६४४]     |
|---|-------------------------------------|-----------|
| [१]<br>फर्चखाबाद को । <sup>२</sup>  | पत्र-सूचना (५५०)                    | [६४५]     |
| [३५]<br>[ मुन्शी बख्तावरसिंह, क<br>ऋग्वेद श्रीर यजुर्वेदभाष्य<br>सम्भवतः श्रावण वदी २ | के पत्रों का पारसल ।3               | [६४६]     |
| [१]<br>कुजरांवाले पत्र का उत्तर।  | पत्र-सूचना (५५१)                    | [880]     |
| [३६] [ मुन्शी बख्तावरसिंह, का ऋग्वेदभाष्य के पत्रे ३०८- श्रावण बदो २ सं० १९३७         | —३२३, यजुर्वेदमाष्य के ३०६—३२० तक।" | [६४८]     |
| [39,36]   | पत्र-सारांश (५५२,५५३)               | [६४२,६५०] |

[ मुनशी बख्तावर्सिंह, काशी ] श्रनाथ के पालन श्रर्थात् लावारस के लिये ५०० सौ हपैये बाबू दुर्गाप्रसाद जी ने दिये। १०) हम ने।

३. इस पारसल तथा तिथि की सूचना पूर्ण संख्या २५१ में है। इसे पूर्ं सं० २५१ के आगे जोड़ें।

४. इस की स्चन। पूर्ण बंख्या २५३ में है। इसे पूर्ण संख्या २५२ से आगे जोड़ें।

प्. इस की सूचना पूर्ण संख्या २५३ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २५३ के आगे जोड़ें।

इ. पूर्ण संख्या २६० के अन्त में 'इम ये बात तीन बखत लिख चुके हैं' ऐसा उल्लेख है एक पत्र पूर्ण संख्या २५१ पर छपा है। वह प्रथम पत्र प्रतीत होता है। अगले दो पत्र प्राप्त नहीं हो सके। इन्हें पूर्ण संख्या २५४ के आस पास जोड़ें।

१. इस पारसल ख्रीर तिथि का उल्लेख पूर्ण संख्या २४८ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २४७ के आगे जोडे गये (पूर्ण संख्या ६४३) पत्र के आगे जोड़ें।

२. यह पत्र किस को तथा किस कार्य के लिए लिखा गया, यह अज्ञात है। इस की सूचना पूर्ण संख्या २५१ के पत्र में है। इसे पर्ण संख्या २५० के आगे जोड़ें।

[३९] पत्र-सारांश (५५४)

[६५१]

[ मुन्शी बख्तावरसिंह, काशी ]

ठाकुर बलवन्तसिंह जिला बुलन्दशहर परगणे शिकारपुर प्राम चन्दोख वाले के २५) बाबत वेदमाध्य के हमारे पास जमा हुए।?

[22]

पत्र-सूचना (५५५)

[६५२]

[ लाला मूलराज जी ] मुन्शी इन्द्रमणि सम्बन्धी उर्दू पत्र श्रंग्रेजी श्रनुवाद के लिये।

[25,29]

पत्र-सूचना (५५६,५५७)

[६५३,६५४]

[गोपालराव हरिदेशमुख ]<sup>s</sup> गोविन्द रानडे ]<sup>s</sup>

[6]

पत्र-सूचना (५५८)

[६५५]

[स्वामी कृपाराम जी] पत्र का उत्तर।

[2]

पत्र-सूचना (४५२)

[६५६]

[बलदेवसिंह]

२. इस की सूचना पूर्ण संख्या २६२ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २६० के आगे जोड़े गये (पूर्ण संख्या ६५१) पत्र से आगे जोड़ें।

३. इन दोनों पत्रों की सूचना मुन्शी । सम्पा । पत्र व्य । पृष्ठ २४७ में हैं । ये संमवत: स्वीकारपत्र (वसीयननामें) के सम्बन्ध में रहे होंगे (१६ अगस्त १८८० को रिजस्ट्री कराये स्वीकारपत्र पूर्ण संख्या २६४ में इन दोनों महानुभावों का नाम है।) इन दोनों पत्रों के उत्तर देने की सूचना वहीं पृष्ठ २४६ में है। इन्हें पूर्ण संख्या २६६ के आगे जोड़ना चाहिये।

४. इस पत्र की सूचना पूर्ण संख्या २७० के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २६९ से आगे जोड़ें।

प्र इस की सूचना पूर्ण संख्या २७० के पत्र में है। यह पत्र श्री स्वामी कृपाराम जी के पूर्ण संख्या ६४५ के पत्र के साथ मेजा गया था, यह भी पू॰ सं॰ २७० के पत्र से ही व्यक्त है। इसे पूर्ण संख्या २६९ से आगे जोड़े गये (पूर्ण संख्या ६५५) पत्र से आगे जोड़ें।

१. इस ग्राशय वाले पत्र का उल्लेम्ब पूर्ण संख्या २६१ के पत्र में है। वहां लिखा है—'…… जमा हुए इस का हाल पिछले पत्र में लिख चुके हैं।' इस से पूर्व का जो पत्र पूर्ण संख्या २६० पर छुपा हैं वह आ॰ वदी ३० सं० १६३७ (५ ग्रागस्त १८८०) का है, उस में यह प्रसङ्ग नहीं है। ग्रात: यह कोई दूसरा पत्र रहा होगा। इसे पूर्ण संख्या २६० के आगे जोड़ें।

| [४०] श्पारसल-सूचना (१२) [ सुन्शी बख्तावरसिंह, काशी ] वसीयतनामा भेजा। भाद्र सुदी १२ सं० १९३७ [ १५ सितम्बर १८८० ]            | [६५७]    |
|--|----------|
| [४१] पत्र-सूचना (५६०) [ सुन्शी बख्तावरसिंह, काशी ] पं० श्यामजी कृष्णवर्मी के पास आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इङ्गलैएड पुस्तकें | [\$46]   |
| विषय में । ?   | भेजने के |
| [२३] पारसल-सूचना (१३)<br>[ लाला मूलराज जी ]<br>वसीयतनामे का।   | [६५९]    |
| [७] पारसल्ल-सूचना (१४) [ पं० भीमसेन (१) काशी ] वेद्भाष्य के पत्रे (१)  | [६६०]    |
| [८] पारसल-सूचना (१५)<br>[पं० भीमसेन (१) काशी ]<br>यजुर्वेदभाष्य के २० प्रष्ठ ।   | [६६१]    |

१. वसीयतनामा भेजने का तथा उक्त तिथि का उल्तेख पूर्ण संख्या २७८ के पत्र में है । इसे पूर्ण संख्या २७७ के आगे जोड़ें।

२. इस पत्र की सूचना पूर्ण संख्या २७६ के पत्र के श्रन्त में है। इसे पूर्ण संख्या २७८ के आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना पूर्ण संख्या २८१ के पत्र में है। मुन्शी बख्तावरसिंह को बसीयतनामा भाद्र सुदी १२ सं० १६३७ (१५ दिस॰ १८८०) को मेजा था (देखो पू॰ सं० २७७)। सम्भव है लाला मूलराज को भी उसी के श्रास पास मेजा गया होगा। श्रतः इसे पूर्ण संख्या २७८ के आगे जोड़ें गये (पू० सं० ६५८) पत्र के आगे जोड़ें।

४. पूर्ण संख्या २८२ के पत्र में रिजस्ट्री मेजने का उल्लेख है । यहां पाठ ब्रुटित है । इसने वेदमान्य के पत्र मेजने का अनुमान किया है। यह पारसल मुनशी नख्तावरसिंह के नाम की भी मेजा जा सकता है। इसे पूर्ण संख्या २८१ के आगे जोहें।

प्र. इस की सूचना पूर्ण संख्या २८२ के पत्र में है। यह सम्भवत: श्राधिन शु॰ १ सं॰ १६३७ (५ श्रवट्र॰ १८८०) को या उस के एक दो दिन पीछे मेजा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या २८२ के आगे जोड़ें।

[8]

पत्र-सूचना (५६१)

[६६२]

[ लाला रामशरणदासजी, मेरठ ] वैदिक यन्त्रालय काशी के कार्य की सहायता के लिये किसी पुरुष को भेजने के विषय में 19

[२६]

पत्र-सूचना (५६२)

[६६३]

[ लाला कालीचरण रामचरणजी फर्कखाबाद ] वैदिक यन्त्रालय काशी के कार्य की सहायता के लिये किसी पुरुष को भेजने के विषय में ।2

[8]

पत्र-सूचना (५६३)

[888]

[ सेठ निर्भयराम जी, फर्रुखाबाद ] रुपयों के हिसाब के विषय में।

[9]

पत्र-सारांश (५६४)

[६६५]

[लाला रामशरणदासजी मेरठ ] मुन्शी बख्तावरसिंह के हिसाब के पत्र काशी भेज दो।

[6]

पत्र-सारांश (५६५)

[६६६]

[ लाला रामशरणदास जी, मेरठ ]

इस समय इस (= हिसाब की) बात के होने से कार्य में विष्न होगा, कार्य होने दीजिये और

१. इस की सूचना पूर्ण संख्या २८४ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २८३ के आगे जोड़ें। यद्यपि पूर्ण संख्या २८४ में केवल मेंरठ पत्र मेजने का उल्लेख है तथापि पू० सं० २८७ में काशी श्रादमी मेजने का भी उल्लेख है। इसने दोनों पत्रों को मिला कर उक्त विषय बनाया है।

२. इस पत्र के फर्रखाबाद मेजने की सूचना पूर्ण संख्या २८४ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २८३ के आगे जोड़ें। अगले पूर्ण संख्या २६६ के लाला कालीचरण के पत्र में काशी मेजे गये व्यक्ति के सम्बन्ध में उल्लेख है। अतः यह पत्र लाला कालीचरण को ही मेजा गया होगा।

३. इस की सूचना पूर्ण संख्या २८४ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २८३ के आगे जोड़े गये (पू० सं० ६६२ ६६३) पत्र के आगे जोड़ें।

४. इस की सूचना पूर्ण संख्या ३१६ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या २८६ के आगे जोड़ें। विशेष देखो पृष्ठ २६५ की टि०२ का कोछान्तर्गत परिवर्धित पाठ (संशोधन पत्र में)।

प्र यह सारांश पूर्ण संख्या ४६८ के पत्र में (पृष्ठ ३८० पर) उद्घृत है। यह पत्र १७ श्रक्टूबर से २१ नवम्बर के मध्य किसी तारीख को लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या २९१ से आगे जोड़ें।

[8]

### पत्र-सारांश (५६६)

[६६७]

[ लाला श्यामसुन्दरदास जी रहीस, मुरादाबाद ] मुन्शी [इन्द्रमिण] जी से हिसाब लेकर लाला रामशरणदास जी के पास भिजवा दीजिये।

[9,6]

पत्र-सूचना (५६७, ५६८)

[६६८,६६९]

िसेवकताल कृष्णदास र

[६]

पत्र-सारांश (५६९]

[६७0]

पं ज्वालाद्त्त ] व्याकरण में नवीन रचना की कुछ श्रावश्यकता नहीं।

[88]

विज्ञापन

६७१

श्रीयुत स्वामी द्यानन्द सरस्वती जी ने अब परमात्मा की. कृपा से संस्कृत विद्या के पुनरुद्धार श्रीर मनुष्यों के उपकार के लिये सर्वशिष्ट माननीय पाणिनीय व्याकरण श्रष्टां श्यायी जो कि पढ़ने वालों को अति कठिन थी, उस की व्याख्या महाभाष्यस्थ अत्यन्तोपयोगी वचन तथा उदाहरण और प्रत्युदा-हरण सहित सुगम भाषा करके घ्यनेक भागों में बनवाई है उन में से प्रथम भाग यह संनिध विषय जिस में वर्गों का मेल है और विकार आदि होने से कौन २ पर कैसे २ हो जाते हैं, अप गया है। मूल्य ॥) बाहर के मंगाने वालों को डाक महसूल सहित ॥)॥ देने होंगे।

१. यह सारांश पूर्ण संख्या ४६८ के पत्र में (पृष्ठ ३८० पर) उद्धृत है। यह पत्र १७ अवदूबर से २१ ग्राक्टूबर के मध्य किसी तारील को लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या २९१ के आगे जोड़े गये (पूर्ण संख्या ६६६) पत्र से आगे जोड़ें।

२. इन दो पत्रों की सूचना ३ दिसम्बर १८८० के गोपालराव इरि देशमुख तथा सेवकलाल कृष्णदास के पत्रों में है। देखो मुंशी वसम्पाव पत्रव्यव पृष्ठ २४६, २५०। इन में से एक पत्र में सम्भवतः थियोसोफिकल सोसाइटी में विना स्वीकृति के लिखे गये अपने (स्वामी दयानन्द के) नाम कांटने का उल्लेख होगा ! यह गोपाल-राव हरि देशमुल के इस पत्र (वही पृष्ठ २४६) तथा मार्गशीर्ष वदी ६ सं॰ १६३७ (२३ नवम्बर १८८०) को मैडम ब्लेवेस्तकी के नाम लिखे गये (पू॰ सं॰ २१६ पृष्ठ २५६) पत्र को मिलाकर पढ़ने से ज्ञात होता है। इसलिये इन्हें पूर्ण संख्या २९८ के आगे जोड़ें।

३. इस ग्रमिपाय के कई पत्र लिखने का संकेत पूर्ण संख्या ३१२ के पत्र में उपलब्ध होता है। यहां

एक पत्र-सारांश बना कर रक्खा है। इसे पूर्ण संख्या ३०३ के आगे जोड़ें। ४. यह सन्धितिषय के त्रावरण पत्र (टाइटल पेज) के द्वितीय पृष्ठ पर छपा है। इसे पूर्ण संख्या ३०८

से आगे जोड़ें।

जो सज्जन लिया चाहें मुक्त से इस पते पर पत्रव्यवहार करें। लाला शादीराम<sup>9</sup> प्रबन्धकर्चा वैदिक यन्त्रालय लक्ष्मी कुण्ड बनारस

[0]

पत्र-सूचना (५७०)

[६७२]

[ पं० ज्वालाद्त्त, काशी ] र

[9]

पारसल-सूचना

[६७३]

[ प्रबन्धकर्त्ता वै० य०, काशी ] यजुर्वेद भाष्य के पत्रे।

[6]

युद्धि अयुद्धि पत्र-सूचना (१)

[808]

[पं० ज्वालादत्त, काशी ] शुद्धि अशुद्धि के चार पांच पत्रे नमूने के तौर पर।

[९]

पारसल-सूचना

[804]

[ पं० ड्वालाद्त्त (१) काशी ] [ नामिक के ] १⊏ पृष्ठ ।

१. यद्यपि इस विज्ञापन पर लाला शादीराम के इस्ताच् हैं, तथापि पूर्ण संख्या ३०६ के पत्र के ''जो नोटिस सन्धिविषय पर छुपेगा सो भ्राप के पास रवाना करते हैं, सो छाप देना'' लेख से स्पष्ट है कि यह ऋषि दयानन्द का लिखवाया हुआ है। अत एव इस ने इसे यहां छापा है।

२. इस पत्र की सूचना १८ दिसम्बर १८८० (मुन्शी० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ ४१२) के पत्र में हैं। इसे सम्मव है पूर्ण संख्या ३०६ वाले शादीराम के पत्र के साथ मेजा होगा। श्रतः इसे पूर्ण संख्या ३०९ के आगे जोहें।

४. पं॰ ज्ञालादत्त के शोधे हुए वेदमान्य के शुद्धि श्रशुद्धि पत्र नमूने के तौर पर मेजे गये थे। देखो पूर्ण संख्या ३११ के आगे जोड़ें।

४. इस की सूचना पौ॰ शु॰ १० (सं॰ १६३७ = १० जनवरी १८८०) के पं॰ बत्रालादत्त के पत्र (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ४१७) में है। इसे पूर्ण संख्या ३१३ के आगे जोड़ें।

| [4] | पत्र-सारांश (५७१)<br>[ लाला शादीराम जी, काशी ]<br>मुन्शी वस्तावरसिंह के हिसाब के रजिस्टर भेजो । १                 | [६७६] |
|-----|---|-------|
| [१० | पत्र-सूचना (५७२)<br>[पं० ज्वालादत्त, काशी ]<br>श्रशुद्धियों के सम्बन्ध में ।२                                     | [६७७] |
| [२७ | पत्र-सारांश (५७३)<br>[ लाला कालीचरण रामचरणजी, फर्रुखाबाद ]<br>१००) पिंडतों के बावत हमारे पास भेज दो। <sup>3</sup> | [६७८] |
| [6] | पत्र-सारांश (५७४) [ लाला रामशरणदासजी, मेरठ ] मुन्शी इन्द्रमणि का हिसाब लिखकर मेरे पास यहां भेज दोजिये।            | [६७१] |
| [९] | पारसल-सूचना (१८) [ प्रबन्धकर्त्ता वै० य०, काशी ] यजुर्वेदभाष्य २० ७ के पत्रे। ५                                   | [६८०] |
| [९] | पत्र-सारांश (५७५) [ लाला रामशरणदासजी, मेरठ ] २५० ६० लाला बल्लभदास गुरुदासपुर के भेजे जमा क्यों नहीं किये।         | [६८१] |

१. इसकी स्चना पूर्ण संख्या ३३४ के पत्र (पृष्ठ २७६ पं० २०) में है। इसे पूर्ण संख्या ३१३ के आगे जोड़ी गई (पूर्ण संख्या ६७५) पारसळ सूचना से आगे जोड़ें। तिथि का निर्देश न होने से इमने अनुमान से जोड़ा है।

२. इस की स्वना पौष शु॰ १० (सं॰ १६३७ = १० जनवरी १८८०) के पं॰ ज्वालादत्त के पत्र (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रज्य॰ पृष्ठ ४१८) में है। इसे पूर्ण संख्या ३१५ के आगे जोड़ें।

३. इस ग्राशय के पत्र की सूचना पूर्ण संख्या ३१७ में है। इसे पूर्ण संख्या ३१५ के ग्रागे जोड़ें।

४. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४६८ के पत्र में (पृष्ठ ३८१ पर) है । इसे पूर्ण संख्या ३१६ के

आगे जोहं।

प्र. इस की सूचना १६ जनवरी १८८१ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ३१८ के आगे जोई ।

ह. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४६८ के पत्र में (पृष्ठ ३८१ पर) उपलब्ध होती है। इसे पूर्ण संख्या ३२४ के आगे जोड़ें।

| [१०]<br>[ लाला शादीरामजी, कार्श<br>रजिस्टर रवाना किया ।°          | पारसल-सूचना (१९)<br>ो ]                                    | [६८२]  |
|---|--|--------|
| [११]<br>[ लाला शादीरामजी, काशी<br>ऋग्वेद [ भाष्य ] के बरक १       | पारसल-सूचना (२०)<br>]<br>२३० सफे से १५२१ तक । <sup>२</sup> | [६८३]  |
| [१२] धु<br>[ लाला शादीराम जी, कार्श<br>ऋग्वेद व नामिक की शुद्धि छ |  | [\$<8] |
| [६] [पं० गोपालराव हरि, फर्रुर कागज का नमूना १२) रु० रि            |  | [६८५]  |
| [१०]<br>[ लाला रामशरणदासजी, मे<br>व्यार्थसमाज के थोड़े से नियम    |  | [६८६]  |
| [१०]<br>[ सेवकलाल कृष्णदास, वस्व<br>पुस्तकों का। <sup>5</sup>     | पारसल-सूचना (२२)<br>ई ]<br>———                             | [६८७]  |

१. इस की सूचना पूर्ण संख्या ३५५ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ३२४ के आगे जोड़े गये (पूर्ण सं० ६८१) पत्र के आगे जोड़ें।

२५४)। इसे पूर्ण संख्या ३६३ के आगे जोड़ें।

२. इस की सूचनां पूर्ण संख्या ३३० के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ३३० के आगे जोड़ें।

३. इस की स्चना पूर्ण संख्या ३३३ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ३३३ के आरो जोड़ें।

४. इस की सूचना पूर्ण संख्या ३४१ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ३४० के आगे जोड़ें।

भ. इस की सूचना पूर्ण संख्या ३४२ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ३४२ के आगे जोड़ें। ६. इस की सूचना १६ सितम्बर १८८१ के सेवक़लाल के पत्र में है (मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पू॰

| [₹]  | पारसल-सूचना (२३)<br>[पं० दयाराम, काशी]<br>पारसल पुस्तकों की।  | [६८८]     |
|------|---|-----------|
| [8]  | पारसल-सूचना (२४) [ पं० दयाराम, काशी ] १. ऋग्वेद भाष्य पृष्ठ ८१३—८५० तक। २ २. यजुर्वेदभाष्य २०१२ के पृष्ठ । ३. अव्ययार्थ की प्रेस कापी।  | [969]     |
| [4]  | पत्र-सूचना (५७७)<br>[ पं० द्याराम, काशी ]<br>पुस्तकें भेजने के विषय में 13  | [६९०]     |
| [६]  | पत्र-सारांश (५७८) [पं० दयाराम काशी] ऋग्वेद श्रीर यजुर्वेद भाष्य की भाषा कितनी हुई।  | [६९१]     |
| [७-१ | पत्र-सारांश (५७९-५८१) [ पं० दयाराम, काशी ] ५ १—भीमसेन के विषय में। २—स्त्रैणतद्धित छपे १॥ मास हो गया, भेजा क्यों नहीं १ ३—आख्यातिक कितना छपा १ ४—छद्दत को आख्यातिक के अन्त में छापना। ५—पुस्तक इन्दौर भेजो। ६—महाराणा सज्जनसिंह द्वारा चित्तौड़ में किये गये सत्कार का वर्णन। | [६९२-६९४] |

१. इस की सुवना त्राधिन शु॰ ६ सं॰ १६३८ के पत्र में है (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ४० पं॰ १,२)। इसे पूर्ण संख्या ३६४ के आगे जोड़ें।

२. इस की सूचना मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ४०, ५६ में है। हमारे विचार में दोनों संकेत एक ही पारसल के हैं। इसे पूर्ण संख्या ३६४ के श्रागे बढ़ाई (पूर्ण संख्या ६८८) पारसल सूचना से श्रागे जोड़ें।

३. इस की सूचना मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ट ३६ में है। इसे पूर्ण संख्या ३६४ के आगे बढ़ाई पू॰ सं॰ ६८८, ६८६) पारसल सूचना के आगे जोड़ें।

४. इस की सूचना ३ नवम्बर १८८१ के पत्र में है (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ पृश्)। इसे पूर्या

संख्या ३६८ के आगे नोहें। उपर्युक्त विषय इमने पत्रानुसार बनाया है।

पू. मुन्शी लम्पा पत्रव्य पृष्ठ पद पर पं भीससेन के पत्र में १ एक, श्रीर पृष्ठ ६० पर पं भ मुन्दरलाल के पत्र में २ दो पत्र श्रीर १ एक कार्ड श्राना लिखा है। ये दोनों पत्र पौष कृष्ण ११ सं ० १६३८

| [१०]<br>[पं० दयाराम, काशी ]<br>महाराजे खदयपुर का इश्तिहार                                     | विज्ञापन (१) सूचना ,                                       | [६९५] |
|---|--|-------|
| [११]<br>[ पं० दयाराम, काशी ]<br>१—पुस्तकें तथा वेद भाष्य कित<br>२ —दो वर्ष का पुस्तकों का हिस | पत्र-सूचना (५८२)<br>ने पौरड के कागज पर छपता है।<br>व भेजो। | [६९६] |
| [७]<br>[ कविराज श्यामलदास जी ]<br>खदयपुराधीशों के गोरज्ञा निमिन्                              | पत्र-सूचना (५८३)<br>त हस्ताच्चर कराने के विषय में।         | [६९७] |
| [८] प्<br>किवराज श्यामलदास जी ]<br>गोरचा सम्बन्धी हस्ताचर कराने                               | ारसल-सूचना (२५)<br>के पत्र ।४                              | [६२८] |
| [१२] [पं० दयाराम, काशी] बीस २ पुस्तकें भेजने के सम्बन्ध                                       | पत्र-सूचना (५८४)<br>में । <sup>५</sup>                     | [६२९] |

(१८ दिसम्बर १८८१) के हैं। ग्रातः इन्हें पूर्ण संख्या ३७१ के आगे जोड़ें। पत्रोक्त विषय उक्त दोनों पत्रों के श्रानुसार बनाया है।

१. इस के मेजने की सूचना मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ट ६३ से मिलतो है। इसे पूर्ण संख्या ३७६ से आगे जोड़ना चाहिये।

२. इस का संकेत मुन्शी० सम्पा॰ पत्रच्य० पृष्ठ ६२ में छुपे १ फरवरी १८८२ के पत्र में है । इसे पूर्ण सं० ३७६ के आगे जोड़ी गई (पू० सं० ६९५) विशापन सूचना के आगे जोड़ें। यह विषय पत्रातु-सार इमने बनाया।

र. यह त्राशय फाल्गुस कु० ७ शुक्रवार सं० १६३८ (१० फरवरी १८८२) के पत्र में है (चमू० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ ४३)। इसे पूर्ण सं० ३७८ के आगे जोड़ना चाहिये।

४. इस की स्चना भी फा॰ कु॰ शुक्र सं॰ १६३८ (१० फर॰ १८८२) के पत्र में मिलती है। (चमू॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ४३) इसे पूर्ण सं० ३७८ से आगे जोड़ें गये (पू० सं० ६९५) पत्र के आगे जोड़ें।

४. इस की स्चना पं भीमसेन के २७ जनवरी १८८२ के पत्र में है (मुन्शी सम्पा पत्रव्य ० पृष्ठ ४३, ४४)। इसे पूर्ण सं ३७२ से आगे जोईं। परिशिष्ट (१)

प्०३

[ १३]

पत्र-सूचना (५८५)

[000]

१—रामाधार वाजपेयी का हिसाब भेजने के सम्बन्ध में।
२—इस २ पुस्तकें भेजने के सम्बन्ध में।

२० फरवरी १८८२ ।

[8]

पत्र-सूचना (५८६)

[909]

[ सम्पादक भारतिमत्र, कलकत्ता ]। गोरचा सम्बन्धी दो पत्र ।3

[33]

पारसल-सूचना (२६)

[902]

[ लाला रामशरणदास जी, मेरठ ] ३०० गोरचा सम्बन्धी पत्र।\*

[38]

पारसल-सूचना (२७)

[\$00]

[ लाला मूलराज जी एम० ए० ] गोरचा सम्बन्धी फार्म और थियोसोफिस्टों के सम्बन्ध का विज्ञापन।"

[3]

पत्र-मूचना (५८७)

[800]

[पं० सुन्दरताल जी, प्रयाग ]

रे. इस की सूचना मुन्शी० सम्पा० पत्रव्य० में पृष्ठ ६६ पर छुपे मनोहरदास चृत्रिय प्रवैतनिक कार्येमम्पादक भारतिमत्र कालकत्ता के पत्र में है। इसे पूर्ण सं० ३९० से आगे जोड़ें। गोरज्ञा सम्बन्धी दोनों पत्र पू० सं० ३८७, ३८८ पर छुपे हैं।

४. इस की सूचना पूर्ण सं० ४३१ में है। इसे पूर्ण सं० ३९४ के आगे जोहें न

५. इस की स्चना पू॰ सं॰ ४०३ के पत्र में है। इसे पूर्ण सं० ४०१ के आगे जोड़ें। गोरहा सम्बन्धी फार्म पू० सं॰ ३८७, ३८८ पर तथा थियोसोफिष्ट सम्बन्धी पूर्ण सं॰ ४०० पर छापा है।

६. १ जून १८८२ के पत्र में कई पत्र श्राने का उल्लेख है (मुन्शी० सम्पा॰ पत्रव्य० पृष्ठ ४२३)। इसी पत्र में पृष्ठ ४२४ पर १३ मई १८८२ के पू० सं० ४०८ के पत्र की बातों का उल्लेख है। श्रान्य पत्र १३ मई से पूर्व श्राये होंगे। श्रतः इसे पूर्ण सं० ४०१ के आगे जोड़ें।

१. इस के प्रथमाश की स्चना पूर्ण संख्या ३८० के पत्र में है श्रीर उत्तरांश की २७ जनवरी १८८२ के पं॰ भीमसेन के पत्र में है (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ ४२, ४३, ४४)। ये दोनों श्रंश एक पत्र में ही ये या पृथक् पृथक् में, यह श्रज्ञात है। इसे पूर्ण सं० ३७९ से आगे जोड़े गये (पू० सं० ६९९) पत्र से आगे जोड़ें। २. इस तारीख की स्चना पूर्ण संख्या ३८० के श्रनुसार दी है।

| 408  | 1811 3 11 1 1  |               |
|------|--|---------------|
| [२४] | पत्र-सूचना (५८८) व्यामाधार वाजपेयी, लखनऊ ] थियोसोफिस्टों के सम्बन्ध में। १         | [@0#]         |
| [७]  | पारसल-सूचना (२८) [ श्री नन्दिकशोरसिंहजी, जयपुर ] गो रह्मा सम्बन्धी ५ फार्म । २     | [७०६]         |
| [१४] | पारसल-सूचना (२९) [ पं० दयाराम, काशी ] यजुर्वेद भाष्य २४ के पृष्ठ ४१६ से ४४७ तक।    | [806]         |
| [२८] | पारसल-सूचना (३०) [ लाला कालीचरण जी, फर्रेखाबाद ] जगन्नाथ की प्रश्नोत्तरी का खण्डन। | [200]         |
| [१०] | पत्र-सूचना (५८९) [ पं० भीमसेन, काशी ] काम सावधानता से करने के विषय में । प         | <u>[</u> ७०२] |

१. इस पत्र की सूचना रामाधार वाजपेयी के ब्रज्ञात तिथि के पत्र में है (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रन्य॰ पृष्ठ ३४०)। पू॰ सं॰ ४०० तथा ४०१ ब्रौर मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रन्य॰ पृष्ठ ३४० से ३६७ तक छपे पत्रों को मिला कर पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह पत्र ऋषि दयानन्द ने अप्रेल मास के ब्रारम्भ में लिखा होगा। इसे पूर्ण सं० ४०२ के आरो जोड़ें।

२. इस की सूचना पू॰ सं० ४०२ के पत्र में है । इसे पूर्ण सं० ४०२ के आगे जोड़े गये (पूर्ण सं०

७०५ पत्र से आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना ४ मई १८८२ के एं० भीमसेन के पत्र में है (मुन्शी सम्पा० पत्रव्य० पूछ ४६,४७)।

इसे पूर्व से ४०२ से आगे जोड़ी गई (पूर्व ए० ६०) पारसल सूचना से आगे जोड़ें।

४. इस की स्चना पू॰ सं॰ ४१६ के पत्र में है। इसी पत्र में यह मी लिखा है—'बहुत दिन हुए मेज चुके हैं, उस के पीछे भारत सुदशापनर्तक (मासिक) के दो ग्रांक निकल चुके' इससे प्रतीत होता है कि यह खएडन ग्राप्रेल के ग्रारम्भ में मेजा गया होगा। इसे पू० सं० ४०२ के आगे जोड़ी गई (पू० सं० ५०००) पारसंख सूचना से आगे जोड़ें।

५. इस की सूचना ४ मई १८८२ के मीमसेन के पत्र में हैं (मुन्शी सम्पा० पत्रव्य ० ४६ )। इसे पू०

सं० ४०२ के आगे जोड़ी गई (पू० सं० ७०८) पारसल सूचना के आगे जोड़ें।

| [१०]<br>[पं० सुन्दरलाल जी, प्रयाग]<br>सीसा भेजने के प्रवन्धविषय में | पत्र-सूचना (५९०)                                       | [७१०] |
|---|--|-------|
| [१]<br>[खाडेराव पार्य्डुरंग, खरडवा]<br>इम बम्बई से श्राते हुए खरडव  | पत्र-सारांश (५९१)<br>। ठहरेंगे, स्थान का प्रबन्ध करें। | [७११] |
|   | पत्र-सारांश (५९२)                                      | [७१२] |
| [३]<br>[खाडेराव पाग्डुरंग, खण्डवा]                                  | पत्र-सूचना (५९३)                                       | [७१३] |
| [६५]<br>[मुंशी समर्थदान, प्रयाग]<br>टाइप मंगवा लो।"                 | पत्र-सारांश (५९४)                                      | [७१४] |

१. इस की सूचना मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ४६ पर है। वहां दो पत्रों का उल्लेख हैं। उन में से एक पूर्ण संख्या ३६७ पर छप चुका है। दूसरे पत्र की सूचना १० मई १८८२ के पत्र में है। ग्रत: यह पत्र मई के प्रथम सप्ताह में लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या ४०५ के आगे जोड़ें।

२. इस की सूचना १७ जून १८८२ के खाडेराव के पत्र में है (मुशी अम्पा अपत्रव्य पृष्ठ २६४)। इसी में ४ दिन पहले इस पत्र का उत्तर देना लिखा है। श्रतः यह पत्र सम्मवतः १० या ११ जून की बम्बई से मेजा गया होगा। इसी पत्र में १६ जून को खरडवा पहुँचने को सूचना भी रही होगी (तुलना करो पूर्ण संख्या ४१४ के पत्र के साथ)। उपर्युक्त श्राशय हमने प्रकरणानुसार बनाया है। इसे पूर्ण संख्या ४१३ के आगे जोड़ें।

३ इस पत्र की साजात सूचना कहीं प्राप्त नहीं है, परन्तु १७ जून १८८२ के खाडेराव के पत्र (मुंशी सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ २६४) से विदित होता है कि उन के पास स्वामी महाराज का १३ या १४ जून का लिखा पत्र श्रवश्य पहुँचा होगा, जिस में उक्त सूचना रही होगी। इसे पूर्ण संख्या ४१४ के आगे जोहें।

४. इस पत्र की सूचना खाडेराव के जिस पत्र में है उस पर २७ जून १८८२ छुपा है (संशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ५१३)। उसमें खरडवा में ठहरने के लिए स्थान के प्रबन्ध की सूचना दी है, परन्तु स्वामी जी महाराज २४ जून को खरडवा पहुँच गये थे, अतः पत्र में लेखक या मुद्रक दोष से २० का २७ बन गया होगा। सम्भवतः इसमें बम्बई से चलने की सूचना दी होगी और यह पत्र १८ या १६ जून को लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या ४१६ के आगे जोड़ें।

प्र. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४४३ के पत्र में है। मुंशी समर्थदान जब से वैदिक यन्त्रालय प्रयाग के प्रबन्धकर्ता होकर गये, तब से इस पत्र तक श्री स्वामी जी महाराज के मेजे हुए ६ पत्र (पूर्ण संख्या ४२०,

पारसल सूचना (३१) ७१५ [43] [श्री महाराजाधिराज नाहरसिंह वर्मा, शाहपुरा] पोपलीला नामक पुस्तक। श्रावम् वदी ४ मंगल सं० १९३९ [४ जुलाई १८८२] पारसल-सूचना (३२) १९ [लाला कालीचरण जी, फर्कखाबाद] जगन्नाथदास की प्रश्नोत्तरी के उत्तर के अपृष्ठ ।? पत्र-सारांश (४९५) [3] [श्री महाराणा सज्जनसिंह जी, उदयपुर] हम उदयपुर आ रहे हैं, सवारी का अवन्ध कर दें। [8] तार-सूचना (४) 096 [ श्री महाराणा सज्जनसिंहजी, खदयपुर ] सवारी के प्रबन्ध के विषय में।

४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४४२) पूर्व छप चुके हैं, उन में टाइप मंगवाने का उल्लेख नहीं है । पूर्ण संख्या ४२७ में मुंशी समर्थदान के पत्र (जिस्र का इस पत्र में निर्देश है) उत्तर में स्वामी जी ने ट्राइप डलवाने की स्वीकृति दी है। इस से प्रतीत होता है कि यह पत्र उस से पूर्व लिखा गया होगा। अत: इसे पूर्ण संख्या ४२० या ४२१ के आगे जोड़ें।

शः इसकी सूचना तथा तिथि का निर्देश पूर्ण संख्या ४२२ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ४२२ के आगे जोड़ें। पोपलीला पुस्तक के निपय में हमारा 'ऋ द द के ग्रन्थों का इतिहास' परिशिष्ट ५ पृष्ठ ८२ देखें। २. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४२६ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ४२९ के आगे जोड़ें।

३. यह ग्राशय इमने कविराज श्यामलदास के सं० १६३६ श्रावण कु० १० (२५ जुलाई १८८२) के पत्र (चमू० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ ४४) तथा पं० देनेन्द्रनाथ संकलित जीवन चरित पृष्ठ ६६८ के ग्राधार पर बनाया है। ऋषि दयानन्द रतलाम में श्रावण कृष्ण ६८ (६८ जुलाई), जावरा श्रा० कु० ८ से श्रा० शु० ६ (८८ जुलाई) तक ठहरे थे, ग्रीर श्रा० शु० १० (२५ जुलाई) को चित्तौड़ पहुँचे थे। जीवन चरित में रतलाम से पत्र मेजने का उल्लेख है (पृष्ठ ६६८), परन्तु कित्रराज श्यामलदास ने लिखा है— 'समय बहुत कम रह गया है।' इस से प्रतीत होता है कि स्वामी जी ने पत्र रतलाम से न मेजकर जावरा से २० जुलाई के लगमग भेजा होगा। ग्रत: इसे पूर्ण संख्या ४३० के आगे जोड़ना चाहिये।

४. इस की स्चना कविराज श्यामलदास के आ० क्र० १० सं० १६३६ (२५ जुलाई १८८३) के पत्र में हैं। (चमू० सम्पा० पत्रव्य० पृ० ४४)। यह तार सम्भवतः जावरा से २३ था २४ जुलाई को दिया होगा। इसे पूर्ण संख्या ४३० से आगे जोड़े गये (पू० सं० ७१७) पत्र से आगे जोड़े। [9]6

ं पत्र-सूचना (५९६)

[998]

[ राजराणा फतेसिंह जी, देलवाड़ा ]° [श्रधिक] श्रावण कृष्ण १२ सं० १९३९ ।२

[44]

पारसल-सूचना (३३)

[७२०]

[ मुन्शी समर्थदान, प्रयाग ] ऋग्वेदभाष्य के दो पृष्ठ श्रीर यजुर्वेद भाष्य के पत्रे।

[89]

पारसल-सूचना (३४)

[७२१]

[ मुन्शी समर्थदान, प्रयाग ] सत्यार्थप्रकाश भूमिका पृष्ठ ५ तथा प्रथम समुक्कास के ३२ पृष्ठ ।४ भाद्र वदी १ मंगल सं० १९३९ [ २९ ऋगस्त १८८२ ]

[86]

पारसल-सूचना (३५)

[७२२]

[ मुन्शी समर्थदान, प्रयाग ] गोरत्ता सही के पत्र तथा ५ विज्ञापन पत्र। प

[६२]

पारसल-सूचना (३६)

७२३

[ मुन्शी समर्थदान, प्रयाग ] सौवर का हस्तलेख। ह

१. इस पत्र की सूचना राजराणा श्री फतेहिंसिंह के सं० १६३६ ग्राधिक श्रावण सुदी ४ के पत्र में है (चनू॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ ११६)। इसे पूर्ण संख्या ४३२ के आगे जोड़ें। ये ही राजराणा महाराणा सजन-सिंह जी के ग्रानन्तर उदयपुर की गद्दी पर बैठें।

े २. इस तिथि का संकेत भी राजराणा के पत्र में ही है। १० अगस्त १८८३।

इ. इस की सूचना पूर्व संव ४४२ के पत्र में है। इसे पूर्व संव ४४१ के आगे जोड़ें।

४. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४४२ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ४४२ के आगे जोड़ें।

प्. इस का निर्देश पूर्ण संस्या ४४४ के पत्र में हैं। इसे पूर्ण संस्था ४४४ के आगे जोड़ें।

६. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४४८ के पत्र में है । सीवर के अन्त में अन्य रचना काल भाद्र शु॰ १३ सं॰ १६३६ लिखा है। उसके दो तीन दिन पीछे प्रेस में भेजा गया होगा । अतः इसे पूर्ण संख्या ४४४ के आगे जोड़ें। इस अन्य के विषय में विशेष ऋि द॰ अन्योतिहास में देखें।

| [११,१२]          | पत्र-सूचना (५९७,५९४)   | [७२४,७२५]  |
|------------------|--|--|
| [ संवकताल व      | हृष्णुलालः बम्बई ]'  |  |
| [00]             | पारसल-सूचना (३७)   | . [७२६]  |
| ्र गुन्शी समर्थ  | दान, प्रयाग ]  |  |
|                  | श के ३३ पृष्ठ से ५७ पृष्ठ तक। २  |  |
| २. पारिभाषिक     | भूमिका सहित ४३ पृष्ठ ।   |  |
| ३. वेदार्थयत व   |  | flavenese.   |
| सं० १९३९ आ       | धिन सुदी ४ सोम (१६ अक्टूबर १८८२)   |  |
| A PARTY TO       | January Company of the Company of th |  |
|                  | पत्राशय-सूचना (५९९)  | [७२७]  |
|                  | ये समाज, लखनऊ]   | 100 100 2 100 100  |
| समाज म नाटव      | ह प्रह्सन श्रादि करना श्रनुचित है। <sup>8</sup>  |  |
| [96]             | पत्र-सूचना (६००)   | [७२८]  |
|                  | बरण जी, फर्रुखाबाद ]   | [0/0]  |
|                  | ति के लिये रूपयों के सम्बन्ध में । <sup>ह</sup>  |  |
| पाद्क यन्त्रालय  |  | Selection for the selection of the selec |
| ا ومرا           |  | Figure 1   |
| [98]             | पारसल-सूचना (३८)   | [७२९]  |
| [ मुन्शी समर्थेद |  |  |
| निघएटु सूचीपः    | त्र साहत ।   |  |
|                  |  | The state of the s |

१. सेवकलाल बम्बई के नाम ३,४ पत्र लिखने का उल्लेख पूर्ण संख्या ४५४ के पत्र में है। तदनुसार एक पत्र की सूचना पूर्ण संख्या ५५२ पर लगा चुके हैं। शेष दो को पूर्ण संख्या ५४८ के आगे जोड़ें।

२. इन को मेजने की, तथा उक्त तिथि की सूचना पूर्ण संख्या ४५४ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ४५४ के यारो जोड़ें।

३. इस पत्र का संकेत २८ अक्तूबर १८८२ के पत्र (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ३४५) में है। अपूर्ण दयानन्द ने यह पत्र सम्भवतः १६ अक्तूबर के आस पास खिखा होगा। इसी विषय का एक पत्र १६ अक्तूबर को आहे दंशों पूर्ण संख्या ४५५। इसे पूर्ण संख्या ४५४। इसे पूर्ण संख्या ४५४ आगे जोड़ी गई (पूर्ण संख्या ७२६) पारसळ सूचना के आगे जोड़ें।

४. इस की स्चना बाबू दुर्गाप्रधाद जी को लिखे गये पूर्ण संख्या ४६१ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ४५७ के आगे जोड़ें।

४. इसकी सूचना पूर्ण संख्या ४६५ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ४६४ के आगे जोड़ें। विशेष वक्तव्य—निघण्ड के श्रान्त में संशोधन काल इस प्रकार लिखा है—"निधिरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे

[83]

पत्राशय-सूचना (६०१)

[050]

[ सेवकलाल कृष्ण्दास, बम्बई ]
पुरोहित उदयलाल के लिये घड़ी भेजो, गोरचा की सही के कागज भी।

[2]

पत्राग्रय-सूचना (६०२)

[939]

[ लालजी बैजनाथ, बम्बई ] बिट्रल रसोइया का वेतन दिलवा दो। र

[88]

मनिआर्डर-सूचना (१)

[932]

[ सेवकलाल कृष्णदास, बम्बई ] २५) रु घड़ी के लिये।

[७२]

पत्र-मुचना (६०३)

[\$\$0]

[ मुन्शी समर्थदान, प्रयाग ]

मार्गशीर्षं सिते टले । चतुःथां गुरुवारेऽयं निघएदुः शोधितो मया॥"

'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास' नामक ग्रन्थ में पृष्ठ १७३ पर श्रनवधानता वशा 'चतुर्दश्यों गुरुवारेऽयं' पाठ छपा है श्रीर उसी के स्राधार पर श्रागे जो पृष्ठ १७३ की २६, ३० पंक्तियां तथा पृष्ठ १७४ की १—४ पंक्तियां लिखी गई हैं उन्हें पाठक महानुभाव काट दें।

१. इस की सूचना ६ जनवरी १८८३ के पत्र में है। यह आशाय मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ २६७, २६८, को मिलाकर बनाया है। इसे पूर्ण संख्या ४६५ के आगे जोड़ें।

२. इन के नाम का एक पत्र पूर्ण संख्या २२ पर छुपा है। इस पत्र की सूचना २० जनवरी १८८३ के पत्र में है (मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ २७२)। इन रुपयों को देने के लिए १ जून की श्रन्तरंग समा ने निश्चय किया, परन्तु २५ जून तक नहीं दिये गये (वही पत्रव्य॰ पृष्ठ २७७)। इसी बीच में लालजी का २६ मई का पत्र ऋग् द० को मिला, जिस में ४०) ६० का मनियार्डर मेजने को लिखा था (वही, पृष्ठ २८१)। तदनुसार ऋग् द० ने श्रपने पास से ज्येष्ठ शु० ७ सं० १६४० (१२ जून १८८३) को ४०) रुपये मेजे। देखो पूर्ण संख्या ५३४ का पत्र। इसे पूर्ण संख्या ४६७ के आगे जोई।

३. इस की स्चना २० जनवरी १८८३ के पत्र में है (मुंशी० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ २६६)। इसे (पूर्ण संख्या ४६८ के आगे जोड़ें। इन रुपयों की घड़ी १२ जून को मेजी गई। २३ ६६ घड़ी में लगे ये (मुंशी० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ २७४)।

४. पूर्ण संख्या ४७१ के मार्ग वदी ५ [माघ वदी ५-देखो पृष्ठ ३८४ की टि० ३] सं० १६३६ के पत्र में कई पत्र लिखने का संकेत है। इस से पूर्व मार्ग शु० १० का पत्र पूर्ण संख्या ४६५ पर छपा है उस के श्रानतर न्यूनातिन्यून दो पत्र श्रवश्य लिखे गये होंगे। इसे पूर्ण संख्या ४६९ के आगे जोड़ें।

पत्र-सूचना (६०४) [22]

[880]

[ लाला रामशरणदास, मेरठ ] (इन्द्रमणि के विज्ञापन के साथ)

[4]

आशीःपत्र-सूचना (६०५)

[७३६]

श्री महाराणा सज्जनसिंह जी, उद्यपुर पुत्र जन्म पर शुभाशीः ।२ िसम्भवतः माघ शु० २ शुक्र सं० १९३९ ]

[88]

पत्र-सारांश (६०६)

७३६

[ भाई जवाहरसिंह जी ] दो स्त्रियां ऐसी चाहियें जो पतिवाली, शुद्धाचरण वाली, कसीटा और पढ़ाना ज्ञानने वाली हों। १७ फरवरी १८८३ से पूर्व।

[१]

पत्र-सूचना (६०७)

जोशीलालजी कल्याग्यजी ]"

[१४] , पत्र-सारांश (६०८)

श्री शाहपुराधीश नाहरसिंह जी वर्मा हम उदयपुर से चलकर चित्तौड़ पहुंच गये हैं।<sup>5</sup>

२. इस ब्राशी:पत्र का उल्लेख महाराणा के सं० १९३९ माघ शु० २ भृगुवार के पत्र में है (चमू० संमा॰ पत्रव्य पष्ठ १३२)। इसे पूर्ण संख्या ४७२ के आगे जोड़ें।

३. यह तिथि श्रनुमान से लिखी है। ६ फरवरी १८८३।

४. इस का संकेत मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पष्ठ ११६ पर है। इसे पूर्ण संख्या ४७३ के आगे जोड़ें।

प्र इस पत्र की सूचना मुंशी सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ २६५ पर है। इसी पत्र के ब्रानुसार चैत्र सुद १२ से चार मास पूर्व उक्त महाशय कानपुर गये थे श्रीर वहां से जो पत्र ऋ ० द० को लिखा था उसी के उत्तर में उक्त पत्र ऋ॰ द॰ ने लिखा था। श्रतः इसे पूर्ण संख्या ४७४ के आगे जोड़ें।

६. यह साराश शाहपुराधीश के पत्रानुंसार बनाया गया है। शाहपुराधीश के पत्र में फाल्गुण बुद २ लिखा है (चमूर सम्पार पत्रव्यर पृष्ठ २८) वहां फाल्गुण वदी १२ चाहिये। चित्तौड़गढ़ ऋर दर फार वदी ज की रात को पहुँचे ये (देखो पूर्ण संस्था ४८०)। इसे पूर्ण संख्या ४८२ के आगे जोड़ें।

१. इस पत्र की संचना २१ जनवरी १८८३ के पत्र में है (मुन्शी सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ ३२०)। इसे पूर्ण संख्या ४६९ के आगे जोड़ी गई पूर्ण (संख्या ७३३) पत्रसूचना से आगे जोड़ें।

७४१

् र क्षेत्र हेश्यक्ष . व

ं परिशिष्ट (१)

[9] ७३९ [ विश्वनाथ, जयपुर] १ ४ मार्च १८८३।

[१] ंपत्र-सूचना (६१०) [ गर्णेशदास एएड कम्पनी तारघर के नीचे बनारस ]

पुस्तकों मंगवाने के विषय में । र 🔭 🔭 🗀 🗀

[ee] पारसल-सूचना (३९) [मुंशी समर्थदान, प्रयाग] यजुर्वेद्भाष्य २०१३ मन्त्र ४७-५१ की पुनः शोधित प्रस कापी। फाल्गुन ग्रु० ९ शनि सं० १९३९ । १७ मार्च १८८३ ।

[२] पत्र-सारांश (६११) ७४२ [पं० मोहनलाल विष्णुलाल पायडया, उदयपुर]

मेरे पास ब्रह्मानन्द पहुंचा।

(पत्र-सारांश (६१२) ६४७ [2]

[कविराज श्यामलदास जी, उदयपुर]

- १. गोरचार्थ जयपुर गये या नहीं।
- २. जोधपुर में सही हुई या नहीं।
- ३. उदयपुर का वृत्तान्त छपवाया जावे या नहीं।
- ४. ठा० भवानीसिंह के विषय में ,

१. इस की सूचना के लिये देखो मुंशीं० सम्पां० पत्रव्य पृष्ठ २२२ । इसे पूर्ण संख्या ४८३ के आगे जोईं।

२. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५०१ के पत्र-में है। वहां लिखा है- "श्रमी इम २१॥ >) के पुस्तक मंगवा चुके हैं"। इसे पूर्ण संख्या ४८४ के आगे जोड़ें।

३. यह पूर्ण संख्या ४८६ तथा ४८७ के आधार पर लिखी है और तिथि का निर्देश ४८७ के श्रतुसार किया है। इसे पूर्ण संख्या ४=६ के आगे जोड़ें।

४. इस पत्र की सूचना २७ मार्च १८८३ के पत्र में है. (चमू० सम्पा० पत्रब्य० पृष्ठ ११)। अत यह पत्र २० या २१ मार्च को लिखा गया होगा । इसे पूर्ण संख्या ४८८ के आगे जोड़ें।

पू. इस पत्र तथा, इन विषयों की सूचना बारहट किशनसिंह के चैत्र शु॰ १४ शनिवार सं॰ १६४० के पत्र में है (चमू । सम्पा । पत्रव्य । पष्ठ ११०, १११)। तथा ऋ । द । के पूर्ण संख्या ५०१, ५०८ में भी इसका संकेत है। इसे पूर्ण संख्या ४९४ के आगे जोईं।

[२२]

पत्र-सारांश (६१३)

[886]

[कमलनयन शर्मा, श्रजमेर]

दामोदर शास्त्री से पूछ कर लिखों कि कितने रुपयों पर हमारे पास आ सकता है।

94

पत्रांश-सूचना (६१४)

७४५

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग]

हमने २१॥।>) की पुस्तकें गयोशदास एरेड कम्पनी तारघर के नीचे बनारस से मंगवाई हैं।

[\$8]

पत्र-सूचना (६१५)

[३४७]

लाला कालीचरण जी, फरुखाबाद परिडतों के हिसाब का पत्र 13 बैं वदी ३ सं० १९४० [२५ अप्रैल १८८३]

जिद

पारसल-सूचना (४०)

080

[मंशी समर्थदान, प्रयाग] यजुर्वेद के मई के श्रंक के लिये भेजे गये पत्रे।४

[6]

पारसल-सूचना (४१)

[286]

[बाबू नन्दिकशोर जी, जयपुर]

- १. स्वीकारपत्र दो प्रति। ५
- २. मान्यपत्र दो प्रति।
- वै० कु० ७ सं० १९४० [२९ अप्रेल १८८३]

[3]

पत्र-सूचना (६१६)

७४९

[ गरोशदास एरड कम्पनी तारघर के नीचे काशी ] पुस्तकें मंगवाने के विषय में ।

- २. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४०१ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ४६६ के ब्रागे जोड़ें।
- इ. इस की सूचना पूर्ण संख्या ४६६ के पत्र के ब्रान्त में है। इसे पूर्ण संख्या ४९९ से आगे जोड़ें।
- ४. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५०१ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ५०० से आगे जोड़ें।
- प्र इस की भावी सूचना पूर्ण संख्या ५०१ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ५०६ के आगे जोड़ें।
- इ. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५०६ के पत्र में है। इसे पूर्ण संव ५०६ से आगे जोड़ी गई (पूर्ण सं ७४६) पारसल सूचना के आगे जोई।

१. यह अभिमाय पं • शुकदेव के १७ अमेल १८८३ के पत्रानुसार बनाया है। मुन्शी० सम्पा• पत्रव्य॰ पृष्ठ २००। इसे पूर्ण संख्या ४९४ के आगे जोड़ें।

[98]

पारसल-सूचना (४२)

[940]

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग] ऋग्वेदभाष्य के पत्रे १५२२ से लेके १५७७ तक।

[00]

पारसल-सूचना (४३)

[968]

[ सुन्शी समर्थदान, प्रयाग ] ऋग्वेदभाष्य के पत्रे पृष्ठ १५७८ से लेके १६९७ तक।

[9]

तार-सारांश (५)

[७५२]

[पाली (जोधपुर) के हाकिम ] ता० २६ मई को रूपाहेली स्टेशन पर सवारी उपस्थित होगी।

[२३]

तार-सूचना (६)

[७५३]

[ कमलनयन शर्मा (?) अजमेर ] अजमेर पहुंचने की सूचना।

[28]

कार्ड-सूचना (६१७)

[७५४]

[ कमलनयन शर्मा, मन्त्री आर्य समाज अजमेर ] लोंग साहब के जाने के विषय में । 4

१. पृष्ठ १५२१ तक मेजने का उल्लेख पूर्ण संख्या ३३० के पत्र (पूर्ण संख्या ६८३ भी देखो) में है। पृष्ठ १५७८ से अगले पृष्ठ मेजने का निर्देश पूर्ण संख्या ५१० के पत्र (पूर्ण संख्या ७४६भी देखो) में है। मध्य के पृष्ठ १५२२ से १५७७ तक के पत्रे कब भेजे गये इसका साम्नात् उल्लेख नहीं मिलता। हमारे विचार में इसे पूर्ण सं० ४७५ के आगे जोड़ना चाहिये।

२. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५१० के पत्र में है। इसे पूर्ण सं० ५०९ के आगे जोई । पूर्ण संख्या ५०१ में भी इन पत्रों के सविष्य में भेजने का संकेत है।

३. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५१६ के अन्त में है। इसे पूरु संरु ५१८ के आगे जोड़ें।

४. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५२३ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ५२२ के आगे जोड़ें।

थ्र. इस की स्वना मुनालाल के ७ जून के ८३ के पत्र में है (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ १६४, १६५)। इस के विषय में पूर्ण संख्या ५६५ का पत्र भी देखें। इसे पर्ण संख्या ५२५ के आगे जोड़ें।

[84]

पत्र-सूचना (६१८)

[७५५]

[ सेवकलाल कृष्णदास, बम्बई ] घड़ी के विषय में।

[88]

पत्र-सारांश (६१९)

७५६

[ बाबू दुर्गाप्रसाद, फर्रुखाबाद ] हम जोधपुर पहुंच गये हैं, अच्छे आम भेजो। र

[₹]

मनियार्डर-सूचना (२)

७५७

TO FORE THE BUT A FR SIN PE WIN

delp (1) (ula monde de) L'indret de large sidei

[ लालजी बैजनाथ, मुम्बई ] ४०) ६० बिट्ठलभागा के लिये।

[ 24]

पत्र-सूचना (६२०)

[966]

[ भाई जवाहरसिंह, शाहपुरा ]४

[१६]

पत्र-सूचना (६२१)

[365]

भाई जवाहरसिंह, शाहपुरा ]

- १. भत्ते के विषय में । 4
- २. भोजन श्रलग बनाने के विषय में।

१. इस की सूचना २५ जून १८८३ के पत्र में है (मुन्शी० सम्पा॰ पत्रव्य० पृष्ठ २७४) पत्रानुसार घड़ी १२ जून को मेजी जा चुकी थी। ग्रातः यह पत्र जून के प्रारम्भ में लिखा गया होगा। इसे पूर्ण सं० ५२८ के अपने जोड़ें।

२. इस की सूचना ७ जून १८८३ के पत्र में है। (मुन्शी० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ ३२१)। इस विषय में पूर्ण संख्या प्रथद की पत्र भी देखें। इसे पूर्ण सं० ५२९ के आगे जो हैं।

३. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५३४ के पत्र में है। पूर्ण सं० ५३४ के आगे जोड़ें।

र्थं इस की सूजना १० जून १८८३ के पत्र में है (मुन्शी० सम्पा० पत्रत्य० पृष्ठ १४४)। इसे पूर्ण संख्या ५३६ के आगे जोड़ें।

पत्रव्य पृष्ठ १४१)। इसे पूर्ण संख्या ५३७ के आगे जोड़ें।

[६] 'पत्र-सूचना (६२२) [श्री महाराणा सज्जनसिंह जी, उदयपुर।

[080]

[4]

पत्राशय-सूचना (६२३)

पत्र-सूचना (६२४)

[७६१]

[ श्री मनोहरदास खत्री, सम्पादक भारतिमत्र, कलकत्ता ] गोरत्तार्थं अरजी देने का मसौदा वहां के वकील बारिस्टरों से पूछ के आप लिखें।

[१०] [कविराज श्यामलदास जी]

[933]

आषाढ़ वदी ११ सं॰ १९४० [ ३० जून शनि १८८३ ]।

[8]

पत्राशय-सूचना (६२५)

[\$30]

[ लालजी वैजनाथ मुम्बई ] बिट्ठलभाणा को भेज दो।\*

[6]

कार्ड-सारांश (६२६)

[७६४]

[ बारहट किशनसिंहजी, उदयपुर ]"

पुरोहित उदयलाल से पूछ के लिखों कि तुम्हारे पास घड़ी आई कि नहीं।
सम्भवतः १६ या १७ जुलाई १८८३।७

१. इस की सूचना बारहट किशनसिंह के आषाढ़ शु० ७ सं० १६३६ (१, १६४०) के पत्र में है (चमू० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ १०७)। इसे पूर्ण सं० ५४१ के आगे जोड़ें।

२. इस की स्वना पूर्ण संख्या ४५६ के पत्र में है । वहां लिखा है—'एक पत्र बहुत दिन हुए लिखा था……'। श्रतः इसे पू० सं० ५४१ के आगे जोड़ी गई (पू० सं० ७६०) पत्र-सूचना के आगे जोड़ना युक्त होगा।

३. इस तिथि के पत्र का उल्लेख श्रावण शु० ५ [सं॰ १६४०] के पत्र में है (चमू० सम्पा० पत्रव्य० पष्ठ ४६)। इसे पूर्ण संख्या ५४५ के आगे जोड़ें।

४. इस पत्र की सूचना मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रन्य॰ पृष्ठ २८५ पर है। सेवकलाल ने २५ जून के पत्र में लिखा था कि बिहलमाणा श्राप के पास श्राना चाहता है (वही, पत्रव्य॰ पृष्ठ २७८)। सम्भवतः इस पत्र के मिलने के बाद ऋ॰ द० ने जुलाई के प्रारम्भ में लालजी बैजनाथ को उक्त पत्र लिखा होगा। श्रतः इसे पूर्ण सं० ५४५ के आगे जोड़ें।

४. इस पत्र का संकेत पूर्ण संख्या ५४१ के अन्त में है। इसे पूर्ण संख्या ५४७ के आगे जोड़ें।

६. इस घड़ी के विषय में पं गोपालराव हरि देशमुख के पत्र (मुंशी • सम्पा • पत्रव्य • पृष्ठ २४१ – २४५)

दर्शनीय हैं।
७. पं॰ गोपालराव हरि देशमुख का १३ जुलाई का पत्र है, जिस में घड़ी का उल्लेख है, यह ऋ॰ द॰
को १६ या १७ जुलाई को मिला होगा और उसी दिन पत्र लिखा होगा।

रं. इस पत्र की स्वना ७ ग्रगस्त १८८३ के पत्र में है (मुन्शी सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ २४४४)। इस में दो पत्र पहुंचने का उल्लेख है। तदनुसार एक पत्र-स्वना यहां जोड़ी है ग्रौर एक ग्रागे पूर्ण संख्या ५६८ पर। इसे पूर्ण संख्या ५४७ के आगे जोड़ें गये (पू० सं० ७६४) पत्र से आगे जोड़ें।

[सेवकतात, कृष्णदास, बम्बईः] हाउ १ कि की होतर है है।

घड़ी पहुंचने के विषय में।

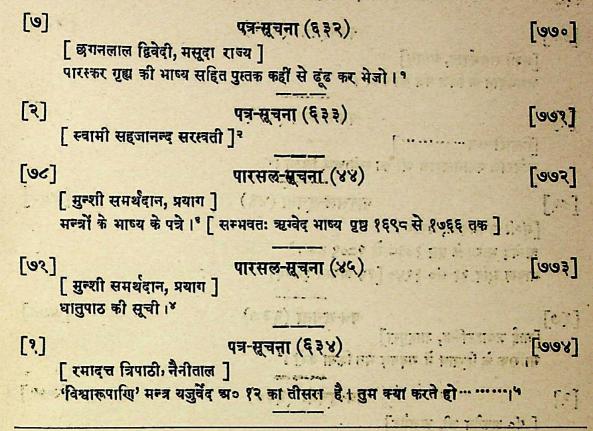
२. इस की सूचना २६ जुलाई १८८३ के पत्र में है (मुन्शी क्सम्पा॰ पत्रन्य॰ पृष्ठ ३४)। इसे पूर्ण संख्या ५५१ के आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना आ० वदी ८ सं० १६४० के पत्र में है (मुन्शी० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ १४)। ग्रतः यह आवण कृष्ण पत्त के प्रारम्भ में लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या ५५१ के आगे जोड़ी गई (पू० सं० ०६६) पत्र-सूचना के आगे जोड़ें।

४. इस पत्र की सूचना ७ श्रगस्त १८८३ के पत्र में है (मुन्शी० सम्पा० पत्रव्य० ५८ २४४, २४५)। पूर्ण संख्या ७६५ की टिप्पणी भी देखें।

प्र. इस तिथि की सूचना भी ७ अगस्त के पत्र में ही है तहां लिखा है—"श्रापका श्रावण वदा १० का पत्र है सी आषाद वदा १० होनी चाहिये।" इस समय ऋ० द० जोधपुर में थे; इसलिये उन्होंने उत्तर भारतीय पश्चान के अनुसार श्रावण वदा १० ठीक लिखा था। परन्तु गोपालरात्र हरि देशमुख ने गुजराती पश्चाङ्क के अनुसार श्रावण वदा १० को अशुद्ध समका और आषाद वदा १० होना चाहिये, ऐसा लिखा। दोनों रूप से यह पत्र २६ जुलाई १८८३ का है। इस लिये इसे पूर्ण संख्या ५५६ के आगे जोड़ना चाहिये।

६. इस की सूचना पं गोपालराव हरि देशमुख के ७ अगस्त १८८३ के पत्र में है (मुंशी , सम्पान



पत्रव्य॰ पृष्ठ २४४)। यह पत्र भी सम्भवतः गोपालराव हरि देशमुख को लिखे गये पूर्ण संख्या ७६८ के पत्र के साथ ही लिखा गया होगा। हसे पूर्ण संख्या ५५६ से आगे जोड़े गये(पूर्व्सं० ७६८) पत्र के गे जोड़ें।

१. यह त्राशय पं ध्रानलाल के आ० शु॰ १५ सं ० १६४० के संस्कृत पत्रानुसार बनाया है (मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य० पृष्ठ २२२)। इन दिनों ऋ॰ द० संस्कार विधि का संशोधन कर रहे थे, उसी के लिये पारस्कर यहहा सूत्र की त्रावश्यकता हुई होगी। इसे पूर्ण संख्या ५५७ के आगे जोड़ें।

२. इस की सूचना १२ ग्रास्त १८८३ के पत्र में है (मुंशी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ३५)। इसे पूर्ण संख्या ५५९ से आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना १५ ग्रागस्त १८८३ के पत्र में है (मंशी॰ सम्पा॰ पत्रस्य॰ पृष्ठ ४३२)। सम्मवतः ये पत्र ऋग्वेद मान्य के पृष्ठ १६६८ से १७६७ तक के होंगे। क्योंकि पृष्ठ १६६७ तक मेजने का निदंश पूर्ण संख्या ७५१ में हो चुका। पृष्ठ १७६८ से ग्रागे का उल्लेख पूर्ण संख्या ७७७ में होगा। इसे पूर्ण संख्या ५६० के आगे जोड़ें।

४: इस की सूचना १५ श्रगस्त १८८३ के पत्र में है (मुन्शी सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ ४६०) इसे पूर्ण संख्या ५६० से आगे जोड़ी गई (पू० सं० ७७२) पारसळ-सूचना के आगे जोड़ें।

प्र. इस पत्र का संकेत २० अगस्त १८८३ के पत्र में है (सुन्शी० सम्पा० पत्रन्य० पृष्ठ ३७६)। रमादत्त ने इस मन्त्र का अर्थ मी पूछा था। देखो वही पत्र ३७६। अतः ऋ० द० ने इस मन्त्र का अर्थ मी लिख कर अवश्य मेजा होगा। इसे पूर्ण संख्या ५६२ के आगे जोड़ें।

| [60]  | पत्र-सूचना (६३५)                  | [७७५]         |
|---|-----------------------------------|---------------|
| [मुंशी समर्थदान, प्रयाग]<br>समर्थदान के निज पत्र का उत्त  | Iτ 19                             |               |
| [१]   | पत्र-सारांश (६३६)                 | [908]         |
| [बिहारीलाल ·······]<br>कविराज श्यामलदास जी का             | समाचार लिखो।                      |               |
| [68]  | पारसल-सूचना (४६)                  | [eee]         |
| [मुंशी समर्थदान, प्रयाग]<br>ऋग्वेद भाष्य के पृष्ठ १७६८ से | १⊏०९ तक । <sup>3</sup>            |               |
| श्रावण सुदि ११ सं० १९४० [१                                |                                   | aparen Arraya |
| [१७]  | पत्र-सूचना (६३७)                  | [996]         |
| [भाई जवाहरसिंह, शाहपुरा]<br>मासिक के हिसाब में गड़बड़ य   | मत किया करो।                      |               |
| [3]   | पत्र-सूचना (६३८)                  | [998]         |
| [ पं० शुकदेव जी, श्रजमेर]<br>पं० शिवकुमार जी (काशी)       | के तिले हुए परिडतों के विषय में । |               |

१. इस की सूचना पूर्ण संख्या ५६४, ५६८ में है। इसे पूर्ण संख्या ५६३ के आगे जोड़ें।

२. इस का संकेत मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृष्ठ २२६ में हैं। कितराज श्यामलदास सं० १६४० के आवण श्रीर भाद्र मार्सों में दो बार श्रांखों की चिकित्सा कराने इन्दौर गये थे (चमू॰ सम्पा॰ पत्रव्य॰ पृ॰ ४६, ४८)। उसी समय यह पत्र लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या ५६३ से आगे जोड़ी गई (पू० सं० ७७५) पत्र-सचना से आगे जोड़ें।

३. इस पत्र श्रीर तिथि की सूचना पूर्ण संख्या ५६४ के पत्र में है। पूर्ण संख्या ५६३ से आगे जोड़ें गये (पूर्ण सं० ७७६) पत्र के आगे जोड़ें।

४. पूर्ण संस्था ५७७ के पत्र में इस विषय के कई पत्र लिखने का उल्लेख है। हम यहां एक पत्र-सूचना दे रहे हैं। इसे पूर्ण संख्या ५६५ के आगे जोड़ें (यह ब्रानुमानिक है)।

4. पं शिवकुमार शास्त्री काशी का संस्कृत पत्र मुन्शी । सम्पा पत्रव्य । पृष्ठ २०६-२१० पर छपा है। इस में ऋ व दे के पास रहने योज्य दो पिखतों का उल्लेख है। ये पं शिवकुमार जी श्रपने समय के काशी के विशिष्ट विद्वान माने जाते थे। इन की विद्वत्ता की घाक श्रमी तक काशी पिएडत मएडली पर जमी हुई है।

६. इस का उल्लेख १६ सितम्बर १८८३ के पत्र में है (मुन्शी । सम्पा । पत्रव्य पूर्व २१२) । इसे पूर्व संख्या ५६९ से आगे जोड़ें।

[63] अशुद्ध भाषा का नमूना (३) [मुन्शी समथदान, प्रयाग] ज्वालादत्त के द्वारा बनाई गई श्रशुद्ध भाषा का नमूना। [33] पत्र-सूचना (६३९) [कविराज श्यामलदास जी] गोरचा के सम्बन्ध में महाराजा हुलकर को करने के विषय में ।? भाद्र सुदी ९ सं० १९४० [२६ अगस्त १८८३] [२०] पत्र-सूचना (६४०) [ पं० गोपालराव हरि देशमुख ] [63] [\$20] पारसल-सूचना (४७) [ मुन्शी समर्थदान, प्रयाग ] १ . सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ २४८ से २७८ तक २. ऋग्वेद भाष्य पृष्ठ १८१० से १८९५ तक। भाद्र सुदी ३० सं० १९४० [१ सितम्बर १८८३]। पत्र-सूचना (६४१) [4] ····•भालावाड् ] क्षालावाड़ के अवालीक (लफटेएट लौंग) का हाल लिखी।"

१. इस को स्चना पूर्ण संख्या ५७० के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ५७० के आगे जोड़ें।

२. इस पत्र ग्रीर तिथि की सूचना भाद्र शु० ६ सं० ११४० के पत्र में हैं (चमू० सम्पा० पत्रव्य० पृष्ठ ४८)। इसे पूर्ण संख्या ५७० के आगे जोड़ें । उपर्युक्त विषय हमने कविराज जी के पत्रानुसार बनाया है।

३. इस पत्र की स्चना सं० १६४० श्रावण वद्य १३ (दिन्धण पञ्चाङ्गानुसार, उत्तर भारतीय भाद्र वद्य १३=३० ग्रागस्त १८८३) के पत्र में है (मुन्शी० सम्पा० पत्रव्य० पू० २४३)। इसे पूर्ण संख्या ५७० के ग्रागे जोड़ी गई (पू० सं० ७८१) पत्र-स्चना के ग्रागे जोड़ें।

जोड़ी गई (पूर्ण संख्या ७८२) पत्र-सूचना के आगे जोड़ें।

पूर्व की सूचना पूर्ण संख्या ५९५ के पत्र से प्राप्त होती है। इसे अनुमानतः पूर्ण संख्या २७२ के आगे जोहें।

| [१]  | पत्र-सूचना (६४२) [पं० भागराम, अजमेर] चोरी के विषय में।' सम्भवतः १३ सितम्बर १८८३ जोधपुर।  | [૭૮५] |
|------|--|-------|
| [8]  | पत्र-सूचना (६४३)<br>[लाला साईंदास जी, लाहौर]°  | [७८६] |
| [c]  | पारसल-सूचना (४८) [मुंशी समर्थदान, प्रयाग] १. चार्यराज-वंशावली के पत्रे। २. सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ २७२ से लेकर ३१९ तक १२वाँ समुद्धास। चाश्चिन वदी १ सं० १९४० [१७ सितम्बर १८८३] | [959] |
| [११] | पत्र-सूचना (६४४) [पं० भीमसेन]  श्राधिन कृष्ण ४ सं० १९४०।   | [988] |
|      | पारसल-सूचना (४९)<br>[ सुन्शी समर्थदान, प्रयाग ]<br>संस्कारविधि के पृष्ठ १ से लेके ४७ तक ।°<br>त्राश्विन वदी ⊏ सोमवार, सं० १९४० [ २४ सितम्बर १⊏⊏३]                              | [७८९] |

१. इस की सूचना २५ सितम्बर १८८३ के कमलनयन शर्मा के पत्र में है (मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य पृष्ठ १६१। इसे पूर्ण संख्या ५८१ के आगो जोड़ें।

२. चोरी १२ श्रीर १३ सितम्बर की मध्य की रात में हुई थी।

४. इस विषय में पृष्ठ ४६८ की टि॰ १ देखें।

रे. इस पत्र का संकेत मुन्शी॰ सम्पा॰ पत्रव्य० पु॰ १५६ में है । इसे पूर्ण संख्या ५८३ के आगे जोड़ें।

४. इस पारसल ग्रीर तिथि की सूचना पूर्ण संख्या ५८३ तथा ५८४ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ५८४ के ग्रागे जोड़ें।

इ. इस तिथि को पत्र मेजने की सूचना पूर्ण संख्या ४८५ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ५८५ के आगे जोड़ें।

७. इस पारसल तथा तिथि की सूचना पूर्ण संख्या ५६१ के पत्र में है। इसे पूर्ण संख्या ५९१ के आगे जोड़ें।

परिशिष्ट (१)

प्रश

[66]

पारसल-सूचना (५०)

[920]

[ मुन्शी समर्थदान, प्रयाग ] सत्यार्थप्रकाश १ पृष्ठ भूमिका, १ पृष्ठ ३२० से लेके ३४४ तक [ तेरहवां समुक्रास ] श्र आश्विन (वदी) १३ शनि सं० १९४० [२९ सित० १८८३]

[3]

पत्र-सूचना (६४५)

[929]

[ मथुरादास, मियांमीर ]

[१]

पत्र-स्चना (६४६)

[७१२]

[श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्यं श्री खामी विरजानन्द् जी सरस्वती, मथुरा] शङ्कासमाधानार्थं। \* श्रागरा।

[2]

पत्र-सूचना (६४७)

[७२३]

[श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती, मथुरा] राङ्कासमाधानार्थ । " स्वालियर ।

[2]

उत्तर-पत्र-सूचना (१)

[938]

ेशामी गोपालानन्द परगहंस, जयपुर] प्रश्न का उत्तर्।

१. श्रर्थात् तेरहवें समुल्लास की श्रनुभूमिका।

२. इस पारसल तथा तिथि की सूचना पूर्ण संख्या ६०१ के पत्र में है । इसे पूर्ण संख्या ६०१ के आगे जोड़ें ।

३. इस की सूचना मथुरादास के विना तिथि के पत्र में है। (संशी० सम्पा० पत्रपत्रव्य० पृष्ठ ३०५ तिथि का कुर्यचित् भी ज्ञान हो न सकने के कारण इसे यहां रक्खा है।

४. ऋषि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं स्विलिखित जीवन चरित (पृष्ठ ४४) में आगरा से अनेक पत्र लिखने का निर्देश किया है। पं० देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृष्ठ ७२ में भी निर्देश मिलता है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ें।

४. ऋषि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं स्विलखित जीवन चरित (पृष्ठ ४४) में ग्वालियर से अनेक पत्र मेजने का उल्लेख किया है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ी गई पू० सं० ७९२ की पत्र-सूचना से आगे जोड़े।

६. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ७८ में मिलती है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ी गई पू० सं० ७९३ की पत्र-सूचना से आगे जोड़ें।

पश्च-पत्र-सूचना (२) (७२ म) [2] जयपुर के परिडतों के पास १४ प्रश्न लिखकर भेजे। [इन में दो निम्न प्रश्न थे — ] १-कल्म च कि भवति ? २-येन कर्मणा सर्वे धातवः सकर्मकाः, कि तत् कर्म ? [७२६] उत्तर-प्रश्न-पत्र-सूचना (३) .[2] [जतीजी जैन साधु, जयपुर] जती जी के प प्रभों का उत्तर तथा जैन मंत पर प प्रभ। र [030] पत्र-सूचना (६४८) [8] [रामसनेहियों के महन्त, अजमेर] रामसनेहियों के मत खरडन विषयक पत्र ।3 1996 [2] भागवत-अशुद्धिपत्र-सूचना (१) [पिखडतवर्ग, श्रजमेर] तीन चार पत्रों में भागवत की अशुद्धियों का निर्देश। [७१९] पत्र-सूचना (६४९) [2] [ठाकुर रणजीतसिंह, अचरौल (जयपुर)] ५ हरिद्वार।

१. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी० च० पृष्ठ ७८ में है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ी गई पू० सं० की ७९४ उत्तरपत्र-सूचना से आगे जोड़ें।

२. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं० जी॰ च॰ पृष्ठ ७६ में है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ी गई पू० सं० ७९५ की पत्र-सूचना से आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ६२ में है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ी गई पू॰ सं॰ ७९६ की सूचना के आगे जोड़ें।

४. इस की स्वना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ १४ में है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ी गई पू० सं० ७९७ की पत्र-सूचना के आगे जोड़ें।

४. इस की स्वना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ १०१ में है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़े गये पू॰ सं० ७९८ के अशुद्धिपत्र-सूचना के आगे जोड़ें।

| 1            | परिशिष्टं (१)  | प्रव  |
|--------------|--|-------|
| [₹]          | ेपत्र-सूचना (६५०)<br>[च्यङ्गद शास्त्री, पोलीभीत]<br>उत्तर में लम्बा पत्र ।   | [८००] |
| [१]          | पत्र-सारांश (६५१) [चिदानन्द साधु, सोरों] तुम मेरे समीप श्राश्रो वा मुक्ते श्रपने पास बुलाश्रो श्रीर शास्त्रार्थं करलो। | [८०१] |
| · [8]        | पत्र-मूचना (६५२) [ अङ्गदशास्त्री पीलीभीत वाले, श्रम्बागढ़ ] पत्र का उत्तर।   | [८०२] |
| [१]          | जत्तर-पत्र-सूचना (४)<br>[पं० जगन्नाथ बरेलीवाले, श्रम्बागढ़ ]<br>प्रश्न के उत्तर में।                                   | [603] |
| [9]          | पत्रोत्तर-सूचना (६५३) [ समागत पत्रों के उत्तर ]" श्रालीगढ़।  | [408] |
| [ <i>š</i> ] | उत्तर-पत्र-सूचना (५)<br>[ नीलकण्ठ शास्त्री, प्रयाग ]<br>श्रमित्रै देवानामवमः—विषयक उत्तर । <sup>६</sup>                | [८०५] |

१. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृ॰ ११५ में है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोड़ी गई पू॰ सं॰ ७९९ की पत्र सूचना के आग जोड़ें।

२, उस की स्वना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ १२० में है। इसे पूर्ण संख्या १ से पूर्व जोडी गई पृ० सं० ८०० की पत्र सूचना के आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ १२२ में है । इसे पूर्ण संख्या १ के पूर्व जोड़े गये पूर्ण संख्या ८०१ के पत्र-सारांश के आगे जोड़ें।

४. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ चरित्र पृष्ठ १२२ में है। इसे पूर्ण संख्या १ के पूर्व जोडी गई पूर्ण संख्या ८०२ की पत्र-सूचना के आगे जोड़ें।

प्र यह सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ २५७ में है। इसे पूर्ण संख्या ४ के आगे जोड़ें। इ. यह सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ २७८ में है। इसे पूर्ण संख्या ८ से आगे जोड़ें।

[१] पत्र-सारांश (६५४) े [८०६]

[ व्यास जी जयकृष्ण वैद्य ] मेरी इच्छा बम्बई व्याख्यान देने की हुई है । १

[२] पत्र-सारांश (६५५) [८०७]

[ व्यासजी जयकृष्ण वैद्य तथा धर्मशी भाई, बम्बई ] हम अपने सुविधानुसार आवेंगे, और अपने आने की आप लोगों को सूचना दे देंगे।

[३] तार-सूचना (७) [८०८] [८०८] विद्यासजी जयकृष्ण वैद्य तथा धर्मशी भाई, बम्बई ] वम्बई पहुंचने की।

[४२] विज्ञापन-सारांश (८०२]

स्वामी जी प्रत्यचादि प्रमाण मानते हैं, चारों वेद संहिताओं का (परिशिष्ट भाग को छोड़कर) प्रामाण्य स्वीकार करते हैं। उन के मन्तव्य वही हैं जो वेदप्रतिपादित हैं। ब्राह्मण बन्ध, शिचा आदि वेदाङ्ग के प्रन्थ, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा आदि वेद के उपाङ्ग, मनुस्मृति का प्रमाण वहीं तक स्वीकार करते हैं जहां तक वह वेद के अनुकूल है, वाल्मी किछत रामायण और महाभारत को इतिहास प्रन्थ सममते हैं। पुराण उपपुराण तन्त्र प्रन्थ, याज्ञवल्क्यादि स्मृतियों का प्रामाण्य मानना तो क्या, उन में कुछ भी अद्धा नहीं करते, जगदुत्पित्त जैसी वेद में लिखी है वैसी ही मानते हैं, जब से सृष्टि का कम हुआ उस काल की कोई संख्या नहीं (अर्थात् प्रवाह रूप से अनादि है) शाखाओं में जिन कमों का करना लिखा है, वह वेदानुकूल हों तो करने चाहिये, परन्तु वेदोक्त विधि सब को माननी चाहिये। वैष्ण्व, स्वामी नारायण आदि सम्प्रदायों का वेद विरुद्ध होने के कारण खरडन करते हैं। ईश्वर सर्व शिक्तमान अन्तर्यामी निरवयव परिपूर्ण और न्यायकारी है, उस का जन्म मरण कभी नहीं होता है, जिस का जन्म मरण होता है, वह ईश्वर ही हो नहीं सकता।

पूर्णानन्द सन्यासी

१. यह अश पं॰ दामोदर सुन्दरदास कृत ''मुंबई श्रार्थसमाज जो इतिहास" की प्रस्तावना के पृष्ठ ''छ'' पर गुजराती में उद्घृत है। इसे पूर्ण सं० ११ के आगे जोड़ें।

२. यह श्रंश पं∘ देवेन्द्रनाथ संकलित जीवन चरित्र पृष्ठ २८६ पर उद्धृत है । इसे पूर्ण संख्या ११ के आगे जोड़े मये पू० सं० ८०६ के पत्र-सारांश के आगे जोड़ें ।

३. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ २८६ पर है। पूर्ण संख्या ११ से आगे जोड़े गये पू॰ संख्या ८०७ के पत्र-सारांश के आगे जोड़ें।

४. यह सारांश पं० देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृष्ठ २८७ पर निर्दिष्ट है। वह विज्ञापन ऋषि दयानन्द की अनुमित से स्वामी पूर्णानन्द ने दिया था। अत एव इमने इसे यहां छापा है। इसे पूर्ण संख्या ११ से आगे बढ़ाई गई पू० सं० ८०८ की तार सुचना के आगे जोड़ें।

### परिशिष्ट (१)

الأحدد والم

जत्तर-पत्र-सूचना (६) साध वस्तरी [690]

[जैन साधु, वम्बई] याजुष मन्त्र पर किये गये कटाच के उत्तर में।°

[83]

विज्ञापन-सूचना

[699]

हम अमुक प्रनथ प्रामाणिक और अमुक प्रनथ अप्रामाणिक मानते हैं विषयक।

[88]

विज्ञापन-सूचना

[683]

पिंडतों को शास्त्रार्थ के लिये आह्वान विषयक।

[84]

विज्ञापन-अंश

[693]

अपने पिडतों को एकत्र करके सत्यासत्य के निर्णय करने का यह अत्यन्त उपयुक्त अवसर है।

[8]

पत्र-सारांश (६५६)

[688]

[ मुन्शी प्यारेलाल, चांदापुर ] यदि शास्त्रार्थ कम से कम दो सप्ताह तक हो तो हम आ सकते हैं।

[2]

पत्र-सारांश (६५७)

[684]

[ मुन्शी प्यारेलाल, चांदापुर ] हम १५ मार्च को चांदापुर पहुंच जायेंगे।

१. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ३३१ में है। पूर्ण संख्या १४ के आगे जोड़ें।

२. इस की सूचना पं० देवेन्द्रनाथ सं० जी॰ च० पृष्ठ २४८ में है । इसे पूर्ण संख्या १६ के आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ३७५ में है। इसे पूर्ण संख्या २२ के आगे जोड़ें।

४. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ३८५ में है। इसे पूर्ण संख्या २६ के आगे जोड़ें।

थ्र इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ३६१ में है। इसे पूर्ण सं० २५ के आगे जोड़ें।

ह. इस का निर्देश पं० देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृष्ठ ३६२ में है। इसे पूर्ण संख्या २९ के आगे जोड़ें।

[१] पत्र-सारांश (६५८)

[693]

[ लेफ्टिनेस्ट गवर्नर, पञ्जाब ] मैं आप से मिलने के लिये प्रतीक्षा कर रहा हूं। १ १४ (१) मई<sup>२</sup> १८७७

[2]

पत्र-सारांश (६५९)

[680]

[जवाहर व प्रभुद्याल खत्री, रावलिएडी] श्राप संस्कृतज्ञ नहीं है, इस से उत्तर नहीं भेजते। इससे स्वयं रावलिएडी श्राकर उत्तर देंगे।

[१]

पत्र-सारांश (६६०)

[696]

[स्वामी सम्पद्गिरि, रावलिपखी]
'इमं मे गंगे यमुने सरस्वती' मन्त्र में गंगा यमुना त्रादि निद्यों के नाम नहीं हैं, प्रत्युत शरीर की नाड़ी विशेष के हैं।

[%]

पत्र-सारांश(६६१)

[699]

[४६]

विज्ञापन-सूचना

[८२०]

पिंडतों को शास्त्रार्थ के लिये आह्वानार्थ।

१. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ४१४ में है। इसे पू॰ सं० ३३ के आगे जोड़ें।

२. उक्त जीवन चिरत्र में १४ मई लिखा है, वह अशुद्ध है। १२ मई को लेफ्टिनेएट गवर्नर पंजाब के निजी मन्त्री मि॰ जे॰ प्रिफिथ ने १२ मई के पत्र में श्री स्वामी जी को १४ मई को १० बजे मिलने की सूचना दी थी (देखो यही प्रन्थ, पृष्ठ ५४ टि॰ २)। अतः यह पत्र ८-१० मई के लगभग लिखा गया होगा।

३. यह निर्देश पं० देवेन्द्र नाथ सं० जी० च० पृष्ठ ४४७ पर है। पूर्ण संख्या ४९ के आगे जोड़ें।
४. इस का निर्देश पं० देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृष्ठ ४४६ पर है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रन्थ

प्रामाण्याप्रामाण्य विषय में भी लिखा है—"इडापिङ्गलासुषुम्णाकूर्मनाङ्यादीनां गङ्गादिसंज्ञास्तीति" संस्कृ ३ पृष्ठ ३१५)। इसी पत्र के साथ ऋषि दयानन्द ने संपद्गिरि की संस्कृत की श्रशुद्धियां भी लिखकर भेजी थीं। इसे पृण संख्या ५२ के आगे जोड़ें।

प्र. यह निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ४६७ पर है। इसे पूर्ण संख्या ७२ के आगे जोड़ें। इ. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी० च॰ पृष्ठ ४७३ पर है। इसे पूर्ण संख्या ७२ के आगे जोड़ें। जोड़ें गये पू॰ सं॰ ८१९ के पत्र-सारांश के आगे जोड़ें।

### परिशिष्ट (१)

[१] पत्र-सारांश (६६२) [८२१]

श्रमी हमारा विचार श्रन्यत्र जाने का है, श्रतः हम नहीं कह सकते रुड़की कब श्राना होगा। जब सम्भव होगा, हम सूचना देंगे।

[२] पत्र-सारांश (६६३)

हमने पूर्वोक्त स्थान पर जाने का विचार शिथिल कर दिया है। यदि हमारा इस समय रुड़की आना अनुचित हो तो सूचित कीजियेगा। अन्यथा हम समर्केंगे आप लोगों को हमारे आने में विरोध नहीं है। 2

[४७] विज्ञापन-सूचना [८२३] मौलवी मुहम्मद कासिम (रुड़की) के विज्ञापन के उत्तर में।

[२] पत्र-सूचना (६६४) [८२४] [मौलवी मुहम्मद कासिम, रुड़की] मौलवी के पत्र के उत्तर में रिजस्टर्ड पत्र 1

११ त्रगस्त ११७८ ।

[३] पत्र-सारांश (६६५)

[मौलवी मुह्म्मद कासिम, रुड्की]
दर्शकों की संख्या शास्त्रार्थ का स्थान, शास्त्रार्थ का समय, और उस का लिखा जाना, कर्नल
मानसल और कप्तान स्टुआर्ट के सामने निश्चित हो गये थे, अब आप इन से असहमित प्रकट करते
हैं। किसी बात का निर्णय करके उस से फिरना बुद्धिमानों का काम नहीं है। मैं निर्णात विषय से
नहीं हट सकता।

१३ अगस्त १८७८

१. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृ॰ ४८१ पर है। इसे पूर्ण संख्या ८३ से आगे जोड़ें। २. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं० जी॰ च॰ पृ॰ ४८१ पर है। इसे पूर्ण संख्या ८४ से

आगे जोड़ें। ३. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृ॰ ४८६ में है। इसे पूर्ण संख्या ८२ से आगे

जोड़ें। यह विज्ञापन ऋषि दयानन्द की ऋनुमित से दिया गया था।

४. इस की सूचना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृ॰ ४८६ में है। इसे पूर्ण संख्या ९५ के आगे

बढ़ाई गई पूर्ण संख्या ८२३ की विश्वापन-सूचना से आगे जोड़ें।
पू. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ट ४८७ पर में है । इसे पूर्ण संख्या ९२ से
आगे बढ़ाई गई पू॰ सं॰ ८२४ की पत्र-सूचना से आगे जोड़ें।

[8,4]

पत्र-सूचना (६६६,६६७)

[८२६-८२७]

[मौलवी मुहम्मद कासिम, रुड़की] उत्तर में दो पत्र। १ सम्भवतः १७ घ्रगस्त १८७८।

[६] पत्र-सारांश (६६८)

[८२८]

[मौलवी अब्दुल्ला, मेरठ]

शास्त्रार्थं लेखबद्ध होगा। आप शहर व छावनी के प्रतिष्ठित रईसों द्वारा लिखित पढ़त कीजिये मुक्ते कोई आपत्ति नहीं। २

[2]

पत्र-सूचना (६६९)

[८२२]

ला० किशनसहाय मेरठ के पत्रों के उत्तर में 18

[३]

पत्रांश (६७०)

[0\$0]

[ला० किशनसहाय, मेरठ] [शास्त्रार्थ के प्रस्तावित नियम]\*

१—उभय पन्न से निम्नलिखित १२ सज्जन सभा के प्रबन्धक नियत किये जायं, यदि वह स्वीकार करें।

[यहां १२ लज्जनों के नाम थे]

२—इन में से एक सज्जन और यदि सम्भव हो तो मातहत जज साहब प्रबन्धक सभा के सभा-पति नियत किये जावें।

३—प्रवन्धकों के अतिरिक्त उपस्थित जन की संख्या हर ओर से पचास-पचास से अधिक न हो तो अच्छा है।

४— उपस्थित होने वालों की जो संख्या नियत की जाने उतने ही टिकट छपवाकर आधे आधे हर एक पत्त को दिये जावें।

१. इन की स्चना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृ॰ ४८८ में है। इन्हें पूर्ण संख्या ९३ से आगे जोड़ें।

२. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ४६८ में है। इसे पूर्ण संख्या १०२ से आगे जोड़ें।

३. इस की सूचना पं∘ देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृष्ठ ४६८ पर है। इसे पूर्ण संख्या १०२ के आगे जोड़ें।

४. ये नियम पं देवेन्द्रनाथ सं जी चि च पृ ४६८ से ५०० तक उद्धृत है । इसे पूर्ण संख्या १०२ से आगे जोड़ी गई पू० सं० ८२९ की पत्र-सूचना के आगे जोड़ें।

५ - हर एक पत्त अपनी त्रोर के जपस्थित मनुष्यों को नियम में रक्खे श्रौर सब प्रकार से जन का उत्तर दाता रहे।

६—हर एक पत्त की त्रोर के योग्य पिएडतों की संख्या दस दस से त्राधिक न हो, कम का अधिकार है।

७-उभय पत्त में से केवल एक ही पिएडत सभा में भाषण करे अर्थात् एक और से स्वामी द्यानन्द सरस्वती और दूसरी और से पण्डित श्रीगोपाल।

⊏इसं समा में हर विषय का खरडन मरडन वेदों के प्रमाश ही से किया जावे।

९-वेदमन्त्रों के अर्थों के निश्चय के लिये ब्रह्मा जी से जैमिनि जी तक के अन्थों की, जिन्हें दोनों पच मानते हैं, साची देनी होगी, जिन का व्यौरा इस प्रकार है—

ऐतरेय, शतपथ, साम, गोपथ, शिचा, कल्प, व्याकरण, निकक्त निघरदु, छन्द, ज्योतिष, पूर्व मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, श्रायुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, श्रर्थवेद श्रादि।

१०-विदित रहे कि ऐतरेय से लेकर अर्थवेदादि पर्यन्त उपर्युक्त प्रन्थ ही साची और प्रमाण होंगे। परन्तु इन में भी यदि कोई वाक्य वेदविरुद्ध होगा तो दोनों पन्न उसे न मानेंगे।

११— उभय पत्त को वेदों तथा प्रत्यत्तादि प्रमाणों, सृष्टि क्रम श्रौर सत्य धर्म से युक्त भाषण करना तथा मानना होगा।

१२ - इस सभा में जो व्यक्ति किसी पन्न का पन्नपात और रागप्रदर्शन करे उसे सहस्र ब्रह्म-हत्या का पाप होगा।

१३ - यतः बहुत बड़ी बात केवल एक पाषाणादि मूर्तिपूजा ही है, इस लिये इस समा में मूर्ति-पूजा का खरडन और मरडन होगा और यदि वेदों की रीति से परिडत जी पाषाणादि मूर्तिपूजन का मण्डन कर देवें तो पिडत जी की सब बातें भी सबी समभी जायेंगी और खामी जी मूर्तिपूजन का खरडन छोड़कर मूर्तिपूजन स्वीकार कर लेवेंगे। और जो स्वामी जी वेदों के प्रमाण से पाषाणादि मूर्तिपूजन खरडन कर देवें तो स्वामी जी की श्रौर वार्ते भी सची समभी जायेंगी श्रौर परिडत जी उसी समय से मूर्तिपूजन छोड़ कर मूर्तिपूजन का खरडन स्वीकार कर लेवें। ऐसा ही उभय पन्न को स्वीकार करना होगा।

१४-- उभय पत्त से प्रश्नोत्तर लिखित होने चाहिये द्यर्थात हर एक प्रश्न मौखिक किया. जावे श्रीर तत्त्रण लिखा दिया जावे। बल्कि जहां तक सम्भव हो वक्ता का एक एक शब्द लिखा जावे।

हर एक प्रश्न के लिये पांच मिनट और हर एक उत्तर के लिये पन्द्रह मिनट नियत हों और नियत समय की कमी का श्रधिकार है, परन्तु श्रधिक समय का नहीं।

१५-सभा में स्वाभी जी परिडत जी तथा अन्य पुरुषों की श्रोर से श्रापस में कोई कठोर भाषण न हो। प्रत्युत अत्यन्त सभ्यता और नम्रता से सत्यासत्य का निश्चय करें।

१६-सभा का समय ६ बजे सायंकाल से नौ बजे रात्रि तक रहे तो उत्तम है।

१७ - प्रशोत्तर के लिखने के लिये तीन लेखक नियत होने चाहियें और प्रत्येक लेख मिलाने के पश्चात् प्रतिदिन दोंनों पत्तों के हस्तात्तर हो कर एक एक प्रति हर पत्त को दी जावे और एक प्रति

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection



बक्स में बन्द करके उस पर उभयपन्न और सभापित का ठाला लगा कर सभापित के पास रहे तािक लेखों में कुछ न्यूनाधिक न होने पाने और आवश्यकता के समय काम आने।

१८—सभास्थल सब प्रवन्धकों की सम्मति के श्रनुसार नियत होगा।

१९—जम्मू और काशी खादि स्थानों के पण्डितों की सम्मित के ऊपर इस समा के निर्णय का निर्मर न होना चाहिये, क्योंकि ये स्थान मूर्तिपूजा के घर हैं। और वहां इस विषय में पण्डितों से शास्त्रार्थ भी हो चुका है। इस लिये उपयुक्त वेद शास्त्रादि जिन में हर विषय की विशद व्याख्या की गई है मध्यस्थ साची के लिये पर्याप्त हैं। हां यह अधिकार है कि यदि दूसरे पच्च को कुछ सन्देह व संशय हो तो आज १७ तारीख सितम्बर १८७८ से दो दिन के भीतर उपर्युक्त स्थानों वा अन्य जगह से उस पण्डित से जो उस की सम्मित में उत्तम और श्रेष्ठ हो आने जाने के विषय में तार द्वारा बात चीत करके स्थिर करले वा प्रबन्ध करले और आज से छ दिन के भीतर अर्थात् २२ सितम्बर रिववार के दिन तक उसे यहां बुला लेवे। यदि दूसरे पच्च को ओर से इस अन्तर में उचित प्रवन्ध न हो वा विरुद्ध कार्यवाही हो तो उस पच्च की सब बात कची और आधार शून्य समभी जायेंगी। यदि स्वामी जी इस अन्तर में कहीं चले जावें वा इस लेख से बद्ध न रहें तो उनकी बात कची और आधार शून्य समभी जायेंगी।

२०--दोनों पन्न को वह सब पुस्तकें जिन का वह प्रमाण दे, सभा के समय अपने साथ लानी चाहियें। उभय पन्न को बिना असली पुस्तकों के मौखिक सान्नी स्वीकार न होगी।

लिखा हुआ १७ सितम्बर सन् १८७८ का।

[8]

## पत्र-सारांश (६७१)

[0\$3]

[लाला किशनसहाय जी, मेरठ]

श्राप को वेदों से अनिमज्ञ पिएडतों के कहने से ऐसा लिखना उचित न था। उत्तम हो यदि श्राप उचित सममें तो मैं दो विद्यार्थियों को श्रापके यहां सभा में भेज दूँ श्रीर वह यदि श्राप श्राप्त मित दें तो श्रापके पिएडतों से वेद के विषय में कुछ प्रश्न करें, तब श्राप को पिएडतों की व्यवस्था ज्ञार हो जायेगी। यदि श्राप को यह स्वीकार न हो तो श्राप कुपापूर्वक मेरे निवास स्थान पर श्रार्थात् हो छेदीलाल के गृह पर पधारें और सब शङ्काओं को निवृत्त कर लेवें।

[82]

# पत्र-सारांश (६७२)

[मुंशी समर्थदान, श्रजमेर]

[अजमेर आना स्वीकार है] आप निवास स्थान आदि का प्रवन्ध कर लेवें । हम दिल्ली के कार्य

१. इस पत्र-सारांश का उल्लेख पं॰ देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृष्ठ ५०१ पर है। यह पत्र ऋ॰ द० के १८ सितम्बर १८७८ पूर्ण संख्या १०३ पर छुपे पत्र के उत्तर में ला॰ किशनसहाय का जो पत्र आया था, उस के उत्तर में लिखा गया था। अतः यह सम्मवतः २० सितम्बर को लिखा गया होगा। इसे पूर्ण संख्या १०६ के आगे जोई।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

### परिशिष्ट (१)

से निवृत्त होकर अजमेर आवेंगे। और आन से पूर्व पत्र द्वारा सूचना देंगे और रेल पर सवार होते समय तार देंगे।

[४८] विज्ञापन-सूचना पादरी में से शास्त्रार्थ की सूचना के विषय में ।२

[८३२]

[9]

पत्र-सूचना (६७३)

[ [ [ ]

[पं० सुखदेवप्रसाद, नसीराबाद] नसीराबाद आने की स्वीकृति।

[8]

पत्राशय-सूचना (६७४)

[8\$3]

[रिवाड़ी के परिडतों के नाम] हमारे निवास स्थान पर ही आकर बात चीत कर ली।

[8]

पत्र-सारांश (६७५)

[634]

[ ... ... आर्यसमाज, अमृतसर] इस का अपराध हम ने चमा कर दिया। इसे पुनः आर्यसमाज में प्रविष्ट कर लो।

[86]

पत्राशय (६७६)

[255]

[कर्नल श्रालकाट, मैडम ब्लेवेस्तकी] श्राप लोग हरिद्वार न श्रावें।

१. इस का निर्देश पं विनेद्रनाथ सं अ जी वि पृष्ठ ५०५ पर है। इसे पूर्ण सं० ११३ के सामे जोड़ें।

२. इस की स्चना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं० जी॰ च॰ पृ॰ ५०६ पर है। इसे प्० सं० १३४ के आगे जोड़ें।

३. इस की स्वना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ५१५ में है। इसे पूर्ण संक्या १३५ के

४. इस की स्चना पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृ॰ ५१८ में है । इसे पूर्ण संख्या १३६ से आगे जोड़ें।

प्र. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृ० ५२५ में है। यह पत्र ला॰ रामशरणदास मेरठ वालों को कह कर लिखवाया था। इसे पूर्ण संख्या १४८ से आगे जोड़ें।

६ इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ एष्ठ ४४३ में है। इसे पूर्ण संख्या १५८ के आगे जोड़ें।

[१२] पत्राशय (६७७)

[630]

[कर्नल आलकाट, मैडम ब्लेवेस्तकी] आप [देहरादून] न आवें, हम स्वयं ही सहारनपुर आते हैं।

[१] प्रश्नों के उत्तर (७)

[536]

[फर्रुखाबाद के पौराणिक पिखतों के २५ प्रश्नों के उत्तर]र

[2]

प्रश्न तथा उत्तर (८)

[636]

[श्री सिद्धकरण जी जैन साधु, मसूदा]<sup>3</sup>

प्रश्न १-मुख पर पट्टी क्यों बांधते हो ?

प्रश्न २—उच्छा जल क्यों पीते हो ?

प्रश्न ३-जल की एक बून्द में, जिस का अन्त है, अनन्त जीव कैसे बतलाते हो ?

[सम्भावित उत्तरों का साथ ही निराकरण]

प्रश्न १ के उत्तर में यदि यह कहा जाये कि पट्टी बांधने से जीव कम मरेंगे तो यह ठीक नहीं, क्योंकि जीव अमर है। (२) यदि कहो कि ऐसा करने से जीवों को कष्ट कम होगा, सो यह भी नहीं बनता क्योंकि मुख पर पट्टी बांधने से मुख के भीतर का वायु अधिक उच्चा होकर उन्हें अधिक कष्ट पहुँचायेगा। जैसे गृहद्वार बन्द करने से अन्दर का वायु अधिक गर्म हो जाता है। (३) मुख का उच्चा वायु हक कर नासिका द्वारा अधिक वेग से निकलेगा और इस से जीवों को अधिक पीड़ा होगी। नलकी द्वारा फूंक लगाने से वायु अधिक वेग से बाहर निकलता है। (४) उच्चारण में भी दोष आता है। निरनुनासिक अच्चर सानुनासिक हो जाते हैं। (५) अन्दर का वायु अधिक दुर्गन्ध युक्त हो जाता

१. इस का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृष्ठ ५४३ में है। इसे पूर्ण संख्या १६४ के

२. फर्ड लाबाद के १४ पिडतों के इस्ताल्यों से २५ प्रश्न धर्मसभा की श्रोर से ऋषि दयानन्द के पास भेजे गये। ऋषि दयानन्द ने पत्र पाते ही ११ श्रक्टूबर को उन के उत्तर लिखवा दिये। वे उत्तर ता० १२ श्रक्टूबर को श्रार्थसमाज में पढ़े जांकर धर्मसभा में भेजे गये (देखो फर्ड लाबाद का इतिहास पृष्ठ १२६)। इन्हें पूर्ण संख्या १९२ के आगे जोड़ें।

ये प्रश्न श्रीर उत्तर 'फर्रखाबाद का इतिहास' पृ० १२६ —१३४ तथा पं० देवेन्द्रनाथ सं० जीवन चित में पृ० ५६२-५७८ तक छपे हैं। श्री पं० लेखराम जी द्वारा सं० जी० च० में भी ये उत्तर छपे हैं, उन में कुछ श्रन्तर है। पाठक महानुभाव वहीं देखें। हमें इन उत्तरों के कतिपय श्रंशों में सन्देह है, विशेष कर हवें प्रश्न के उत्तर में। सम्भव है, श्रार्थसमाज द्वारा उत्तर भेजते समय कुछ परिवर्तन किया गया हो। श्रत एव हम इन्हें यहां नहीं दे रहे।

३. निम्न प्रश्न श्रीर उन के सम्भावित उत्तरों का निराकरण पं० देवेन्द्रनाथ सं० जी० च० पृ० ६४२ ६४३ तक उद्धृत हैं। इन्हें पूण संख्या ३५९ से आगे जोड़ें।

### परिशिष्ट (१)

हैं। मुख पर पट्टी बांघने और मुखप्रचालन न करने, दन्तधावन और स्नान की करने पूर्तिकार प्रियम अधिक बढ़ती है और उस से रोग की उत्पत्ति होती है, जिस से बुद्धि और बुरुवार्थ ने होते हैं। अतः दुर्गन्ध बढ़ाने वाला अधिक पापी होता है।

दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में — ठंडे जल को गर्म करने में जीव रंघ कर जल में घुल जाते हैं। श्रातः गर्म जल से जीव श्रधिक कष्ट पाते हैं। यदि तुम कहो कि हम जल स्वयं गर्म नहीं करते, दूसरे गर्म करते हैं, श्रातः हम पापी नहीं। यह भी ठीक नहीं, क्योंकि यदि श्राप गर्म जल न पीवें तो वह जल क्यों गर्म करते। फिर जल गर्म करने के लिये श्रिप्त जलाने श्रीर उस से भाफ उड़ने में जीव मरते हैं।

तीसरे प्रश्न के सम्बन्ध में —बूंद चाहे पैसा बराबर बड़ाँ हो वा ऋधिक, उस का अन्त होता है, 'फिर उस में अनन्त जीव कैसे रह सकते हैं। यह सर्वथा बुद्धि के विरुद्ध है।

श्रावरा कृष्या २ सं० १९३८= १३ जुलाई १८८१ ।°

आवता केवता र स० १८३८ = १३ विलाई १८८१ ।

[2]

## मत्युत्तर-सारांश (९)

[082]

[श्री सिद्धकरणजी जैन साधु, मसूदा] र

बाहर का वायु ही सब प्राणियों का जीवन हेतु है और बिना उस के अग्नि भी नहीं जल सकती। श्रोट करने से यह दूसरे मार्ग से श्रति वेग से निकल कर प्राणियों से संयुक्त होगा श्रीर प्राणी कब्र पार्थेंगे। श्रौर श्रोट करने से तो उष्णता बढ़ेगी, घटेगी नहीं। यदि चारों श्रोर से खुला होगा तो शीघ्र ठएडी हो जायेगी। यदि किसी बर्तन में जल गर्म किया जाये धौर उसे बिलकुल बन्द कर दिया जाये तो भाफ बड़े जोर से निकल कर बर्तन को तोड़ डालेगी। ऐसे ही उसे आधा वा चौथाई बन्द करने से गर्मी अधिक बढ़ती है। यदि अप्रि से ही जीव मरते हैं तो विद्युतरूप अप्रि से जो सर्वत्र फैली हुई है जीव क्यों नहीं मर जाते ? आप जीवों को अजर अमर भी मानते हैं और उन का मरना भी मानते हैं। बड़े मनुष्यों से वातें करते समय मंह पर पल्ला लगाने का वह प्रयोजन नहीं, जो आप लिखते हैं। उस का प्रयोजन यह है कि वहधा उन से ऐसी बातें करनी होती हैं जिन्हें गुप्त रखना अभीष्ट होता है। अतः मुख पर पल्ला इस लिये लगाते हैं कि शब्द फैले नहीं और उसे दूसरे न सुन सकें, तथा यह भी कि खुले मुख बातें करने से शब्द फैल कर ठीक सुनाई भी न देगा। यदि आप का हेतु ठीक है तो फिर केवल बड़े मनुष्यों से बातें करते समय ही आप को मुख पर पल्ला लगाना चाहिये। छोटे मनुष्यों के सम्मुख मुख पर पट्टी क्यों बांधे रहते हो, तथा अपने शिष्यों के सम्मुख भी ऐसा क्यों करते हो ? फिर बड़े मनुष्य भी पल्ला लगा कर बातें नहीं करते ? क्या उन का श्रुक छोटे मनुष्यों पर नहीं पड़ता वा उन तक श्वास की दुर्गिन्ध पहुंचना श्रच्छा समकते हो ? क्या बड़े मनुष्यों के मुंह में कस्तूरी घुली होती है ? हम कागज स्याही को वेद नहीं समभते । वह तो जड़ वस्तु है, जिन्हें सुगन्ध दुर्गन्ध, आहूं

१. इस तिथि का निर्देश पं॰ देवेन्द्रनाथ सं॰ जी॰ च॰ पृ॰ ६४२ पर है।

२. सिद्धकरण जी ने पूर्ण संख्या ८३६ के ३ प्रश्नों में से केवल १ प्रश्न का उत्तर १६ जुलाई १८८१ को दिया। उस का यह प्रत्युत्तर उसी समय दिया गया। इसे पूर्ण संख्या ३५९ से आगे बढ़ाये गये (पूर्ण संख्या ८३९) प्रश्नोत्तर से आगे जोड़ें।

शुक्त की कुछ ज्ञान नहीं। हम तो शब्दार्थ सम्बन्ध को वेद समभते हैं। क्या जैनियों के धर्म पुरस्क बनाने वालों ने उन्हें मुख पर पट्टी बांध कर लिखा था ? हम तो वैदों को खुले मुख से उच्चारण करना उत्तम सममते हैं क्योंकि इस से उदारण स्पष्ट और शुद्ध होता और मुख पर पट्टी बांधने से अस्पष्ट श्रीर श्रशुद्ध, जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं। " जब श्राप से नगर के बाहर भेंट हुई थी तब तो श्राप ने हम से निःसंकोच बातें की थी, यद्यपि हम मुंह पर पट्टी वा पल्ला नहीं लगाये हुये थे। फिर शास्त्रार्थ करने में आपने यह अड़चन क्यों लगाई कि जब तक हम मुख पर पट्टी न बांधेंगे तब तक हम आप से शास्त्रविचार न करेंगे। १६ जुलाई १८८१।

[96]

पत्र-सारांचा (६७८)

(६२१)

सिवकलाल कृष्णदास, बम्बई अथवंवेद की टीका और ऋषि देवता छन्द की पुस्तकें ढूंढ कर भेजी।

[88]

विज्ञापन-सारांश

[683]

[इम] प्रातः काल द बजे से सायं काल के ५ बजे तक कि की से न मिलेंगे । ५ बजे से रात्रि पर्यन्त मिल सकेंगे।

[2]

पत्रांश (६७२)

[ \$82]

प्राणजी दास बम्बई

श्यामजी को पत्र लिखकर यह खबर मंगवा लीजिये कि बाबू हरिश्चन्द्र इङ्गलैएड में कौन सी जगह पर हैं।

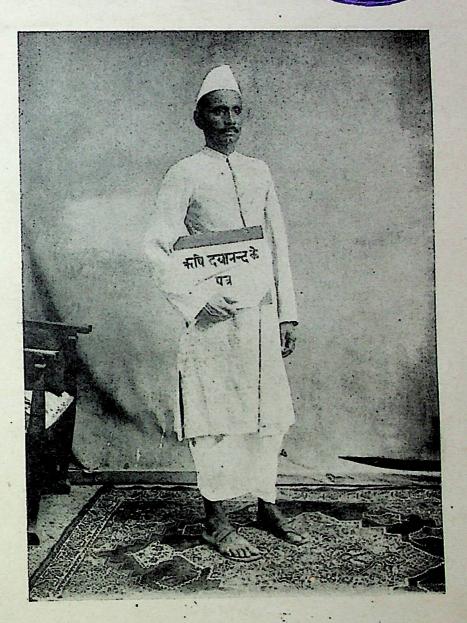
[4]

[888]

[केशवलाल निभैय राम, बम्बई] संस्कार निर्ण-संस्कार विधि का रुपया जल्दी वापस करेंगे ।

- १. यह संकेत पूर्ण संख्या ८३६, पृष्ठ ५३२ पंक्ति २१ के 'उच्चारण में भी दोष त्राता है, निग्नुनासिक श्रज्य साजनासिक हो जाते हैं' लेख की श्रोर है।
- २. यह सारांश इमने सेवकलाल कृष्णदास के २० जनवरी १८८३ के पत्र के अनुसार बनाया है (देखो मुन्शो॰ सं॰ पत्रब्य॰ पृष्ठ २६६)। इसे पूर्ण संख्या ४६८ के आगे जोड़ी गई (पू० सं० ७३२) की मनियांडर-सूचना के आगे जोहें।
- ३. यह सारांश पं ० देवेन्द्रनाथ संकलित जी च ॰ पृ ० ६६० में उदधृत है । इसे पूर्ण संख्या ३९० से आगे जोड़ें। इम ने अनुमान से यहां रक्ला है।
- ४. इस पत्र का संकेत प्राण्य जीदास काइनदास के ता े २६ जून सन् १६७६ के श्यामची कृष्णवर्मा क के नाम लिखे पत्र में है। प्राण्जीदास का (प्रतिलिपि किया) पत्र स्वर्गीय श्री ५० महेशप्रसादजी मौलवी स्त्रालिम फाजिल के संग्रह से श्री मामराज जी ने २० फरवरी १६५५ को काशीं में प्राप्त किया। अब उनके संग्रह में सुरिच्चत है। प्राण्जीदास का यह पत्र मुन्शी समर्थदान ने पूर्ण संख्या १७७ पर छुपे श्रपने पत्र के साथ श्यामजी को इङ्गतेयड मेजा या। इसे पूर्ण संख्या १७४ के आगे जोड़ें। पं. टिप्पणी ४ देखो ।

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन प्राप्त



पत्र-संग्रह में हमारे सहायक ऋषि-भक्त महाशय मामराज जी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chemor and Garage



